२५३

हिंदी संसार

★ प्रेमनारायण टंडन

विद्या मंदिर, रानी कटरा, लखनऊ

हिंदी-सेवी-संसार

और

ब्रजभाषा-सूर-कोश

के समस्त ग्राहकों को चार सुविधाएँ—

(१) विद्या मन्दिर, रानीकटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित *बालोपयोगी पाक्षिक पत्र 'होनहार' का वार्षिक मूल्य ३) के बजाय २)* दे सकते हैं।

(२) 'हिंदी-सेवी-संसार' और 'ब्रजभाषा सूर-कोश' के सम्पादक *श्री प्रेमनारायण टंडन की मौलिक और सम्पादित प्राप्य पुस्तकों की एक एक प्रति दो तिहाई मूल्य में* ले सकते हैं। डाकव्यय अवश्य अतिरिक्त रहेगा।

(३) विद्या मन्दिर, रानीकटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित सुरुचि पूर्ण *ललित साहित्य और बालोपयोगी पुस्तकों का १ सेट आधे मूल्य में* प्राप्त कर सकते हैं। डाकव्यय अतिरिक्त रहेगा।

(४) 'हिंदी-सेवी-संसार' का पूरक (सप्लीमेंट्री) खंड, जो १९५१ के अंत तक प्रकाशित होगा, पौने मूल्य में मिलेगा। डाकव्यय अतिरिक्त रहेगा।

पत्र-व्यवहार का पता—

व्यवस्थापक विद्यामन्दिर

रानीकटरा, लखनऊ



विद्यामंदिर, रानीकटरा, लखनऊ

द्वारा प्रकाशित ललित सुरुचिपूर्ण साहित्य

तुलसी के राम—श्री प्रेमनारायण टंडन द्वारा तुलसी-साहित्य के आधार पर लिखित राम का चरित्र। मूल्य—१)

विश्व-संस्कृति का विकास—विषय स्पष्ट है। लेखक हैं श्री कालिदास कपूर और परिचायक हैं माननीय श्री संपूर्णानन्दजी। मूल्य २)

संकल्प—श्री प्रेमनारायण टंडन के ३ एकांकी। मूल्य १।)

हृदयध्वनि—श्री लक्ष्मीनारायण टंडन की अनुभूतिप्रधान कविताओं का मार्मिक संकलन। मूल्य—१।)

कर्मपथ—श्री प्रेमनारायण टंडन के चार एकांकी। मू०—१।)

चित्रण—लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी प्राध्यापक डा० भगीरथ मिश्र की कविताएँ। मूल्य—१)

प्रेरणा—श्री प्रेमनारायण टण्डन के चार एकांकी। मू०—।।।)

सोहागदान—श्रीशिवकुमार ओझा के माननीय नेताजी से सम्बन्धित तीन एकांकी। मूल्य—।।।=)

रेखाचित्र—श्री प्रेमनारायण टंडन-कृत। मू०—।।=)

रात की रानी—कुँवर श्री आ० पी० सिंह-कृत पन्द्रह श्रेष्ठ और सुरुचिपूर्ण कहानियाँ। मू०—२)

हास्य और विनोद—श्री प्रेमनारायण टण्डन के हास्य और व्यंग्य प्रधान लेख। मूल्य—।।।)

बालोपयोगी पाक्षिक होनहार—प्रत्येक अंक में एक ही लेखक की सुन्दर सुरुचिपूर्ण, उत्साहवर्द्धक और रोचक रचनाएँ प्रकाशित होती हैं जो आप के होनहारों को होनहार बनने की प्रेरणा देंगी। वार्षिक मू०—३) है, परंतु 'हिंदी-सेवी-संसार' और 'व्रजभाषा-सूर-कोश' ग्राहकों से २) ही लिया जायगा।

पता—विद्यामंदिर, रानीकटरा, लखनऊ

ब्रजभाषा सूर-कोश

यह कोश लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी - विभाग के तत्वावधान में प्रकाशित हो रहा है। इसमें सूर-साहित्य में प्रयुक्त प्रायः समस्त शब्दों और उनके रूपों की व्युत्पत्ति और उदाहरण-सहित अर्थ दिये गये हैं। *सूर के अतिरिक्त ब्रजभाषा के अन्य प्रसिद्ध कवियों के भी प्रचलित प्रयोग* इसमें सम्मिलित कर लिये गये हैं जिससे *हिन्दी की प्राचीन कविता को समझने में यह कोश विशेष रूप से सहायक होगा।* इसमें लगभग ५०,००० शब्द होंगे जिनमें *तीन चार हजार शब्द-रूप तो ऐसे हैं जो हिन्दी के अन्य कोशों में भी नहीं मिलेंगे।*

इस कोश के निर्देशक और निरीक्षक हैं ब्रजभाषा-विशेषतया अष्टछाप-साहित्य के मर्मज्ञ तथा लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तथा हिंदी विभाग के अध्यक्ष *डा० दीनदयालु गुप्त एम. ए., एल-एल. बी., डी. लिट्.।*

इस कोश के लिए शब्दों के संकलनकर्त्ता और संपादक हैं हिंदी के उदीयमान आलोचक और 'हिंदी-सेवी-संसार' के ख्यातिप्राप्त संपादक तथा लखनऊ विश्वविद्यालय के रिसर्च और मोदी स्कालर, *साहित्यरत्न श्री प्रेमनारायण टंडन एम. ए., एम. आर. ए. एस.।*

इस कोश में २०×३०×८ साइज के लगभग २००० पृष्ठ होने की संभावना है। पूरे कोश का मूल्य ४ जिल्दों में, डाकव्यय सहित ५०) होगा।

भारत के अधिकांश साहित्य-प्रेमियों, शिक्षा-संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिए ५०) एक बार में केवल एक पुस्तक के लिए खर्च करना संभव नहीं होता। अतएव यह प्रबंध किया गया है कि यह कोश १० छोटे-छोटे खंडों में प्रकाशित किया जाय। प्रारंभिक आठ खंडों में पूरा कोश प्रकाशित होगा। नवें में परिशिष्ट भाग रहेगा जिसमें छूटे हुए शब्द और अर्थ दिये जायँगे तथा दसवें में व्रजभाषा-व्याकरण की विवेचना के साथ-साथ सूर की भाषा पर सविस्तार प्रकाश डाला जायगा। प्रत्येक खंड के छपने में ३-४ मास का समय लगेगा और उसमें लगभग २०० पृष्ठ रहेंगे। पूरे कोश का मूल्य डाकव्यय सहित ५०) होगा, परंतु ५) अग्रिम भेजकर आरंभ में ही पूरे कोश के स्थायी ग्राहक बननेवालों को प्रत्येक खंड केवल ३) में और पूरा कोश ३०) में मिलेगा। प्रत्येक खंड प्रकाशित होते ही उनको ३) की वी० पी० से भेजा जायगा। नवाँ खंड १) की वी० पी० से जायगा और दसवाँ खंड रजिस्ट्री से। वी० पी० भेजने के पूर्व तत्संबंधी सूचना प्रत्येक स्थायी ग्राहक को दे दी जायगी। इस तरह ५०) के बजाय ३०) में ही सारा कोश वे घर बैठे प्राप्त कर लेंगे।

इस कोश का प्रकाशन लखनऊ विश्वविद्यालय की ओर से हो रहा है; अतएव प्रकाशन स्थगित होने की संभावना नहीं है।

विद्यामंदिर ने लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी प्रकाशनों की बिक्री का सर्वाधिकार ले रखा है। अतएव कोश तथा विश्वविद्यालय के अन्य प्रकाशनों के लिए सीधे हमें लिखिए। कोश का स्थायी ग्राहक बनने के लिए अग्रिम नीचे लिखे किसी भी पते पर भेजा जा सकता है।

१ अध्यक्ष हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

२ व्यवस्थापक विद्यामंदिर, रानीकटरा, लखनऊ।

हिन्दी-सेवी-संसार

समस्त हिन्दी जगत के कार्य-कलाप का परिचयात्मक संदर्भ ग्रंथ
जिसमें देशी-विदेशी हिंदी लेखक-लेखिकाओं, सरकारी-
गैरसरकारी संस्थाओं, प्रकाशकों, पत्र-पत्रिकाओं,
पुरस्कार पदकों, अनुसंधानकर्ताओं, विदेश में
हिंदी-प्रचारकों आदि की गतिविधि का
आवश्यक विवरण संकलित है

संस्थापक—श्री कालिदास कपूर, एम. ए., एल. टी.

संपादक
प्रेमनारायण टंडन, एम० ए०, सा० रत्न, एम० आर० ए० एस०
रिसर्च और मोदी स्कालर लखनऊ विश्वविद्यालय
संपादक 'ब्रजभाषा सूरकोश'

❀ १९५१ ❀

द्वितीय संशोधित-परिवर्द्धित संस्करण

प्रकाशक

विद्यामन्दिर, रानीकटरा, लखनऊ

प्रथम संस्करण : अप्रैल १९४४

द्वितीय संस्करण : अप्रैल १९५१

मूल्य : साढ़े सात रुपये

मुद्रक

नवभारत प्रेस, नादानमहल रोड, लखनऊ

निवेदन

प्रस्तुत संस्करण

हिंदी-सेवी-संसार का द्वितीय संशोधित-परिवर्द्धित संस्करण छापने का प्रस्ताव १९४७ में पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित कराया गया था। आवश्यक सामग्री हमें प्राप्त भी हो गयी थी, परंतु कागज पर कंट्रोल था और अधिकारियों तक दौड़-धूप करना हमारे बस की बात नहीं थी। अतएव निरंतर तीन वर्ष तक इसका प्रकाशन टलता रहा। पिछले वर्ष कागज मिलने की सुविधा होने पर इसका काम फिर हाथ में लिया गया और आज सात महीने बाद प्रस्तुत ग्रंथ आपके सामने है।

इस प्रकार के एक ग्रंथ की आवश्यकता थी और इसीलिए कई प्रकाशकों और व्यक्तियों ने इसे तैयार करने का प्रयत्न भी पिछले वर्षों में किया था। परंतु इसके प्रकाशन में हमें ही जो थोड़ी-बहुत सफलता मिल सकी, उसका सभी श्रेय हमारे उन कृपालु सहायकों और हिंदी-सेवियों को है जिन्होंने समय-समय पर सामग्री भेजकर हमारी सहायता की। इस कृपापूर्ण सहयोग के लिए हम उनके अत्यंत कृतज्ञ हैं।

इस ग्रंथ के संपादन-प्रकाशन में आनेवाली कठिनाइयों की चर्चा यहाँ करने की जरूरत नहीं जान पड़ती। निवेदन केवल इतना करना है कि बीस विज्ञप्तियाँ प्रकाशित कराने और लगभग तेरह हजार पत्र लिखने पर भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों की हिंदी - प्रचारिणी समितियों की पचासों रिपोर्टों और तरह-तरह के हस्तलेखों में विविध शैलियों और ढंगों से लिखे, निजी और पारिवारिक बातों से आदि से अंत तक भरे सैकड़ों परिचयों, पत्र-पत्रिकाओं की अनेक फुटकर प्रतियों और प्रकाशकों

के तमाम छोटे-बड़े सूचीपत्रों का जो विशाल ढेर सामने इकट्ठा हो गया, उसे देखकर बारबार मन में विचार आता था कि यह श्रम-साध्य, समय-साध्य और व्यय-साध्य काम दो एक व्यक्तियों का नहीं, उत्साही सदस्यों वाली किसी उन्नत सस्था का है। परंतु अनेकानेक हिंदीप्रेमियों के शुभाशीर्वाद और उत्साहवर्धक संदेशों ने मानसिक दुर्बलता की ऐसी स्थिति में बारबार हमारा साहस बढ़ाया। इसके लिए भी हम सभी महानुभावों के अत्यंत अनुगृहीत हैं।

पुस्तक का सबसे अधिक भाग साहित्यसेवियों के परिचयों से भरा है। छोटे-बड़े १६८१ परिचय इसमें प्रकाशित हैं। इस संबंध में हम कुछ गर्व के साथ कहना चाहते हैं कि सभी परिचयों को हमने पक्षपातरहित होकर लिखा है, किसी को घटाने-बढ़ाने का कोई प्रयत्न अपनी ओर से नहीं किया। जो परिचय छोटे या अपूर्ण प्रकाशित हैं वे सामग्री के अभाव में अधिकतर ऐसे ही महानुभावों के हैं जिन तक हमारी पहुँच नहीं हो सकी अथवा जिन्होंने हमारे चार-चार, पाँच-पाँच पत्रों को टोकरी में डाल दिया।

प्रथम संस्करण में प्राय: प्रत्येक लेखक के संबन्ध में उसकी हिंदी-सेवा का ध्यान रखते हुए हमने कुछ प्रशंसात्मक शब्द लिख दिये थे; प्रस्तुत संस्करण में उन्हें भी निकाल दिया है। दूसरी बात यह कि इस बार लगभग अस्सी प्रतिशत परिचय लेखकों से प्राप्त सामग्री के आधार पर ही तैयार किये गये हैं जिससे ग्रंथ की प्रामाणिकता अपेक्षाकृत बढ़ गयी है। इस बार एक-दो प्रतिशत को छोड़कर शेष सभी लेखक-लेखिकाओं के पते भी देने का प्रयत्न हमने किया है जिससे प्रस्तुत संस्करणकी उपयोगिता निस्संदेह अधिक हो गयी है।

'ख' खंड में २१३ सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं के परिचय छपे हैं। कुछ सरकारी संस्थाओं के परिचय कई बार लिखने पर भी

प्राप्त नहीं हो सके और कुछ की कार्यवाही गुप्त रखी जाती है। गैर-सरकारी संस्थाओं में कदाचित् कोई मुख्य संस्था नहीं छूटी है।

इस खंड में देशी-विदेशी उन डिग्री कालेजों और विश्वविद्यालयों का परिचय और जोड़ दिया गया है जिनमें उच्च कक्षाओं के लिए स्वीकृत विषयों में हिंदी भी है। यद्यपि ऐसे समस्त देशी-विदेशी विद्यालयोंके परिचय इस बार हम प्रयत्न करने पर भी प्राप्त नहीं कर सके हैं, तथापि 'संसार'में इस विषय की उपयुक्तता सभी को मान्य होगी और आगामी पूरक खंड में हम तत्संबन्धी पूर्ण सामग्री पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर सकेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

छोटे-छोटे कुछ पुस्तकालयों के परिचय भी इसी खंड में दिये गये हैं। वस्तुतः हम देना चाहते थे उन पुस्तकालयों का विवरण जिनमें हिंदी की उच्च कोटि की पुस्तकों का अच्छा संग्रह हो अथवा जिनमें हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ संगृहीत हों। पूरक खंड में यह विवरण भी अपेक्षाकृत पूर्ण रूप में दिया जा सकेगा।

कालेजों और विश्वविद्यालयों को छोड़कर कदाचित् किसी सरकारी या गैरसरकारी संस्था के साथ हमने उसके पदाधिकारियों की सूची नहीं दी है। इसका प्रधान कारण यह है कि प्रायः सभी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का चुनाव एक वर्ष के लिए होता है और जो सामग्री हमारे पास थी वह या तो पिछले वर्ष आयी थी या उसके भी पहले। अतएव हमने निश्चय किया है कि सभी संस्थाओं के वर्तमान पदाधिकारियों की सूची पूरक खंड में प्रकाशित की जाय। आशा है, सभी इस विचार से सहमत होंगे।

'ग' खंड में २८३ प्रकाशकों के और 'घ' में ५६० प्रमुख पत्रों के नाम हैं। अधिक परिश्रम हमें इन विभागों की सामग्री के लिए इस कारण करना पड़ा कि इस वर्ग से संबन्धित व्यक्तियों ने सामग्री भेजने

की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। कुछ प्रकाशकों और संपादकों की निश्चित नीति ही नहीं है। संभव है, इससे भी उन्हें परिचय भेजने में संकोच हुआ हो।

(ङ) खंड में हिंदी के प्रमुख पुरस्कारों और पदकों का परिचय है। प्रथम संस्करण में दी हुई सामग्री से यद्यपि इस बार यह अंश अधिक पूर्ण है, तथापि कुछ विवरण अपूर्ण हैं। स्वदेश के विभिन्न प्रांतों में कुछ राजकीय पुरस्कार दिये जाने लगे हैं, उनका विवरण भी हम प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

अंतिम दोनों खंड — हिंदी में अनुसंधान-कार्य और विदेश में हिंदी— नये हैं और इनकी विशेष उपयोगिता है। प्रथम से हिंदी-साहित्य के भावी स्नातकों को अपने लिए अनुसंधान का विषय चुनने में सहायता के साथ स्फूर्तिमयी प्रेरणा मिलेगी। यही नहीं, विभिन्न विश्वविद्यालय यदि चाहेंगे तो पारस्परिक सहयोग से इस कार्य को आगे बढ़ाने का अवसर प्राप्त कर सकेंगे। तात्पर्य यह है कि एक ही विषय पर कई स्नातकों के काम करने से यह कहीं अधिक श्रेयस्कर है कि एक विश्व-विद्यालय में स्वीकृत विषय से मिलता-जुलता नवीन विषय दूसरे विश्व-विद्यालयों में स्वीकृत किया जाय। इसी प्रकार 'संसार' के अंतिम खंड से हमारे स्नातकों को अपने कार्यक्षेत्र तथा दृष्टिकोण को विस्तृत बनाने की आवश्यकता का ज्ञान होगा।

परिशिष्टों में अवशिष्ट परिचय हैं। इनमें एकाध पहले ही आ गये थे; भूल से इधर उधर हो जाने के कारण यथास्थान न दिये जा सके। इस असावधानी के लिए उनके प्रेषकों के प्रति हम क्षमा प्रार्थी हैं।

अपने इस रूप में 'संसार' एक संदर्भ ग्रन्थ का काम दे, ऐसा हमारा प्रयत्न रहा है। इसमें सफलता कितनी मिल सकी है, इसका निर्णय पाठक ही करें।

अन्त में हम अपने सभी कृपालु सहायकों को एक बार पुनः धन्यवाद देते हैं। उनकी नामावली हम यहाँ नहीं दे रहे हैं, क्योंकि अनेकानेक महानुभावों ने किसी न किसी रूप में हमारी सहायता की है और कुछ के नाम देने का अर्थ होगा शेष की सहायता का मूल घटाना। इसलिए हम सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञ हैं और सभी के प्रति क्षमा प्रार्थी भी।

भावी योजना

'संसार' का प्रथम संस्करण सात वर्ष पूर्व पाठकों के सामने आया था। ग्रन्थ प्रकाशित करके हम निश्चित हो गये और उसे प्राप्त करके हिंदी के साहित्य-सेवी। फल यह हुआ कि नये संस्करण के प्रकाशन में इतना विलम्ब हुआ और शक्ति भर प्रयत्न करने पर भी वह पूर्णतया संतोषजनक रूप में प्रस्तुत न किया जा सका। इसके लिए यद्यपि दोषी हमी हैं तथापि यदि हमें उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त होता तो ग्रंथ को अधिक उपयोगी रूप सरलता से दिया जा सकता था। जो हो, भविष्य में यह सम्बन्ध बना रहे, इस उद्देश्य से हमने निश्चय किया है कि प्रति वर्ष तक 'संसार' के पूरक ('सप्लीमेंटरी') खंड प्रकाशित किये जायँ, जिनमें विभिन्न परिचयों के सम्बन्ध में आवश्यक संशोधन और परिवर्द्धन दिये जाते रहें और उसके बाद 'हिंदी-सेवी-संसार' का नया खंड प्रकाशित हो जिसमें सभी आवश्यक बातों का समावेश करके उसे नवीन रूप दे दिया जाय।

प्रत्येक पूरक खंड के लिए आवश्यक सामग्री हमें प्रति वर्ष अक्टूबर तक मिल जानी चाहिए जिसको यथायोग्य संपादित करके नये वर्ष के नये महीने में हम प्रकाशित करा देंगे। आशा है, इस योजना से सभी महानुभावों को सुविधा होगी।

प्रथम पूरक खंड

प्रथम पूरक खंड के लिए सामग्री हमारे पास अक्टूबर १९५१ के अन्त तक अवश्य आ जानी चाहिए। प्रस्तुत संस्करण में जो त्रुटियाँ रह गयी हों, जो आवश्यक बातें जोड़नी हों, या जो परिवर्तन करने हों, वे सभी सूचनाएँ उक्त महीने तक हमारे पास अवश्य भेज दी जायँ जिससे इस पूरक खंड के प्रकाशित होने पर तो ग्रन्थ को पूर्णतः प्रामाणिक माना जा सके।

दो बातों की प्रार्थना

हम जानते हैं कि 'संसार' में अनेक त्रुटियाँ होंगी। अतएव समस्त देशी-विदेशी हिन्दी - साहित्य-सेवियों से दो बातों की प्रार्थना है। एक तो यह कि 'संसार' के प्रस्तुत संस्करण के सम्बन्ध में अपनी सम्मति, विषय, तत्संबन्धी प्रतिपादन प्रणाली आदि के सम्बन्ध में आवश्यक सुझाव, और त्रुटियों के सम्बन्ध में स्पष्ट सूचना शीघ्र से शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। दूसरी बात यह कि अक्टूबर १९५१ तक इस ग्रन्थ के पूरक खंड के लिए अपने और अपने परिचित अथवा सहयोगी साहित्य-सेवियों के सम्बन्ध में आवश्यक संशोधन - परिवर्द्धन अवश्य ही भिजवा दें।

विभिन्न भारतीय प्रांतों में स्थित लेखक-लेखिकाओं, संस्थाओं, प्रकाशकों, पत्र-पत्रिकाओं आदि के ध्येय की एकता का पता तो 'संसार' के प्रत्येक पृष्ठ से चलता ही है, साथ-साथ यह भी ज्ञात होता है कि हमारा परिवार कितना विस्तृत है। और यदि इस परिवारके सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने हमारी उक्त प्रार्थनाओं को स्वीकार करके अपना कृपापूर्ण सहयोग हमें प्रदान किया हो 'संसार' के द्वारा हमारे उदीयमान साहित्य-सेवी सहज ही जान सकेंगे कि हमारा पथ कितना प्रशस्त है और हमारा कर्मक्षेत्र कितना विस्तृत है।

—प्रे० ना० टंडन

संकेत-सूची

अप्र०—अप्रकाशित रचनाएँ।
अनु०—अनुवाद, अनुवादक।
अ० भा०—अखिल भारतीय।
आलो०—आलोचना।
उप०—उपन्यास।
उ० प्र०—उत्तर प्रदेश।
उद्दे०—उद्देश्य।
कवि०—कविता।
कहा०—कहानियाँ, कहानी-संग्रह।
जा०—भाषाओं की जानकारी।
ज०—जन्मतिथि और स्थान।
गु० कु०—गुरुकुल।
जि०—जिला।
ठि०—ठिकाना।
ना०—नागरी।
ना०—नाटक।
प०—पता।
पो०—पोस्ट।
पो० बा०—पोस्ट बाक्स।
प्र०—प्रथम रचना।
प्र०—प्रचार, प्रचारक, प्रचारिणी।
प्रका०—प्रकाशन, प्रकाशित, प्रकाशक।
प्रां०—प्रांतीय।
बालो०—बालोपयोगी।
भूत०—भूतपूर्व।
मा०—मासिक।
मू०—मूल्य, वार्षिक मूल्य।
यू० पी०—युक्तप्रांतीय (उत्तरप्रदेश)
वर्त०—वर्तमान, वर्तमान कार्य।
वि०—विशेष।
वि० वि०—विश्वविद्यालय।
व्या०—व्याकरण।
शि०—शिक्षा और उपाधि।
शु०—वार्षिक-मासिक शुल्क।
संस्था०—संस्थापक, संस्थापना।
संचा०—संचालक, संचालित।
संयो०—संयोजक।
संपा०—संपादक, संपादन, संपादित।
स०—सभा, सम्मेलन, समिति।
सद०—सदस्य।
सभा०—सभापति।
सह०—सहकारी।
सहा०—सहायक।
स्था०—स्थापना, स्थापित।
स्व०—स्वर्गीय।
सा०—सार्वजनिक साहित्यिक कार्य।
सा० आ०—साहित्याचार्य।
सा० भू०—साहित्यभूषण।
सा० र०—साहित्यरत्न।
सा० लं०—साहित्यालंकार।
साप्ता०—साप्ताहिक।
हिं०सा०स०—हिंदी साहित्य सम्मेलन

विज्ञापन दाताओं की सूची

अमर ज्योति, जयपुर।
आत्माराम ऐंड संस, दिल्ली।
आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता।
इंडियन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
उजाला, पटना।
ओरियंट लाँगमैंस, कलकत्ता।
कलकत्ता केमिकल्स, कलकत्ता।
किताबघर, लश्कर।
गया प्रसाद एंड संस, आगरा।
गौतम बुक डिपो, दिल्ली।
चंद्र कार्यालय, भिवानी।
जयहिंद, कोटा।
जाग्रत, जयपुर।
दैनिक दरबार, अजमेर।
नयी धारा, पटना।
नव चित्रपट, दिल्ली।
नवयुग ग्रंथागार, लखनऊ।
नाथ बुक डिपो, आगरा।
प्रदीप, शिमला।
बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा।
बाल शिक्षा समिति, पटना।
बाल साहित्य मंदिर, लखनऊ।
बेकार सखा प्रेस, शिकोहाबाद।
भारत जैन महामंडल, वर्धा।
भारतीय साहित्य सदन, दिल्ली।
मस्ताना जोगी, दिल्ली।
मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।
युगांतर, जयपुर।
रामप्रसाद ऐंड संस, आगरा।
लक्ष्मी प्रसाद 'रमा', दमोह।
लक्ष्मी हिंदी विद्यालय, गुंटूर।
विद्यामंदिर, लखनऊ।
विद्यामंदिर लि०, दिल्ली।
वेद संस्थान, अजमेर।
शांति मंदिर, बँगलौर।
शारदा मंदिर, दिल्ली।
शिक्षक, विजय वाड़ा।
शिवाजी पुस्तक मंदिर, लखनऊ।
शुभचिंतक, जबलपुर।
श्रीराम मेहरा एंड कंपनी, आगरा।
संगीत कार्यालय, हाथरस।
सरस्वती प्रेस, बनारस।
साहित्य सदन, अमृतसर।
साहित्य रत्न भंडार, आगरा।
सुपर फार्मा कारपोरेशन, बंबई।
'हमराही', अल्मोड़ा।
हिंद प्रकाशन मंदिर, आगरा।
हिंद मेल सर्विस, मुंगेर।
हिमालय एजेंसी, कनखल।
हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, काशी।
हिंदी प्रचारक मंडल, लखनऊ।
हिंदी बुक स्टाल, तिरुवंत पुरम।
होनहार, लखनऊ।

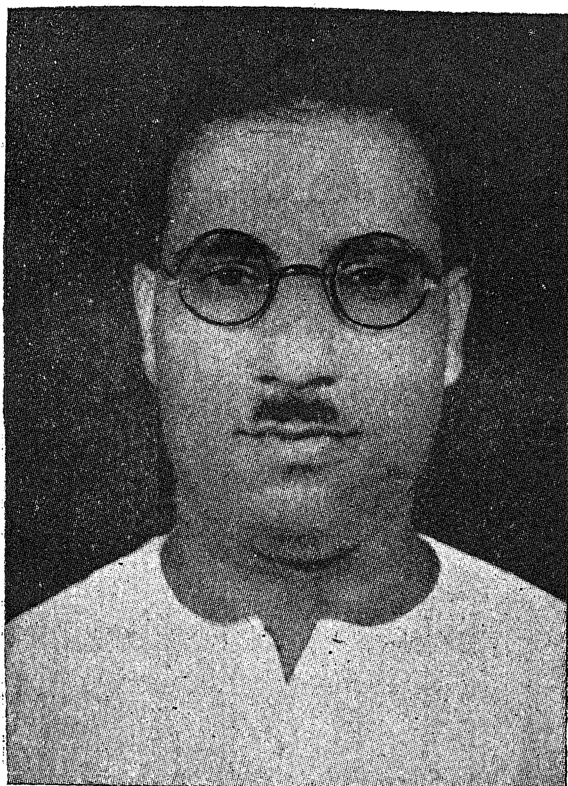
विषय-सूची

हिंदी-सेवी-संसार के सम्पादक

श्री प्रेमनारायण टण्डन, एम० ए०, साहित्यरत्न, एम आर० ए० एस

की मौलिक और संपादित कुछ पुस्तकें

द्विवेदी-मीमांसा	२॥)
चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन	१॥)
स्कंदगुप्त : एक अध्ययन	१॥)
अजातशत्रु : एक अध्ययन	१॥)
गोदान	१॥।)
गबन : एक अध्ययन	१।)
निर्मला : एक अध्ययन	॥।)
प्रेमाश्रम : एक अध्ययन	१॥)
सेवासदन : एक अध्ययन	१।)
हिंदी साहित्य का इतिहास	१।)
हिंदी साहित्य की रूपरेखा	२॥)
तुलसी के राम	१)
हिंदी रचना : उसके अंग	२॥)
प्रबन्ध-प्रभा	१॥)
हिंदी रचना-चंद्रिका	३)
काव्य-रचना	।-)
संकल्प-एकांकी	१।)
प्रेरणा - एकांकी	॥।)
कर्मपथ ,,	१।)
हास्य-विनोद-निबन्ध	॥।)
रेखाचित्र	॥=)
हमारे अमरनायक	॥।)
दैनिक ज्ञान-विज्ञान	२॥)
साहित्य-परिचय (लेख	३)
हिंदी-साहित्य-निर्माता	१॥)
व्रजभाषा सूर-कोश (दो खंड)	८)
हिंदी-सेवी-संसार	७॥)
साहित्यिक पारिभाषिक शब्दावली	४॥)
रहस्यवाद और हिंदी-कविता	१॥)
गोपी-विरह और भ्रमरगीत(सूर)	१॥)
भँवरगीत (नन्ददास)	॥।)
प्रेमचन्द : कृतियाँ और कला	२।)
सूर-रामायण	१॥)
सुदामा-चरित	॥)
अच्छी कहानियाँ (अप्राप्य)	१।)
गद्य-रत्नमालिका ,,	१।)
पद्य-रत्नमालिका ,,	१॥)
सूर: जीवनी और ग्रंथ ,,	१)
काव्य-कुसुमांजलि ,,	१॥)
गद्य-कुसुमांजलि ,,	१।)
साहित्यिकों के संस्मरण	१॥)
पुण्य स्मृतियाँ ,,	१॥)
'रासो' का पद्मावती 'समय'	१)
प्रताप-समीक्षा	१।)
साकेत-समीक्षा	२॥)
कामायनी-मीमांसा	१)
प्रेमचंद : ग्रामसमस्या	१)
हिंदी गद्य का संक्षिप्त इतिहास	१॥)
हमारे गद्य निर्माता	२)
२५ बालोपयोगी पुस्तकें	७)



श्री प्रेमनारायण टंडन

हिन्दी-सेवी-संसार

पहला खण्ड

हिन्दी-सेवियों का परिचय

अंजनीनंदनशरण, (शीतला सहाय)—'मानस' के टीकाकार; **शि.**—बी. ए., एल-एल. बी. ; **प्रका.**-मानस-पीयूष, विजय-पीयूष; **वि.**-श्रीरूपकला जी के शिष्य, आजकल अयोध्या में क्षेत्र-संन्यास लिया है ; **प.**—पीयूष-कार्यालय, नादुरा, बरार।

अंबाप्रसाद 'सुमन'-**ज०**-मार्च १९१६; **शि०**-प्रारम्भिक मिडिल स्कूल में, मैट्रिक और इंटर-धर्म समाज कालेज, अलीगढ़, एम० ए० (हिंदी) आगरा वि० वि० ; **प्र०**—महात्मा गाँधी; **सा०**-'शिक्षा सुधा' पत्र का संपा०, ब्रज सा०मंडल की स्थायी समिति के सद०; **अप्र०**—हि० सा० के अंग, अन्तर्दाह (कवि०) ; **वर्त०**—अध्यापक, **प०**-काव्य-कुटी, सासनी, अलीगढ़।

अंबिकादत्त त्रिपाठी—**ज०**—१८९४ आजमगढ़ ; **प्रका०**—चर्खा, सीय-स्वयंवर नाटक, भंग में रंग, कृष्णकुमारी, बाल-गीतावली, सत्संग-महिमा, स्वराज्यसीढ़ी ; **वि०**—**स्था०**-साहित्यसागर ; श्रीमद्भगवद्गीता का हिंदी अनुवाद किया है; **प०**—ठि० रामनारायण मिश्र, शेखपुरी, पो० सुरापुर, सुलतानपुर।

अंबिकाप्रसाद उपाध्याय आचार्य सा०—हिन्दू वि० वि० काशी के संस्कृत कालेज के पाठ्यक्रम में हिंदी के समर्थक; **वि०**—संस्कृत, पाली, प्राकृति के विद्वान्, **प०**—प्रोफेसर, संस्कृत कालेज, काशी-विश्वविद्यालय, बनारस।

अंबिका प्रसाद वर्मा 'दिव्य'—**ज०**—१६ मार्च, १९०७ आजमगढ़; **शि०**—एम० ए० ; **प्रका०**—दिव्य दोहावली, मनोवेदना स्रोतस्विनी, निमियाँ निकुंज, उमरखैयाम की रूबाइयाँ—अनु०; **वि०**—सफल चित्रकार ; **प०**—प्रो. सवाई महेंद्र इंटर कालेज, टीकमगढ़।

अंबिकाप्रसाद वाजपेयी—**ज०**—३० दिसम्बर, १८८० ; **शि०**—कानपुर, अँगरेजी, संस्कृत, प्राकृत, उर्दू ; **सा०**—संपा० 'हिन्दी बंगवासी' कलकत्ता, 'नृसिंह', 'भारत-मित्र' कलकत्ता (१९११-१९), 'स्वतंत्र' काशी (१९२०-३०); **प्रका०**—हिंदी-कौमुदी, हिंदी पर फारसी का प्रभाव, अभिनव हिंदी-व्याकरण, शिक्षा (अनु०),

हिंदुओं की राजकल्पना, भारतीय शासन-पद्धति ; अप्र०—अनेक आलोचनात्मक और सामयिक निबन्ध-संग्रह ; वि०—काशी में २६ वें अखिल भारतीय हिं० सा० सम्मेलन के सभापति ; प०—कलकत्ता।

अंबिकालाल श्रीवास्तव—ज०—१९०७; शि०—एम० ए०, सा० रत्न, आगरा ; सा०—नागरी-प्रचारिणी सभा, हरदोई के साहित्य-मंत्री ; प०—अध्यापक, बी० के० इंटर कालेज, हरदोई।

अंबिकासिंह दत्त—प्रका०—सिंदूर और स्वदेश तरंग; अप्र०—कई पुस्तकें ; प०—छाप सुदर्शन पत्रालय, मशरक, सारन।

अंशुमान शर्मा—ज०—मई १९२४ ; शि०—शास्त्री, सा० रत्न, सा० लं०, काशी वि० वि० और विद्यापीठ देवघर ; सा०—संस्था० साहित्य-मन्दिर, राष्ट्रीय महाविद्यालय, सेवती ; प्रका०—साहित्य-दिग्दर्शन, भारतीय साहित्य और साहित्य-स्रष्टा, चिकित्सा-तत्व दर्शन, प्राच्य और पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान ; प०—मखदुमपुर, गया, बिहार।

अक्षयलाल झा—आयुर्वेद-संबंधी लेखक ; प्रका०—औषधि के उपयुक्त फलों के प्रयोग, सूखे फलों के प्रयोग, त्रिफला के प्रयोग, ताजे फलों के प्रयोग, व्यंजनों के प्रयोग, फूलों के चुटकुले ; प०—जागढ़, मुजफ्फरपुर।

अखिलानंद शर्मा—शि०—पंजाब, सा०–युक्तप्रांत के वहिष्कृत प्रदेश 'जौनसार बाबर' में हिंदी प्रचार; प्रका०–स्फुट कहानियाँ तथा लेख; अप्र०–मानवता का कलंक, प्रगति पथ पर, पद चिन्ह; वर्त०–'देहात' साप्ताहिक के प्रकाशन की व्यवस्था कर रहे हैं ; प०—सारस्वत सदन, पिलानी, जयपुर।

अखिलेशशर्मा–ज०–१९०८ ; शि०—उर्दू और संस्कृत ; प्रका०–स्फुट ; अप्र०—महर्षि दयानंद, मधुवन; प०–अध्यापक, महरहटा, सीतापुर।

अगरचंदनाहटा–ज०–१९१० ; प्र० – विधवा-कर्तव्य; प्रका०—ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह, जिन-चंद सूरि, तथा भिन्न पत्र-पत्रिकाओं

में प्रकाशित प्राचीन साहित्यिकों से संबंधित अनुसंधान–विषयक लेख, राजस्थान में हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज (दूसरा भाग), विधवा-कर्तव्य, जिनदत्त सूरि, जसवंत–उदोत; अप्र०—हिंदी ग्रंथों की खोज का तीसरा भाग, ज्ञानसार-पदावली ; वि०–आपके पास लगभग १० हजार हस्तलिखित और ८ हजार मुद्रित पुस्तकों का संकलन है ; सा०— अपने स्वर्गीय पिता की स्मृति में श्रेष्ठ राजस्थानी ग्रंथ पर १००) का पुरस्कार स्थापित किया है, राजस्थान भारती के सह० संपा० हैं, अभय जैन ग्रंथमाला की स्थापना, बीकानेर के जैन ग्रंथों की खोज और अनेक के पुनरुद्धार का कार्य कर एक अभाव की पूर्ति की है ; प०—नाहटों की गवाड़, बीकानेर ।

अच्युतानंद परमहंस, स्वामी, सरस्वती ज०–१८७० ; शि०–काशी ; सा०—'परिव्राजक-मंडल' काशी, जो आज 'नीति-वर्धक सभा' है और 'वनिता–आश्रम' ; प्रका० — शांति - साधन, मृत्यु-पथ-प्रदर्शक, उपकार-महत्त्व, भक्तियोग-रसामृत ; अप्र०—कर्म-रहस्य, दिनचर्या, अच्युतज्ञान-अमृत सागर ; प०—आनंदाश्रम, नर्मदा तीर, बड़वाहा, मध्यभारत ।

अच्युतानंद सिंह—ज०—१९१४, साहित्य-प्रेस के स्वामी और संचालक ; प्रका०—'गंगा' इत्यादि विविध पत्रिकाओं में स्फुट लेख ; प०—'सहित्य-सेवक'-कार्यालय, छपरा, बिहार ।

अद्भुत शास्त्री, आचार्य—सा०—'आज के हिंदी-सेवी' नामक बृहत् ग्रंथ के संपादन में लगे हैं ; प्रका०—स्फुट ; प०—हिंदी-सेवी-कार्यालय, रतनगढ़, राजस्थान ।

अनंतप्रसादविद्यार्थी—ज०—१९१२, प्रयाग ; शि०—एम० ए० ; सा०—भूत० संपा० 'न्यू आर्डर' १९३६, 'अभ्युदय', 'जीवन ज्योति', 'देशदूत', 'बालसखा', 'गृह-लक्ष्मी', 'हल'; प्रका०—लगभग ४०, मुख्य हैं—अन्तर्नाद (कवि); उप०—अतृप्त, ऊर्ध्ववृत, जीवित समाधि, हृदय का कोना, निरपराधी ; कहा०—त्रिकोण, जीवन के सपने, झलकियाँ, ग्रामीण

जीवन के चित्र, चुम्बन, चंद्रग्रहण; अनु०—धरती माता, कज्जाक, टालस्टाय की कहानियाँ, इंदीवर, धूप-छाँह, तख्ती, महिलाओं से, अमृत या विष; जी०—च्यांगकाई-शेक, महात्मा गाँधी, मिस्टर चर्चिल, कमालपाशा; प०—संपादक 'नया युग', प्रयाग।

अनंतवामन वाकणकर—ज०—१८६४; शि०—धार, इन्दौर, बी० ए० प्रयाग वि० वि०, बी० टी०; सा०— सभासद हिंदी-साहित्य-समिति धार, भूत० मंत्री विक्टोरिया जेनरल लाइब्रेरी धार, सद०—भारत इतिहास-संशोधक मंडल पूना, महाराष्ट्र ब्राह्मण सभा धार, मंत्री विक्रम मेमोरियल कमेटी, असोसिएटेड मेम्बर इण्डियन हिस्टारिकल रेकार्डस्; प्रका०—कालिदास और विक्रमादित्य-काल, भोजदेव की साहित्य-सेवा, धार व मांडव; प०—लेक्चरर, आनंद इंटर कालेज, धार।

अनिरुद्ध द्विवेदी—ज०—१६२१, महुली, बस्ती; शि०—व्या० शास्त्री, सा० र०, सा० आ०; प्रका०—संस्कृत साहित्यकी महिमा, जाति-उद्धार; प०—अध्यापक राधाकृष्ण सार्वजनिक संस्कृत पाठशाला, गोला गोकरननाथ, खीरी।

अनिरुद्ध शास्त्री (दुर्गाप्रसाद अग्रवाल)—ज०—१६११, झाँसी; शि०—साहित्य शास्त्री (प्रथम) काशी, एम० ए० कानपुर, भूत० रिसर्च स्कालर बम्बई वि० वि०; प्रका०—वीणापाणि, ज्योतिर्मयी; सा०—अभिनव मेघ, अभिनव शकुन्तला नाटक; सा०—देशरत्न बिड़लाजी के निकट सम्पर्क में रहे, भूत. संपा० 'सिंह' मासिक, १६४५ के झांसी में होनेवाले बुन्देलखण्ड हि० सा० स० के प्रधानमंत्री; विक्रम-विद्यालय की स्थापना में सहयोग; वर्त०—हिन्दुस्तान टैक्सटाइल्स पब्लिकेशंस लि० कलकत्ता के डाइरेक्टर; प०—३२ महर्षि देवेन्द्र रोड, कलकत्ता अथवा सदर बाजार, झाँसी।

अनिलकुमार—ज०—२ दिसम्बर, १६२४; शि० सा० रत्न; प्रका०—स्फुट; वर्त०—नागपूर रेडियो के हिन्दी विभाग में कर्मचारी; प०—भीसीकर निवास, इतवारी, नागपूर।

अनुसूयाप्रसाद बहुगुणा—शि०—बी० एस–सी०,एल–एल० बी० ; **सा०**—एम.एल.ए. १६३२ से, गढ़वाल में कांग्रेस-आन्दोलन के जन्मदाता, असहयोग-आन्दोलन में अनेक बार जेल-यात्रा ; स्थानीय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सभापति (१६३१–३५) ; 'उत्तर भारत' नामक मासिक पत्रिका के संचा०; **प०**—नंदप्रयाग, गढ़वाल।

अनूपलाल मंडल—ज०—१६०० ; शि०—सा० रत्न ; **सा०**—सर्वप्रथम बिहारी कथाकार जिनके उपन्यास (मीमांसा) का फिल्म 'बहू-रानी' बनाया गया ; सेठिया कालेज बीकानेर के भूतपूर्व अध्यापक , अब युगान्तर साहित्य-मंदिर के संचालक ; भूत. संपा. 'कैवर्त्तकौमुदी'; **प्रका०**—समाज की वेदी पर, सविता, निर्वासिता, साकी, रूपरेखा, ज्योतिर्मयी, मीमांसा, गरीबी के दिन, ज्वाला, वे अभागे, अभिशाप, दर्द की तसवीरें, हिमसुधा, अलंकार-दीपिका, मुसोलिनी का बचपन, नारी—एक समस्या, दस बीघे जमीन, आवारों की दुनियाँ आदि; **प०**—युगान्तर साहित्य-मंदिर भागलपुर, बिहार।

अनूप शर्मा—**शि०**—सीतापुर, लखनऊ और काशी; **प्रका०**—सुनाल, सुमनांजलि, सिद्धार्थ, फेरि मिलिबो–चंपू; **अप्र०**—सिद्धशिला; **वि०**—'मिलिबो' 'चंपू' पर देव-पुरस्कार मिला, 'भूषण' की उपाधि; **प०**—हेडमास्टर, के० ई० एम० हाई स्कूल, धामपूर, बिजनौर।

अन्नपूर्णानंद—अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बन्धित; **प्रका०**—मेरी हजामत, महाकवि चच्चा ; **अप्र०**—अनेक स्फुट संग्रह ; **प०**—जालपादेवी, बनारस।

अभय कुमार यौधेय,—**ज०**—२१ अगस्त, १६२३ लाहौर; **प्रका०**—अंधकार के पार, अनामिका, मेरी हार, स्कंध, चंद्रापीड़, मेरी मनुहार, विश्व-समीक्षा, मार्शल की सलामी; **अप्र०**—डंके की चोट, महत्वाकांक्षा, वेश्या कौन; **प०**—सेंट्रल पिक्चर्स, बम्बई।

अभयदेव—मासिक 'अलंकार' के भूत० संपादक; **प्रका०**—वैदिक विनय–तीन भाग, ब्राह्मण की गौ,

तरंगित हृदय, वैदिक उपदेश-माला; त्रि०—कई साल तक त्रैमासिक 'अदिति' के संपादक-प्रकाशक रहे; प०—'अदिति'-कार्यालय, पो० बा० ८५, दिल्ली।

अभिराम शर्मा०—ज०—१९०३; अभिराम पुस्तकमाला के व्यवस्थापक; प्रका०—मुक्त संगीत (जब्त थी, रोक हटा ली गयी) अचल अंबर, विजय-विलास; अप्र०—दो-तीन कविता-संग्रह; प०—अभिराम-निवास, बादशाही नाका, कानपुर।

अमरनाथ झा—स्व० सर गंगानाथ झा के ज्येष्ठ सुपुत्र; ज०—१५ फरवरी १८९७; सा०—अखिल भारतीय हि० सा० सम्मेलन के तीसवें अधिवेशन, अबोहर (पंजाब) के सभापति, प्रयाग म्युनिसिपल बोर्ड के भूत० सीनियर वाइस चेयरमेन; प्रयाग सार्वजनिक पुस्तकालय के अवैतनिक मंत्री; यू० पी० ओलंपिक एसोसिएशन के सभापति; अखिल भारतीय ओरियंटल कॉंफ्रेंस के हिंदी-विभाग के सभापति (१९२९); चेयरमैन इंटर-यूनिवर्सिटी बोर्ड (१९३६—३७); लीग आव नेशंस ऐडवाइजरी कमेटी के सदस्य (१९३४); लंदन पोएट्री सुसाइटी के उपसभापति; इँगलिश एसोसिएशन की उत्तरप्रदेशीय शाखा के सभापति; प्रयाग-विश्वविद्यालय के उपकुलपति १९३८ से; पश्चात, काशी वि. वि० के उपकुलपति; कई वर्ष से पबलिक सरविस कमीशन उत्तर प्रदेश के आप सभापति हैं; प्रका०—शेक्सपीरियन कमेडी, लिटरेरी रीडिंग्ज, ऐंथॉलोजी आव माडर्न वर्स, पद्मपराग, संस्कृत-टीका दशकुमारचरित, हिंदी-साहित्य-संग्रह, हिंदी-साहित्य-रत्न, अनेक स्फुट लेख और भाषण; प०—जार्ज टाउन, प्रयाग।

अमरनारायण अग्रवाल—अर्थशास्त्र के लेखक—ज०—८ जूलाई १९१६; शि०—एम० ए० प्रयाग वि० वि०, अपने शिक्षा-काल में क्वीन विक्टोरिया जुबिली मेडल, फैकल्टी आव कामर्स मेडल प्राप्त किये; प्रका०—समाज-वाद की रूपरेखा, भारतवर्ष का

आर्थिक भूगोल, ग्रामीण अर्थशास्त्र और सहकारिता, अर्थशास्त्र का परिचय, अर्थशास्त्र-प्रवेशिका, व्यापारिक पद्धति और यंत्र, भारतवर्ष के लिए उद्योगपतियों की योजना, यू० के० सी० सी० से भारत को शिकायत और लड़ाई की कहानियाँ; **वि०**—कृतियाँ मौलिक हैं, अर्थशास्त्र और वाणिज्य के अधिकारी विद्वान ; सर्वप्रथम रचना 'समाजवाद की रूपरेखा' पर हि० सा० स० से मुरारका पारितोषिक प्राप्त; **प०**—६६ ए०, कुंड्ड गार्डेंस, प्रयाग।

अमरनारायण माथुर—**ज०**—१९१९; **सा०**—भूत० संपा. 'जयपुर समाचार'; वर्तमान स्थाना पन्न संपा० राष्ट्रीय पत्र 'जयभूमि'; **अप्र**,—जीवनज्वाला, हृदय-उत्पीड़न ; **प०**—'जयभूमि' कार्यालय, जयपुर।

अमरसिंह ठाकुर—मेजर जनरल ; स्व० चंद्रधर शर्मा गुलेरी के शिष्य हैं ; हिंदी की उन्नति में योग देते हैं; **प०**—अजयराजपुरा, जयपुर।

अमृतलाल नागर—**ज०**—१७ अगस्त, १९१६ ; **जा०**—बँगला, तामिल, गुजराती, मराठी ; **प्रका०**—महाकाल, सेठ बाँकेलाल, वाटिका, अवशेष, नवाबी मसनद, तुलाराम शास्त्री; **अनु०**—प्रेम की प्यास, काला पुरोहित, बिसाती, गदर की झाँकी; **बालो०**—नटखट चाची, आदमी, नहीं! नहीं!; **वि०**—संगम, कुँवारा बाप, उलझन, किसी से न कहना, पैगाम, पराया धन, आगे कदम, राजा, वीर कुणाल, कल्पना, मीरा और गुंजन आदि फिल्मों के संवाद-लेखक ; **प०**—चौक, लखनऊ।

अमृतलाल नाणावटी—**प्रका०** हिन्दुस्तानी बालपोथी भाग १ और २, हिन्दुस्तानी छोटी कहानियाँ, हिन्दुस्तानी कहानियाँ भाग १, फुलवारी; **प०**—प्रधान मंत्री, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा।

अमृतवाग्भव, आचार्य—दर्शन के लेखक—**सा०**—संस्था०, श्रीस्वाध्यावसदन; **प्रका०**—श्रीआत्मविलास, श्रीराष्ट्रालोक, श्रीपरशुराम स्तोत्र, श्रीसह्याद्रीप हृदय और श्रीपंचस्तवी; **अप्र०**—मत्सक्रांताशतक;

वि०—वीतराग महात्मा और उपासक ; प०—सोलन, पंजाब।

अमरेंद्रनारायण—विज्ञान के लेखक ; ज०—मुजफ्फरपुर ; शि०—एम. एस-सी ; अप्र०—विज्ञान-विषयक स्फुट रूप में प्रकाशित लेख-संग्रह ; प०—अध्यापक, साइंस कालेज, पटना।

अयोध्यानाथ शर्मा,—ज०—८ दिसंबर १८६७; शि०—एम. ए.; सा०—संयो० हिंदी बोर्ड आव स्टडीज और सद० फैकल्टी आव आर्ट्स (आगरा-विश्वविद्यालय); अनेक हिंदीप्रचारक समितियों के सहायक और परामर्शदाता; 'शब्द-सागर' के सहायक संपादक; अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, सनातनधर्म कालेज, कानपुर ; प्रका०—उज्ज्वल तारे, गद्यमुक्तावली, गद्य-मुक्ताहार, प्रभावती, साहित्यकुसुम, बालव्याकरण; प०—आर्यनगर, नवाबगंज, कानपुर।

अयोध्या प्रसाद झा—ज०—१९११; सा०—गोपालचंद पाण्डेय के साथ 'प्रगति' नामक पत्र का संपा०; प्रका०—विचित्र-दुनिया, हवाई जहाज, जापान, स्वर्ण अभियान, कई पाठ्य पुस्तकों का संपादन; प०—आनन्द आश्रम, चंपारन, भागलपुर।

अयोध्या प्रसाद तिवारी—ज०—जूलाई १८६४; प्र०—रहिमन-विनोद ; प्रका०—माडर्न ज्याग्रफी आफ बीकानेर, राजपूताने का भूगोल, बीकानेर की ऐतिहासिक कथाएँ, इन्फैंट क्लास अरिथमेटिक, सरल बहीखाता, हस्तरेखा-विचार; संपा.—रहिमन विनोद, गोराबादल की कथा, करणी-महिमा, आड़ी संग्रह; वि०—भूत० डिप्टी इंस्पेक्टर आफ स्कूल्स, बीकानेर ; प०—त्रिपाठी भवन, औरैया, इटावा।

अ० राम० अय्यर—हिंदी-प्रेमी विद्वान; शि०—एम० ए०; ज्ञा०—संस्कृत, बँगला, तामिल, अँगरेजी; सा०—तामिलनाड हिं० प्रचार सभा के कोषाध्यक्ष, 'हिन्दी पत्रिका' के संपा०, स्थानीय हिंदी-मंडल के मंत्री, हिंदी-प्रचार में लगभग २० वर्षों से संलग्न; प०—आचार्य, नेशनल कालेज, तिरुचिरापल्ली।

अरुण—ज०—३ जनवरी

१६२८; सा०—मेरठ विद्यार्थी काँग्रेस के प्रधान, कालेज इतिहास परिषद के उपमंत्री, प्रांतीय रक्षादल के वार्ड कमांडर; प्रका०—नरक का कीड़ा, जय काश्मीर, प०—निष्काम प्रेस, मेरठ।

अलखनिरंजन पांडेय —ज०—२४ अक्टूबर १६१५; शि०—एम० ए० (अँगरेजी, हिंदी, संस्कृत) आगरा वि. वि., बी० टी०, सा० शास्त्री, सा० आ०; काशी वि० वि० पुस्तकालय विज्ञान का प्रमाणपत्र; अप्र०—प्रसाद जी की नाट्य कला, स्फुट लेख; वि०—मनोविज्ञान पर एक पुस्तक लिख रहे हैं; प०—अध्यक्ष संस्कृत कालेज, बनारस।

अलखमुरारी हजेला—ज० १२ अक्टूबर १६१८; शि०—एम. ए, एल-एल. बी. कानपुर और प्रयाग वि० वि०; प्र०—उधार (एकांकी नाटक); प्रका०—उद्‌गार, रनिया, नेता, मजदूरिन, अब भी प्यासा हूँ, मनीआर्डर, लाली, उन्माद, समाज (कहानी), आरती, कुसुमित, दीपावली, सौंदर्य, विहंग का वसन्त, वे किसी दिन आवेंगे, परिवार, मानव सभ्यता के निर्माण में युद्ध का योग - दान, जनता के हित में आँकड़े, पैसा हीन, भारतीय महिला, भारत में स्त्री-शिक्षा, सह-शिक्षा, स्त्री-समाज की स्वतन्त्रता (लेख); अप्र०—वेश्यागामी, जरूरत, दारू, पगले की आँख-मिचौनी (कहानी), गौतम का प्यार, जोगी, उम्मीद का चिराग (गद्य काव्य), हिन्दू समाज क्या गौरव हीन हो चुका है (लेख); वर्त०—इनकम टैक्स आफिसर, पा०—आजाद मारकेट, सीशामऊ, कानपुर।

अवधनन्दन—हिन्दी प्रेमी प्रचारक; ज०—१६०० छपरा, बिहार; सा.—१६२० से दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार का कार्य कर रहे हैं; १६२० से ३२ तक दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री रहे; अनेक केन्द्रों का संचालन किया; वर्त० संपा० 'हिन्दी पत्रिका'; प्रका.—अनेक पाठग्रन्थ; प०—मन्त्री तामिलनाड हिन्दी प्रचार सभा, तिरुचिरापल्ली।

अवध नारायण— सा० —१६०७ से देश-सेवा में रत, दरभंगा

की सबजज्जी में सिरश्तेदार, अब रिटायर; **प्रका०** — विमाता, झलक ; **अप्र०**—सेकेंड हैंड लेडी; **प०**—शुभकरपूर, दरभंगा।

अवध मणि मिश्र—**ज०**—१ नवंबर, १९२२ प्रतापगढ़; **शि०**—प्रतापगढ़; **अप्र०**—ग्रामीण पहेलियों का संग्रह, दीन-दशा (उप०); **प०**—अग्रीकल्चरल आफिस, प्रताप गढ़, अवध।

अवध बिहारी पाँडेय—राजनीति-इतिहास के लेखक; **ज०**—१६ नवम्बर, १९२०; **शि०**—कानपूर-प्रयाग, हाई स्कूल–प्रथम श्रेणी बोर्ड में द्वितीय स्थान, इंटर–प्रथम श्रेणी, छात्रवृत्ति–प्राप्त, बी० ए०–प्रथम श्रेणी, एम० ए० प्रथम श्रेणी, सर्वश्रेष्ठ छात्र की उपाधि; **प्र०**—१९३५; **प्रका०**—भारतवर्ष का इतिहास, इङ्गलैंड का वैधानिक इतिहास, नागरिक शास्त्र की रूप-रेखा, भारतीय नागरिकता तथा शासन-पद्धति, भारतीय शिक्षा-विकास की कथा, **वि०**—स्फुट लेख नागरी-प्रचारिणी पत्रिका आदि में लिखे; **सा०**—भूत० संयोजक इतिहास–वर्ग, हिंदी सा० स० प्रयाग; **पता०**—प्रोफेसर इतिहास विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी।

अवधबिहारी मालवीय 'अवधेश'—**ज०**—१८९५ रायबरेली; **सा०**—भूत० सभापति हिंदी साहित्य-मंडल कानपुर; **प्रका०**—अवधेश कुसुमांजलि, वीरोक्ति, अवधेश-तरंग, पंचामृत, अवधेश-पचासा; **पं०**—गणेशनगर, कानपुर।

अवधबिहारीलाल 'अवध', **ज०**—१८९४, जमानिया, गाजीपूर; **शि०**—गाजीपूर, प्रयाग, बी० ए०, एल-एल० बी०. सा० वि०; **ज्ञा०**—संस्कृत, बँगला, उर्दू, फारसी ; **सा०**—ना० प्र० स० काशी के सभासद्, हि० सा० सम्मेलन के परीक्षक और आर्यविद्यालय काशी के अंतरंग सभासद् ; **प्रका०**—हमारे इतिहास-निर्माता, चिपटी खोपड़ी ; **प०**—वकील, ६५।३६१ बड़ी पियरी, काशी।

अवधबिहारी शरण—इतिहासज्ञ; **शि०**–एम. ए., बी. एल. ; **प्रका०**—मेगास्थनीज का भारत-विवरण ; **अप्र०**—शिक्षा-संबंधी और साहित्यिक लेखो के संग्रह ; **प०**—वकील, आरा, विहार।

की सबजज़ी में सिरश्तेदार, अब रिटायर; प्रका० — विमाता, झलक ; अप्र०—सेकेंड हैंड लेडी; प०—शुभकरपूर, दरभंगा।

अवध मणि मिश्र—ज०—१ नवंबर, १९२२ प्रतापगढ़; शि०—प्रतापगढ़; अप्र०—ग्रामीण पहेलियों का संग्रह, दीन-दशा (उप०); प०—अग्रीकल्चरल आफिस,प्रतापगढ़, अवध।

अवध विहारी पाँडेय—राजनीति-इतिहास के लेखक; ज०–१६ नवम्बर, १९२०; शि०—कानपूर-प्रयाग, हाई स्कूल–प्रथम श्रेणी बोर्ड में द्वितीय स्थान, इंटर–प्रथम श्रेणी, छात्रवृत्ति–प्राप्त, बी० ए०–प्रथम श्रेणी, एम० ए० प्रथम श्रेणी, सर्वश्रेष्ठ छात्र की उपाधि; प्र०—१९३५; प्रका०—भारतवर्ष का इतिहास, इङ्गलैंड का वैधानिक इतिहास, नागरिक शास्त्र की रूप-रेखा, भारतीय नागरिकता तथा शासन–पद्धति, भारतीय शिक्षा-विकास की कथा, वि०—स्फुट लेख नागरी-प्रचारिणी पत्रिका आदि में लिखे; सा०—भूत० संयोजक इतिहास–वर्ग, हिंदी सा० स० प्रयाग; पता०—प्रोफेसर इतिहास विभाग,हिन्दू विश्वविद्यालय,काशी।

अवधविहारी मालवीय 'अवधेश'—ज०—१८९५ रायबरेली; सा०—भूत० सभापति हिंदी साहित्य-मंडल कानपुर; प्रका०—अवधेश कुसुमांजलि, वीरोक्ति, अवधेश-तरंग, पंचामृत, अवधेश-पचासा; पं०—गणेशनगर, कानपुर।

अवधबिहारीलाल 'अवध', ज०—१८९४,जमानिया,गाजीपूर; शि०—गाजीपूर, प्रयाग, बी० ए०, एल-एल० बी०. सा० वि०; जा०—संस्कृत, बँगला, उर्दू, फारसी ; सा०—ना० प्र० स० काशी के सभासद्, हि० सा० सम्मेलन के परीक्षक और आर्यविद्यालय काशी के अंतरंग सभासद् ; प्रका०—हमारे इतिहास-निर्माता, चिपटी खोपड़ी ; प०—वकील, ६५।३६१ बड़ी पियरी, काशी।

अवधबिहारी शरण—इतिहासज्ञ; शि०–एम. ए., बी. एल. ; प्रका०—मेगास्थनीज का भारत-विवरण ; अप्र०—शिक्षा-संबंधी और साहित्यिक लेखो के संग्रह ; प०—वकील, आरा, विहार।

१६२८; **सा०**—मेरठ विद्यार्थी काँग्रेस के प्रधान, कालेज इतिहास परिषद के उपमंत्री, प्रांतीय रक्षादल के वार्ड कमांडर ; **प्रका०**—नरक का कीड़ा, जय काश्मीर, **प०**—निष्काम प्रेस, मेरठ।

अलखनिरंजन पांडेय — **ज०**—२४ अक्टूबर १६१५; **शि०**—एम० ए० (अँगरेजी, हिंदी, संस्कृत) आगरा वि. वि., बी० टी०, सा० शास्त्री, सा० आ०; काशी वि० वि० पुस्तकालय विज्ञान का प्रमाणपत्र; **अप्र०**—प्रसाद जी की नाट्य कला, स्फुट लेख ; **वि०**—मनोविज्ञान पर एक पुस्तक लिख रहे हैं; **प०**—अध्यक्ष संस्कृत कालेज, बनारस।

अलखमुरारी हजेला—**ज०** १२ अक्टूबर १६१८; **शि०**—एम. ए, एल-एल. बी. कानपुर और प्रयाग वि० वि० ; **प्र०**—उधार (एकांकी नाटक); **प्रका०**—उद्गार, रनिया, नेता, मजदूरिन, अब भी प्यासा हूँ, मनीआर्डर, लाली, उन्माद, समाज (कहानी), आरती, कुसुमित, दीपावली, सौंदर्य, विहंग का वसन्त, वे किसी दिन आवेंगे, परिवार, मानव सभ्यता के निर्माण में युद्ध का योग - दान, जनता के हित में आँकड़े, पैसा हीन, भारतीय महिला, भारत में स्त्री-शिक्षा, सह-शिक्षा, स्त्री-समाज की स्वतन्त्रता (लेख) ; **अप्र०**—वेश्यागामी, जरूरत, दारू, पगले की आँख-मिचौनी (कहानी), गौतम का प्यार, जोगी, उम्मीद का चिराग (गद्य काव्य), हिन्दू समाज क्या गौरव हीन हो चुका है (लेख); **वर्त०**—इनकम टैक्स आफिसर, **पा०**—आजाद मारकेट, सीशामऊ, कानपुर।

अवधनन्दन—हिन्दी प्रेमी प्रचारक; **ज०**—१६०० छपरा, बिहार; **सा.**—१६२० से दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार का कार्य कर रहे हैं; १६२० से ३२ तक दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री रहे; अनेक केन्द्रों का संचालन किया; वर्त० संपा० 'हिन्दी पत्रिका'; **प्रका.**—अनेक पाठग्रन्थ; **प०**—मन्त्री तामिलनाड हिन्दी प्रचार सभा, तिरुचिरापल्ली।

अवध नारायण— **सा०** — १६०७ से देश-सेवा में रत, दरभंगा

अलीशेर 'अली'—ज०—१६१८; **प्रका०**—अलीशेर-सतसई; **प०**—अध्यापक, हरी टाउन स्कूल, मेरठ।

अवनींद्र कुमार—ज०—मार्च १६०४ दानापूर, पटना; शि०—गुरुकुल काँगड़ी हरद्वार; **सा०**—संपा० 'आर्य' साप्ताहिक १६२८-३०, प्रोफेसर राजनिति विहार विद्यापीठ १६३०-३१, दानापूर काँग्रेस के प्रधान मंत्री १६३१, 'नवयुग' के प्रधान संपा० १६३५-३६, सह० संपा० 'नवहिंदुस्तान' १६३६-४४; प्रधान संचा० 'नवयुग' १६४५-१६४७, अप्रेल १६४७ से 'नवभारत' के प्रधान संपा०; **प्रका०**—साम्राज्यवाद, घर-बाहर, ऐतिहासिक कहानियाँ; **प०**— इतिहास-सदन, कनाट सर्कस, नई दिल्ली।

अशरफी मिश्र,—**शि०**—बी० ए०; **सा०**—भूत. सपा. दैनिक 'शांति', भागलपुर और दैनिक 'जनता', पटना; **प्रका०**—धनकुबेर जनक कारनेगी; प०—गोसाईगाँव, भागलपुर, बिहार।

अशोक—ज०—मई १६२२; शि०—बी० ए०, सा०. आ०, देवघर, और पंजाब विश्व वि०—सब परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में; **सा०**—भूत. संपा० 'इन्द्रधनुष', 'गौरव', 'आरती'; प्रका०—फूलझड़ी, स्वप्न लोक (कवि०) घुनुघुना, राजाभैया, आदि दो दरजन बालोपयोगी पुस्तकें,—**अप्र०**—एक दरजन पुस्तकें; प०—अशोक निकुंज, बजरिया रोड़, नागपुर २।

आत्मानन्द मिश्र—ज०—१ सितंबर, १६१३; शि०—एम. ए., बी०एस-सी, एल-एल. बी, बी. टी. काशी व प्रयाग वि० वि०; **अप्र०**—आचार्य द्विवेदी, प्रेमचन्द, अयोध्या सिंह, रायकृष्णदास की आलोचनात्मक जीवनियाँ ग्रन्थ रूप में तैयार हैं; प०—ट्रेनिंग कालेज, जबलपुर।

आत्माराम देवकर—**प्रका०**—पानी का बुड़बुड़ा, माया मरीचिका, आदर्श मित्र, त्रैलोक सुंदरी; वि०—शिक्षा विभाग से पेंशन पा रहे हैं, वयोवृद्ध साहित्य-सेवी, नेत्र विहीन होने से आप की दशा अत्यन्त करुण हो गयी है, आपकी

कई अच्छी रचनाएँ अप्रकाशित हैं; रायल्टी पर प्रकाशनार्थ देना चाहते हैं प०—हटा, दमोह।

आदित्यप्रसाद सिंह—ज०—जूलाई १८६३; शि०—सा० भू०, मध्यमा; प्रका०—अनुवाद-शिक्षक, निबंध-शिक्षक, साहित्य, सुबोध व्याकरण-पीयूष, हिन्दू-पर्व-प्रकाश, दृष्टान्त-तरंगिणी; अप्र०—तुलसी-सतसई; सा०—अध्यापक सम्मेलन के मंत्री, सद०—मिडिल स्कूल परीक्षा बोर्ड बनारस; प०—प्रधान अध्यापक, मिडिल स्कूल, आजमगढ़।

आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्याय—ज०—१९०६; शि०—संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश; सा०—प्राचीन संस्कृति और इतिहास के विशेषज्ञ; लगभग एक दरजन संस्कृत-प्राकृत ग्रन्थों के लेखक-सम्पादक; बम्बई वि० वि० में 'स्प्रिंजर रिसर्च स्कालर'; अखिल भारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के हैदराबाद अधिवेशन में पाली-प्राकृत-विभाग के सभापति; प०—प्राकृत(अर्द्धमागधी) के प्रोफेसर, राजाराम कालेज, कोल्हापुर।

आद्यादत्तठाकुर— सा०—'माधुरी' में लेख-समालोचनाएँ लिखीं; अप्र०—आलोचात्मक लेख-संग्रह; वि०—भूत०-संस्कृत अध्यापक, लखनऊ विश्वविद्यालय; प०—लखनऊ।

आनंद किशोर—सा०—पटना के भारतीय मण्डल, प्रसाद-परिषद, भारतीय स्वतंत्र-संघ, भारतीय-भवन, नगर हि० सा० स० तथा नागरी-प्रचारिणी सभा आदि के कार्य-कर्त्ता, प्रका०—स्फुट कहानियाँ-लेख; प०—रेणुका, आलमगंज, गुलजारबाग, पटना।

आनंदीलाल जैन—ज०—१५ सितम्बर, १९१६, जयपुर; शि०—न्यायतीर्थ, दर्शनशास्त्री, सा० शास्त्री, इंदौर; अप्र०—विश्वसंगीत (पाँच भाग), सामयिक और दार्शनिक निबंध-संग्रह; प०—संस्कृताध्यापक, एस-एस० जैन मिडिल स्कूल, जयपुर।

आरसी प्रसाद सिंह—ज०—१९ अगस्त १९११, दरभंगा; प्र०—'आम का पेड़' 'बालक' में १९२७ में प्रका०; सा०—शिक्षा-प्रसार में योग; प्रका०—कवि०—

आरसी, संचायिता, कलापी, नयी दिशा, पांचजन्य, जीवन और यौवन, चंदा मामा, आजकल, कहा०—पंचपल्लव, खोटा सिक्का, काल रात्रि, एक प्याला चाय, आँधी के पत्ते; वर्त—अध्यापक कोशी कालेज, खगड़िया, मुंगेर; वि०—तारामंडल द्वारा प्रकाशन; प०—एरौत, रोसड़ा, दरभंगा।

आशुतोष—शि०—बी. ए., साहित्यभूषण; **सा०**—भूत. उप सभा, शान्ति निकेतन, हिन्दी साहित्य मंदिर नागपूर के वर्त० मंत्री; **अप्र०**—कई एकांकी; प०—सदर बाजार, नागपुर।

आशुप्रसाद—ज०—१६०६; **प्रका०**—स्फुट; प०—मोतीहारी, बिहार।

इंद्रजीत नारायण—अर्थशास्त्र के लेखक, ज०—२ अक्तूबर १६१७ (सुहवल) गाजीपुर; **शि०**—एम. ए. (अर्थ०) प्रयाग वि. वि, एल. टी; **प्रका०**—मजदूर नेता (उप०), बड़नग (कहा०); **अप्र०**—भूल; प०—लखावटी, बुलन्दशहर।

इंद्रदत्त शर्मा—दर्शन के लेखक; ज०—१६१३; शि०—सा० आ०, दर्शन शास्त्री; **सा०**—भूत० सह० संपा० 'माधुरी' तथा संपा० 'आयुर्वेद केसरी', वर्त० संपा० 'सूत्रधार' (साप्ता०); **प्रका०**—स्फुट लेख और कहानियाँ; वि०—'नैषध' की हिंदी टीका कर रहे हैं; प०—कमलापुर, सीतापुर।

इंद्रदेव सिंह 'आर्य'—रसायनशास्त्र के लेखक; ज०—१६१४ होशंगाबाद; शि०—एम० एस-सी० (रसायन शास्त्र) एल०-एल० बी० नागपुर वि० वि०; **सा०**—रसायन शास्त्र के ग्रन्थों का हिन्दी में निर्माण, संपा० 'आर्य सेवक'; **प्रका०**—भारतीय नारी, क्रियात्मक रसायन शास्त्र; प०—अध्यापक, गोरेपेठ, नागपुर।

इन्द्रदेव सिंह रावत 'हरेश'—**प्रका०**—किसानगीत, राष्ट्रगीत, ग्राम्यगीत, वियोगी; प०—श्रीमारवाड़ी विद्यालय, देवरिया, गोरखपुर।

इंद्रनाथ मदान, डाक्टर—शि०—एम० ए०, पी०-एच०

डी०; प्रका०—अँगरेजी में—माडर्न हिंदी लिटरेचर, शरत्चंद्र चटरजी, प्रेमचंद; हिंदी में—हिंदी काव्य-विवेचना, हिन्दी-साहित्य-लेखक; वि०—प्रथम ग्रंथ पर आपको डाक्ट्रेट मिली है; पहले दयालसिंह कालेज लाहौर में अध्यापक थे; प०—पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाब विश्वविद्यालय, शिमला।

इद्रनारायण गुर्टू—ज०–१६११; शि०—काशी, प्रयाग और कलकत्ता; ज्ञा०—अँगरेजी, संस्कृत, बँगला; सा०—भूत., डालमियाँ शिक्षा विभाग के प्रधान निरीक्षक; वर्त. प्रधान संपादक 'नवयुग' साप्ताहिक दिल्ली; प०—३, दरियागंज, दिल्ली।

इन्द्रविद्यावाचस्पति—स्वामी श्रद्धानन्द के पुत्र; ज०—६ नवम्बर १८८६; शि०—गुरुकुल काँगड़ी; सा०—१६२० में दैनिक 'विजय' में पत्रकार, १६२२ में दैनिक 'अर्जुन' आरंभ, पश्चात् संपा०—'सद्धर्मप्रचारक', 'सत्यवादी', गुरुकुल कांगड़ी में ८ वर्ष तक अध्यापक, अब उपकुलपति हैं, नेशनल लैंग्वेज कनवेंशन की स्वागत समिति के अध्यक्ष; भूतपूर्व प्रधान स्थानीय जिला कांग्रेस कमेटी (१६३५-३६), प्रांतीय कांग्रेस कमेटी (१६३७), दिल्ली, स्वागत कारिणी सभा आल इंडिया कनवेंशन दिल्ली, और दलितोद्धार सभा दिल्ली, स्वातन्त्र्य संग्राम के तपे हुये सैनिक, तीन बार जेल गये; प्रका०—अपराधी कौन, नैपोलियन बोनापार्ट, प्रिंस बिसमार्क, गैरीबाल्डी, जवाहरलाल, मुगल साम्राज्य का पतन आदि दो दरजन से ऊपर पुस्तकें; प०—दैनिक 'वीर अर्जुन', दिल्ली।

इन्द्रा देवी गुप्त—ज०—२३ फरवरी, १६१३; शि०—बी. ए. क्रिश्यिन कालेज इन्दौर, एम. ए. स्वतंत्र रूप से, सा. र.; सा०—सद० मध्य भा० हिंदी सा० समिति इन्दौर; प्रका०—पुष्पांजलि, वन्या; प०—१ नार्थ तुकोगंज, दिलपसंद, इन्दौर।

इन्दु शास्त्री—ज०—५ सितम्बर १६०४; सा०—शिक्षा विभाग में हेडमास्टर, रेडियो के कलाकार, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

के कार्यकर्ता, सह० संपा० 'प्रभात'; अप्र०—कई नाटक जिनमें 'महर्षि वाल्मीकि' प्रमुख है और जिस पर स्वर्ण पदक मिला ; प०—प्रकाश एलेक्ट्रिक स्टोर, बुढ़ानागेट, मेरठ।

इलाचन्द्र जोशी—ज०—नवम्बर, १६०२, अल्मोड़ा ; ज्ञा०—प्रायः सभी आर्य-भाषाओं के साथ अँगरेजी और फ्रेंच; प्र०—१६१५; सा०—हस्तलिखित मासिक पत्रिका का संपा०, १६१५; १६२७ से प्रसिद्धि मिली ; अँग्रेजी के 'माडर्न रिव्यू' में भी लिखा ; अनेक पत्र-पत्रिकाओं के संपादक और उपसंपादक रहे ; भूत० संपा० 'विश्वमित्र' और 'विश्ववाणी'; प्रका०—घृणामयी, संन्यासी, चार उपन्यास (उप०), धूपलता (कहा०), विजनवती (कवि०), साहित्यसर्जना (आलो०), दैनिकजीवन और मनोविज्ञान ; अप्र०—परदेशी (उप०) और दो-एक कविता, कहानी, निबन्ध-संग्रह; प०—ठि० 'भारत', इलाहाबाद।

ईश्वरचन्द्र जैन—ज०—४ अगस्त, १६१८; शि०—एम. ए. (हिन्दी) एल-एल. बी. आगरा वि० वि० ; प्र०—जीवन दीप ; नाटक ; सा०—मध्य भा० सा० समिति के मन्त्री, वीर सार्वजनिक वाचनालय के प्रचार मंत्री; स्थानीय राज प्रजामण्डल और कांग्रेस के कार्यकर्ता ; प्रका०—जीवन दीप; अप्र०—अर्थ का अनर्थ; स्फुट निबंध और एकांकी ; वर्त०-संपा०-'मजदूर संदेश' साप्ताहिक, 'श्रम' मासिक ; प०—४०, इमली बाजार, इन्दौर।

ईश्वरदत्त—ज०—२८ अगस्त, १८६६ ; शि०—१४ वर्ष गु० कु० काँगड़ी हरद्वार, ३ वर्ष म्यूनिच वि. वि. जर्मनी में पी-एच. डी; प्रका०—राष्ट्र लिपिके विधान में रोमन लिपि का स्थान, लिपि सुधार का प्रश्न, करुणरस और आनन्दानुभूति, रेचनवाद और ल्यूकस, काव्य द्वारा रोग निवृत्ति; अप्र०—भगवद्गीता और उसका संदेश, प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, प्राचीन भारत में विज्ञान; सा०—हिंदी के साथ, संस्कृत विद्या का प्रचार, प्राचीन भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान अफ्रीका

और अमरीका में; वि०—पी-एच. डी. की थिसिस का विषय—रामानुजाज़ कामेंट्री आन दी भगवद्-गीता, अ० भा० वानप्रस्थ-मंडल की स्थापना की योजना; प०—अध्यक्ष, हिंदी - संस्कृत विभाग, पटना कालेज, पटना।

ईश्वरप्रसाद माथुर—ज०—१ फरवरी १९०९; शि०—बी. ए.; सा०—'जयाजी प्रताप' के सम्पादकीय विभाग में काम किया; प्रका०—जेबुन्निसाके आँसू, संगीत सम्राट तानसेन, संसार का इतिहास, जवानी की भूल; अप्र०—नीलाम (ना०) पंखड़ियाँ (क०), सितारा, तख्ते ताऊस, लड़की का सिंहासन; वि०—प्रेमचन्द से प्रभावित हो उर्दू से हिन्दी में पदार्पण; वर्त०—संचा०एक प्रकाशन संस्था०; संयो०—'अपना हिन्दुस्तान'; प०—बाजार बालवाई, लश्कर, ग्वालियर।

ईश्वरीप्रसाद गुप्त—ज०—१९१६; प्रका०—कमला, विदुषी, पड़ाव (प्रेस में); अप्र०—सेवा संघ, महात्मा सिद्धार्थ; सा०—संस्था. राजेन्द्र पुस्तकालय, भूत० सदस्य भारतेन्दु सा० संघ, सदस्य लोक-मार्ग परिषद; प०—मोतीहारी।

ईश्वरलाल शर्मा—ज०१९१२ झालरापाटन; शि०—सा० रत्न, इंदौर; प्रका०—मनोवीणा (कवि०) रक्तिम मधु (उमर खैयाम का अनु०), शोक-संगीत, सती; वि०—आप हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक और वयोवृद्ध साहित्य-सेवी पंडित गिरिधर शर्मा नवरत्न के सुपुत्र हैं; प०—ठि० श्रीनवरत्न जी, झालरापाटन।

ईश्वरी प्रसाद सिंह—ज०—१९१२; शि०—राँची; सा०—भूत० सम्पा० 'झारखण्ड'; संस्था० बन-बूटी भण्डार, अप्र०—चित्रकार; प०—गुमला, राँची।

ईशदत्त शास्त्री श्रीश—शि०—साहित्य - वाचस्पति, काव्यतीर्थ, विद्या-वाचस्पति, सा०-रत्न; सा०—गवर्नमेंट संस्कृत कालेज के पोस्ट-ग्रेजुएट-रूप में 'प्रिंस आफ वेल्स' छात्रवृत्ति प्राप्त अन्वेषक रहे, सरस्वती-भवन में कालिदास पर तीन वर्ष तक रिसर्च की; महामना मालवीयजी के प्राइवेट सेक्रेटरी १९४०-४१; विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि; आशुकवि और सुवक्ता;

भूत. संपा–संस्कृत की तीन पत्रिकाएँ काशी से 'सुप्रभातम्', 'ज्योतिष्मयी', 'भारतश्री', और 'आदेश' मेरठ; वर्त० संपा०—'राजहंस', काशी; प्रका०–प्रताप–विजय, झाँसी की रानी, कंठहार, रामवनगमन, शंखनाद, आदर्श गो-सेवक दिलीप, अद्वैत-दर्प दलनम्, ध्रुव, सम्राट् विक्रमादित्य और उनके नवरत्न, कालिदास, कुमार-संभव; अप्र०—भारत-अभ्युदयम्, विद्रोही, संगीत-रत्नाकर, मेरे गीत; प०—आचार्य शिवकुमार गोविंद सांगदेव महाविद्यालय, काशी।

ईश नारायण जोशी—ज०—१९१३; शि०—शास्त्री; प्रका०—मुखाकृति - रहस्य, धर्म - शिक्षा; अप्र०–स्पंदन (गद्यकाव्य), साकोरी का संत; सा०–म्यूनिस्पलकमिश्नर, वाइस प्रेसीडेंट—हिन्दू अनाथालय कमेटी ; वर्त०—भोपाल राज्य के धर्मशास्त्री; प०—चौक, भोपाल।

उग्रसेन—शि०—एम० ए०, एल - एल० बी०; प्रका०—धर्म-शिक्षावली — चार भाग; पुरुषार्थ सिद्धार्थपाय, रत्नकांड श्रावकाचार, आप्तस्वरूप, नारीशिक्षादर्श, जीवंधरचरित; अप०—स्फुट निबंध ; प०—गोहाना, रोहतक।

उदयकरण शर्मा — ज० — १९१३; शि०—आयुर्वेद शास्त्री; प्रका०—संगीत - शिरोमणि, गँवई-गीत, ठंठीरोशनी; जीवन-निर्माण; अप्र०—पश्चाताप; प०—उमराव गंज, शाहाबाद।

उदयनारायण तिवारी—ज०—१९०५, पीपरपाती ग्राम बलिया; शि०—एम. ए. (अर्थशास्त्र, हिंदी, पाली), डी. लिट्. प्रयाग, आगरा, और कलकत्ता; सा०—सन् १९२८ से हिं० सा० सम्मे० की स्थायी समिति के सदस्य; भोजपुरी पर डाक्टरेट के लिए अनुसंधानात्मक निबन्ध प्रस्तुत किया; प्रका०—कवितावली रामायण की भूमिका, रासपंचाध्यायी-भँवरगीत, भूषण-संग्रह—दो भाग, वीरकाव्य-संग्रह, कहानी-कुंज; वि०—'ए डाइलेक्ट आव भोजपुरी', भोजपुरी लोकोक्तियाँ और भोजपुरी मुहावरे इत्यादि आपके अनुसंधानात्मक निबन्धों की प्रशंसा सर जार्ज ग्रियर्सन, जूलूब्लाश (पेरिस), आर०एल०टर्नर (लंडन)

आदि विद्वानों ने की थी ; प०—अलोपीबाग, प्रयाग।

उदयराज सिंह—ज०—५ नवम्बर १६२१; शि०—बी. एस-सी. प्रयाग वि० वि०; प्र०—रजनीबाला; प्रका०— नवतारा (कहा०), अधूरी नारी (उप०); अप्र०—रोहिणी (उप०); प०—अशोक प्रेस, महेन्द्रू, पटना।

उदयशंकर भट्ट—ज०-१८६७, इटावा; शि०—काव्यतीर्थ, शास्त्री, अजमेर, बड़ौदा, लाहौर, और कलकत्ता; प्र०—१६२८; सा०—संस्कृत के भूतपूर्व अध्यापक, वियोगांत नाटक रचना में विशेष रुचि; प्रका०— तक्षशिला, राका, मानसी, विसर्जन; नाटक—विक्रमादित्य, दाहर अथवा सिंध-पतन, अंबा, सगर-विजय, कमला, अन्तहीन अंत, अभिनव एकांकी—नाटकों का संग्रह; गीतनाट्य— मत्स्य-गंधा, विश्वामित्र, राधा; संपा.—कृष्णाचंद्रिका, गुमान मिश्र-कृत शकुंतला; अप्र०—अनेक एकांकी नाटक और कविता-संग्रह; वि०—कई रचनाएँ पंजाब, दिल्ली, राजपूताना, पटना, कलकत्ता, नागपुर और मद्रास के विद्यालयों में स्वीकृत प०—बंबई।

उदयसिंह भटनागर—शि०—एम. ए. हिन्दू विश्व विद्यालय, काशी; प्रका०—जौहर ज्वाला और अनेक लेख, कविताएँ तथा एकांकी नाटक; प०—अध्यापक महाराजा कालेज, जयपुर।

उपेंद्रनाथ 'अश्क'—ज०—१४ दिसम्बर, १६१०, जालंधर; शि०-बी.ए., एल-एल.बी. लाहौर; प्र०—उर्दू में १६२७ से पर हिंदी में १६३५ से; सा०—लाला लाजपतराय के 'बंदे मातरम्' और 'वीरभारत' पत्रों के उपसंपादक; प्रका०—कहा०—नौरत्न, औरत की फितरत, डाची, कोंपल, सितारों के खेल (उप०); नाटक—जय-पराजय, स्वर्ग को झलक, देवताओं की छाया में, छै बेटे, विविध—उर्दू काव्य की एक नयी धारा, प्रातप्रदीप, बावरोले ; प०—प्रीतनगर, अमृतसर।

उपेंद्रशंकर प्र वेदी—ज०—१६१२; वि०—प्रकृतिवर्णन एवं हास्यरस की कविताएँ करते हैं ; प्रका०—स्फुट; प०—बोरधा,

कालाकार, होशंगाबाद।

उमादत्तामिश्र—ज०—१९१६; प्रका०—सनातनधर्म साहित्य, गीताधर्म और धर्म-परित्याग; वि०—आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की है; प०—सनातन धर्म संस्कृत कालेज, पाँडे बाजार, आजमगढ़।

उमादत्त सारस्वत, 'दत्त'—ज०—जून १९०५; सा०—संपा०, 'काव्य-कलाधर' कलकत्ता और संयो०—हिन्दी समिति, बिसवाँ; प्रका०—किरण, मस्तराम का सोंटा, मस्तराम का चिट्ठा; अप्र०—प्रवासी-पति (महाकाव्य) आदि लगभग एक दरजन पुस्तकें; प०—बिसवाँ, सीतापुर।

उमानाथ—शि०—एम० ए०; प्रका०—सूरमाधुरी; अप्र०—स्फुट संग्रह; प०—प्रचार-अध्यक्ष, राजकीय विभाग, पटना।

उमाशंकर द्विवेदी 'विरही'—ज०—जनवरी १८९२; शि०—इंदौर; सा०—स्थानीय सभी साहित्यिक संस्थाओं से संबंध; हिं० सा० सम्मे० के स्थानीय केंद्र के जन्मदाता; अप्र०—अनेक सरस काव्य; प०—विरही-सदन, उदयपुर।

उमाशंकर प्रसाद सिंह—(ब्रह्मचारी) 'सितारिया'; ज०—१९०३; सा०—संचा० 'शशि प्रभाकर मंदिर' और 'कैलाशकुंज'; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—हरदिया, शुम्भा ड्योढ़ी, दरभंगा।

उमाशंकर महावीर प्रसाद शुक्ल—ज०-२३ जुलाई १९१८; सा०—भूत० मंत्री, 'हिन्दी मंदिर' वर्धा, युनाइटेड प्रेस ऑफइण्डिया के वर्धा-स्थित प्रतिनिधि, अनेक हिन्दी, और अँग्रेजी दैनिक पत्रों के प्रतिनिधि; संस्थापक भारतेन्दु हिन्दी सिंडीकेट, भूत० संपा० 'संगम'(साप्ता०) १९४२; प्रका०—अनेक हास्य स के लेख, नेताओं के स्केच; वि०—संपा० 'कला' मासिक; प०—वर्धा।

उमाशंकरराम त्रिपाठी 'उमेश' ज०—१९२१; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—सरया, उनवल, गोरखपुर।

उमाशंकरलाल—ज०—२० दिसंबर १९१४; शि०—प्रयाग; प्रका०—अवगुंठन (कवि०), परि-

मल, आत्मकहानी; पा०—ठि० मुंशी नारायणलालजी, अमीन और सब-ओवरसियर, बनारस स्टेट।

उमेशचंद्र देव—ज०—१९०४ फरुखाबाद; शि०—आयुर्वेदाचार्य, शास्त्री, विद्यावाचस्पति, संस्कृतरत्न, सा० रत्न, प्रयाग, दिल्ली और मेरठ; **सा०**—भूत. अध्यक्ष श्री सावित्री रामभवन छिबरामऊ; भूत. संपा० 'आयुर्वेदसिद्धांत' और 'अनुभूत योगमाला'; वर्त० संपा० 'सरस्वती' प्रयाग; प्रका०—विश्वकवि रवींद्रनाथ, वंचिता, प्रतिशोध, सफलता, उच्चजीवन, अतीत के बिखरे पन्ने, विश्व साहित्यिक, शिशु-चिकित्सा, महिलाओं के गुप्त रोग, भोजन-भंडार, समाज-सेवा, हमारे नेता, अछूत कोई नहीं, त्याग और साहस की सच्ची कहानियाँ; प०—इंडियन प्रेस, प्रयाग।

उमेशमिश्र—ज०—१८९६, दरभंगा; शि०—एम. ए., डी. लिट्., काव्यतीर्थ,—**सा०**—अध्यक्ष (१९४३) अखिल भारतीय प्राच्य विद्या महासम्मेलन के दर्शन और धर्म-विभाग, अध्यक्ष मैथिल साहित्य-परिषद, अध्यक्ष अखिल भारतीय गीता महासम्मेलन प्रयाग, मंत्री दरभंगा प्राच्य विद्या महासम्मेलन; **प्रका०**—साहित्य दर्पण, कमला, नलोपाख्यान (मैथिल), विद्यापति ठाकुर, प्राचीन वैष्णव सम्प्रदाय, मैथिली-साहित्य (हिंदी), हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसोफी (अँग०) भौतिकपदार्थ-निरुपण; **प०**—अध्यक्ष संस्कृत विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।

उषादेवी मित्रा—**सा.**—'नारी-मंगल-समिति' की संस्था० और संचा०; आरम्भ में बँगला में रचना की; प्र०—सन् १९३३ से 'हंस', काशी में पहली कहानी 'मातृत्व'; **प्रका.**—उप.—वचन का मोल, पिया, जीवन की मुस्कान और पथचारी; कहानी—आँधी के छंद, महावर, सांध्य पूरवीले; प.—गलगला ताल, जबलपुर।

ऋषभचरण जैन—**सा०**—'सचित्र दरबार', 'चित्रपट' के संस्थापक; **प्रका०**—भाई, बिखरे भाग्य, कैदी, मास्टरजी, मोती, दिल्ली का व्यभिचार, गऊवाणी;

वि०—इस समय आप एक फिल्म-कम्पनी के डाइरेक्टर हैं; प०—दरियागंज, दिल्ली।

ऋषिमित्र शास्त्री—शि०—सा० रत्न, शास्त्री, विद्यावारिधि ; प्रका०—सामाजिक, धार्मिक, और दार्शनिक विषयों पर लेख; अप्र०—कुटीर; प०—आर्य-समाज-भवन, गिरगाँव, बम्बई ४।

ए० चन्द्रहासन—शि०—बी० ए० मद्रास वि० वि०, एम० ए० (हिंदी) कलकत्ता वि० वि०; सा०-३ वर्ष तककेरल हिंदी ट्रेनिंग कालेज के प्रिंसिपल, ३ वर्ष तक मन्त्री केरल हिंदी - प्रचार - सभा, १२ वर्षों से भाषाओं के प्रोफेसर महाराजा कालेज एरनाकुलम, ६ वर्ष तक मद्रास वि० वि० की बोर्ड आफ स्टडीज इन हिंदी, मराठी, उड़िया, आसामी के अध्यक्ष; १९४६ से ट्रावनकोर वि० वि० की हिंदी के बोर्ड आफ़ स्टडीज़ के अध्यक्ष; सद० ट्रावनकोर वि० वि० की फैकल्टी आफ़ ओरियंटल स्टडीज़, कई बार मद्रास वि० वि० के इंस्पेक्शन कमीशन के सद०, मद्रास, मैसूर, कलकत्ता और ट्रावनकोर विश्वविद्यलयों की हिंदी में होने वाली बी० ए०, बी० काम०, बी० एस०-सी० और एम० ए० की परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र-दाताओं और परीक्षकों की समितियों के मान्य सद० अथवा अध्यक्ष, १९३३ में उत्तर भारत को जाने वाले दक्षिण भारतीय हिंदी यात्रियों के उपनेता, राष्ट्र भाषा व्यवस्था - परिषद के प्रतिनिधि, भारतीय साहित्य-परिषद से प्रकाशित 'हंस' के स्थानीय संपा०, भूत० संपा० 'मातृ भूमि,' प्रका०—स्फुट; प्र०—प्रोफेसर आफ़ लैंग्वेज़ महाराजा कालेज, एरनाकुल कोचिन राज्य, दक्षिण।

ए० पद्मिनी कुमारी—श्री ए० चंद्रहासन, एम० ए० की सहोदरा और दक्षिण भारत की पहली महिला जिन्होंने हिंदी में एम० ए० पास किया; केरल के हिंदी प्रचार-कार्य में महत्वपूर्ण भाग लिया; मद्रास विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग में प्रमुख स्थान रखती हैं; भूतपूर्व अध्यापिका कन्या गुरुकुल, देहरादून; प०—हिंदी अध्यापिका, संत तेरीसस

कालेज, त्रिचूर, दक्षिण भारत।

ए. राम. अय्यर— शि० एम०ए०; जा०—अँग्रेजी, बँगला; सा०—तामिलनाड हिं० प्र० सभा के प्रमुख कार्यकर्ता और निर्देशक; प्रका०—स्फुट सामयिक और साहित्यिक लेख; प०—प्रिंसिपिल, नेशनल कालेज, तिरुच्चि।

एलेक्जेंडर ग्रियर्सन शिरीफ—हिन्दी साहित्य-प्रेमी विद्वान; ज०—२६ अप्रैल १८८३; सा०—जार्ज ग्रियर्सन द्वारा किये गए पद्मावती के सम्पादन में सक्रिय सहयोग; सा०—लगभग तीस वर्ष तक इंडियन सिविल सरविस के सदस्य; वर्त०—इंडिया अफिस लायब्रेरी में ओरियंटलिस्ट ; प०—हाल पैलेस, स्पर्स्टोल्ट कॉटेज, बर्कशायर, इङ्गलैंड।

एस. एन. रामचंद्रन—तामिल-भाषी हिन्दी-प्रेमी; ज०—२५ मई १९२७; शि०—राष्ट्र भाषा विशारद, हिन्दी विद्वान तथा बी० ओ० एल (मद्रास वि० वि०); सा०—तीन पुस्तकालय तथा दो हिन्दी समितियाँ स्थापित कीं; स्थानीय गोखले वाचनालय और पुस्तकालय - संघ की कार्यकारिणी-समिति के सद०; १९४३ में स्वतंत्रता - दिवस मनाने के सम्बन्ध में कैद ; प्रका०—कहानियों और जीवनियों के अनुवाद ; प०—शिव गंगा के राजा दुरैसिंगम मेमोरियल कालेज में हिन्दी लेक्चरर, जिला रामनाड, दक्षिण।

ए० सावित्री—अहिंदी प्रांत की हिन्दी-हितैषिणी और श्री ए० चंद्रहासन की दूसरी सहोदरा जिन्होंने हिंदी में एम० ए० किया है; प्रका०—विविध विषयों पर स्फुट लेख ; प०—अध्यापिका, आर्य कन्या महाविद्यालय, बड़ौदा।

ओंकारनाथ मिश्र—ज०—१९१०, सिरसा, प्रयाग ; सा०—हिन्दी-साहित्य विद्यालय, दारागंज, प्रयाग और तुलसी-साहित्य-परीक्षा-समिति के सहायक ; प्रका०—सत्यहरिश्चन्द्र नाटक , विनय-पत्रिका की टीका ; अप्र०—सूरज मंजरी-हस्तलिखित प्राचीन प्रति की टीका, ग्वाल कविकृत साहित्यानन्दकी संपादित प्रति, सूर-विहार—आलो० ; प०—हिन्दी अध्यापक,

अग्रवाल विद्यालय इंटर कालेज, इलाहाबाद।

ओंकार लाल दल्लू वर्मा 'माखन',—ज०—१ जनवरी; १९२२; शि०—इन्दौर; सा०—मधुर तरंग-माला का प्रकाशन; प्रका०—स्फुट; प०—प्रधानाध्यापक, पाठशाला खरिया, पो० वरला, होल्कर राज्य।

ओंकारलाल वैश्य 'प्रणव'—ज०—१८८६, मेलखेड़ा, मालवा; जा०—संस्कृत, मराठी, उर्दू, गुजराती; प्रका०—उपदेश वाटिका, भक्तवर सेठ रामलाल जी; अप्र० — विनय-वाटिका, प्रणव चालीसा, हरिनाम शतक आदि; प०—मालवा।

ओंकार शरद—ज०—१९२६; सा०—व्यवस्थापक, न्यूलिटरेचर प्रकाशन प्रयाग, प्रकाशक 'लहर' मासिक; प्रका०—आँचल का आसरा, अंतिम बेला, नातारिश्ता, खूनखराबी, अन्नपूर्णा (अनु०); प०—व्यवस्थापक न्यू लिटरेचर कंपनी, प्रयाग।

ओमप्रकाश—ज०—१९२४; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०, (आगरा), एम. आर. ए. एस.; सा० — अध्यक्ष ग्राम - सेवादल आगरा, सद० ना० प्र० सभा, काशी तथा रायल ऐशियाटिक सोसाइटी आफ बँगाल; प्रका०—प्रबन्ध-प्रभा, निबन्ध-रत्नावली, प्रेमाश्रमः एक परिचय, ध्रुव स्वामिनी: एक परिचय; अप्र०—ग्रीष्मार्त पश्चाताप, अपील-काव्य; वि० — आगरा वि० वि० में हिन्दी साहित्य में अलंकार और अलंकार-शास्त्र पर खोज कर रहे हैं; प०—अध्यक्ष हिंदी विभाग, हंसराज कालेज, दिल्ली।

ओमप्रकाश — ज० — १७ नवंबर १९१५; शि०—एम० ए०, सा० र०; प्र०—स्वराज्य के बाद; प्रका०—विविध विषयों पर लेख; अप्र०-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; वर्त०-भारतेन्दु पर खोज, प०—हिन्दू स्कूल स्ट्रीट, बदायूँ।

ओमप्रकाश भार्गव 'उमेश'—ज०—जून १९१५, शि०—माधव कालेज उज्जैन, विक्टोरिया कालेज ग्वालियर, और इंडियन फॉरेस्ट कालेज देहरादून; प्रका०—तपस्विनी (कहानी), जैबुन्निसा के

आँसू (जीवनी), हिमालय के अंचल में, वनस्पति-विज्ञान; सा०—हि० सा० सभा लश्कर के भूत० मंत्री; वर्त०—फारेस्ट ट्रेनिंग के लिए आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय गये हैं।

ओमप्रकाश शर्मा—ज०-१९ फरवरी १९२०; शि०—एम० ए०(हिंदी, अँगेजी) आगरा वि० वि० ; प्रका०—कहानियाँ, कुछ पुस्तकों का अनुवाद ; सा०—विश्वविद्यालय विद्यार्थी-परिषद् के सभापति, विद्यार्थी काँग्रेस के कार्य-कर्त्ता, सेंट जांस कालेज की ओर से शिक्षा-प्रचारक, प्रां० हि० सम्मे० के भूत० संयुक्त मंत्री, हि० सा० गोष्ठी के लिए लेखकों को संगठित किया , संचा० 'नोक झोंक'; प० —बाग मुज़फ्फर खाँ, आगरा।

ओमप्रकाश, 'विश्व'—ज०—१ जुलाई १९१७; सा०—भारत सरकार की मासिक मुख-पत्रिका 'आजकल' दिल्ली के संपादक मंडल के सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति; संस्कृति, सिनेमा आदि विषयों पर कहानियाँ ; प०—'आजकल', दिल्ली।

कंचल वेंकट कृष्णय्या—ज०-१९०७ कृष्णापुरम्, कृष्ण; शि०—प्रयाग, मद्रास और काशी ; प्रका०—स्फुट ; प०—प्रधान-अध्यापक, आंध्रहिन्दी विद्यापीठ, आंध्र प्रदेश, दक्षिण।

कंठमणि शास्त्री—ज०-१९१८; शि०—'देशिकेन्द्र' (हि०) 'मणि' (व्रजभाषा),काव्य - वेदान्त-शास्त्री, महोपदेशक, काव्यालंकार, शुद्धाद्वैतरत्न आदि उपाधियाँ; प्रका०—सम्प्रदाय प्रदीपालोक, काँकरोली का इतिहास, विधवा-विवाह-खंडन, परमानंददास का परिचय, कविता कुसुमाकर--२ भाग, रसिक-रसाल, जगदानन्द, सम्प्रदाय-प्रदीप, प्रभु चरित्र चिन्तामणि, ध्यान-मंजूषा, मंगल-मणिमाला; अप्र०—दिव्य-दयादर्श, पुष्टिमार्गीय-परिचय-कोष, आंध्रजातीय हिन्दी कवि, वल्लभाचार्य और हिन्दी साहित्य; सा०—संस्था० व संचा०—सरस्वती भंडार, पुस्तकालय विभाग, पाठशाला-विभाग, कविमंडल, ग्रंथ-माला, स्वयं-सेवक-मंडल-विभाग, व्यायाम, शाला विश्व-वस्तु-संग्रहालय, शुद्धाद्वैत ऐकडमी ; संपा०—'दिव्यादर्श' (मासिक); प०—

संचालक विद्याविभाग, ब्रजनिकुंज, काँकरोली ।

कटील गणपति शर्मा—शि०—बी० ओ., एल. टी०, सा. लं.; सा०—नवचेतन ग्रन्थमाला के संस्था०, संपा०—'हिंदी प्रचारक' और 'शिक्षक', भूत० अध्यापक गवर्नमेंट कालेज मंगलोर, भूत०, अध्यक्ष व मंत्री, विद्यार्थी-संघ, कर्नाटक संघ, हिन्दुस्तान स्काउट ऐसोसिऐशन; सद०—शिक्षा परिषद, हिंदी प्रचार सभा; अध्यक्ष—हिन्दी अध्यापक-संघ पालघाट; प०—अध्यापक गवर्नमेंट मुस्लिम कालेज, मद्रास ।

कनकमल अग्रवाल 'मधुकर'—ज०—१२ जुलाई, १९१२; शि०—उदयपुर; सा०—राजस्थान हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति के मान्य सदस्य; साहित्य-कुल, अजमेर के भूत० मंत्री; भारतीय विद्वत्-परिषद के साहित्याचार्य और वहाँ से 'साहित्य महोपाध्याय' उपाधिप्राप्त; भूत० संपा० हस्तलिखित 'लव', 'रोवर मैगजीन', 'नवज्योति', 'राजस्थान', 'रियासती'; प्रकाशक और संपा०—'नवजीवन'; (१९४०); प्रका०—उद्गार (गद्य का०); अप्र०—अनेक निबंध, कविता और गद्य-काव्य-संग्रह; वि०—इस समय गुरुकुल, चित्तौरगढ़ में अवैतनिक सेवक हैं; प०—संपादक 'नवजीवन', उदयपुर ।

कन्हैयाप्रसाद सिंह—शि०—एम. ए.; सा०—'विशालभारत' के नियमित लेखक; प्रका०—चित्र कथा; प०—अध्यापक नालंदा कालेज, नालंदा ।

कन्हैयालाल पोद्दार, सेठ—ज०—१८७१, मथुरा; सा०—लेखन कार्य समस्या-पूर्ति से आरम्भ; प्रका०—अलंकार-प्रकाश, गंगा-लहरी (अनु०का०), श्रीमद्भागवत के पंचगीतों का समश्लोकी अनु०, मेघदूत-विमर्श, काव्यकल्पद्रुम, संस्कृत-साहित्य का इतिहास; प०—मथुरा ।

कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी हिन्दी-गुजराती के लब्धप्रतिष्ट लेखक; ज०—१८८७; शि०—बी. ए., एल-एल बी, बड़ौदा और बम्बई; सा०—संपा०—'यंग इंडिया' १९१५; बम्बई

होमरूल लीग के मन्त्री, १९२० ; गुजराती साहित्य-कोश के सम्पादक; बंबई विश्व-विद्यालय की सिनेट और सिंडीकेट के सदस्य ; सत्याग्रह आंदोलन में सपत्नीक भाग लिया ; कई बार जेल गये; अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य; बम्बई सरकार के कांग्रेसी होम मिनिस्टर रहे, १९३७ ; राष्ट्र-भाषा-प्रचार समिति के प्रमुख कार्य-कर्ता ; संपा० 'सोशल वेलफेयर' ; प०—रिज रोड, मलाबार हिल, बम्बई ।

कन्हैयालाल (मुंशी)-ज०-१९०१; शि०—एम. ए., एल-एल. बी. प्रयाग; सा०—भूत०संपा०, 'चाँद' (उर्दू) ; अनेक हिंदी कहानियाँ और कहानी-कला के लेखक ; अँगरेजी (ब्रिटिश) अमरीकन और योरोपीय पत्रों में बराबर लिखते रहते हैं ; अनेक प्रसिद्ध विदेशी पत्रों के सम्वाददाता ; प०—ऐडवोकेट, कृष्णकुंज, इलाहाबाद ।

कन्हैयालाल 'शान्तेश'—प्र० —चमड़े के लिए पशुओं का भयंकर वध ; अप्र०—सचित्र दार्जिलिंग, सरल औषधोपयोग, राष्ट्र के प्रति हमारा कर्तव्य, सा०—संचा०—प्राइमरी स्कूल, निर-क्षरता निवारणार्थ प्रौढ़ शिक्षक-केन्द्र, औषध-वितरण, सम्पा०—'ग्राम सेवक', सद०—शिक्षा-समिति वैश्य डिगरी कालेज, प्रधान मंत्री सेवा शिविर, प्रचार-मंत्री—विद्या प्रचारिणी सभा, सद०—शहर कांग्रेस कमेटी, प०—गणेश भवन, नया बाजार, भिवानी, हिसार, पंजाब ।

कन्हैयालाल सहल—ज०—१९११, शि०—एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत) जयपुर, आगरा वि० वि०; सा०—मंत्री श्री सूर्यकरण पारीक स्मारक साहित्य-समिति; प्रका०—श्रीपतराम गौड़ के साथ 'चौबोली' नामक राजस्थानी कथा पुस्तक का संपा०, समीक्षांजलि (आलो०) हिन्दी की पत्र पत्रिकायें, राजस्थानी के ऐतिहासिक प्रवाद, राजस्थान के सांस्कृतिक उपाख्यान, आलोचना के पथ पर, साकेत का नवम् सर्ग; सर्व श्री पतराम जी गौड़ और ईश्वरदान जी के साथ 'वीरसतसई' का संपादन भी किया है ; वि०—'राजस्थान के संस्कृतिक उपाख्यान' नामक ग्रन्थ पर राजपूताना विश्व-

विद्यालय द्वारा पुरस्कार मिला है; प०—हिन्दी अध्यापक, बिरला कालेज, पिलानी, जयपुर।

कपिलदेव चतुर्वेदी 'प्रकाश'—ज०—३ दिसम्बर १६२५, सारन; शि०—दार्जिलिंग; प्र०—१५ अक्टूबर १९४५; 'फिल्म और समाज', प्रका०—भावुकता की लहर (कहा०), मनोर्मि (कवि); प०—१७ पराशर रोड, कलकत्ता २६।

कपिलदेव नारायण सिंह—ज०—१६१६; शि०—एम० ए०; सा०—मंत्री हि० सा० प० मुंगेर, प्रगतिशील लेखक-संघ के मन्त्री; प्रका०—ह्वेनसंग-नाटक; प०—प्रोफेसर डी० जे० कालेज, मुंगेर।

कपिल देव शर्मा—सा०—न्यायालयों में देव नागरी लिपि के प्रयोग का प्रचार, पटना वि० वि० की बोर्ड आफ स्टडीज़ के सद०, शिक्षा-सुधार-समिति, एजूकेशन कोड रिवीजिन कमेटी के सद०, अ० भा० देवभाषा-परिषद के मंत्री और विहार प्रा० हि० प्रचा० सभा के सभापति; प्रका०—पाठ्यक्रम की संस्कृत पुस्तकें; प०—छपरा।

कपिलेश्वर झा 'कमल'—ज०—१६०७; शि०—सा०रत्न, पटना वि० वि०; सार्व०—संस्था० 'श्री कृष्ण पुस्तकालय, हि० सा० सभा, धमौरा; संयो०—परीक्षा केन्द्र हि० सा०सम्मे०, भूत० मंत्री जिला हि० सा० सम्मे०; अप्र०—अरुण रेखा (कहा०); प०—धमौरा, चनपटिया, चंपारन।

कपिलेश्वर मिश्र—शि०—कानपुर और शांतिनिकेतन; सा०—भूत० संस्कृत अध्यापक; हिंदी का एक वृहत कोष तैयार किया है; अप्र०—कई लेख-संग्रह; प०—सोती, सलीमपुर, दरभंगा।

कपूरचंद जैन—शि०—सा० रत्न; सा०—काँग्रेसी पदाधिकारी; प्रका०—स्फुट; वि०—आपकी पत्नी श्रीमती मैना देवी भी कविताएँ लिखती हैं; पा०—प्रधान अध्यापक प्राइमरी पाठशाला, परवारपुरा, इतवारी, नागपुर।

कमलकुलश्रेष्ठ, डाक्टर—ज०—२१ अगस्त १६२०; शि०—एम० ए० (हिंदी) प्रयाग वि० वि० में सर्व प्रथम०, डी० फिल; रच०—युग-मानव (कवि० संग्रह), मल्लिक

मुहम्मद जायसी, भाग १ (आलोचना); अप्र०–मलिक मुहम्मद जायसी भाग २, महादेवी वर्मा, हिंदी कविता में नारी, हिंदी पौराणिक कथा-कोश; सा०—सदस्य स्थायी समिति हिं० सा० सम्मे०, सभापति जन-साहित्य-संघ प्रयाग; वर्त०–अध्यक्ष, हिन्दी विभाग जार्ज शिवली कालेज, आजमगढ़; प०—सिविल लाइंस, आजमगढ़।

कमलदेव नारायण—ज०—१६००; शि०—बी. ए., बी. एल; प्रका०—ईश्वरचंद विद्यासागर, युगल कुसुम, अर्द्धांगिनी, झरना, बिखरे फूल, प्रेमनगर की सैर, वैज्ञानिक वार्तालाप, बच्चों के खेल; प०—बखरा, बिहार।

कमलधारी सिंह 'कमलेश'—ज०—१६१२, बलिया; शि०—सा० रत्न० प्रयाग, अचलपुर; प्रका०—मुसलमानों की हिन्दी-सेवा, बाल-पंचरत्न, स्त्री-पंचरत्न, गंगा-गीत, भारत की प्रमुख महिलाएँ; वि०—जैनगुरुकुल सादड़ी में अध्यापक, महिला विद्यापीठ प्रयाग में कार्य; प०—सेरिया छाता, बलिया।

कमलनारायण झा 'कमलेश'—ज०—१६१०; बिहार प्रांतीय हिंदू महासभा के संयुक्त मंत्री; प्रका०—महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह, महाराज रामेश्वरसिंह, मंडन मिश्र, बिहार के विद्यासागर, रामायण के पूर्वकाल की कहानियाँ, पंडित योगानन्द कुमार, धनकुबेर कारनेगी, सर वाल्टर स्काट, छोटी-छोटी बेटियाँ, लार्ड किचनर, विलियम शेक्सपियर, ज्ञान की खोज में; प०—कैना, दरभंगा, बिहार।

कमलनारायण देव, आचार्य, 'सत्यकाम'—ज०—१६१६; शि०—सा० लं, सा० आ० (संस्कृत); जा०—बँगला, असमीया, संस्कृत, पाली, गुजराती, मराठी, उर्दू; सा०—संचा० प्रांतीय राष्ट्र भाषा-प्रचार-समिति, वर्धा; मंत्री असमिया हिं० सा० परिषद्; प्रका०—असमिया साहित्य की रूपरेखा, बँगला साहित्य की रूपरेखा, वरगीत (असमीय गीतों का हिंदी में संपादन), महापुरुष शंकरदेव, कुहकिनी (गद्यगीत-संग्रह), चिरंतनी (कहानी-संग्रह), सामंतनी (उप०); प०—आचार्य, राष्ट्र-

भाषा अध्यापन मन्दिर, गुवाहाटी, आसाम।

कमल प्रसाद—ज०—एप्रिल १९२१, हैदराबाद; प्रका०—स्फुट एकांकी और कहानियाँ; प०—अर्थ-विभाग, हैदराबाद।

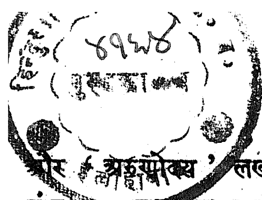
कमला कांत पाठक—ज०—१९ फरवरी १९२१; शि०—प्राथमिक इंदौर, एल-एल० बी० प्रथम श्रेणी आगरा वि० वि० और एम० ए० हिंदी, समस्त कलासंसद में प्रथम नागपुर वि० वि०, सा० रत्न, सा० आ०; सा०—समिति विद्यापीठ इंदौर के प्रिंसिपल ४२-४३, तहसीलदार रतलामराज ४३-४४, आचार्य हिंदी विभाग वनस्थली विद्यापीठ जयपुर ४५-४७, प्रोफेसर हिंदी-विभाग सागर वि० वि० १९४७ से; पटना और इंदौर में संपादन-कार्य; प्रका०—सेठ गोविंददास के नाटक, युगप्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हिंदी के एकांकी नाटक, हिन्दी में जौहर काव्य, 'कामायनी' के काम-सर्ग की टीका-समीक्षा, विवेचिका (लेख-संग्रह), राष्ट्रीयशिक्षा, प्रभाविका (काव्य-संग्रह), संगम (नाटक-वनस्थली विद्यापीठ में अभिनीत); आज कल मैथिलीशरण के काव्य-विकास पर थीसिस लिख रहे हैं; प०—हिंदी विभाग, सागर विश्व-विद्यालय, सागर।

कमला कांत वर्मा—शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; 'विशाल भारत' के भूत० सहकारी संपा०; अप्र०—कई कहानी-संग्रह; वि०—संगीत के प्रेमी हैं; प०—वकील, शाहाबाद, बिहार।

कमलापति त्रिपाठी, शास्त्री—ज०—१९०५; शि० — काशी-विद्यापीठ; सा०—कांग्रेसी-कार्यकर्त्ता, असहयोग-आंदोलन में तीन-चार बार (१९२९, ३०, ३२) जेलयात्रा; काँग्रेसी मेंबर उत्तरप्रदेशीय असेंबली; भूत० संपा० दैनिक 'आज' प०—काशी।

कमला पति मिश्र—ज०—जुलाई १९१५; सा०—श्री भारतीय के साथ 'लेखक' का संपादन; वर्त०—'हंस' के संपादकीय विभाग में कार्य; प०—भवानीपुर, सुरापुर, सुल्तानपुर।

कमला प्रसाद अवस्थी 'अशोक'—सा०—साप्ता० 'सन्मार्ग' काशी


४९५८
(पुस्तका...)

और 'अरुणोदय' लखनऊ के संपा० प०—[illegible]नगर, आलमबाग, लखनऊ।

कमलाप्रसाद वर्मा—ज०—१६ जनवरी १८८३; 'बिहार-बंधु' के भूत० संपादक; पटना सिटी सेवा-समिति के मंत्री; प्रका०—भयानक भूल, कुलकलंकिनी, परलोक की बातें, आध्यात्मिक रहस्यों में सात्त्विक जीवन, रोम का इतिहास, राष्ट्र-पति राजेंद्रप्रसाद, निर्बल सेवा, करबला, हिमालय, कुछ भूलती-भागती यादें; वि०—आपके 'कर-बला' काव्य पर पुरस्कार मिला है; प०—कमलाकुंज, गुलजार बाग, पटना।

कमलाशंकर मिश्र—ज०—१९००, अहिल्यापुर, इन्दौर; शि०—इन्दौर, आगरा; सा०—स्थानीय साहित्यिक संथाओं के संस्थापक और कार्यकर्ता, राज-पूताना-अजमेर के हाई स्कूल इंटर-मीडिएट बोर्ड के सदस्य, हिन्दी कमेटी के संयोजक, अब होलकर कालेज, इन्दौर हिंदी अध्यापक; अप्र०—विवध विषयों पर लिखे साहित्यिक और आलोचनात्मक लेखों के संग्रह; प०—३१ अहिल्यापुर, इन्दौर।

कमलेश भारती—ज०—१९१५; सा०—सूरत, गुजरात और दक्षिण में हिन्दी-प्रचार; प०—प्रबन्ध मंत्री, प्रांतीय हिं० सा० सम्मेलन, बम्बई।

करुणापति त्रिपाठी—शि०—एम० ए०, बी० टी०; प्रका०—शैली; प०—शिक्षक हिन्दी विभाग, बनारस विश्व विद्यालय।

करुणाशंकर—ज०—१९१०; सा०—दैनिक 'विश्वमित्र' के संपा०; अप्र०—स्फुट; प०—फोर्ट, बम्बई।

करुणाशंकर शुक्ल, करुणेश—ज०—१९०७; रच०—हिलोर; अप्र०—दो तीन काव्य-संग्रह; प०—चौक, कानपुर।

कलक्टरसिंह 'केसरी'—शि०—एम० ए०—सा०—विहार प्रान्तीय कवि सम्मे०, पटना के सभापति (१९४१); अप्र०—स्फुट रूप में प्रकाशित कविता-संग्रह; प०—अँगरेजी अध्यापक, सीवान कालेज, सारन, विहार।

कांतिचंद सौनरिक्सा—सा०—

—कलकत्ते से अनेक बार साप्ता-हिक पत्र प्रकाशित किये ; **अप्र०**—अनेक दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रों में बिखरी कहानियों के संग्रह ; **वि०**—आप की श्रीमतीजी भी कहानियाँ लिखती हैं ; **प०**—कलकत्ता ।

कांति द्विवेदी 'नलिनी'—**ज०**—१ फरवरी १९२६ ; **सा०**—हिन्दी-प्रचार, दहेज प्रथा के विरुद्ध प्रचार-कार्य ; **प्रका०**—स्फुट लेख और कविता ; **प०**—द्वारा 'जीता संसार', लश्कर ।

काका कालेलकर—**सा०**—राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति, वर्धा की कार्यकारिणी के भूतपूर्व सदस्य; सन् १९३७ से ४० तक उपाध्यक्ष; समिति की मुखपत्रिका 'सबकी बोली' के आरम्भ से ही संपादक ; **प्रका०**—जीवन-साहित्य (दो भाग, निबंध) तथा अनेक ग्रन्थों के अनुवाद; **प०**—ठि० राष्ट्र-भाषा-प्रचार समिति, वर्धा ।

कामता प्रसाद, कुशवाहा कांत

ज०—८ दिसम्बर १९१८ ; **शि०**—इंटर तक ; **प्रका०**—लगभग ३ दरजन उपन्यास जिनके कई संस्करण हो चुके हैं ; **प०**—संपा० 'चिनगारी' मासिक, मिर्जापूर ।

कामता प्रसाद जैन—**ज०**—१९०१; **सा०**—सद०रायल सोसाइटी लंदन, भारतीय इतिहास परिषद के सद० १९३८ ; कवि-सम्मेलनों और साहित्य प्रतियोगिताओं के आयोजक, भूत० संपा०, दैनिक 'सुदर्शन', 'आदर्श जैन', 'वीर' और 'जैन सिद्धांत भास्कर', १० वर्ष तक आनरेरी मैजिस्ट्रेट, ६ वर्ष तक असि० कलेक्टर, अलीगंज के महावीर जैन पुस्तकालय के संस्था० ; कांग्रेस के आंदोलनों में सक्रिय भाग, शरणार्थियों के सहायक, हि० सा० सम्मेलन एटा की अलीगंज शाखा के संयो०, जरमनी, अमरीका और फ्रांस के कई पुस्तकालयों को जैन साहित्य भेजा, विदेशी जिज्ञासुओं के अनुरोध पर अखिल विश्व जैन मिशन, (अहिंसा मिशन) की स्था० करके योरप, अमरीका आदि में अहिंसा और जैन-धर्म का प्रसार किया जिसका विवरण रिपोर्ट से जाना जा सकता है, लगभग ३५ ट्रैक्ट छपवाकर उनकी साठ हजार प्रतियाँ

निशुल्क वितरित की गयी हैं ; प्रका०—लगभग ६० पुस्तकें, सत्यमार्ग, भ० महावीर, भ० महावीर और गौतम बुद्ध, भ० पार्श्वनाथ, संक्षिप्त जैन इतिहास ५ भाग, पंचरत्न, नव रत्न, महारानी चेलनी, जैन तीर्थ और उन की यात्रा, भ० महावीर स्मृति ग्रंथ (संपा०), समाधिशतक का पद्यानुवाद, समाधि (अँग० अनु०), मेरी भावना (अँग० अनु०), बाहुबलि गोम्मटेश्वर, गाँधीजी, सच्चा साम्यवाद, श्रावस्ती और उसके नृप सुहलदेव राय, अहिंसा का व्यावहारिक रूप, 'अहिंसा-राइट सल्युशन आव वर्ल्ड प्राब्लेम्स'; प०—अलीगंज, एटा।

कामताप्रसाद 'निगम'–भूगोल के लेखक; ज०—१८६६; शि० —प्रयाग ; प्रका०—भारतभूमि, भूगोल विनोदमाला, भूगोल दिग्दर्शन माला, विचित्र दुनिया, हमारी दुनिया आदि लगभग एक दरजन पुस्तकें ; सा०—युक्त प्रांतीय सेकेंडरी एजूकेशन असोसियेशन के १० वर्ष से प्रधान मन्त्री, शिक्षा-आन्दोलन में रुचि ; वर्त०—अध्यापक डी० ए० वी० हाई स्कूल प्रयाग ; प०—गुरदयाल बाग, हीवेट रोड, प्रयाग।

कामाक्षिराव—ज०—१६ मई, १९१८, कड़पा (मद्रास); शि०—बी. ए., बी. ओ. एल. ; जा०—अँगरेजी, तेलुगू; सा०—१९४४ से हिन्दी में अध्यापन-कार्य आरम्भ किया, हिन्दी-लेखक-संघ मद्रास के उपसभापति; प्रका०—रायल हिंदी-तेलुगु शब्दकोश, रायल हिंदी कहानियाँ—३ भाग, रायल हिंदी पाठमाला—३ भाग आदि दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा के लिए पाठग्रन्थ; वर्त०—हिन्दी व्याख्याता, क्रिश्चियन कालेज, मद्रास; वि०—तेलुगु के भी अच्छे लेखक हैं, प०—ताम्बरम, मद्रास।

कामेश्वर नाथ—सा०—भूतपूर्व सम्पादक—'ब्रजभूमि' मथुरा, और प्रकाशक 'आकाशवाणी' लखनऊ ; प०—मथुरा।

कामेश्वर नारायण सिंह—सा०—स्थानीय हिन्दी संस्थाओं में सक्रिय भाग ; प्रका०—धर्म पर 'मिथिलामिहिर' में पांडित्यपूर्ण लेखमाला; प०-नरहन, दरभंगा।

कामेश्वर 'विद्रोही'—ज०१९२४; प्र०—१९४०; प्रका०—विद्रोह-विहार, उद्भावना; प०—मन्त्री सोमेश्वर साहित्य-परिषद, रामनगर, चम्पारन।

कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'—शि०—कानपुर; सा०—भूत० संपा०-'महारथी' दिल्ली, 'वीणा' इन्दौर के लगभग पंद्रह वर्ष तक सम्पादक; कानपुर हि० सा० मंडल और पत्रकार-संघ की कार्यकारिणी समिति के सदस्य; प्रका०—गद्य-सुधा, गल्परत्न; अप्र०—रुनझुन (कवि०); प०—बम्बई।

कालिका कुमार मुखोपाध्याय—शि०—एम० ए० (त्रितय); अप्र०—'सरस्वती', 'माधुरी' आदि मासिक पत्रिकाओं में बिखरे साहित्यिक आलोचनात्मक लेखों के संग्रह; प०—भागलपुर।

कार्त्तिकेय चरण मुखोपाध्याय—कुटीरशिल्प-कला के लेखक; ज०-१८९७; सा०—भूत० सह० या प्रधान सपा० 'भारतमित्र', 'हिन्दू पंच', 'विजय', 'बाँसुरी', 'हलधर', 'दारोगा दफ्तर'; प्रका०—मुस्तफा कमालपाशा, सती सुभद्रा, मणिपुर का इतिहास, सावित्री-सत्यवान, नल-दमयन्ती, सती पार्वती, सीता-देवी, शैव्या हरिश्चंद्र, सती शकुंतला, देवी द्रौपदी, श्रीराम-कथा (बँगला), बाग-बगीचा, साग-सब्जी, कृषि और कृषक; वि०—बँगला के अनेक उपन्यासों और गल्पों के अनुवादक; प०—काली वाड़ी, छपरा, विहार।

कालिचरण शर्मा—ज०—१५ अगस्त १९१४; शि०—हिंदी रत्न, पंजाब और बरार; प्रका०—वीर का विराट आन्दोलन खंड१; अप्र०—वीर का विराट आंदोलन खंड२; सा०—भूत० संपा० 'हिंदू'; हिंदी का विदेशों में प्रचार करने की योजनाएँ प्रस्तुत कीं; वि०—आजकल जयपुर से प्रकाशित हिंदी दैनिक 'राजस्थान समाचार' का संपा० कर रहे हैं; प०—भुसारा मार्ग, खाम गाँव, बरार; अथवा विराट नगर, जयपुर।

कालिदास कपूर—ज०—११ अगस्त, १८९२; शि०—एम. ए., एल.टी.; सा०—१९११ से काली-

चरण इंटर कालेज लखनऊ के प्रधानाध्यापक, यू० पी० सेकेंड्री एजुकेशन एसोसिएशन के सभापति (१९२५-२६); अँगरेजी मासिक 'एजुकेशन' के संपादक (१९३२-३४) और (१९३८-४१), बोर्ड आफ हाई स्कूल और इंटरमीडिएट एजुकेशन में प्रांतीय हेडमास्टरोंके प्रतिनिधि (१९२५-३७); इस बोर्ड की हिन्दी कमेटी के सभापति (१९३१-३७) ; जापान-यात्रा (१९३६) ; संयुक्त प्रांतीय टीचर्स कोआपरेटिव सोसाइटियों के सभापति (१९३३ से १९४२); 'हिंदी-सेवी-संसार' के प्रथम संस्करण के संचालक और सम्पादक; प्रका०—भारतीय इतिहास की रूपरेखा, विश्वसंस्कृति का विकास, मानव इतिहास की झलक, स्वतंत्र भारत और किशोर-कर्तव्य, किशोरावस्था की नागरिकता, भारतवर्ष का प्रारम्भिक इतिहास, भारतीय इतिहास की कहानियाँ, हिन्दी-सार-संग्रह (चार भाग), आधुनिक पद्यावली, साहित्य-समीक्षा, शिक्षा-समीक्षा, भारतीय सभ्यता का विकास, काश्मीर, 'ट्वर्डस ए बेटर आर्डर', भारतीय इतिहास की मानचित्रावली; प०—कपूर कुटी, चौक, लखनऊ।

कालीराम शर्मा—ज०—१९१३, रायपुर; शि०—विशारद; सा०—१९४६ से दक्षिण में हिंदी प्रचार-कार्य कर रहे हैं; प्रका०—स्फुट रचनाएँ ; वर्त०—वाई० एम० सी० ए० वाणिज्य कालेज में हिन्दी के व्याख्याता हैं; प०—जैन हाई स्कूल, मद्रास १।

काशीदत्त पांडेय,—शि०—एम० ए०; सा०— हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के भूत० रजिस्ट्रार; अनेक हिंदी-प्रचारक संस्थाओं के सक्रिय सहयोगी और उत्साही कार्यकर्त्ता; प्रका०—स्फुट; प०—क्रास्थवेट रोड, प्रयाग।

काशीनाथ त्रिवेदी—ज०—१६ फरवरी १९०६; शि०—प्रारंभिक उज्जैन में, बी०ए० क्रिश्चियन कालेज इन्दौर १९२८; सा०—भूत० सह० संपा० 'त्याग भूमि', 'हिन्दी नवजीवन', 'हरिजनसेवक', 'हिंदी-शिक्षण-पत्रिका', बड़वानी राज्य लोक-परिषद के संस्था०, सद० म० भा० धारासभा, शिक्षा-मंत्री,

प्रान्तीय काँग्रेस के अध्यक्ष, संचा० महिलाश्रम वर्धा, चर्खा संघ अहमदाबाद के प्रकाशन-अधिकारी (१९३५-३६), मंत्री मजदूर-संघ इन्दौर; प्रका०—विद्यार्थी और शिक्षक, दिवा स्वप्न, प्राथमिक शाला में भाषा-शिक्षा, बरगद, हिन्दी-गल्प-संसार-माला, हिन्दू धर्म की आख्यायिकाएँ २ भाग, सीता, गाँधी जी, हमारी बा, सयानी कन्या से, गीता-बोध, सुवर्ण की माया, अँग्रेजी राज्य के १०० साल, सप्त महाव्रत, अनासक्ति योग, रचनात्मक कार्यक्रम, प्रेम-पथ भाग १, बलिदान की कहानियाँ, बच्चों की कहानियाँ, एक धर्म-युद्ध आदि; प०—२७ बियाबानी, इंदौर।

काशीनाथ शर्मा— ज०—१९०१, गाजीपुर; शि०—प्रयाग एम०ए०, एल-एल० बी०, सा० र०; अप्र०—जीवन-संग्राम तथा विविध-विषयक निबंध-संग्रह; प०—क्लर्क, जजी अदालत, गाजीपुर।

काशीराम शास्त्री 'पथिक'—ज०—४ अप्रैल १९२१; शि०—पंजाब वि० वि०; प्रभाकर, सा० र०; सा०—अध्यापक सनातन-धर्म कन्या महाविद्यालय तथा सेंट्रल कालेज फार विमेन, पंजाब विभाजन के बाद जीवन अस्तव्यस्त फिर भी साहित्य-सेवा चल रही है; प्रका०—कवि० मुक्तिगान इसपर अबोहर अधिवेशन हि० सा० सम्मे० में 'नौरंग' पुरस्कार मिला, अछूतोद्धार नाटक; अप्र०—अन्तर्द्वन्द्व, मेरी मसूरी-यात्रा, मेरी शिमला-यात्रा; प०—प्रिंसिपल दून महाविद्यालय, ककनाट पैलेस, देहरादून।

कासिम अली सैयद—ज०—२२ अप्रैल, १९००, साईं खेड़ा, होशंगाबाद; जा०—उर्दू, अँगरेजी, फारसी, अरबी, गोंड़ी, मराठी; शि०— सा० लं०; सा०—अनेक संस्थाओं के सदस्य एवं पदाधिकारी, टेक्स्ट बुक कमेटी के सदस्य, प्रांतीय सरकारी शिक्षण के सेटर; भूत० संपा०—दैनिक 'स्वदेश' इलाहाबाद, साप्ता० 'इत्तेहाद' सागर, साप्ता० 'महाकोशल' नागपुर, मा० 'दीपक' अबोहर, मा० 'संगीत' हाथरस, रेडियो में प्रोग्राम, फिल्म स्टोरी, हिज मास्टर्स के रिकार्ड; मुसलिम साहित्य के हिंदी

में अनुवादक; प्रका०—नाटक—संयोगिता, ग्राम-सुधार, मुहब्बत इसलाम; प्रह०— भ्रष्टाचार्य, शराब की बोतल; कहा०—हमारी परिशिष्ट, नूरजहाँ, बालकहानी, पद्य०—सरलगीत, राष्ट्रीय दर्पण, आजाद वतन (जप्त); जी०—सर सैयद अहमदखाँ, महर्षि उमर; विविध—हजरत मुहम्मद, गद्य-गरिमा, उर्दू के हिंदू सेवक, नवीन संततिशास्त्र आदि; प०—पत्रकार, नरसिंहपुर, मध्यभारत।

किशनलाल 'कुसुमाकर'—ज०—१अक्तूबर १९१२; शि०—सा० रत्न, सिद्धांतशास्त्री; सा०—अध्यक्ष हिन्दी साहित्य विद्यालय, फीरोजाबाद, प्रधान ग्राम-पंचायत, 'नव प्रभात' के प्रकाशक; प्रका०—चिंता की चिनगारी, भयंकर भूल, ग्राम्य गीतांजलि, नवबाला; अप्र०—अमरकलश, संदेश, सप्तरश्मि; प०—दयानन्द हायर सेकेंडरी स्कूल, फीरोजाबाद।

किशोरसिंह ठाकुर 'किशोर'—ज०—१९०८; प्रका०—मध्यप्रांतीय कहानियाँ (दो भाग); प०—ठि० श्री भाई पटेल, शिवतला, भारकच, भोपाल।

किशोरी दास बाजपेयी—(गोविंददास)—शि०—वृन्दावन में संस्कृत पढ़ी, १९१७ में प्रथमा (काशी) प्रथम श्रेणी में, विशारद पंजाब वि० वि०, (वि० वि० में द्वितीय) १९१९ में शास्त्री; सा०—अध्यपन, ३०,३४ तथा ४२ में राष्ट्रीय आंदोलन में भाग, नौकरी से हटाये गये, जुर्माना, नीलामी, कैद, नजरबंदी; भूत० संपा० 'मराल' आगरा, द्विवेदीजी के अनन्य भक्त; प्रका०—द्वापर की राज्यक्रान्ति, लेखन-कला, अच्छी हिन्दी का नमूना, मानव-धर्म-मीमांसा, कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास, व्रजभाषा का व्याकरण; प०—कनखल, हरद्वार।

किशोरी रमण टंडन—ज०—११ नवम्बर १९१४, विसवाँ, सीतापुर; शि०—कानपुर; सा०—जोधपुर की साहित्यसभा के सभापति, साहित्य-मंडल के सह० मंत्री, प्रधान मंत्री हिंदी-प्रचारिणी सभा जोधपुर, अ० भा० हि० सा० स० प्रयाग (१९४६-४७) की स्थायी समिति के सद०; प्रका०—जीवन-

संदेश, बटोही; अप्र०—आँसू और मुस्कान; वर्त०—'प्रजा सेवक' के सह० संपा०, ग्लोब न्यूज एजेंसी के संवाददाता; प०—शारदाभवन, ३ सरदारपुरा, जोधपूर।

किशोरीलाल गुप्त—ज०—१८६३; सा०—सभा० पोरवाल महासभा, प्रजामंडल, पोरवाल किसान सेवा-संघ, संपा० 'पोरवाल हितकारी' उज्जैन, १८ वीं–१६ वीं शताब्दी की हस्तलिखित पुस्तकों के संग्रहकर्ता; प्रका०—काव्य वाटिका, विरहिनी-विलाप, सदुपदेश माला, अनुभूत प्रश्नावली; अप्र०—मराठी - हिन्दी - शिक्षा, गुजराती - हिन्दी-शिक्षा, आदि; वि०—'वाणीभूषण' और 'व्याख्यानकेसरी' की उपाधि आपको मिली है; प०—हिन्दी साहित्य कुटीर, मेलखेड़ा, मालवा।

किशोरीलाल त्रिवेदी 'कुसुम'—ज०—२५ जून १६०७; शि०—सा०रत्न; ज्ञा०—गुजराती, मराठी, संस्कृत; सा०—'अखिल भारतीय ग्राम पुस्तकालय योजना' का संपादन; 'नागरी निकेतन' स्थापित किया; प्रका०—स्फुट लेख और कविता; प०—वड़वाहा, होल्कर राज्य, मध्यभारत।

किशोरीशरण लिटौरिया 'किशोर'—ज०—जून १६१२; शि०—सा० रत्न; प्रका०—मेरी रानी, स्वर्णकण, मेरा स्वप्न, जसवंत-जस; वि०—इनकी पत्नी सुश्री मिथिलेश्वरी देवी 'लोकेंद्र' की संपादिका हैं; प०—मुख्याध्यापक, कैंट ब्वायज़ स्कूल, सदर बाजार, झाँसी।

कुंजीलालमदनमोहन पंचोली ज०—१ जूलाई १६११; शि०—विज्ञानरत्न (कृषि); सा०—संस्थापक सम्मेलन परीक्षाओं का केन्द्र; वर्त०—रूरल असिस्टेंट, सीवड़या; प्रका०—गोपालन, फसलों का रोटेशन, उत्तम बीज, मुकदमेबाजी, सब खादों में गोबर का महत्व; प०—सीवड़या, खाले गाँव, होल्कर राज्य।

कुंदनलाल खत्री—ज०—१८६३; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—तालबेहट, झाँसी।

कुमार शैल्य शास्त्री—सा०—भूत० मंत्री प्रांतीय साहित्य परिषद् अलीगढ़, संस्था० वाल्मीकि - सभा

ोहतक, भूत० प्रबंध संपा० दैनिक हिन्दू सन्देश' जोधपुर ;प्रका०—प्रन्तवर्ती ; प०—संपादक दैनिक हिंदू राष्ट्र, जोधपुर ।

कुमार साहु—ज०—१६२७ ; ा०—भूत० संपादक साप्ताहिक नवप्रभात', प्रान्तीय हिन्दी साहित्य म्मेलन की समिति के सदस्य, ुरुचि प्रेस के संचा०, प्रधान मंत्री ान्ति-निकेतन हिन्दी-साहित्य-ंदिर नागपुर ; प्रका०—नीली छाया, खंडित चट्टान, भारत का ऐतिहासिक चार्ट , प०—१८, बेजली नगर, नागपुर १ ।

कुमुद—ज०—१६१४ मुंगेर; शि०—विद्यालंकार; सा०—भूत० ंपा० 'नवसंदेश' और 'नौनिहाल'; का०—संगम-निर्वाण और राजर्षि ाव्य; प०—दैनिक 'इंदौर-मार्चार', संपादकीय कार्यालय, ंदौर ।

कुलमणि सिंह—ज०-६ जुलाई १६१७, धामपुर; सा०—समाज-ादी विचारधारा के पोषक, १६-१-४२ के आंदोलन में कारावास ंड; प्रका०—स्फुट लेख; प०—ंपादक 'सोशलिस्ट' साप्ताहिक, धामपुर ।

कृपानाथ मिश्र-ज०-१६०५; शि०—एम० ए० भागलपुर, बी० ए० (आनर्स) किंग्स कालेज लंदन; सा०—संपा० 'रोशनी', टाइपराइटर के लिए नयी वर्णमाला की योजना; प्रका०—मणिगोस्वामी (ना०), प्यास (उप०), बालकों का योरोप, विदेश की बातें, हिन्दुस्तानी कहानियाँ, अँगरेजी उच्चारण-विधान, कविता-कौमुदी; अप्र०—गायत्री, रागभ्रमर श्रीकृष्ण, फूलों के देश में, सीता, चैतन्य; प०—साइंस कालेज, पटना ।

कृपाशंकर अवस्थी—ज०—१६०१; शि०—सा० आ०, भिषग्भूषण; सा०—सभा० हिंदी पुस्तकालय मुंगेर तथा विद्वत् परिषद्; सद० हि० सा० परि० और ज़िला हि० सा० सम्मे०; मंत्री संस्कृत परिषद्; प्रतिनिधि बिहार संस्कृत - एसोसिएशन; प्रका०—स्फुट; प०—विज्ञान महौषधालय, मुंगेर ।

कृपाशंकर शुक्ल—ज०—१६१८; शि०—कान्यकुब्ज कालेज लखनऊ, प्रयाग वि० वि० से १६-

४१ में एम० ए०; **अप्र०**—हिन्दू गणित का इतिहास; **वर्त०**—लेक्चरार लखनऊ वि० वि०; **प०**—१६ हुसेनगंज, लखनऊ।

कृष्णकिशोर श्रीवास्तव—**ज०**—प्रयाग; **शि०**—एम० एस-सी नागपुर वि० वि०, सा० रत्न; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—सीताबर्डी, नागपुर।

कृष्णकुमार,डाक्टर—**शि०**—विद्याभूषण, सा० रत्न, आयुर्वेद शास्त्री; **सा०**—कोल्हापूर में एम० इ० स्कूल, तिरहुत मैथिली हिन्दी साहित्य-परिषद् पटना तथा दरभंगा में वाचनालय के संस्था०; **अप्र०**—तुलसीदास और उनकी कृतियाँ; **प०**—मेडिकल आफिसर, डि० बो० डिस्पेंसरी, मखदुमाबाद, गया।

कृष्ण चन्द्र—**ज०**—१६०४, बसीरा, मुजफ्फरगढ़ (पंजाब); **शि०**—गुरुकुल मुलतान और गुरुकुल काँगड़ी; **सा०**—दैनिक 'अर्जुन' के संयुक्त और साप्ताहिक 'अर्जुन' के प्रधान सम्पादक; **प्रका०**—चीन की स्वाधीनता, श्रद्धा,हमारे अधिकार और कर्तव्य, वर्तमान जगत्, हिन्दी व्याकरण, कांग्रेस का इतिहास,नवीन तुर्की का जनक कमाल तथा कई बालोपयोगी पुस्तकें; **प्रि० वि०**—इतिहास और राजनीति; **वि०**—श्रीगौरीशंकर हीराचन्द ओझा के पास तीन साल तक इतिहास-संशोधन तथा भारत की मध्यकालीन संस्कृति का लेखन; **प०**—१६ जैनबिलडिंग्स, रोशनारा रोड, देहली।

कृष्णचन्द्रशर्मा 'चंद्र'—**ज०**—१६१०, बुलन्दशहर; **शि०**—आगरा; **जा०**—अँगरेजी, उर्दू, फारसी; **प्र०**—१६२७; **प्रका०**—मदशाला (कविवर 'बच्चन' के अनुकरण पर) मरीचिका, प्रतिच्छाया; **प०**—अध्यापक, बी० ए० बी० हाई स्कूल, मेरठ।

कृष्णदत्त खांडल—**ज०**—२७ अप्रैल १६१२; **शि०**—इन्दौर; **सा०**—भूत० संपादक मासिक 'मकरंद'; **प्रका०**—प्राकृतप्रकाश की संस्कृत टीका (प्राकृत व्याकरण), भर्तृहरि के नीतिशतक की हिन्दी टीका; **प०**—हिंदी-अध्यापक, ऋषिकुल संस्कृत कालेज, लक्ष्मणगढ़, सीकर।

कृष्णदत्त पालीवाल—ज०—१८६४, तनौरा, आगरा ; शि० एम० ए०, इलाहाबाद वि. वि०, सा० रत्न; सा०—नागरी-प्रचारिणी सभा आगरा के सभापति ; भूत० संपा०—'पालीवाल', 'ब्रह्मोदय', 'प्रताप', 'प्रभा' और 'सैनिक'; प्रका०—सेवा-मार्ग, अभयापुरी, साम्यवाद, मेरी कहानी, दीन-भारत, तीन करोड़ की तकदीर आदि; वि०—संयुक्त प्रांतीय लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य (सन् १६२३-२६) और आगरा जिला बोर्ड के सदस्य (१६२८-३१) तथा उपरांत सभापति ; सन् १६३५ में अखिल भारतवर्षीय एसेंबली, प्रांतीय पोस्टमैन कानफ्रेंस, रेलवे यूनियन के सभापति; प०—'सैनिक'-कार्यालय, आगरा।

कृष्णदत्त भारद्वाज—ज०—१६ अगस्त, १६०८ ; शि०—दिल्ली, पटना, पंजाब से एम० ए०, शास्त्री और पुराणाचार्य ; सा०—भूत० संपा०—'गौड़ ब्राह्मण समाचार', रेडियो पर अनेक व्याख्यान ; प्रका०—हिंदी गद्य-कुसुमावली, प्रारम्भिक संस्कृत पुस्तकम्, भक्त प्रहलाद (नाटक); प०—अध्यापक, माडर्न हाई स्कूल, नयी दिल्ली।

कृष्णदेव उपाध्याय—ज०—१६१०, सोनवर्सा, बलिया; शि०—एम. ए. (हिंदी, संस्कृत), सा. रत्न, शास्त्री; सा०—भोजपुरी-ग्रामगीतों के संकलन-संपादन में संलग्न; प्रका०—चारुचरितावली (जीव०), आसाम (विस्तृत गजेटियर), भोजपुरी ग्राम-गीत (प्रथम भाग); प०—असिस्टेंट रजिस्ट्रार, राजकीय संस्कृत विद्यालय, बनारस।

कृष्णदेवप्रसाद गौड़ ('बेढब' बनारसी)—ज०—१८६५; शि०—एम०ए०, एल०टी०, प्रयाग, काशी; सा०—हिं० सा० स० के दो वर्ष तक मंत्री रहे, उसकी स्थायी समिति के सद०, काशी ना० प्र० सभा० के तीन वर्ष तक प्रधान मंत्री अब साहित्य मंत्री, प्रसाद-परिषद् काशी के तीन वर्ष तक उपसभापति, उत्तर प्रदेशीय सेकेंडरी एजूकेशन एसोसियेशन के दो वर्ष तक सह० मंत्री, हिंदुस्तानी एकेडमी के सद०; हिं० सा० स० के काशी-अधिवेशन

की स्वागतकारिणी समिति के प्रधान मंत्री ; प्रका०—शिबा जी की जीवनी, साहित्य-संयम, जापान-वृत्तांत, बेढब जी की बहक, बनारसी इक्का, मसूरी वाली, हिंदी खड़ी बोली-कविता की प्रगति तथा बाल पद्यावली, पिगसन की डायरी (संस्मरण); वि०—हास्यरस की पत्र-पत्रिकाओं के भूत० संपा० ; प०—आचार्य, डी० ए० वी० कालेज, बनारस।

कृष्णनारायण लाल—ज०—५ मई, १९१५ ; शि०—प्रयाग और काशी, बी० ए० और एम० ए० आगरा वि० वि०, सा० र०; सा०—पहले कालाकाँकर के हनुमंत हाई स्कूल में अध्यापक थे, वहीं श्री सुमित्रानंदनपंत के सम्पर्क में रहकर साहित्य-सेवा, ग्राम-गीतों का संकलन और प्रकाशन करते थे ; प्रका०—स्फुट; प०—हिंदी अध्यापक, केसरवानी हाई स्कूल, इलाहाबाद।

कृष्णपद भट्टाचार्य—ज०—२२ अप्रैल, १९०९ ; शि०—वेदांत शास्त्री, कविराज ; सा०—हिंदी-प्रचार, असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग ; प्रका०—बँगला हिंदी-विश्वकोष और इंसाइक्लोपीडिया के संपा०; वर्त०—आयुर्वेद विश्वविद्यालय के मासिक मुखपत्र के संपा० ; प०—झाँसी।

कृष्णप्रकाश अग्रवाल—ज०—१९१० , शि०—बी० एस० सी०, एल-एल० बी० ; प्रका०—१९२६ से पत्रों में कविता, कहानी, एकांकी नाटक, निबंध, गद्यकाव्य; अप्र०—मानव (महाकाव्य) आदि; प०—वकील, मंडीबाँस, मुरादाबाद।

कृष्णवल्लभ द्विवेदी—ज०—१० जनवरी, १९१०, बड़नगर, मालवा; शि०—बी० ए० तक इन्दौर क्रिश्चियन कालेज और प्रयाग विश्वविद्यालय; प्र०—१९३२; सा०—भूत०सहकारी संपा० साप्ताहिक 'अभ्युदय' प्रयाग, १९३४-३५; सितंबर १९३९ में 'हिंदी-विश्वभारती' को जन्म दिया, आरंभ से उसके संपादक; प्रका०—तीन रूसी उपन्यासों के अनुवाद—बंदी, संघर्ष, वहिष्कार, भारत-निर्माता, हिंदी-कोश (प्रेस में) ; प०—चारबाग, लखनऊ।

कृष्णवल्लभ सहाय—शि०—

[ए]म० ए० बी० एल०—सा०—[ब]िहार की कांग्रेसी सरकार के [प]ार्लियामेंट्री सेक्रेट्री, 'छोटा नागपुर-संवाद,पत्र के संपा०; अप्र०—अनेक निबंध-संग्रह; प०—हजारी-[ब]ाग, छोटा नागपुर।

कृष्णबिहारी मिश्र—द्विवेदी युग के प्रतिष्ठित साहित्य-सेवी; ज०—१८६०; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी० गवर्नमेंट हाई स्कूल सीतापुर और कैनिंग कालेज लखनऊ; सा०—भूत० संपा०—मासिक 'माधुरी', त्रैमासिक (बाद में द्वैमासिक) 'साहित्य-समालोचक' लखनऊ और 'आज' काशी; साहित्य-परिषद् मौरावाँ के सभापति १६२६; अब स्पेशल मजिस्ट्रेट; प्रका०—चीन का इतिहास, देव और बिहारी; सपा०—गंगाभरण, नवरस-तरंग, मतिराम-ग्रंथावली, नटनागर-विनोद, मोहन-विनोद; वि०—अंतिम दो ग्रंथों का संपादन करने के उपलक्ष में सीतामऊ राज्य के श्रीमान् राजा रामसिंहजी ने सम्मानपूर्वक आपको खिलत दी; प०—सिधौली, सीतापुर।

कृष्णलाल शरसोदे 'हंस'—ज०—१६०५; शि०—बी.ए., सा. रत्न; स०—भूत० संपा० 'ज्योति' मासिक; प्रका०—समाज-सुधार सम्बन्धी एक दरजन पुस्तकें, जलियानवाला बाग, व्यावहारिक स्वास्थ्य-विज्ञान, सावित्री, मराठी साहित्य का इतिहास, सिनेमा; कहा०—परदेशी प्रीतम, मजिस्ट्रेट की बेटी; प.—अध्यापक हिन्दी गुजराती हाई स्कूल, अकोला, बरार।

कृष्णलाल शर्मा 'अवधेश'—ज०—विजयदशमी, १६०७; सा०—स्थानीय काँग्रेस कमेटी और काशी ना.प्रचा०सभा के सद., ना. प्रचा० सभा वैशाली में खोज-कार्य किया; प्रका०— स्फुट; प०—बालुकाराम, वैशाली, मुजफ्फरपुर।

कृष्णवंशसिंह बाघेल—ज०—१८६५; शि०—घर पर; प्रका०—वेदस्तुति विकाशिका; अप्र०—तिब्बत में तेइस दिन, काश्मीर तथा सीमाप्रांत यात्रा, यमुनोत्री-गंगोत्री, बद्री-केदार एवं शतपथ-यात्रा, प०—भरतपुर, गोविंदगढ़, रीवाँ राज्य।

कृष्णशंकर शुक्ल—शि०—एम० ए० काशी हिंदू विश्व-

विद्यालय; प्रका०—आधुनिक हिंदी-साहित्य का इतिहास, कविवर रत्नाकर, केशव की काव्य-कला; वर्त०—हिंदी अध्यापक, कान्य कुब्ज इंटर कालेज, कानपुर; प०—शांति-निवास, गड़ेरिया मोहाल, कानपुर।

कृष्णस्वामी मुदीराज—ज०—१८६६; सा०— हैदराबाद (दक्षिण) में हिंदी के प्रचारक; संस्था० कन्या पाठशाला, अ०भा० हि० सा० सम्मेलन के दक्षिण से कार्यकारिणी समिति के भूत०सद०, हैदराबाद हिंदी-प्रचार-सभा की कार्यकारिणी के सद०, आन्ध्रस्वयं-सेवक दल के जन्मदाता, मुदीराज जातीय कान्फ्रेंस के प्रधान, हैदराबाद म्यूनिसिपल कारपोरेशन के सद० और सभापति, 'चित्रमय हैदराबाद' के संपा०, चन्द्रकांत प्रेस के मैनेजिंग डाइरेक्टर; प्रका०—स्फुट; प०—चन्द्रकांत प्रेस, हैदराबाद (दक्षिण)।

कृष्णकुमारी नाग— ज०—१४ जून, १६२१; शि०—एम० ए०, सा० रत्न; सा०—मढ़ाताल समाज-शिक्षण केंद्र की निरीक्षक; प्रका०—स्फुट लेख; वर्त०—अध्यापन-कार्य; प०—१३०, गोल बाजार, जबलपूर।

कृष्णकुमारी सरीन—शि०—बी० ए०, डी० टी०, आगरा वि० वि०; सा०—जालंधर में स्त्रियों में साक्षरता-प्रसार, चर्खा-आंदोलन का संचालन, प्रका०—प्रार्थना, कर्मयोग; प०—लेक्चरार, महादेवी इंटर कालेज, देहरादून।

कृष्णाचार्य शर्मा—ज०—१६२१; शि०— व्याकरणाचार्य, साहित्य शास्त्री; प्रका०—स्फुट; अप्र०—रामचरितमानस की टीका, संस्कृत में आलोचनात्मक ग्रंथ; प०— दयापुर, रघुनाथपुर, सारन।

कृष्णानन्द— सा०— काशी-नागरी-प्रचा०पत्रिका के अनेक वर्षों तक प्रधान संपादक; प०—ठि० नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस।

कृष्णानन्द पंत—शि०—एम० ए० (संस्कृत और हिंदी), शास्त्री, एम० ओ० एल०; सा०—सदस्य हिंदी बोर्ड आव स्टडीज़ १६३०-३६; आगरा, दिल्ली, राजपूताना तथा पंजाब आदि विश्वविद्यालयों

की परीक्षा-समिति से संबंधित; हि० सा० सम्मे० के मेरठ अधिवेशन १६४६ में प्रधान स्वागत-समिति और राष्ट्र-भाषा-परिषद्; प्रका०—संपा०—साहित्य-संग्रह १-४ भाग, गद्य-संग्रह, काव्य-दीपिका ; प०—अध्यक्ष हिंदी-विभाग, मेरठ कालेज, मेरठ।

कृष्णानंद स्वामी—प्रका०—आसवपरीक्षा नामक आयुर्वेदिक ग्रंथ ; प०—अमृतसर, लाहौर।

के० एस० चिदम्ब्रम—ज०—१४ अगस्त १६१७ ; शि०—बी० ओ० एल०, आर० बी०बी०, एच० पी० ; जा०—संस्कृत, अँगरेजी, तामिल, मलायलम् ; सा०—हिंदी और तामिल में स्फुट लेख; प०—हिंदी अध्यापक, सनातनधर्म कालेज, एलेप्पी, ट्रावनकोर।

के० गणपति भट्ट—ज०—२५ जनवरी १६२० ; लगभग दस साल से मैसूर में हिंदी साहित्य का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं; प्रका०—स्फुट ; प०—बँगलोर।

केदारनाथ गुप्त—स्वास्थ्य विषयक लेखक ; ज०—१८६३, राजापुर गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि में ; शि०—एम० ए० (आगरा वि० वि०) ; सा०—अध्यक्ष छात्र हितकारी पुस्तकमाला प्रयाग, बालचर-मंडल के जिला कमिश्नर; प्रका०—स्वास्थ्य संबंधी लेख, सौ वर्ष कैसे जियें, प्राकृतिक चिकित्सा, स्वास्थ्य और जल-चिकित्सा, आदर्श भोजन, ईश्वरीय बोध, मनुष्य जीवन की उपयोगिता, सफलता की कुंजी, स्वामी दयानंद, स्वामी रामतीर्थ, गुरु गोविंद सिंह, मन की अपार शक्ति; प०—प्रिंसिपल अग्रवाल विद्यालय इंटरकालेज, प्रयाग।

केदारनाथ गुप्त—ज०—१६११; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०, सा०र०, प्रयाग ; सा०—संस्थापक यंगमेन्स लिटरेरी एसोसियेशन ; राष्ट्रीय गाँधी विद्यालय, त्रिवेणी संस्कृत पाठशाला, छात्र-पुस्तकालय आदि संस्थाओं के पदाधिकारी, सम्मे० की परीक्षा-समिति के सद०, केसरवानी जाति की संस्थाओं के संस्थापक तथा 'केसरवानी समाचार', 'केसरवानी संसार' के संपा०, प्रसिद्ध व्यावसायिक पत्र 'उद्योग' के संपादक; प्रका०—प्रिय प्रवास

की आलोचना; पद्माकर के 'जगद्विनोद' की टीका व आलोचना, 'विश्व ज्ञान' (हिंदी का प्रथम श्रेष्ठ ज्ञान कोष),इसके दो संस्करण और साहित्यिक संस्करण भी छपे, केसरवानी परिचय, प्रेम की पीर, योरोप तथा अमरीका के महापुरुषों की जीवनधारा, विश्व-विचित्रता ; वि०—कमर्शियल कारपोरेशन, नेशनल मैन्यूफैक्चरिंग हाउस आदि के संस्थापक ; प०—दारागंज, प्रयाग ।

केदारनाथ त्रिपाठी—ज०—१९१४ ; शि०—'आचार्य' गवर्नमेंट संस्कृत कालेज काशी; सा०—भूत० संपा० 'वसुन्धरा', भूत० अध्यक्ष स्थानीय व सबडिवीजनल नवयुवक संघ, स्था० 'विद्या मंदिरम्' (गोला) ; सा०—गोवध विरोधी सत्याग्रह में जेलयात्रा ; अप्र०—धर्म, स्त्री-समाज ; प०—विद्या मंदिरम् गोला, गोरखपुर ।

केदारनाथ भट्ट—स्वर्गीय पंडित रामेश्वर जी भट्ट के सुपुत्र एवं पंडित बद्रीनाथ भट्ट के भ्राता ; शि०—एम० ए०,एल-एल० बी०; सा०—भूत० संपा० 'नोकझोंक' मासिक ; प्रका०—मानस-कोश, आधुनिक कोश आदि; अप्र०—अनेक हास्य-रस के लेख-संग्रह ; प०—बाग मुजफ्फरखाँ, आगरा ।

केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'—ज०—१९०७ ; शि०—बी० ए०, पटना बिहार नेशनल कालेज, एम० ए० १७३७; प्र०—१९२०; प्रका०—कलेजे के टुकड़े, श्वेत-नील, कलापिनी, कम्पन, संवर्त, कालदहन, कैकेयी, सृजनहार, अर्पण ; अप्र०—पुष्परेणु, आराधना ; प०—सुपरिंटेंडेंट आव पुलिस, बिहार सेक्रेटेरियट, पटना ।

के० नारायणाचार्य—प्रचारक, शि०—साहित्य-विशारद; सा०—मंत्री कर्नाटक संघ ; मधुगिरि हिंदी प्रचार संघ और मैसूर रियासत हिंदी-प्रचार-समिति के सदस्य ; प्रका०—'सुब्बणा' का हिंदी अनुवाद; अप्र०—स्फुट आलोचनात्मक लेख ; प०—मधुगिरि, दक्षिण ।

के० भुजबली शास्त्री—पुरातत्व वेत्ता; ज०—फरवरी १८९७, मद्रास प्रांतस्थ दक्षिण कन्नड़ जिलांतर्गत काशिपहड़ में; सा०—लगभग २४ साल से हिंदी-सेवा में

संलग्न; संपा०'जैनसिद्धांत-भास्कर', 'जैन एंटिक्वेरी' और 'वीरवाणि'; अनेकप्राचीन जैनग्रंथों के उद्धारक, हस्तलिखित ग्रंथों के लिपिकार; प्रका०—जैनधर्म, जैनदर्शन, श्रीमुनिसुव्रतकाव्य, कन्नडकविचरिते; प०—पुस्तकालयाध्यक्ष, जैनसिद्धांत-भवन, आरा, बिहार।

के० वासुदेवन पिल्ले—ज०—१९०७, त्रावनकोड़; शि०—मद्रास; सा०—त्रावनकोड़ के सर्वप्रथम हिंदी-प्रेमी जिन्होंने सम्मेलन की साहित्यरत्न परीक्षा पास की है, अनेक संस्थाओं के कार्यकर्ता, तिरुवितांकूर सांस्थानिक हिंदी प्रचार-समिति के प्रधान मंत्री और संगठक, दक्षिण भारत हि०प्र०सभा के अधीन तथा स्वतंत्र रूप से केरल प्रांत में बीस वर्ष से हिंदी-प्रचारक, माडल स्कूल त्रिवंद्रम् त्रावनकोड़ स्टेट में हिंदी अध्यापक; रच०—हिंदी स्वयं शिक्षक, हिंदी-पाठावली, हिंदी ग्रामर; प०—प्रधानाध्यापक, तंपानूर हिंदी महाविद्यालय, त्रावनकोड़।

केशरी किशोरशरण—ज०—१९१०; शि०—एम० ए० (हिंदी); सा०—सदस्य पटना युनिवर्सिटी सिनेट, सभा० प्रगतिशील लेखक संघ, मुंगेर; प्रका०—मरीचिका—उप०; प०—प्रिंसिपल, डी० जे० कालेज, मुंगेर।

केशवदेव मिश्र 'कमल'—ज०—१९२३, लालपुर, एटा; सा०—श्री हरिभाऊ के सहयोग में 'जीवन साहित्य' का संपा०, भूत० संपा० 'संग्राम', ४० और ४२ के आंदोलनों में जेल; प्रका०—स्फुट; अप्र०—'सुलह' और एक कहानी-संग्रह; प०—'लोक-वाणी'-कार्यालय जयपुर।

केशवप्रसाद पाठक—शि०—एम० ए०; सा०—भूत० संपा० मासिक 'प्रेमा', संस्था०—उद्योग-मंदिर नामक प्रकाशन-संस्था; प्रका०—रूबाइयात उमर खैयाम का सुन्दर पद्यात्मक अनुवाद, त्रिधारा; अप्र०—स्फुट कविता-संग्रह; प०—केशव कुटीर, मालदारपुरा जबलपुर।

केशवप्रसाद मिश्र—शि०—एम० ए०; सा०—काशी नागरी-प्रचारिणी पत्रिका के अनेक वर्षों तक संपादक; प्रका०—मेघदूत—

पद्यात्मक अनुवाद और आलोचनात्मक भूमिका; वि०—भूत० अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय, काशी; प०—काशी।

केशवलाल झा 'अमल'—ज०—१८६२; प्रका०—काव्य-प्रबोध, प्रेमपुष्पमालिका, ललित-मालती प्रलाप; प०—सोन्हौली, मुंगेर, बिहार।

केशवानन्द, स्वामी—सा०—संस्थापक साधु आश्रम पुस्तकालय, साहित्य-सदन अबोहर, ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया; स्वागताध्यक्ष हिं० सा० स० अबोहर अधिवेशन, लगभग दस हजार बालक, बालकाओं और प्रौढ़ों को हिंदी-शिक्षा दी, संपा० 'मरुभूमि' जीवन ग्रन्थमाला तथा सहायक नवजीवन-प्रकाशन मंडल; प०—साहित्य-सदन, अबोहर, पंजाब।

केसरी नारायण शुक्ल, डाक्टर—शि० एम० ए०, डी० लिट्० हिन्दू विश्वविद्यालय काशी; सा०-भूत० अध्यापक, हिंदी विभाग; काशी विश्वविद्यालय और 'स्कूल आव ओरियंटल ऐंड अफ्रीकन स्टडीज़ यूनीवर्सिटी आव लंडन; सम्पादक 'किंजल्क'; प्रका०—आधुनिक काव्यधारा, आधुनिक काव्यधारा का सांस्कृतिक स्रोत; अप्र०-भारतेंदु पर एक विशिष्ठ ग्रन्थ; वि०—प्रथम प्रकाशित ग्रंथ पर आपको डी० लिट्० की उपाधि मिली और द्वितीय पर उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा पुरस्कार; प०-रीडर, हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

केसरीमल अग्रवाल 'हितैषी'—ज०—१८६०; शि०—सा० भू०; प्रका०—दक्षिण-पश्चिम के तीर्थ स्थान; प०—रक्षपाल-भवन, बड़वाहा, इंदौर।

कैलाशचंद्र चतुर्वेदी,—ज०—१६०५ जबलपुर; शि०—सा० रत्न; अप्र०—हिंदी-साहित्य-रश्मि, संपादकत्व; प०—हिंदी-अध्यापक, उमटिया, वाया सिहोरा, जबलपुर।

कैलाशनाथ भटनागर, डाक्टर—ज०—२१ जूलाई, १६०६; शि०—एम० ए० १६२८ में और पी-एच० डी० १६४१ में; सा०—भूत० हिंदी-अध्यापक, सनातनधर्म कालेज, लाहौर; पंजाब की प्रत्येक

हिंदी-प्रचारिणी सभा के भूत० सहयोगी और सहायक; पंजाब-विश्वविद्यालय के हिंदी-संस्कृत बोर्ड के भूत० सदस्य; प्रका०—हिंदी में—नाट्यसुधा (पंजाब टेक्स्टबुक कमेटी से पारितोषिक प्राप्त), भीमप्रतिज्ञा, कुणाल, एकांकी नाटक-निकुंज, श्रीवत्स, गल्प-विनोद, गद्य-प्रसून, नवसतसईसार, गद्य-चयनिका; संस्कृत में संपा०—मालविकाग्नि मित्र, आख्यानरत्न, नाट्यकथामंजरी, ऊरु भंग, कुमारसंभव सर्ग पाँच, निदानसूत्र (सामवेदीय); अप्र०—कल्पानुपदसूत्र (सामवेदीय), मृच्छकटिक (अनु०), मिहरकुल तथा अन्य अनेक स्वतंत्र और संपादित पुस्तकें; प०—भारतीय गौरवग्रंथमाला कार्यालय, हजरतगंज, लखनऊ।

कोवले माडभूषि कृष्णमाचारी ज०—२४ मई १८६२, काँचीपुरी, मद्रास; शि०—सा० रत्न, सा० शिरोमणि, का० लं०, प्रयाग, अलीगढ़; सा०—१६२० से हिंदी-प्रचार-कार्य में संलग्न; हिंदी-कुटीर के संचालक; प्रका०—श्रीवेंकटाचल-वैभव-द्राविड़ (तामिल) से अनु०, पुराण चित्र—तेलुगू अनु०; प०—दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा, त्यागरायनगर, मद्रास।

कोसराजुवेंकटेश्वरराव चौधरी शि०—सा० लं०; सा०—१६३७-४१ तक द० भा० हिं० प्र० सभा की ओर से हिंदी-प्रचार-कार्य, १६४१ से हिंदी विद्यापीठ देवघर (बिहार) की परीक्षाओं के आंध्रप्रांत के व्यवस्थापक, १६४७ से 'विश्वभारती कलावनम्' के प्रधान मंत्री; अप्र०— हिंदूमाता, रायबहादुर, भूख की ज्वाला—नाटक; प०—पेंदुलूर, वाया एलूरु, पश्चिम गोदावरी, आंध्रप्रांत।

क्षेमचंद्र 'सुमन' — ज०—१६१६ बाबूगढ़, मेरठ; शि०—ज्वालापुर, महाविद्यालय के स्नातक; सा०—भूत० संपा० 'आर्य' सहारनपुर, 'मनस्वी' (अमेठीराज), 'शिक्षा-सुधा' मुरादाबाद, भूत० सह० संपा० 'हिन्दीमिलाप' लाहौर; फतहचंद कालेज फार वीमेन, लाहौर में हिन्दी के भूत० प्रोफेसर; और २३ मार्च १६४३ में नजरबन्द; १५ जूलाई ४४ को छूटे, मेरठ में नजरबन्द, १६ मई १६४५ को मुक्त; प्रका०— कवि०—

मल्लिका, बन्दी के गान, कारा, उप०—हड़ताल, इति० जी०—हमारा संघर्ष, नेताजी सुभाष, कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास, नये भारत के निर्माता, आजादी की कहानी, संक०—लालकिले की ओर, गाँधी-भजनमाला, गल्पमाधुरी, मैं भंगी हूँ, राष्ट्रभाषा हिन्दी, नीरक्षीर, आलो०—हिन्दी साहित्य, नये प्रयोग, प्रभाकर - निबन्धावली, अप्र०—अजीता, अञ्जलि, सम्मेलन के सभापति, कामकला, हिन्दी में पत्रकार; प०—४४६७ हाथीखाना, पहाड़ी धीरज, दिल्ली।

खड्गसिंह गोप 'हिमकर'—ज०—१९२१; शि०—सा० रत्न; प्रका०—जीवन की झाँकी; अप्र०—हृदयोद्गार, आँसू के घूँट, सुलभ हिंदी-व्याकरण; प०—हिंदी अध्यापक, हरनौत हाई इँगलिश स्कूल, पटना।

खुशालचंद खुरशंद—ज०—१८८८; सा०—संचा और संपा०—'मिलाप', मंत्री आर्य सार्वदेशिक सभा; भूत० उपसभापति पंजाब नेशनलिस्टपार्टी, लाहौर; प्रका०—'अमृतपान' इत्यादि बारह पुस्तकें; प०—दिल्ली।

खुशीराम शर्मा, वाशिष्ट—ज०—१९१६; शि०—सा० भू०, कविरत्न, मनीषी; सा०—आर्य समाज के कई वर्ष तक मंत्री रहे, हिं० सा०सम्मे० के अबोहर अधि० की स्वागतकारिणी-समिति के सहायक, संपा० 'विश्वहितैषी' (साप्ता०), संस्था० भटिंडा जिला हि० सा० स०, पटियाला हि० सा० स० के सद०, प्रधान हि० सा० सभा जैतो; प्रका०—प्रेमोपहार, बुद्धचरित, गुरुगोविन्दसिंह, गुरुनानक, मीरा; वि०—हि० सा० स० के केन्द्रों की अनेक स्थानों में स्थापना करके हिन्दी-प्रचार का कार्य किया; प०—अध्यापक सेवा समिति हाई स्कूल, जैतो, नाभा।

खेदहरण शर्मा 'प्राणेश'—ज०—१९०९; शि०—शास्त्री, पंजाब, सा० रत्न, अयोध्या की विद्वत् परिषद् से काव्यालंकार की उपाधि प्राप्त; प्र०—१९२४; सा०—संपा०—'गृहस्थ' पाक्षिक, 'गोशुभ चिंतक', 'प्रतिमा' मासिक; अप्र०—वनफूल (गद्य काव्य) मंदार— कवि० शृंगार-दर्शन,

हमारा कलात्मक दृष्टिकोण, कर्ण-वध; प०—साहित्याश्रम, गया।

गंगादयाल त्रिवेदी—सा०—उत्तर-प्रदेशीय हिंदी पत्रकार-सम्मेलन की कार्यकारिणी के सदस्य ; संपा०—साप्ताहिक 'हलचल', कन्नौज ; अप्र०—अनेक स्फुट निबंध-संग्रह; प०—'हलचल'-कार्यालय,कन्नौज।

गंगाधर इंदूरकर—ज०—१० जुलाई १९१९; शि०—सा० रत्न और सा० शास्त्री, प्रयाग, काशी; सा०—भूत० संपा० हस्तलिखित 'संघ-मित्र' १९३९—४०; प्रका०—हिंदी विश्वविद्यालय - पंचांग (१९९९—२०००); अप्र०—हिंदी में हास्य, अलंकारशास्त्र; प०—३५ शिवचरनलाल रोड, प्रयाग।

गंगाधर मिश्र—ज०—१९१५; बनारस; सा०—संपा 'विमला' (१९३४); प्रका०—अंताक्षरी, मूलरामायण की विशद टीका; अप्र०—सुरुचि-समन्वय, मधुकोश, निबंधसरणि; प०—बनारस।

गंगानन्दसिंह, 'कुमार'—ज०—१८९८; ज्ञा०— अँगरेजी, संस्कृत, फ्रेंच, मैथिली, बँगला; सा०—रायल सोसाइटी आव ग्रेट ब्रिटेन ऐंड आयरलैंड, रायल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल एशियाटिक सोसाइटी, बिहार-उड़ीसा-रिसर्च सोसाइटी, इंपायर पार्लियामेंटेरियंस एसोसिएशन आव ग्रेटब्रिटेन ऐंड आयरलैंड, और बिहार लेजिस्लेटिव कौंसिल के फेलो या सदस्य; इंडियन लेजिस्लेटिव एसेंबली में कई वर्ष तक कॉंग्रेसपार्टी के प्रधान मंत्री रहे ; बिहार प्रांतीय हिंदू सभा के सभापति; प्रका०—स्फुट; प०—श्रीनगराधीश, पूर्णिया, बिहार।

गंगापति सिंह—सा०—कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी और मैथिली के भूतपूर्व अध्यापक ; प्रका०—कनौज-पतन (ना०), विवाह-विज्ञान, नरपशु (उप०), मिथिला की घरेलू कहानियाँ, पुराणों में वैज्ञानिक बातें, ग्रियर्सन साहब की जीवनी ; प०—पचही, दरभंगा।

गंगाप्रसाद उपाध्याय—दर्शन-शास्त्रज्ञ; ज०—६ सितम्बर १८८१, नदरई, एटा ; शि०—एम० ए० (अँगरेजी) १९१२, एम० ए० (दर्शन) १९२३ प्रयाग वि० वि० ;

जा०—उर्दू, फारसी, संस्कृत; **सा०**—आर्यसमाज की सेवा के लिए सरकारी नौकरी का त्याग १९१८ में, डी० ए० बी० हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक १९३९ तक, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान (१९४१-४५), सार्वदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के उपप्रधान (१९४५) तथा अवैतनिक मंत्री, १९४७में दर्शन-परिषद हिं० सा० सम्मेलन के सभापति, **प्रका०**—हिन्दी भाषा का नवीन व्याकरण, हिन्दी शेक्सपियर ६ भाग, अँग्रेज जाति का इतिहास, विधवा-विवाह-मीमांसा, आर्यसमाज, सर्व-दर्शन-संग्रह, आस्तिकवाद, अद्वैतवाद, शंकर, रामानुज, स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजाराम मोहनराय, केशव चन्द्रसेन, धम्मपद, जीवात्मा, मनुस्मृति, वैदिक मणिमाला, इशोपनिषद, शंकर भाष्यालोचन, भगवद्-कथा, हम क्या खाएँ—घास या मांस, आर्य स्मृति, एतिरेय ब्राह्मण, ७५ छोटे बड़े ट्रैक्ट, इनके अतिरिक्त अँगरेजी में आर्यसमाज, वैदिकदर्शन आदि विषयों पर अधिकृत पुस्तकें लिखीं हैं; **अप्र०**—जीव-जन्तु १४ भाग; **वि०**—'आस्तिकवाद' पर सम्मे० ने मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया; **प०**—कला-प्रेस, प्रयाग।

गंगाप्रसाद पांडेय—**ज०**—१९१४; **प्रका०**—काव्य-कलना, नीर-क्षीर, निबंधिनी, छायावाद-रहस्यवाद, महादेवी वर्मा, कामायनी : एक परिचय, साहित्य-संतरण; **सम्पा०**—महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, काव्यकला, गद्य-परिचय; **अप्र०**—हिंदी कथा-साहित्य, हेमांतिका (कविता); **प०**—कोठी स्टेट, मध्यभारत।

गंगाप्रसाद मिश्र—**ज०**—२८ जनवरी १९१७; **शि०**—बी० ए० आनर्स, एम० ए०, लखनऊ वि० वि०, सा० र०; **प्र०**—१९३४; **प्रका०**—**उप०**— विराग, महिमा, संघर्षों के बीच, ट्यूटर, **कहा०**—सरोद की गत, नया खून, आदर्श और यथार्थ, नई राहें, बिगुल बालोपयोगी; **प०** — अध्यापक जुबिली इंटर कालेज, लखनऊ

गंगाप्रसाद शुक्ल— **ज०**—दिसम्बर, १९०६, कानपुर; **सा**—मार्च १९३९ में हिं० सा

समिति की धार में स्थापना ; हिं० सा० समिति की बदनावर शाखा द्वारा हिन्दी-प्रचार ; उक्त धार-समिति के प्रधान मंत्री; भूत० सह० सम्पा० 'कादंबरी' कानपुर, 'वीणा' इन्दौर, साप्ता० 'वृत्तधारा' धार, 'वीणा' के 'धार-अंक के विशेष सम्पादक ; **प्रका०**—रचनाविधि, तुलसी-प्रवेशिका ; **अप्र०**— अब्राहम-लिंकन की जीवनी ; **प०**—रासमंडल, धार, मध्य भारत ।

गंगाप्रसाद सिंह अखौरी—**ज०**—१६०१ ; **सा०**—भूत० सहायक संपा० 'विश्वदूत' कलकत्ता, 'भारत जीवन' काशी, सभासद ना० प्र० सभा काशी ; **प्रका०**— हिंदी के मुसलमान कवि, देवदास, अभागिनी, माधुरी, मित्र, दाम्पत्य जीवन, गीता-प्रदीप ; **प०**—'भारत जीवन'कार्यालय, काशी ।

गंगाविष्णु पाण्डेय 'विष्णु'—**ज०**—१८८४, अमानीगंज, इटौंजा, लखनऊ ; **शि०**—शास्त्री, काव्य-पुराण, वेद-तीर्थ; **प्रका०**—कृष्णचरित, आदर्श मित्र, कृष्ण और सुदामा; **अप्र०**—एक काव्य-संग्रह ; **प०**—अध्यापक हितकारिणी संस्कृत पाठशाला, इटौंजा, लखनऊ ।

गंगाविष्णु शास्त्री—**शि०**—धर्म-भूषण ; **सा०**—भारतधर्म महामंडल, काशी के प्रसिद्ध महोपदेशक ; **प्रका०**—अनेक धार्मिक पुस्तकों और शास्त्रीय निबंधों के संग्रह ; **प०**—बिहटा, बिहार ।

गंगाशरण शर्मा 'शील'—**शि०**—एम० ए० (हिंदी, संस्कृत); **सा०**—संस्थाप० 'हिंदी प्रचारिणी सभा', हिंदी प्रचार के लिए पुस्तकें वितरित कीं, भारती-भवन हिंदी-साहित्य-परिषद् की स्थापना की, रामचरित मानस का प्रचार ; **प्रका०**—प्रेमकुमार, मोहन-मुक्तावली, मानस-पंचरत्न ; **प०**—अध्यक्ष हिंदी-संस्कृत-विभाग, एस० एम० कालेज, चंदौसी ।

गंगाशरण सिंह—**ज०**—१६०४ ; **सा०**—बिहार प्रां० हिं० सम्मे० के इतिहास के प्रमुख शोधक, 'युवक' के संचालक और संपादक; **प्रका०**—विचार-प्रवाह, पद्य-प्रवाह, साहित्य-प्रवाह ; **प०**—खरगपुर, बिहार ।

गजराजसिंह—गौतम—**शि०**

—एम०ए०, एल-एलबी०; सा०—अनेक स्थानीय जातीय सभाओं में काम किया; प्रका०—स्फुट; अप्र०—ईश्वर-दर्शन, प०—वकील, होशंगाबाद।

गजाधर सोमानी—सा०—दैनिक 'भारतमित्र' के संपादक रहे; श्री-सत्यनारायणपुस्तकालय के संस्थापक, प्रका०—स्फुट; प०—श्रीनिवास काटनमिल, बंबई।

गणपतिचंद्र भंडारी—शि०—एम० ए०; सा०—कुशलाश्रम विद्यालय के अवै० छात्रावास संरक्षक; प्रका०—इंद्र-धनुष; वर्त०—हिन्दी लेक्चरर श्री महाराजकुमार इंटर कालेज, जोधपुर; प०—सरदारपुरा, तीसरी सड़क, जोधपुर।

गणपतिसिंह वर्मा—आयुर्वेद के लेखक; ज०—संगरिया, बीकानेर; ज्ञा०—संस्कृत के अतिरिक्त तीन भाषाएँ; सा०—संपा० 'रसायन', दिल्ली; प्रका०—आयुर्वेद तथा गुणविधान सीरीज की लगभग दो दर्जन पुस्तकें, यथा—अनुभूत-चिंतामणि (दो भाग), अनुभूत-योग (दो भाग); प०—रसायन फारमेसी, ५७१२।११ दरियागंज, सं० ३, पो०बा० १२५, दिल्ली।

गणेशचंद्र जोशी—ज०—२६ नवंबर १८९८; शि०—सा० रत्न; प्र०—'स्वराज्य' 'हिंदीकेशरी' में बनारस २२ दिसम्बर १९१६; सा०—भूत० संपा० 'पुष्करण्यब्राह्मणोपकारक'; प्रका०—मन्वंतर, सर्पदंशन, दुर्गा बाबा; वर्त०—संपा० 'कल की दुनिया' सासा०, 'जनमत' दैनिक; प०—जालोरीगेट, जोधपुर।

गणेश चौबे—ज०—नवम्बर १९१२; शि०—मैट्रिक; सा०—लोक-वर्ता परिषद टीकमगढ़ के मान्य सदस्य; भारतेन्दु साहित्य संघ, भोजपुरी साहित्यमंडल, चम्पारन जिला साहित्य सम्मेलन और चम्पारन रिसर्च सोसाइटी की कार्य समिति के सदस्य; बिहार प्रादेशिक साहित्य सम्मेलनकी स्थायी समिति, बिहार लोक-साहित्य-संग्रह-समिति और नागरी-प्रचारिणी सभा के सदस्य; प्रका०—लोकगीतों के संबंध में स्फुट लेख; प०—मोतिहारी (बिहार)।

गणेशदत्त शर्मा 'इन्दु'—

ज०—२६ अक्टूबर, १८६४, गुना; ज्ञा०—अँगरेजी, संस्कृत, उर्दू, गुजराती, बँगला, गुरुमुखी; प्र०— १६१२; सा०— भूत० संपा० 'बालमनोरंजन', 'हिंदी-सर्वस्व', 'गौड़-हितकारी' मैनपुरी, मासिक 'चंद्रप्रभा' नीमाड़, 'अनाथ रक्षक' अजमेर, 'ब्राह्मण-समाचार' दिल्ली, साप्ताहिक 'जीवन' मथुरा, प्रका०–वैदिकपताका, उपदेश कुसुमांजलि, नागरी-पूजा, रूपसुंदरी, लवकुश, भीम-चरित्र, राणा संग्राम-सिंह, व्यावहारिक सभ्यता, शुद्ध नामावली, वीर कर्ण, वीर अभिमन्यु, भारत में दुर्भिक्ष, खादी का इतिहास, वीर अर्जुन, स्वप्नदोष, गुजराती-हिंदी शब्दकोश; आर्य-समाज-महत्ता, संतानशास्त्र, हिंदूपति प्रताप, यशवंतराय होल्कर, लेखराम, गुरु नानक, यौवन के आँसू, गोरक्षा, हारमोनियम-तबला-बेला-मास्टर, जगद्गुरु शंकराचार्य, अमरज्योति श्रीकृष्ण, देहाती कहा-वातें आदि; वि०—'गुजराती-हिंदी-कोश' पर बड़ौदा में होनेवाले हिं० सा० सम्मेलन से और 'गोरक्षा' पर दरभंगा-नरेश से रजतपदक प्राप्त; आपकी अन्य रचनाओं का भी अच्छा प्रचार हुआ है; प०—शांतिकुटीर, आगर, मालवा।

गणेश पाण्डेय—ज०–१८६८; सा०—भूत० संपा० 'तरुण भारत', काँग्रेसी कार्यकर्ता, १६२२में ६ माह की कैद; हि० सा० गोष्ठी दारागंज के मंत्री, हि० सा० सम्मे० की स्थायी समिति के भूत० सदस्य; प्रका०—चित्रादर्श, एकान्तवास, आहुतियाँ, देश की आन पर, गंगा गोविन्द सिंह (बँग० अनु०), बीर बाला, अप्र०—कई बालोपयोगी और किशोरोपयोगी पुस्तकें; प०—दारागंज, प्रयाग।

गणेशप्रसाद मिश्र 'श्रीइंदु'—ज०—१४ अप्रैल, १६११, गोरखपुर; सा०—अनेक पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया; प्रका०—मातृभूमि, प्रतापशतक, प्यारे प्रेम, विद्रोही, समाधि-गीत, प्रेमांत; अप्र०—कई काव्य-संग्रह; वि०—अहिंदी प्रांतों में हिंदी-प्रचार-कार्य से विशेष रुचि रखते हैं; प०—संपादकीय विभाग, राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति, वर्धा।

गणेशप्रसाद शर्मा—शि०—

एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० रत्न आगरा; सा०—अहिंदी-भाषियों को हिंदी-शिक्षा-प्रदान की; प्रका०—स्फुट; प०—अध्यापक, रामपुरिया हाई स्कूल, बीकानेर।

गणेशप्रसाद साह—ज०—१८९५; शि०—बी० ए० पटना वि० वि०; सा०—संस्था० और सभापति भारतेंदु-साहित्य-संघ, भूत० सभा० विहार प्रादेशिक सा० स०, आर्य-समाज के प्रधान; कई बार जेल जा चुके हैं, भूत० एम० एल० ए०; प्रका०—स्फुट; प०—मोतिहारी, बिहार।

गणेश लाल वर्मा—ज०—१९०२ गुणमंती, पूर्णिया; शि०—सा० रत्न, सा० लं०, प्रयाग; सा०—पूर्णिया के विभिन्न स्थानों में सम्मे०, विद्यापीठ और देवघर की परीक्षाओं के केंद्र स्थापित किये; प्रका०—औपन्यासिक प्रसाद (आलो०), पूर्णिया के पुस्तकालय; प०—बनमनखी ग्राम, पूर्णिया।

गणेशलाल सुराना—ज०—१९१७ चित्तौड़; शि०—विद्या-भवन, उदयपुर; सा०—अनेक साहित्यिक सार्व० संस्थाओं के सक्रिय सदस्य; हिंदी लेखक-संघ मद्रास के प्रधान मंत्री; १९४२ से ४५ तक 'विकास' (हस्त०) के संपा० 'बालतरंग' केवर्त० संपा०; प्रका०—स्फुट रचनाएँ; प०—हिंदी लेखक संघ, ९७ मिंट स्ट्रीट, मद्रास।

गदाधरप्रसाद अम्बष्ठ—ज०—१९०२; सा०—भारतीय इतिहास-परिषद् के कार्यालय (काशी) में राष्ट्रीय इतिहास के सहकारी कार्यकर्ता; प्रका०—देशरत्न राजेंद्र-प्रसाद, बिहार-दर्पण, बिहार के दर्शनीय स्थान, अर्थशास्त्र, राज-नीति का पारिभाषिक कोष; प०—ठि० पुस्तकभंडार, लहरियासराय।

गदाधरप्रसाद श्रीवास्तव—ज०—१९००; शि०—पटना, बी० ए० तक, विद्यालंकार; सा०—संस्था० हिन्दी-साहित्य-परिषद्, गोगरी, सीवान, सारन; सम्मेलन परीक्षाओं के केंद्र-व्यवस्थापक, सह० संपा० 'देश'; सद० विहार प्रादेशिक हि० सा० सम्मे०, बिहार विद्यापीठ के महा-विद्यालय में अध्यापक, देश के आन्दोलनों में भाग तथा कारावास, प्रांतीय तथा जिला कांग्रेस के सद०; प्रका०—

भोजपुरी भाषा का शब्द-संग्रह, फ्रांस की क्रांति आदि ; प०—वकील, सीवान, सारन ।

गयादत्त कविराज—प्रका०—गोपीशतक ; अप्र०—सहस्र छंद ; वि०—'सिरस-समाज' के सभा०, अनेक पुरस्कार पाये ; प०—हसनपुर, नगराम, लखनऊ ।

गयाप्रसाद पांडेय—ज०—५ अप्रैल १६०८ ; शि०—ज्योतिषाचार्य; प्र०—सत्यविजय पंचांग १६३६ ; सा०—स्वतंत्रता-आंदो- में भाग लिया ; दमोह जिला कौंसिल के सदस्य, हटा लोकल बोर्ड के उपसभापति, 'जय हिंद' और 'भारत' के संवाददाता ; प्रका०—सत्धर्म-प्रकाशिका, विवाह-पद्धति, ज्योतिष-प्रवेशिका ; प० —बड़ा बाजार, हटा, दमोह ।

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'—कानपुरके साहित्य-समाज में गुरुवत् सम्मानित ; ज०—१८८३ ; सा० —अनेक कवि-सम्मेलनों के सभापति ; हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भरतपुर-अधिवेशन में अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन के सभापति ; 'सुकवि' नामक कविता-सम्बन्धी मासिक के संचालक और संपादक; 'त्रिशूल' उपनाम से राष्ट्रीयता-प्रधान कविताओं के रचयिता; प्रका०—प्रेम-पचीसी, कुसुमांजलि, कृषकक्रन्दन, मानस-तरंग, करुण भारती, 'संजीवनी' काव्य-संग्रह ; प०—सुकवि प्रेस, कानपुर ।

गांगेय नरोत्तम शास्त्री—ज० —१६००, काशी; शि०—लाहौर; सा०—भूत०अध्यापक काशी हिंदू-विश्वविद्यालय ; असहयोग संस्कृत-छात्र-समिति के संस्थापक और सभापति ; कलकत्ते में श्रीतुलसी पुण्यतिथि तथा विराट् परिहास-सम्मेलन के आयोजक ; बंगाल आयुर्वेदीय स्टेट फैकल्टी के रजिस्टर्ड कविराज, रायल एशियाटिक सोसाइटी और काशी नागरीप्रचारिणी के आजीवन सदस्य ; बंगीय साहित्य-परिषद्, संस्कृत साहित्य-परिषद्, इण्डियन रिसर्च इंस्टीट्यूट, अखिल भारतीय संस्कृत-साहित्य सम्मेलन के सदस्य, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के मद्रास अधिवेशन के अंतर्गत कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष ; प्रका०—गांगेयवाग्बाण, प्रणयपूरण, अन्योक्ति-रत्नावली, आचरण-दर्शन,

समस्यापूर्तिचंद्रिका, कर्म में धर्म, भारतीय महिला-महत्व, गांगेय-गद्यमाला, भारतीयोद्बोधन, अमन-सभा नाटक, गांगेय दोहावली, गांगेय गीतगुच्छक, भारतीय वायु-यान, गांगेय-तरंग, आत्मानंद, करुण तरंगिणी, नूतन-निकुंज, मालिनी-मंदिर या फूलों की दुनियाँ, मधुरता आदि लगभग चालीस ग्रंथ; प०—२८०, चितरंजन एवेन्यू, कलकत्ता।

गिरिजाकुमार माथुर—शि०— एम. ए., एल-एल. बी.; **सा०—** कविसम्मेलनों के आयोजन में रुचि; रेडियो पर कविता-पाठ, बुंदेलखंडीय कवि-परिषद् के सम्मानित सदस्य; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—पछार, ग्वालियर।

गिरिजादत्त— ज०—१९०२; **शि०**—एम. ए. (हिंदी, संस्कृत) कलकत्ता वि० वि०, सा० आ०; **सा०**—भूत० प्रधानाचार्य संस्कृत कालेज अलवर, चंपारन रिसर्च सोसाइटी के संस्कृत-प्राकृत विभाग के अन्वेषक; **प्रका०**—अलंकार-चंद्रोदय; **अप्र०**—ध्वनिविमर्श; **प०**—अध्यक्ष हिंदी-संस्कृत-विभाग, मुंशीसिंह कालेज, मोतिहारी।

गिरिजादत्त त्रिपाठी—ज०— १ जनवरी १९१६, रीवाँ राज्य; **शि०**—सा० रत्न प्रयाग; **अप्र०**—बांध्वीय साहित्य के अमररत्न, बघेलखंड के हिंदी कवियों का इतिहास, बालचर्य-शिक्षण; **प०**—रीवाँ राज्य।

गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' **शि०—**बी. ए., एल-एल. बी.; उत्तर प्रदेशीय हिंदी सा० सम्मे० के प्रधान मंत्री; अ० भा० हिन्दी सा० सम्मे० के संग्रह-मंत्री, संपा० 'ग्रहवाणी' मासिक और 'शुभतारायन' (वैज्ञानिक आधार पर फलित ज्योतिष संबंधी लेख-प्रधान) प्रयाग; **प्रका०**—सूर-पदावली, गुप्त जी की काव्यधारा, बाबूसाहब, जगद्गुरु, प्रोफेसर, विद्रोह, पंडाजी, और लम्बोदर त्रिपाठी; **वि०**—१९४९ के हिं० स० सम्मे० के अधिवेशन में साहित्य-परिषद के सभा०; **अप्र०**—ताड़काबध (महाकाव्य); **प०**—दारागंज, प्रयाग।

गिरिजाप्रसाद पाण्डेय 'कमल'— **ज०**—१९२५; **सा०**—भूत० प्रचार मंत्री शान्तिनिकेतन साहित्यमंदिर

नागपुर, सह० संपा० 'नवभारत', नागपुर ; प्रका०—माधवी-कुंज, पराग,स्वर-लहरी; प०—नवभारत-कार्यालय, काटन मार्केट, नागपुर।

गिरिजाशंकर द्विवेदी—ज०—१६०३; शि०—सा० र०; सा०—भूत० सहकारी संपा० 'अभ्युदय' १६२७, 'सुधा' १६२७-३५; प्रका०—भरत की जीवनी,सौमित्रि, सफेद हाथी, सातमूर्ख, रीछ की पूँछ, विवाह और प्रेम, गृहिणी-भूषण; अप्र०— शिशु-साथी, किसान का बेटा; प०—जुबली गर्ल्स इंटर कालेज, लखनऊ।

गिरजाशंकर शुक्ल 'मतवाला'—ज०—१६१८; शि०— पूना, बम्बई, जावद, से सा० आ०; सा०—विक्रम हिन्दी-साहित्य-समिति के मंत्री; प्रका०—परदेशी की डायरी, जग्गू भग्गू, घिस्सू पिस्सू, धूल में लठ्ठ; अप्र०—चित्रकार, घर की लाज, चलते पुरजे; प०—शिक्षक माध्यमिक पाठशाला, जावद, मालवा।

गिरधर शर्मा चतुर्वेदी—ज०—१८८४; शि०—व्याकरणाचार्य, शास्त्री, महा० म०; सा०—मंत्री हिं० सा० सम्मे० की स्वागत समिति, लाहौर, हिं० सा० सम्मे० की स्थायी समिति नागरी-प्रचारिणी सभा काशी और हिंदू-यूनीवर्सिटी बनारस के सदस्य; हिं० सा० सम्मेलन दिल्ली में दर्शन-परिषद् तथा हिंदी-साहित्य-पाठशाला के संस्कृत-साहित्य-सम्मेलन के मंत्री; हरिद्वार ऋषिकुल के व्यवस्थापक, संपा० 'ब्रह्मचारी;' प्रका०—धर्मपारिजात तथा अनेक निबंध-संग्रह; अप्र०—महाकाव्य-संग्रह; प्रि० वि०—दर्शनशास्त्र; वर्त—आचार्य महाराजा संस्कृत कालेज, जयपुर; प०—पानों का दरीबा, जयपुर।

गिरिधर शर्मा, नवरत्न—ज०— १८८१; जा०—बँगला, गुजराती, मराठी, उर्दू, फारसी, प्राकृत, पाली, अँगरेजी, संस्कृत; शि०—साहित्य-शिरोमणि, काव्यालंकार,प्राच्यविद्या-महार्णव; सा०—मध्यभारत हिंदी-साहित्य-समिति के जन्मदाता; राजपूताना हिंदी साहित्य सभा के संस्थापक; भरतपुर हिंदी-साहित्य-समिति के निर्माता; भारतेंदु-समिति कोटा और अखिल

भारतीय विद्वान् परिषद् के सभापति; प्रका०—कठिनाई में विद्याभ्यास, जयाजयंत, भीष्मप्रतिज्ञा, सुकन्या, सावित्री (ब्लैंकवर्स), सांख्य-दोहावली, वेद-स्तुति, स्वदेशाष्टकम्, योगी, जापान-विजय, अमर-सूक्तिसुधाकर (संस्कृत), गीतांजलि, बागवान, फलसंचय, चित्रांगदा; प०—झालरापाटन, राजपूताना।

गिरिधारीलाल वैश्य 'व्रजेश' (हिंदी) और 'ऐश' (उर्दू)—ज०—१८८६, बेगमगंज, फैजाबाद; शि०—बी० ए० म्योर सेंट्रल कालेज इलाहाबाद १६१४; एल-एल० बी० १६१५; प्रका०—पौन—पूत पचासा; अप्र०—'गौहरेयकता' एक जीवनी; प०—वकील, रकाबगंज, फैजाबाद।

गिरिधारीलाल शर्मा 'गर्ग' शि०— बी० ए० (आनर्स); प्रका०— विमान, कहानी-कला, आकाश की सैर; अप्र०—अनेक वैज्ञानिक और स्फुट लेख-संग्रह; प०—मिरचाई गली, पटना।

गिरिवरधारी सिंह 'मधुर'—ज०—१६२३; प्रका०—उप०—शांता, परिणाम, स्फुट कहानियाँ, प०—शारदा-साहित्य-सदन, फुलकहाँ, हिरम्मा, मुजफ्फरपुर।

गिरींद्रमोहन मिश्र—शि०—एम० ए०, बी० एल०; प्रका०—बाल-विवाह, भूकंप, बाणभट्ट, धर्म द्वार, प्रेमसंस्कार, कम पूँजी बहुत काम आदि पुस्तकें और लेख मालाएँ; प०—असिस्टेंट मैनेजर, दरभंगा राज।

गीएडाराम वर्मा 'चंचल'—ज०—मँडावा (शेखावाटी) जयपुर १६२४; शि०—बी०ए० नवलगढ़, पिलानी; सा०—भूत० संपा० 'राजस्थान - समाचार', राजस्थान प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मे० में राजस्थान की ओर से प्रतिनिधि; प्रका०—गुटका हिन्दी शब्दकोष, हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ (श्री अखिल विनय के साथ); वर्त०—'विशाल राजस्थान' के सहा० संपा०; प०—श्रमजीवी संघ, मँडावा जयपुर।

गुंचीलाल तिवारी—ज०—१८६८; शि०—साहित्य-विशारद; प्रका०—शिक्षा-पद्धति, अच्छी बातें; प०—हरदा, मध्य-प्रांत।

गुणानंद ज्वाल—ज०—१९१०; शि०—एम०ए० (हिंदी, संस्कृत); **सा०**—स्थानीय हिंदी-सभा के प्रमुख कार्यकर्ता ; **अप्र०**—कई आलोचनात्मक निबंध-संग्रह ; **प०**—अध्यापक, हिन्दी विभाग, बरेली कालेज, बरेली।

गुप्तनाथसिंह—शि०—बी.ए.; **सा०**—सम्पा० 'सात्विक जीवन' कलकत्ता, वर्त एम० एल० ए० और 'विधान-परिषद' के सदस्य हैं ; **प्रका०**—जैमिनि-दर्शन, अधिनायक-तन्त्र, खाद-विज्ञान ; **प०**—अन्नपूर्णागंज, बनारस।

गुरुदयालसिंह 'प्रेमपुष्प'—ज०—१९०६ बलिया ; शि०—एम० ए०, बी० टी०, प्रयाग, आगरा और कलकत्ता; **सा०**—'आदर्श युवक' मासिक का संपा० ; फर्स्ट असिस्टेंट किंग जार्ज सिल्वर जुबली स्कूल; **प्रका०**—प्रेमवीणा, पुष्पांजलि (कवि०), सुधा (कहा०), छात्राभिनय (एकां०), **अप्र०**—प्रेमलता, बालविकास ; **प०**—प्रधान अध्यापक, विक्ट्री हाई स्कूल, आजमगढ़ ; अथवा शारदा-सदन, रसड़ा, बलिया।

गुरुप्रकाशगुप्त 'मुकुल',—ज० १९१२ ; शि०—एम० ए० ; **प्रका०**—नई कहानियाँ; **अप्र०**—कई लेख-संग्रह ; **प०**—मुंसिफ सदर, बीकानेर।

गुरुप्रसाद टंडन—स्वनामधन्य राजर्षि श्री पुरुषोत्तम दास टंडन के सुपुत्र; ज०—१९०६; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० प्रयाग विश्वविद्यालय ; शिक्षाकाल में कई पदक प्राप्त किये; **सा०**—द्विवेदी-मेला प्रयाग के भूत० प्रबन्ध मन्त्री; **सा०**—सम्मेलन के मन्त्री, मंगला प्रसाद पारितोषिक के निर्णायक ; **प्रका०**—व्रजभाषा का साहित्य, मीराबाई का गीतिकाव्य, गुप्त जी का उन्मुक्त काव्य ; **प०**—अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, विक्टोरिया कालेज, ग्वालियर।

गुरुप्रसाद पाण्डेय 'प्रभात'—शि०—बी० ए०; सा० रत्न ; फैजाबाद, प्रयाग, बनारस ; **सा०**—नवयुवक संघ, कविसम्मेलन और साहित्यगोष्ठी द्वारा हिंदी-प्रचार-कार्य ; **प्रका०**—विविध विषयों की स्फुट कविताएँ और लेख ; **प०**—वकील, फैजाबाद।

गुरुभक्त सिंह 'भक्त'—ज०—७ अगस्त १८९९—जमनिया, गाजीपुर; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी० इलाहाबाद वि० वि० ; सा०—आजमगढ़ म्युनिसिपल बोर्ड के एक्जीक्यूटिव आफिसर ; रत्नाकर पुरस्कार प्राप्त किया ; अ० भा० संस्कृत और आध्यात्मिक वि० वि० का मानपत्र, बलदेवदास मेडेल प्राप्त किया, भूत० प्रधान नागरी-प्रचारणी सभा बलिया और हिंदी सा० सभा०; प्रका०—कुसुमकुंज, नूरजहाँ, सरस सुमन, विक्रमादित्य; प०—म्युनिसिपल बोर्ड, आजमगढ़।

गुरू रामप्यारे अग्निहोत्री—प्रका०—रीवाँराज्य का साहित्यिक इतिहास; बघेलखंड का इतिहास ; प०—गुरुकंज-कुटीर, उपरहट्टी, रीवाँ।

गुर्ती सुब्रह्मण्य—मातृभाषा तेलगू होने पर भी हिंदी-प्रचारक; ज०—सितंबर १९१७, प्रयाग; शि०— एम. ए. (अँगरेजी, राजनोति), सा०रत्न; प्रयाग, नागपुर; जा०— अँगरेजी, तेलगू; प्रका०—विचित्र देश, भोंपू, छत्रपति शिवाजी, हिंदी-साहित्य-समीक्षा, आधुनिक काव्य, प०—दारागंज, प्रयाग।

गुलाबचन्द—सा० — प्रधान संपादक दैनिक 'जयभूमि' जयपुर; प्रका०—नेता जी, पंजाब में पाकिस्तानी गुंडाशाही (सरकार द्वारा जब्त), राजस्थानी परिचय-ग्रंथ (प्रेस में), प०—दैनिक 'जयभूमि'-कार्यालय, जयपुर ।

गुलाबचंद गोयल, 'प्रचंड'—ज०—२२ जूलाई १९२०; शि०—बी. ए. , एल-एल बी. इन्दौर से ; सा०—भूत० संपा० 'नवयुग' और 'नवयुवक'; प्रका०—दीपिका तथा स्फुट गद्यगीत; प०—२९, यशवंत रोड, इंदौर।

गुलाबराय— ज०—१८८७, इटावा; शि०—एम. ए., एल-एल. बी. मैनपुरी मिशन हाई स्कूल, आगरा कालेज और सेंट जांस कालेज, आगरा; सा०—प्रोफेसर सेंट जांस कालेज १९१२, छतरपुर महाराज के यहाँ दार्शनिक अध्ययन में सहायक १९१३, वकील १९१७, महाराज के प्राइवेट सेक्रेट्री १९१७; अब आंशिक समय देकर सेंट जांस कालेज में अध्यापक;

मासिक 'साहित्य-संदेश' के संपादक; इंदौर और पूना के साहित्य-सम्मेलनों में दर्शन-परिषद् के सभापति; प्र०—१९१५; प्रका०—शांतिधर्म, फिर निराशा क्यों ? मैत्री धर्म, नवरस (छोटा, बड़ा संस्करण), कर्तव्यशास्त्र, तर्कशास्त्र— तीन भाग (हिंदुस्तानी एकेडमी से पुरस्कृत), पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास, प्रबंध-प्रभाकर, निबंध-रत्नाकर, भाषा-भूषण, और सत्य-हरिश्चंद्र (संपा०), हिंदी-साहित्य का सुबोध इतिहास, मेरी असफलताएँ (आत्मकथात्मक साहित्यिक हास्यपूर्ण निबंध), ठलुआ-क्लब, विज्ञान-विनोद, हिंदी-नाट्यविमर्श, बौद्ध-धर्म, सिद्धांत और अध्ययन, काव्य के रूप तथा जीवन की हाट में (निबंध-संग्रह) प्रेस में हैं, हिंदी काव्य-विमर्श(आलो०); प०—गोमती-निवास, दिल्ली दरवाजा, आगरा।

गोकुलचंद दीक्षित 'चंद्र'—ज०—१८८७, लक्ष्मणपुर, इटावा; शि०—सिद्धांतवाचस्पति; सा०—भूत० संपा०'—कृषि', 'शौंडिक क्षत्रिय-चंद्रिका', 'सुदर्शन-चक्र', 'आर्यमित्र', 'वैद्यराज', 'भरतपुर राज्य पत्र'; प्रका०—छंदसूत्रम् (अनु०), दर्शनानंद ग्रंथ-संग्रह—दो भाग, भगवती-शिक्षा-समुच्चय, सांख्यकारिका-प्रकाश, भारत-संजीवनी, पं० लेखराम, श्रीपथ-प्रदर्शन, श्रीमद्भगवद्गीता-सिद्धांत, रससुस्वादम् (पद्य), षडोपनिषत्, योगविधि, वेदांत-दर्शन, व्रजेंद्रवंश-(भरतपुर का विशद इतिहास), बयाना का इतिहास, अलंकार-बोधनी, न्याय-दर्शनम्, नवीन नायिका-भेद, मीमांसादर्शनम्, रस-मंजरी इत्यादि चालीस ग्रंथ; प०—नए लक्ष्मण के पास, भरतपुर।

गोकुलचंद शर्मा—पुराने लेखक; ज०—१८८८, हरीनगरा ग्राम, अलीगढ़; शि०—प्राथमिक सासनी तथा हाथरस में, बी. टी. सी. में सभी विषयों में विशेषयोग्यता प्राप्त की, १९१४ में मैट्रिक, बी. ए. और एम. ए. प्राइवेट आगरा वि० वि० से, एम. ए. में सर्वोपरि स्थान; सा०—१९१३ में धर्मसमाज हाईस्कूल में अध्यापक हुए, इसके डिग्री कालेज हो जाने पर हिंदी-संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष हो गये, जुलाई १९५० में अवकाश ग्रहण

किया है; प्रका०—काव्य-प्रण-वीर-प्रताप, गाँधी-गौरव, पद्य-प्रदीप, तपस्वी-तिलक, मानसी; अनुवाद—जयद्रथ-वध नाटक (प्रो. पाटणकर के संस्कृत में 'वीर-धर्म-दर्पण' नाटक का अनुवाद); गद्य-रचनाएँ निबंधादर्श, निबंध-नीरद आदि विविध-अनेक पाठ-ग्रंथ जो शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत थे और हैं, वर्त०—तुलसी-कृत रामायण को अभिनय का रूप देने में संलग्न हैं; कई मौलिक ग्रंथ भी लिख रहे हैं, प०—विष्णुपुरी, अलीगढ़।

गोकुलचंद शास्त्री—ज०—२८ मार्च, १८८८; शि०—बी०ए० पंजाब विश्वविद्यालय और क्वींस कालेज, काशी; सा०—चौबीस साल तक डी० ए० वी० स्कूल लाहौर में संस्कृताध्यापक रह कर अब विश्राम कर रहे हैं, १९१३ से पंजाब विश्वविद्यालय की ओरियंटल फैकल्टी के निर्वाचित सदस्य रहे, दस वर्ष तक संस्कृत-हिन्दी-बोर्ड के सदस्य रहे, पंजाबी स्कूलों में हिन्दी-प्रवेश और प्रचार कराने में बड़ा सहयोग दिया हिन्दी पाठ-पुस्तकों की रचना का मार्ग प्रदर्शन किया, अँगरेजी के स्थान पर हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने का सफल आंदोलन किया; प्रका०—पाठ-ग्रंथ—मेरी सहेली—चार भाग, बालसखा—चार भाग, हिन्दी-पुष्पमाला—चार भाग, हिन्दी-व्याकरण-सार; नाटक—सारथी से महारथी, चंड-प्रतिज्ञा, देश-द्रोही, मीरा; अन्य—हिन्दी माध्यम से संस्कृत व्याकरण; प०—दिल्ली।

गोकुलानंद तैलंग—ज०—१५ मई १९१६; सा०—वृन्दावन, में कविसम्मेलनों का आयोजन, काँकरोली में शुद्धाद्वैत एकेडमी के सहा० मंत्री, 'दिव्यादर्श' पत्र के सम्पादकीय विभाग में काम किया; प्रका०—नाम-माहात्म्य, स्वरसागर, दिव्यादर्श; प०—विद्या-विभाग, काँकरोली (राजस्थान)।

गोपालचंद—'व्रती भ्राता'—प्रका०—हिंदी व्याकरण की कुछ पुस्तकें और सरजा शिवाजी (नाटक); प०—अमृतसर।

गोपालचंद पांडेय—ज०—१९०९; शि०—बी० ए०; डिप. एड.; जा०—फ्रेंच, पाली, बँगला;

प्रका०—इङ्गलैंड का इतिहास, दिव्य जीवन की ओर, पौराणिक कहानियाँ, रहस्य-भेद, भयंकर अफ्रीका, मितव्यय, स्वावलम्बन, एक रात ; **वर्त०**—स्थानीय हाई स्कूल में अध्यापक ; **वि०**—अँगरेजी और बँगला में भी लिखा है; **प०**—चंपानगर, भागलपुर ।

गोपालचंद्र सुगंधी—**ज०**—१२ दिसम्बर १६१० ; **शि०**—एम० ए० (इतिहास और राजनीति) आगरा वि० वि० ; **सा०**—स्थानीय शिक्षाविभाग में डिप्टी इंस्पेक्टर ; स्थानीय हिन्दी- साहित्य-समिति के प्रमुख कार्यकर्ता, **प्रका०**—धार राज्य का भूगोल ; **वि०**—'मालवा के सुलतान' विषय पर पी-एच० डी० के लिए थीसिस लिखी है ; **प०**—छलाड़ गली, धार ।

गोपालदामोदर तामस्कर—**ज०**—१७८६ ; **प्रका०**—शिक्षा-मीमांसा, योरप में राजनीतिक आदर्शों का विकास, कौटिल्य अर्थ-शास्त्र-मीमांसा, राजा दिलीप(ना०), मराठों का उत्थान और पतन ; राधा-माधव अथवा कर्मयोग नाटक, वैर का बदला, शिवाजी की योग्यता, संक्षिप्त कर्मयोग, राज्य-विज्ञान, मौलिकता, इङ्गलैंड का संक्षिप्त इतिहास, नीति-निबंधावली, अफलातून की सामाजिक व्यवस्था आदि; **वि०**—शाहजी और शिवाजी के इतिहास-काल को लेकर आपने अनुसंधान किया है, चार भागों में यह ग्रंथ तैयार है ; **प०**—जैन हाई स्कूल, गोलबाजार, जबलपुर ।

गोपालदास गंजा—**ज०**—१० जून १६०६ जोधपुर; **शि०**—एम. ए. (संस्कृत) १६४०, (अँगरेजी) १६४८, नागपुर वि. वि०, एम० ए० (प्रीवियस–हिंदी) राजपूताना वि० वि०, सा० रत्न०, गीता–परीक्षा—प्रथम खंड (प्रथम) कोविद; **सा०**—प्रचारक आर्यधर्म सेवासंघ दिल्ली, भूत० रिसर्च स्कालर विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान लाहौर, देव समाज डिग्री कालेज लाहौर में संस्कृत के भूत० अध्यापक, वैदिक विषयों पर ब्राडकास्ट; **प्रका०**—उपदेश गुच्छ २ भाग, तथा संस्कृत की अनेक पाठ्य पुस्तकें; **अप्र०**—मेघनाद-वध; **वर्त०**—जोधपुर हाई स्कूल में

शिक्षक; प०—नथावतों, कल्लों की गली, जोधपुर।

गोपालनारायण शिरोमणि—ज०—१६०८; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; सा०—१६२० से कांग्रेस में कार्य-आरंभ; श्री माखनलाल चतुर्वेदी, मु० प्रेमचंद तथा गणेश शंकर जी से प्रेरणा; अनेक पत्रों के संपादकीय विभाग में काम कर चुके हैं; कई वर्ष से 'सैनिक' के प्रबंध-संपादक हैं; प्रका०—स्फुट लेख; प०—प्रबन्ध संपादक, 'सैनिक', आगरा।

गोपाल प्रसाद कौशिक—शि०—आयुर्वेदाचार्य; सा०—काँग्रेसी कार्यकर्ता; संपा० 'स्वास्थ्य'; प्रका०—चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट के भाष्य और भावप्रकाश के हिंदी अनुवाद; प०—गोवर्द्धन, मथुरा।

गोपालप्रसाद व्यास—शि०—सा० रत्न मथुरा; सा०—१६३०-३१ के आंदोलन में पढ़ना छोड़ दिया; तीन वर्ष तक मासिक 'साहित्य-संदेश' आगरा के सहायक संपा०; व्रजभाषा-कोश में श्री चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद जी शर्मा के सहकारी; कुछ समय तक श्री जैनेंद्रकुमार के साथ रहे, 'हिंदुस्तान' में हास-परिहास के वर्तमान लेखक; प०—'मानवधर्म'-कार्यालय, पीपल महादेव, दिल्ली।

गोपाललाल खन्ना—स्वर्गीय बाबू श्यामसुन्दर दास के सुपुत्र; शि०—एम० ए०, बी०टी० काशी वि० वि०; सा०—क्रिश्चियन कालेज के अंतर्गत टीचर्स ट्रेनिंग कालेज लखनऊ में भूत० हिंदी अध्यापक, मासिक 'खत्री-हितैषी' के भूत० प्रधान संपादक, डाक्टरेट के लिए अनुसंधानात्मक अध्ययन में संलग्न; प्रका०—हिंदी भाषा और साहित्य, काव्य-कलाप, काव्यालोचन; वर्त०—अध्यापक धर्म-समाज टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, अलीगढ़; प०—भाखरी हाउस, विष्णुपुरी, अलीगढ़।

गोपाल व्यास—ज०—१६१६, धर्मगढ़, ग्वालियर; शि०—एम० ए०, सा० रत्न विक्टोरिया कालेज ग्वालियर और सनातन धर्म कालेज कानपुर; एम० ए० में आगरा वि० वि० में सर्व प्रथम; प्रका०—कालीदास प्रेरित मूर्तिकला (अनु०); अप्र०—आलोचनात्मक निबंध-

संग्रह; वि—सूरदास पर आलोचनात्मक कृति प्रस्तुत कर चुके हैं, हिंदी में राम-काव्य पर शोध-कार्य चल रहा है; प०—अध्यापक, माधव कालेज, उज्जैन।

गोपालशरण सिंह, ठाकुर—द्विवेदी-युग के कवि; **ज०**—**१८६१**; **शि०**—रीवाँ, प्रयाग;—**प्र०**—१६११; **सा०**—गूँगों-बहरों के स्कूल, प्रयाग के संस्था०; सभापति—श्री रघुराज साहित्य-परिषद् रीवाँ, कवि-समाज प्रयाग, हिं० सा०सम्मे०के अंतर्गत कवि०-सम्मे० (१६२७), मध्य भारतीय साहित्य समिति, इंदौर—१६२६, ओरियंटल कांफ्रेंस मैसूर के अंतर्गत बहु-भाषा-कवि-सम्मेलन (१६३५); प्रयाग के द्विवेदी-मेले के स्वागताध्यक्ष १६३३, सद०—रीवाँ राज्य मंत्री-मंडल (१६३२-३४); **प्रका०**—माधवी (कवि०), कादंबिनी (गीत काव्य), मानवी (नारी जीवन-संबंधी काव्य), सुमना (गीत), ज्योतिष्मती (गीत), संचिता (कवि); **अप्र०**—विश्व-गीत; प०—नई गढ़ी, रीवाँ।

गोपाल शर्मा—**ज०**—१६ मई १६१६; **शि०**—बी० ए० नागपुर वि० वि० १६४०, एम० ए०, बी० टी० सागर वि० वि०; **प्रका०**—स्फुट कविताएँ और एकांकी; **वर्त०**—प्रोफेसर मध्य-प्रांतीय शिक्षा-विभाग, डा० रघुवीर के साथ पारिभाषिक शब्दों और पुस्तकों के प्रणयन में संलग्न; **वि०**—अँगरेजी में भी लिखते हैं; **प०**—ओल्ड असेम्बली रेस्ट हाउस, नागपुर।

गोपाल शास्त्री—ज०—५ अक्टूबर, १८६२; शि०— दर्शनकेसरी; न्यायतीर्थ, साहित्याचार्य; **सा०**—काँग्रेसी कार्यकर्त्ता, स्थानीय काँग्रेस के सभापति, १६३२ में कारावास; प्रका०—हिंदी-दीपिका, हिंदू धर्मोपदेशिका; **अप्र०**—पाणिनीय प्रबोध, भारत की वीरांगनाएँ, हरिजन-स्मृति; वि०—वेदों और पुराणों के संक्षिप्त संस्करण निकालने को प्रयत्नशील; **वर्त०**—अध्यापक काशी-विद्यापीठ, बनारस; **प०**—केसरी-कुंज, सीगरा, बनारस।

गोपालसिंह ठाकुर—ज०—**१६११** कुमुद ग्राम, अल्मोड़ा;

शि०—अल्मोड़ा, बरेली; **सा०**—१९३१-४६ अध्यापन, मंत्री सुपरवाइज़र – समिति ताड़ीखेत, वाचनालय मंत्री तथा पुस्तकाध्यक्ष, बागवानी ट्रेनिंग कैम्प, प्रकाशक व संपा० 'सहयोग' मासिक, अल्मोड़े की 'शक्ति' के स्थायी लेखक; **अप्र०**— कुमुद ग्राम, आत्मचरित; **वि०**—आपने पर्याप्त पर्यटन किया है; **प०**—कुमुदग्राम, चौंरा, अल्मोड़ा।

गोपालसिंह, ठाकुर, लेफ्टिनेंट कर्नल—**ज०**—१९०२ बदनोर; **शि०**—एम० बी० ई०; **सा०**—प्रताप - पुस्तकालय के संस्थापकों में एक; अदालतों में हिंदी-प्रचार पर विशेष जोर दिया ; **प्रका०**—जयमल-वंशप्रकाश-प्रथम भाग; **वि०**—इस ग्रंथ की अच्छी प्रशंसा हुई है; **प०**—चीफ आफ बदनोर, बदनोर, मेवाड़।

गोपालसिंह नैपाली;—**ज०**—१९०६; **शि०**—प्रवेशिका तक; **सा०**—भूत० संपा०— 'रतलाम टाइम्स' मालवा, 'चित्रपट' दिल्ली, 'सुधा' लखनऊ, 'योगी' साप्ताहिक पटना; अनेक संस्थाओं के मंत्री और सभापति; **प्रका०**—पंछी (काव्य), कल्पना, उमंग, रागिणी, नीलिमा, पंचमी और नवीन; **अप्र०**—बाबर-संग्राम-युद्ध (पद्य), पीपल का पेड़-कहानी; **वर्त०**—सिनेमा-क्षेत्र में गीतकार थे, हिमालय पिक्चर्स और नैपाली पिक्चर्स के निर्माता; **प०**—६७ घोड़बंदर रोड़, मलाड, बम्बई।

गोपीकृष्ण प्रसाद— **सा०**—भूत० संपा० 'जनता' और 'विश्वमित्र'; **प०**—सोशलिस्ट पार्टी, बाँकीपुर, पटना।

गोपीकृष्ण शास्त्री द्विवेदी—**ज०**—१७ अप्रैल १९०३; **शि०**—व्या० आ० उज्जैन और काशी; **प्रका०**—विक्रमादित्य की अनेकता, महाकवि कालिदास, ऐतिहासिक अवन्तिका, कवि, महाकवि श्रीहर्ष, संस्कृत-साहित्य तथा रस-निरुपण, हिंदी-राजतरंगिणी-अनु०; **अप्र०**—तर्क-संग्रह टीका, लघुशब्देंदु टीका; **वर्त०**—सेंधियाँ ओरियंटल इंस्टीट्यूट में संशोधन कार्य; **प०**—सराफाबाजार, मदनमोहन मंदिर के पास, उज्जैन।

गोपीनाथ तिवारी—**ज०**—

१६१३; शि०—एम. ए., विद्योदधि; सा०—कविसम्मेलनों और साहित्य-गोष्ठियों के संयो०; भूत० हिंदी अध्यापक एम. एम. कालेज बीकानेर; नमक-सत्याग्रह में भाग लेकर जेल-यात्रा; प्रका०—भूतों की डिबिया, वृक्षों की सभा, उड़नछू, प्रभापुंज, तुलसीदास, निबंध-निचय, सरल-संकलन, केशव-काव्य; प०—अध्यक्ष हिंदी विभाग, सेंट एंड्रूज कालेज, गोरखपुर ।

गोपीनाथ वर्मा—ज०—१८-६६; प्रका०—संयोगिता; अप्र०—निबंध-संग्रह; प०—नाँद, बिहार ।

गोपीवल्लभ उपाध्याय—ज०—१८६७; प्र०—भाग्य-परीक्षा-अनु०; सा०— भूत० संपा० 'चित्रमय जगत', 'नवजीवन', 'पंचराज,' 'भ्रमर' आदि; प्रका०— अनु०—बँगला से—ज्ञानी गुरु, भक्तवाणी, सरल राजयोग, बंगविजेता; मराठी से अनु०—भाग्य-परीक्षा, जब सूर्योदय होगा, स्वप्न-विज्ञान, वृद्धों के व्यायाम, मरहठों का साम्राज्य; अनु० गुजराती से—संध्या का रहस्य, भास्करानंद सरस्वती, प्रभु के पथ पर, प्रभुमय जीवन आदि; प०—संपादक 'औदीच्य-बंधु', बिजलीघर के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन ।

गोरखनाथ चौबे—राजनीति और नागरिक शास्त्र के लेखक; ज०—१ फरवरी १६१०, कमल सागर, आजमगढ़; शि०—एम. ए. (राजनीति) प्रयाग वि० वि०; सा०—अध्यापन, महिला विद्यालय कालेज, प्रयाग १६३६; प्रेम भवन पुस्तकालय प्रयाग, महिला शिक्षा-परिषद् और मिसरान-ग्राम-शिक्षा मंडल के मंत्री; प्रका०—नागरिक जीवन-४ भाग, सरल नागरिक शिक्षा ३ भाग, नागरिक ज्ञान प्रवेशिका ३ भाग, नागरिक शास्त्र प्रवेशिका, नागरिक सिद्धांत-कौमुदी, भारतीय नागरिकता और शासन, नागरिक शास्त्र की निवेचना, आधुनिक भारतीय शासन, भरतीय नारी, उल्टा जमाना, राजनीति के सिद्धांत, हमारा समाज, मोतियों की माला; प०—महिला शिक्षा-परिषद्, प्रयाग ।

गोवर्द्धनदास त्रिपाठी—ज०—२ जून १९११; शि०—सा. रत्न.; प्रका०—संगम (उप०); अप्र०

—स्पंदन (कवि०), दोपंछी, इंस्पेक्टर—उप०, प०—प्रेमाश्रम, दलखंडी नाका, बाँदा।

गोवर्द्धननाथ शुक्ल—ज०—८ नवम्बर १९१५; शि०—एम. ए., बी. टी., सा. रत्न. ग्वालियर और आगरा वि०वि०; सा०—हिन्दी प्रचार, निःशुल्क अध्यापक, हिंदी प्रचारिणी सभा के संस्थापक; प्रका०—स्फुट; प०—साहित्य कुटीर, खाई ढोरा, अलीगढ़।

गोवर्द्धनलाल काबरा—सा.—कई हिंदी संस्थाओं के सहयोगी; प्रका०—स्फुट; प०—कुचामनी हवेली, जोधपुर।

गोवर्द्धनलाल गुप्त—ज०—१९०८; शि०—एम० ए०, बी. एल; सा०—'साहु मित्र' के सम्पादक १९३२-३३; हिंदुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद द्वारा निबंध-पाठ के लिए आमंत्रित १९३६-३७; 'स्वाध्याय-मित्र-मंडल' के संस्थापक; अब 'गो-शुभ-चिंतक' के सम्पादक; प्रका०—नीति-विज्ञान; धर्म-विज्ञान, प्राचीन ग्रीस का शासन-विज्ञान, विकास-विधान, युद्ध क्यों?, संस्मरण; प०—पुरानी गोदाम, गया।

गोवर्द्धनलाल 'श्याम'—ज०—१८७६, कवींद्र सभा, प्रयाग से 'श्याम' उपाधि-प्राप्त; सा०—अड़तीस वर्ष अध्यापकी की; अप्र०—पूर्ति-प्रमोद—दो भाग, होली-रहस्य, बेतवा-लहरी, नाग-दमन, प्रेम-प्रवाह आदि काव्य, साहित्य-भास्कर—रीतिग्रन्थ; प०—भवसार-भवन, भेलसा, ग्वालियर।

गोविंददास पुरोहित 'हृदय'—ज०—१९१३; प्रका०—स्फुट; प०—तालबेहट, झाँसी।

गोविंददास व्यास 'विनीत'—ज०—१९००; शि०—आगरा; सा०—सेवा-समिति, गीता-प्रसारिणी समिति स्थापित की; प्रका०—शिव-शिवा-स्तवन, बाल-स्वास्थ्य, गोविंद-गीता, महाभारत, श्रीमद्भागवत, रामायण, ऐतिहासिक ड्रामा, संवाद-सौरभ, बाल-साहित्य (चार भाग), प्रिया या प्रजा, ऐतिहासिक कहानियाँ, आपत्ति यौवना, जीवन द्वंद आदि काव्य, नाटक और उपन्यास; प०—दीन-कुटीर, तालबेहट, झाँसी।

गोविंददास सेठ—सा०—

एम० एल० ए०, हिंदी साहित्य सम्मेलन के भूत० अध्यक्ष, १९२१ से काँग्रेसी काम, दैनिक 'लोकमत' और मासिक 'शारदा' की संस्थापना की, स्वराज्य-पार्टी की ओर से कौंसिल आव स्टेट के सद० (१९२४–३०), असहयोग में जेल-यात्रा, कांग्रेस-पार्लियामेंटरी बोर्ड की ओर से केंद्रिय व्यवस्थापक सभा के सदस्य (१९२५); राष्ट्रीय हिंदी मन्दिर के संस्थापक; प्रका०—हर्ष, कर्तव्य, प्रकाश, स्पर्धा, सप्तरश्मि, शशिगुप्त आदि कई नाटक और एकांकी; प०—राजा गोकुलदास का महल, हनुमानताल, जबलपुर।

गोविंद नरहरि बैजापुरकर—ज०—२६ अगस्त १९२२; शि०—सांगवेद विद्यालय रामघाट, संस्कृत कालेज काशी; सा०— संस्कृत कालेज काशी और हि० सा० स० की परीक्षाओं के सहयोगी व्यवस्थापक; भूत० संपा— 'ज्योतिषमती', 'अच्युत' काशी, 'सनातन' जोधपुर; प्रका०—स्फुट; अप्र०—तर्क-संग्रह की टीका—संस्कृत, संस्कृत-हिंदी-कोश; वर्त०—दैनिक, रविवारी और मासिक 'सन्मार्ग' का संपा०; प०— टाउनहाल, बनारस।

गोविंद नारायण शर्मा आसोपा— ज०— २६ नवम्बर १८७६; शि०—बी० ए० प्रयाग वि० वि० १८९९, संस्कृत का विशेष अध्ययन; सा०—चालीस वर्ष तक जोधपुर-दरबार की सेवा, अवसर प्राप्त सुपरिंटेंडेंट आव-कस्टम्स, वर्तमान आनरेरी मजिस्ट्रेट, अ० भा० दधिमती ब्राह्मण सभा के अवैतनिक मंत्री, संपा०—'दधिमती', हिं० सा० सम्मे० के जोधपुर परीक्षा केन्द्र के व्यवस्थापक और निरीक्षक, ब्राह्मण प्रांतीय महासभा और दधीचि जयंती महोत्सव के अनेक बार सभापति, अनेक संस्थाओं के सम्मानित सदस्य; प्रका०—गोविंद-भक्ति-शतक, कृष्ण-राम-अवतार, समता-पचीसा, दधीचि नाटक, भगवत्प्राप्ति के साधन, ईश्वर-सिद्धि, सनातन धर्म-प्रदीप, प्रश्नोत्तर-प्रबोध, सनातन धर्म का महत्व, धर्म-मीमांसा, वर्णाश्रम-सदाचार, त्रैमासिक गीता (पृ० स० १५००),

गीता की प्रस्तावना, संस्कृत स्तोत्रों का अनुवाद, दधीचि-वंश-वर्णन, श्रीराम कर्ण (जी०) सप्तशती, चमत्कार-चिन्तामणि, रास पंचाध्यायी आदि; वि०—संस्कृत, मारवाड़ी, उर्दू और अँगरेजी सभी में ग्रन्थ लिखे ; अपनी वृद्धावस्था में भी जबकि आँखें मोतियाविंद के कारण जवाब दे रही हैं, आप 'श्री विष्णु सहस्रनाम' का हिन्दी में भाष्य लिख रहे हैं; प०— दधिमती दीवान, गोविन्द-भवन, जोधपुर।

गोविंद प्रसाद शर्मा—ज०—१० सितम्बर १९०९; शि०—प्रारम्भिक कटनी और जबलपुर; विशारद परीक्षा में 'मीर पदक' प्राप्त किया, १९३१ में प्रयाग वि० वि० से बी० ए०, नागपुर वि० वि० से एम० ए०; एल-एल० बी० प्रयाग वि० वि० और एल-एल० एम० बम्बई से; सा०—कटनी सा० सम्मेलन के मंत्री रहे, कटनी सा० सभा के सभापति ; कई अंग्रेजी पत्रों के संवाददाता ; प्रका०—स्फुट; प०— संचालक ओरियंटल पॉटरीज़ लिमिटेड, हनुमानगंज, कटनी।

गोविंदराम सुलतानिया 'अज्ञात'—ज०—१९२२, कानपुर; शि०—बी० ए० और एम० ए०, आगरा वि० वि०, सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया ; सा०—भूत० संपा० 'प्रताप' कानपुर; प्रका०—उप०—अमृत कन्या, मरघट, घर की ओर; नाटक—वे तीन विद्रोही, बचपन के खेल, भाई-बहन; कवि०-आँख मिचौनी, दीपदान, चितेरा, पूजा, अन्तर्ध्वनि; प०— संपादक 'श्रमजीवी', लखनऊ ।

गोविंदलाल व्यास—सा०—हिंदी-प्रचार ; प्रका०—स्फुट रचनाएँ; अप्र०—सामयिक निबंध-संग्रह; प०—अध्यापक हिंदी गुजराती हाई स्कूल, अकोला, बरार ।

गोविंदवल्लभ पंत—प्रका०—नाटक-वरमाला, अंगूर की बेटी, राजमुकुट ; उप०—अनुरागिनी, अमिताभ, अप्र०—दो-तीन नाटक; प०—लखनऊ ।

गोविंद हरि वर्डीकर—ज०—२९ मई १८९८; शि०—खानदेश, पूना, आयुर्वेद विशारद; प्रका०—शतचंडी स्वाहाकार, ऋग्वेद संहिता

स्वाहाकार ; प०—बलीराम पेठ, बलगाँव, पूर्व खानदेश।

गौरीनाथ झा—ज०—१८६२ ; शि०—व्याकरण तीर्थ, विद्या-वारिधि, साहित्यभूषण ; सा०—विक्रम वैदिक कालेज के संस्था० और मंत्री, इँगलिश हाई स्कूल के भूत० उपसभापति ; स्थानीय हिंदू सभा के भूत० उपसभापति; 'गंगा,' 'हलधर' और 'मिथिलामित्र' के जन्मदाता तथा संपादक ; मिथिला प्रेस भागलपुर के संस्थापक; प्रका०—दुर्गा सप्तशती (टीका संस्कृत में), ऋग्वेद की हिंदी टीका, ईश्वर-सिद्धि ; प०—महरैल, झंझापुर, दरभंगा।

गौरीशंकर घनश्याम शर्मा—सा०—राष्ट्र-भाषा-प्रचार-समिति वर्धा की ओर से सिंध प्रांत में भूत० हिंदी-प्रचारक ; सजामदास ढालामल पुस्तकालय के भूत० अध्यक्ष ; अप्र०—स्फुट रचनाएँ।

गौरीशंकर चतुर्वेदी—ज०—१८६६ टकल ग्राम, जिला नेमाड़ ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० रत्न०, काशी, प्रयाग, दरभंगा; सा०—१६३२-३३ तक स्थानीय हिंदी साहित्य समिति विद्यापीठ में अवैतनिक अध्यापक ; प्रका०—अलंकार-प्रवेशिका; प०—शिवाजी राव हाई स्कूल, इंदौर।

गौरीशंकर तिवारी—ज०—१६०१ ; शि०—विशारद, विद्या-भूषण, जबलपुर ; प्रका०—मेवाड़ का जीवन-संग्राम, सीताजी का आदर्श चरित्र, रामायण में रस-वर्णन, कहानी और गीत (दो भाग), होशंगाबाद का भूगोल ; प०—सोहागपुर, होशंगाबाद।

गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'—ज०—विजयदशमी १८६६ ; ज्ञा०—उर्दू, अँगरेजी, बँगला ; सा०—सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति के भूत० सदस्य, विद्यार्थी-संप्रदाय कालपी के जन्मदाताओं में, बुंदेल-खंड-साहित्य सम्मेलन, श्री वीरेंद्र केशव साहित्य-परिषद् और बुंदेल-वैभव ग्रंथमाला के संस्थापक ; प्र०—शिवतांडव स्तोत्र ; प्रका०—गीत-गौरव, बुंदेल-वैभव (प्रथम भाग), सुकवि सरोज—बुंदेलखंड के कवियों का इतिहास (दो भाग), पद्य-प्रभाकर, सत्यवान-सावित्री ; अप्र०—द्वितीय और तृतीय रचना-

के कई भाग ; प०—तालबेहट, झाँसी।

गौरीशंकरशर्मा—द्विवेदी युग के वयोवृद्ध कवि ; **प्रका०**— व्रतचारिणी, वीर हमीर, मेवाड़ के तीन रत्न; प०—गढ़ाकोटा, सागर।

गौरीशंकर शर्मा 'कौशिक'—ज०—हापुड़ और मेरठ, एम०ए० (हिंदी और संस्कृत), एल-एल० बी० ; सा० र०, शास्त्री; **सा०**—प्रारम्भ में कुछ दिन वकालत की, फिर अध्यापन-क्षेत्र में प्रवेश किया; रतनगढ़, बीकानेर, टिहरी, लेखरी, अलीगढ़, मथुरा आदि स्थानों के स्कूल--कालेजों में शिक्षक रहे, ३ वर्ष तक 'जागृति' मेरठ के संपादक, मंत्री हिं० सा० स० मेरठ, साहित्य-मंत्री शिकोहाबाद अधिवेशन में भारतीय ब्रज-साहित्य मंडल; **प्रका०**—महान विभूतियाँ; निबंध-नियम, कालेज हिंदी एसेज़, हिंदी शब्द-कोश, जायसी का अध्ययन, स्कंदगुप्त : एक अध्ययन ; ध्रुव-स्वामिनी : एक अध्ययन; नवीन बेसिक प्राइमर; हिंदी का संक्षिप्त इतिहास, और विद्यार्थियों के लिए टीका सम्बन्धी पुस्तकें; **प०**—लेक्चरर, गवर्नमेंट इंटर कालेज, झाँसी।

गौरीशंकर श्रीवास्तव—ज०—१६१४;शि०—सा०आ०; **सा०**—'निराला' पर खोजपूर्ण रचना करके साहित्य महोपाध्याय की उपाधि भारतीय विद्वत् परिषद् अजमेर से प्राप्त की, भूत० प्रधान अध्यापक मिडिल स्कूल म्याना, ग्यालियर; प्र०—१६३४; **प्रका०**—स्फुट ; **अप्र०**— भूखा-मानव, आशीर्वाद; **प०**—जनरल क्लार्क, लोको आफिस, बीना।

गौरीशंकर सिंह सेंगर—ज०—१६०८, रसड़ा, बलिया; शि०—शास्त्राचार्य, सा० वि०, आयुर्वेदाचार्य, सा० र० ; **सा०**—शंकर औषधालय के अध्यक्ष, हिं० सा० सम्मे० की परीक्षाओं के लिए जौनपुर-केन्द्र के संस्थापक; **प्रका०**—स्फुट;प०—हिंदी अध्यापक, क्षत्रिय हाई स्कूल, जौनपुर ।

घनश्यामचन्द्र शास्त्री,—ज०—१८६२; शि०—व्याकरणाचार्य; **सा०**—सनातनधर्म युवक-मंडल, धर्म-संघ-सभा के सभा०; **प्रका०**-श्री दुर्गा स्तोत्र-हिन्दी भाषा टीका

सहित, धर्मोपदेशिका, अपूर्व विनोद, भक्ति-काव्य, प०—प्रधान आचार्य ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत कालेज, लक्ष्मणगढ़, सीकर।

घनश्यामदास पाँडेय—ज०—१८८६ ; प्रका०—पावस-प्रमोद ; अप्र०— अनेक कविता-संग्रह ; प०—मऊ, झाँसी।

घनश्नामदास बल्दुआ 'श्याम' ज०—१६१६; शि०—अर्थशास्त्र और वाणिज्य में आचार्य, आगरा वि० वि०; वि०—लंदन की अर्थ-शास्त्र-समिति के सद०; लन्दन की प्रारम्भिक मंत्री-समिति के सद०; प्रका०—स्फुट; वर्त०—अंकक जनरल बीमा कंपनी; प०—रघुनाथ भवन, अजमेर।

घनश्यामदास बिड़ला—ज०—१८६१; सा०— बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड के मैनेजिंग डाइ-रेक्टर, लेजिस्लेटिव असेंबली के सदस्य, १६३० में इंपीरियल प्रिफ-रेंस के विरोध में पद-त्याग; सभा-पति इंडियन चैम्बर आव कामर्स कलकत्ता १६३५, फिडरेशन आव इंडियन चैम्बर आव कामर्स १६२६ और अ० भा० हरिजन-सेवक-संघ, इंडियन फिस्कल अंतर्राष्ट्रीय लेबर कानफ्रेंस (१६२७) और दूसरी गोलमेज कानफ्रेंस १६३० के डेलीगेट; अनेक संस्थाओं को दान दिया; प्रसिद्ध राष्ट्रीय प्रका-शन-संस्था, सस्ता साहित्य-मंडल, दिल्ली के प्रधान संस्थापकों में ; प्रका०— बापू आदि; प०—८ रायल ऐक्सचेंज पैलेस, कलकत्ता।

घनश्यामदास यादव—ज०—१६०५ ; सा०— कवि-परिषद् मोठ के सभापति; प्रका०—स्फुट; प०—मंत्री गणेश शंकर हृदय-राम पुस्तकालय, झाँसी।

घनश्याम नारायणदास,—ज०—१६०४, पालीग्राम गोरख पुर; शि०—एम० ए० (राजनीति, दर्शन), एल-एल० बी०, सा० र० काशी, प्रयाग; प्रका०— हिंदू-धर्म का वैज्ञानिक आधार, भार-तीय दर्शनों का दिग्दर्शन, राज-नीति, 'दि प्राब्लेम आव डोमी-नियन रूल फार इंडिया,' (अँग०) और 'दि डेवलपमेंट आव जुडि-शल ऐडमिनिस्ट्रेशन इन ब्रिटिश इंडिया' (अँग०), नामक ग्रंथ; प०—पाली ग्राम, गोरखपुर।

घनश्यामप्रसाद 'श्याम'—ज०—जनवरी १६११; **सा०**—प्रधान मन्त्री प्रांतीय सम्मेलन; संस्था० हिंदी-साहित्य-मंडल; **प्रका०**—वीर हकीकतराय (नाटक), वाह री ससुराल (उप०), स्मृति (कवि०), जीवन-सुधार (ना०), असर्ग (ना०); **प०**—बरहटा, नरसिंहपुर।

घमंडीलालशर्मा—ज०—६ जून, १८६६; **शि०**—एम० ए०, एल० टी०, सा० वि०—आगरा, इलाहाबाद; **सा०**—सेवा-समिति खुर्जा की स्थापना १६३१ में, बारह वर्ष तक उसकेप्रधान मन्त्री, हिंदी-प्रचारिणी-सभा खुर्जा की स्थापना १६३६ में, साक्षरता-प्रसार के लिए रात्रि-पाठशाला १६३६ में खोली, अखिल भारतीय चर्खा-संघ के एक हजार गज प्रतिमास अपने हाथ का कता सूत भेजनेवाले सदस्य; **प्रका०**—माडर्न हिंदी व्याकरण और रचना (तीन भाग), माडर्न हाई स्कूल हिन्दी-व्याकरण; **प०**—सेकेंड मास्टर, जे० ए० एस० हाई स्कूल, खुर्जा, बुलंदशहर।

घूरेलाल झा 'सूरदास'—ज०—१८६०; **प्रका०**—सूर-गजल रत्नमाला, सूरभजनावली; **अप्र०**—सूर-दोहावली; **प०**—सलेमपुरा, सादाबाद, मथुरा।

चन्दूलाल वर्मा 'चंद्र'—ज०—१६०१; **सा०**—२२ वर्षों से सेवा-समिति भिवानी के प्रधान मन्त्री, भोपाल गोरस गोशाला के मैनेजर, प्रकाशक व सम्पा० 'दस्तकार', 'रसायन' मासिक, 'प्रभाकर' और 'ग्राम-सेवक'; **प्रका०**—स्वर्णकार-विद्या, मुलम्मा-साजी, बिजली की रोशनी, जोड़ने की सीमेंट, रोशनाई का व्यापार, इङ्गलिश स्वयं शिक्षक, नूतन तार-शिक्षक, मुनीमी शिक्षक, सत्ययुग-मीमांसा, प्रेम का मूल्य; **प०**—चन्दू-कार्यालय, भिवानी।

चन्द्रकांत 'चंदर'—ज०—अक्टूबर १६१७; **प्र०**—जनवरी १६३६ कविता 'आदर्श', जबलपुर में प्रकाशित; **सा०**—१६४३ में 'निराला' को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया; १६४४ में दीवानचन्द हिंदी प्रतिभा पुरस्कार विजेता, अध्यक्ष प्रांतीय हिन्दी छात्र-परिषद सागर, संयोजक

तथा प्रधान मन्त्री क्रियाशील कलाकार मंडल जबलपूर, संचा०—शांति निकेतन साहित्य मन्दिर नागपुर, संपा० 'ज्योति', 'झूला'; प्रका०—राष्ट्रवाणी-कवि० ; अप्र०—फुलझड़ी, शृंगारदान ; प०—२४१, साठिया कुआँ, जबलपूर।

चंद्रकांतसिंह 'सामंत'—सा०—दैनिक 'प्रदीप' पटना के वर्त० सह० संपा० ; प्रका०—स्फुट ; प०—सिगरी, भभुआ, शाहाबाद।

चंद्रकिरण 'छाया'—श्री चंद्रकांत सौनरिक्सा की पत्नी ; ज०—१६२० , नौशेरह पेशावर छावनी ; शि०—सा० रत्न मेरठ ; प्र०—१९३८ ; प्रका०—'आदमखोर' कहा० संग्र० ; वि०—आपकी कहानियों का अनुवाद विदेशी भाषाओं में हुआ है ; 'आदमखोर' पर सेकसरिया पारितोषिक मिला ; प०—७७ तीमारपुर, देहली।

चंद्रकिशोरराम 'तारेश'—ज०—१६१२ ; प्रका०—तारिका; प०—मुख्तार, धमौन, हसनपुर, भामा महनार।

चंद्रगुप्त विद्यालंकार—प्र०—१६२५ ; सा०—विश्व-साहित्य-ग्रंथमाला के संपादक ; प्रका०—भय का राज्य (कहानी संग्रह), प०—दिल्ली।

चंद्रगुप्त—शि०—वेदालंकार; प्रका०—बृहत्तर भारत ; प०—गुरुकुल काँगड़ी।

चंद्रदेव शर्मा—ज०—१६०१ सारन; शि०—सा० रत्न, आचार्य, पुराणतीर्थ, संस्कृत कालेज मुजफ्फरपुर तथा कलकत्ता संस्कृत-समिति ; प्रका०—कर्तव्य किरणावली, विवेक-वचनावली, शांति-सोपान, विदुर चरितावली, दिव्य वार्ता, प्रार्थना, सूत्र भाष्य ; वर्त०—वैदिक सूत्रों की खोज कर हिंदी में लिख रहे हैं ;प०—राज संस्कृत विद्यालय, बेतिया, चम्पारन।

चंद्रदेवसिंह—ज०—१६०२ ; शि०—सा० रत्न; सा०—साहित्य सदन पुस्तकालय के संचा० कांग्रेस के कार्यकर्ता ; प्रका०—भ्रमर गान, अनूठे हीरे, कृषकोद्धार, श्रीमद्भगतगीता का छन्दोबद्ध अनुवाद ; वर्त०—अध्यापन ; प०—साहित्यसदन, इंदारा, आजमगढ़।

चंद्रप्रकाशसिंह, कुँवर—ज०—१६१० सीतापुर; शि०—एम०

ए० लखनऊ, नागपुर, लखनऊ विश्वविद्यालय से डा० रावराजा, पं० श्यामबिहारीमिश्र द्वारा संस्थापित सर जार्ज लैंबर्ट गोल्ड मेडल प्राप्त, अब 'रंगमंच और हिंदी नाटक' विषय पर डाक्टरेट के लिए थीसिस लिख रहे हैं; **सा०**—सिधौली, सीतापुर के श्रीविक्रमादित्य क्षत्रिय विद्यालय के संस्थापक, आजीवन सदस्य और मंत्री, उक्त विद्यालय के भूत० प्रधानाध्यापक; **प्रका०**—मेघमाला—गीत; **प०**—अध्यक्ष हिन्दी विभाग, युवराजदत्त कालेज, ओयल, खीरी।

चन्द्रप्रभा—**प्रका०**—स्फुटकविताएँ; **प०**—ठि० सर सेठ हुकुमचन्द्र, इन्दौर।

चन्द्रप्रभा द्विवेदी—**ज०**—१ अक्टूबर, १६२२; **शि०**—सा. रत्न, प्रयाग; **प्रका०**—नगर के पथ पर; **प०**—४१६६, बहादुरगंज, प्रयाग।

चंद्रबली पांडेय—**शि०**—एम० ए० हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी; **सा०**—मासिक 'हिंदी', बनारस के भूत० सम्पादक, नागरी-प्रचारिणी सभा काशी के अत्यन्त उत्साही कार्यकर्त्ता, बंबई में होने वाले हिंदी साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन में 'साहित्य-परिषद्' के सभापति, काशी नागरी-प्रचारिणी-सभा की ओर से दक्षिण भारत में हिंदी की स्थिति का निरीक्षण करने जाने वाले दल के उत्साही सदस्य, हिंदी के साहित्यिक रूप के प्रचार-प्रसार के सक्रिय समर्थक; **प्रका०**—विहार में हिंदुस्तानी, मुगलकालीन हिन्दी, हिंदी गद्य, मुगल-बादशाहों की हिंदी, विचार-विमर्श आदि एक दरजन से अधिक पुस्तकें; **प०**—ठि० नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस।

चन्द्रभानु सिंह—**प्रका०**—सप्त महारथी; **अप्र०**—काली कोशी और संतालिनी, शकुंतला—पृथ्वी पर; **प०**—देवघर स्कूल, मंगलगढ़, दरभंगा।

चन्द्रभानुसिंहजूदेव 'रज'—दीवान बहादुर; **प्रका०**—प्रेम सतसई, नेहनिकुंज, भ्रममानलीला; **प०**—रूलिंग चीफ आव गरौली, बुंदेलखंड।

चन्द्रभाल ओझा—**जा०**—२४ जूलाई १६०४; **शि०**—एम०

ए०, एल० टी० ; **सा०**—६ वर्ष तक फिरोजाबाद के हाई स्कूल में अध्यापन, सद० ना० प्र० सभा, गोरखपुर ; **प्रका०**—बाल-व्याकरण और हिंदी-रचना ; **अप्र०**—दो एकांकी-नाटक- संग्रह ; **प०**—प्रिंसिपल, तुलसीदास महाविद्यालय, गोरखपुर।

चंद्रभूषण त्रिपाठी 'प्रमोद'—**ज०**—१६०२ ; **प्रका०**—आभा मानस-तरंगिनी ; प०—मझिगवाँ, रायबरेली ।

चन्द्रभूषणसिंह ठाकुर—ज०—१६०५ ; **शि०**—सा० रत्न; **सा०** — संस्था० साहित्य-कुटीर ; **अप्र०**—भीमसिंह, स्वार्थ का विष, यदुवनदहन ; प०—अध्यापक, बिंदकी, फतहपुर ।

चन्द्रमणि देवी—श्री रामलोचनशरण जी की धर्मपत्नी ; ज० —१६०४ ; **प्रका०**—दुलहिन, कन्या-साहित्य—३ भाग, माता ; **प०**—पुस्तक-भंडार, लहरियासराय बिहार।

चन्द्रमनोहर मिश्र—ज०—१८८६ ; **शि०**—बी० ए०, एल-एल० बी ; **सा०**—अनेक साहित्यिक संस्थाओं से संबंधित ; **प्रका०**—हिन्दू-धर्म-शास्त्र, स्पेन का इतिहास ; **अप्र०**—कन्नौज का वृहद् इतिहास ; **प०**—ऐडवोकेट, फतेहगढ़ ।

चंद्रमाराय शर्मा—ज०—१६००;**सा०**—भूत० संपा० 'धर्मवीर' ; **प्रका०**—धारा-प्रकाशिका, नलोदय, आरत भारत, त्रिपथगा, गद्य-गमक, पंचगव्य, पिंगलप्रबोध, तलवार की धार पर ; **प०**—बहोरनपुर, बिहार ।

चंद्रमौलि—शि०—बी० ओ० एल० (हिंदी) ; **सा०**—दक्षिण भारत हिं० प्रचार सभा की कार्यकारिणी समिति के सद० ; **प्रका०** —स्फुट निबंध ; **प०**—दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा, त्यागराय नगर, मद्रास ।

चंद्रमौलि शुक्ल-ज०-१८८२; **शि०**—एम० ए० (संस्कृत) लखनऊ वि० वि०, एल० टी० (सर्वप्रथम) प्रयाग ट्रेनिंग कालेज ; **सा०**—कान्यकुब्ज सभा काशी के सभापति; आदर्श पुस्तकालय काशी के संस्थापकों में, काशी वि० वि० के हिंदी-बोर्ड, शिक्षा-बोर्ड तथा

फैकल्टी आव आर्ट्स के सदस्य, भूत० वाइस प्रिंसिपल काशी ट्रेनिंग कालेज ; भूत० संपा० 'कान्यकुब्ज' प्रका०—रचना-विचार, बालमनोविज्ञान, शरीरऔरशरीररचना, नाट्य-कथामृत, मानस-दर्पण, अकबर, करीमा—पद्य अनु०, अरिथमेटिक-शिक्षा-प्रणाली, हाईस्कूल हिंदी-व्याकरण और रचना, नूतन अरिथमेटिक—तीन भाग, बीज-गणित आदि अनेक पाठ-ग्रंथ ; वि०—अँगरेजी में भी लिखते हैं ; प्र०—अँतरौली, मोहनलालगंज, लखनऊ ।

चंद्रराज भंडारी—ज०—१९०२; प्र०—आदर्श देशभक्त (उप०) १९१९ ; —बँगला के प्रसिद्ध नाटक-कार द्विजेन्द्रलालराय से प्रभावित ; प्रका०—गाँधी-दर्शन, सिद्धार्थ-कुमार (नाट०), सम्राट अशोक (नाट०), मार्क्स योग (अनु०), भारत के हिन्दू सम्राट (इति०), भगवान महावीर, समाज विज्ञान, नाट्य कला-दर्शन, नैतिक जीवन, हरफन मौला, बनौषधि, चंद्रोदय, भारतीय व्यापारियों का इतिहास ; वि०—'समाज-विज्ञान' पर इंदौर की होल्कर कमेटी से स्वर्णपदक प्राप्त ; 'वनौषधि-चन्दोदय' वनस्पति विज्ञान का अनूठा ग्रन्थ है, यह १० भागों में है ; प०—भानपुरा, इन्दौर ।

चन्द्रशेखर धर मिश्र—सा०—भूत० सभापति प्रां० हि० सा० सम्मे० ; प्रका० — विद्या-धर्म-दीपिका ; वि०—भारतेन्दु के समकालीन और मित्रों में से एक ; स्व० अयोध्याप्रसाद द्वारा अपनी खड़ी-बोली कविताओं के लिए पुरस्कृत ; प०—रतनमाला, बगहा, चंपारन ।

चंद्रशेखर शर्मा—ज०—१९१२; सा०—हरिजन संघ और विद्यापीठ आदि में २० वर्ष से रचनात्मक कार्य कर रहे हैं ; प्रका०—स्फुट निबंध ; प० — प्रबंध-संपादक साप्ताहिक 'अमर ज्योति', जयपुर ।

चंद्रशेखर शर्मा 'सौरभ'—शि०—काव्य-व्याकरण-स्मृति-पुराण तीर्थ ; प्रका०—स्फुट निबंध ; प०—करौंदी गाँव, गुमला, राँची ।

चंद्रशेखर शास्त्री—जा०—अँगरेजी, संस्कृत, उर्दू ; सा०—भूत० अध्यापक हिन्दू-विश्वविद्यालय काशी ; प्रका०—न्यायबिंदु—बौद्ध

ग्रंथ, सुबोध जैन-दर्शन, तत्त्वार्थसूत्र, जैनागम समन्वय; मंत्रशास्त्र की पंचाध्यायी, बीजकोष-मंत्र, सामान्य साधन-विधान, ज्वालामालिनी कल्प, पद्मावती कल्प आदि लगभग तीन दर्जन ग्रन्थ लिखे, संकलित अथवा संपादित किये ; वि०—चारो भाषाओं में लिखते हैं ; प०—संपादक 'वैश्य - समाचार', दिल्ली ।

चंद्रसिंह झाला 'मयंक'—ज०—१६०८ ; शि०—इंटर, सा० रत्न, विज्ञानरत्न, कविभूषण ; प्रका०—विश्व के तीन झरने, भारतीय संगीत, मालवा के किसान, त्रिदेवियाँ, भूल, अंतर्ध्वनि, बाल-विनोद ; प०—१२ खतीपुरा रोड, इन्दौर ।

चंद्राबाई, पंडिता—सा०—लगभग २२ वर्ष तक 'जैन-महिला दर्श' का संपादन किया है ; बाल-विश्राम नामक संस्था की स्थापना की; प्रका०—ऐतिहासिक स्त्रियाँ, महिलाओं का चक्रवर्तित्व, उपदेश रत्नमाला, सौभाग्य रत्नमाला, आदर्श निबंध, आदर्श कहानियाँ, वीर पुष्पांजलि ; प०—बाला-विश्राम, आरा, बिहार ।

चंद्रावती ऋषभसेन—सा०—भूतपूर्व संपादिका मासिक 'दीदी' इलाहाबाद; प्रका०—नींव की ईंट (कहानी-संग्रह), इस पर हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से सेक्सरिया पुरस्कार मिला; प०—सहारनपुर ।

चंद्रावती लखनपाल—प्रो० सत्यव्रत सिद्धालंकार की पत्नी; शि०—एम०ए०, बी० टी०; प्रका०—स्त्रियों की स्थिति, जिसपर सम्मे० द्वारा ५००) का सेकसरिया पुरस्कार प्राप्त, शिक्षा-मनोविज्ञान जिस पर १२००) का मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त, प्रो० सत्यव्रत के सहयोग से शिक्षा-शास्त्र 'ग्रंथ' लिखा; प०—आचार्या, कन्या गुरुकुल, देहरादून ।

चंद्रिका प्रसाद मिश्र 'चंद्र'—ज०—१८६८, कानपुर; प्र०—१६२०; प्रका०—मारवाड़-गौरव, भगवा झंडा; प०—ग्वालियर ।

चंपालाल जैन—ज०—१८६२; शि०—होशंगाबाद; प्रका०—आत्म-यज्ञ, लघुसामयिक, तारण-पंथ समर्थन, तारणनिज वाणी-संग्रह,

द्वादशानुप्रवेश ; प०—सोहागपुर, होशंगाबाद ।

चंपालाल सिंघई 'पुरन्दर'—प्र०—१६३४; **सा०**— हि० सा० स० के परीक्षा-केन्द्र की स्थापना चंदेरी में; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—संचालक सिंघई प्रेस, चँदेरी ।

चक्रधर झा–**शि०**—सा० लं०; **प्रका०**—महाकवि भूषण की रचनाओं की आलोचना का एक विस्तृत ग्रंथ; प०—सोनागुजी, संताल-परगना, बिहार ।

चक्रधर सिंह, राजा—ज०—१६०५; **सा०**—अखिल भारतीय संगीत सम्मे०, प्रयाग के सभापति १९३६; नागपुर विश्वविद्यालय के संगीत-विभाग के भूत० अध्यक्ष; **प्रका०**—बैरागढ़िया राजकुमार, अलकपुरी—उप०, मायाचक्र, रम्यरास—कवि, रत्नहार, जोशे-फरहन—उर्दू; प०—रायगढ़ ।

चक्रधर 'हंस'—शि०—एम० ए०, एल० टी०; **प्रका०**—अनुवादचंद्रिका; प०—अनुवाद-विभाग, सेक्रेटेरियट, लखनऊ ।

चतुरसेन शास्त्री—प०—ज० १८६८; **प्रका०**—अमर अभिलाषा, सिंहगढ़-विजय, खवास का ब्याह, वैशाली की नगर-वधू; **प०**—वैद्य, दिल्ली शहादरा ।

चतुर्भुजदास चतुर्वेदी रावत—ज०— १६०३, मैनपुरी; **शि०**—सा० आ०, प्रभाकर, एम० आर० ए० एस०; **सा०**—सद० रायल ऐशियाटिक सोसाइटी लंदन, न्यू हिस्ट्री सोसाइटी अमरीका, आल इंडिया हिस्ट्री कांग्रेस प्रयाग, उत्तरप्रदेशीय हिस्टारिकल सोसाइटी लखनऊ, न्यूमिसमेटिक सोसाइटी बम्बई, म्यूजियम एसोसिएशन बम्बई, आर्ट तथा क्रैफ्ट सोसाइटी न्यू दिल्ली, संरक्षक माथुर-चतुर्वेदी पुस्तकालय, आजीवन सद० हि० सा० समिति भरतपूर, भूत० सद० कार्यकारिणी ब्रज-साहित्य-मडंल ; **प्रका०**—योगी आर्थर, मेरा स्वप्न, सुमन-सवैया, चतुर्भुज-सतसई, चतुर्भुज - नीति, आत्मोल्लास, अनन्त वर्मा नाटक, सुहाग की चूड़ी; **अप्र०**—प्रभाकर - प्रभा, बंधन, देवी-चालीसा, **प०**—क्यूरेटर स्टेट म्यूजियम, भरतपूर ।

चाँदमल अग्रवाल 'चन्द्र' ज०—१६१५; शि०—सा० रत्न,

काव्यमनीषी; प्र०—कोयल के प्रति —२१फरवरी, १९३१;सा०-मंत्री, प्राचीन रामायण-मंडल और हिन्दी-प्रचारक-मंडल, अध्यक्ष-अग्रवाल युवक-संघ, संपा० 'राजस्थानी', संस्था० राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति, निरीक्षक महावीर हिन्दी-वाचनालय; अप्र०—चन्द्र कवि-गाथा, तुलसी-गाथा, जुगनू, सुवर्ण-तुला, पद्मिनी ; प०—चन्द्रभवन, छावनी, औरंगाबाद ।

चाँदमल जैन — ज०—१९०९ ; शि०—एम० ए०, सा० रत्न ; प्रका०—स्फुट ; प०—हिंदी अध्यापक, मिशन हाई स्कूल, जयपुर ।

चिदानन्द स्वामी, सरस्वती (पूर्व नाम चंद्रदत्त शर्मा), श्री श्रद्धा नन्द के सहयोगी ; ज०—१८८९; सा०—मंत्री अखिल भारतवर्षीय साधु-मंडल सन् १९३२ में, अखिल भा० शुद्धि-सभा का प्रचार-कार्य १९२५ में, 'शुद्धि-समाचार' के संपा० १९३२ में, भूपाल और हैदराबाद में हिंदुओं के आर्यसमाज के सत्याग्रह-आंदोलन के नेता ; संपा—'श्रद्धानन्द', 'प्रजाबंधु' और 'राष्ट्र-वाणी' ; प०—श्रद्धानंद-बाजार, दिल्ली ।

चिरंजीत—ज०—१९३२ ; शि०—बी० ए० अमृतसर ; सा०—भूत० संपा० 'मनोरंजन' ; प्रका०—चिलमन (कविता) ; प०—संपादक 'वीर-अर्जुन, श्रद्धा-नंद-बाजार, दिल्ली ।

चिरंजीलाल मिश्र—शि०—एम० ए० तक एटा, कानपुर और बीकानेर सा०—अहिंदी-भाषियों को हिंदी-शिक्षा ; अप्र०—सामयिक और साहित्यिक निबंध; प०—हिंदी अध्यापक, रामपुरिया जैन इंटर कालेज, बीकानेर ।

चेतराम शर्मा— ज० — १९ जनवरी, १८९३, गढ़वाल ; शि०—सा० रत्न और प्रभाकर ज्वालापुर, लाहौर और गढ़वाल ; सा०—स्थानीय नागरी-प्रचारिणी सभा के प्रधान; साप्ताहिक 'प्रभात' के भूतपूर्व सहायक (१९१४-१६) और मासिक 'चाँद' लाहौर के स्वतंत्र संपादक ; कच्छ, कठिया-वाड़ और गुजरात में हिंदी-प्रचार, भूत० अध्यापक कन्या महाविद्या-लय जलंधर ; प्रका०—हिंदी

व्याकरण; हिंदी-गद्य-मंजूषा, धर्मपत्नी, भीमदेव (नाटक); अप्र०—शकुंतला-संहार ; प०—अध्यापक, आर्य कन्यागुरुकुल, पोरबंदर।

चैनसिंह ठाकुर—ज०—१८८५ ; प्रका०—चैन-विलास, युद्ध-कल्याण-पच्चीसी, रण-चालीसा; अप्र०—चैनज्ञान-सागर ; प०—सरसान, पिपलौदा स्टेट, मालवा।

चैनसुखदास—शि०—न्याय-तीर्थ और कविरत्न ; सा०—भूत० संपा०—'जैन-विजय' और 'जैन-बंधु' ; प्रका०—भावना-विवेक, पावन-प्रवाह ; अप्र०—भगवान महावीर. जैनशासन; वि०—प्राचीन-जैन साहित्य के उद्धार के लिए प्रयत्नशील; प०—जयपुर।

छंगालाल मालवीय—ज०—१९०३ ; शि०—एम. ए.(हिंदी), एम. ए.—प्रि० (फिलासफी) काशी, प्रयाग और लखनऊ वि० वि० ; सा०—भूत० संपा०—'अभ्युदय' सा०० प्रयाग; 'हिंदू मिशन पत्रिका' लखनऊ, संपा०—'शिक्षा' लखनऊ; आइल प्रोडक्ट्स, महाराज कुमार ट्रेडर्स, साइंटिफिक रिसर्च आदि के डायरेक्टर्स बोर्ड के सद०, विद्यांत इंटर कालेज लखनऊ, शशिभूषण बालिका विद्यालय आदि शिक्षा-संस्थाओं के प्रबन्धक अथवा कार्यकारिणी के सदस्य, जर्नल्स लिमिटेड लखनऊ से निकलने वाली हिंदी पुस्तकों के संपा० ; प्रका०—हिन्दी व्याकरण और रचना, निकुंज (कहा०), गल्पहार, भारतीय विचारधारा में आशावाद (अनु०) ; प०—सुन्दरबाग, लखनऊ।

छगनलाल जैन—शि०—एम. ए. (अँगरेजी) कलकत्ता वि० वि०,सा० वि०; जा०—आसामी, बँगला ; सा०—आसाम राष्ट्रसभा प्रचार समिति के संचा०, आसाम प्रा० हि० सा० सभा के मंत्री, अखि० भार० रेडियो गौहाटी से ब्राडकास्ट; प्रका०—हँसते-हँसते जीना ; अप्र०—संघर्ष नाट० ; प०—फैंसी बाजार, गौहाटी, आसाम।

छविनाथ पांडेय—ज०—१८९४ , जबलपुर ; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; सा०—

मत्री बिहार प्रांतीय हि० सा० सम्मे०, 'साहित्य' मासिक कलकत्ता, 'साहित्य' त्रैमासिक पटना के संचालक; **प्रका०**—प्रोत्साहन, स्त्रीकर्तव्य, चरित्र-चित्रण, सफलजीवन, समाज-नाट०, वाणिज्य-व्यवसाय, अंधकार, पुस्तकालय: उसका संचालन, 'यंग इंडिया' (अनु०); प०—पब्लिकेशन आफिसर, बिहार सरकार, पटना।

छेदी झा, 'द्विजवर', 'मैथिल मधुप'—ज०—१८९३; जा०—अँगरेजी, बँगला, मैथिली; **सा०**—कांग्रेसी कार्यकर्ता, १९३० और १९३२ में सजा और जुरमाना, ४२ में साढ़े चार वर्ष की कैद; **प्रका०**—बन्दी-विनोद (मैथिली) राष्ट्रीय संगीत (हि०), जीवन-प्रभात (मैथिली पदानुवाद), घनश्याम, कोयल शतक (हि०), नरसिंह पद्यावलि, कुसुम (गीत), **वर्त०**—'श्यामायन' काव्य लिखने में प्रयत्न शील, प०—बनगाँव, बरियाही, भागलपुर।

छैलबिहारी दीक्षित 'कण्टक'—ज०—इटावा १९०८; शि०—इटावा, कानपुर, बी० ए०, सा० रत्न; **सा०**—भूत० सम्पा०—दैनिक 'वर्तमान' कानपुर, दैनिक 'प्रभात' लाहौर, दैनिक 'संध्या'; व्यव० तरुण प्रेस, हि० सा० सम्मे० प्रयाग की स्थायी समिति, विश्व-विद्यालय परिषद तथा राष्ट्र-भाषा प्रचार-समिति वर्धा के सदस्य, कानपुर में हि० सा० समिति तथा अनेक सार्वजनिक संस्थाओं के संस्थापक, सहयोगी या मन्त्री; राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया, अनेक बार नजरबन्दी और कारावास के दंड भोगे, प्रांतीय कांग्रेस कमेटीके सदस्य हैं; **प्रका०**—स्फुट कविताएँ और लेख; प०—तरुण-प्रेस, कानपुर।

छैलबिहारी लाल बजाज—छैला अलबेला', 'चुलबुल छैला'; ज०—१८९४, हाथरस; प्र०—१९१०; **सा०**—अनेक कवि-सम्मे० के सभापति; दो वर्ष तक मासिक 'हितोपदेश' के प्रकाशक; छह वर्ष तक साप्ता० 'भारतपुत्र' के संपा०; बीस वर्ष से स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड के सदस्य और अब शिक्षा-विभाग, हाथरस के

सभापति ; प्रका०—हृदय-सागर, फैलावट-माला, मुकुरी-माला ; प०—नयागंज, चौक, हाथरस ।

छोटेलाल पाराशरी—ज०—५ अगस्त, १६०५ ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० ; सा०—स्थानीय हिंदू-सभा के प्रधान तथा हिंदी-प्रचार-मंडल के उत्साही कार्य-कर्त्ता और सक्रिय सहायक ; प्रका०—स्फुट ; प०—वकील, बदायू ।

छोटेलाल भारद्वाज, ज०—१ जूलाई १६२६ ; शि०—बी.ए. स्वतंत्र पढ़कर, एम० ए० विक्टोरिया कालेज ग्वालियर ; प्र०—१६४४ ; प्रका०—प्रतिहिंसा (खंडकाव्य); प०—पहाड़गढ़, मुरेना ।

जंगबहादुर मिश्र 'रंजन'—ज०—बलिया, १ जूलाई १६०७ ; शि०—बी० ए०, साहित्यरत्न, बलिया ; सा०—बलिया हिंदी-प्रचार-सभा के मन्त्री, कवि-सम्मेलनों में सक्रिय भाग लेते हैं ; प्रका०—विषबेलि, वेणी-संहारम् (अनु०), पुजारी, वेदनाएँ ; प०—अध्यापक, मेस्टनकालेज, बलिया ।

जंगबहादुरसिंह—ज०—१६२० ; शि०—एम० ए० १९४४, बी० टी० १६४५ ; प्र०—१६४५ ; सा०—बहराइच में हिंदी-प्रचार ; प्रका०—स्फुट ; प०—सबडिप्टी इंस्पेक्टर आव स्कूल्स, बहराइच ।

जगतनारायण—ज०—१८८७ ; प्र०—१६१३ ; प्रका०—स्फुट रच० ; वर्त०—अध्यापन ; प०—सरैया, बनियापुर, सारन ।

जगतनारायण पांडेय 'विधुर'—ज०—२० सितम्बर १६१७ ; शि०—सा० लं०, व्याकरण ज्योतिषाचार्य ; प्र०—प्रलाप; सा०—बिहार प्रांतीय संस्कृत शिक्षण-संघ, हिंदी विद्यालय पटना, प्रेम-निवास पुस्तकालय के प्रधान मंत्री, पटना हि० सा० स०, प्रांतीय देव-भाषा परिषद्, संस्कृत संजीवन-समाज, बिहार पत्रकार-संघ आदि के सदस्य; प्रका०—स्फुट ; वर्त०—सहायक संपा० 'नवशक्ति'; प०—दंडरहा, आरा ।

जगतनारायण मिश्र—ज०—१६१७ ; शि०—ग्वालियर ; सा०—पत्रों के संवाददाता, पाश्चात्य ढंग पर समाचार-वितरण-समिति स्था-

र्पित की, अर्द्ध साप्ताहिक 'शुभ-चिंतक' के ब्रांच मैनेजर ; प०—शिवपुर, ग्वालियर स्टेट।

जगतनारायणलाल—शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० ; सा०—भूत० मंत्रीअखिल भारतीय और बिहार प्रांतीय हिंदू-महासभा; बिहार की कांग्रेसी सरकार के पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी ; भूत० संपा० 'महावीर', पटना; प्रका०—एक ही आवश्यक बात, अर्थ-शास्त्र, हिन्दूधर्म; प०—कदम कुआँ, पटना।

जगदंबाशरण मिश्र 'हितैषी'—ज०—१८६५, उन्नाव के अंतर्गत गंजमुरादाबाद में ; शि०—कानपुर ; जा०—फारसी, उर्दू, अँगरेजी, संस्कृत, बँगला; प्रका०—कल्लोलिनी, वैकाली, मातृगीता, अप्र०—अनेक काव्य-संग्रह, वि०—कुछ गजलें उर्दू में भी लिखीं ; प०—पुर्वा, उन्नाव।

जगदंबाशरण शर्मा—शि०—एम० ए०, डिप्० एड०, सा०र०; प्रका०—बुद्धिपरीक्षा, वाणीसुधार, रचनावाटिका (तीन खंड), व्याकरण-वाटिका ; प०—डिपुटी-इंस्पेक्टर, मुँगेर, बिहार।

जगदीश कवि—दरभंगा और नैपाल के दरबारों से सम्मानित ; प्रका०—प्रतापप्रशस्ति, बूटी रामायण; प०—सोनबरसा, भागलपुर।

जगदीश चांद्र जैन—ज०—२० जनवरी १६०६; शि०—एम० ए०, पी-एच० डी०, सा—१६४२ के आंदोलन में बम्बई में नजरबंद; प्रका०-महावीर वर्धमान, आजादी की लड़ाई और सुभाष बाबू, दो हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ, हमारी रोटी की समस्या, प्राचीन भारत की कहानियाँ, अँगरेजी में-'लाइफ इन ऐंशियेंट इंडिया एज़ डिपाज़िटेड इन जैन कैननस'; वर्त०—अर्धमागधी और हिंदी के अध्यापक; प०—रामनारायण रुइया कालेज, माटुंगा, बंबई।

जगदीशचंद जोशी—ज०—१६२३; सा०—सहा० संपा० 'कल की दुनिया', 'किलकारी' के संपादक-मंडल में; प्रका०—परिहास-मूल्यांकन, अंधी दुनिया; अप्र०—साहित्य की रूपरेखा ; वर्त०— 'जनमत' साप्ताहिक निकाला है ; प०—बनियावाड़ी, जोधपुर।

जगदीश चंद्र शर्मा, डाक्टर—

ज०— १९१५; प्रका०— दोहे-चौपाई में होम्योपैथी पर पुस्तक; प०—होम्योपैथ, आगरा।

जगदीशचंद्र शास्त्री—ज०—१९०४; सा०—दिल्लीऔर दार्जिलिंग में अनेक संस्थाओं की स्थापना और हिंदी-प्रचार-कार्य में सहयोग; प्रका०—लगभग आधी दर्जन पुस्तकें; अप्र०—स्फुट लेखों के संग्रह; प०—मखन, बिहार।

जगदीशचंद्र 'हिमकर–ज०–१९०४ फिल्लोर पंजाब, शि०—फिल्लौर; सा०—संपा० 'हिंदू पंच' कलकत्ता, १९४० से सद० बंगाल प्रेस-सलाहकार-कमेटी, अ० भा० पत्रकार-संघ समिति के सदस्य १९४५-४६; आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य; प्रका०—संसार की क्रांति--कथा; प० — संपादक—दैनिक 'जागृति', हवड़ा।

जगदीश झा 'विमल'—ज०—१८९१; जा०—अँगरेजी, संस्कृत, बँगला, मराठी; प्रका०—वीणा-झंकार, पद्य-प्रसून, पद्य-संग्रह, खरा सोना, जीवन-ज्योति, लीला, आशा पर पानी, दुरंगी दुनिया, सावित्री, महावीर, सतीपंचरत्न, आदर्श सम्राट आदि लगभग अस्सी पुस्तकें; प०—कुमैठा, भागलपुर।

जगदीशनारायण-- सा०—युगांतर-साहित्य-मंदिर, पटना के संस्थापक और संचालक; प्रका०—बड़ों का बचपन, गाँवकी ओर, बैर का बदला; प०—युगांतर-साहित्य-मंदिर, पटना।

जगदीशनारायण तिवारी—ज०—१८९८; सा०—'उपन्यास तरंग' मासिक और 'सनातन धर्म' साप्ता० के भूत० संपा०; प्रका०—कृष्णोपदेश, अंतर्नाद, दुर्योधनवध, अधीर-भारत, गोविलाप, चरित्र-शिक्षण, शैतान की शैतानी, प्राथमिक विज्ञान, बाल रामायण, बाल भारत; प०--प्रधान हिंदी अध्यापक, सनातनधर्म विद्यालय, कलकत्ता।

जगदीश नारायण दीक्षित—ज०—कानपुर २६ जुलाई १९१२; शि०—बी०एन०एस० डी०कालेज कानपुर से इंटरमीजिएट, एस० डी कालेज, कानपुर से बी० ए०, एल-एल० बी०, एम० ए० (हिंदी) एम० ए० (संस्कृत), सा० रत्न; प्र०—प्रसाद जी के नाटकीय पात्र;

सा०—ग्राम-रक्षा समिति के संयुक्त मन्त्री (१० वर्ष तक), दैनिक पुस्तकालयके मंत्री, श्री विनोद संस्कृत पाठशाला नवाबगंज की कार्यकारिणी के सदस्य, ब्रह्मावर्त (बिठूर) संस्कृत गुरुकुल-आश्रम के शिक्षा-मन्त्री; प्रका०—प्रसाद की सर्वतोमुखी प्रतिभा विषय पर अनुसंधान; प०—अध्यक्ष संस्कृत-विभाग, गया कालेज, गया।

जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी—ज०—१६१७, जालौन ; शि०—बी० ए०, एल-एल बी०, चंपा अग्रवाल हाई स्कूल मथुरा और डी० ए०वी० कालेज कानपुर; प्र०—१६३७ ; सा०—संपादक 'जागृति' १६३६–४०, 'व्रजभारती' १६४०—४१, 'माया-सीरोज' १६४१—४२, 'माया' और 'मनोहर कहानियाँ' के सम्पादकीय मंडल में भी रहे ; १६४३ से 'मधुकर' झाँसी में काम कर रहे हैं ; बुंदेलखंडी विश्वकोश के भी सम्पादक-मंडल में रहे ; हिंदी-साहित्य-परिषद् मथुरा के सहायक और व्रज-साहित्य-मंडल के संयुक्त मन्त्री रहे; प्रि० वि०—पत्रकार कला, राजनीति और समाजवाद; प०—वकील, मथुरा।

जगदीशप्रसाद ज्योतिषी 'कमलेश'—ज०—१६०६, नरसिंहपुर ; शि०—एम० ए०, विश्वविद्यालयमें सर्वप्रथम आकर कोरिया दरबार स्वर्ण-पदक प्राप्त किया ; प्र०—१६२४ ; सा०—असहयोग आंदोलन में दो बार जेलयात्रा ; प्रका०—कलरव और पांचजन्य ; प० —सागर, मध्यभारत।

जगदीशप्रसाद दीपक'—सा०—राजस्थान में पत्रकारिता के उत्थान में बड़ा प्रयत्न किया, संपादक 'मीरा' ; प्रका०—एशिया की महिला-क्रांति, राजपूतनियाँ—कहा०, राजस्थान के इतिहास में नारी का स्थान, राजस्थान के रमणी-रत्न, क्रांति और कुमारियाँ; प०—एम० आर० भंडारी एंड कम्पनी, बड़ा बाजार, अजमेर।

जगदीशप्रसादशर्मा 'जितेन्द्र'—ज०—१५दिसम्बर१६३०; सा०—भूत० संपा० 'जय श्री'; प्रका०—उप०—उसका प्यार, मेरी कहानी, माँ का हृदय, अबला के आँसू; प०—भारत औषधालय, सतघरा, मथुरा।

जगदीशप्रसाद 'श्रमिक'—सा०—'महिला-संदेश'; **प्रका०**—मुजफ्फरपुर जिले का सत्याग्रह-श्रांदोलन; **प०**—व्यवस्थापक, श्रोरियंटल प्रेस, पटना।

जगदीश भारती—ज०—३१ मार्च १९०९; **शि०**—मुरादाबाद, कानपुर, लखनऊ, काशी; **प्र०**—मार्च १९२२; **सा०**—'प्रदीप' मासिकपत्र के संपा०; दो बार जेल यात्रा; **प्रका०**—विधाता की धरती पर (जब्त), दो महायुद्धों के बीच (जब्त), बीसवीं सदी राजनीति, द्वाभा, इकाई, शतपत्र; **प०**—'प्रदीप'-कार्यालय, मुरादाबाद।

जगदीश मिश्र—सा०—संपा० 'मुंगेर-समाचार'; सद० प्रगतिशील लेखक-संघ; **प०**—नारद-प्रेस, मुंगेर।

जगदीशसहाय उपाध्याय—ज०—१९२१ झाँसी; **सा०**—पालर में ना० प्र० सभा के संस्थापक; **अप्र०**—गौतम बुद्ध; **प०**—अध्यक्ष हिन्दी विभाग, मैकडानल कालेज, झाँसी।

जगदीशसिंह गहलोत—ज०—१८९५, जोधपुर; **शि०**—एफ० आर० जी० एस०, एम० आर० ए० एस०; जोधपुर हाई स्कूल, सिंध एकेडमी हैदराबाद; **सा०**—आर्यसमाज-सेवा समिति के संचालक, जोधपुर राज्य के इतिहास व पुरातत्व कार्यालय के कोलेटर १९२९; देशी राज्य इतिहास-मंदिर की स्था० १९२३; 'हिन्दी-साहित्य-मंदिर' के संस्थापक; हिं० प्र० सभा, जोधपुर के जन्मदाता और मान्य सदस्य; 'शाकद्वीपी ब्राह्मण', 'सैनिक क्षत्रिय' आदि के भूत० संपा०; **प्रका०**—मारवाड़ राज्य का इतिहास, राजपूताने का इतिहास—दो भाग, इतिहास-सहायक पंचांग, मारवाड़ की रीति-रस्म, मारवाड़ का संक्षिप्त वृत्तांत, भारतीय नरेश, उमेद-उमंग, महाराजा सर प्रताप, चित्रमय जोधपुर, राजस्थान का सामाजिक जीवन, वीर दुर्गादास राठौड़, सती मीराबाई का जीवन और काव्य, मारवाड़ के जागीरदार और मुसद्दी, मारवाड़ राज्य के ताजीमी सरदार, राजपूताने के जागीरदार, जयपुर राज्य का इतिहास, अमर काव्य,

चित्रमय राजस्थान, संसार के धर्म, नैपाल का सचित्र इतिहास ; प० —घंटाघर, जोधपुर।

जगदीशसिंह चौहान 'सुमन' —ज०—१८फरवरी १९२३; शि० —बी० ए०, सा० वि० ; **सा०**— विंध्य प्रदेश में हिंदी और देवनागरी लिपि के प्रचार का आंदोलन, 'हिन्दुस्तान-समाचार' के संपा० ; साम्यवाद के समर्थक ; १९४२ के आन्दोलन में सक्रिय भाग; **प्रका०** —झंकार, शरणार्थी (उप०); **प०**— शहडोल, विंध्यप्रदेश।

जगदीश्वर प्रसाद ओझा— स्त्री-शिक्षा, पुरुषार्थ और स्वास्थ्य-रक्षा-संबंधी अनेक सामयिक तथा महत्त्वपूर्ण लेखों और पुस्तकों के निर्माता;प०—संचालक सुदर्शन प्रेस, दरभंगा।

जगदेव 'शान्त'—ज०—७ सितंबर १९२०; **शि०**—सा० रत्न ; **सा०** —भूतपूर्व सदस्य और मंत्री स्थायी समिति हिंदी साहित्य सम्मेलन; **प्रका०**—छाया (कवि०) ; **प०**— शान्त-निकुंज, दालमंडी, मेरठ।

जगनलाल गुप्त—ज०—११ फ़रवरी, १८९१; जा०—संस्कृत, मराठी, गुजराती; **सा०**—बड़ौदा राज्य में हिंदी अध्यापक १९१४; मासिक 'प्रेमा'वृंदावनके संपा०— १९१५; बुलंदशहर में मुख्तार १९२० से; प्र०—१९०७;**प्रका०**— संसार के संवत्, देवलरानी और खिजखाँ, हम्मीर महाकाव्य, मालवमणि, कौटिल्य के आर्थिक विचार; **अप्र०**—ब्रह्मांड-ऋग्वेद, वैशंपायनसंहिता, भारतवर्ष का प्राचीन भूगोल, प्राचीन इतिहास; **प०**— मुख्तार, बुलंदशहर।

जगन सिंह सेंगर—ज०— १९०३, अलीगढ़; शि०—हाथरस; **सा०**—भूत० संपा० 'शिक्षकबंधु'; **प्रका०**—आदर्शनिबंधावली,आदर्श पत्र-रचना, मुरली, झाँकी, किसानसतसई; **प०**—'शिक्षकबंधु'-कार्यालय,कटरा, अलीगढ़।

जगन्नयन बहुगुणा—ज[illegible] १५ जून १९११;शि०—वैद्य[illegible] स्पति आयुर्वेदाचार्य (विद्यापीठ[illegible] डी० आई० एम० एस०; गुरु[illegible] हरद्वार, आयुर्वेदिक विद्य[illegible] ऋषीकेश; प्रका०—ऋषीके[illegible] यात्रा, अग्निकर्म-चि[illegible]सा, आयुर्वेदीय शल्य-कर्म; [illegible]—

आचार्य मूलचंद्र रस्तोगी आयुर्वेदिक कालेज; प०—आयुर्वेद सेवा-सदन, देहरादून।

जगन्नाथ पुच्छरत—ज०—१८८६ ; शि० — साहित्य-भूषण, एफ० टी० एस०; सा०—पुरोहित- पंचायत और सारस्वत युवक-मंडल के संस्था०, काशी ना० प्रचा. सभा और हिंदी सा. सम्मे० के सम्मानित सद०, काशी ना० प्रचारिणी सभा के तत्वावधान में 'पुच्छरत' पदकनिधि' की स्था०, हिंदीरत्न-पुस्तकालय खोला, पंजाब-विश्वविद्यालय की हिंदी परीक्षाओं के प्रचारक, लगभग पैंतीस वर्षों से साहित्य-सेवा में संलग्न ; भूत० प्रधान मंत्री अमृतसर नागरी-प्रचारिणी सभा; प्रका०—परीक्षापद्धति, मुद्रणपद्धति, संकल्पविधि आदि ; अप्र०—विविध संपादित और संगृहीत ग्रंथ ; प०—साहित्य-सदन, चावल मंडी, अमृतसर।

जगन्नाथ प्रसाद—ज०—शाहाबाद; शि०—बी० ए०, बी० एन कालेज पटना, काशी वि० वि०; प्रका०—मध्यकालीन बिहार; प०—अध्यापक हाई इँगलिश स्कूल, शाहाबाद।

जगन्नाथप्रसाद उपासक—ज०—१९१२; शि०—विक्टोरिया कालेज, लश्कर और मेडिकल कालेज, इंदौर; प्रका०—बलिदान, पुकार; प०—ग्वालियर।

जगन्नाथ प्रसाद खत्री 'मिलिंद'—ज०—१९०७, मुरार; शि०—मुरार हाई स्कूल अकोला, रष्ट्रीय स्कूल महाराष्ट्र और काशी विद्यापीठ; जा०—उर्दू, अँगरेजी संस्कृत, मराठी, बँगला, गुजराती; सा०—शांतिनिकेतन में एक वर्ष तक अध्यापक रहे; भूत० संपा० 'भारती' लाहौर, सांता० 'जीवन' ग्वालियर; प्र०—१९२५, प्रका०—जीवन-संगीत, पंखुरियाँ, आँखों में, नवयुग के गान—कविता, प्रताप-प्रतिज्ञा-नाटक; प०—ग्वालियर।

जगन्नाथप्रसाद तुपकरी 'भृंग'—अप्र०—मिट्टी की महक, बेटी की बिदा, तीन खिड़कियाँ ; प०—अ० भा० रेडियो स्टेशन, नागपुर।

जगन्नाथप्रसाद मिश्र—ज०—१८९७ ; शि०—प्रारम्भिक दरभंगा, बी० ए० मुजफ्फरपुर;

एम० ए० हिंदी, पटना वि० वि०, प्रथम श्रेणी, प्रथम; बी० एल० कलकत्ता वि० वि० ; सा०—भूत० संपा—'कलकत्ता-समाचार', दैनिक और साप्ता० 'भारत मित्र', ६ वर्ष तक 'विश्वमित्र', १९४८ में 'हिमालय' मासिक; सभा० बिहार प्रा० हि० सा० सम्मे० और सुहृद संघ मुजफ्फरपुर ; सद०—आल इंडिया रेडियो ऐडवाइज़री कौंसिल, हिंदी - कमेटी बिहार सरकार, प्रांतीय काँग्रेस कल्चरल ब्यूरो ; विधान के हिंदी - अनुवाद के विशेषज्ञों की कमेटी के सदस्य ; १९३०-३१ के सत्याग्रह-आंदोलन में कारावास; प्रका०—जीवन-देवता की वाणी, साहित्य की वर्तमान धारा, समाजवाद क्या है ?, दरभंगा, प्रेम-प्रपंच, प्रिय और दांपत्य, जानते हो ?,बच्चों का चिड़ियाखाना; प०—अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मिथिला कालेज, दरभंगा।

जगन्नाथप्रसाद वैष्णव—सा०—हरिनामयश-संकीर्तन की लगभग दो दर्जन पुस्तकों के संकलनकर्त्ता और संपा०; प०—लड़कापुर।

जगन्नाथप्रसाद शर्मा,—ज०—१९०६, नागौर स्टेट; शि०—एम० ए०, डी० लिट्०; सेंट्रल हिंदू स्कूल और हिंदू विश्वविद्यालय काशी; अब हिंदू-विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्यापक हैं; प्रका०—हिंदी की गद्य-शैली का विकास, 'प्रसादजी' के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन; वि०—इसी पर शर्माजी को हिंदू विश्वविद्यालय से डी० लिट्० की उपाधि मिली; प०—औरंगाबाद, काशी।

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल—ज०—१८७९ फतहपुर; शि०—राजवैद्य, आयुर्वेद-पंचानन; सा०—बिलासपुर हिंदी-सभा की स्थापना; भूत० संपा०—'प्रयाग-समाचार', 'श्री वेंकटेश्वर-समाचार' और 'हिंदी-केसरी', नागपुर ; आयुर्वैदिक पत्र 'सुधानिधि' के १९१० से संपादक ; प्रयाग आयुर्वेद- प्रचारिणी सभा के संस्थापक; वैद्य-सम्मे० के पुनरुद्धारक; आयुर्वेदीय शिक्षा और परीक्षा के प्रबंधक; हिं० सा० सम्मे० के आरंभ से सदस्य ; समय समय पर प्रबंधक, प्रधान और संग्रह-मंत्री ; सभी प्रसिद्ध आयुर्वेदीय संस्थाओं से

संबंधित; प्रका०—भारत में मंदाग्नि, आरोग्य-विधान, रस-विज्ञान, आहार-शास्त्र, आयुर्वेद का महत्त्व, भारतीय रसायनशास्त्र, पथ्यापथ्य-निरूपण, नाड़ीपरीक्षा, आयुर्वेदीय मीमांसा, नीति-कुसुम, आदर्श बालिका, नीति-सौंदर्य, भारत में डच राज्य, सिंहगढ़-विजय; प्रि० वि०—आयुर्वेद, नीति, इतिहास; प०—३ सम्मेलन मार्ग, प्रयाग।

जगन्नाथप्रसाद श्रीवास्तव 'विमलेश'—ज०—२ जूलाई १६१६; शि०—सा० रत्न; प्रका०—श्रीमद्भगवतगीता का पद्यानुवाद; अप्र०—प्रयास, बलिदान (ना०); प० — सुपरवाइजर कानूनगो, तहसील करछल, इलाहाबाद।

जगन्नाथप्रसाद साहू—सा०—स्थानीय हिं० प्र० सभा के संचालक; हाजीपूर-सबडिवीजन के पुस्तकालय-संघ के मन्त्री; प्रका०—कई पुस्तकें और निबन्ध; प०—लालगंज, हाजीपुर।

जगन्नाथ राय शर्मा—ज०—१ दिसम्बर १८६६; शि०—प्रारम्भिक पटना में, बी० ए० और एम० ए० संस्कृत, काशी वि० वि० और एम० ए० हिन्दी पटना वि० वि० प्रथम श्रेणी प्रथम; कई पदक प्राप्त; सा०—सहा० तथा प्रधान अध्यापक पाटलिपुत्र हाई स्कूल पटना १६२६-३७ तक, सा० सम्मे की परीक्षाओं के केंद्र खोले, १६४६ में मंगलाप्रसाद पारितोषिक के निर्णायक; प्रका०—विक्रम-विजय, अपभ्रंश-दर्पण, ब्रज-साहित्य-सौरभ, रामचरित मानस—अयोध्या कांड-टीका, भाव चित्रावली-रामायण, तरुण-तरंग; प०—पटना कालेज, पटना।

जगन्नाथसहाय कायस्थ—प्रका०—आनन्द-सागर, प्रेमरसामृत, भक्तरसामृत, भजनावली, कृष्ण-बाललीला, मनोरंजन, चाँदहरण, गोपालसहस्रनाम; अप्र०—कविताओं के दो संग्रह; प०—बड़ा बाजार, हजारीबाग, छोटा नागपुर।

जगन्नाथसिंह चौहान, 'जगदीश'—ज०—१४ मार्च १६०६; शि०—सा० वि०; सा०—भींडर के कुँअर साहब के अभिभावक, भींडर साहित्य-कुल के मन्त्री, राजस्थान हि० सा० सम्मे० की स्थायी समिति के सदस्य, निःशुल्क शिक्षा देकर हिंदी

प्रचार ; प्रका०—स्फुट ; वि०—छन्द-शास्त्र-विशेषज्ञ ; प०—'नव-जीवन'-कार्यालय, उदयपुर ।

जगमोहन लाल जैन—ज०—१९०१ ; शि०—शास्त्री ; सा०—'परवारबन्धु' के भूत० संपादक (३८-४२), दिगम्बर जैन शिक्षा-संस्था के प्रिंसिपल (२३से), श्री गुरुकुल गढ़ा, जबलपुर के संस्थापक, अखिल भारतीय परवार दिगम्बर जैन महासभा के प्रधान; वर्त०—संस्कृत के ग्रन्थों का अनुवाद कर रहे हैं ; प०—जैन पाठशाला, कटनी, जबलपूर ।

जगमोहनप्रसाद शुक्ल 'मोहन'—ज०—जूलाई १९०० , प्रका०—स्फुट कविताएँ , वि०—इटौंजाधीश के विशेष कृपापात्र , प०—राजपुर, इटौंजा, लखनऊ ।

जगमोहनराय—ज०-१९०७, गोरखपुर ; शि०—एम० ए०, सा० रत्न, काशी वि० वि० ; स्व-पं० रामचन्द्र जी शुक्ल की अध्यक्षता में 'हिन्दी में गीतकाव्य' विषय पर रिसर्च की ; प्रका०—हिन्दी गीतकाव्य, हिन्दी मुहावरे और लोकोक्तियाँ, पद्य-मुक्तावली ; प०—अध्यापक विश्वेश्वरनाथ हाई स्कूल, अकबरपुर, फैजाबाद ।

जगेश्वरदयाल वैश्य ; ज०—४ दिसम्बर १९१० मेरठ; शि०—मेरठ कालेज से बी० एस- सी० और एम० ए० ; सा०—पारिभाषिक शब्दों को एकत्रित कर रहे हैं ; प्र०—स्वास्थ्य-प्रकाश, ४ भाग, स्वास्थ्य-प्रभा २ भाग, भारतीय कहानियाँ ; प०—इंस्पेक्टर आव स्कूल्स, बीकानेर ।

जगेश्वरसिंह—सा०—प्रधान हि० सा० परिषद् लालगंज, रायबरेली ; प्रका०—अवतारवाद; प० लालगंज, रायबरेली ।

जनार्दन पाठक — ज० — १८९५ ; प्रका०—देशोद्धार, स्वराज्य और युधिष्ठिर ; प०—भेलही, सारन, बिहार ।

जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज' ज०—१९०४, रामपुरडीह, भागलपुर ; जा०—अँगरेजी, बँगला, मैथिली ; प्रका०—किसलय, मृदुदल, मालिका, मधुमयी, अनुभूति, अन्तर्ध्वनि, प्रेमचंद की उपन्यास-कला, चरित्ररेखा ; वि०—कुशल

वक्ता; प०—हिंदी विभागाध्यक्ष, राजेंद्र-कालेज, छपरा।

जनार्दन प्रसाद द्विवेदी—ज०—१९२२; प्रका०—आयुर्वेद विषयक स्फुट लेख; प०—आक्रोश औषधालय रामगढ़वा, चम्पारन।

जनार्दनप्रतिहस्त—शि०—साहित्य-शास्त्री, काव्यतीर्थ; प्रका०—राष्ट्रपति शिवाजी—काव्य; प०—राष्ट्र भाषा प्रचारक मंडल, सूरत।

जनार्दन मिश्र—ज०—१८९३; मिश्रपुर, भागलपुर; शि०—एम० ए०, डी लिट्०, सा० आ०; ज०—अँगरेजी, संस्कृत, बँगला, मैथिली; प्रका०—विद्यापति, सूरदास, भारतीय संस्कृति की प्रस्तावना आदि; प०—हिंदी-विभागाध्यक्ष, बी० एन० कालेज, पटना।

जनार्दन मिश्र, पंकज'—ज०—१९१२ नया गाँव, मुंगेर; शि०—बी० ए०, सा० आ०, सा० र०, सा० लं०, काव्य तीर्थ, न्यायाचार्य, नया गाँव, भागलपुर, पटना वि० वि०; सा०—हेड पंडित सी० ई० जेड मिशन हाई स्कूल, भागलपुर, हिंदी संस्कृताध्यापक विश्वभारती शांतिनिकेतन बंगाल, हि० सा० स० के केन्द्र व्यवस्था० भागलपुर, 'कर्मचारी' भागलपुर के संपादन-मंडल में; प्रका०—तुलसीदास (कविता-संग्रह), साहित्य सुषमा की सरल व्याख्या, मित्र-लाभ-दर्पण, संस्कृत-संग्रह-पयोधि, मनुस्मृति द्वितीयाध्याय (अनु०), सत्य हरिश्चन्द्र (संपा०), कलम क़साई (केवल २२ परिच्छेद छप सके) आह की दुनिया, हिंदी का व्यवाहारिक करण, संस्कृत शिशु - बोध; प०—विश्वभारती युनीवर्सिटी, शांतिनिकेतन, बंगाल।

जनार्दन मिश्र 'परमेश'—ज०—१८९१, सनैटा, संताल परगना; प्रका०—हमारा सर्वस्व, रसबिंदु, पद्मपुष्प, सती, जीवन-प्रभात, कालापहाड़ (अनु०), वीरवृत्तांत, घटकर्परकाव्य, हेमा, राष्ट्रीयगान, बरवै रामायण की टीका; प०—अध्यापक, कुरसेला, पुर्णिया।

जर्नादनराय—शि०—एम० ए०, सा० रत्न; सा०—हिंदी-विद्यापीठ उदयपुर और राजस्थान हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के प्रधान

मंत्री; मासिक 'बालहित' के संपादक; मेवाड़ में हिंदी-प्रेम जागरित करने के श्रेयपात्र; **प्रका०**—स्फुट कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, गद्य-काव्य इत्यादि; प०—हिंदी-अध्यक्ष, विद्याभवन, उदयपुर।

जनार्दन स्वरूप अग्रवाल—ज०—१६ जुलाई १९१७; शि०—बी० ए० ऑनर्स, एम० ए० प्रयाग वि० वि०, साहित्यरत्न, शास्त्री; **सा०**— स्थानीय हिंदी-परिषदों, सभाओं और समितियों का मंत्रित्व, स्थानीय काँग्रेस कमेटी की कार्य कारिणी के सात वर्ष से सद०, समाजवादी विचारधारा के पोषक; **प्रका०**—गद्य-रत्नाकर (संपा०पाठ्य-पुस्तक), हिंदी में निबंध-साहित्य; प०—चौक, शाहजहाँपुर।

जमनादास व्यास—ज०—१९०९; शि०—पंजाब, अलीगढ़, आगरा, नागपुर से एम० ए० (हिंदी), सा० रत्न, विज्ञानरत्न (कृषि), विद्याविनोद (संस्कृत); **सा०**—आचार्य सा० महाविद्यालय वर्धा, परीक्षामंत्री राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचारिणी सभा वर्धा, बिहार विद्यापीठ के प्रचारक, भूत० सहा० संपा० 'मातेश्वरी' और 'लोकमत'; **अप्र०**—हमारी अर्थनीति, स्वराज्य की ओर, काव्य में प्रकृतिवाद, जैन साहित्य का इतिहास; **वर्त०**—मराठी का अध्ययन और हिंदी में पी-एच० डी० करने में संलग्न; प०—प्रधानाध्यापक, गर्ल्स हिंदी हाई स्कूल, वर्धा।

जयकांत मिश्र—**सा०**—दैनिक 'आर्यावर्त', पटना के सहकारी और 'ज्योतिषी' के प्रधान संपादक; **प्रका०**—इत्सिंग की भारत-यात्रा; प्र०—सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर।

जयकिशोरनारायण सिंह—शि०—सा० आ०; **प्रका०**—स्फुट कविताएँ और कहानियाँ; **अप्र०**—'मेघदूत' का कुछ अनुवादित अंश; प०—रईस, मुजफ्फरपुर।

जयगोपाल कविराज—**प्रका०**—दयानंद-चरितम्, पति-पत्नी प्रेम—उपन्यास, सूरजकुमारी, पश्चिमी प्रभाव-ना०, संगीत चिकित्सा; वि०—'दयानंद-चरितम्' पर पंजाब सरकार ने पारितोषिक दिया।

जयचंद्र विद्यालंकार--इतिहासकार; **प्रका०**—भारतवर्ष में जातीय

शिक्षा, प्राचीन भारत में राष्ट्रीय अंकण, मांडलिक काव्य—सौराष्ट्र के इतिहास पर नया प्रकाश, भारतवर्ष का एक राष्ट्रीय इतिहास, प्राचीन भारतीय अनुश्रुति गम्य इतिहास, ऐतिहासिक पद्धति, भारतभूमि और उसके निवासी, भारतीय इतिहास की रूप-रेखा २ भाग, इतिहास-प्रवेश; प०—भारतीय इतिहास-परिषद्, बनारस; अथवा २६-११४ नवाबगंज, लंका, बनारस।

जयदेव गुप्त—ज०—१५ जून १९१० आगरा; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० रत्न, हरबर्ट कालेज कोटा, सनातनधर्म कालेज, कानपुर और आगरा विश्वविद्यालय; प्र०—१९३५; सा०—युक्तप्रांतीय हिंदी-पत्रकार सम्मेलन के प्रधान मंत्री और पिछले कई वर्षों से दैनिक 'प्रताप' के संपादकीय विभाग में काम कर रहे हैं; प्रका०—गंगोत्री-यात्रा; प०—आर्यसमाज-भवन, मेस्टनरोड, कानपुर।

जयदेवप्रसाद गुप्त—ज०—३ अक्तूबर १९०२; शि०—आगरा, लखनऊ वि० वि० से एम० ए० (अर्थशास्त्र), बी० काम०; सा०—संस्था० और मंत्री अखिल भारतीय अर्थशास्त्र परिषद, चँदौसी ना० प्र० सभा और आर्य कन्या पाठशाला, प्रधान आर्य-समाज चँदौसी, प्रतिनिधि आल एशियाटिक एजूकेशनल कान्फ्रेंस; प्रका०—अर्थशास्त्र २ भाग; व्यापार-विज्ञान, व्यापार-प्रणाली; प०—अध्यापक, एस० एम० कालेज, चँदौसी।

जयदेवशर्मा—ज०—१८९४; शि०—आगरा; प्र०—१९१७; प्रका०—अनुभूत-प्रयोग-रत्न माला; प०—अध्यक्ष मेडिकल हाल, द्वारा पं० सोमदेव शर्मा, वाइस प्रिंसिपल ललित हरि आयुर्वेदिक कालेज, पीलीभीत।

जयनाथ 'नलिन'—प्रका०—स्फुट कविताएँ और कहानियाँ; प०—अमृतसर।

जयनारायण कपूर—ज०—१८९९ संभल, मुरादाबाद; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; सा०—हिंदी-साहित्य पुस्तकालय की १९१७ में और हिंदी नाट्य-समिति की १९१९ में स्थापना; प्रका०—रुस्तम,

मनोहर धार्मिक कहानियाँ, तीन तिलंगे—अनु० उप०, देहली की डाँकनी, गदर की सुबह-शाम, गदर में देहली के अखबार, अफसरों की चिट्ठियाँ आदि अँगरेजी से अनु०; अप्र०—राज-विज्ञान, प्राचीन भारतीय शिक्षापद्धति, कर्म योगी श्रीकृष्ण का ऐतिहासिक व्यक्तित्व, ग्राम-पुस्तकालय-व्यवस्था; प०—वकील, मौरावाँ, उन्नाव।

जयनारायण झा 'विनीत'—ज०—१९०२ बैगनी-नवादा, दरभंगा; सा०—काँग्रेसी कार्यकर्ता; प्रका०—घननादवध, दूत श्रीकृष्ण, वीरविभूति, महिला-दर्पण, कुंज-माला; प०—समस्तीपुर, दरभंगा।

जयनारायण पांडेय 'बाचाल,' 'बाँकीपुरी'—ज०—१८१८; जा०—संस्कृत, फारसी, अँगरेजी; प्र०—मिस्टर टॉयफिस का टेलीफोन; अप्र०—कैदी की डायरी, पृथ्वी का नरक, पानपत्ता; प०—बसरिकापुर, बलिया।

जयनारायण वार्ष्णेय—ज०—१३ मार्च, १९१३; शि०—आगरा, प्रयाग; सा०—बालोत्साह पुस्तकालय, श्री तिलक लाइब्रेरी और औद्योगिक स्कूल के संस्थापकों में; प्रका०—रोजाना के काम की बातें, दो नगर, ज्ञानगजरा, पंचवटी या मारीचवध, आहार; अप्र०—बिजली के करिश्में और संघर्ष; वि०—अँगरेजी में भी लिखा करते हैं; प०—अलीगढ़।

जयनारायण शर्मा शाण्डिल्य—ज०—१४ अक्टूबर, १९०४; शि०—सा० रत्न; सा०—भूत० संपा० 'बाल सेवक', अध्यक्ष 'बाल-सभा'; प्रका०—स्फुट; प०—अनंत आश्रम, चँदिया, रीवाँ।

जयनारायण श्रीवास्तव—शि०—एम० ए०; प्रका०—महारानी लक्ष्मी बाई—दो भाग, धर्मराज, दानसिंह, गंगा जली, पुनर्विवाह; प०—आलइंडिया रेडियो, दिल्ली।

जयराम सिंह—ज०—जूलाई, १९०७, गाजीपुर; शि०—एम०, एस-सी सा० र० आगरा, काशी; सा०—राज हरपालसिंह हाईस्कूल जौनपुर में कृषि-अध्यापक १९३७; काशी विश्वविद्यालय में एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट में एकानमिस्ट और फार्म सुपरिंटेंडेंट, १९३९; प्रका०—कृषि-विज्ञान,

उद्यानशास्त्र ; प०—हार्टीकल्चर और फार्म सुपरिंटेंडेंट, बलवंत राजपूत कालेज, आगरा।

जयभगवान—शि०—बी. ए., एल-एल. बी. ; प्रका०—जैन-साहित्य और पुरातत्व संबंधी स्फुट लेख; प०—वकील, पानीपत।

जयेंद्र—ज०—१९१८; शि०—सा० रत्न, प्रयाग और हिंदी विद्यापीठ देवघर ; सा०—भूत० संपा० साप्ताहिक 'चिनगारी', गया; आसाम की मणिपुर रियासत और सिलहट, बंगाल में राष्ट्रभाषा-प्रचार किया ; प्रका०—स्फुट ; प०—कला-निकुंज, माडर, बरबथा, सिलहट, आसाम।

जवाहर लाल जैन—ज०—१९०९ ; शि०—जयपुर कालेज से एम० ए० (इति. और राज.) ; सा०—पोद्दार कालेज नवलगढ़ के भूत० उपआचार्य, और इतिहास राजनीति के प्रोफेसर, प्रबन्ध संपादक दैनिक 'लोकवाणी' तथा संपादक साप्ताहिक 'युगांतर'; प्रबंध-संचालक—युगांतर-प्रकाशन-मंदिर; प्रका०—फूलों की माला, ईश्वरीय न्याय (अनु०), रामविलास पोद्दार, जीवन-रेखा, जयपुर - अलबम, 'न्यू आर्डर इन जयपुर', सर्वोदय की दिशा में; अप्र०—तीन प्रश्न, सामाजिक करार (अनु०); वि०—सर्वोदय विचारधारा के प्रबल समर्थक; प०—मोतीसिंह भौमिये का रास्ता, जयपुर।

जवाहरलाल लोधा—ज०—१८९६ ; शि०—लखनऊ ; सा०—सम्पा० 'श्वेतांबर जैन'; प्रका०—स्फुट; प०—मोतीकटरा, आगरा।

जहूरबख्श—ज०—१८९९ ; शि०—कोविद; प्र०—१९१४ ; प्रका० — प्रकाशित-अप्रकाशित पुस्तकों की संख्या लगभग सौ और इतिहास, भूगोल, स्वास्थ्य, नागरिकता, गणित, शिक्षा-पद्धति आदि विषयों पर लिखे लेखों की संख्या लगभग एक हजार है ; वि—आपकी पुत्री कुमारी मुबारक भी कई बालोपयोगी पुस्तकें हिन्दी में लिख चुकी हैं ; प०—अध्यापक, सागर।

जानकीप्रसाद पुरोहित—ज०—१९१५ ; शि०—इन्दौर ; प्र०—मुसाफिर पत्र-उपन्यास १९३९ ; प्रका०—मुसाफिर, साथी, उन्माद,

चित्रा, दुविधा, अवनिका, देहाती देवता, अहिंसा की हिंसा और प्रसून-चतुर्दशी; प०—नवजीवन पुस्तक-माला, मल्हारगंज, इन्दौर।

जानकी वल्लभ शास्त्री—शि०—सा०आ०, वेदांताचार्य; प्रका०—काकली (संस्कृत कवि०), रूप और अरूप (कवि०), कानन और अपर्णा (कहा०), साहित्य-दर्शन (आलो० लेख); प०—भैगरा, बिहार।

जानकीशरण वर्मा—शि०—बी० ए०, बी० एल; सा०—प्रयाग-सेवा-समिति की मुखपत्रिका 'सेवा' के सम्पादक तथा 'जीवनसखा' के भूत० सम्पादक; प्रका०—बाल-चर, जन-सेवा, सदाचार और स्वास्थ्य के संबंध में स्फुट लेख; प० —गया, बिहार।

जितेंद्र कुमार—प्रका०—अंतर के गीत—कवि०; अप्र०—कई कविता संग्रह; प०—खगड़िया, मुंगेर।

जीतमल लूणिया—ज०—१८६५; सा०—हिंदी साहित्य-मंदिर, सस्ता साहित्य-मण्डल, सस्ता साहित्य-प्रेस के संस्था०, वाचनालय और रात्रि-पाठशाला के जन्मदाता, हिंदी साहित्य-कुल और जैन नवयुवक-मंडल के सभापति, सभापति अजमेर कांग्रेस कमेटी, म्यूनिसिपैलिटी, १९३०-३१ और १९४२ के आन्दोलनों में जेल गये; प्रका०—नागपुर की काँग्रेस, स्वतंत्रता की झनकार, नवयुवकों स्वाधीन बनों, गाँधी-चित्रावली; प०—ब्रह्मपुरी, अजमेर।

जी० पी० श्रीवास्तव—ज०—अप्रैल १८९१; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; सा०—१९१४ में 'इन्द्रभूषण' स्वर्णपदक और १९२२ में 'गल्पमाला' रजत-पदक प्राप्त, अनेक सा०सभाओं के सभापति; प्रका०—लम्बी दाढ़ी, मीठी हँसी, नोक-झोंक, मार मार कर हकीम, आँखों में धूल, लत-खोरी लाल, दुमदार आदमी, गंगा-जमुना, कम्बख्ती की मार; वर्त०—अब सरकारी नौकरी रेवेन्यू आफिसरी से रिटायर होकर वकालत करने लगे हैं; प०—गंगा आश्रम, गोंडा।

जीवछराज ठाकुर 'जीवन'—ज०—१९२६; प्र०—परमाणु बम; प्रका०—वीर जवाहरलाल

जीवनी; अप्र०—एशियाई राष्ट्रों की अँगड़ाई; प०—'हुँकार'-कार्यालय बाँकीपुर, पटना।

जी० बी० घाटगे 'विश्वप्रेमी'—ज०—१९०६ वर्धा; शि०—इंटर; सा०—'युग-दर्शन-माला' नामक लेखमाला; प्रका०—प्रकृति-भंजन अर्थात् बलिदान, प्रकृति की बलिवेदी पर, अनोखी दुनिया; प०—भोपाल।

जीवनलाल 'प्रेम'—ज०—१९१८; शि०—बी० ए०, डी० ए० वी० कालेज लाहौर से; प्र०—स्वतंत्रता; प्रका०—पतझड़, तारावलि (कवि०), गीतांजलि (अनु०), गुरुगोविन्दसिंह; अप्र०—रजनी गंधा, कोलाहल, राजपूत, इतिहास; वि०—भूत० आडिटर तथा अस्थायी सुपरवाइज़र, इंडियन बुक कम्पनी लाहौर; वर्त०—दैनिक स्वतंत्र भारत के संपादकीय विभाग में हैं; प०—२८, कटरा बिजन बेग, चौपटियाँ, लखनऊ।

जुगलकिशोर 'मुख्तार'—ज०—१८७७, सहारनपुर; सा०—जैन इतिहास और पुरातत्त्व के उद्धार के लिए प्रयत्नशील; हिंदी जैन गजट के संपा०—१९०७, 'जैन-हितैषी' के संपा० १९१९, वीर-सेवा-मंदिर की स्थापना; प्रका०—मेरी भावना, वीर-पुष्पांजलि, स्वामी समंतभद्र, जिन पूजाधिकार-मीमांसा, ग्रंथ-परीक्षा—चार भाग, उपासना-तत्त्व, विवाह का उद्देश्य, अनित्य-भावना, समाज-संगठन, जैन-ग्रंथ सूची, इत्यादि लगभग पच्चीस ग्रंथ; प०—वीर-सेवा-मंदिर, सरसाँवाँ, सहारनपुर।

जूनीप्रसाद शर्मा—ज०—२४ दिसंबर १९१८; शि०—बी० ए०; अप्र०—चंद्रिका—कहानियाँ; प०—कमलागंज, शिवपुरी, ग्वालियर।

जैनेन्द्रकुमार जैन—ज०—१९०५; शि०—जैनगुरुकुल ऋषि-ब्रह्मचर्याश्रम, हस्तिनापुर, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी; प्र०—१९२९; सा०—भूत० संपा० मासिक 'हंस' काशी; प्रका०—परख, त्यागपत्र, सुनीता, तपोभूमि, प्रस्तुत प्रश्न, वातायन, एक रात, दो चिड़ियाँ, फाँसी, स्पर्धा, राजकुमार का पर्यटन, पाजेब; प०—७ दरियागंज, दिल्ली।

जौहरीमल सर्राफ—प्रका०—विविह क्षेत्र-प्रकाश, जैन-जाति सुदशा-प्रवर्तक, मंगलादेवी, गृहस्थ-धर्म-चर्चासागर-समीक्षा, दान-विचार-समीक्षा, सूर्य-प्रकाश-समीक्षा, धर्म की उदारता; प०— दिल्ली।

ज्योतिप्रसाद जैन—ज०—१६१६, मेरठ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०; सा० वि०; सा०—भूत० संपा० 'मानसी'; १५ वर्षों से हिंदी-साहित्य, इतिहास और पुरातत्व सम्बंधी खोज; प्रका०—स्फुट; अप्र०—लोकभाषा हिंदी का उद्गम और विकास, नाक का मोती-उप०, स्वतंत्रता का उद्गम-स्रोत; प०—यूनियन मेडिकल स्टोर, कैसरबाग, लखनऊ अथवा ७५, ठठेरवाड़ा, मेरठ।

ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'—ज०—१८६५; सा०—भूत० संपा० 'मनोरमा', 'भारतेंदु', साप्ताहिक 'भारत', 'देशदूत' और 'सम्मेलन-पत्रिका'; हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के भूत० मंत्री; प्रका०—स्त्री-कवि-कौमुदी, नव-युग-काव्य-विमर्श, पटेल अभिनंदन-ग्रंथ; प०—'देशदूत'-संपादक, इंडियन प्रेस, प्रयाग।

...ज्योतींद्रप्रसाद झा 'पंकज—शि०—सा० लं०; प्रका०—एक शास्त्रीय ग्रंथ; अप्र०—दो काव्य-संग्रह; प०—लैखनी, संताल परगना, बिहार।

ज्वालाप्रसाद सिंह—ज०—१६०३; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०; प्र०—श्री मैथिली-शरण गुप्त—एक अध्ययन; सा०—चम्पारन जिला हि० सा० सम्मे० के प्रधान मंत्री, बिहार प्रांतीय हि० सा० सम्मे० की स्थायी समिति के सदस्य, व्यक्तिगत सत्याग्रह १६४० और १६४२ के विद्रोह में जेल-यात्रा, मिर्जापुर जि० काँ० क० के ी, उत्तर प्रदेशीय कांग्रेस के सद०; प्रका०—कवींद्र रवींद्र: एक समीक्षा; प०—उपसभापति चंपारन जिला बोर्ड, मोतिहारी।

ज्ञानचंद जैन—ज०—८ फरवरी, १६१६; शि०—बी० ए० लखनऊ वि० वि०, एल-एल० बी० आगरा वि० वि०; प्रका०—मनुष्य का मूल्य—कहानी, प्रेमचंद्र जी द्वारा संपा० 'हंस' १६३६ में; प्रका०—कहानी—कला (विनोदशंकर व्यास के साथ), मीरा की प्रेम-साधना—

संपा०—संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, यौवन की भूल—अनु०, स्त्री और पुरुष ; प०—कार्यवाह संपादक, 'नवजीवन', लखनऊ।

ज्ञानेंद्र 'पथिक'—शि०—प्रयाग कानपुर, ग्वालियर ; सा०—सह० संपा० दैनिक 'टेलीग्राफ' और 'सिटीज़ेन' (अँगरेजी); प्रका०—स्फुट ; प०—सह० संपा० 'प्रताप' दैनिक, कानपुर।

झखुरीरामचरण पहाड़ी—ज०—१९०२; सा०—अ० भा० गोशुभचिंतक-मंडल, गया के मंत्री ; पाक्षिक 'गोशुभचिंतक' के प्रकाशक; प्रका०—गोसंबंधी स्फुट रचनाएँ ; प०—मेखलोटगंज, गया।

टी० एन० रामचंद्र राव—शि०—राष्ट्रभाषा विशारद, हिंदी पंडित, सा०—दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा के कार्यकर्त्ता ; प०—४०३, अब्जी अरणा, बट्टार, तंजावूर, दक्षिण।

ठाकुरप्रसाद शर्मा,—१८९९ ; शि०—एम०ए०, एल-एल० बी०; प्रका०—कवितावली का सटीक संस्करण; अप्र०—निबंधों और कविताओं के संग्रह ; प०—एक्ज़ीक्यूटिव आफिसर, म्यूनिसिपल बोर्ड, बनारस।

ठाकुरेन्द्र साथी—ज०—१९२०; सा०—संयुक्त मंत्री हि० सा० सभा मुंगेर, सद० प्रगतिशील लेखक-संघ ; प्रका०—स्फुट कविताएँ ; प०—फरदा, मुंगेर।

डोमन साहु दिवाकर साहु 'समीर'—ज०—३० जून, १९४२; शि०—गोंडा, भागलपुर; प्र०—१९३९ ; सा०—संथाल जाति में ईसाई पादरियों के विरुद्ध आन्दोलन करके संथाल भाषा को देवनागरी लिपि में लिखे जाने का सफल प्रयत्न किया, पटना विश्वविद्यालय के बोर्ड आफ़ स्टडीज़ इन संथाली के सद०; राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेकर जेल गये; प्रका०—४ संथाली रीडरें, सेदाम गाते, संथाली में रामायण का अनुवाद ; अप्र०—संथाली-हिंदी-शिक्षक; प०—पार्वती कुटीर, वैद्यनाथ देवघर, संथाल परगना।

तपेशचंद त्रिवेदी—ज०—१९१३; सा०—भूत० सहकारी संपादक मासिक 'गंगा', और 'बीसवीं सदी', तथा साप्ताहिक 'हलधर'; प्रका०—

कालिंदी (कवि०); अप्र०—हेमंत (कहा०), पूर्णिमा, आलोक, निबंधावली ; प०—गोड्डा, तारापुर, भागलपुर।

तारकेश्वर प्रसाद—ज०—१३ नवंबर १९०९; सा०—'बीसवीं सदी' के संपा०, नवयुवक पुस्तकालय के आजन्म सद०, भारतेन्दु साहित्य-संघ के संस्थापक, जिला सा० सम्मेलन के सद०; प्रका०—गाँव की ओर; प०—अमल पट्टी, मोतिहारी, बिहार।

तारकेश्वर प्रसाद वर्मा—ज०—१८ जनवरी १९१३; सा०—स्थानीय हिंदी-प्रचार-सभा के सभापति, अखिल भारतीय रेडियो पटना से कहानियाँ और और रूपक प्रसारित करते हैं, पुस्तकभंडार-जयंती-स्मारक ग्रंथ में प्रामाणिक लेख, 'राशि' के संपा०; प्रका०— विहार-विभाकर, संसार के बालक, तथा अनेक बालोपयोगी पुस्तकें; वर्त०—हिंदी अध्यापक, जिला स्कूल, मुजफ्फरपुर।

तारणी प्रसाद मिश्र 'निरत'—शि०—भागलपुर; प्रका०—सती सुलक्षणा, सती सुलोचना; वि०—४० वर्षों तक हिंदी शिक्षण का कार्य किया; प०—सिहुड़ी, अमरपुर, भागलपुर।

ताराकुमारी बाजपेयी—ज०—२० नवम्बर, १९२२; शि०—सा० रत्न; अप्र०—देवयानी (ना०), काव्य में छायावाद; प०—ठि०पं० संकटा प्रसाद बाजपेयी, लखीमपुर, खीरी।

तारादेवी, कुँवरानी—सा०—प्रतिनिधि—शान्तिनिकेतन हिंदी साहित्य-मंदिर नागपुर; प्रका०—स्फुट; अप्र०—देवदासी ; प०—२८ कमलानगर, मोहननिवास, दिल्ली।

ताराशंकर पाठक—शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० रत्न इंदौर, आगरा, बनारस; सा०—मध्यभारत की हिंदी-साहित्य-समिति की कार्यकारिणी के उत्साही कार्यकर्त्ता, प्रचार और प्रेस-मंत्री; प्रान्तीय हिंदी साहित्य-सम्मेलन के सदस्य; प्रका०—हिंदी के सामाजिक उपन्यास, तुलसी-सम्मेलन; अप्र०—हिंदी नाट्य साहित्य; प०—११६ पारसी मोहल्ला, इंदौर।

तीर्थ प्रसाद त्रिपाठी—ज०—१० मई, १६१३; शि०—सा० रत्न; सा०—'द्विज-राज-परिषद' की संस्था० में सहयोग ; प्रका०—स्फुट; प०—मार्तण्ड हाई स्कूल, रीवाँ।

तुलसीदास शर्मा 'नवल'—ज०—१६०२, झाँसी; शि०—बी० ए०, एल-एल बी ; सा०—अनेक कवि सम्मेलनों के सभापति; संस्थापक आर्य-समाज ; अप्र०—दो काव्य-संग्रह; प०—वकील, ओरछा स्टेट, बुंदेलखंड।

तुलसी भाटिया 'सरल'—सा०—'आशा' (पाक्षिक) दिल्ली के भूत० संपा०, 'स्वयंसेवक' और 'अरुणोदय' लखनऊ के वर्त० संपा०; प्रका०—परिवर्तन, नीड़-विसर्जन-काव्य; प०-भावनाक्षितिज, रामनगर, आलमबाग, लखनऊ ।

तेजनारायण काक 'क्रांति'—ज०—१६१४ अमृतसर; शि०—ब० ए० प्रयाग विश्वविद्यालय; प्र०—१६३०; प्रका०—मदिरा (गद्यकाव्य); अप्र०—कसम-शर और धूपछाँह; प०—जोधपुर।

तेजनारायण लाल—ज०—२ फरवरी १६२०, निमैढ़ी; शि०—शास्त्री, बी०ए०, काशी; सा०—तीन वर्ष तक दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की ओर से हिंदी-प्रचार किया ; राजनीतिक आंदोलनों में जेलयात्रा ; प्रका०—युगनाद १६४६, सह० संपा०—विहार के अगस्त आंदोलन का इतिहास; अप्र० — कालिंदी, मशाल ; प०—१४, चौबे छात्रावास, शाहगंज, आगरा ।

तेजबहादुर, डाक्टर—शि०—इलाहाबाद वि० वि० और कलकत्ता ; प्रका०—हृदय के टुकड़े-कहानियाँ, निराश, वह विवाहिता थी और आधीरात–उपन्यास; वि०—लगभग १५० कहानियाँ लिखी हैं; प०—अध्यक्ष पशु-चिकित्सालय, एटा ।

त्रिलोकचंद्र 'चंद्र'—प्रका०—भक्तनरसी—दुर्गा आदि शांत रस-प्रधान काव्य; प०—सूर्यकुंड, मेरठ।

त्रिलोकी नारायण दीक्षित—ज०—१६२०; शि०—एम. ए., एल-एल. बी, पी-एच. डी., लखनऊ वि० वि०; प्र०—मीरा

१६४२; **प्रका०**—हिंदी साहित्य का इतिहास (डा० रामकुमार बर्मा के साथ); **वि०**—मलूकदास पर थीसिस लिखकर पी-एच. डी. की उपाधि लखनऊ विश्वविद्यालय से प्राप्त की है; **प०**—अध्यापक हिंदी विभाग, लखनऊ विश्व विद्यालय, लखनऊ।

त्रिलोचन शास्त्री—**ज०**—१६१६; **शि०**—काशी; **जा०**—उर्दू अँगरेजी, बँगला, गुजराती, मराठी, तामिल, बर्मी; **सा०**—'हंस' मासिक, ज्ञानमंडल द्वारा आयोजित शब्द कोश, और 'चित्ररेखा' मासिक का संपादन; १६४२ के राष्ट्रीय आंदोलन में कारावास दंड; **प्रका०**—धरती, गीतगंगा, प्रवाह, खंडहर, दंड, जीवित सपने (रेखाचित्र), मगध-पतन (नाट०) और काव्य भूमि (आलो०); **प०**—चिरानी पट्टी, हमीदपुर, सुल्तानपुर।

त्रिवेणी शर्मा, 'सुधाकर'—**प्रका०**—भारतीय राजनीति और विद्यार्थी; **प०**—मझियावाँ, खटाँगी, गया।

दंडमूड़ि वेंकटकृष्णराव—**ज०**—२० अप्रैल, १६११, मद्रास; **शि०**—सा० रत्न नैनी विद्यापीठ, साबरमती, प्रयाग; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—अध्यापक, गूटी हिंदी-प्रचार-सभा, अवंतपुर।

दयाचंद—**शि०**—सिद्धांत-शास्त्री; **प्रका०**—धर्म और साहित्य-संबंधी स्फुट लेख; **प०**—प्रधानाध्यापक, गणेश विद्यालय, सागर।

दयानिधि पाठक—**ज०**—१८६८; **शि०**—एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० रत्न प्रयाग, आगरा; **जा०**—संस्कृत, अँगरेजी; **अप्र०**—कुमार-कर्तव्य, वेणी-संहार नाटक, देवदास, हिंदू, मिसमेयो, **प०**—वकील, खानपुर, इटावा।

दयाशंकर दुबे—राजनीति और नागरिक-शास्त्र के लेखक; **ज०**—१८ जुलाई, १८६६; **शि०**—एम० ए०, एल-एल० बी०, होशंगाबाद, जबलपुर, नागपुर और प्रयाग; **सा०**—कई वर्ष तक परीक्षा, प्रबन्ध और अर्थ-मन्त्री हिंदी-साहित्य सम्मेलन प्रयाग; भारत-वर्षीय अर्थशास्त्र-परिषद् के मन्त्री

और सभापति १६२३ में; प्रका०—भारत में कृषिसुधार; विदेशी विनिमय, ब्रिटिश साम्राज्य-शासन (श्रीभगवानदास केलाजी के साथ), अर्थशास्त्र-शब्दावली (केलाजी के और श्री गजाधरप्रसाद के साथ), हिंदी में अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य (केलाजी के साथ), भारतके द्वादश तीर्थ, नर्मदा-रहस्य, संपत्ति का उपयोग, धनकी उत्पत्ति, सरल अर्थशास्त्र (केलाजी के साथ), ग्राम्य अर्थशास्त्र, भारतका आर्थिक भूगोल, अर्थशास्त्र की रूपरेखा, सरल राजस्व, गंगा-रहस्य, संध्या-रहस्य; अँगरेजी ग्रन्थ-'दि वे टु एग्रीकल्चरल प्राग्रेस', 'एलीमेंट्री स्टेटिस्टिक्स' (श्री शंकरलाल अग्रवाल के साथ), 'सिंपल् डाइग्राम्स (अग्रवाल जी के साथ); प्रि०वि० अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र; प०—दुबे-निवास, ८७३ दारागंज, प्रयाग।

दयाशंकर नाग—ज०—५ अक्टूबर १६१८; शि०—एम. ए०, बी० काम, कानपुर; सा०—संपा०—'अर्थ-संदेश' त्रैमासिक, हिन्दी में रेडियो से ब्राडकास्ट; प्रका०—भारत और पाकिस्तान का आर्थिक सम्बन्ध; प०—अर्थशास्त्र अध्यापक जी० एस० कामर्स कालेज, जबलपुर।

दरबारीलाल जैन सत्यभक्त—ज०—१८६६, शाहपुर, सागर शि०—साहित्य रत्न प्रयाग, कलकत्ता, बिहार; सा०—हुकुमचन्द महाविद्यालय इन्दौर और महावीर विद्यालय बम्बई में अध्यापक रहे; सत्यसमाज और कुल-आश्रम वर्धा की स्थापना; भूत० सम्पा०,—'परिवार-बन्धु', 'जैन जगत' 'जैन-प्रकाश', तथा 'सत्य-संदेश'; प्रका०—धर्ममीमांसा, जैनधर्म-मीमांसा, न्यायप्रदीप, जैन-धर्म और विधवा-विवाह, भारतोद्धार नाटक, जैनधर्म मीमांसा दूसरा और तीसरा भाग, कृष्णगीता, क्षत्रियरत्न और धर्मरहस्य (अप्रकाशित); प०—७।३३ दरियागंज, दिल्ली।

दशरथ—ज०—१६१५ गढ़ी-हाथरस, एटा; शि०—हाईस्कूल कासगंज में पढ़कर, पश्चात बी० ए०, एम० ए० आदि स्वतंत्र पढ़कर, विद्यास्नातक गुरुकुल बदायूँ;

सा०—अध्यापक गुरुकुल बदायूँ, तीन वर्ष तक साप्ता० 'नवीन-भारत' के संपा०, १९४३ से अध्यापक, 'अध्यात्म-परिषद्' उरई के संस्थापकों में, स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री, केलिफोर्निया की मनोवैज्ञानिक संस्था (रोजीक्रनशियन आर्डर) के सदस्य; प्रका०—स्फुट; प० — अध्यक्ष हिन्दी-संस्कृत विभाग, डी० ए० वी० कालेज, उरई।

दाऊदत्त उपाध्याय—ज०—१९०६; प्रका०—अंकुर (कवि०); प०—प्रचार-मंत्री, प्रांतीय हिंदी-सम्मेलन, बंबई।

दामोदर, आचार्य, गोस्वामी—जा०—संस्कृत, बँगला, गुजराती; प्रका०—श्री गौरप्रेमामृत, श्रीचैतन्यचरणामृत, तत्त्व-संदर्भ, भगवत्-संदर्भ ; अप्र०—सर्व-संवादिनी-अनुवाद ; वि०—आपके संरक्षण में भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र के प्रिय मित्र श्रीगोस्वामी राधाचरणजी का पुस्तकालय है ; प०—वृंदावन।

दामोदर 'युगुल जोड़ी'—ज०—१९१० ; शि०—सा० रत्न; प्रका०—रघुचरित, पद्य और प्रियतम की वीणा ; प०—आलमगंज, दिल्दार नगर, गाज़ीपुर।

दिनेशचंद शास्त्री—ज०—८ फरवरी ११०८ ; शि०—एम० ए०, आगरा वि० वि०, संस्कृत-शास्त्री गुरुकुल हरिद्वार ; प्र०—वैदिक संध्या का अनुवाद ; सा०—मंत्री, हिंदी-प्रचारक-संघ बरेली, १९३५-३० ; प्रका०—जलद ; अप्र०—त्रिवेणी, भारत-भव्यता ; प०—लेक्चरर डी० ए० वी० कालेज, रामगंज, अजमेर।

दिनेश दत्त झा—शि०—बी० ए० ; सा०—दैनिक 'आज' काशी के भूत० संयुक्त और दैनिक 'आर्यावर्त', पटना के वर्तमान प्रधान संपादक ; अप्र०—स्फुट लेखों के संग्रह; प०—'आर्यावर्त'-कार्यालय, पटना।

दिनेशनंदिनी चौरड़िया—ज०—१९१८ ; शि०—बी० ए०, मारिस कालेज, नागपुर ; प्रका०—शबनम, मौक्तिक माल, शारदीय ; अप्र०—दो-तीन गद्य-काव्य और कहानी-संग्रह ; प्रि० वि०—गद्य-काव्य और कहानी ; वि०—प्रथम रचना पर हिं० सा० सम्मे० के

मद्रास-अधिवेशन में सेकसरिया पुरस्कार दिया गया ; प०—ठि० प्रो० श्यामसुन्दर चोरडिया एम० ए०, मारिस कालेज, नागपुर।

दिनेशनारायण उपाध्याय—स्वर्गीय श्री 'प्रेमघन' जी के पौत्र ; ज०—१६१७; शि०—एम० ए० लखनऊ वि० वि०, सा०र०; प्रका०—संपा० हमारी नाट्य परम्परा ; अप्र०—'भारतेन्दु युग में प्रेमघन का स्थान' पर खोज कर रहे हैं ; प० — शीतलसदन, मसकनवाँ, गोंडा।

दिवाकर—ज०—१६२३ मुंगेर; शि०—साहित्याचार्य मुजफ्फरपुर ; प्रका०—लगभग २०० लेख ; अप्र०— मेघदूत (अनु०), किंकणी; प०—विश्वनाथ बंधु आयुर्वेद-भवम, फुलवरिया, बरौनी, मुंगेर।

दिवाकरप्रसाद विद्यार्थी—ज०—१६११ ; शि०—एम० ए० (अँगरेजी); अप्र०—स्फुट कविताएँ, कहानियाँ और निबंध ; प०—अँगरेजी अध्यापक, पटना कालेज, पटना।

दीनदयाल 'दिनेश'—ज०—जनवरी १६१४ ; जा०—उर्दू, फारसी, गुजराती ; लेख—१६३०; सा०—'राजपूताना क्रानिकल', 'चलचित्र', परिवर्तन', 'कैलाश', 'नवज्योति' और 'विजय' आदि के संपादकीय विभागों में काम किया; प्रका०–उस ओर (कहानी-संग्रह); प०—क्लर्क, कृषि औद्योगिक डी० ए० बी० कालेज, अजमेर।

दीनदयालु—ज०—१६०० ; शि०—बी० ए०, सिमावरी झाँसी; सा०—भूत० संपा० 'राष्ट्र-संदेश', 'सत्युग' और 'व्यावहारिक वेदान्त; सहा० मंत्री हि०सा०सम्मे०१६२३; संस्था०—राम - प्रेस, प्रका०—गीता-भाष्य, श्री रामतीर्थ ग्रंथावली (अनु०), गुड़िया का घर ; प०—रामतीर्थ-प्रतिष्ठान, गणेशगंज, लखनऊ।

दीनदयालु गुप्त—'अष्टछाप' के अधिकारी विद्वान; ज०—१६०४; शि०—प्रारंभिक अलीगढ़, इंटर आगरा, बी० ए०, एम० ए०, डी०लिट्० प्रयाग वि० वि०, एल-एल० बी०, लखनऊ वि० वि० ; सा०—२ वर्ष कानपुर क्राइस्ट चर्च कालेज में, १६३० से लखनऊ वि० वि० में ; लखनऊ विश्व-

विद्यालय के तत्त्वावधान में प्रकाशित, विविध विषयक अनुसंधान-पूर्ण लेखों से युक्त त्रैमासिक 'ज्ञानशिखा' के संपादकों में ; प्रका०—अष्ट छाप और वल्लभ-सम्प्रदाय: एक अध्ययन; अप्र०—परमानंद-सुधा, सूर-संग्रह और भक्तमाल आदि संपादित ग्रंथ; वि०–'अष्टछाप: एक अध्य-यन' पर प्रयाग विश्वविद्या लय से डी० लिट्० की उपाधि मिली और हिंदी-जगत का सबसे बड़ा २१००) का डालमिया-पुरस्कार मिला; अपने निर्देशन-निरीक्षण में 'व्रजभाषा-सूर-कोश' तैयार करा रहे हैं ; पाँच थीसिसें डाक्टरेट के लिए आपके निरीक्षण में स्वीकृत हो चुकी हैं और १२ विद्यार्थियों से अनुसंधान कार्य करा रहे हैं ; प०—यूनिवर्सिटी प्रोफेसर और अध्यक्ष हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

दीनबंधु त्रिवेदी—ज०–१९१३ अमरोहा, मुरादाबाद ; शि०—एम० ए० कानपुर ; सा०—हि० सा० सम्मे० की स्थायी समिति, प्रचार-समिति, संस्कृत-पाली वर्ग के सद० भगवद्गीता-बाजोरिया पुरस्कार के विजेता, कविसम्मेलनों के आयोजक, आदर्श व्यायामशाला कानपुर के भूत० सभापति, १९४१ में हि० प्र० समिति कानपुर के संस्थापक; प्रका०—स्फुट ; प०—अध्यापक गुरुनारायण खत्री इंटर कालेज, कानपुर ।

दीनानाथ व्यास — ज०—१ जुलाई १९०९, उज्जैन ; शि०—साहित्यरत्न और काव्यालंकार; प्र०—१९२९ ; सा०—प्रधान संपा० 'सिनेमा--सिरीज' १९३६-३७ ; संपा०–साप्ताहिक 'स्वतंत्र भारत'; प्रका०—गल्प विज्ञान, प्रतिन्यास-लेखन, कामविज्ञान, टालस्टाय और गाँधी, हृदय का भार-कवि०, अरमानों की चिता-कवि०, जीवन की एक झलक - कवि०, धर्माचार्य, १९४२ का महान विप्लव, भारतीय विधान-परिषद, सरदार वल्लभ भाई पटेल; अप्र०—सपने के दीप, तू और मैं; वर्त०—संपा० 'स्वतंत्र भारत' साप्ताहिक; प०–कवि-कुटीर, नदी दरवाजा, उज्जैन ।

दीपनारायण मणि त्रिपाठी, ज०—१९१०; शि०—एम. ए., बी. टी., सा० रत्न; सा०—कुशी

नगर के साहित्य-विद्यालय के संचालक; स्थानीय हिं० सा० सम्मे० के परीक्षा-केन्द्र के व्यवस्थापक; गोरखपुर-जन-पद सम्मे० १६४४-४५ और देवरिया नागरी-प्रचारिणी सभा के मंत्री ; प्रका०—स्फुट; प०—अध्यापक, मारवाड़ी हाईस्कूल, देवरिया।

दुर्गादत्त पांडेय 'विहंगम,' 'बेढबानंद'—ज०—८ अक्टूबर, १८६४ कोठा, नैनीताल; सा०—भूत० संपा० 'शक्ति' अलमोड़ा (पाँच वर्ष तक), 'शंकर' मुरादाबाद तथा साप्ताहिक और दैनिक 'प्रताप', कानपुर; प्रका०—राम नाटक, चंद्राननी, नक्षत्रवती, सावित्री, देवयानी आदि नाटक और कांड—गीतांजलि ; प०—सहकारी संपादक, 'प्रताप', कानपुर।

दुर्गानारायण 'वीरत्रयईश'—ज०—३ फरवरी १६०८ केवलारी; शि०—साहित्यवाचस्पति, भारती-भूषण-केवलारी, दमोह, नागपुर, दिल्ली; प्र०—१६२४, 'मनोरमा' में प्रकाशित ; सा०—शान्ति-साहित्य-सदन, हि० प्रचार समिति, कुमार-सभा, व्याख्यान-समिति, और पुस्तकालयों के संस्था०, शिक्षा-संस्था समिति के अध्यक्ष, हस्तलिखित दैनिक 'प्रभात', 'प्रभात-संदेश', 'शिक्षा-सुधा', के संपा०; प्रका०—धार्मिक निबन्ध, पूर्णिमा, तारिका, तूणीर, मंगल-प्रभात ; अप्र०—स्वतंत्र किरण, करुण-कंटक ; वर्त०—'परिचय-पारिजात' कानपुर का संचा०, 'मुंशी काशीप्रसाद स्मृति-पुरस्कार' के संयो० ; प०—शारदा-सदन, केवलारी, पथरिया, सागर।

दुर्गाप्रसाद अग्रवाल 'अनिरुद्ध'—ज०—१६११ ; शि०—एम, ए. सा० रत्न, ग्वालियर और कानपुर; प्र०—१६३२; प्रका०—वीणापाणि(कवि०); अप्र०—मेघदूत (अनु०); प०—झाँसी।

दुर्गाप्रसाद सिंह—प्रका०—फरार की डायरी; एक था राजा आदि ; प०—पब्लिसिटी आफिसर, आरा।

दुर्गाशंकर दुर्गावत—ज०—१६१७; सा०—मेवाड़ में हिंदी-प्रचार-प्रसार; प्रका०—राणासाँगा, लोकतंत्र की वैदिक धारणा; प०—ब्रह्मपुरी, उदयपुर, मेवाड़।

दुर्गाशरण पांडेय—ज०—१९००, बदायूँ ; शि०—सा० रत्न० प्रयाग, काशी; प्रका०—रघुवंश की टीका, संस्कृत-रीडर दूसरा भाग, लिंगानुशासन, अष्टाध्यायी, सरलकारकी ; प्र०—गवर्नमेंट इंटर कालेज, मुरादाबाद।

दुलारेलाल भार्गव—देवपुरस्कार के सर्वप्रथम विजेता; ज०—१९०१ ; सा०—भूत० संपा० मासिक 'माधुरी', 'सुधा' और 'बालविनोद' ; गंगापुस्तकमाला और गंगाफाइन-आर्ट प्रेस के संस्थापक ; प्रका०—दुलारे-दोहावली—व्रजभाषा में दोहे; अप्र०—एक गीत-संग्रह ; वि०—आपकी धर्मपत्नी सुश्री सावित्री, एम० ए० सुंदर रचना करती हैं; प०—कवि-कुटीर, लाटूश रोड, लखनऊ।

दूधनाथ सिंह—प्रका०—कृषि-विज्ञान पर अँगरेजी और हिंदी में स्फुट लेख, हिन्दुस्तान की प्रमुख फसलें; प०—हेडमास्टर गवर्नमेंट ऐग्रीकल्चर स्कूल, बुलंदशहर।

देवकराम 'सुमन'—ज०—१९१७ ; प्रका०—चाँद, बटोही; प०—कंडेरा, बागपत, मेरठ।

देवकीनंदन बंसल—ज०—१९१९ ; सा०—मधुर-मंदिर-प्रकाशन के संचालक ; प्रका०—प्रेम और सौंदर्य और फिल्म-संसार ; प०—मधुर-मंदिर, हाथरस।

देवकृष्ण व्यास—ज०—२२ फरवरी १९२८ ; शि०—बी० काम, विशारद, रतलाम ब्यावर ; सा०—संपा० 'लोकशासन', साप्ताहिक, 'भारतीय संस्कृति-सदन' के मंत्री, म० भा० शिक्षक-संघ की कार्य-कारिणी के सदस्य; प्रका०—स्फुट; प०—अध्यापक, थावरिया बाजार, रतलाम।

देवदत्त शास्त्री—ज०-१९१३; जा०—अँगरेजी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, मराठी और गुजराती ; सा०—टाउन-एरिया-चेयरमैन, प्रधान शहर-फार्वर्ड-ब्लाक, मंत्री सनातन धर्म-सभा ; प्रका०—कौटलीय अर्थशास्त्र, कौमुदी-महोत्सव, उत्तर-रामचरित, तपस्वी भीष्म, चंद्रशेखर आजाद, मेरे जीवन के संघर्ष (संस्मरण), मतावरों का राजधर्म, पढ़ो राजा बेटा आदि २६ पुस्तकें ; वर्त०—मासिक 'जननी' और 'अभ्युदय' साप्ताहिक

प्रयाग के संपा० ; प०—'जननी'-कार्यालय, प्रयाग ।

देवनाथ उपाध्याय—ज०—१९१६ ; शि०—एम०ए० (हिंदी), बी० एस-सी०, सा० र० ; सा०—भोजपुरी-साहित्य की अभिवृद्धि, शिक्षा-संस्थाओं के जन्मदाता ; राष्ट्रीय आंदोलनों में ३ बार जेल यात्रा ; प्रका०—बलिया में क्रांति और दमन, आकाश की झाँकी, ग्रामोपयोगी शिक्षा २ भाग, चौथी रीडर, मनोहर कहानियाँ ; प०—प्रिंसिपल, दयानंद महाविद्यालय, बिल्थरा रोड, बलिया ।

देवनाथ पांडेय 'रसाल'—ज०—२६ जनवरी १९२३ ; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी० ; सा०—क्वीन्स कालेज की पत्रिका 'उत्कर्ष' के संपा०, सद० काशी वि० वि० हिंदी परिषद और वि० वि० के विद्यार्थियों के प्रतिनिधि ; प्रका०—दीपिका (कवि० संग्रह) ; प०—वकील, सारनाथ, बनारस ।

देवनारायण कुँवर 'किसलय'—ज०—२४ मई, १९१९, प्रयाग ; शि०—साहित्यालङ्कार में सर्वप्रथम होने के उपलक्ष में स्वर्णपदक प्राप्त ; सा०—साप्ताहिक 'राष्ट्रसंदेश' के संयुक्त संपा०, १९३९ ; प्रका०—आधुनिक हिंदी-कविता, पदध्वनि और प्रत्याशा ; प०—पूर्णिया, बिहार ।

देवनारायणसिंह—शि०—एम० ए०, एम० एड०, सा० र० ; सा०—'बिहार-उड़ीसा-टीचर्स जर्नल' के कई वर्ष तक संपा० रहे, पटना वि० वि० के हिन्दी-बोर्ड के ६ वर्षों तक सद० ; प्रका०—हिन्दी शिक्षण-पद्धति ; प०—हिन्दी-विभाग, जी०बी०बी० कालेज, मुजफ्फरपुर ।

देवराज उपाध्याय—शि०—एम० ए० ; प्रका०—साहित्य की रूपरेखा ; अप्र०—दो लेख-संग्रह ; प०—हिंदी - अध्यापक , जसवंत-कालेज, जोधपुर ।

देवर्षिसनाढ्य—ज०—१९१९ ; शि०—एम० ए०, शास्त्री, सा० रत्न ; सा०—'सुमन' मासिक के भूत० संपा० ; स्थानीय-काँग्रेस समिति के मंत्री ; प्रका०—किसान-पत्नी, सत्यवती, विलासिनी ; प०—अध्यक्ष संस्कृत-विभाग, राजकीय विद्यालय, शाहजहाँपुर ।

देवव्रत शास्त्री—ज०—१९०२ ;

'प्रताप', कानपुर के भूत० सहकारी और 'नवशक्ति' तथा 'राष्ट्रवाणी' के प्रधान संपादक, बिहार में पत्र-संचालन-कला के प्रचारक; प्रका०—गणेशशंकर विद्यार्थी और मुस्तफा कमालपाशा ; अप्र०—स्फुट लेख-संग्रह; प०—साप्ताहिक 'नवशक्ति'-कार्यालय, पटना।

देवीदत्त शुक्ल—सा०—'सरस्वती' के भूत० यशस्वी संपादक ; उनकी संरक्षता में 'चंडी' नामक शाक्त धर्म की मासिक पत्रिका ६ वर्षों से और 'साधनमाला' नामक पुस्तकमाला ३ वर्षों से प्रकाशित हो रही है ; प्र०—१६२०; उसी समय से 'सरस्वती' के प्रधान संपादक; प्रका०—कुछ खरी-खोटी (निबंध-संग्रह), विचित्रदेश में (कई भाग), बाल-द्विवेदी जैसी बालोपयोगी पुस्तकों के अतिरिक्त अनेक ग्रंथ; संपा०—द्विवेदीकाव्य-माला, भट्ट निबंधावली—दोभाग; वि०—आजकलअपनी आत्मकथा लिख रहे हैं जिससे हिंदी-साहित्य के पिछले तीस वर्षों की गति-विधि की बहुत-कुछ जानकारी हो सकेगी; प०—'चंडी'-कार्यालय, कटरा, इलाहाबाद।

देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'— ज०—२०जूलाई १६११; सा०—भूत० संपा० 'स्काउट मित्र', 'नव राजस्थान','नव भारत', महावीर', 'माया', 'बिजली' और 'बालसखा'; प्रका०—मंजरी (दम्पति कवि का सम्मिलित प्रयास), महारानी दुर्गावती, मीठी तानें, बिजली, झिलमिल तारे, अन्तर्ज्वाला, सन्नाटा, उलट फेर, आवर्तन, ज्वार भाटा, विसर्जन, रैन-बसेरा, आँख-मिचौनी, रंग-महल, दीपदान, प्यासी आँखें, भाग्यहीनों की बस्ती, अपना-पराया, अनुष्ठान और प्रवाह, दुनिया के तानाशाह, ग्राम-समस्याएँ और आहुतियाँ ; वर्त०—संपा०—'मंजरी'; वि०—आपका खण्डकाव्य महारानी दुर्गावती मध्यप्रांतीय हि० सा० स० और बरार लिटरेरी एकेडमी नागपुर से पुरस्कृत है, आपकी पत्नी भी कविता करती हैं और पुत्र ने कई बालोपयोगी पुस्तकें लिखी हैं ; प०—संपादक 'मंजरी', इंडियन प्रेस, इलाहाबाद।

देवीदयालदुबे—ज०—१६०७; सा०—सभापति म्यूनिसिपैलबोर्ड,

संपादक 'जनमत', इटावा; प्रका०—जागृत स्वप्न, गाँधी-युग का अंत, दक्षिणी-पूर्वी एशिया में नेता जी; प०—इटावा।

देवीदयाल शुक्ल 'प्रणयेश'—ज०—१६०८; जा०—बँगला और संस्कृत; प्र०—१६२७; प्रका०—मुक्तसंगीत, निशीथिनी, कालिंदी, विजयाविहार; अप्र०—स्वामी शंकराचार्य—प्रबंधकाव्य; प०—ठि० प्रकाशचंद रामदयाल, चौक, कानपुर।

देवीदास शर्मा 'निर्भय'—ज०—१६२५; सा०—संपादक मासिक 'अतीत' और 'शारदा' तथा साप्ता० 'दिल्लगी'; प्रका०—अखंड हिंदोस्तान, नोआखाली की दीवाली, मीना बाजार, सिंहगढ़, शिवापत्र, कारागार, गुरु गोविन्दसिंह (जब्त), उरोज; प०—सहकारी संपादक, दैनिक 'नागरिक', हाथरस।

देवीदीनत्रिवेदी—ज०—१६१० गोरखपुर; शि०—एम० ए०, सा० रत्न प्रयाग; सा०—भूत० संपा०—मासिक 'कन्यकुब्ज-हितकारी', कानपुर, १६३१-३२; प्रका०—कांट-शिक्षण-शास्त्र (अनु), बैसवाड़ी भाषा का इतिहास, आधुनिक रूस; वि०—आपकी पत्नी सौ० राजराजेश्वरी त्रिवेदी 'नलिनी' ख्यातिप्राप्त कवयित्री हैं; प०—डिप्टी इंस्पेक्टर, प्रतापगढ़।

देवीप्रसाद गुप्त 'कुसुमाकर' (हिंदी में), 'गुल-जार' (उर्दू में); ज०—१८६३; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी; प्रका०—इतिहास-दर्पण, संयुक्तराष्ट्र की शासन-प्रणाली, उपाधि की व्याधि, कबीर और होली, बनावटी गवाह इत्यादि लगभग एक दर्जन पुस्तकें; प०—वकील, सोहागपुर।

देवीरत्न अवस्थी—शि०—सा० रत्न; अप्र०—देवार्चन (महा०), और सर्वमेध (महा०); प०—ठि० हिंदी साहित्य-परिषद, लालगंज, राय बरेली।

देवीलाल सामर—ज०—१७ जूलाई, १६१२; शि०—काशी और आगरा विश्वविद्यालय; प्र०—१६३०; सा०—उदयपुर के विद्याभवन के आजीवन सदस्य; इन्दौर, काशी, उदयपुर आदि स्थानों में अभिनय कर चुके हैं; अप्र०— कविता-कहानियों के

संग्रह; प०—अध्यापक, विद्याभवन, उदयपुर।

दोनेपूडि राजाराव—ज०—१५ अक्टूबर १६२४; शि०—साहित्यरत्न; सा०—गाँवों में हिंदी-प्रचार, १६४७ से अध्यापक, संपादक 'शिक्षक' जो आंध्रदेश का अकेला हिंदी मासिक पत्र है; प्रका०—स्फुट लेख; वि०—तेलेगु में भी लिखते हैं; प०—'शिक्षक' कार्यालय, विजयवाड़ा २, आंध्रप्रांत।

देवीशरण त्रिपाठी—ज०—१६०४; प्रका०—लगभग दो दर्जन शिक्षा ग्रंथ; अप्र०—साबुन के सरल प्रयोग, विद्वत-वाटिका; प०—प्रधान अध्यापक, जूनियर हाई स्कूल, गोरखपुर।

देवेंद्रकुमार जैन 'दिवाकर'—ज०—३१ जनवरी, १६१४, उदयपुर; शि०—न्यायतीर्थ, शास्त्री, सा० र०; सा०—भूत० प्रधानाध्यापक, सुधाजैन विद्यालय, मारवाड़; प्रका०—महिला-महत्त्व; प०—हिंदी अध्यापक, काल्विन इँगलिश मिडिलस्कूल, कुशलगढ़, राजपूताना।

देवेंद्र नाथ शर्मा—ज०—१९१८; शि०—एम० ए० (हिंदी और संस्कृत) पटना वि० वि०; सा०—सभापति पटना जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन; प्रका०—साहित्यिक निबंधावली, अलंकार-मुक्तावली, पारिजात-मंजरी; वर्त०—मम्मट के काव्य-प्रकाश और आनंदवर्धन के ध्वन्यालोक पर भाष्य लिख रहे हैं; प०—पटना कालेज, पटना।

देवेंद्रसिंह—ज०—१९०३; शिक्षा—अँगरेजी में एम० ए० और आई० सी० एस०; सा०—लीडर के संपादकीय विभाग में कई साल काम किया; अनेक साहित्य-सेवी संस्थाओं से घनिष्ठ संबंध है; कई पत्रों का संपादन कर चुके हैं; अब 'कायस्थ-समाचार' के संपादक; प०—अध्यापक, कायस्थ पाठशाला, प्रयाग।

दौलतराम जुयाल—ज०—१६०६; सा०—काशी नागरी-प्रचारिणी सभा में प्राचीन हिंदी-पुस्तकों की खोज में ठोस कार्य, १६३५-४६ तक चार त्रैमासिक विवरण पत्रिकाएँ तैयार कीं जिनमें अनेक अज्ञात कवि और लेखकों के सम्बन्ध में नवीन जानकारी

उपलब्ध हो सकती है; प्रका०—स्फुट सम्पादकीय लेख; प०—अमेठी भवन, ऐशबाग रोड, भदेवाँ, लखनऊ।

द्वारिका प्रसाद—ज०—मार्च १६१८; शि०—एम० ए०; प्रका०—परियों की कहानियाँ, भटका साथी, स्वयंसेवक—उप०, आदमी-नाटक; अप्र०—सुनील, भूल के पुतले, चुंबन-विज्ञान और दो-तीन कहानी-संग्रह; प०—लोहरदगा, बिहार।

द्वारिकाप्रसाद गुप्त—ज०—३१ अगस्त १६०६; शि०—हाई स्कूल तक; प्र०—१९२४; सा०—साप्ताहिक 'गृहस्थ' के भूतपूर्व संपादक; अनेक साहित्यिक संस्थाओं और सम्मेलनों के भूतपूर्व मंत्री; प्रका०—मगध का महत्त्व; दयानंद सरस्वती की जीवनी, स्वामी श्रद्धानंद, पंचरत्न, पुस्तकालय का इतिहास, बिहार के हिंदी-सेवक, गया के लेखक और कवि आदि तीस ग्रंथ; प०—लहेरी टोला, गया।

द्वारिकाप्रसाद तिवारी 'विप्र',—ज०—६ जुलाई १६०८; शि०—मैट्रिक, काव्यभूषण; प्र०—शिव-स्तुति, सा०—भारतेन्दु-साहित्य-समिति के प्रधान मंत्री, मध्यप्रांत विदर्भ की हि०सा० सभा की स्थायी समिति के सदस्य, नागपुर से छत्तीसगढ़ी भाषा में गीतों का ब्राडकास्ट; प्रका०—सुराजगीत, और गाँधीगीत; प०—असिस्टेंट मैनेजर सहकारी बैंक, जूना, बिलासपुर।

द्वारिका प्रसाद मिश्र,—ज०—१९०१; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; सा०—मध्यप्रांत में काँग्रेसी एम० एल० ए० और सचिव; प्रांतीय हिं० सा० सम्मेलन, सागर अधिवेशन के सभापति १६३२; 'लोकमत' के जन्मदाता और मासिक 'श्री शारदा', साप्ता० 'सारथी' के भूत० संपा०; राष्ट्रीय आंदोलनों में उत्साह से भाग लिया; कई बार जेल गये; प्रका०—हिंदुओं का स्वातंत्र्य-प्रेम, कृष्णायन (भगवान् कृष्ण का सप्रमाण गवेषणात्मक चरित, अवधी भाषा-कविता में); प०—'लोकमत'-कार्यालय, जबलपुर।

धनंजय भट्ट 'सरल'—ज०—

२६ दिसम्बर १६०६ ; सा०—आप स्वर्गीय बालकृष्ण भट्ट के पौत्र हैं, उनके ग्रंथों के प्रकाशन में लगे हैं ; प्रका०—संपा० भट्ट-निबंधावली, दमयंती-स्वयंबर, वेणु-संहार, भट्ट-निबंधमाला, भट्ट-नाटकावली; प०—अहियापुर, प्रयाग ।

धनराजप्रसाद जोशी 'हिमकर'—ज०-१६१२; प्रका०—तकली-गान ; अप्र०—कविताओं के दो संग्रह ; प०—सहायक शिक्षक, हिंदी प्राथमिक शाला, सोहागपुर ।

धनीराम बक्सी — शि०—सा० भू० ; सा०—स्थानीय हिंदी सभा के संस्थापक; प्रका०—तूफान, मार्गोपदेशिका चित्र, हिंदीवर्णबोध, लाल बुझक्कड़, भजनमाला, बाल-हितोपदेश, बालरामायण, नगपुरिया झूमर, शिशुशिक्षा तथा सरल पत्रबोध आदि लगभग दो दर्जन ग्रन्थ ; प०—बरकंदाज टोली, चाईबासा, सिंहभूमि (बिहार) ।

धन्यकुमार जैन–सा०–बँगला के श्रेष्ठ उपन्यासकार शरत और कवींद्र रवींद्र की अधिकांश पुस्तकों का आपने अनुवाद किया है;भूत० संपा०'परवार-बंधु', 'विशालभारत'; प्रका०—रवींद्र साहित्य (अठारह भाग), उदय की ओर, थर्ड क्लास-कहा० ; प०—हिंदी ग्रंथागार, पी० कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता ।

धर्मपाल गुप्त 'शलभ'—ज० १६२६ ; सा०—कई हिंदी समाचार पत्रों के संवाददाता ; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—डाक्टर, बरेली ।

धर्मपाल विद्यालंकार—ज०—१८६८ ; शि०—गुरुकुल काँगड़ी; सा०–भूत० संपा० दैनिक'अर्जुन', भूत० कुलपति वृन्दावन-शिक्षालय; वर्त० संपा० 'आर्यमित्र', ८ वर्षों तक श्रद्धानंद जी के मंत्री, ११ वर्ष से आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के सहायक मंत्री, दैनिक 'तेज' के भूत० व्यवस्थापक ; प्रका०—दर्शन और आर्यसमाज पर अनेक ग्रंथ ; प०—टिकैतगंज, बदायूँ ।

धर्मप्रियलाल 'शंकर'—शि०—सा० रत्न, एम० ए० (संस्कृत और हिंदी) पटना वि० वि०; सा०—सहा० संपा० 'राष्ट्रवाणी', वर्तमान संपा० 'निर्माण' साप्ताहिक दरभंगा ; प्रका०—अनेक आलोचनात्मक तथा अनुवादित पुस्तकें;

प० — हिंदी-विभाग, चंद्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगा।

धर्मपाल गुप्त—सा०—'सचित्र रंगभूमि' के संचालक और संपा०; **प०**—५६५कूचा सेठ,दरीबाकलाँ, दिल्ली।

धर्मलाल सिंह—सा०—संपा० 'दरभंगागजट' 'किसान-केशरी', साप्ताहिक, 'बिहार' (मासिक); बिहार हि० सा० स० के सहायक मंत्री, बिहार प्रांतीय गोशाला, पिंजरा पोल संघ, बिहार प्रांतीय एस० पी० सी० ए०, अ०भा० गोसेवक-समाज,दरभंगा सेवा-समिति और कामेश्वरी प्रिया पूअर होम के मंत्री; **प्रका०**—गोपालन की पहली दूसरी पोथी तथा अनेक गोविषयक स्फुट लेख ; **वि०**—गोसाहित्य का व्यापक अध्ययन किया हैं; **प०**—प्रबंधक, गोशाला, दरभंगा।

धर्मवीर—ज०–१६०४ झेलम पंजाब ; **शि०**— एम० ए०, लाहौर, नैपाल, पटना, दिल्ली ; **प्र०**—१६२२ में लाहौर नेशनल कालेज में पढ़ी ; **सा०**—पंजाब प्रांतीय हिंदू सभा के मंत्री,'आकाश वाणी' (हिंदी), 'हिंदू' (उर्दू), 'होराइज़न' (अँगरेजी) के संपा० ; १६३३ में गोलमेज कानफ्रेंस से संबद्ध पार्लियामेंटरी कमेटी में श्रीमान् भाई परमानन्द की सहायता के लिए लंदन गये ; इँगलैंड, फ्रांस, इटली में कला की शिक्षा के लिए निवास किया ; १६३५ में चीन, जावा, बाली, लंका आदि का कला की क्रियात्मक अनुभूति के लिए भ्रमण किया ; **प्रका०**—संसार की कहानियाँ, पंजाब का इतिहास, अमर पत्र और बारह कहानियाँ, दक्षिण का इतिहास, भाई परमानंद की लगभग १२ उर्दू पुस्तकों का अनुवाद, ला० हरदयाल की जीवनी अँगरेजी में लिखी ; **वि०**— हिन्दुत्व पर स्वाभिमान और कला – प्रेम ; **प०** —आकाशवाणी - प्रकाशन लि०, गोपालनगर, जालंधर।

धर्मवीर प्रेमी—शि०—एम० ए०, सा० र० मेरठ, आगरा और नागपुर ; **प्रका०**—प्रबन्ध-बोध, आर्य-जगत के उज्ज्वल रत्न; वर्तमान—हिंदीसाहित्य समिति मेरठ के मन्त्री हैं ; **प०**— प्रिंटिंग प्रेस, मेरठ।

धर्मसिंह वर्मा—ज०—१६०३, मिश्रीपुर हरदोई ; शि०—सा० वि०, सा० शास्त्री प्रयाग, काशी, लाहौर ; **प्रका०**—सौभद्र, राधेय ; **अप्र०**—तीन कविता-संग्रह ; **प०**—हिन्दी अध्यापक, सेठिया कालेज, बीकानेर।

धर्मेंद्रनाथ शास्त्री—ज०—४ नवम्बर, १८६७ ; शि०—तर्क-शिरोमणि ; **सा०**—१६२३-२४ में गुरुकुल वृंदावन में आचार्य रहे ; आर्यसमाज में जात-पाँत तोड़ने में विशेष प्रयत्नशील ; आर्य-सार्वदेशिक सभा की कार्यकारिणी के सदस्य ; 'जन्मभूमि' नामक पत्र के प्रकाशक और संपा० ; **प्रका०**—दिव्य-दर्शन, सदाचार, संध्या, पत्र-प्रदीप ; **वि०**—आप की धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला शास्त्री ने असहयोग में सक्रिय भाग लिया ; **प०**—प्रोफेसर गवर्नमेंट कालेज, मेरठ।

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी—ज०—२८ सितम्बर १६०५ ; शि०—शास्त्री, एम० ए (त्रितय), पी-एच० डी०, ए० आई० ई०, एफ० आर० ए० एस (लंदन) ; **सा०**—सह० संपा० 'रोशनी', भूत० अध्यक्ष हिंदी-विभाग, पटना कालेज, पटना ; **प्रका०**—हरिऔध जी का प्रिय-प्रवास, गुप्त जी के काव्य की कारुण्य धारा, पुरुष-प्रकृति और रमणी-निर्माण, निर्गुण साहित्य में दरिया साहब, संपा०—साहित्यिक निबन्धावली ; **वि०**—संतकवि दरिया साहब की अनेक अप्रकाशित पुस्तकों की खोज कर के अपनी थीसिस लिखी ; **प०**—इंस्पेक्टर आव स्कूल्स, छोटा नागपूर, राँची।

धीरेंद्र वर्मा, डाक्टर—ज०—१८६७, बरेली ; शि०—एम.ए., देहरादून, लखनऊ, इलाहाबाद ; डी० लिट्० (पेरिस) ; **सा०**—हिन्दी की उच्चकक्षाओं का पाठ्य-क्रम क्रमबद्ध करने में लगे रहे, १६३४ में भाषा शास्त्र तथा प्रयोगात्मक ध्वनिविज्ञान के अध्ययन के लिए योरप गये, १६३५ में पेरिस यूनीवर्सिटी से डी० लिट् की उपाधि प्राप्त की, हिन्दुस्तानी एकेडमी और हि० सा० सम्मे० से निरंतर सम्बन्ध, एकेडमी की त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दुस्तानी' के

सम्पादक-मंडल में रहे, संपा० 'सम्मेलन पत्रिका,' भारतीय हिन्दी-परिषद प्रयाग के संस्थापक, बंगाल महाराष्ट्र, गुजरात, आँध्र देश जैसे अहिंदी भाषी प्रदेश में भारतीयता के साथ-साथ प्रादेशिक व्यक्तित्व की भावना जागरित करने के समर्थक, राजनैतिक उद्देश्य से असाहित्यकों द्वारा हिन्दी भाषा, लिपि और शैली के साथ खिलवाड़ किये जाने के विरोधी; **प्रका०**—हिन्दी राष्ट्र, अष्टछाप, ग्रामीण-हिंदी, हिंदीभाषा और लिपि, लाताँग ब्रज, ब्रजभाषा-व्याकरण, यूरोप के पत्र, विचार-धारा; **अप्र०**–हिंदी साहित्य का इतिहास, मध्यदेश का इतिहास; **प०**—यूनिवर्सिटी प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, विश्वविद्यालय, प्रयाग।

धेनुक्षेत्र झा—**ज०**—१८६२; **शि०**—सा० रत्न; **अप्र०**—साहित्य की झलक; **प०**—हिन्दी अध्यापक, हाई स्कूल, भागलपुर।

नन्दकिशोर झा 'किशोर'—**ज०**–१६०१, बस्ती; **सा०**—स्थानीय ग्राम-सभा के भूत० मन्त्री; खीस्त राजा एच० ई० स्कूल में भूत० संस्कृत-हिन्दी के प्रधान अध्यापक; **प्रका०**—प्रियमिलन, हृदय; **अप्र०**—भर्तृहरि-वैराग्य-नाटक (अनु०); **प०**—श्रीनगर, बेतिया, चंपारन।

नंदकिशोर तिवारी—**शि०**—बी० ए; **सा०**—बिहार सरकार के भूत० हिंदी पबलिसिटी अफसर; भूत० संपा० 'चाँद', 'महारथी', 'सुधा,' कर्मयोगी,' 'भविष्य,' 'मतवाला,' 'माधुरी' आदि; **प्रका०**—स्मृतिकुंज (गद्यकाव्य का सा आनंद देनेवाला प्रसिद्ध उपन्यास); **अप्र०**–अनेक सामयिक निबंध; **प०**—तिवारीपुर, बिहार।

नंदकिशोरलाल–**ज०**–१६०१; **प्रका०**—कुसुमकलिका, महात्मा विदुर (ना०), बालबोध रामायण, आरोग्य और उसके साधन, मुक्तिधारा; **प०**—छतनेश्वर, दरभंगा।

नंदकिशोर सिंह—**ज०**—१६२०; **प्रका०**—आभा; **अप्र०**—रणभेरी; **प०**—रोसड़ा, दरभंगा।

नंदकिशोरसिंह ठाकुर 'किशोर'—**सा०**—शाहाबाद–जिला सा० सम्मे० और आरा-साहित्य-परिषद् के प्रधान मंत्री; 'भारत-मित्र',

'श्रीकृष्ण-संदेश', 'हिंदूपंच' और 'स्वाधीन भारत' इत्यादि दैनिक, साप्ताहिक और मासिकपत्रों के भूत० सहकारी संपा०; प्रका०—ईश्वरचंद्र विद्यासागर, नारी हृदय (कहा०), सतीत्व-प्रभा या सती विपुला, मेवे की झोली, बालरण-रंग, प्राचीन सभ्यता, अरुणा, रणजीतसिंह (बँगला से अनु०), भैषज्य-दीपिका (होमियोपैथी), शिवनंदन सहाय की जीवनी; वि०—भोजपुरी-शब्द-कोश का निर्माण कर रहे हैं; प०—शाहाबाद, बिहार।

नंदकुमार शर्मा—ज०—१९०३, भरतपुर; शि०—सा० वि०; सा०—स्थानीय सनातन-धर्म सभा और हिं० सा० समिति के उत्साही कार्यकर्त्ता; प्र०—१९२०; प्रका०—भगवती भागीरथी, परशुराम स्तोत्र; अप्र०—गोवर्द्धनशतक, पीयूष-प्रभा, शांति-शतक; प०—अनाह दरवाजा, भरतपुर, राजपूताना।

नंददुलारे बाजपेयी,—ज०—१९०६; शि०—एम० ए० हजारीबाग मिशन कालेजियट स्कूल, काशी विश्वविद्यालय; सा०—१९२९-३० में मध्यकालीन हिंदी काव्य में अनुसंधान-कार्य किया; १९३० में 'भारत' के संपा०; १९३२–३६ तक ना० प्र० सभा काशी में 'सूरसागर' का संपादन करते रहे; १९३७–३९ तक गीताप्रेस गोरखपुर में 'रामचरितमानस' का संपादन; १९४० में हिं० सा० सम्मे० के पूना अधिवेशन में साहित्य-परिषद् के सभापति; १९४१ से काशी हिंदू विश्व-विद्यालय में अध्यापक; १९४७ में कविवर 'निराला' की स्वर्ण-जयंती का आयोजन किया और उनके अभिनंदन-ग्रंथ के संपादन-प्रकाशन में सक्रिय सहयोग दिया; प्रका०—जयशंकर प्रसाद, हिंदी-साहित्य : बीसवीं शताब्दी, साहित्य : एक अनुशीलन, तुलसीदास; संपा०—सूरसागर, रामचरित - मानस, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास; संग्रह—हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ, सूर-सुषमा, सूर-संदर्भ, साहित्य-सुषमा; अनु०—धर्मों की एकता; वि०—इनके अतिरिक्त अनेक पुस्तकों की विस्तृत आलोचना; वर्त०—भारतीय समीक्षाशास्त्र का

क्रम-विकास और आधुनिक हिंदी-साहित्य का इतिहास नामक आलोचनात्मक ग्रंथ तैयार कर रहे हैं ; प०—अध्यक्ष और डीन कला-विभाग, सागर-विश्वविद्यालय, सागर।

नगेंद्र—शि०—एम० ए० (हिंदी-अँगरेजी), डी० लिट०; आगरा वि० वि०; **सा०**—भूतपूर्व अँगरेजी अध्यापक, कमर्शल कालेज दिल्ली; **प्रका०**—आलो०—सुमित्रानन्दन पंत, साकेत : एक अध्ययन, आधुनिक हिंदी नाटक, विचार और अनुभूति, विचार और विवेचन, देव और उनकी कविता, रीतिकाव्य की भूमिका; कवि०—कनबाला, छविमयी, संपा०—आधुनिक हिंदी साहित्य-२ भाग, दीपमाला, एकांकी, प्रतीक, दृष्टिकोण; **प०**—हिंदी समाचार विभाग, आलइंडिया रेडियो, दिल्ली।

नत्थीलाल कुलश्रेष्ठ 'ज्ञानेंद्र'—ज०—१६०७; **शि०**—सा० र०, आगरा; **सा०**—भूतपूर्व स्वतंत्र और सहायक संपादक—'ज्ञानोदय' और 'व्रजभूमि'; **प्रका०**—हिंदी रचना, व्रजगीतांजलि; **प०**—आगरा।

नत्थूलाल विजयवर्गीय—ज०—१६१०; **सा०**—प्रताप-सेवा संघ और शिवराज युवक संघ के सक्रिय सहायक; प्रथम के सभापति भी; मध्य भारतीय हिं० सा० सम्मे० के संस्थापकों में एक; प्रथम अधिवेशन में साहित्य-मंत्री; **अप्र०**—कविताओं, गद्यकाव्यों और आलोचनात्मक लेखों का एक-एक संग्रह; **प०**—असिस्टेंट एकाउंटेंट 'दि बैंक आव इंदौर', २४६८ गोकलगंज, महू, मध्यभारत।

नरदेव—ज०—२१ अक्तूबर १८८०; **सा०**—अविवाहित रह कर देश, जाति और भाषा की सेवा में प्रयत्नशील, देहरादून कांग्रेस कमेटी के नेता, भूत० संपा०—'शंकर' और 'भारतोदय', सम्मेलन के मंत्री, देहरादून में १५ वें हि० सा० स० के स्वागताध्यक्ष तथा हि० सा० सम्मे० प्रयाग के सम्मानित सदस्य, कई बार राष्ट्रीय आंदोलनों में जेल-यात्रा; **प्रका०**—आर्य समाज का इतिहास ३ भाग, ऋग्वेदालोचन, गीताविमर्श, कारावास की रामकहानी,

सचित्र शुद्ध-बोध, यजुर्वेदालोचन; अप्र०—पत्र-पुष्प; प०—मुख्याधिष्ठाता, महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरद्वार।

नरसिंह चंद्र जोशी—ज०—२१ अप्रैल १९२०; **सा०**—'कल की दुनिया' और 'जनमत' के सहयोगी संपादक रहे; **प्रका०**—स्फुट; **अप्र०**—ईश्वर: ऐतिहासिक विकास; **प०**—सरस्वती सदन, जालोरी गेट, जोधपुर।

नरसिंह दास अग्रवाल—**प्रका०**—स्फुट राष्ट्रीय कविताएँ; **प०**—सदर बाजार, जबलपुर।

नरसिंह पाण्डेय 'पथिक'—ज०—१९१३; शि०—सा० रत्न १९४१, काव्यतीर्थ, व्याकरणाचार्य १९४३; **सा०**—संस्था०—हि० सा० समिति आसनसोल; **अप्र०**—पाथेय (कहानियाँ), भारतीय पंचरत्न; प०—अध्यापक डी० ए० वी हाई स्कूल, आसनसोल।

नरसिंह राम शुक्ल—ज०—१९११; प्र०—१९३२; **प्रका०**—उप०—किसान की बेटी, काजी की कुटिया, राजकुमारी कनकलता, देवदासी, कुचक्र, चंद्रिका, बेगम, गुनहगार; विविध—देशी शिष्टाचार, सफलता के सात साधन, महामना मालवीयजी, वृहद् पाक-विज्ञान, प्रेमियों के पत्र, आधुनिक स्त्री-धर्म, सौंदर्य और शृंगार; **वि०**—अक्टूबर १९४३ से **'सजनी'** 'साजन,' 'शेरबच्चा' का **प्रकाशन** और संपादन कर रहे हैं; **प०**—जार्जटाउन, इलाहाबाद।

नरेंद्रदेव, आचार्य—ज०—१८८९; शि०—एम० ए० एल-एल० बी०, काशी विश्वविद्यालय; जा०—पाली, प्राकृत, संस्कृत, अँगरेजी; **सा०**—फैजाबाद होमरूल लीग के सेक्रेट्री, १९१६; असहयोग में १९२० में वकालत-त्याग, तभी काशी विद्यापीठ के आचार्य बने; अखिल भारतीय काँग्रेस सोशलिस्ट पार्टी कानफ्रेंस के सभापति १९३४; संयुक्त प्रांत में काँग्रेसी एम० एल० ए० १९३७; काँग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेता; त्रैमासिक **'विद्यापीठ'** और साप्ताहिक 'संघर्ष' के **संपा०**; चार वर्ष से लखनऊ विश्वविद्यालय के उपकुलपति; **अप्र०**—अभिधर्म-कोश (प्रेस में); **प०**—नया हैदराबाद, लखनऊ।

नरेंद्र सिंह तोमर—ज०—४ मार्च १९२३; प्रका०—बढ़े चलो, पगडंडी, जयहिन्द गीतावली, आजाद हिन्द गीतावली, गाँधी गीतावली, लड़े चलो, देहाती-दुनियाँ; वि०—राष्ट्रीय तथा मालवीय भाषा के लोक-गीतों का संग्रह किया; प०—२७ बिया बानी, इन्दौर।

नरेशचंद्र वर्मा 'नरेश'—ज०—१९१२; शि०—सा० वि०; सा०—मुंगेर म्युनिसिपैलिटी हिंदी स्कूल में अध्यापक, सहा० मंत्री हिंदी-साहित्य-परिषद्; प्रका०—अंत-र्ज्वाला और स्मृति-हार; प०—ग्राम-कमला, पो० मँझौल, मुंगेर।

नरोत्तमदास पाँडेय 'मधु'—ज०—१९१५; प्रका०—राशि-शतक, मुरलीमाला; प०—मऊ, झाँसी।

नरोत्तमदास स्वामी—ज०—१ जनवरी १९०५; शि०—बी० के० विद्यालय इंटर कालेज, बीकानेर और एम० ए० (हिंदी, संस्कृत) हिंदू वि० वि०, बनारस, सा० वि०; सा०—सदस्य नागरी-भंडार, बीकानेर की कार्य-कारिणी समिति, गु० प्र० सज्जना-लय बीकानेर, ना० प्र० सभा काशी, हिं० सा० सम्मे० प्रयाग, आगरा यूनिवर्सिटी सिनेट, आगरा यूनी० फैकल्टी आव आर्ट्स, हिन्दी बोर्ड आव स्टडीज आगरा वि० वि०, हिंदी कालेज कमेटी राज-पूताना, मध्यभारत बोर्ड आव एजुकेशन और हिन्दी परिषद् प्रयाग के प्रतिनिधि-मंडल में; संपा०—सूर्यकरण पारीख राजस्थानी ग्रंथमाला, पिलानी राजस्थानी ग्रन्थमाला, सस्ती राजस्थानी ग्रंथ-माला, त्रैमासिक 'राजस्थान-भारती' पृथ्वीराज रासो और राज-स्थानी शब्दकोष; सभापति—बीकानेर राज्य साहित्य-सम्मेलन और अखिल भारतीय राँकावत ब्राह्मण महासभा; 'राजस्थान रा दूहा' ग्रन्थ पर द्वितीय मानसिंह पुरस्कार हिं० सा० सम्मेलन द्वारा; तथा भाषा-विज्ञान; प्रका०—मीरा-मंदाकिनी, राजस्थान रा दूहा भाग १, ढोला-मारू रा दूहा, राजस्थान के लोकगीत—भाग १-२, राजस्थान के ग्रामगीत—भाग १, कबीरदास, तुलसीदास, सूर-

साहित्य-सुधा, मधुमाधवी, बीकानेर के वीर, बीकानेर के गीत, पद्य-कल्पद्रुम, हिंदी-पद्य-पारिजात भाग १–२, गद्यमाधुरी, हिंदी-निबन्ध-नवनीत, सरल अलंकार, अलंकार-परिचय, सरल हिंदी व्याकरण—१–२, स्वर्ण महोत्सव पाठमाला-६ भाग, संस्कृत-पाठमाला, अपभ्रंश - पाठमाला, हिंदी के गद्य साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ; अप्र०—राजस्थानी- हिन्दी - कोश (१ लाख शब्द), राजस्थानी भाषा का व्याकरण, राजस्थानी कहावतें, राजस्थान रा दूहा भाग २, राजस्थान के ग्रामगीत भाग २, ३, ४, राजस्थान की वर्षा सम्बन्धी कहावतें, जमाल के दोहे, डिंगल के गीत और उनका पिंगल, राजस्थानी भाषा और साहित्य, अपभ्रंश - पाठमाला भाग २-३, अपभ्रंश-व्याकरण, अपभ्रंश-हिन्दी-कोश, हेमचन्द्र का अपभ्रंश-व्याकरण, महाकवि केशव, कबीर-ग्रंथावली, जायसी का पद्मावत, विद्यापति-पदावली, रा० जइतसी रा० छन्द ; प०—अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, डूँगर-कालेज, बीकानेर।

नरोत्तमप्रसाद नागर—सा०—'उच्छृंखल', 'चकलल्स', 'दरबार' आदि के भूतपूर्व संपादक; 'उच्छृंखल-प्रकाशन' के संचालक; वर्तमान संपादक 'अभ्युदय' साप्ता०; प्रका०—गृहस्थी के रोमांस, एक मातावृत, दिनके तारे, शुतरमुर्गपुराण; कई कहानी एवं लेख-संग्रह; प०—इंडियन प्रेस, प्रयाग।

नरोत्तमलाल बाजपेयी—शि०—एम० ए०, सा० वि०, प्रका०—स्फुट ; प०—सुपरिंटेंडेंट सरकारी नार्मल स्कूल छात्रालय, रामपुर।

नर्मदाप्रसाद खरे,— ज०—१६ नवम्बर, १६१४ ; शि०—सा० वि० ; सा०— भूत० सहायक संपा० मासिक 'प्रेमा' जबलपुर, दो वर्ष तक मध्यप्रांतीय सा० सम्मे० के संयुक्त मंत्री १६४१-४२; प्रका०—स्वर-पाथेय (कविता), नीराजना और कथा - कलश (कविता-संग्रह), बाँसुरी (कविता); संपा०— नवकथा - मंजरी, काव्य-सुधा, नव नाटक - निकुंज, तीन मनोहर एकांकी, साहित्य-प्रदीप; प्रि० वि०—कविता; वर्त०—संपादक साप्ताहिक 'शुभचिंतक'

और मासिक 'युगारंभ'; प०—फूटा ताल, जबलपुर।

नर्मदा प्रसाद मिश्र—शि०—बी० ए०, सा० र०; सा०—एम० एल० ए०; भूत० संपा० 'हितकारिणी' और 'श्री-शारदा'; मिश्रबंधु-कार्यालय के संस्थापक और अध्यक्ष; प०—मिश्रबंधु कार्यालय, जबलपुर।

नर्मदाशंकर रामकरण मिश्र—जा०—२५ जून २६१७; शि०—मैट्रिक, खरगौन; सा०—नगर काँग्रेस के अध्यक्ष; प्रका०—स्फुट रचनाएँ; प०—सेगाँव, मध्यभारत।

नर्मदेश—सा०—भूत० संपा० दैनिक 'विश्व मित्र' बम्बई; प्रका०—कवि० विद्रोही के स्वर, नव निर्माण प०—भेलसा, ग्वालियर।

नर्मदेश्वर चतुर्वेदी—ज०—१६१५; प्र०—१६३२; सा० सेवा समिति, बाढ़ पीड़ितों और हरिजनोद्धार के उत्साही कार्यकर्ता; प्रका०—स्फुट लेख और कहानी; प०—बलिया।

नर्मदेश्वर पांडेय 'राम'—ज० १६२०, बलुआ ग्राम, सारन; सा०—संस्थापक शिव सहाय पुस्तकालय बलुआ, पंजाब और बिहार के मुख्य नगरों में हिंदी प्रचार, बिहार के हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन के प्रान्तीय प्रचार-कमिश्नर, संस्था० 'नीलिमा-प्रकाशन' पटना; प्रका०—संकेत विद्या, दल हुँकार, आदर्श पथ, स्काउट सखा, सिंहनाद; अप्र०—निलम, क्रीड़ाग्नि; प०—बड़ी पटन देवी, गुलजार बाग, पटना।

नलिनीबाला देवी—आचार्य श्रीकमल नारायण देव की पत्नी; ज०—१६२१; शि०—सा० भू०, विद्या विनोदिनी; जा०—असमीया, बँगला; सा०—हिंदी प्रचारिणी सभा गुवाहाटी में स्थापित की; प्रका०—छायालोक (कहा०), शिशु-कथा (असमीया), बँगला कथाओं का अनु०; प०—रा० भा० प्र० समिति, गुवाहाटी, आसाम।

नलिनी बालादेवी—श्रीकार्ति-केयचरण मुखोपाध्याय की पत्नी; प्रका०—शकुन्तला; प०—काली-बाड़ी, छपरा।

नलिनीबाला, श्रीमती—लेख०—१६३०; प्रका०—कुंकुम (कविता संग्रह); वि०—आपके पति श्री

देवीदीन त्रिवेदी भी साहित्यानुरागी हैं; प०—प्रतापगढ़।

नवजकिशोर गौड़—**शि०**—एम० ए० ; **सा०**—'योगी' और 'जनता' के संपादकीय विभाग के प्रमुख कार्यकर्त्ता; **अप्र०**—चार-पाँच संग्रह; **प०**—हिंदी अध्यापक, बी० एन० कालेज, पटना।

नवलकिशोरसिंह 'नवेन्दु'—**ज०**—जुलाई १९१६; **प्र०**—तेज-बुत्ते की कहानी १९३५; **वर्त०**—'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'लीडर' और 'सर्चलाइट' के संवाददाता; **प०**—'सर्चलाइट'-कार्यालय, पटना।

नवमीलाल देव—**ज०** १८७७; **शि०**—वैद्यरत्न; **प्रका०**— गाँधी-गौरव, खादी-महत्व, दयानन्द-महिमा; **अप्र०**—सुलभ चिकित्सा; भारतीय न्यायदर्शन; **प०**—डाल्टनगंज, पलामू।

नवीन नारायण अग्रवाल—**ज०**—२४ अगस्त १९२० ; **शि०**—एम०ए० प्रयाग वि० वि०; **प्र०**—अँगरेजी में १९४३; **प्रका०**—राजनीति पर अँगरेजी में पुस्तकें लिखीं, बापू का बलिदान हमारे लिए खुली चुनौती है, राष्ट्रीय स्वयं-सेवक-संघ क्या है, आजाद हिंद का प्रस्तावित विधान, नागरिक शास्त्र की रूपरेखा, डा० पट्टाभि रमैया की पुस्तक 'कांस्टीट्यूशन आव वर्ल्ड' का अनुवाद; **वर्त०**—सहकारी प्रोफेसर 'राजनीति विभाग', बलवंत राजपूत कालेज, आगरा।

नागरमल सहल—**ज०**—१९११; **शि०**—एम० ए०; एल-एल० बी० बिड़ला कालेज पिलानी, काशी वि० वि० ; **प्रका०**—स्फुट आलोचनात्मक लेख, उत्तर-राम-चरित; **वर्त०**—हिंदीउपन्यास का आलोचनात्मक इतिहास लिख रहे हैं ; **प०**—अध्यापक महाराजा कालेज, जयपुर।

नागेंद्र प्रसाद वर्मा—**ज०**—१९२९; **शि०**—बी.ए., पटना वि. वि; **सा०**—रेडियो पर रुपक और कहानियों का ब्राडकास्ट, सह० संपा०—'स्वदेश' और 'राष्ट्रवाणी' पटना ; **प्रका०**—पगडंडी और स्केच; **प०**—संपादक साप्ताहिक 'स्वदेश', पटना।

नाथूदान ठाकुर—**ज०**—१८९१; **ज्ञा०**—डिंगल और पिंगल, दोनों के विशेषज्ञ; **प्रका०**—वीर सतसई;

प०—नावघाट, उदयपुर, मेवाड़ ।

नाथूलाल अग्निहोत्री 'नम्र'—ज०—१ सितम्बर १६०६ पीलीभीत ; शि०—सा० रत्न, व्याकरण-शास्त्री बरेली; सा०—'प्रेमसंदेश' के भूत० संपा; प्रका०—वनस्थली, उद्यान, नम्र-लता, नम्र कुसुम ; वर्त०—हिंदी अध्यापक तिलक हायर सेकेंडी स्कूल; प०—चौधरी मुहल्ला, बरेली ।

नाथूराम प्रेमी—ज०-१८८१; जा०—अँगरेजी, बँगला, मराठी, गुजराती, संस्कृत, प्राकृत ; सा०—भूत० संपा० मासिक 'जैनमित्र' और 'जैन-हितैषी'; हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय की स्थापना—१६१० के लगभग ; प्रका०—अनु०—प्रद्युम्नचरित्र, ज्ञानसूर्योदय, उपमिति, भवप्रपंच, पुण्यास्रव-कथाकोश, सज्जनचित्तवल्लभ, प्राणप्रिय, चरखाशतक आदि संस्कृत से ; प्रतिभा, रवींद्र-कथा-कुंज, फूलों का गुच्छा, शिक्षा—बँगला से; धूर्ताख्यान, कर्णाटक जैन कवि,—गुजराती से; जान स्टुअर्ट मिल, दिया तले अँधेरा, श्रमण नारद—मराठी से; स्वतंत्र ग्रंथ—विद्वद्रत्नमाला, जैन ग्रंथकर्त्ता, जैन-साहित्य का इतिहास, भट्टारक-मीमांसा, अर्धकथानक ; प०—अध्यक्ष हिंदी ग्रंथरत्नाकर-कार्यालय, हीराबाग, बंबई ।

नाथूलाल—शि०—सा० रत्न, न्यायतीर्थ; सा०—संपा० 'खंडेवाल जैन हितेच्छु'; प्रका०—वीर-निर्वाणोत्सव, महिलाओं के प्रति दो शब्द, बुंदेलखंडी जैन तीर्थों की यात्रा; प०—'खंडेवाल जैन-हितेच्छु'-कार्यालय, इंदौर ।

नाथूलाल जैन 'वीर'—सा०—स्थानीय भारतेंदु-समिति के कार्यकर्ता, राजस्थान विद्यापीठ कोटा में शिक्षण कार्य, काँग्रेसी नेता तथा कोटा राज्य की विधानपरिषद् के सदस्य और मंत्री, कोटा जिला काँग्रेस कमेटी के प्रधान; प्रका०—स्फुट ; प०—ऐडवोकेट, राजस्थान हाई कोर्ट, रामपुरा बाजार, कोटा ।

नानकचंद श्रीवास्तव—ज०—१८६८, बलरामपुर, गोंडा ; शि०—आगरा, प्रयाग, काशी एम० ए०, एल० टी०, सा० रत्न; प्रका०—कामदेव-विजय, अप्र०—कामदेव-संग्रह; प०— लायल

कालेजिएट स्कूल, बलरामपुर, गोंडा।

ना० नागप्पा—ज०—३० अप्रैल १६१२; शि०—बी० ए० १६३३ महाराजा कालेज मैसूर, एम० ए० १६३५ काशी वि० वि०; सा०—दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा के कार्य-कर्त्ता, सद०-शिक्षा-परिषद कार्यकारिणी समिति द० भा० हि० प्र० सभा, सद०—बोर्ड आफ स्टडीज़ इन हिंदी मद्रास एवं मैसूर वि० वि०; प्रका०—'श्रवण-बेकगोक' का अनुवाद—(डिपार्टमेंट आफ आर्किआलोजिकल रिसर्च इन मैसूर द्वारा प्रका०); अप्र०—द्रविड़ भाषाएँ और हिंदी; वर्त०—हिंदी लेकचरर, महाराजा कालेज, मैसूर; प०—१६१६, होसकेरी, लक्ष्मीपुरम्, मैसूर।

नान्हूराम राजगुरु—ज०—३ मई, १६०५; शि०—सा० रत्न इंदौर, इलाहाबाद; प्रका०—नागदह जाति का इतिहास, ग्रामोन्नति, प्रेमतपस्वी, साहित्य-सुधा; प०—प्रधानाध्यापक, कुकड़ेश्वर, होल्कर राज्य।

नारायणदत्त बहुगुणा—ज०—२४ सितंबर, १६१६; जा०—संस्कृत, उर्दू, अंगरेजी; सा०—गढ़वाल-साहित्य-परिषद की कार्यकारिणी, स्थानीय काँग्रेस कमेटी और कुमायूँ इंडस्ट्रियल ऐडवाइजरी कमेटी के सदस्य; कर्णप्रयाग-साहित्य-परिषद्, रानीगंज-ग्राम-सुधार-सेवक-संघ इत्यादि के भूत० प्रधान; इनके अतिरिक्त समय-समय पर लगभग चालीस स्थानीय संस्थाओं के उपप्रधान, मंत्री अथवा उत्साही कार्यकर्त्ता, भूत० संपा० मासिक 'कर्मभूमि'; प्रका०—विभावरी, वेदना, पर्वतीय प्रांतों में ग्राम-सुधार, विभूति, ग्राम-गीत, निर्झरिणी, मधुमास, गद्यकाव्य, ग्राम-सुधार, चित्रमय गढ़वाल; प०—साहित्य-सदन-शैल, पो० गौचर, गढ़वाल।

नारायणदत्त शर्मा—शि०—एम० ए० नागपुर वि० वि०—सर्व प्रथम, बी० टी०, सा र०; सा०—आचार्य, गोस्वामी गोवर्द्धनलाल हिंदी विद्यापीठ, अध्यक्ष हि० विभाग चंपा अग्रवाल कालेज; प्रका०— राजबाला, विद्रोही, साहित्य-सरिता; प०—साहित्य-सदन, मथुरा।

नारायणप्रसाद अरोड़ा—ज०—२६ नवम्बर १९१५; शि०-कानपुर; सा०—भूत० संपा० दैनिक 'विक्रम' और 'संसार'; स्थानीय काँग्रेस के उत्साही कार्यकर्ता, सभी आंदोलनों में जेल-यात्रा, स्थानीय, प्रांतीय और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटियों के उच्च पदाधिकारी, प्रांतीय धारा-सभा के सद०, तिलक-हाल का निर्माण; प्रका०—लाला हरदयाल के स्वाधीन विचार, आदि लगभग ३० पुस्तकें लिखीं; प०—भीष्म एंड कम्पनी, पटकापुर, कानपुर।

नारायणप्रसाद माथुर 'नरेंद्र'—ज०—१६ अगस्त, १९१६; शि०—ग्वालियर; सा०—अखिल भारतीय राष्ट्रीय सभा और श्रीटैगोर-साहित्य-परिषद् के उत्साही सदस्य; प्रका०—स्फुट; प०—प्रधानाध्यापक, पंबई, भिलसा, ग्वालियर।

नित्यानंद शास्त्री—ज०—१८८९; शि०—पंजाब विश्वविद्यालय, ओरियंटल कालेज लाहौर, सर्व प्रथम आने से स्वर्णपदक और छात्र-वृत्ति पायी; सा०—भावनगर की आत्मानंद जैन-ग्रंथमाला के संपादक, महावीर कालेज बंबई के भूत० अध्यापक, जोधपुर राजपूत हाई स्कूल के भूत० प्रधान पंडित, पंजाब विद्वत्परिषद् की ओर से 'आशुकवि', भारत-धर्म-महामंडल काशी की ओर 'कविराज' और बंबई विद्वत्-परिषद् की ओर से 'विद्यावाचस्पति' उपाधियाँ प्राप्त; प्रका०—संस्कृत में—मारुतिस्तव, लघुछंदालंकारदर्पण, आर्यामुक्तावली, आर्यानक्षत्रमाला, बालकृष्ण नक्षत्रमाला, श्रीरामचरिताब्धिरत्नम् महाकाव्य आदि लगभग एक दर्जन ग्रंथ; हिंदी में—ऋतु-विलास, द्विजदेवदर्पण, आदि-शक्तिवैभव, कुरीति-बत्तीसी, उन्नति-दिग्दर्शन, रामकथाकल्पलता, हनुमद्दूत, मुक्तक कविताकलाप, मुक्तक-लेख-संग्रह; प०—अध्यक्ष राजकीय पुस्तकालय, जोधपुर।

नित्यानंद सारस्वत वैद्य—शि०—काशी और लाहौर; सा०—संस्था० नागरी प्रचारिणी सभा रतनगढ़, साक्षरता का प्रसार; अप्र०—काव्य-प्रकाश की टीका, रसप्रकाश-सुधाकर और रस-संकेत-कलिका की टीका; प०—प्रधान

अध्यापक आयुर्वेद विभाग, बिड़ला संस्कृत कालेज, पिलानी, जयपुर।

निरंकार देव 'सेवक'—ज०—१६१६ बरेली; शि०—एम० ए०, बी० टी., एल-एल० बी०, सा० रत्न०, बरेली कालेज बरेली और काशी विश्वविद्यालय; प्र०–१६३२; सा०—आरंभ में अध्यापक, मुख्यध्यापक, अब वकील; भूत० नेता 'रेडिकलपार्टी', अब स्वतंत्र विचारक; कवि-सम्मेलनों में सरुचि भाग प्रका०—कविता-कलरव, स्वस्तिका, चिनगारी, गीत–जनगीत; अप्र०—मह ीके गीत, बालगीत; आलोचना-विद्यापति: एक समीक्षा वि०—बालकों के साथ-साथ युवकों के प्रियकवि; प०—सेवासदन, सैंदपुरिया मार्ग, बरेली।

निरंजनदेव वैद्य 'प्रिय हंस'—ज०—१६०४; शि०—आयुर्वेदालंकार गुरुकुल काँगड़ी, सहारनपुर; सा०—स्थानीय आर्यसमाज और हिंदी-प्रचार--मंडल के उत्साही कार्यकर्त्ता, 'अर्जुन'—दिल्ली, 'लोकमत'—जबलपुर और 'जन्मभूमि'—लाहौर आदि दैनिकों के सपादकीय विभागों में काम किया; वि०—अब 'सव्यसाची' तथा 'तीर्थयात्री' के उपनाम से पद्यमयी रचनाएँ लिखते हैं; प्रका०—प्रमुख हिंदी - कवि, हिंदी-वेणी-संहार नाटक; प०—आर्यसमाज दयानंद सेवाश्रम, बदायूँ।

निरंजन लाल शर्मा—ज०—२२ जूलाई, १६०१; शि०—एम. एस - सी. बनारस विश्वविद्यालय और लिवरपूल विश्वविद्यालय; सा०—भूत० प्राध्यापक काशी विश्वविद्यालय, 'ज्योलोजी' और 'मिनरालोजी' के अवैतनिक संपादक; प्रका०—भारत की खनिज संपत्ति; वि०—अँगरेजी में भी कई ग्रंथ लिखे हैं; प०—प्राध्यापक इंडियन स्कूल आव माइंस, धनबाद।

निर्मला कुमारी माथुर—ज०—१६ दिसंबर १६२६, सा० रत्न, प्रभा०; अप्र०—गीत और कहानी-संग्रह; वर्त०—स्थानीय हाईस्कूल में अध्यापिका; वि०—रेडियो पर कविता-पाठ करती हैं; प०—७ दरियागंज, आनंद लेन, दिल्ली।

नीतीश्वर प्रसाद सिंह—ज०—१६१७; सा०—स्थानीय

'सुहृद-संघ' के संस्थापक और प्रधान मंत्री ; साहित्यिक जागृति के लिए सतत आंदोलन करने में प्रवृत्त ; प्रका०—स्फुट ; प०—मंत्री सुहृद-संघ, मुजफ्फरपुर ।

नीलकंठ तिवारी— ज०—१९१६ ; **शि०**—एम. ए., सा. रत्न ; **सा०** — फिल्म-जगत में कहानी, संवाद, गीत-लेखक और अभिनेता हैं ; **प्रका०**—इंद्रधनुष; **अप्र०**—कविताओं के दो संग्रह; **प०**—श्रीपतभुवन, वाडिया स्ट्रीट, तारदेव, बम्बई ।

नेकीराम शर्मा—ज०—१८८६ ; **शि०**—संस्कृत ; **जा०**—गुजराती, बंगाली, मराठी, अँगरेजी और उर्दू का साधारण ज्ञान ; **सा०**—१९०७ से राजनीति में प्रवेश, १९२० में पंजाब में बेगार-प्रथा के विरुद्ध आंदोलन ; राजनीतिक आंदोलनों में आठ बार कारावास; **प्रका०**—बहुत से ट्रैक्ट तथा स्फुट लेख; **प०**—भिवानी, हिसार पंजाब ।

नेमिचन्द्र जैन—ज०—१९१७; **शि०**—शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, न्याय-ज्योतिषतीर्थ, सा०र०; **सा०**—ज्योतिष के विशेषज्ञ, संपा०—'जैन-सिद्धांत-भास्कर' (ऐतिहासिक पुरातत्व सम्बन्धी त्रैमासिक), पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जैन-सिद्धांत-भवन आरा, मन्त्री शाहाबाद जिला पुस्तकालय; **प्रका०**—मुहूर्तदर्पण, राशिविज्ञान, भाग्यफल, रिष्टसमुच्चय तथा अशोक-दर्शन, ज्योतिष और साहित्य पर १८० लेख ; **अप्र०**—भारतीय ज्योतिष, मानव और उस का आदर्श ; **प०**—अध्यक्ष जैन-सिद्धांत-भवन, आरा ।

नेमीचन्द जैन 'भावुक'—ज०—१९२८ जोधपुर; **शि०**—इंटर., सा० रत्न ; **सा०**—संपा० मासिक 'झरना' जोधपुर, सलाहकार त्रैमासिक 'ज्योति', मारवाड़ जिला कुमार-साहित्य-परिषद, 'नवभारत', 'प्रजा', 'आवाज' के प्रतिनिधि; **प०**—मिरची बाजार, जोधपुर ।

पंचमसिंह, लेफ्टिनेंट कर्नल, राजा बहादुर—ज०—२८ जनवरी, १९०४; **शि०**—सरदार स्कूल और मेयो कालेज, अजमेर; **सा०**—केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य हैं और लश्कर की म्यूनिसिपैलिटी के सभापति;

प्रका०—नीति-समुच्चय, शिकार ; वि०—'मृगया' आपका व्यसन है और इसी पर पुस्तकें लिखते हैं; हिंदी - प्रसार के लिए संक्षिप्त रामायण और महाभारत (५हजार) छपवाकर मुफ्त बाँटी हैं; प०—लश्कर, ग्वालियर।

पतंजलि 'हर्ष' —ज०—१९०७, बदायूँ; सा०—मंत्री, हिंदी-प्रचार - मंडल बदायूँ तथा जनपद हिं० सा० सभा; प्रका०—स्फुट; प०—हर्ष आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी, टिकैटगंज, बदायूँ।

पतराम गौड़ 'विशद'—ज०—१९१३; शि०—एम. ए., सा० रत्न, बिड़ला कालेज पिलानी, महाराजा कालेज, जयपुर; सा०—राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपूर के सदस्य, अन्वेषक—बंगाल हिंदी-मंडल कलकत्ता (राजस्थानी साहित्य पर खोज), स्थानीय हिंदी सहायक समिति, पुस्तकालय, नगर पालिका के कार्यकर्ता; प्रका०—रेगिस्तान (काव्य), चौबोली (इसका गुजराती अनुवाद भी छपा है), वीर-सतसई—संपा०; वि०—आपकी दो पुस्तकें एम० ए० के पाठ्यक्रम में हैं, प्रो० कन्हैयालाल सहल और ठाकुर श्री ईश्वरदान जी भी 'वीर-सतसई' के संपादक हैं; प०—प्रोफेसर, बिड़ला कालेज, पिलानी, जयपुर।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी—द्विवेदी-युग के लेखक ; शि०—बी० ए० खैरागढ़; सा०—'सरस्वती', प्रयाग के संपादक १९२० से सात-आठ वर्ष तक; तब से स्थानीय हाई स्कूल में अध्यापक; इलाहाबाद की 'छाया' के भूत० संपादक; प्रका०—पंचपात्र, हिंदी-साहित्य-विमर्श, विश्व - साहित्य, शतदल—कवि०, पद्मवन, कुछ (लेख-संग्रह); अप्र०—दो-तीन निबंध और कविता-संग्रह; वि०—आपकी कहानियाँ भी प्रायः निबंध के ही ढंग पर हैं; प०—अध्यापक, हाई स्कूल, खैरागढ़।

पद्मनाभ तैलंग—ज०—१९१०; सा०—म्यूनिसिपल हाई स्कूल में शिक्षक, संपा० 'विंध्य-केसरी' साप्ताहिक तथा संचा० विंध्यकेसरी - प्रेस, राजनीतिक आंदोलनों में सक्रिय भाग और जेल-यात्रा; प्रका०—स्फुट लेख;

प०— 'विंध्यकेसरी' - कार्यालय, सागर।

पद्मसिंह शर्मा—ज०—१९१८; सा०—ना० प्र० सभा आगरा के प्रधानाचार्य; प्रका०—बंबई हिंदी विद्यापीठ के लिए कई पाठ-ग्रंथ; अप्र०—स्फुट लेख और कविताएँ; प०—कंसगेट, गोकुलपुरा, आगरा।

पद्मावती 'शबनम' ('शमा' और 'शिवानी')–ज०–१८ दिसंबर १९१७; शि०—सीनियर केम्ब्रिज; प्रका०—मीरा : एक अध्ययन; अप्र०— स्फुट आलोचनात्मक लेख; प०—१ बी नन्दलाल मल्लिक लेन, कलकत्ता।

पन्नालाल अग्रवाल—शि०—गणेश संस्कृत विद्यालय सागर और स्याद्वाद विद्यालय काशी; सा०—गणेश विद्यालय में व्याकरण के अध्यापक; प्रका०—संपा०—ज्ञान-सूर्योदय—दो भाग, उर्दू- कथा, बनारसी नाम-माला, विवाह-क्षेत्र-प्रकाश, तिलोयपण्णति, दोहा पाहुड़, सावयधम्म दोहा, हरिवंशपुराण, वरांगचरितम्; वि०—जैन-साहित्य के उद्धार का अच्छा कार्य किया; प०—मन्त्री, वीर-सेवा - मन्दिर, सरसाँवाँ, सहारनपुर।

पन्नालाल गुप्त 'अनंत'—सा०—साप्ताहिक 'नवज्योति'; प्रका०—स्फुट; अप्र०—दो निबंध-संग्रह; प०—कैसरगंज, अजमेर।

पन्नालाल जैन—ज०–पारगुवाँ ग्राम, सागर; शि०–साहित्याचार्य, सागर; जा०—संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश; सा०—मंत्री जैन एजुकेशन बोर्ड, संयुक्त मन्त्री जैन विद्वत्परिषद्; 'जैन-प्रभात' के संपादक; प्रका०—महापुराण, धर्मशर्माभ्युदय, नियमसार, मोक्ष-शास्त्र, वर्धमान-पुराण, पंचस्तोत्र-संग्रह, त्रैलोक्य-तिलक व्रतोद्यापन, अशोक-रोहिणी-कथा, रत्नत्रयधर्म, चौबोली पुराण, रत्नत्रयी आदि। प०—जैन एजुकेशन बोर्ड, मोराजी भवन, केशवगंज, सागर।

पन्नालाल बल्दुआ—ज०—अप्रैल १९१६, मरदानपुर, मकड़ाई राज्य; शि०—प्राथमिक गाडरवाड़ा, पिलानी, बी० काम०–सनातनधर्म कालेज कानपुर, एम० ए० अर्थशास्त्र, आगरा वि० वि०; सा०—भूत० प्राध्यापक गोविंदराम

सेक्सरिया वाणिज्य महाविद्यालय, संचा० सेक्सरिया अर्थ - साहित्य-प्रकाशन-मंडल ; भूत० संपा० 'अर्थ संदेश' त्रैमासिक; प्रका०—वाणिज्य-कोश, अर्थशास्त्र शब्दकोश, सांख्यकि शब्दकोश, प्रस्तपालन तथा लेखा कर्म पर पुस्तकें जो पाठ्यक्रम के लिए स्वीकृत हैं ; वर्त०—विश्व-विद्यालय के उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करने में प्रयत्नशील ; प०—अर्थ-वाणिज्य महाविद्यालय, गोपालबाग, जबलपुर ।

पन्नालाल व्यास—ज०—१५ जून १६२७ ; शि०—बी० ए०, विशारद; सा०—भूत० संपा० 'ज्वाला', साहित्य-सदन के संस्था०, राजस्थान की साहित्यिक संस्था अखिल भारतीय कुमार हिं० सा० सभा जोधपुर के संचा०, राजस्थान हिं० सा० सभा के कार्यालय मंत्री; प्रका०—हमारा राजस्थान ; वर्त०—ब्राडकास्टिंग विभाग संयुक्त राजस्थान संघ में काम कर रहे हैं ; प०—सरदारपुरा, जोधपुर ।

परमात्माशरण—सा०—अखिल भारतीय राष्ट्रीय साहित्य-प्रकाशन-परिषद् के व्यवस्थापक ; प्रका०—जननायक (महा०), बंदी, प्रेरणा, फाँसी, बलिदान, परतंत्र, झनकार, इनक्लाब, सुनो बच्चों, वीर बालक, महापुरुष, कलिका ; प०—२३२ सदर, मेरठ ।

परमानंद शास्त्री—ज०—१६०८; —शि०—गणेश संस्कृत विद्यालय सागर; सा०—वीर-सेवा-मंदिर सरसावा के अंतर्गत अपभ्रंश और जैन-साहित्य के अन्वेषक, 'अनेकांत' के संपादक; प्रका०-समाज-तंत्र एकीभाव स्तोत्र (अनु०), मोक्षमार्ग प्रकाशक, महिला-शिक्षा संग्रह (संपादित), पंडिता चंदाबाई—जीवनी; अप्र०—कई खोजपूर्ण लेख; प०—वीर-सेवा-मंदिर, सरसावा, सहारनपुर ।

परमेश्वर प्रसाद सिंह—ज०—४ जनवरी, १६०४ ; शि०—आइ० ए०, सी० टी० ; सा०—स्थानीय हिंदी साहित्य सम्मे० और साहित्य-परिषद् के कार्यकर्ता ; प्रका०—स्फुट कविताएँ ; प०—डी० ए० वी० स्कूल, सीवान, सारन ।

परमेश्वरलाल जैन 'सुमन'—ज०—२५ जनवरी १६२०; सा०—

मारवाड़ी साहित्य-मंदिर भिवानी, हिसार से दस खंडों में प्रकाशित होनेवाले ग्रंथ 'मारवाड़ी-गौरव' के संपादक; अप्र०—जापान का इतिहास, जैन-इतिहास, सुमनकुंज, अग्रवाल जाति का इतिहास; प०—समस्तीपुर, बिहार।

परमेश्वरसिंह—सा०—भूत० संपादक 'विश्वमित्र' कलकत्ता, 'प्रताप' कानपुर और 'हिंदुस्तान'; प्रका०—स्फुट; प०—संचालक किताबघर, कदमकुआँ, पटना।

परमेश्वरीलाल गुप्त—ज०—१९१४; सा०—१९३४ में सात्ता० 'संदेश' का प्रकाशन, १९४३ में 'आज' बनारस के संपादक-मंडल में प्रवेश, १९४६ से 'सैनिक' आगरा में संपादक, १९४७ के आरंभ में 'समाज' काशी के संपादकीय विभाग में, १९४१-४२ के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग, दो बार जेल-यात्रा, आजमगढ़ कांग्रेस के विभिन्न पदाधिकारी, अग्रवाल-सेवक-मंडल आजमगढ़ के संस्थापक और मंत्री, भोजपुरी प्रांतीय साहित्य-सम्मे० के प्रधान मंत्री, हिं०सा० सम्मे० की स्थायी समिति और विश्वविद्यालय-परिषद् के भूत० सद०, युक्तप्रांतीय सरकार द्वारा नियुक्त पत्र-व्यवसाय जाँच-समिति के मनोनीत सदस्य; प्रका०—अग्रवाल जाति का विकास, अपराध और दंड, बंदी की कल्पना, भारतीय वास्तुकला, न नर न नारी, तथा कई बालोपयोगी जीवनियाँ; अप्र०—पुरातत्व-प्रवेश, प्रकृति और विज्ञान; प०—६३।४२, विक्टोरिया पार्क नार्थ, बनारस।

परमेष्ठीदास जैन—ज०—१९०७; शि०—न्यायतीर्थ; सा०—भूत० संपा० 'जैन-मित्र' सूरत और 'वीर' दिल्ली, राष्ट्रभाषा-प्रचार का अच्छा कार्य गुजरात में किया, अध्यक्ष 'जैनेन्द्र प्रेस', संस्था० हिंदी विद्यामंदिर और राष्ट्र-भाषा अध्यापन मंदिर; १९४२ के आन्दोलन में जेल यात्रा; वि०—एक हिन्दी मासिक के प्रकाशन की योजना; प्रका०—जैन-धर्म और साहित्य संबंधी लगभग एक दर्जन पुस्तकें; प०—जैनेन्द्र प्रेस, ललितपुर।

परशुराम चतुर्वेदी, 'जयदेव'—ज०—२५ जुलाई १८९४; शि०—एम० ए० (दर्शन),

एल-एल० बी०; ज्ञा०—अपभ्रंश, फ्रेंच, संस्कृत, बँगला, मराठी; सा०—सद० डिस्ट्रिक्टबोर्ड बलिया —१६३१–३३, सद० बेंच आनरेरी मजिस्ट्रेट बलिया— १६३०–३५, सभा० ग्राम-सुधार-बोर्ड, १६३८-४०, सभा० हिंदी-प्रचारिणी सभा बलिया, संचा०—चलता साहित्य, अध्यापक-साहित्य-विद्यालय, स्वतन्त्रता आंदोलन में सक्रिय भाग; प्रका०—संक्षिप्त रामचरित मानस, मीराबाई की पदावली—संपा०; अप्र०—संतमत व साहित्य, उत्तरी भारत की संत-परंपरा, महात्मा कबीरदास, संत-संदेश आदि०; प०— जौही, भरसर, बलिया।

परिपूर्णानन्द वर्मा—ज०—७ फरवरी, १६०७; शि०—शास्त्री, काशी विद्यापीठ बनारस, इतिहास, अर्थशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र में; सा०—१६२७ में सर्व प्रथम प्रेममहाविद्यालय वृन्दाबन में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक नियुक्त हुए, 'सैनिक' आगरा, दैनिक 'लोकमत' जबलपुर, 'प्रेमा' मासिक जबलपुर, 'सन्देश' काशी, के सम्पादक रहे; आजकल दैनिक 'जागरण' के सम्पादक, अखिल भारतीय-अपराध–निरोधक-समिति तथा उत्तर प्रदेशीय अपराध-निरोधक-समिति के अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश के सभी जेलों के गैर सरकारी जेल-निरीक्षक, हिंदी-भवन कालपी तथा आदर्श व्यायामशाला कानपुर के अध्यक्ष ; कई राजनीतिक, शिक्षणीय तथा साहित्यिक संस्थाओं से सम्बन्ध ; 'पेनल-रिफार्मर' लखनऊ के सम्पादक; प्रका०—हिन्दी में लगभग २४ पुस्तकें लिखीं—जीवन चरित्र, उपन्यास, कहानी, राजनीति शास्त्र पर ; प्रमुख हैं—शिव-पार्वती, वीर अभिमन्यु, रानी-भवानी, प्रेम का मूल्य, मेरी आह, हिन्दू-हित की हत्या, युक्त प्रांत की विभूतियाँ, भारत की विभूतियाँ आदि ; प०— बिहारी-निवास, कानपुर।

परिवज्ञानंद सिंह— ज०— १६२१, शि०—बी० ए० पटना वि० वि०; प्रका०—स्फुट लेख; प०—साहित्य प्रेस, छपरा।

पशुपाल—ज०–१८८०, इंदौर;

प्र०—१६१४; सा०—अवैतनिक संपा० साप्ता० 'आर्यावर्त' इंदौर; प्रका०—जर्मनीमें लोक-शिक्षा, योरप का आधुनिक इतिहास, बर्कले और कैंट का तत्व-ज्ञान, संसार की संघ-शासन-प्रणालियाँ, प्रेम - परीक्षा, अरविंद घोष के पत्र आदि एक दरजन ग्रंथ; प०—'आर्यावर्त'-कार्यालय, इन्दौर।

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'—सा०—भूत० संपादक मासिक 'विक्रम' उज्जैन; प्रका०—चाकलेट, महात्मा ईसा, चुंबन, शराबी, घंटा, बुधुआ की बेटी, दिल्ली का दलाल, चंद हसीनों के खुतूत, माधव महाराज महान्, चार बेचारे, जीजीजी, रेशमी, पंजाब की महारानी; वि०—सिनेमा के लिए भी आपने बहुत-कुछ लिखा है; प०—'मतवाला'-कार्यालय मिर्जापुर।

पारसनाथ शर्मा 'मदनेश'—ज०—२८ जनवरी १६१८; शि०—सा० रत्न; सा०—संस्था० श्री संस्कृत पाठशाला मड़ियाँहू, जनता पुस्तकालय मड़ियाँहू, प्रबन्धक गोशाला; प्रका०—स्फुट; प०—मैदीह, मड़ियाहू, जौनपुर।

पारसनाथ सरस्वती, स्वामी—ज०—१८६६; शि०—प्रेम महाविद्यालय वृन्दावन; ज्ञा०—उर्दू, अँगरेजी, बँगला, गुरुमुखी, गुजराती; सा०—भूत० संपा० 'ज्योति' कलकत्ता, 'बिजली' इटावा, 'सेवक' जोधपुर; प्रका०—अमर-विद्या, जड़ी-बूटी-विद्या, आदि १०० पुस्तकें; वर्त०—संपादक 'मीरा'; प०—जयतिपुर, फफूँद, इटावा।

पारसनाथ सिंह, 'विशारद'—ज०—२० जुलाई १६१२; सा०—स्थानीय 'वेणी-पुस्तकालय' के संस्थापक और मंत्री, बिहार-प्रान्तीय हिंदी-प्रचारिणी सभा के जन्मदाता (१६४१); पटना जिला-पुस्तकालय-संघ की स्थापना १६४१; भूत० संपा० दैनिक 'आर्यावर्त' पटना; प्रका०—आज का गाँव, सुदूरपूर्व की बातें; प०—सहायक संपादक दैनिक 'सन्मार्ग', टाउन हाल, बनारस।

पारसनाथ सिंह—सा०—साप्ताहिक 'हिंदुस्तान' के संपादकीय विभाग में; प्रका०—जगत सेठ-

जीवनी; प०—'हिंदुस्तान', नयी दिल्ली।

पी० के० केशवन नायर—शि०—बी० ओ० एल०; सा०—केरल के भिन्न-भिन्न केन्द्रों में हिंदी-प्रचार, केरल हिन्दी-प्रचार सभा के अधीन प्रचारक, संगठन कर्ता तथा सहा० मन्त्री के पदों पर कार्य, २५ वर्षों से हिंदी-प्रचार में संलग्न; प्रका०—स्फुट; प०—प्रधान आचार्य, महिला विशारद विद्यालय, दक्षिण भारत हिंदुस्तानी प्रचार-सभा, मद्रास।

पी० नारायण—ज०—१९२०; शि०—आगरा, इलाहाबाद, काशी; सा०—१९४२ के आन्दोलन में लखनऊ सेंट्रल जेल में ४ वर्ष तक नजरबंद; प्रका०—स्फुट लेख; प०—कर्नाटक हिंदी विद्यालय, कार्निक रोड, बाराबाँगुदी, बँगलौर।

पीरमुहम्मद यूनिस—सा०—बिहार प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में; उसके अधिवेशनों के सभापति; प्रका०—स्फुट लेख; प०—बेतिया, चंपारन।

पी० वेंकटाचल शर्मा—ज०—१९०९, मैसूर के कोलार जिले में; शि०—राष्ट्रभाषा-विशारद, बँगलौर, मैसूर महाराजा संस्कृत महापाठशाला; सा०—१९३० से हिंदी-प्रचारक, मैसूर और मद्रास में प्रचार; १९४०–४१ में आंध्र कर्नाटक हिंदी विद्यालय अनंतपूर में अध्यापन, हिंदी प्रचार-सभा की ओर से साहित्य-विभाग में काम और पुस्तकों का प्रकाशन-संपादन, दक्षिण भारत हिंदुस्तानी प्रचार सभा के साहित्य-विभाग के व्यवस्थापक, 'हिंदुस्तानी-समाचार' का संपा०, गाँधी जी के नेतृत्व में संपन्न भारतीय साहित्यकार व कलाकार-सम्मेलन में योग १९४६; प०—त्यागराय नगर, मद्रास।

पुखराज पुरोहित—ज०—१९२२; शि०—बी० ए०; सा०—मंत्री, जोधपुर साहित्य सभा; प्रका०—प्रायश्चित, प्यार न कीजिए, विद्या का पत्र; प०—भजन चौकी, जोधपुर।

पुत्तनलाल विद्यार्थी—ज०—३० अक्तूबर १८८५ फरुखाबाद; जा०—उर्दू, हिंदी, फारसी, अँगरेजी; सा०—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के १९०९ से सदस्य,

हिंदी-साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य (१६१२-४१), हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के लखनऊ अधिवेशन के सहकारी मंत्री; थियोसोफिकल सोसाइटी–लाज के सभापति, संस्थापक हिंदी-साहित्य-सभा, जमालपुर; प्रका०—सरल पिंगल; वि०—उच्च सरकारी पद से अवसर प्राप्त करके दक्षिणी भाषाओं और भारतीय दर्शन के अध्ययन के लिए थियोसोफिकल सोसाइटी मद्रास गये हैं; प०—बाग महानारायण, चौक, लखनऊ।

पुरुषोत्तम कुमार—शि०–बी० ए० (आनर्स), जे० डी०; सा०–दैनिक 'अमरभारत' दिल्ली के भूत० सहा० संपा०; प्रका०—स्फुट; प०—जन-संपर्क विभाग (पंजाब), शिमला २।

पुरुषोत्तम चतुर्वेदी—ज०—११ अगस्त १६००; शि०–सा० आ०, शुद्धाद्वैत अलंकार, बनारस क्वींस कालेज; जा०—संस्कृत, हिंदी, पाली, प्राकृत, गुजराती; प्रका०—शुद्धाद्वैतमार्तंड, नवरत्न, वल्लभदिग्विजय, कामाख्य दोष-विवरण, रसगंगाधर, अंबिका परिणयचंपू, छंदोविन्मंडन, छप्पन भोग, संस्कृत भाषा का व्याकरण, ध्वन्यालोकस्तर; वि०–प्रधान संपादक 'भारतीय धर्म'; प०—अध्यक्ष धर्म-संस्कृत–विभाग, मेयो कालेज, अजमेर।

पुरुषोत्तमदास टंडन—हिंदी साहित्य-सम्मेलन में जन्मदाता, उसके 'गाँधी'; शि०—एम० ए०, एल–एल० बी०, डी० लिट्०; सा०—भूतपूर्व अध्यक्ष—'सर्वेंट्स आव पीपुल सोसाइटी', हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, युक्तप्रांतीय कांग्रेस–कमेटी और इलाहाबाद म्युनिसिपैलिटी, उत्तर प्रदेशीय व्यवस्थापिका-सभा के स्पीकर; अखिल भारतीय काँग्रेस के वर्तमान सभापति; हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के आंदोलन के सफल सूत्रधार; हिंदी के सांस्कृतिक और साहित्यिक रूप की रक्षा के प्रबल समर्थक; प्रका०—अनेक स्फुट लेख; वि०—गोरखपुरी नागरिकों ने 'राजर्षि' के रूप में आपके ऋषिवत् त्यागमय, कर्तव्यनिष्ठ, उदार परंतु दृढ़चरित्र काअभिनंदनकिया; प०—क्रास्थवेट रोड, इलाहाबाद।

पुरुषोत्तमदास स्वामी—ज०—३१ जनवरी १९१३; शि०—एम. एस-सी०, एफ० सी० एस०, एफ० जी० ए० एम० एस०, हि० वि०, बीकानेर, काशी, अमेरिका; सा०—राजस्थानी साहित्य विद्यापीठ बीकानेर, ना० प्र० सभा काशी, हि० सा० सम्मे० प्रयाग, इंडियन साइंस कांग्रेस असोसिएशन कलकत्ता, राजस्थान हि० सा० सभा उदयपुर, बीकानेर राज्य सा० सभा, अमेरिकन सिरेमिक सोसाइटी लंदन, सोसाइटी आफ केमिकल इंडस्ट्रीज़, विज्ञान-परिषद् आदि के सम्मानित सदस्य, टाटिया-पुरस्कार-विजेता, प्राध्यापक डूँगर कालेज, बीकानेर; प्रका०—विज्ञान, के पथ पर, स्वास्थ्य—प्रवेशिका, स्वास्थ्य-चंद्रिका, सरल विज्ञान, मेरी अमेरिका-यात्रा, भूगर्भ–विज्ञान-कुंभकार–विज्ञान, औद्योगिक रसायनशास्त्र; वर्त०—राजस्थान सिरेमिक वर्क्स की स्थापना में संलग्न; प०—शान्ति-आश्रम, बीकानेर।

पुरुषोत्तम मेनारिया—ज०—नवम्बर १९२३ ; शि०—साहित्य रत्न ; सा० — प्रबन्ध-संपादक 'शोध-पत्रिका', संचालक विद्यापीठ सरस्वती-मन्दिर और प्राचीन साहित्य-शोध-संस्थान ; प्रका०—राजस्थानी-भील - कहावतें, राजस्थानी लोकगीत, चारणगीत-माला; प०—अध्यापक उदयपुर विद्यापीठ-कालेज, उदयपुर।

पुरुषोत्तम शर्मा 'विमल'—ज०—१९११ ; प्र०—'चित्रण'; सा०—चम्पारन जिला हिन्दी सा० सभा के सह० मन्त्री एवं अध्यक्ष, बिहार प्रादेशिक हि० सा० सम्मे० की स्थायी समिति के सद०, महाराजा नवल किशोर साहित्य-परिषद् बेतिया के प्रधान मन्त्री, साहित्यिक व्यक्तियों की टोलियाँ बनाकर ऐतिहाहिक तथ्यों की खोज; प्रका०—झंझा (राष्ट्र० कवि०), चित्रण, तारों की रात, रजकण, टहनी और कवि (उप०), राजस्थानी लोकगीत ; प०—राम मड़ैया, बेतिया, चंपारन।

पुल्लाट लक्ष्मी कुट्टी कुमारी—ज०—५ जनवरी १९१६; शि०—बी०एस-सी० मद्रास वि०वि०, एम० ए० (हिन्दी) काशी वि० वि०,

विशारद ; सा०—महिला-समाज में कार्य; प्रका०—स्फुट रचनाएँ; वर्त०— अध्यापिका, कालेज, ट्रिचूर, कोचीन राज्य।

पुष्पा भारती — ज०— १ जून १६२२; सा०—हिन्दी विद्यालय, मेरठ की स्थापना की ; प्रका०–इनकलाब (कहानी संग्रह); अप्र०—परिवर्तन ; प०—१६२, गंज बाजार, मेरठ ।

पूरनचंद सीसोदिया—सा०—हिंदी प्रचार-सभा हैदराबाद् के शिक्षा-मंत्री—१६४७-४६, सभा के अंतर्गत विवेक-वर्द्धिनी हाई-स्कूल-वर्ग के संचालकों में; प्रका०–स्फुट कविताएँ और वैज्ञानिक लेख; वि०—सभा की सेवा में नियमित भाग लेते हैं; प०—अध्यक्ष स्वास्थ्य-विभाग, हैदराबाद (दक्षिण)।

पूर्णचन्द्र जैन—ज०–१६१०; शि०—एम० ए०, सा० र० ; सा०—अवैतनिक अध्यापक हि० सा० पाठशाला, पदाधिकारी हि० सा० परिषद् ; भूत० संपा० 'लोकवाणी' साप्ताहिक, अध्यक्ष जयपुर राज्य प्रौढ़ शिक्षा-समिति, संपा—'लोकवाणी' (राष्ट्रीय दैनिक), मंत्री जयपुर राज्य प्रजा-मण्डल, तथा जयपुर जिला-कांग्रेस ; प्राध्यापक महाराजा कालेज, जयपुर ; प्रका०—बुधजनविलास ; अप्र०—सुमन-ग्रन्थि, प्रतापी-प्रताप; वर्त०–प्रधान सम्पादक, दैनिक 'लोकवाणी', जयपुर, प०—कुंदीगरों के भैरु का रास्ता, जयपूर।

प्यारेलाल गर्ग—ज०—२१ मई १८८४; शि०—एल० ए-जी प्रयाग वि० वि० ; सा०—नागरी प्रचारिणी सभा के १६१६ से सदस्य ; प्रका०—कृषि - शब्दावली; अप्र०—गोरस व गोवर्द्धन-शास्त्र, कृषि की उन्नति के पाठ, खेती का काम और उसके यंत्र आदि कई ग्रंथ ; प०— अध्यापक कृषि-विद्यालय, कानपुर।

प्रकाशचंद गुप्त—ज०—१६०८ अनूप शहर ; शि०—एम० ए० प्रयाग विश्वविद्यालय; प्रका०—नया हिंदी-साहित्य—आलो०;अप्र०—निबंधों और एकांकियों के दो-तीन संग्रह; प०—अध्यापक, अँगरेजी - विभाग, विश्वविद्यालय, प्रयाग।

प्रकाशचंद यादव—ज०—१६१५ प्रयाग ; शि०—सा० रत्न; सा०—ग्रामसेवासंघ के सभापति, यादवशिक्षा-समिति के मंत्री, भूत० संपादक 'यादव-संदेश', 'जागृति', 'सिपाही'; अ० भा० समाचारपत्र-प्रदर्शनी के संयोजक, जवाहरगंज कन्या-पाठशाला के प्रबंधक ; प्रका०— विश्वविवाह-प्रणाली, महापुरुषों के कल्याणकारी उपदेश, व्यक्तिगत व्यायामपद्धति; प०—ठि० इंडियन प्रेस (बुक-डिपो), प्रयाग।

प्रकाशवती पाल— प्रसिद्ध कहानीकार श्री यशपाल की विदुषी पत्नी ; शि०—लाहौर; सा०—कई वर्षों तक क्रांतिकारी दल की सदस्या रहीं; 'विप्लव' और 'विप्लवी ट्रैक्ट' की प्रकाशिका; विप्लव-पुस्तकमाला (६ पुस्तकें निकल चुकी हैं) की संचालिका; प०—'विप्लव'-कार्यालय, शिवाजी मार्ग, लखनऊ।

प्रतापनारायण पुरोहित—ज०—१ जनवरी १६०१; शि०—बी०ए०, कविरत्न, सा० भू० तामीज़ी सरदार, मेयो कालेज अजमेर, महाराजा कालेज जयपुर, आगरा कालेज आगरा; प्रका०—नल-नरेश, काव्य-कानन, मन के मोती, नव-निकुंज, श्री रामार्चन, मणियों की माला, मंदाकिनी, काव्यश्री, वि०—इँगलैंड, फ्रांस, इटली आदि देशों में भ्रमण किया; वर्त०—अध्यक्ष महकमा पुण्य, राज्य सवाई, जयपुर ; प०—सिनवार हाउस, गनगौरी बाजार, जयपुर।

प्रतापनारायण श्रीवास्तव—शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; प्रका०—विदा, विजय—दो भाग, विकास, निकुंज, आशीर्वाद; प०—ठि० गंगापुस्तक-माला, लखनऊ।

प्रतापसिंह कविराज—ज०—२ जून १८६२; शि०—वैद्यरत्न, रसायनाचार्य, मद्रास, कलकत्ता; सा०—अखिल भारतीय आयुर्वेदिक सभा के सभापति १६३४, काशी वि० वि० की आयुर्वेदिक फार्मेसी के अध्यक्ष; प्रका०—महामंडल-जयंतीग्रंथ, खनिज-विज्ञान, स्वास्थ्य-सूत्रावली, संक्षिप्त विषविज्ञान, प्रसूतिपरिचर्या, जच्चा, प्रतापकथाभरण; प०— प्रताप-पार्क, काशी।

प्रफुल्लचंद ओझा 'मुक्त'—सा०—भूत० संपा० साप्ताहिक 'बिजली' पटना और मासिक 'आरती' पटना; प्रका०—पतझड़, पाप-पुण्य, संन्यासी, लालिमा, धारा, तलाक, जेलयात्रा, दो दिन की दुनिया; प०—आरती प्रेस, पटना।

प्रभाकर—ज०-१९१०; प्रका०-संक्षिप्त हिंदी-व्याकरण, संस्कृत-सुधाकर ; प०—मारवाड़ी कमर्शियल हाई स्कूल, गजदर स्ट्रीट, बंबई २।

प्रभाकर माचवे—ज०—२६ दिसंबर १९१७; शि०—एम० ए० (दर्शन, अँग्रेजी), सा० र० रतलाम इन्दौर, आगरा ; प्र०—१९३४ ; प्रका०—जैनेन्द्र के विचार १९३७, कमीनों का साया १९४६, तार-सप्तक, आधुनिक हिंदी - साहित्य में आलोचनात्मक लेख, शासन-शब्द-कोश ; चि०—उत्तर भारत की सभी भाषाओं और मराठी के जानकार ; प०—१८, हेस्टिंग्ज रोड, इलाहाबाद।

प्रभाकरराव— सा०— हैदराबाद सभा के अंतर्गत हिंदी-प्रचार और अध्यापन-कार्य; प्रका०—स्फुट; प०—जालना, औरंगाबाद (दक्षिण)।

प्रभातकुमार बनरजी—सा०—शांति-निकेतन हिं० सा० मंदिर, नागपुर के सभा०; प्रका०—स्फुट कहानियाँ ; प०—शिवानंदधाम, श्रद्धानंद नगर, नागपुर।

प्रभा पारीक—ज०—१२ मई १९२५ ; शि०—बी० ए० आगरा वि० वि० ; प्रका०—जागरण (नाटक) ; अप्र०—प्रतिशोध ; प०—सिविल लाइंस, मुरादाबाद।

प्रभावतीदेवी—ज०—१९२१, गाजीपुर ; प्रका०—सोहर (ग्राम-गीत) तथा अन्य संग्रह ; प०—भदैनी, काशी।

प्रभुदयाल अग्निहोत्री —ज०—२०जूलाई १९१४; शि०—आचार्य, व्याकरण-शास्त्री, सा० र० ; सा०—विदर्भप्रांतीय हिंदी साहित्य-सम्मेलन के संस्थापक, मध्यप्रांतीय हि० सा० सम्मे के प्रधान मंत्री, उपाध्यक्ष विद्यामंदिर हाई स्कूल ; भगतसिंह और मतीन्द्र-नाथ आदि क्रान्ति कारियों से संपर्क; प्रका०—उच्छ्वास, अरुणिमा,

वैदिकधर्म, समर्पिणी, आधुनिक संस्कृत शिक्षण-प्रणाली, आधुनिक हिंदी-काव्य-धारा, धर्म और समाजवाद; अप्र०—मृच्छकटिक, भरत के 'नाटय शास्त्र' का अनुवाद; वि०—'आकाश बिहारी शास्त्री' के नाम से यदाकदा व्यंग्य लेख लिखते हैं ; प०—विद्या मन्दिर मारवाड़ी सेवासदन, अकोला, बरार ।

प्रभुदयाल बाजपेयी 'अभिराम'—ज०—१९०३ ; सा०—मंत्री, साहित्य-परिषद् कानपुर, सभापति प्रतिमा-परिषद्, भूत० प्रबन्धक डिस्काउंट बैंक आफ इंडिया कानपुर, अभिराम - पुस्तकमाला का प्रकाशन; प्रका०—मुक्त संगीत, विजया, सत्याग्रह-विगुल; अप्र०—अम्बर (कविता संग्रह) ; प०—५०।१३ नौघड़ा, कानपुर ।

प्रभुदयाल मीतल—ज०—१९०२ मथुरा; सा०—भूत० संपा. 'आदर्श हिंदू', व्रजभाषा-साहित्य के अनुसंधान में विशेष परिश्रम किया, 'व्रज-साहित्य-मंडल' के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता;प्रका०—अष्टछाप-परिचय (जिस पर शुद्धाद्वैत एकेडमी से भारतेन्दु पुरस्कार प्राप्त हुआ), पंजाब का हत्याकांड, राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास, राजपूती कथाएँ, मेवाड़ की अमर गाथाएँ, व्रज-भाषा-साहित्य का नायिका-भेद, सूर-निर्णय, व्रजभाषा साहित्य का ऋतु-सौंदर्य; अप्र०—हिंदी का कृष्ण-काव्य, प्राचीन हिंदी साहित्य का इतिहास , व्रज-भाषा-साहित्य की रूपरेखा; प०—अग्रवाल-भवन, मथुरा ।

प्रभुदयाल सिंह 'अमर'—ज०—१९२५; शि०—बी. ए., एल-एल. बी., विशारद, नागपुर और सागर वि० वि० ; सा०—'सावन-भादों' के संपा० ; प्रका०—स्फुट ; प०—वकील, डाकबँगले के पास, गोंदिया, मध्यभारत ।

प्रवीणचंद्र शास्त्री—ज०—१९०६ ; शि०—एम० ए०, सा० र० ; सा०—सद० फैकल्टी आव आर्टस टेक्स्टबुक कमेटी आगरा वि० वि०, राजपूताना वि० वि०; उप-सभा० जयपुर टीचर्स एसोसियेशन, जैनपरिषद्;संचा०महाराजा कालेज, आजीवन सदस्य भंडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट पूना ;

प्रका०—राजस्थान के साहित्यकार, महाराजा मानसिंह प्रथम, राजस्थानी सैनिक, संस्कृत अलंकारों की उत्पति और विकास, मार्क्स के नाटकों की प्रामाणिकता, व्याकरण-तत्व ; प०—सरस्वती-सदन, अजमेरी गेट, जयपुर ।

प्रवीण दीक्षित—ज०-१६१६ फतेहपुर ; सा०—भूत० संपा० 'राष्ट्रपरिवार' (साप्ता०); प्रका०—काव्य-सुधा ; अप्र०—साहित्य-समीक्षा, प्रेमदान, वीणा ; वर्त० —धर्म्मपद का पद्यानुवाद कर रहे हैं ; प०—पटकापुर, कानपुर ।

प्रसिद्धनारायण सिंह—ज०-१ जून १६०४ ; सा०—तीन बार जेलयात्रा; जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य ; प्रका०—बलिया के कवि और लेखक ; प०—मुख्तार, बलिया ।

प्रहलादचन्द्र जोशी—ज०—१६२० ; सा०—भूत० संपा० 'जनयुग', 'प्रजा-सेवक', 'युगांतर' (जोधपुर) ; प्रका०—लालो की राखी, जीवनदान, सोवियत की वीर नारियाँ (अनु०), सामंती जाल से सावधान ; वर्त०—संपा० 'रियासती' ; प०—बनियावाड़ा, जोधपुर ।

प्रभु नारायण त्रिपाठी 'सुशील'—ज०—१६००; सा०—प्रजाबंधु-समिति, प्रजाबंधु-पुस्तकालय, प्रजाबंधु - औषधालय, बाल-मंडल आदि के संचा०, मंडल-कांग्रेस कमेटी के भूत० मंत्री; भूत० अध्यापक पबलिक हाई स्कूल शिवराजपुर; प्रका०— राष्ट्रपति जवाहर, निद्राविज्ञान, आजादी के शहीद; प० -मरियानी, चौबेपुर, कानपुर ।

प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय'-ज०—१६०४, बलपुर, जयपुर; शि०—सा० र० प्रयाग, जयपुर; सा०—पहले कौंसिल आफ स्टेट जयपुर के सेक्रेटरिएट में, फिर होम डिपार्टमेंट में तथा रेविन्यु डिपार्टमेंट में काम; प्रका०—विचारवैभव, पद्यप्रताप, वेणीसंहार, कल्याणीकृष्णा, योगेश्वर, साहित्य - सरिता, साहित्य - मणिमाला, स्वास्थ्यसरोज, स्वास्थ्यसुधा, स्वास्थ्य-नियम, बलिवेदी, प्रेम-समाधि, कायापलट, विस्मृत कुसुम, मंजुमयूख, सप्तस्वर, भारतीय शिल्प,

सेतुनिर्माण - कला, वास्तुकला (अप्र०); प०—महाराजा कालेज, जयपुर।

प्रयागनारायण 'संगम'—ज०—१८८७; **सा०**—भूत० प्रधान अध्यापक, मिडिलस्कूल, इंदौर; **प्रका०**— श्रुति–बोध, होल्कर राज्य का भूगोल; **अप्र०**--कविता-संग्रह ; **वि०**—महाराज इंदौर ने आपकी व्याख्यान-पटुता पर प्रसन्न होकर 'रायरतन' की उपाधि दी;प०—ठाकुर-प्रेम-कुटीर, पलासिया, इन्दौर।

प्रवासीलाल वर्मा मालवीय, 'मालव-मधुकर' 'मस्ताना'–ज०—१८६७; जा०—अँगरेजी, उर्दू, बँगला, मराठी, गुजराती, संस्कृत, पंजाबी; **सा०**—भूत० संपा० 'धर्माभ्युदय', 'मुनि', 'कैलाश', 'जागरण', 'मस्ताना', 'हंस', 'साधना' आदि साप्ताहिक तथा मासिक; हिंदी-साहित्य-मंडल नामक प्रकाशन संस्था के संस्थापक; **प्रका०**—वृक्ष-विज्ञान-शास्त्र, कर्मदेवी, अग्नि-संसार, जंगल की भयंकर कहानियाँ, मूर्खराज, पाटन की प्रभुता, कुमुद-कुमारी, सप्तपर्ण, एकादशी का उपवास, गरम तलवार, राजाधिराज, पृथ्वी-वल्लभ, गुजरात का नाथ; प०—आर्यमित्र-प्रेस, हिल्टन मार्ग, लखनऊ।

प्राणनाथ सेठ—**सा०**—लाहौर के 'वीरभारत' और 'विश्वबन्धु' तथा दिल्ली के 'अमर भारत' आदि दैनिकों के संयुक्त संपादक; **प्रका०**—स्फुट लेख और कहानियाँ; **प०**—अध्यक्ष सूचना-विभाग, पंजाब सरकार, शिमला।

प्रियबन्धु शर्मा—सा०—हिंदी-प्रचारक, स्थानीय रात्रि-पाठशाला (हिंदी) में प्रधानाध्यापक, स्थानीय हिंदी-प्रचार-सभा की स्थायी समिति के सदस्य; प०—हिंदी-प्रचार-सभा, हैदराबाद (दक्षिण)।

प्रेमचंद श्रीवास्तव—ज०—१७ अगस्त १९१७; **शि०**—एम० ए० (अँग्रेजी और अर्थशास्त्र) बी० टी० काशी वि० वि०; **सा०**—भूत० प्राध्यापक अर्थ-वाणिज्य महाविद्यालय नागपुर; कार्यकर्ता, रा० भा० प्र० स० वर्धा;**प्रका०**—स्फुट; प०—प्राध्यापक, अर्थ-वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर।

प्रेमनारायण अग्रवाल—शि०—एम०ए०, प्रयाग; **सा०**—प्रयागी लेखक-संघ के संस्थापकों और मासिक 'लेखक' के संपादकों में, संघ के डेढ़ वर्ष तक भूत० मंत्री, इंडियन कलोनियल एसोसियेशन के १९३२ से ४० तक प्रधान मन्त्री; देशी-विदेशी अनेक पत्रों में आपके लेख प्रकाशित होते हैं, 'बाँबे क्रानिकल', 'मार्निंग स्टैंडर्ड' और 'सनडे स्टैंडर्ड' के संपादकीय विभागों में काम किया; **प्रका०**—प्रवासी भारतीयों की समस्या, स्वामी भवानी दयाल संन्यासी; **अप्रका०**—सार्वजनिक कार्य-कर्ता और उनकी आय के साधन, व्यावहारिक पत्रकार-कला, युवकों का विवाहित जीवन, युवकों की समस्याएँ; **प०**—अजीत-महल, इटावा।

प्रेमनारायण टंडन—ज०—१३ जनवरी, १९१५; **शि०**—बी० ए० लखनऊ वि० वि०, एम० ए० आगरा वि० वि०, सा० रत्न, एम० आर० ए० एस० (लंदन); **सा०**—५ जनवरी १९३७ से कालीचरण इंटरकालेज में अध्यापक, जातीय मासिक 'खत्रे-हितैषी' के भूत० संपा० १९३६–४१; हिंदी-सेवी-संसार के संपा०; बालोपयोगी पाक्षिक 'होनहार' के वर्तमान संपा०; विद्यामंदिर नामक प्रकाशन-संस्था और विद्यामंदिर-प्रेस के संस्थापक; १९४६ से लखनऊ विश्वविद्यालय के मोदी-स्कालर, व्रजभाषा-सूर-कोश बनाने के लिए छात्र-वृत्ति मिली; 'प्राचीन हिंदी-गद्य' पर पी-एच० डी० के लिए थीसिस लिख रहे हैं; हिंदी साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति और विश्वविद्यालय-परिषद के भूत० सदस्य (१९४७-४८), रायल-एशियाटिक सोसाइटी लंदन के वर्तमान सदस्य; **प्र०**—अक्टूबर १९३५; **प्रका०**—आलो०—द्विवेदी-मीमांसा, प्रेमचंद और ग्राम-समस्या, प्रताप समीक्षा, हमारे गद्य-निर्माता, साहित्य परिचय, हिंदी-साहित्य का छात्रोपयोगी इतिहास, हिंदी साहित्य की रूप-रेखा, सूर : जीवनी और ग्रंथ, चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन, स्कंदगुप्त : एक अध्ययन, अजातशत्रु : एक अध्ययन, गोदान : एक अध्ययन, गबन : एक अध्ययन, निर्मला : एक

अध्ययन; संपा०—ब्रजभाषा : सूर-कोश (प्रथम और द्वितीय खंड प्रकाशित), साकेत-समीक्षा, पुण्य स्मृतियाँ, साहित्यिकों के संस्मरण, प्रेमचंद : कृतियाँ और कला, हिंदी-सेवी-संसार, भँवरगीत (नंददास), सूर : गोपीविरह और भँवरगीत, सुदामाचरित, सूर-रामायण, पद्मावती समय (रासो से), गद्य-रत्न-मालिका, पद्य-रत्न-मालिका, कामायनी-मीमांसा, साहित्यिक पारिभाषिक शब्दावली, रहस्यवाद और हिंदी कविता ; नाटक—प्रेरणा, संकल्प, कर्मपथ; विविध—तुलसी के राम, रेखाचित्र, हास्य और विनोद, हमारे अमरनायक; बालो०—'बालबंधु' उपनाम से चौपट चौधरी, गाँधी जी से क्या सीखें आदि लगभग डेढ़ दरजन पुस्तकें; प०—रानीकटरा, लखनऊ।

प्रेमनारायण त्रिपाठी 'प्रेम'—ज०—१७ मई १९०२, गढ़ाकोटा, सागर; शि०—का० भू०; प्रका—सामुद्रिक शास्त्र; अप्र०—हस्तरेखा-शास्त्र, प्रेमपद्यावली; प०—मंत्री 'कवि-समाज', जबलपुर।

प्रेमनारायण माथुर—ज०—१५ अक्टूबर १९१३ कुरावड़ (मेवाड़); शि०—एम० ए०, बी० काम, महाराणा कालेज उदयपुर, एस० डी० कालेज कानपुर ; प्रका०—प्रारंभिक अर्थशास्त्र, गाँवों की समस्या ; अप्र०—अर्थ-शास्त्र के सिद्धांतों पर पूँजीवाद ; प०—प्रोफेसर, वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर।

प्रेमनारायण शुक्ल—ज०—१४ अगस्त १९१४; शि०—एम० ए० आगरा वि० वि०; वहीं से 'सूर' पर रिसर्च दो वर्ष तक कर चुके हैं; सा०—आचार्य शुक्ल-साधनामंदिर की स्थापना; १९४६ से 'रामराज्य' साप्ताहिक का संचालन ; प्रका०—स्फुट ; वर्त०—अध्यापक डी० ए० वी० कालेज, कानपुर; प०—१९।४४ पटकापुर, कानपुर।

फूलचंद शास्त्री—शि०—सिद्धांतरत्न ; सा०—वाणीग्रंथ-माला के संयुक्त मंत्री; प्रका०—तत्वार्थसूत्र, प्रेममयरत्नमाला, शांति-सिंधु ; अप्र०—जैन-धर्म और दर्शन-संबंधी कई ग्रंथ; प०—संपादक 'ज्ञानोदय', बनारस।

फूलदेव सहाय वर्मा—ज०—१८६१ ; शि०—एम० एस-सी०, ए० आई०, आई० एस-सी० पटना कालेज, पटना विश्वविद्यालय और प्रेसीडेंसी कालेज कलकत्ता, बँगलौर के इंडियन इंस्टीट्यूट आव साइंस से रासायनिक विषयों पर अनुसंधान करके उपाधि पायी; सा०—विज्ञान-परिषद्, प्रयाग के सभापति ; ना० प्र० सभा काशी के वैज्ञानिक कोश के सहायक संपा० , 'गंगा' के विज्ञान-अंक का बड़ी कुशलता से आपने संपादन किया था ; हिं० सा० सम्मे० के शिमला अधिवेशन, और बिहार प्रां० सम्मे० के आरा-अधिवेशन के विज्ञान-विभाग के सभापति; प्रका०—प्रारंभिक रसायन (दो भाग), साधारण रसायन(दो भाग), मिट्टी के बरतन, वैज्ञानिक शब्द-कोश ; अप्र०—अमेरिका, जर्मनी और भारत के पत्र-पत्रिकाओं में छपे वैज्ञानिक लेखों के कई संग्रह; वि०—कई पुस्तकें अँगरेजी में भी लिखी हैं ; प०—अध्यापक, रसायन-विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय, काशी ।

बख्तावरसिंह — सा० — निःशुल्क शिक्षा देकर हिंदी-प्रचार का कार्य किया, रजाकारी दिनों में बाधाओं के बीच प्रचार और शिक्षा का क्रम चलाते रहे; प्रका०—स्फुट रचनाएँ; प०—हिंदी-प्रचार-सभा, खैरताबाद, हैदराबाद (दक्षिण) ।

बचानसिंह पँवार 'कुमुदेश'—ज०—१६१४; शि०—सा० रत्न; प्रका०—आधुनिक हिंदी साहित्य पर एक दृष्टि, सूरज-विनोद ; अप्र०—अंबर ; प०—मुजफ्फरपुर, सिधौली, सीतापुर ।

बच्चनसिंह—ज०—१ जनवरी १६१६; शि०—एम० ए० (हिंदी) काशी वि० वि० ; सा०—काशी ना० प्र० सभा की प्रबन्ध समिति के सद० और पुस्तकालय की उप-समिति के संयोजक ; प्रका०—क्रान्तिकारी कवि निराला ; अप्र० —इतिहास के पन्ने, स्कूल मास्टर; वर्त०—रिसर्च स्कालर ; प०—डी० ए० वी० हायर सेकेंडरी स्कूल, काशी ।

बच्चीलाल गुप्त 'योगेंद्र'—ज०१६१२, बराटा, झांसी ; प्रका०

—शिक्षा-सरोज-काव्य ; अप्र०—विश्वभारती, प्रेम-प्रमोद, ज्ञानप्रदीप; प०—चिरगाँव, झाँसी।

बजरंगलाल सुलतानिया—ज०—१६१६ रुदौली, बाराबंकी ; शि०—फैजाबाद ; लेख०—१६३५; भूत० संपादक 'सुकवि' १६३६-४०; प्रका०—स्फुट ; प०—पो० जलालपुर, फैजाबाद।

बदरीदत्त झा—ज०—१६०८; शि०—ए० एम० एस० ; सा० 'सुधानिधि' का कई वर्षों से संपादन कर रहे हैं; प्रका०—आयुर्वेद संबंधी कई पुस्तकें; प०—प्रोफेसर, बुंदेलखंड आयुर्वेदिक कालेज, झाँसी।

बदरीनारायण शुक्ल—ज०—१० सितंबर १६१० कटनी; शि०—एम० ए०, बी० टी० जबलपुर ; प्र०—१६३०; प्रका०—कुंदजेहन, शास्त्रीसाहब ; अप्र०—कथाकुंज ; प०—अध्यापक राजकुमार कालेज, रायपुर।

बद्रीप्रसाद सारस्वत—ज०—१६१५ अछनेरा (आगरा); शि०—एम० ए० (इति०), एम० ए० (हिंदी), एल-एल० बी० (प्रथमश्रेणी); सा०—नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति; प्रका०—सुदामा चरित्र; वर्त०—सबडिप्टी इंसपेक्टर आव स्कूल्स ; प०—जयपुरा, इटावा।

बद्रीविशाल पित्ती—सा०—हैदराबाद हिंदी-प्रचार-सभा के सहा० मंत्री १६४६, मारवाड़ी नवयुवक मण्डल (प्रकाशन-विभाग), कमर्शल प्रेस हैदराबाद 'चेतना-प्रकाशन' आदि के संचालक, 'कल्पना' (द्वैमासिक) के संपादकों में ; प्रका०—रजकण—कहा०; अप्र०—सप्तमी— कहा०; झाँसी की रानी—नाटक; प०—मारवाड़ी नवयुवक मण्डल, मारवाड़ी बाजार, हैदराबाद (दक्षिण)।

बनारसीदत्त शर्मा 'सेवक'—सा०—संपादक 'स्वतंत्र' साप्ताहिक झाँसी, 'सचित्र दरबार' 'विद्यावती पुस्तकमाला' यूनीवर्सल प्रेस आव इंडिया से निजी पुस्तकों का प्रकाशन; प्रका०—उप०—नर और नारी, रोटी, मनोरमा, वैशाली, पथभ्रष्ट, बड़ा आदमी, गुलाबी रातें, अचल की आँखें, जीवन : एक खेल—कहा०; हारजीत—गीत;

अप्र०—भला आदमी, सरगम ; वर्त०—डायरेक्टर अजंता कार्पोरेशन लिमिटेड, एलोरा फाइनेंस ऐंड कामर्स लिमिटेड, 'बड़ा आदमी' चित्रपट पर ला रहे हैं ; प०—मैनेजिंग डायरेक्टर, सेवक आर्ट प्रोडक्शन लिमिटेड, दिल्ली : अथवा बंबई ।

बनारसीदास चतुर्वेदी—जा०—१८९२; शि०—आगरा कालेज में इंटर तक ; सा०—फरुखाबाद हाई स्कूलमें अध्यापक १९१३-१४ ; डेली कालेज इन्दौर में अध्यापक १९१४-२० ; शांतिनिकेतन में दीनबन्धु सी० एफ० ऐंड्रूज के साथ १९२०-२१ ; गुजरात राष्ट्रीय विद्यापीठ अहमदाबाद में अध्यापक १९२१-२५ ; तभी साबरमती आश्रम में प्रवासी भारतीयों का कार्य ; 'आर्यमित्र' तथा 'अभ्युदय' के सम्पादकीय विभागों में—१९२७ ; 'विशाल भारत' के सम्पादक १९२८-३७ ; टीकमगढ़ी श्रीवीरेंद्र केशव साहित्य-परिषद् के प्रधान १९३७ ; पाक्षिक 'मधुकर' के सम्पादक १९४० से; प्रवासी भारतीयों के सम्बन्ध में आंदोलन कार्य १९१४-३४ ; इंडियन नेशनल कांग्रेस के प्रतिनिधि होकर ईस्ट अफ्रिका गये १९२५; समय-समय पर प्रवासी भारतीय, घासलेट-साहित्य-विरोधी, साहित्य और जीवन, विकेंद्रीकरण, जनपदीय कार्यक्रम, बुंदेलखंड प्रान्त-निर्माण, पत्रकार और लेखक-समस्या, अराजकवाद, सेतुबन्ध आदि आंदोलनों में सोत्साह कार्य किया ; शान्तिनिकेतन में हिन्दी-भवन, कांग्रेस में विदेशी विभाग और साहित्य-सम्मेलन में सत्यनारायण कुटीर की स्थापना करायी ; प्रका०—प्रवासी भारतवासी, भारतभक्त ऐंड्रूज, सत्यनारायण कविरत्न, रानडे, केशवचन्द्रसेन, हृदयतरंग (संग्रह), फिजी की समस्या, फिजी में भारतीय प्रतिज्ञाबद्ध कुली-प्रथा, राष्ट्रभाषा, ट्रैक्ट—एमा गोल्डमैन, लुई माइकेल, प्रिंस क्रोपाटकिन, माइकेल बाकूनिन आदि; वि०—अपने ग्रन्थों से विशेष आर्थिक लाभ उठाने का आपने प्रयत्न नहीं किया ; सर्वसाधारण के लिए अपनी रचनाओं का मुद्रणाधिकार स्वतंत्र कर रखा है ; समय-समय

पर अनेक साहित्य-संस्थाओं के सभापति भी रहे हैं; प्राचीन भारतीय उत्सवों के उद्धार और प्रचार की आशा से प्रतिवर्ष आप वसंतोत्सव की आयोजना करते हैं; प०—टीकमगढ़, झाँसी।

बनारसीदास जैन—ज०—१८८६ लुधियाना; शि०—एम० ए०, पी-एच० डी०; प्रका०—अर्धमागधी रीडर, हिन्दी व्याकरण, जैन-जातक, प्राकृत-प्रवेशिका, फोनोलोजी आव पंजाबी, कैटलाग आव मैनस्क्रिप्ट्स इन दी पंजाबी जैन भांडार, पंजाबी जबान का लिट्रेचर—फारसी।

बनारसी प्रसाद भोजपुरी—ज०—१९०४; शि०—सा० र०; सा०—भूत० सह० संपा०—'स्वाधीन भारत' आरा, 'आर्य महिला' काशी, 'बालकेसरी' आरा; शाहाबाद जिला-साहित्य-सम्मेलन के संयुक्त मन्त्री; राष्ट्रीय आन्दोलनों में जेलयात्रा; प्रका०—भंडाफोड़, मेरे देशभक्त, मेरे देवता राम का फैसला, समाज का पाप, गरीब की आह, आदर्श गाँव, मैदानेजंग; प०—डि० बोर्ड प्रेस, आरा।

बनारसीलाल 'काशी'—शि०—बी० ए०, सा० र०; सा०—कई स्थानो में सम्मेलन-परीक्षा-केंद्र के स्थापक; प्रका०—रामायण के उपदेश, हिन्दी-पाठमाला; प०—प्रधान हिन्दी अध्यापक, सरल हाई स्कूल, तिलौथू, शाहाबाद।

बम्बहादुर सिंह नैपाली 'मगन'—ज०—देहरादून १९१७; शि०—बेतिया; प्रका०—फुटबाल नियमावली, फुटबाल, फुटबाल-संसार, चम्पारन का इतिहास तथा संजीवन; प०—पेशकार, रामनगर राज्य, चम्पारन, बिहार।

बलदेव उपाध्याय—ज०—१८९९ बलिया; सा०—संस्कृत के अनेक ग्रन्थों के शुद्ध संस्करण निकाले, विशेष रूप से 'काव्यलंकार' और 'भरत नाट्यशास्त्र' का शुद्ध सुलभ संस्करण प्रस्तुत किया; प्रका०—रसिक गोविंद और उनकी कविता, सूक्ति-मुक्तावली, संस्कृत-कविचर्चा, भारतीय दर्शन, शंकर-दिग्विजय, आचार्य सायण, बौद्धदर्शन-मीमांसा—इसपर २१००) का डालमिया पुरस्कार और १२००) यू० पी० सरकार द्वारा प्राप्त, आर्य-

संस्कृति के मूलाधार, भारतीय साहित्य-शास्त्र—२ खंड ; प०—संस्कृताध्यापक, हिंदू विश्वविद्यालय, काशी।

बलदेव प्रसाद मिश्र—ज०—काशी; सा०—'रक्षक' के भूतपूर्व सम्पा० और 'सरिता' के सम्पा० मंडल में हैं ; प्रका०—शवसाधन, उलूकतंत्र; प०—'सरिता'-कार्यालय, काशी।

बलदेवप्रसाद मिश्र 'राजहंस'—ज०—१२ सितंबर १८६८; शि०—एम्० ए०, एल-एल० बी, डी० लिट् प्रयाग और नागपुर विश्वविद्यलय; सा०—कई साहित्यिक, सामाजिक तथा लोकसेवी संस्थाओं के सभापति; प्रका०—शंकर-दिग्विजय, शृंगारशतक, वैराग्यशतक, असत्य संकल्प, वासववैभव, जीवन-विज्ञान, साहित्यलहरी, गीतासार, कोशलकिशोर, मादक प्याला, मृणालिनी-परिणय, समाजसेवक, तुलसी-दर्शन, जीवन-संगीत, मानस-मंथन; प०— आचार्य डिग्री कालेज, विलासपुर।

बलदेवप्रसाद मेहरोत्रा—ज०—१६२३; शि०—बी० ए० काशी वि० वि०, सा० लं०; सा०—मंत्री राष्ट्रभाषा विद्यालय काशी; प्रका-स्फुट; प०—ठि० श्री लक्ष्मीचंद मेहरोत्रा वकील, काशी।

बलदेवराज शर्मा 'उपवन'—ज०—४ नवंबर १६११; सा०—भूत० संपा० 'सरिता, वर्त० संपा० 'महाशक्ति'; प्र०—१६३६; प्रका०-स्फुट ; प०—महाशक्ति-कार्यालय, काशी।

बलभद्र पति—ज०—१६१४; सा०—संस्था० हि० सा० परिषद; प्रका०—स्फुट; प०—पिंजरा-पोल, नई बस्ती, राँची।

बलभद्रप्रसाद गुप्त 'रसिक'—सा०—'अंगूर के गुच्छे' बालोपयोगी त्रैमासिक के संपादक; प्रका०—स्फुट बालोपयोगी रचनाएँ; प०—अध्यापक, विद्या-मंदिर, प्रयाग।

बलभीमराव शर्मा—शि०—हिंदीभूषण; सा०—जोगीपेठ में हिंदी परीक्षाओं के केन्द्र-संस्थापक; प्रका०—स्फुटरचनाएँ; प०—जोगीपेठ, जिला मेदक(दक्षिण)।

बलवीरसहाय — सा० — 'कमल' और 'मस्ताना जोगी' दिल्ली

के संपा० मंडल में हैं; अप्र०—झंझा और लाश; प०—'कमल'-कार्यालय, वकीलपुरा, दिल्ली।

बलवीर सिंह 'रंग'—ज०—१९१८; सा०—'युगवाणी' का संपादन किया; राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेकर जेल गये; प्रका०—प्रवेश-गीत, साँझ-सकारे; अप्र०—चित्रशाला; प०—भारतीय प्रेस, एटा।

बल्लभदास बिन्नानी—शि०—सा० र०, सा० अं०; सा०—स्थानीय पुस्तकालय और साहित्य परिषद् के संस्थापकों में; प्रका०—स्फुट बालोपयोगी रचनाएँ; प०—मेटिल हाउस, मिरजापुर अथवा ४३ स्ट्रैंड रोड, कलकत्ता।

बसव माणय्या—सा०—जोगी पेठ के उत्साही हिंदी-प्रचारक, निःशुल्क हिंदी-शिक्षा-दान, स्थानीय आर्यसमाज के प्रधान; प्रका०—स्फुट; प०—आर्यसमाज, जोगीपेठ जिला मेदक (दक्षिण)।

बहादुरसिंह—शि०—एम. एस-सी.; प्रका०—स्फुट; वि०—प्रायः अँगरेजी में ही लिखते रहे हैं; प०—अध्यापक वनस्पति शास्त्र, बलवंत राजपूत कालेज, आगरा।

बाँकेलाल अग्रवाल—ज०—१८९८; शि०—१९२४ में आ० वि० वि० से बी० ए०; प्र०—कृष्ण-सुदामा-संवाद; प्रका०—हरनाथ के उपदेश, ब्रह्मचर्य और व्यायाम; अप्र०—उपदेशामृत, भक्त-दोहावली; प०—अध्यापक मेकडानल इंटर कालेज, झाँसी।

बाघसिंह 'नेवरी'—प्रका०—संघर्ष; अप्र०—राजपूत तू जाग, सोया गौरव; प०—राजपूत प्रेस, भिंडो का रास्ता, जयपुर।

बालचंद शास्त्री—शि०—एम. ए.; प्रका०—अंजना (काव्य); अप्र०—दो कहानी और काव्य-संग्रह; प.–ठि. वीर-सेवा-मंदिर, सरसावाँ, सहारनपुर।

बाबूराव विष्णुपराड़कर—ज०—१८८३ काशी; सा०—भूत० संपादक 'बंगवासी' (१९०७—८), 'हितवार्ता' १९०७–१०, 'भारतमित्र' १९१०–१२, 'आज' १९२० से अब तक, कुछ समय दैनिक 'संसार' के भी संपादक रहे, अ० भा० हिंदी-साहित्य सम्मेलन के २७ वें शिमला अधिवेशन के सभापति;

वि०—स्व० श्री प्रेमचंदजी की पुण्यस्मृति में मासिक 'हंस' काशी के 'स्मृति-अंक' का भी आपने १९३७ में संपादन किया था; प्रतिष्ठित पत्रकार हैं और हिंदी-पत्रकार-कला के उन्नायकों में आपकी गणना है; **प०**—सेवा-उपवन, काशी अथवा 'आज'-कार्यालय, कबीरचौरा काशी।

बाबूलाल 'इन्दु'—**सा०**—राष्ट्रीय-आंदोलनों में भाग, जेल यात्राएँ; **प्रका०**—स्फुट लेख और कविताएँ; **प०**—संपा० और संचा० 'निर्भीक', धानमंडी, कोटा।

बाबूलाल तिवारी—**ज०**—१९१५; **शि०**—सा. रत्न, **सा०**—बुंदेलखंड नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक, आपको श्रीधरस्वर्णपदक मिला; **प्रका०**—स्फुट कविताएँ; **प०**—गाँधी टपरा, झाँसी।

बाबूलाल तिवारी 'ललाम'—**ज०**—१८७७; **जा०**—अँगरेजी, संस्कृत, फारसी; **अप्र०**—अनेक कविता-संग्रह; **प०**—नेत्र-चिकित्सक नियावा, फैजाबाद।

बाबूलाल भार्गव 'कीर्ति'—**ज०**—१९०८ सागर; **शि०**—बी० ए०, बी० टी०, सा० अं०, सा० र०, एम० आर० ए० एस० सागर, काशी, जबलपुर; **प्रका०**—परियों का दरबार, लोमड़ी रानी, विदेश की कहानियाँ, बाल-कथा-मंजरी, पद्यप्रसून, सुगम हिंदी-व्याकरण (२ भाग); **अप्र०**—अनोखी कहानियाँ, मिठाई, फुलझड़ियाँ, सप्तधारा, तितली, गद्य-प्रवेशिका, कर्ण (काव्य); **वर्त०**—सुधन्वावध, विश्वभ्रमण, नामक पुस्तकें लिख रहे हैं; **प०**—हेडमास्टर, म्यूनिस्पल हाई स्कूल, सागर।

बाबूलाल मार्कंडेय—**ज०**—१८९८; **प्र०**—पाप का फल—कहानी; **प्रका०**—स्फुट कहानियाँ; **प०**—आजाद हिंद रोड, पालीपुर, खँडवा।

बालकृष्णराव—स्व० श्री सी० वाई० चिंतामणि के सुपुत्र, **ज०**—१९१९; **शि०**—एम० ए०, आई० सी० एस०; **सा०**—मंत्री सुकवि-समाज प्रयाग, सभापति कवि-सम्मेलन द्विवेदी-मेला प्रयाग, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट प्रयाग, असिस्टेंट कमिश्नर हरदोई; सभापति

हिंदी-साहित्य संघ, लखनऊ; **प्रका०**—कौमुदी, आभास; **प०**—सिविल लाइंस, प्रयाग।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'—ज०—१८९७ भुजालपुर; **सा०**—भूत० संपा० 'प्रताप,' 'प्रभा'; **प्रका०**—कुंकुम; **अप्र०**—कई सुंदर कविता-संग्रह; **प०**—ठि० 'प्रताप'-कार्यालय, कानपुर।

बालमुकुंद गुप्त—ज०—१९०९, लखनऊ; शि०—प्रारंभिक शाहजहाँपुर, कन्नौज, कानपुर, एम० ए०—आगरा विश्वविद्यालय, सा० र०; **सा०**—'हिन्दी में कृष्ण काव्य का विकास' पर अनुसंधान करके डाक्टरेट की उपाधि के लिए थीसिस आगरा विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कर दी है, हि० सा० स० के प्रचार-मंत्री, उत्तर प्रदेशीय शिक्षा बोर्ड की हिंदी कमेटी और आगरा विश्वविद्यालय की फैकल्टी आव आर्टस के सदस्य; ना० प्र० स० काशी, आगरा वि० वि० बंगीय हिंदी-परिषद् कलकत्ता और रायल एशियाटिक सोसाइटी के सदस्य; प्रचारमंत्री—बाल-संघ कानपुर; **प्रका०**—पाठ्य क्रम की पुस्तकें जो पंजाब और उत्तर प्रदेश में प्रचलित हैं; **वर्त०**—'धूपछाँह' के प्रधान संपा०; प०—मनीराम की बगिया, कानपुर।

बालमुकुन्द गुप्त—शि०—एम० ए०, सा० र० ; **सा०**—'वर्तमान' (दैनिक), कानपुर के भूत०संपादक ; **प्रका०**—हिंदी व्याकरण और रचना-प्रवेश; **अप्र०**—दो समालोचना-संबंधी साहित्यिक लेख-संग्रह ; **प०**—हिंदी अध्यापक, डी० ए० वी० कालेज, गोरखपुर।

बालमुकुंद मिश्र—ज०—१३ दिसम्बर १९२१, दिल्ली; शि०—तर्क रत्न, सा० लं०, अलीगढ़, अमृतसर, ऋषिकेश, हरिद्वार, दिल्ली; प्र०—१९३६ में मथुरा, चित्रकूट और प्रयाग की तीर्थयात्रा ; **सा०**—संपादक उर्दू पत्र 'स्वराज्य' और 'वीर हिंदू', हिंदी 'वीर अर्जुन' दैनिक और साप्ताहिक, 'हरिजन-हितैषी', मासिक 'युग-छाया', 'अशोक', भारतीय सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग के 'साँग पब्लिसिटी आर्गनाइजेशन' के गीतकार और कवि (युद्धकाल में) ;

प्रका०—न्यायाधीश का निर्णय—प्रहसन, आर्यसमाजी संस्कार-विधि, दिग्दर्शन—आलो०, आर्य-समाज की ओर—निबंध ; प०—द्वारा—मंदिर कृपाशंकर, चाँदनी चौक, दिल्ली।

बालमुकुंद व्यास—ज०—१८८२ बजरंगगढ़ ग्वालियर ; जा०—हिंदी, उर्दू, फारसी और संस्कृत ; प्रका०—श्री शीलनाथ शब्दामृत-१९३२ ; अप्र०—वृहद् शास्त्रीय हिंदी-व्याकरण ; प०—बजरंगगढ़,ईसागढ़,ग्वालियर।

बालाप्रसाद शुक्ल—शि०—बी० ए०, एल-एल-बी० ; सा०—भूत० अध्यक्ष स्थानीय हिंदी-प्रचार सभा (शाखा) ; प्रका०—स्फुट कविताएँ ; प०—वकील, नाँदेड, (दक्षिण)।

बिंदाचरण वर्मा—ज०—१९२३ मुजफ्फरपुर ; शि०—बी० एस-सी० ; सा०—'सुहृद्-संघ' मुजफ्फरपुर के संस्थापकों में एक ; उक्त संघ के प्रबंध मंत्री, मोतीपुर के निर्माण में आपने सहयोग दिया ; प्रका०—स्फुट ; प०—हेडमास्टर, हाई इंगलिश स्कूल, मोतीपुर, मुजफ्फरपुर।

बिट्ठलदास मोदी—सा०—संस्था० 'आरोग्य-मंदिर' गोरखपुर संपा०—'आरोग्य' ; भूत० संपा० 'जीवनसखा' और 'जीवनसाहित्य' प्रका०—सर्दी जुकाम खाँसी (अनु०) उपवास से लाभ ; प०—आरोग्य मंदिर, गोरखपुर।

बी० किशनलाल सूर्यवंशी—सा०—हैदराबाद (दक्षिण) में हिंदी प्रचार, कई अध्यापन-क्षेत्रों और अकनूर में परीक्षा-केंद्र की स्थापना की, लालगुडा पाठशाला में हिंदी अध्यापक; प्रका०—स्फुट; प०—ईसामिया बाजार, हैदराबाद (दक्षिण)।

बी० रामकृष्णाचार—शि०—बी० ए०, विद्वान (मद्रास) ; सा०—दक्षिण भारत के उत्साही हिंदी प्रचारक, हिंदी के उपयोगी प्रकाशन का उद्योग ; प्रका०—सती शर्मिष्ठा ; प०—कल्याण प्रेस, उडिप्पी, दक्षिणी कनारा, दक्षिण।

बी० हीरासिंह—ज०—मुरादाबाद ; शि०—साहित्य-विशारद, सा०—बाल-अध्ययन मंडल मद्रास के प्रधान मंत्री, हिंदी

लेखक-संघ मद्रास के संयुक्त मंत्री; अप्र०—गुजराती से अनु० ग्रन्थ ; प०—ठि०-हिंदी लेखक-संघ, ६७ मिंट स्ट्रीट, मद्रास १।

बुद्धदेव पांडेय 'सुमन'—ज० —१६२२; शि०—शास्त्री(पंजाब), सा० आ० बिहार संस्कृत एसोसिएशन, पटना, बी० ए०—पटना वि० वि०, सा० वि० ; सा०—स्थानीय सा० परिषद और श्री जगद्विनोद पुस्तकालय के प्रधान मंत्री ; प्र०—परिवर्तन; प्रका०—तुलसीदास, होली, बिखरे हुए फूल; परिवर्तन, विदाई, अमर ; प०—श्री सुभाष हाई स्कूल, इसलामपुर, अतासराय, पटना।

बुद्धिचंदपुरी 'हिमकर'—शि० —सा० भू०, सा० लं० ; प्रका०—स्त्री-शिक्षा, भजनावली, स्त्रीधर्म, चेतावनी, श्रीकामधेनुदशा, भक्ति-उपदेश-रत्न, श्रीप्रहलाद नाटक, श्रीसूरदास, सतीशीलवंती, पूर्णभक्त (चार भाग), श्रीबद्री-केदार-यात्रा।

बुद्धिनाथ झा—ज०—भागलपुर ; सा०—हिंदी-लेखक-संघ मद्रास के वर्त० सभा० ; पुराने राजनीतिक कार्यकर्ता; अप्र०—स्फुट रचनाएँ ; प०—६७, मिंट स्ट्रीट, मद्रास १।

बूलचन्द—ज०—१ जून १६०८; शि०—एम० ए०, पी-एच० डी० (लंदन); सा०—व्यवस्थापक बंबई प्रांतीय राष्ट्रभाषा - प्रचार - सभा, अध्यक्ष म्यूनिसिपल स्कूल के हिंदी परीक्षा-बोर्ड ; आचार्य—भारतीय विद्या-भवन; वर्त०—राजनीति-ज्ञान-कोश लिखने में प्रयत्नशील; प०—नवगुजरात, अंधेरी, बम्बई।

बूलदेवसिंह 'बल'—ज०—१८८५ ; प्रका०—ऋतुराज, सरस सावन ; प०—अभाव ग्राम, शाहाबाद।

बेनीप्रसाद वर्मा—ज०—१६२०; शि०—बी० ए० अजमेर, नागपुर; प्रका०—भारतीय चित्रकला तथा शिल्पकला ; वि०—आपने कवि 'प्रसाद' के 'आँसू' का अँगरेजी में अनुवाद किया है ; प०—असिस्टेंट स्टेशन मास्टर, इटारसी।

बेनीप्रसाद शर्मा 'दिनेश'—ज०—१६०८ ; शि०—पुराण-भूषण, धर्मालंकार ; प्रका०—श्रीपावनगिरि-भजनावली, सत्यनारायण-कथा, अम्बा-भजनावली;

वर्त०— मन्त्री, पाटीदार-युवक-मंडल; प०—शांति-कुटीर-पत्रालय, ऊन, होलकर राज्य।

बैजनाथ गुप्त— ज०-१६२२; शि०—विशारद; प्र०—चिन्ता; प्रका०-जलती निशानियाँ, किसानों की दुनियाँ (खंड-काव्य); प०-पटकापुर, रामपुर।

बैजनाथपुरी— २५ जनवरी १६१६ लखनऊ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० लखनऊ; सा०—सम्पादक 'प्राचीन भारत'; सदस्य इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस; प्रका०—इंडियन ऐज़ डिसक्राइब्ड बाई अरली ग्रीक राइटर्स; अप्र०—यूनानी इतिहासकारों का भारत-वर्णन, कुशानकाल एवं कुशान-कालीन सभ्यता सम्बन्धी ४० लेख; वि०—आजकल कुशान-कालीन सभ्यता और संस्कृति पर थीसिस लिख रहे हैं; इसी सम्बन्ध में इंगलैंड हो आये हैं और फिर जाने का प्रबन्ध कर रहे हैं; प०—प्राध्यापक इतिहास-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय; अथवा कटारी टोला, चौक, लखनऊ।

बैजनाथप्रसाद दुबे—ज०—१६०७; शि०—साहित्यरत्न अजमेर बोर्ड; सा०—सदस्य लेखक संघ प्रयाग, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के केंद्र के व्यवस्थापक; प्रका०—हिन्दी साहित्य के सप्तसुमन, बड़ों का विद्यार्थी-जीवन; प०—हिन्दी अध्यापक, पी० बी० पी० स्कूल, महू (मध्यभारत)।

ब्रह्मदत्त दीक्षित—ज०—१ मई १६१४; शि०—बी० ए० आगरा कालेज, एल० टी०—गवर्नमेंट बेसिक ट्रेनिंग कालेज इलाहाबाद, एम० ए० (हिं०) प्राइवेट; प्र०—बनवासी भारत; सा०—हिं० वि० वि० परिषद सम्मेलन प्रयाग के सदस्य, सोशियालोजिकल सोसाइटी बनारस के उपमन्त्री; १६३०-३१ के आंदोलन में भाग और जेल; प्रका०—बनवासी; अप्र०—भारत के पड़ोसी राष्ट्र; प०-गवर्नमेंट नार्मल तथा बेसिक सेंटर, बनारस।

ब्रह्मदत्त भवानीदयाल—महात्मा भवानीदयाल संन्यासी के सुपुत्र; ज०—१३ फरवरी १६१६; शि०—शास्त्री डरबन कालेज (दक्षिण-

अफ्रीका); प्रका०—पोर्तुगीज पूर्व अफ्रीका में हिन्दुस्तानी, प्रवासी-प्रपंच-उपन्यास ; वि०—आप की सहधर्मिणी सुश्री निर्मला देवी भी हिन्दी विदुषी हैं ; प०—प्रवासी-भवन, आदर्शनगर, अजमेर।

ब्रह्मदत्त मिश्र 'सुधींद्र'—शि०—बी० ए०, सा० र० इन्दौर, आगरा, गोरखपुर ; सा०—भारतेंदु समिति, कोटा राज्य के साहित्य-मंत्री ; प्रका०—शंखनाद; अप्र०—कई कविता-संग्रह; प०—क्लर्क, पुलिस विभाग, कोटा।

ब्रह्मदत्त तिवारी 'नागर'—शि०—साहित्यरत्न, प्रयाग, लखनऊ; सा०—हिंदी विद्यापीठ, (अब अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठ) लखनऊ के संस्थापक और परीक्षा मंत्री, 'साकेत-प्रकाशन-मंडल' नामक प्रकाशन संस्था के अध्यक्ष; प्रका०—शिवरात्रिव्रत, अंबरीष, सेवाग्राम—कविता, हिंदी साहित्य का विकास, हिन्दी साहित्य का इतिहास, हिंदी व्याकरण संबंधी चार-पाँच पुस्तकें; वर्त०—हिंदी प्रोफेसर, अमीनाबाद इंटर कालेज, लखनऊ ; प०—गुरुद्वारा रोड, नाका हिंडोला, लखनऊ।

ब्रह्मदत्त त्रिवेदी—ज०—१९१७ ; शि०—सा० र०, एम० ए० जयपुर ; सा०—उच्च कक्षाओं में भाषा-विज्ञान और अँगरेजी का अध्यापन, अध्यक्ष ऋषिकुल लक्ष्मणगढ़, सद० और सभापति म्यूनिसिपल बोर्ड ; प्रका०—हिन्दी में व्याकरण और न्याय आदि विषयों के अनुवाद ; प०—आचार्य, ऋषिकुल संस्कृत कालेज, लक्ष्मणगढ़।

ब्रह्मनाथ बंधु—शि०—विद्यालंकार कांगड़ी वि० वि० हरिद्वार, सा०—'नया संसार' साप्ता० के सम्पा० ; वि०—भारतीय विषयों पर व्याख्यान देने के लिए अमेरिका यात्रा करने वाले हैं ; प०—'मजदूर-संसार'—कार्यालय, पटना।

ब्रह्मानन्द—ज०—१९१५ ; शि०—साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ, रिसर्च स्कालर (काशी) गवर्नमेंट संस्कृत कालेज काशी ; प्रका०—स्मृतिगान ; अप्र०—उत्सर्ग; व्रज-भाषा के दोहे ; प०—धनावा, परवलपुर, पटना।

ब्रह्मानन्द चंद्रवंशी—ज०—१८६८; शि०—वैद्य भूषण, वैद्य मार्तण्ड; प्रका०—वैद्यक ब्रह्मानंद-विलास, काव्य-कुसमावली, फ्रांस, पद्य-तरंग, संगीत - भजनमाला; प०—बरोदा, पनागर, जबलपुर।

भक्तिप्रसाद त्रिवेदी—ज०—१६ दिसंबर १६१७; वि०—विश्वभारती शांतिनिकेतन के स्नातक पुस्तकालयाध्यक्ष, सत्याग्रह आंदोलनों में सक्रिय भाग; प्रका०—पुस्तकालय-प्रबंध पर अनेक लेख; प०—प्रयाग- विश्वविद्यालय-पुस्तकालय, प्रयाग।

भगवंतशरण जौहरी—ज०—१६१६; शि०—एम० ए० उज्जैन और आगरा वि० वि०; सा०—निरक्षरता-निवारण तथा ग्राम-सुधार-कार्य, पत्रकारों की स्वतंत्र प्रकाशन संस्था की स्थापना में संलग्न; प्र०—करुण कहानी; प्रका०—अर्चना और विदाबेला; अप्र०—श्यामा, नवधा; प०—हिंदी अध्यापक महाराजवाड़ा सरकारी हाई स्कूल, उज्जैन।

भगवतीचरण—ज०—१८६६; सा०—आरा - नागरी - प्रचारिणी सभा के सदस्य तथा कार्यकर्त्ता चम्पारन जिला साहित्य-सम्मेलन तथा मोतिहारी के भारतेंदु-साहित्य संघ के प्रमुख कार्यकर्त्ता; प्रका०—महर्षि जमदग्नि का सत्याग्रह; अप्र०—झल्लकंठ, मुगलआजम; प०—अध्यापक, गौरीशंकर स्कूल, मोतिहारी, बिहार।

भगवतीचरण वर्मा—शि०—बी. ए., एल-एल. बी., ज०—१६०३ शफीपुर ग्राम; प्र०—१६२५; प्रका०—कविता—मधुकण, प्रेमसंगीत, मानव, उपन्यास—पतन, चित्रलेखा, तीनवर्ष, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, कहानी—इंस्टालमेंट, दो बाँके, हमारी उलझन; वि०—आपके उपन्यास 'चित्रलेखा' का फिल्म बनाया गया जिसको जनता ने बहुत पसंद किया, कुछ दिन फिल्म-क्षेत्र में भी काम कर चुके हैं; एक दैनिक पत्र का संपा० भी कर चुके हैं; प०—आल इंडिया रेडियो, लखनऊ।

भगवती देवी—श्रीजैनेंद्र कुमार जी की विदुषी और कहानी-लेखिका पत्नी; प्रका०—स्फुट कहानियाँ; प०—७, दरियागंज, दिल्ली।

भगवतीप्रसाद त्रिवेदी 'करुणेश' — ज०— १५ अक्टूबर १६०६; शि०—विशारद; प्र०—१६२४; प्रका०—पद्यप्रवाह; अप्र०—कुंडलियाशतक, गड़बड़झाला-दोहावली; प०—अध्यापक, कान्यकुब्ज वोकेशनल कालेज, लखनऊ।

भगवती प्रसाद बाजपेयी—ज०—१८६६ मंगलपुर ग्राम; प्र०— १७१६; सा०— भूत० संपादक 'संसार', 'विक्रम' दैनिक, 'माधुरी'; भूत० सहायक मंत्री, हिंदी - साहित्य - सम्मेलन (४ वर्ष तक); प्रका०—उपन्यास–पिपासा, परित्यक्ता, दो बहनें, गुप्तधन; कहानी-पुष्करिणी, खाली बोतल; नाटक—छलना, आलो०—युगारंभ; प०—दारागंज, प्रयाग।

भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव—ज०—१ जूलाई १६११; शि०—एम० एस-सी० एल-एल० बी०; प्रयाग वि० वि०; सा०—हिंदी विश्वभारती लखनऊ के 'भौतिक-विज्ञान' तथा 'प्रकृति पर विजय' शीर्षक स्तंभों के संपादक; भूत० प्राध्यापक किशोरी रमण इंटर कालेज मथुरा; प्रका०—विज्ञान के चमत्कार, परमाणुशक्ति, भौतिक विज्ञान्, विज्ञान की प्रगति, वैज्ञानिक युग की देन; प०—प्राध्यापक, भौतिक विज्ञान, धर्म समाज डिग्री कालेज, अलीगढ़।

भगवानदास अवस्थी—ज०—१८६५; शि०—एम. ए.; सा०—भूत० संपादक 'अभ्युदय' प्रयाग और 'ज्ञानलोक' लिमिटेड के प्रबंधक; प्रका०—भोला कूटनीतिज्ञ, बम-वर्षा में प्रेम-व्यापार, रूप-जाल, प्रेमी-विद्रोही, दुनिया का चक्कर दस दिन में, लगभग ५० बालोपयोगी पुस्तकें; प०—ज्ञानलोक, दारागंज, प्रयाग।

भगवानदास केला—ज०—१८६० ; शि०—पानीपत, करनाल, दिल्ली और नागपुर; सा०—भूत० प्रधानाध्यापक पोकरण मिडिल स्कूल, जोधपुर; भूत० संपादक 'प्रेम', वृंदावन और 'माहेश्वरी', नागपुर; प्रका०—१६१० में भारतीय शासन, देशीराज्य-शासन, भारतीय विद्यार्थी-विनोद, हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ, भारतीय जागृति, विश्व-वेदना, भारतीय-चिंतन, भारतीय-

राजस्व, नागरिक शिक्षा, श्रद्धांजलि, भारतीय नागरिक, अपराध-चिकित्सा, भारतीय अर्थशास्त्र, गाँव की बात, साम्राज्य और उसका पतन, सरल भारतीयशासन, नागरिकशास्त्र, भारतीय राज्य-शासन, नागरिक ज्ञान, ऐलिमेंटरी सिविक्स, सरल नागरिक-ज्ञान (दो भाग), राजस्व, देशभक्त दामोदर, बालब्रह्मचारिणी कुंती देवी, सरल नागरिक शास्त्र; अन्य लेखकों के साथ—हिंदी में अर्थ-शास्त्र और राजनीति-साहित्य, निर्वाचनपद्धति, राजनीतिशब्दावली, ब्रिटिश-साम्राज्यशासन, अर्थशास्त्र शब्दावली, धन की उत्पत्ति, सरल अर्थशास्त्र ; **वि०**—आपके सुपुत्र श्री ओम प्रकाश केला भी नागरिक शास्त्र के लेखक हैं ; **प०**—भारतीय ग्रंथ - माला - कार्यालय, दारागंज, प्रयाग।

भगवानसिंह वर्मा 'विमल'—**सा०**—हाथरस से प्रकाशित 'गौरव' मासिक के भूत० संपादक; **प्रका०**—खोखली जड़ें (उप०) ; **अप्र०**—दो कहानी-संग्रह और एक उपन्यास; **वि०**—आजकल 'उदयाचल' का प्रकाशन-संपादन कर रहे हैं; **प०**—किला दरवाजा, हाथरस।

भगीरथप्रसाद दीक्षित—**ज०**—१८८४ ; **शि०**—सा. रत्न, प्रयाग ; **सा०**—कोटा के नार्मल स्कूल के प्रधानाध्यापक, इंसपेक्टर आव स्कूल्स और इंटर कालेज के प्रोफेसर रहे, विद्यापीठ प्रयाग में प्रिंसिपल रहे, और नागरी प्रचारिणी सभा काशी में अन्वेषक का काम किया ; सेंट जोजेफ व नेशनल हाई स्कूल, लखनऊ के भूत० अध्यापक ; **प्रका०**—शिवाबावनी, साहित्यसरोज, हिंदीव्याकरणशिक्षा, साहित्यसुधाकर, गद्य-प्रवेशिका, गाजीमियाँ, हिंदूजाति की पाचन-शक्ति, वीर काव्य-संग्रह, दीक्षित-कोश, भूषण-विमर्ष ; **प०**—ठि० नवज्योति प्रेस, पानदरीबा, लखनऊ।

भगीरथ प्रेमी—**ज०**—१६१७; **शि०**—बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० भूषण, होल्कर कालेज, इंदौर; **सा०**—साक्षरता-प्रसार और सहकारिता-आंदोलन में सक्रिय भाग, स्थानीय हिंदी-साहित्य समिति के सभापति ; **प्रका०**—साधना के दीप; **प०**—सेक्रेट्रियट, बड़वाहा।

भगीरथ मिश्र—ज०—२० जुलाई १६१५, कानपुर; शि०—एम० ए०, पी-एच० डी० लखनऊ विश्वविद्यालय ; प्रका०—पृथ्वीराज रासो के दो समय, चित्रण (कवि० संग्र०), अध्ययन (निबन्ध), हिंदी काव्य शास्त्र का इतिहास ; वि०—'हिंदी काव्य-शास्त्र का इतिहास' नाम अनुसंधान-पूर्ण ग्रंथ पर लखनऊ विश्वविद्यालय से आपको पी-एच० डी० की उपाधि मिली है; प०—प्राध्यापक हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

भदंत आनंद कौसल्यायन—ज०—१६०५ अम्बाला; सा०—हिंदी-प्रचार में सक्रिय भाग, राष्ट्र-भाषा-प्रचार-समिति वर्धा के मंत्री; प्रका०—बुद्धवचन, बुद्ध और उनके अनुचर, भिक्षु के पत्र, जातक—दो भाग, सच्चो संगहो (त्रिपिटक के मूल पालि-उद्धरणों का संकलन) के संपादक; अप्र०—महावंश—अनुवाद ; प०—राष्ट्र-भाषा-प्रचार-समिति, वर्धा।

भवानीशंकर याज्ञिक—ज०—२५ नवम्बर १८६८ ; शि०—एम० बी० बी० एस०, डी० पी० एच० लखनऊ तथा अमेरिका ; शि०—स्वास्थ्य विज्ञान के मर्मज्ञ, लेखक तथा कवि, सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी स्वर्गीय मायाशंकर याज्ञिक के भ्रातृज ; प्रका०—स्फुट लेख तथा कविताएँ ; अप्र०—रसखान-रत्नावली, गंग-रत्नावली, ब्रह्म-रत्नावली तथा अन्य प्राचीन कवियों की कृतियों के संपादित संस्करण; वर्त०—असिस्टेंट डाइरेक्टर, प्राविंशियल हाइजीन इंस्टीट्यूट, लखनऊ ; प०—प्रधानाध्यापक, स्वास्थ्य-विज्ञान, मेडिकल कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

भवानीशंकर शर्मा, 'अरुणेश'—ज०—१६२३; शि०—रतनगढ़ और पंजाब वि० वि० ; सा०—शिक्षा-मंत्री बीकानेर राज्य, साहित्य समिति रतनगढ़ के भूत० प्रधान मंत्री तथा वर्तमान सद०, कलामंदिर प्रकाशन राजस्थान के संस्था० व संचा०, साक्षरता और प्रौढ़ शिक्षा के आयोजक, कविसम्मेलनों के नियोजक, भूत० संपा०—'अलमस्त', और 'दीपक'; प्रका०—स्फुट; अप्र०—स्त्री

स्वातंत्र्य, नारी का आदर्श, मधुपर्व, उर्वशी आदि ; प०—कलामंदिर (होली धोरा), रतनगढ़, बीकानेर।

भागवतमिश्र—ज०—१८६२; शि०—बी.ए.,एल-एल बी. ; सा० —ग्रामसुधार सभा के भूत० और कोआपरेटिव सोसाइटी के सभापति, स्थानीय डी० ए० वी० हाई स्कूल के भूत० प्रबंधक तथा नागरी प्रचारिणी सभा गाजीपुर के वर्तमान सभापति ; अप्र०—द्रोपदी की क्षमा, करबला, वरदान, मिश्र-दोहावली, गोधूलि आदि; प०—वकील, गाजीपुर।

भागीरथप्रसाद गुप्त—सा०—राष्ट्रीय और सामाजिक क्षेत्रों के कार्यकर्ता, हिंदी-प्रचार में विशेष आर्थिक सहयोग ; प०—हिंदी-प्रचार-सभा, परभरथी (दक्षिण)।

भानुकुमार जैन—ज०—१९१३; सा०—हिंदी पुस्तक भंडार बंबई के संचा० ; बंबई हिंदी विद्यापीठ के संस्था० में एक, भूत० संपा० 'संस्कृति' त्रैमासिक बंबई ; प्रका०—विलासपुरी की दरिद्रता, बालचित्रण आदि ; प०—मैनेजिंग डाइरेक्टर, हिंदी ज्ञानमंदिर लिमिटेड, बंबई।

भानुसिंह बाघेल—ज०—१८६२; प्रका०—बालादर्श, बांधवेश वी वेंकटरमण सिंह; अप्र०— मुवाद और रीवाँ का इतिहास ; प०—भरतपुर, गोविंदगढ़, रीवाँ राज्य

भा० रा० देसाई—सा०—कर्णाटक की हिंदी-प्रचार-सभा के प्रमुख कार्यकर्ता ; प्रका०—स्फुट प०—हिंदी अध्यापक, जैन पाठशाला, कोप्पल, रायचूर (दक्षिण)

भालचन्द्र आप्टे—शि०—शास्त्री, विद्यापीठ काशी; सा०—संपा० 'दक्षिण भारत', स्वतंत्रता आन्दोलनों में जेल; प्रका०—हिंदी व्याकरण (एस० आर० शास्त्री के सहयोग में), हिंदुस्तानी रीडर—३ भाग ; प०—आचार्य, हिंदी प्रचारक ट्रेनिंग कालेज, मद्रास १७।

भालचन्द्र जोशी—ज०—१९२० ; शि०—एम० ए० सा० रत्न, इन्दौर, नागपुर; सा०—प्रचार मंत्री मध्यभारतीय साहित्य समिति, भूत० सम्पा० 'नव निर्माण' मासिक इन्दौर, 'जय भारत' दैनिक इन्दौर; प्र०—चंदामामा-१९३८; प्रका०—खट्टी मीठी कहानियाँ, पेड़ों-पौधों की कहानियाँ, माल्दा, दही-बड़े की चाट, चन्दूमियाँ, चिथड़ों की

करामात, शरारती बछड़ा; **अप्र०**—पृथ्वी की कहानी; **वर्त०**—सम्पा० 'वीणा'; **प०**—१२१ चन्द्रभामा, जूनी, इन्दौर।

भालचंद्र शंकरराव कहालेकर—**शि०**—एम० ए० एल-एल. बी०; **जा०**—मराठी, संस्कृत, अँगरेजी; **सा०**—त्यागी कार्यकर्त्ता और हिंदी-प्रचारक, भूत० अध्यापक चादरघाट कालेज हैदराबाद (दक्षिण), स्थानीय हिंदी साहित्य समिति के केंद्र-व्यवस्थापक; **वि०**—मराठी में भी लिखते हैं; **प०**—प्रधानाध्यापक, नूतन प्राथमिक शिक्षणालय, परभणी (दक्षिण)।

भास्कर—**ज०**—१६२२; **सा०**—'रंगभूमि' दिल्ली और 'सिनेमा' कानपुर के संपादक, फिल्मक्षेत्र में संवाद-गीत-लेखक; **प्रका०**—चित्रमयरजत-पट, फिल्मी अप्सराएँ, फिल्म अभिनेता कैसे बनें, भाषणकला; **वि०**—चित्रकार भी हैं; **प०**—सुमेरपुर, हमीरपुर।

भास्कर रामचंद्र भालेराव 'कविदास'—**ज०**—१८६५; **प्रका०**—सम्पादित और अनुवादित ग्रंथों की संख्या लगभग २४ है; **अप्र०**—चार इतिहास; **प०**—मनावार, ग्वालियर।

भीखनलाल आत्रेय, डाक्टर—**ज०**—२४ सितम्बर १८६७; —**शि०**—एम० ए०, डी० लिट्, सहारनपुर मुजफ्फर नगर, काशी; **सा०**—अखिल भारतीय ओरियंटल कान्फ्रेंस के दर्शन और धर्मविभाग, भारतीय फिलासाफिकल काँग्रेस, अ० भा० हि० सा० स० की दर्शन परिषद्, भारतीय साइंस काँग्रेस के मनोविज्ञान, शिक्षा-विभाग, उत्तरप्रदेश एजूकेशनल आफिसर्स काँफ्रेंस आदि के सभापति, इंडियन असोसिएशन फार एजूकेशन रिसर्च के ऐडवाइजरी बोर्ड, शिक्षण-विज्ञान और मनोविज्ञान तथा मानसिक एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य सम्बंधी अनेक समितियों, न्यू ऐशियाटिक वेदिक सोसाइटी, महाबोधि सोसाइटी, ग्रेट इँगलिश इंडियन डिक्शनरी एडीटोरियल बोर्ड, इंडियन फिलासोफिकल काँग्रेस, इंडियन सोसाइटी फार साइकिक और योगिक रिसर्च, अखिल भारतीय

महिला शिक्षक परिषद् आदि के सदस्य, विदेशों से सम्मान प्राप्त विद्वान, इटली के इंटरनेशनल स्टडीज इन साइंस और लेटर्स के एडीटोरियल बोर्ड के सदस्य और अमेरिका के बायोग्राफिकल इंसाइक्लोपीडिया आव वर्ल्ड में जीवनी छपी; प्र०—शंकराचार्य का मायावाद; प्रका०—योगवाशिष्ठ और उसके सिद्धांत, वाशिष्ठ दर्शनशास्त्र, प्रकृतिवाद-पर्यालोचन, फिलासफी आव योग वाशिष्ठ, योगवाशिष्ठ ऐंड इट्स फिलासफी, योगवाशिष्ठ ऐंड माडर्न थाट्स, एलीमेंट्स आफ इंडियन लाजिक, फिलासफी आव थियोसाफी, वाशिष्ट दर्शनम्, योगवाशिष्ठ-सार, डेफ़ीकेशन आव मैन, ए प्ली फार डिटीरियोरेशन आफ ओरियंटल थाट्स, फाउंडेशन आव परपीचुअल पीस, प्रकृतिवाद-आयोजना, प०—अध्यक्ष दर्शन-मनोविज्ञान तथा धर्मविभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

भीमसेन राव जाधव—सा०—स्थानीय हिंदी-साहित्य-समिति के प्रमुख हिंदी-प्रचारक; प्रका०—स्फुट लेख और कविताएँ; प०—हिंदी-साहित्य-समिति, गुलबर्गा (दक्षिण)।

भीमेश्वर भट्ट—शि०—एम० ए०; सा०—स्थानीय हिंदी-प्रचार सभा के कार्य में विशेष सहयोग; प्रका०—स्फुट; प०—प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, चादरघाट कालेज, हैदराबाद (दक्षिण)।

भीष्मदेव शास्त्री—ज०—१८९६; शि०—व्याकरण शास्त्री पंजाब, सा० रत्न, सा० आ० काशी; सा०—अध्यक्ष और परीक्षा मंत्री हिंदी-प्रचार-सभा, अध्यक्ष हैदराबाद नवयुवक-मंडल; प्रका०—कुमार-कर्तव्य, मैथिलीशरण गुप्त (आलोचना); प०—बेगम बाजार, हैदराबाद (दक्षिण)।

भुवनेंद्र 'विश्व'—ज०—१९०२; सा०—भूत० संपा० 'महावीर' १९२९, संपादक-प्रकाशक-सरल जैन-ग्रंथ-माला; प्रका०—सरल जैन धर्म—४ भाग, कथामंजरी—२ भाग, द्रव्य-संग्रह, रत्नकांड, श्रावकाचार और भाषा नित्य पूजन-संग्रह; प०—विश्व-कुटी, ६६३, जवाहरगंज, जबलपुर।

भुवनेश मिश्र—**जा०**—संस्कृत; **सा०**—१९३० में हिं०सा०समिति कानपुर की स्था०; **अप्र०**—काव्य-संग्रह; **प०**—सदरबाजार, कानपुर।

भुवनेश्वरदत्तशर्मा 'व्याकुल'—**शि०**—का० लं०; **प्रका०**—अश्के हसरत, कलामें-व्याकुल, तरानए व्याकुल, जवानी के गीत; **प०**—सुखद साहित्य-कुटीर, विष्णुगढ़, हजारीबाग।

भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'—**ज०**—१९०५ ; **शि०**—एम० ए०; **सा०**—भूतपूर्व संपादक साप्ताहिक 'सनातनधर्म', ११ वर्ष तक सहकारी सपादक 'कल्याण' और 'कल्याण-कल्पतरु' गोरखपुर, ६ वर्ष तक अध्यक्ष हिंदी विभाग जैन कालेज आरा; **प्रका०**—संत-साहित्य, मीरा की प्रेम-साधना, धूपदीप, मेरे जन्म-मरण के साथी ; **अप्र०**—कई कविता तथा निबन्ध-संग्रह ; **प०**—आचार्य सच्चिदानन्द सिनहा कालेज, औरंगाबाद, गया।

भुवनेश्वरप्रसाद 'भुवनेश'—**शि०**—एम. ए., बी. एल. ; **सा०**—स्थानीय साहित्यिक आयोजनों में सक्रिय भाग ; **प्रका०**—स्फुट लेख और कविताएँ ; **प०**—अध्यापक, संस्कृत-विभाग, राजेंद्र कालेज, छपरा।

भुवनेश्वर मिश्र 'भुवन'—**ज०**—१९०५, शिवपुर 'दिया' बलिया ; **सा०**—भूत० सम्पा० 'आशा' ; **प्रका०**—हिन्दी-साहित्य-सौरभ, बाल-साहित्य, कन्या-कौमुदी, हिन्दी व्याकरण-बोध, विनय-मंजरी (कवि); **प०**—अध्यापक आशुतोष कालेज, वाणिज्य-विभाग, कलकत्ता।

भुवनेश्वरसिंह 'भुवन'—**ज०**—१९०६; **सा०**—भूत० संपादक विद्यापति लेख-माला, वैशाली-विभूति, और 'तिरहुत-समाचार' ; **प्रका०**—आर्य ; **वि०**—आप का निजी पुस्तकालय बिहार के श्रेष्ठ पुस्तकालयों में है; **प०**—आनन्द-पुर, दरभंगा।

भूदेव झा 'अमर'—**ज०**—२ अगस्त १९२०, सलेमपूर, मथुरा; **शि०**—प्राथमिक झाँसी में, बी. ए. आगरा वि० वि० ; **सा०**—स्थानीय राष्ट्रभाषा - पुस्तकालय के संस्था० १९४२ ; भूत० संपा०

'जीवनप्रभा'; अप्र०—स्मृति, वेदनातत्व तथा अँगरेजी के कई अनुवाद ; प०—४७४, प्रेमनगर, नगरा, झाँसी।

भूदेवदत्त शर्मा—ज०—१६१७ रूपवास, भरतपुर ; शि०—सा० रत्न; सा०—जयपुर राज्य में हीरालाल शास्त्री के साथ कार्य ; संचा० 'अमरज्योति', प्रान्तीय और जिला काँग्रेस कमेटियों के सदस्य, दलित जातीय संघों के संयोजक ; प्रका०—स्फुट लेख ; प०—'अमर ज्योति'—कार्यालय, जयपुर।

भूदेव शर्मा—शि०—एम० ए०, वि० लं० ; प्रका०—सनयातसेन, गद्य-दीपिका, सूर-मंदाकिनी; प०—अध्यापक क्राइस्टचर्च कालेज, कानपूर।

भृगुरासन शर्मा—ज०—१६१६ गोरखपुर ; प्रका०—राष्ट्र-सेवा, साहित्य और समाज, गल्पगुच्छ ; प०—प्रधानाध्यापक , मिडिल स्कूल, कुबेरनाथ, गोरखपुर।

भैरव प्रसाद गुप्त—ज०—७ जूलाई १६१८; शि०—बी० ए०; सा०—दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार-सभा मद्रास में चार वर्ष तक भाषा-प्रचार-कार्य किया; सह० संपा०—'माया', 'मनोहरकहानियाँ'; संयुक्त लेखक-पत्रकार-संघ प्रयाग, प्रगतिशील लेखक-संघ तथा लेखक और पत्रकार-समिति के मंत्री ; प्रका०—मुहब्बत की राहें—कहानी, मंजिल (कहानी संग्रह), बिगड़े हुए दिमाग (कहानी सं०), फरिश्ता, शोले (उपन्यास); प०—'माया'-प्रेस, मुट्ठीगंज, प्रयाग।

भैरव प्रसाद सिंह 'पथिक'—ज०—१ दिसंम्बर १६१० बरुवा; शि०—बी०ए०, सा०र०, विज्ञान रत्न ; सा०—भूत० संपा० 'राजपूत' ; संस्था०—राणा प्रताप-पुस्तकालय; भारतेन्दु-पुस्तकालय व माहेश्वरी खेतान-पुस्तकालय ; अप्र०—एक खंडकाव्य, एंकाकी-संग्रह ; वर्त०—कादम्बरी की सुबोध संस्कृत में रचना ; प०—पथिकाश्रम, पडरौना, देवरिया।

भोलानाथ शर्मा—शि०—एम० ए० (संस्कृत, हिंदी), एम० ए०—प्रि० (अँगरेजी) ; ज्ञा०—संस्कृत, बँगला, अँगरेजी तथा जर्मन ; सा०—हिंदी साहित्य-

सम्मेलन की सभी प्रवृत्तियों में लगन से सहयोग देते हैं ; बरेली कालेज हिंदी-प्रचारिणी-सभा, नगर हिंदी-सभा, तथा अदालत में नागरी-प्रचार के प्रमुख कार्यकर्ता ; बरेली कालेज में हिंदी और संस्कृत के अध्यापक हैं ; **प्रका०**—फौस्ट (मूल जर्मनी से अनुवाद), बँगला साहित्य की कथा ; **अप्र०**—टेल (जर्मन नाटक), वीर-विजय, वैदिक व्याकरण, अरस्तू की राजनीति ; **वि०**—सूर-साहित्य का गंभीर अध्ययन किया है और सूर-सागर का सुसंपादित संस्करण तैयार करने में संलग्न हैं; **प०**—बिहारीपुर, बरेली।

भोलालाल दास — **ज०** — १९०६ ; **शि०**—बी० ए०, एल-एल० बी० ; **प्रका०**—हिंदू लॉ में स्त्रियों के अधिकार, अक्षरों की लड़ाई, भारतवर्ष का इतिहास ; 'चाँद' के भूतपूर्व नियमित लेखक; **प०**—यूनाइटेड प्रेस, भागलपुर।

मंगल देव शास्त्री, डाक्टर—**ज०**—१८९०; **शि०**—एम. ओ. एल (पंजाब), डी० फिल० (आक्सफोर्ड), एम. ए., शास्त्री; **सा०**—भूत० आचार्य गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस, सुपरिंटेंडेंट संस्कृत स्टडीज, संस्कृत काले[ज] परीक्षाओं के रजिस्ट्रार; प्रक[ा०] तुलनात्मक भाषा-शास्त्र [...] भाषा-विज्ञान (जर्मन भा[षा] अनुवादित), प्रेम अथवा प्र[...] प्रबंध-प्रकाश, उपनिदान [...] न्यायसिद्धान्तमाला ; **प०**—ई[...] शिया लाइन, बनारस कैंट।

मंगलानंद गौतम—**शि**[०] पंजाब वि. वि. ; **सा०**—[...] और संचा० 'रसभरी' दिल्ली, [...] पति', 'रंगभूमि'; भूत० [...] 'प्रभाकर'; **प्रका०**—साम्यवा[द] गाँधीवाद; **वि०**—सिनेमा-[...] के आलोचक ; **प०**—'रस[भरी'] कार्यालय, दिल्ली।

मक्खनलाल दम्माण[ी] **ज०**—१९११; **प्रका०**—बा[...] शिक्षक (६ भाग), मनोहर [...] नियाँ, अनोखी कहानियाँ; **वि**[०] चाँद प्रिंटिंग प्रेस के संस्थापक[;] **प०**—प्रकाशक, कोटगेट, बीकाने[र]।

मगनलाल जिनेश—**ज**[०] २२ जूलाई १९२१; **सा०**—भू[...] में हिंदी-प्रचार ; आपके परि[...] से भूपाल में हिन्दी ऊँचा [...]

पा सकी ; 'सूचना' साप्ताहिक का संपादन किया; **प०**—'सूचना'-कार्यालय, भूपाल ।

मणिराम 'कंचन' खत्री—ज०—१११२ ; **अप्र०**—दो तीन काव्य-संग्रह; प०—तालबेहट, झाँसी ।

मणिलाल गुप्त—ज०-१६१३ बलिया ; **सा०**—कर्सियाँग में पादरियों को सम्मेलन परीक्षाओं के लिए शिक्षा दी, मिशिनरी स्कूलों में हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में अनिवार्य कराया, स्थानीय म्युनिसिपलिटी के कमिश्नर ; **वर्त०**—यूरोपिय गोथल्स मेमोरियल कालेज के अध्यापक; **प०**—कर्सियाँग-दार्जिलिंग ।

मथुराप्रसाद दीक्षित—ज०—१६०४; **सा०**—भूत० संपादक 'तरुण', 'भारत', 'देश', 'नवयुवक'; बिहार-प्रदेशिक हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के संस्थापक; **प्रका०**—बाबू कुबेरसिंह, नादिरशाह, विदेशों में भारतीय, विप्लवी वीर, गोविंद-गीतावली की टीका ; **प०**—प्रांतीय हिंदी-सम्मेलन-कार्यालय, पटना ।

मथुराप्रसाद पाँडेय—**ज०**—१८७७ ; **सा०**—सभी आन्दोलनों में भाग, कई बार जेल गये ; **प्रका०**—छप्पयशतक, फाग-विनोद, चौताल विनोद ; प०—पनासा, करछना, प्रयाग ।

मथुराप्रसाद शर्मा 'मथुरेश'—ज०—२ जूलाई १६२३ ; **शि०**—सा० रत्न, काव्यालंकार ; **सा०**—श्री वृन्दावन रामानुज विद्यालय के संस्थापक; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—विष्णु-भवन, मुहम्मदी, आगरा ।

मथुराप्रसाद शिवहरे—ज०—१८८६ फतेहपुर (उत्तर प्रदेश) ; **शि०**—इलाहाबाद ; **सा०**—राजनीति में सक्रिय भाग लिया, ऐंग्लो संस्कृत स्कूल (अब इंटर कालेज) के संस्थापक, महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित वैदिक यंत्रालय के मैनेजर रहे ; **प्रका०**—चारों वेदों का हिन्दी अनुवाद ; **वि०**—आजकल आर्य साहित्य मण्डल लि० और फाइन आर्ट प्रिंटिंग प्रेस के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं ; प० — आदर्शनगर, अजमेर ।

मथुराप्रसाद सिंह—**ज०**—१६१० ; **जा०**—मराठी, गुजराती,

और बँगला ; सा०—भूतपूर्व संपादक दैनिक 'महावीर' ; गीता और रामायण के प्रचारक; राजेन्द्र साहित्य - महाविद्यालय के प्रधानाध्यापक, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षा-समिति, स्थायी समिति और विश्वविद्यालय परिषद् के सदस्य ; प०—प्रधानाध्यापक, राजेंद्र साहित्य-महाविद्यालय, सेवदह, बिरजू मिल्की, पटना ।

मदनगोपाल—ज०-१८६१ ; शि०—बी० ए०, एल-एल बी० ; सा०—भूत० मंत्री ना० प्र० सभा काशी ; प्रका०—मानव हृदय की कथाएँ-२ भाग, अमेरिका में भारत वासी, इब्नबतूता की भारतयात्रा, संसार का संक्षिप्त इतिहास-भाग १ व २ ; प०—गुजराती मुहल्ला, मुरादाबाद ।

मदनगोपाल शर्मा—ज०—२० मई १९२६; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; प्रका०—स्फुट ; अप्र०-सुमनों की मुस्कान, चट्टान; प०—'अमर ज्योति', जयपुर ।

मदनगोपाल सिंहल—ज०—१९०९ मेरठ; सा०—छावनी बोर्ड के कमिश्नर तथा स्थानीय हिंदी-प्रचारिणी सभाओं के उत्साही कार्यकर्ता और सहायक, मेरठ से प्रकाशित 'आदेश' और 'वैश्य-हितकारी' के संपादक ; मेरठ की हिंदी-साहित्य-समिति के प्रधान ; प्रका०--एकांकी नाटक, भक्तमीरा, कलिका—कवि०, धर्मद्रोही राजा बेन, सत्यनारायण ; प०—सदर, मेरठ ।

मदनप्रसाद श्रीवास्तव—ज०-२९ जून १९२३ ; शि०—बी० ए. एल-एल० बी० ; सा०—'तरुण' त्रैमासिक के भूत० संपा०, संचा० भारतेन्दु-साहित्य-संघ ; प्रका०—स्फुट लेख ; प०-लोहार पट्टी, मोतिहारी ।

मदन मोहन—ज०-१९०५ ; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; सा०—निष्काम प्रेस के अध्यक्ष, भूत. संपा. 'निष्काम', निष्काम-प्रकाशन के संचा.; प्रका०--मानव समाज की उत्पत्ति तथा विकास ; वर्त०—विजयी जीवन नामक पुस्तक लिख रहे हैं ; प०—निष्काम प्रेस, मेरठ ।

मदन मोहन गुप्त—ज०—६ जून १९१९; शि०—सा० रत्न

प्र०—गुलाब का फूल; सा०—नैपाली क्षेत्र में हिन्दी-प्रचार, नगपति-नागरी-भवन के संस्थापक, यूनाइटेडप्रेस के प्रधान संवाददाता, बिहार प्रान्तीय हि० सा. सम्मे. की स्थायी समिति के सद. काँग्रेसी कार्यकर्ता, कई बार जेल जा चुके हैं; प्रका०—स्फुट; अप्र०—प्रबुद्ध, नील; प०—विश्राम कुटीर, रक्सौल।

मदनमोहन गुप्त 'मदन'—ज०—२ जनवरी १६२८; शि०—सा. भू०, सा० वि०, एच० एम० बी., एम० बी० बी० एस०; प्र०—फाँसी हो या जेल; सा०—संस्थापक कलाकार-परिषद शिवहर, कालिकानन्दन सार्वजनिक पुस्तकालय, अध्यक्ष—श्री भारतेन्दु अभिनय परिषद, 'प्रौढ़ शिक्षा-समिति' का आयोजन; १६४२ के अगस्त आन्दोलन में जेल-यात्रा, समाजवाद के समर्थक; प्रका०—प्रेम-पत्रावली, अनलकुंड; प०—ग्राम-पत्रालय, शिवहर, मुजफ्फरपुर, बिहार।

मदनमोहन गोस्वामी—सा०—लाहौर से प्रकाशित होनेवाले दैनिक 'विश्वबंधु' और दिल्ली के 'अमर भारत' के भूत० सहा० सम्पादक; प्रका०—स्फुट; वर्त०—पंजाब सरकार द्वारा प्रकाशित 'प्रदीप' के सहा० सम्पादक; प०—'प्रदीप'—कार्यालय, शिमला २।

मदनमोहन नागर—पुरातत्व और इतिहास के लेखक; ज०—१७ सितम्बर १६०६; शि०—एम. ए. (प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति); प्रका०—सारनाथ का संक्षिप्त इतिहास, पुरातत्व संग्रहालय की परिचय पुस्तिका; प०—क्यूरेटर, प्रांतीय संग्रहालय, नील रोड, लखनऊ।

मदनमोहन पांडेय—ज०—१६०६; सा०—मन्त्री हिंदी पुस्तकालय, बेकापुर, सद० जि० हि० सा० स० तथा हि० सा० परिषद्; संपा० 'प्रभाकर' मुंगेर; प्रका०—स्कूलों की कई पुस्तकें; प०—प्रभाकर प्रेस, मुंगेर।

मदनमोहन मिश्र—ज०—४ मार्च १६१४; शि०—काशी, प्रयाग; सा०—सहायक सम्पादक 'प्रकाश'—१६३३ से; प्रका०—

व्यावहारिक शिक्षा, स्वास्थ्य-सोपान, पशु-पक्षी ; अप्र०—बांधव-वैभव, चन्द्रज्योत्स्ना ; प०—खलगा स्ट्रीट, रीवाँ राज्य।

मदनमोहन राकेश—शि०—एम० ए० ; प्रका०—एकांकी नाटकों पर एक पुस्तक ; अप्र०—दो काव्य-संग्रह ; प०—अध्यापक, बिशप काटन स्कूल, शिमला २।

मदनमोहन साह—ज०—१८६४; शि०—विशारद १६१७; सा०—सम्मेलन-परीक्षा-केंद्र के संयो० १६१६, लक्ष्मण-साहित्य-भंडार और 'लक्ष्मण' पत्र के संचा० १६१७-२१ ; प्रका०—रघुनाथराव नाटक, राघवगीत ; प०—मिर्जा मंडी, चौक, लखनऊ।

मदन लाल— ज० १६०६ ; शि०—साहित्य रत्न सा०—सदस्य स्था० हि० प्र० स०; प्रका०—पंचमेल, मनकी पीर; अप्र०—एक रात, पायल की झंकार ; प०—शर्मन फार्मेसी, गिरदीकोट, जोधपुर।

मदनलाल मधु—शि०—एम० ए०; प्रका०—उन्माद (कविता) ; प०—अध्यापक, अर्थ-शास्त्र-विभाग, सनातन धर्म कालेज, शिमला २।

मधुकर खरे—प्रका०—स्फुट रचनाएँ ; अप्र०-दो तीन-कहानी संग्रह ; प०—बूढ़ापारा, रायपुर।

मधुकर मिश्र—शि०— बी० ए०, डी० ए० बी० कालेज कानपुर; सा०—हि० सा० समिति कानपुर की स्थापना, भूत० संपा० 'अभ्युदय' ; प्रका०—संकल्प, अनु०—इम्मार्टल फ्रेंड (अमरसखा); प०—६६/१७२ मधुमन्दिर, सदर बाजार, कानपुर।

मधुसूदनदास चतुर्वेदी 'मधु' ज०—१० दिसंबर १६१०; शि०—एम० ए०, बी० एस-सी०, सा० वि० मैनपुरी और आगरा कालेज; सा०—मंत्री, हिंदी-प्रचार-सभा, हैदराबाद, मंत्री मारवाड़ी नवयुवक मंडल और उसके प्रकाशन, भूत० संपा० 'आर्यमित्र', 'दिनेश', 'दिवाकर', 'विजय' ; प्रका०—साहित्य, रजकण, टैस (उप० हार्डी) ; अप्र०—अँग्रेजी नाट्य साहित्य का इतिहास, प्रसाद के 'आँसू', झाँसी की रानी, जीवन-

प्रभात, विश्राम, मंजरी ; प०—मोती-भवन, सोमाजी गुडा, हैदराबाद (दक्षिण) ।

मधुसूदन पांडेय 'मधुप'—ज०—६ मई १६१६ ; शि०—सा० वि० राँची ; प्र०—१९४० ; प्रका०—हमारे देश का इतिहास, स्वास्थ्य-तत्व, अपर-रचना-तत्व ; प०—सहायक शिक्षक, जिला स्कूल, राँची ।

मधुसूदन 'मधुप'—ज०—और शि०—इंदौर ; सा०—हस्तलिखित मासिक 'आशा' के भूत० संपादक , पश्चात बम्बई से इन्हीं के संपादकत्व में यह पत्रिका सुन्दर रूप में प्रकाशित हुई ; प्रका०—कहानियों के दो संग्रह; प०—स्नेहलतागंज, इंदौर ।

मधुसूदन मिश्र—प्रका०—स्फुट कविताएँ; अप्र०—फल की डाली; प०—प्रधानाचार्य, हरिहर संस्कृत कालेज, बकुलहर, चैनपटिया, चंपारन ।

मधुसूदन शास्त्री—शि०—एम० ए०, सा० आ० ; सा०—हि० वि० वि० काशी के ओरियंटल कालेज के अध्यापक,प्राचीन संस्कृत साहित्य के विद्वान ; प्रका०—रस-शात्र, उत्तर रामचरितकी टीका; प०—प्राध्यापक ओरियंटल कालेज, विश्वविद्यालय, काशी ।

मनफूल त्यागी 'सुधीर'—ज०—१६०६ ; शि०—बी० ए० प्रभाकर, सा० वि० ; आगरा, कानपुर ; प्रका०—देश देश के बालक, शेर-बच्चों के गीत ; प०—दरबार हाई स्कूल, जोधपुर ।

मनीराम शुक्ल—ज०—१४ जूलाई १८६६; शि०—धर्मभूषण, मानसकिंकर ; प्र०—रावण का निश्चय ; सा०—संस्थापक कवि-समाज विलासपुर; प्रका०—रावण का निश्चय, मानस की अशुद्धियाँ, श्री मन्नाम-प्रभाकर; अप्र०—राम-चरितावली ; प०—ग्राम-पोंड़ी, पो० नरगोड़ा, विलासपुर ।

मनोरंजनप्रसाद सिंह—शि० एम० ए० ; सा०—हिंदू विश्व-विद्यालय काशी में भूत० अँगरेजी अध्यापक; प्रका०—राष्ट्रीय मुरली, उत्तराखंड के पथ पर (यात्रा), गुन-गुन और संगिनी (कवि०); अप्र०—कई काव्य और निबंध-संग्रह ; प०—आचार्य, राजेन्द्र

कालेज, छपरा।

मनोरंजनसहाय श्रीवास्तव—ज०—१९२०; शि०—एम० ए० (हिंदी) पटना कालेज, बी० एल०, सा० लं० ; **सा०**—भूतपूर्व संपा० 'बाल-विनोद' झारखण्ड, दैनिक 'विश्वमित्र'; **प्रका०**—हँसती छाया, कृष्णा की आँखें, कब्र के पत्थर ; **वर्त०**—'पेंगुइन सिरीज' की भाँति हिंदी में सस्ते संस्करण निकालने की योजना ; **प०**—गुमला, राँची।

मनोहरलाल जैन — **ज०**—४ सितम्बर १९१४ दमोह ; **शि०**—एम० ए० दमोह, इंदौर ; **अप्र०**—कई लेख-संग्रह ; **प०**—अध्यापक, जैन इंटरमीडियट कालेज, बड़ौत, मेरठ।

मनोहरलाल बजाज—ज०—१९१९ ; **प्रका०**—पहले उर्दू में कहानियाँ लिखा करते थे ; अब हिंदी में अनेक स्फुट कहानियाँ प्रकाशित हैं ; **प०**—गलीखाई वाली, अमृतसर।

मनोहर शर्मा—शि०—एम० ए०, साहित्यरत्न ; **सा०**—राजस्थानी साहित्य का अन्वेषण करने में संलग्न ; **प्रका०**—अरावली की आत्मा, टीबाँ को संगीत ; **प०**—कलकत्ता।

मनोहरसिंह कुँवर—ज०—१९१९ ; शि०—सा० र० ; प्र०—१९३६ ; **सा०**—संचा० लेखक-मण्डल, संस्था० भारतीय संस्कृति-सदन, सेवा-मण्डल आदि के प्रेरक ; **प्रका०**—स्फुट ; **प०**—५०१५, नगर-बास, रतलाम।

मन्नूलाल शर्मा 'शील'—ज०—१९१४ ; **प्रका०**—चर्खाशाला, अँगड़ाई ; **अप्र०**—एक पग, धृतराष्ट्र ; **प०**—पाली, कानपुर।

मन्मथकुमार मिश्र—शि०—एम० ए०, हिंदू विश्वविद्यालय, काशी, **सा०**—लक्ष्मणगढ़ में सेवा-सदन के संस्थापक, 'सेवासदन-वाचनालय' और 'सेवासदन-पुस्तकालय' के जन्मदाता ; **प्रका०**—प्राचीन भक्त कवियों की भजन-माला ; **अप्र०**—संगीत-संबंधी लेख-संग्रह ; **प०**—लक्ष्मणगढ़ ; सीकर।

मन्मथ नाथ गुप्त—**सा०**—विगत काकोरी केस के कैदी, कई बार जेल-यात्रा, प्रसिद्ध क्रांतिकारी लेखक, 'बाल-भारती' दिल्ली के प्रमुख संपादक ; **प्रका०**—भारत

में सशस्त्र क्रांति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास—२ भाग, क्रांतिकारी की आत्मकथा, जिच, जययात्रा, अवसान-उप०, यौन विज्ञान और वैवाहिक जीवन, सेक्स से जीवन और सुख प्राप्ति, कथाकार प्रेमचंद: एक अध्ययन ; **अप्र०**—दो-तीन कहानी-संग्रह ; **प०**—पब्लिकेशंस डिवीजन, ओल्ड सेक्रेटरिएट, दिल्ली।

मन्मथरामकृष्ण भट्ट 'नवल'—ज०—२५ मार्च, १९१२ अकोला; शि०—रा० भा० वि०, विशारद, एम० आर० ए० एस० बंबई, प्रयाग और मद्रास वि० वि० ; जा०—कन्नड, कोंकणी, मराठी, अँगरेजी, और संस्कृत ; **प्रका०**—आदर्श पत्नी, राष्ट्रभाषा (हिंदी, अँगरेजी, कन्नड में), हिंदी-कन्नड-साम्य, नवयुग के कवि, हिंदू विधवा, कनकपास ; **अप्र०**—नवल पद्य, नवल मेल, ग्रामर इनग्राफिक ग्रिप, बही, नारी गोदावरी, नल-दमयंती, बिखरे मोती, कई उपन्यास और कहानी-संग्रह; **वि०**—अल्पायु में ही लंदन की आर० ए० एस० के सदस्य बनाये गये ; **प०**—कैंप पार्क व्यू, हासन, मैसूर स्टेट।

मल्लमंचिलि वेंकटप्पम्मा चौधरी सा०—१९२२ से प्रचार-कार्य, राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय सहयोग और जेलयात्रा ; **प्रका०**—एक दरजन छोटी-बड़ी पुस्तकें ; **प०**—आदर्श बालिका पाठशाला, नेहरूनगर, पो० तेनालि, गुंटूर।

महताबचंद खारैड—ज०—१९०३ ; **शि०**-सा० वि० ; **सा०**—मंत्री हि० साहित्य पाठशाला, हि० साहित्य - परिषद, और स्वागत समिति हि० सा० सम्मे० जयपुर; **प्रका०**—बाँकीदास ग्रंथावली, रघुनाथ रूपक, जयपुर राज्य के हिंदी कवि और लेखक; **अप्र०**—कृष्ण रुकमणि बेलि ; **वि०**—जयपुरी भाषा की लोकोक्तियों और शब्दों के संग्रह में संलग्न ; **प०**—सोंथली वालों का रास्ता, जयपुर।

महादेवप्पा कोडेकोलकर—**सा०**—लोकसेवासमिति, जोगी, गुलबर्गा के हिंदी-प्रचार-विभाग के अध्यक्ष; **प्रका०**-स्फुट ; **प०**—लोक-सेवा-समिति, जोगी, गुलबर्गा (दक्षिण)।

महादेवसिंह—ज०—१६०० के आसपास ; शि०—विशारद, रामायणाचार्य, वैद्यभूषण; प्रका०—रामायण-संबंधी स्फुट लेख; प०—खपटिया, भदोही, बनारस।

महादेव सीताराम करमकर—ज०—पूना ७ मई १६१५; शि०—सा० र० प्रयाग, एम० ए० (जर्मन, मराठी), पूना डेक्न एजूकेशन सोसाइटी के न्यू इँगलिश स्कूल और फर्ग्युसन कालेज ; सा०—१६३७–४० तक हिंदी-प्रचार-संघ द्वारा महाराष्ट्र में हिंदी-प्रचार, २ वर्ष तक शिक्षा-मंत्री, व्याख्यान-विनिमय के लिए तुलसी-दल की स्थापना, पूना में शिक्षा सरकारी ट्रेनिंग कालेज १६४०-४५, जर्मनके प्रोफेसर काशी वि० वि०—१६४५, काशी भारतीय साहित्य-सहकार के संस्थापक, विभिन्न प्रांतीय भाषाओं के लेखकों का एकीकरण; प्रका०—अनेक मराठी, अँगरेजी, जर्मन की कविताओं का हिंदी अनुवाद, हिंदी-मराठी-अनुवाद माला भाग ३, जर्मन-लोक-कथा; वि०—मराठी में भी लिखते हैं ; प०—भारतीय साहित्य-सहकार, विश्वविद्यालय, काशी।

महादेवी वर्मा—ज०—१६०७ फरुखाबाद ; शि०—एम० ए०; प्र०—१६२५; सा०—अनेक कवि-सम्मेलनों में सभानेत्री; भूत० संपादिका मासिक 'चाँद', इलाहाबाद ; प्रका० — नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीप-शिखा, यामा, अतीत के चलचित्र—संस्मरण; अप्र०—अनेक विचार-शील और स्त्री-समाज-सबंधी निबंधों और कविताओं के दो-तीन संग्रह; वि०— कुशल चित्रकर्त्री भी हैं ; 'नीरजा' पर ५००) पुरस्कार मिला ; 'महादेवी का आलो-चनात्मक गद्य' नाम से आपके कुछ निबंधों का एक संकलन भी प्रकाशित हुआ है; आपके गौरव-पूर्ण ग्रंथों के सचित्र संस्करण बड़ी सजधज से प्रकाशित हुए हैं जिनमें आपही के हस्तलेख में सारी रच-नाएँ छपी हैं; प०—मुख्याध्यापिका, महिलाविद्यापीठ, प्रयाग।

महारुद्र ध्यानावस्थित;—ज०—१६११; सा०—भूत० संपा०—'जयारमि' दैनिक, राष्ट्रीय आन्दो-लनों में मुख्ययोग; प०—सहायक

संपादक 'अमर-ज्योति', जयपुर।

महालिंगम, डाक्टर—सा०—तामिलनाड हिंदी-प्रचार सभा के उपाध्यक्ष; प्रका०—स्फुट; प०—सदस्य कार्यकारिणी समिति, दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा, त्यागरायनगर, मद्रास।

महावीर प्रसाद अग्रवाल—ज०—१ नवम्बर १९१२, जलेसर एटा; शि०—बी० ए० सेंट जान्स कालेज आगरा १९३३, एम० ए० प्रयाग वि० वि० १९३५, प्रथम श्रेणी, सर्वोच्चस्थान, एल-एल० बी०, प्रयाग वि० वि०; सा०—संयो० हिंदी कमेटी, बोर्ड आफ हाई स्कूल ऐंड इंटर एजूकेशन अजमेर, सद० बोर्ड आफ स्टडीज इन हिंदी आगरा वि० वि०, सद० स्थायी समिति हि०सा० स० प्रयाग; प्रका०—हिंदी साहित्य-सौरभ—३ भाग, कुछ आत्मकथाएँ, रामचंद्रिका-सार; प०—अध्यक्ष हिंदी विभाग, दरबार कालेज, रीवाँ।

महावीरप्रसाद शर्मा 'प्रेमी'—ज०—१९०३ ; शि०—प्रेम-महाविद्यालय वृंदावन, सा०—'जागृति' साप्ताहिक के भूत० संपादक; प्रका०—प्राकृतिक बिजली का प्रयोग, संगीत ; प०—२४ बनारस रोड, सलकिया, हबड़ा।

महावीरसिंह गहलोत—ज०—१९२० शि०—एम० ए० काशी ; सा०—१९४० से युक्तप्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचारिणी सभा के प्रचार-मन्त्री ; नागरी-प्रचारिणी सभा काशी के लिए हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज ; श्री 'वैष्णव-सत्संग' अहमदाबाद के अंतर्गत अष्टछाप सम्बन्धी साहित्य की खोज ; वि०—भारतीय-चित्रकला का अध्ययन ; काशी विश्वविद्यालय से डाक्टरेट के लिए 'अष्टछाप' पर थीसिस तैयार कर रहे हैं ; अहमदाबाद के 'गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी' के 'उच्च अभ्यास अने संशोधन-विभाग' के अंतर्गत 'वल्लभ-वेदांत और पुरानी राजस्थानी' के विद्यार्थी ; प०—गहलोत भवन, मेड़ती दरवाजा, जोधपुर।

महेंद्र—ज०—१९०० ; सा०—आगरे में साहित्य-विद्यालय की स्थापना, कई पुस्तकालय खोले, ग्राम-सुधार-सम्बन्धी शिविर-योजना

में सक्रिय भाग ; सा०—भूत० सम्पा० 'जैसवाल जैन' (१९१८-२४), 'वीर-संदेश' (१९२७-२८), 'सैनिक' साप्ताहिक (१९२९-३२), 'हिन्दुस्तान - समाचार' दैनिक (१९३०), 'सत्याग्रह - समाचार', 'सिंहनाद' (१९३०-३२), 'आगरा पंच' दैनिक (१९३४-४०), 'साहित्य - संदेश (१९३७ से), प०—साहित्यरत्न-भंडार, सिविल-लाइंस, आगरा।

महेन्द्रकुमार जैन — ज०—१९११; शि०—न्यायाचार्य, न्याय-तीर्थ ; ज्ञा० — संस्कृत, पाली, प्राकृत ; सा०—अध्यापक बौद्ध-दर्शन, संस्कृत महाविद्यालय, काशी वि० वि०, भारतीय ज्ञानपीठ की मूर्ति-देवी - ग्रन्थमाला के संस्कृत विभाग का सम्पादन, संपा० 'ज्ञानोदय'; प्रका०—संपा०—न्याय कुमुद-चन्द, प्रमेय कमल मार्तंड, प्रमाण मीमांसा, अकलंक ग्रंथत्रय, न्याय विनिश्चय विवरण, तत्त्वार्थ वृत्ति आदि पुस्तकें विस्तृत हिन्दी प्रस्तावना सहित ; प०—भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुंड, काशी।

महेंद्रजोशी — सा० —प्रधान संपादक मासिक 'सुधा'; प्रका०—स्फुट कविताएँ और कहानियाँ; प०—'सुधा'-कार्यालय, पो० बा० २, शिमला।

महेंद्रनाथ नागर—ज०—१६ नवंबर १९१३ इंदौर; शि०—एम० ए०, सा० र०; सा०—हरिजनों में हिंदी - प्रचार; निःशुल्क शिक्षा-दान; प्रका०—स्फुट आलोचनात्मक लेख; प०—रानीपुरा, बड़वानी, मध्यभारत।

महेन्द्र नाथ पांडेय—ज०—१९०४; शि०—सा० वि०, भूगोल रत्न, एन०डी०डी०वाई०; प्रका०—मठा : उसके गुण तथा उपयोग, स्वास्थ्य के लिए शाक-तरकारियाँ, आँख का अचूक इलाज, फलाहार-चिकित्सा, दूध-चिकित्सा, जुकाम, शहद के गुण और उपयोग, तपेदिक, भोजन ही अमृत है, जीवन-तत्व, हमारा भोजन, हमारे बच्चे, प्रमेह-विवेचन, मधुमेह-चिकित्सा; अप्र०—बालकों के रोग और उनके इलाज, सेवा-सुश्रुषा, धातु क्षीणता, कल्प-चिकित्सा, नारी-सहायक, अचूक चिकित्सा, राम-चरित-मानस; प०—महेन्द्र रसायन

शाला, कटरा, इलाहाबाद ।

महेंद्रप्रताप शास्त्री—ज०—अक्टूबर १९०० ; शि०—गुरुकुल वृंदावन, बी० ए० आगरा कालेज, एम० ए० डी० ए० वी० कालेज लाहौर, एम० ओ० एल० पंजाब वि० वि० ; सा०—भूत० संस्कृत प्राध्यापक राजाराम कालेज कोल्हापुर, अध्यापक डी० ए० वी० हाई स्कूल (१९२८-४२), आचार्य डी० ए० वी० कालेज लखनऊ–१९४२ से ; शिक्षा और समाज, दोनों क्षेत्रों में सार्वजनिक कार्य ; स्थानीय, प्रांतीय और अखिल भारतीय कई संस्थाओं के सदस्य, मंत्री अथवा प्रधान ; उत्तरप्रदेशीय माध्यमिक शिक्षा-पटल की हिन्दी, संस्कृत, नैपाली, पाली समितियों के संयोजक ; लखनऊ विश्वविद्यालय के कोर्ट आदि और आगरा विश्वविद्यालयकी सिनेटआदि के सदस्य; उत्तरप्रदेश में इंटर तक हिंदी अनिवार्य कराने में प्रमुख भाग लिया; हिन्दी-साहित्य-समिति देहरादून के संस्थापकों में और कई वर्ष तक उसके मंत्री रहे, लखनऊ हिंदी-विद्यापीठ के प्रधान और अंतर्राष्ट्रीय विद्यापीठ के उपकुलपति ; गुरुकुल विश्वविद्यालय वृंदावन के रजिस्ट्रार १९३१ से ३६ तक ; प्रका०—हिन्दी-संस्कृत के कई पाठ-ग्रंथ ; प०—आचार्य, डी०ए० वी० कालेज, लखनऊ ।

महेशचन्द्—ज०—१९ नवंबर १९१८ ; शि०—एम० ए०, बी० एस-सी० आनर्स, सा० वि० ; प्रयाग वि० वि० ; सा०—सद० समाज सेवा-संघ ; प्रका०—पूँजीवाद, समाजवाद और सहकारिता, भारतीय कृषि की आर्थिक समस्याएँ, चीन तथा जापान का सहकारी आंदोलन, भारत की सहकारी समस्याएँ ; प०—३४६, कटरा, प्रयाग २ ।

महेशदत्त दुबे—ज० — ३ मार्च १९२७ ; प्रका०—भारत छोड़ो, फफोले (कहा०) ; प०—सहायक संपादक 'विंध्यकेसरी', सागर ।

महेशशरण जौहरी 'ललित'—स०—'प्रगतिजन प्रकाशन कुटीर', रतलाम के संस्थापक; प्रका०—मिट्टी की दुनियाँ-कहानी संग्रह, अगस्त १९४२; अप्र०—व्यक्ति-

त्व-दर्शन (प्रमुख साहित्यकारों के 'इंटरव्यू' और संस्मरण); वि०—अपने बड़े भाई श्री भगवंत शरण जौहरी की भाँति आप भी कवि हैं; पता०—ठि० भगवंतशरण जौहरी, प्रोफेसर महाराजा वाड़ा सरकारी हाई स्कूल, उज्जैन।

महेश्वर—ज०—६जून१६१२; **शि०**—बी० ए० १६३६ में प्रयाग वि० वि, एम० ए०. १६४३ में आगरा वि० वि०,सा० र० १६४३; **प्र०**—सूर का संगीत और साहित्य; **प्रका०**—रसरंग की आलोचना, **सा०**—रात्रिपाठशाला फरुखाबाद, कायस्थ पुस्तकालय मल्हौसी, नव-युवक-सुधार-समिति फरुखाबाद का पुनरुत्थान व संगठन, भारतीय छात्र-परिषद का संचा०, 'विश्वमित्र' के संपा० ; प०—प्रधान अध्यापक, हरिजन आश्रम हाई स्कूल, प्रयाग।

महेश्वर नाबर—**सा०**—ज्ञान-लता मण्डल, बम्बई द्वारा संचालित 'भारतीय विद्यापीठ' के सहायक मंत्री, हिंदी-प्रचारक ; प्रका०—फूलों की परख, गद्यकुंज, पद्यकुंज, कहानी-कुंज आदि कई संपादित पाठ्य ग्रन्थ; प०—मंत्री, ज्ञानलता मण्डल, ३६ एल, मुगभाट क्रास लेन, बम्बई ४।

महेश्वर प्रसाद—**ज०**—अक्टूबर १६२० ; **प्रका०**—पंचामृत, यशोधरा की करुण साधना; **अप्र०**—आधुनिक बिरह - वेदना ; **प०**—अरौली, शाहाबाद।

महेश्वर प्रसाद 'मंसूर'—**ज०**—१६०६; **सा०**—भूत० संपा० 'तिरहुत-समाचार', 'जीवन-संदेश' के समालोचक, स्थानीय गाँधी-परिषद् एवं स्वजातीय सभा के प्रधान-मंत्री, संयुक्तमंत्री—हिंदू महासभा; प्रका०—दो कहानी—संग्रह; प०—गाँधी–परिषद्, दिल्ली।

माईदयाल जैन—ज०—२७ जूलाई १६०१ रोहतक; **शि०**—बी. ए., बी. टी.; प्रका०—मैट्रीकुलेशन जाग्रफी, नादिर तारीखहिंद, इँगलिश वर्ड्स डिस्टिंगुइश्ड, एयूनीक् बुक आफ इँग्लिश अनसीन, प्रभावशाली जीवन, सदाचार, शिष्टाचार और स्वास्थ्य, ज्योतिप्रसाद, . जैनधर्म ही सार्वभौम धर्म हो सकता है, जैन-समाजदर्शन; अप्र०—देहात-सुधार,

चालचलन, बालशिक्षा-दीक्षा; वि०—'जैनतीर्थ और उनकी यात्रा' और 'जैनधर्म-शिक्षावली' (चार भाग) का संशोधन भी किया है; प०—देहली।

माखनलाल चतुर्वेदी—पत्रकार-कला के आचार्य, सहृदय कवि, निर्भीक और स्पष्टवादी वक्ता; ज०—१८८८ बाबई जिला होशंगाबाद; सा०—भूत० सफल संपा० 'प्रताप', 'प्रभा'; वर्त०—संपा० साप्ताहिक 'कर्मवीर', खँडवा; हिंदी साहित्य-सम्मेलन, हरिद्वार-अधिवेशन के सभापति; प्रका०—हिमकिरीटिनी-कविता, कृष्ण-अर्जुन-युद्ध—नाटक, वनवासी—कहानी-संग्रह, साहित्यदेवता—गद्यकाव्य; वि०—आपकी कविताएँ 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से प्रकाशित होती हैं; प०—कर्मवीर प्रेस, खँडवा।

माणिकचंद बोंद्रिया—शि०—बी. एस.-सी. (कृषि); प्रका०—ग्रामोपयोगी स्फुट लेख; प० 'कृषक'-संपादक, घाट रोड, नागपुर २।

मातादीन भगेरिया—सा०—राजपूताना युवक मण्डल के संस्थापक और स्थायी मंत्री, मारवाड़ी यंग मैंस एसोसिएशन के मंत्री १९३०, प्रजामण्डल समिति के सदस्य १९४८ से, दिल्ली प्रांतीय हिंदी-पत्रकार-संघ के सभापति, 'एशिया से दूर रहो' समिति के प्रबन्ध मंत्री, जून १९५० से राजस्थान प्रांतीय कांग्रेस समिति के सदस्य; प्रका०—तरुण तपस्वी, दिव्यकुमार का देशाटन, प्रेम की वेदी, गाँधी-मानस—महाकाव्य, कमला-जवाहर; अप्र०—स्फुट कविताएँ, एकांकी नाटकों के एक दो संग्रह; वि०—इस समय 'नव-भारत टाइम्स' के समस्त संस्करणों के प्रधान सम्पादक हैं, यह पत्र दिल्ली, बम्बई तथा कलकत्ता से एक साथ प्रकाशित होता है; प०—दरियागंज, दिल्ली।

मातादीन शुक्ल—सा०—कई वर्ष तक लखनऊ की 'माधुरी के सहकारी और प्रतिनिधि संपादक रहे; अनेक पाठ-ग्रंथों का संपादन किया; वि०—आपके सुपुत्र श्रीरामेश्वर शुक्ल 'अंचल', एम० ए० हिंदी की अच्छी सेवा कर रहे हैं, प०—प्रबंधक एजुकेशन बुकडिपो, जबलपुर।

माताप्रसाद गुप्त, डाक्टर—शि०—एम० ए०, डी० लिट् ; प्रका०—तुलसी-संदर्भ, कवितावली, पार्वतीमंगल, हिंदी-पुस्तक-साहित्य ; **वि०**—आपने कविवर बनारसीदासजी के अर्द्धकथानक का संपादन किया है ; **प०**—प्राध्यापक, हिंदी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।

मातुलाल शर्मा—ज०—११ जूलाई १९२७ ; **प्रका०**—स्फुट ; **प०**—संचालक 'सीमा', गोपाल प्रेस, आसनसोल।

माधवप्रसाद टंडन—**सा०**—भूत० मंत्री पटनानगर हि० सा० सम्मे० ; **प्रका०**—जीवन-क्रम—कहा०; **प०**—हिंदी साहित्य सम्मेलन-कार्यालय, पटना।

माधवशरण—ज०—१९२२ ; **शि०**—विशारद, साहित्य-भूषण ; **अप्रा०**—पिंगल-पीयूष, गांडीव, चातकी ; **प०**—बगही, जोगापट्टी, चंपारन।

मानसिंह, राजकुमार—ज०—१६ नवंबर १९०८ बनेड़ा, **शि०**—बार०एट० ला०, वि० भू० बनेड़ा, मैसूर; **सा०**—तीन साल तक अ० भा० हिंदी साहित्य सम्मेलन को २५१) का मान-पुरस्कार दिया ; अब वही पुरस्कार राजस्थान हिंदी साहित्य-सम्मेलन से १५१) का दिया जाता है ; **प्रका०**—बाल-राजनीति, लंदन में भारतीय विद्यार्थी; **अप्र०**—राजा—उप०; **प०**—बनेड़ा राज्य, मेवाड़।

मायादेवी—रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी की विदुषी धर्मपत्नी ; **प्रका०**—कन्या-धर्म-शिक्षा; **अप्र०**—पाकशास्त्र ; **प०**—साहित्यकुटीर, दही गली, भरतपुर।

मायाशंकर वर्मा—ज०—५ मई १९२० ; **शि०**—बी० ए०, सा० र० ; **सा०**— नागरी प्रचारिणी सभा आगरा के संचा०, हि० सा० स० के सद०, प्रा० हि० सा० स० शिकोहाबाद के संयोजक, भारतीय वि० वि० पाढ़म के संस्थापक ; काँग्रेसी कार्यकर्ता; **प्रका०**—जमीदारी का अंत कैसे हो ? **वि०**—मायाशंकर-लिपि का आविष्कार किया ; **प०**—'सैनिक'-संपादक, आगरा।

मार्तण्ड दामोदर पुस्तके—ज०—बड़ नगर, ग्वालियर; **शि०**—

उज्जैन, इंदौर; सा०—१९३७ तक ग्वालियर के मेडिकल विभाग में कार्य ; ७ वर्ष तक शिक्षा-विभाग के मेडिकल आफिसर, म्यूनिसिपैलिटी के हेल्थ आफीसर, सभा० अखिल भारतीय लाइसेंशियेट्स एसोसियेशन—१९४७ ; संचा० 'आरोग्यमित्र', मराठा-वाचनालय और प्रौढ़शिक्षणशाला; प्रका०—आरोग्य-मार्ग-दर्शिका, आहार और शरीर-पोषण ; प०—नयाबाजार, लश्कर, ग्वालियर ।

मालोजीराव नरसिंह राव शितोले—ज०—१८९५ ; सा०—मातृभाषा मराठी होने पर भी हिंदी के प्रबल समर्थक ; अनेक बार योरपयात्रा, 'शासन-शब्द-संग्रह' के संपादक ; प्रका०—अश्वपरीक्षा (हिंदी में अपने विषय की प्रथम पुस्तक), ग्राम-चिंतन ; अप्र०—नवीन शिक्षा-योजना, धर्म-शिक्षा ; प०—सचिव, ग्वालियर राज्य ।

माहेश्वरी सिंह 'महेश'—ज०—पकरिया, भागलपुर; शि०—एम. ए.; सा०—भूत० संपा० 'विश्वमित्र' और 'बीसवीं सदी' ; प्रका०—सुहाग, युगवाणी, अनल गान;प०—अध्यापक हिंदीविभाग, तेजनारायण जुबली कालेज, भागलपुर ।

मुकुंदीलाल — ज० — १४ अक्टूबर १८९० ; शि०—प्रारंभिक पौड़ी, अल्मोड़ा, बी० ए०, बैरिस्टरी, इलाहाबाद, बनारस, कलकत्ता और आक्सफोर्ड; सा०—एम० एल० सी० गढ़वाल प्रांत, उत्तरप्रदेशीय कौंसिल के सभापति; प्रका०—स्फुट; वि०—भारतीय चित्रकला के मर्मज्ञ और आलोचक, अँगरेजी में भी लिखते हैं ; प०—पोस्ट क्लटरबकगंज, बरेली ।

मुंशीराम शर्मा 'सोम'—ज०—१९०३ आगरा; शि०—एम० ए० ; प्रका०—संध्यासंगीत, श्री गणेश - गीतांजलि, आर्यधर्म, हिंदीसाहित्य के इतिहास का उपोद्घात, कविकुल-कीर्ति, सूरसौरभ, संपा०—साहित्यसुधाकर; पद्मावत का भाष्य, सूरसौरभ-वृहत् संस्करण, भक्ति-तरंगिणी; वि०—डी० लिट्० की उपाधि के लिए 'सूरदास' पर आपने थीसिस आगरा विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कर दी है;

प०—अध्यक्ष, हिंदी-विभाग डी० ए० वी० डिग्री कालेज, आर्यनगर, कानपुर।

मुंशीलाल पटैरिया—ज०—१९१३, झाँसी; शि०—सा० र०; सा०—बुंदेलखंड ना० प्र० सभा झाँसी के संस्था०; प्रका०—बिजली, पन्नाधाय, दस हजार; अप्र०—अमर बापू; प०—पुरानी कोतवाली, झाँसी।

मुक्ता शास्त्री 'अभया'—ज०—१९२४; शि०—विदुषी इंटरमीजियेट; अप्र०—हम कहाँ, प्राणप्रतिष्ठा; प०—कटरा सहाय खाँ, इटावा।

मुन्नालाल—शि०—न्यायतीर्थ; सा०—भूतपूर्व मंत्री गणेश विद्यालय सागर, 'गोलापूर्व जैन' के संपादक; प्रका०—छहठाया और वहत्स्वयं-भूस्तोत्र (टीकाएँ); प०—ठि. वीरसेवा-मंदिर, सरसावाँ, सहारनपुर।

मुरलीधर जोशी—ज०—३ दिसंबर, १९०९; शि०—एम० ए० (अर्थशास्त्र) प्रयाग वि० वि०; प्रका०—सम्पत्ति का उपयोग, द्रव्यशास्त्र; प०—प्राध्यापक, अर्थशास्त्र-विभाग, विश्व-विद्यालय, लखनऊ।

मुरलीधर दिनौदिया,—ज०—१९१७; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; सा०—स्थानीय साहित्यिक संस्थाओं में सक्रिय सहायता; साप्ताहिक 'एकता' के भूतपूर्व संपादक; प०—वकील, भिवानी, हिसार, पंजाब।

मुरलीधर नारायण प्रसाद—ज०—जनवरी १९१५; शि०—बी०ए०, ०सी०टी० नालन्दा कालेज; सा०—संस्थापक-सरस्वती पुस्तकालय, मगध सा० परिषद्, हरनौत; प्रका०—दो बच्चे, विरह-वेदना, अप्र०—तरंग (कवि०); प०—धनावाँ, पो० परवलपुर, पटना।

मुरलीधर श्रीवास्तव—शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—सा०—हिंदी-प्रचार-समिति वर्धा में साहित्यिक कार्यकर्त्ता; प्रका०—मीराबाई काव्य; अप्र०—दो साहित्यिक लेख-संग्रह; प०—हिंदी प्रचार-समिति, वर्धा।

मुरलीधराचार्य 'तिलक'—स०—१९०४; सा०—रंगनाथ प्रेस के संचालक हैं; १९३० से

'भिवानी-इतिहास' लिख रहे हैं, 'श्रीरंगनाथ' नामक साप्ताहिक पत्र के संपादक हैं; म्युनिसिपल कमेटी के भूतपूर्व सदस्य; श्रीरंगनाथ संस्कृत पाठशाला के संचालक, रंगनाथ पुस्तकालय और औषधालय के संस्थापक, कई पुस्तकों का संपादन किया है; प०—'रंगनाथ' कार्यालय, भिवानी, हिसार, पंजाब।

मुरारीलाल शर्मा 'बालबंधु'—ज०—१४ नवंबर १८६३; सा०—'बाल-समाज' की सेवा-समिति बालचर मंडल के स्काउट मास्टर और हिंदुस्तान स्काउट एसोसियेशन के स्काउट कमिश्नर, भूत० संपा०—'भारतीय बालक', अब 'सेवा' के संपा० मंडल के सद० ; प्रका०—संगीत-सुधा, साहसी बच्चे, गोदी भरे लाल, होनहार बिरवे, जीवन-सुधार, दुनियाँ की झाँकी, दृश्य-कुंज, दूध-मलाई, परीक्षा, हिंदी-वसंत २ भाग, हमारे महारथी, राष्ट्र की रश्मियाँ, साहित्य-चंद्रिका, बाल-संजीवनी, दृश्य-दीपावली, मनस्वी, कर्मवीर, कोकिला, बुलबुल (उर्दू), हमारे नेता, हमारी देवियाँ, हमारी दुनिया; प०—सेवा-मंदिर, सिविल लाइंस, मेरठ।

मूलचंद अग्रवाल—ज०—कोटरा (उरई); शि०—बी० ए० इटावा, मेरठ कालेज मेरठ; सा०—कलकत्ते से १९१७ में दैनिक 'विश्वमित्र' का संचालन-संपादन, फिर हिंदी का सर्वप्रथम साप्ताहिक 'विश्वमित्र' का प्रकाशन-संपादन किया, अनेक वर्षों से मासिक 'विश्वमित्र' भी छपाते हैं; प्रका०—पत्रकार जीवन के अनुभव; वि०—हिंदी में आपका दैनिक 'विश्वमित्र' अकेला पत्र है जो बंबई, दिल्ली, पटना, कानपुर और कलकत्ता (५ शहरों) से एक साथ छपता है ; प० —कलकत्ता।

मूलचन्द भट्ट 'भौंर'—ज०—१९०४, जोधपुर; शि०—कविरत्न; सा०—सहा० संपा० 'परिवर्तन' १९३०, मंत्री आर्य संस्कृत सोसाइटी, भूत० सभापति, परगना लोक सा० परि०, प्रका०—रजवाड़ी, कीरकोकिल, मकरंद, किसान-बत्तीसी ; वि०—जोधपुर-नरेश के राजकवि, अनेक बार पुरस्कृत ;

प०—संपादक 'कलाधर' (मासिक), जोधपुर।

मूलचन्द शास्त्री—ज०—१८६७; शि०—आयुर्वेदाचार्य; सा०—वैद्य सम्मेलनों, वैद्य-संस्थाओं के प्रधान और आयोजक, भारतीय चिकित्सा-पद्धति एवं वनस्पति शास्त्र पर खोज; प्रका०—स्फुट गवेषणात्मक लेख; प०—प्रधान आयुर्वेद विभाग, आर०वो० आश्रम, संस्कृत कालेज, लक्ष्मणगढ़, जयपुर।

मूलवर्द्धन राजवंशी—ज०—१६२८ बीकानेर; शि०—बी० ए० राज० वि० वि०, सा० रत्न; सा०—संस्था० हिन्दी विद्यापीठ, ग्राम्य साहित्य-सदन, सह० संपा० 'नव संदेश'; प्रका०—स्फुट; अप्र०—अजंता; प०—संचालक 'राजवंशी ब्रदर्स', प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता, रतनगढ़, बीकानेर।

मृत्युंजयप्रसाद, विद्यालंकार—देशरत्न डा० राजेंद्रप्रसाद के सुपुत्र; ज०—१६११; सह० संपा०—'देश', 'हिंदी नवजीवन'; प्रका०—अनीति की ओर, भारतवर्ष की प्रधान एकता; प०—सदाकत आश्रम, पटना।

मेंहीदास, बाबा—सा०—१६०६ से संत-कवियों के साहित्य का अध्ययन; शिष्य परम्परा की स्थापना; प्रका०—संतसंगयोग—४ भाग; संतमत-सिद्धांत और गुरु-कीर्तन; रामचरितमानस-सार सटीक, संक्षिप्त विनयपत्रिका सटीक, भावार्थ सहित-घट रामायण; अप्र०—व्याख्यान-संग्रह; प०—सत्संग-मंदिर, ग्राम सिकलीगढ़, धरहरा, पो० बन मनखी, पूर्णिया।

मैथिलीशरण गुप्त—द्विवेदी युग के सबसे अधिक लोकप्रिय कवि; ज०—१८८६ झाँसी; प्र०—१६०५; प्रका०—साकेत, भारत-भारती, जयद्रथ-वध, गुरुकुल, हिंदू, पंचवटी, अनघ, स्वदेश-संगीत, वक-संहार, वन-वैभव, सैरंध्री, त्रिपथगा, झंकार, शक्ति, विकटभट, रंग में भंग, किसान, शकुंतला, पद्यावली, वैतालिक, गुरु तेग बहादुर, यशोधरा, द्वापर, सिद्धराज, मंगलघट, वीरांगना, विरहणी व्रजांगना, पलासी का युद्ध, स्वप्न वासवदत्ता, मेघनाद-वध, रुबाइयत उमर खय्याम, चंद्रहास, तिलोत्तमा, त्रिशंकु, नहुष, शांति, आस्वाद,

गृहस्थगीत; वि०—'साकेत' नामक महाकाव्य पर आपको मंगलाप्रसाद पुरस्कार दिया गया; आपकी 'भारत-भारती' का आधुनिक युग की काव्य-रचनाओं में कदाचित् सबसे अधिक प्रचार हुआ है; आपके बँगला से अनुवादित काव्य भी सफल हैं; प०—साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी।

मैना देवी — प्रका०—स्फुट गीत; प०—परवारपुरा, इतवारी, नागपुर।

मोतीलाल त्रिपाठी 'अशांत'-ज०—झाँसी; शि०—बी० ए०; प्रका०—नयी कहानियाँ, दिल्ली चलो, बापू का बलिदान, प०—शारदा - साहित्य - कुटीर, पुरानी नझाई, झाँसी।

मोतीलाल मेनारिया—ज०—१६०२; शि०—१६२६ में बी० ए० और १६३१ में एम० ए०; सा०—स्थानीय विद्यापीठ की समस्त वृत्तियों में सक्रिय सहयोग; प्रका०—मेवाड़ की विभूतियाँ राजस्थानी-साहित्य की रूप-रेखा, डिंगल में वीररस, राजस्थान में हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज (प्रथम भाग); वि०—डिंगल साहित्य की खोज के महत्त्वपूर्ण कार्य में संलग्न; प०—गनगोरघाट, उदयपुर।

मोतीलाल लल्लू भाई पारीख, दीवान बहादुर—ज०—१८ मार्च १८८२; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०, बम्बई; प्रका०—वल्लभ-चरित-संपा०; वि०—आजकल बरिया स्टेट के दीवान हैं; प०—डकाल-पोल, नडियाद।

मोतीलाल शास्त्री—ज०—१६०८ जयपुर; शि०—वेदवाचस्पति, सा०—'मानवाश्रम विद्यापीठ' की स्थापना, पाक्षिक 'मानवाश्रम' का प्रकाशन-संपादन; प्रका०—हिंदी गीता-विज्ञान-भाष्य, उपनिषद-विज्ञान-भाष्य—दो खंड, मांडूक्योपनिषद् हिंदी - विज्ञान भाष्य, वेदेषु धर्मभेदः, श्राद्ध-विज्ञान; प०—मानवाश्रम-विद्यापीठ, जयपुर।

मोहन वल्लभ पंत—ज०—१६०५; शि०—एम० ए०, बी० टी; अल्मोड़ा, काशी; सा०—सद० राजपूताना वि० वि० की सीनेट, फैकल्टी आव आर्ट्स, और एकेडेमिक कौंसिल; राजपूताना वि० वि० की उच्च कक्षाओं में

हिंदी का प्रवेश आपने करवाया; प्रका०—कवितावली की टीका, दोहावली की टीका, अन्योक्ति-कल्पद्रुम, सूरपंचरत्न, नहुष का स्वाध्याय, कारक-दीपिका (पाणिनी के तत्संबंधी सूत्रों की व्याख्या); प०—अध्यक्ष हिंदी-संस्कृत विभाग, महाराणा भूपाल कालेज, उदयपुर।

मोहनलाल उपाध्याय, 'निर्मोही' —ज०—रामपुरा १९७७ ; शि० —सौ० र० ; सा०—अध्यापक हिं० सा० समिति तुकोगंज इंदौर द्वारा संचालित हिन्दी विद्यापीठ, 'आदर्श उत्सव' चित्तौड़ में सर्व-धर्म-सम्मेलन की आयोजना ; संपा०—दैनिक 'मालवा'; प्रका० —पंद्रह अगस्त, रूपमती, हिंदी-साहित्य के इतिहास की रूपरेखा; संपा०—कलम के हिमायती, दिवाकर-अभिनन्दन-ग्रंथ ; वर्त०—मैनेजर युनाइटेड प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ; संपा०—प्रगतिशील-साहित्य-परिषद् के द्वारा साहित्य की अभिवृद्धि का आयोजन; प०—८९, इतवारिया बाजार, इन्दौर।

मोहनलाल गुप्त—सा०—भूत० संपा० 'नवयुवक' और 'तिरहुत-समाचार'; भूत० म्युनिसिपल-कमिश्नर; प्रका०—स्फुट रचनाएँ; प०—सरैयागंज, मुजफ्फरपुर।

मोहनलाल 'जिज्ञासु'—ज०—२६ अक्टूबर १८२२ ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०; जोधपुर, लखनऊ वि० वि०; प्र०—बिदाई, १९३५; प्रधान मंत्री—तरुण-कला-परिषद् ; प्रका०—अन्तर्दाह, हिंदी कहानियाँ : एक अध्ययन, हिंदी-गद्य का विकास; अप्र०—मधुपीर, मेरी कहानियाँ ; प०—हिंदी प्रोफेसर, जसवंत कालेज, जोधपुर।

मोहन लाल झा 'मोहन'—ज०—१८९६ ; शि०—साहित्य-भूषण; सा०—राष्ट्र-भाषा पुस्तकालय के जीवन - सदस्य, 'सूरकवि मंडल' की स्था० में उद्योग, भूत० प्रधान आर्यसमाज-भवन ; अप्र०—श्रद्धाञ्जलि, ज्योत्सना; प०—४७४, श्री सूरसदन, नगरा, झाँसी।

मोहन लाल बल्देवा—पुराने और कर्मठ कार्यकर्ता, पिछले चालीस वर्षों से हिंदी-प्रचारक, सरस्वती - हिंदी - पुस्तकालय और कन्या हिंदी-पाठशाला के संस्थापक-

संचालक; वि०—सरस्वती-पुस्तकालय हैदराबाद का सबसे पुराना हिंदी-पुस्तकालय है; प०—कसारहट्टा, हैदराबाद (दक्षिण)।

मोहनलाल महतो, 'वियोगी'—ज०—१६०२; सा०—आधुनिक हिंदी-शैली के प्रसिद्ध कवि; प्रे०—संत-साहित्य—कबीर और रवींद्र—से प्रेरित होकर साहित्य क्षेत्र में उतरे, व्यंग्य चित्रकार, समीक्षक; प्रका०—लगभग ४५ रचनाएँ हैं, मुख्य ये हैं—निर्माल्य, एकतारा, कल्पना (का० संग्रह), महाकाव्य-आर्यावर्त, आरती के दीप, उप०—शेषदान, आदमखोर, कहा०—रजकण, नाट०—धोखा, तथास्तु, आत्मकथा—उस पार; वर्त०—एक महाकाव्य और ऋग्वेद पर विशाल ग्रन्थ लिख रहे हैं; वि०—पाश्चात्य विचारों के पोषक होते हुए भी अपनी भारतीयता को अक्षुण्ण रक्खा; प०—उपरडीह, गया, बिहार।

मोहनलाल शांडिल्य, शास्त्री—ज०—१६२०; प्रका०—गजेंद्रमोक्ष; वि०—अनेक कवि-सम्मेलनों के संयोजक; प०—कोटरा, जालौन।

मोहनसिंह सेंगर—ज०—२८ दिसंबर १६१२, जोधपुर; सा०—भूत० संपादक 'विशाल भारत', 'शक्ति', 'हिंदुस्तान', 'नवयुग', 'अभ्युदय'; बंगीय हिंदी-परिषद् (कलकत्ता) के उत्साही कार्यकर्ता और स्थायी सदस्य; प्रका०—चिता की चिनगारियाँ, खून के धब्बे, जीवन का सत्य, नये युग की नारी; प०—संपादक-'नया समाज', ३३ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।

यज्ञदत्त शर्मा—ज०—१६१६; आगरा; शि०—एम० ए० प्रयाग तथा आगरा विश्वविद्यालय; प्रका०—विचित्र त्याग, दो पहलू, ललिता, दया (नाटक), हिंदी का संक्षिप्त इतिहास; प०—आगरा।

यज्ञनारायण मिश्र—ज०—१६१२; शि०—एम० ए०, सा० र० प्रयाग, काशी और आगरा; सा०—अवैतनिक अध्यापक; अप्र०—संस्कृत अनुवाद तथा व्याकरण, साक्षरता आदि कई लेख और काव्य-संग्रह; प०—हिंदी अध्यापक, गवर्नमेंट नार्मल स्कूल, झाँसी।

यमुना कार्यी–शि०–बी० ए०; सा०—एम० एल० ए०, कलकत्ते के दो तीन हिंदी दैनिकों के प्रधान संपादक रह चुके हैं; प्रका०—स्फुट रचनाएँ; प०—प्रधान संपादक, साप्ताहिक 'हुँकार', पटना।

यमुनाप्रसाद अवस्थी—ज०–कानपुर; शि०–सा० वि०; प्रका०–स्फुट; प०—हिंदी अध्यापक, मारवाड़ी इंटर कालेज, कानपुर।

यमुनाप्रसाद चौधरी 'नीरज'–शि०—बी० ए०, बी० एल०; सा०—उप-सभापति जिला हिं० सा० सभा; प्रका०—मृदुदल —कवि०; प०—खैरा स्टेट, मुंगेर।

यशपाल—शि०—बी० ए०, प्रभाकर काँगड़ी, लाहौर; सा०—काँग्रेस के कार्यकर्त्ता, कई बार कारावास; प्रसिद्ध राजनीतिक पत्र 'विप्लव' का संपादन; प्रका०—पिंजरे की उड़ान, न्याय का संघर्ष, मार्क्सवाद, दादा कामरेड, गाँधीवाद की शव-परीक्षा, वो दुनियाँ, चक्कर क्लब, ज्ञानदान, देशद्रोही, तर्क का तूफान, पार्टी कामरेड, मनुष्य का मूल्य, अभिशप्त, भस्मावृत्त चिनगारी, फूलों का कुर्ता, धर्मयुद्ध, दिव्या, पक्का कदम, बात बात में बात, रामराज्य की कथा आदि; अप्र०–राष्ट्रीय, राजनीतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक लेख-संग्रह; प०—'विप्लव'-कार्यालय, शिवाजी मार्ग, लखनऊ।

यशपाल जैन—ज०–१६१४; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी० प्रयाग; सा०—भूत संपा०—'जीवनसुधा', सस्ता साहित्य मंडल के अंतर्गत एक वर्ष तक संपादन कार्य, भूत० मंत्री संस्कृति-संघ और हिंदी-परिषद्, दिल्ली; सह० संपा० 'मधुकर', भूत० औगेनाइजिंग स्काउट मास्टर; प्रका०—निराश्रिता, नव-प्रसून—कहानी० आदि लगभग एक दर्जन पुस्तकों का संपादन तथा अनुवाद; प०—'मधुकर'-कार्यालय, टीकमगढ़।

यशोदादेवी, श्रीमती—ज०—१६०८; प्रका०—भ्रम (कहानी-संग्रह); अप्र०—कहानियों के दो-तीन संग्रह, प०—कृष्ण-कुंज, इलाहाबाद।

याज्ञवल्क्य सदानन्द अग्निहोत्री—ज०—२३ सितम्बर १६१८;

शि०—बम्बई और गुजरात; जा०—गुजराती, अँगरेजी; सा०—सम्पा० 'गुजरात-मित्र', प्रधान-कोविद-मंडल, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा और हिंदुस्तानी-प्रचार-सभा के कार्यकर्ता; गुजरात में हिंदी-प्रचार; प्रका०—उर्दू-लिपि-परिचय और हमारी हिंदुस्तानी; प०—अध्यापक सरकारी ट्रेनिंग कालेज और बेसिक ट्रेनिंग सेंटर, कतारगाँव, सूरत।

येहुल बाल शौरिरेड्डी— ज०—१ जूलाई १९२६; शि०—बैजवाड़ा, प्रयाग, काशी; जा०—तेलगू, अँगरेजी; सा०—१९४८ में राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा के अखिलभारतीय प्रचार-सम्मेलन में प्रतिनिधि, गंगा-पुस्तकालय के संस्थापक; प्रका०—स्फुट; प०—उपआचार्य हिन्दी कालेज, मन्नार-गुडी (दक्षिण)।

योगेन्द्रनाथ शर्मा 'मधुप'— हास्यरस के प्रतिष्ठित लेखक स्व० पंडित शिवनाथ शर्मा के सुपुत्र; शि०—लखनऊ; सा०—दैनिक और साप्ताहिक 'आनंद' के कई वर्ष तक संपादक रहे; अनेक ग्रंथों की रचना की है; प०—'आनंद'-कार्यालय, चौक, लखनऊ।

योगेश्वर चौधरी— ज०—१ अप्रैल १९१८; शि०—सा० र०; सा०—हिन्दी-प्रचार में योग; प्रका०—स्फुट लेख; प०—पुस्तकाध्यक्ष, सदाशिव पुस्तकालय, शांतिकुटीर, हुसेनपुर, भंडारी, पटना।

रघुनाथ प्रसाद परसाई— ज०—१८९७ ; शि०—इन्दौर ; प्रका०—देशी राज्यों की समस्या, देशी राज्य और संघ-शासन; प०—मालापुरा, सोहागपुर।

रघुनाथदास बाँगड़— सा०—हिंदी पुस्तकालय की रजत-जयंती के अध्यक्ष, ग्रामों में शिक्षा-प्रसार के लिए लगभग २० पाठशालाएँ खोलीं—हिन्दी-विद्यापीठ के संस्थापक ; प्रका०—विविध विषयक स्फुट रचनाएँ ; प०—डीडवाना, मारवाड़।

रघुनाथ मुकुन्द शास्त्री— प्रका०—पवार राजवंश का इतिहास; प०—प्रधान कर्मचारी, दरबार आफिस, धार।

रघुनाथ विनायक धुलेकर—ज०—६ जनवरी १८९१; शि०—प्रयाग, कलकत्ता; सा०—महाराष्ट्र समिति तथा विद्यालय झाँसी और महाराष्ट्र गणेश मन्दिर ट्रस्ट के संस्थापक ; भूत० संपादक अर्ध साप्ताहिक 'उत्साह', 'मातृभूमि' दैनिक, 'फ्री इंडिया' साप्ता० ; वार्षिक 'मातृभूमि अब्दकोश' के संपादक; प्रका०—अनेक पुस्तकों के रचयिता; प०— 'मातृभूमि-अब्दकोश'-कार्यालय, झाँसी।

रघुनाथसिंह 'सागर'—ज०—१५ दिसम्बर १९२९; सा०—संस्था० और संचा०—'युगांतर' ; प्रका०—चिनगारी, बौनो के देश में ; अप्र०—देव-मन्दिर (कहा०); प०—'युगान्तर' - कार्यालय, बड़-वाहा, मध्यभारत।

रघुपतिसिंह चौहान 'व्यथित'—ज०—३१ जनवरी १९२० ; शि०—औरंगाबाद, गया; अप्र०—कसक, मगही लोकगीत ; प०—मरथौली, रामबिलास नगर, गया।

रघुवंश पांडेय 'मुनीश'—ज०—१९१२ ; शि०—सा०रत्न; सा०—भूतपूर्व संपादक 'किशोर' पटना ; प्रका०—सत्यहरिश्चंद्र, महात्मागाँधी, धरती की खोज; अनु० —बौद्ध भारत; वर्त०—'परिजात' त्रैमासिक और 'नवरस' मासिक (पटना) के संपा०; प०—ग्रंथमाला-कार्यालय, बाँकीपुर, पटना।

रघुवरदयाल त्रिवेदी 'सत्यार्थी' सा०—'सामयिक साहित्य-सदन' लाहौर के संस्थापकों में एक; जोध-पुर की कई साहित्यिक संस्थाओं का संचालन किया है।

रघुवर दयालु मिश्र—ज०—२७ जूलाई १८९८; शि०—सा० वि० फरुखाबाद ; सा०—सेवा-समिति, भारतीय परिषद्, भार-तीय पाठशाला के संस्थापक; मद्रास, तंजौर और मदुरा में हिंदी-प्रचार, मदुरा में प्रान्तीय कार्यालय का संचालन, संपा० 'हिन्दी-पत्रिका', १९४१ से केंद्र-कार्यालय मद्रास में शिक्षा-मंत्री, मद्रास वि० वि० की बोर्ड आफ स्टडीज (हिंदी) के सद०; दक्षिण भारत हिन्दुस्तानी-प्रचार सभा के संयुक्त मंडल में; प्रका०—हैदरअली; प०—द० भा० हिंदु-स्तानी-प्रचार सभा, त्यागरायनगर, मद्रास १७।

रघुवर नारायण सिंह—**ज०**—११ अक्तूबर १६१२ ; **सा०**—भूत० सभा० हि० सा० प० मुंगेर, सदस्य—प्रगति-शील लेखक-संघ ; **प्रका०**—हृदय-तरंग, आदर्श हिंदू जीवन ; **प०**—दिलीप महल, मुंगेर।

रघुवर मिट्ठूलाल—**ज०**—१८६३ ; **शि०**—एम० ए० सनातनधर्म कालेज लाहौर; सा० आ० काव्यतीर्थ, वेदांत-तीर्थ आदि काशी; **प्रका०**—स्फुट ; **प०**—अध्यापक, संस्कृत - विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय प्रयाग।

रघुवीर शरण 'मित्र'—**ज०**—१६१६ ; **सा०**—प्रीति - परिषद मेरठ के संस्था०, हिन्दी के विश्वव्यापी प्रचार की योजना ; राष्ट्रीय आन्दोलनों में दो बार जेलयात्रा, संयुक्त प्रांतीय काँग्रेस के सदस्य ; **प्रका०**—परतंत्र, प्रेरणा, फाँसी, बलिदान, महापुरुष, सुनो बच्चों, वीर बालक, बन्दी, जननायक, (महा०); **प०**—२३२,स्वराज्य-पथ, सदर, मेरठ।

रघुवीरशरण 'व्यथित'—**ज०**—खुर्जा; **शि०**—शास्त्री, सा. रत्न., प्रभाकर, सा. भू. ; **अप्र०**—स्फुट रचनाएँ ; **प०**—हिंदी अध्यापक, जैन हाई स्कूल, मद्रास।

रघुवीर सिंह, महाराजकुमार, डाक्टर—**शि०**—एम. ए., डी. लिट् बड़ौदा, इंदौर, आगरा वि. वि. ; **सा०**—सीतामऊ स्टेट कोर्ट के जज, राज्य परिषद् के संस्थापक तथा सभापति, सेना में उच्चपदों पर कार्य, सुधारों के लिए आंदोलन, चेम्बर आफ प्रिंसेज में भाग लिया, भारतीय राज्यों के भारत-संघ में सम्मिलित होने के पक्षपाती और सर्व प्रथम आपने अपनी स्टेट को सम्मिलित किया, 'हिंदी के पारिभाषिक शब्दकोश' का निर्माण किया; **प्रका०**—पूर्व मध्यकालीन भारत, बिखरे फूल, मालवा इन ट्रैंजीशन, इंडियन स्टेट्स इन न्यू रेजीम, सप्तद्वीप, शेष स्मृतियाँ, (गद्यकाव्य की एक सुंदर कृति), मालवा में युगांतर, सेलेक्शन फ्राम सर सी० डब्ल्यू० मैलेट्स लेटर बुक, सिंधियाज अफेयर्स, रतलाम का प्रथम राज्य, जीवन-धूलि, जीवन-कण, पूर्व आधुनिक राजस्थान, ए हैंडबुक आव इंपारटेंट हिस्टा-

रिकल मैनस्क्रिप्ट्स इन दी रघुवीर लाइब्रेरी, ट्रीटी आव वसीन एण्ड वार आव १८०३-१८०४ इन दी डेकन ; वि०—'शेष स्मृतियाँ' का गुजराती और मलयालम अनुवाद हो चुका है ; प०—रघुवीर-निवास, सीतामऊ, मालवा ।

रणंजयसिंह 'ददन', राजकुमार—ज०—२६ अप्रैल १६०१ ; शि०—लखनऊ; प्र०—१६२२; सा०—भूत० एम० एल० ए०; पार्लियामेंटरी [illegible] ऐसोशिएशन के मान्य सदस्य, सीध-प्रकाशन-समिति हैदराबाद (सिंध) के सदस्य, रणवीर विद्या-प्रचारिणि सभा के संस्था०-संरक्षक; 'मनस्वी' के संचालक तथा संरक्षक; प्रका०—ऋष्यागमन, सत्य-संरक्षण, विद्या व्यायाम, म्लेच्छ-महामंडल, सुस्वप्न संग्रह; प०—ददन-सदन, अमेठी-राज्य, सुल्तानपुर, अवध ।

रणवीर सिंह 'रसिक'—प्रका०—रणवीर सुभाषित रत्न-माला, फैशन-फजीत, नरसी चरित, अप्र०—काव्यकुंज, कृष्णकर्मा ; प०—सुपरिंटेंडेंट, रेवेन्यूबोर्ड, उदयपुर ।

रतनकुमार जैन—ज०—१६२४; शि०—स०. रत्न, प्रयाग; सा०—भूत० संपा० 'आलोक', अध्यक्ष शिक्षा-समिति, जनपद सभा, प्रांतीय प्रतिनिधि—शांति निकेतन साहित्य मंदिर नागपुर; अप्र०—किसलय , अभिशाप—नाटक, बलिदान (कविता), प्रतिफल (कहानी); प०—शांतिसदन, छुई खदान, मध्यप्रांत ।

रतनलाल जोशी—ज०—१६२१ ; सा०—[illegible] पा०- 'बाल' मासिक ; वर्त०—संपा० 'वीरभूमि' कलकत्ता; प्रका०—लाल किले में, भाई-बहन; प०—१० नारायणप्रसाद लेन,कलकत्ता ।

रतनलाल मूँदड़ा — सा०—स्थानीय हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री, सत्याग्रह में छः मास के लिए जेल गये, निःशुल्क हिन्दी अध्यापन करते हैं, वाचनालय और पुस्तकालय भी चलाते हैं ; अप्र०—स्फुट रचनाएँ ; प०—बीमा-एजेंट, परभणी (दक्षिण) ।

रतिनाथ झा—ज०—१५ जुलाई १६२२; शि०—व्याकरणाचार्य, वेदांत-साहित्य-शास्त्री; सा०

रत्न; सा०—हिंदी-साहित्य-परिषद् और हिंदी-प्रचार - समिति के संस्थापकों में; प्रका० — स्फुट; प०—तलपुरवा, चेतिया, बस्ती।

रमाकांत त्रिपाठी—ज०—१ फरवरी १६०१ ; शि०—एम० ए० (अँगरेजी); प्रका०— हिंदी गद्य-मीमांसा (२ संस्करण), प्रताप-पीयूष, कानपुर के कवि; वर्त०—हास्य रस पर एक विशेष ग्रन्थ लिख रहे हैं; प०—प्राध्यापक, अँगरेजी-विभाग, जसवन्त कालेज, जोधपुर।

रमाप्रसाद घिंडियाल 'पहाड़ी'—ज०—१६११ ; सा०—हि० सा० स० के ५ वर्ष तक रजिस्ट्रार तथा सहायक मन्त्री ; अध्यक्ष हिंदी विभाग आल इण्डिया रेडियो लखनऊ ; भूत० प्रतिनिधि 'टाइम्स आव इंडिया', 'स्टेटसमैन', 'कर्मयोगी'; राजनीतिक आंदोलनों में कारावास, सदस्य कम्यूनिस्ट पार्टी ; प्रका०—सशय, बया का घोंसला, अधूरा चित्र, आदि उपन्यास तथा ६ कहानी-संग्रह ; वि० आजकल 'नया साहित्य' मासिक पत्र का संपादन-प्रकाशन कर रहे हैं; प०—संचालक प्रकाशगृह, नया कटरा, इलाहाबाद।

रमावल्लभ चतुर्वेदी—हास्य रसाचार्य स्व० पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी के सुपुत्र ; प्रका०—रेलदूत ; अप्र०—स्फुट रचनाओं के संकलन ; प०—मलयपुर।

रमाशंकर अवस्थी—ज०—१६००; सा०—काँग्रेस के उत्साही कार्यकर्ता, भूत०संपा०—'अभ्युदय,' 'प्रताप', दैनिक 'वर्तमान' के अध्यक्ष और सम्पा०; प्रका०—रूस की राज्य क्रांति, बोल्शेविक रहस्य, बोल्शेविक जादूगर, सत्याग्रह-गाइड ; प०—सिविल लाइंस, कानपुर।

रमाशंकर त्रिपाठी, डाक्टर—शि०—बी० ए० आनर्स प्रथमश्रेणी, एम० ए० लखनऊ वि० वि०; पी-एच.डी. (लंदन); प्रका०—हिस्ट्री आव ऐनशियेंट इंडिया, हिस्ट्री आव कन्नौज टु मुसलिम कांक्वेस्ट, इंडिया ७१२ से १२०६ तक; संपा०—विक्रम-स्मृति-ग्रंथ, हिस्ट्री आव मालवा; प०—प्रोफेसर और अध्यक्ष, इतिहास विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस।

रमाशंकर द्विवेदी—सा०—हिन्दी साहित्य-परिषद् मिर्जापुर

के संस्थापक और प्रधान; प्रका०— पाप का पराभव (उप०), विन्ध्य-विरुदावली, गीत-गीतावली, हिन्दी काव्यालोचना-सार, प्रेम-पुष्प ; प०— अध्यापक, जायसवाल कालेज, मिर्जापुर।

रमाशंकर मिश्र 'श्रीपति'— ज०—१८९७, इटौंजा (लखनऊ); शि०—कविरत्न (उपाधि) ; प्र० —१९२६ ; सा०—संपादक— 'शक्ति', 'त्रिवेणी' तथा 'कान्य-कुब्ज' (विगत १६ वर्षों से) ; प्रका०—अधिकतरस्फुटअन्योक्तियाँ; वि०—आपकी ओजपूर्ण संपादकीय टिप्पणियों से प्रभावित होकर स्व०महावीरप्रसाद द्विवेदी ने आपके लिए लिखा था—पुनन्तु मां श्रीपति पादरेणवः ; प०—२, हुसेनगंज, लखनऊ।

रमाशंकर शुक्ल, 'रसाल', डाक्टर—शि०—एम० ए०, डी० लिट्० ; प्रका०— हिंदी-साहित्य का इतिहास (दो संस्करण); अनेक पाठ-ग्रंथ ; अप्र०—दो काव्य; वि०—अलंकारशास्त्र पर आपको डी० लिट० की उपाधि मिली; हिंदी-साहित्य का सबसे बड़ा इतिहास आपने ही लिखा है; प०— प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, विश्वविद्यालय, प्रयाग।

रमेशचंद्र 'अनिल'—सा०— शांति-निकेतन हिं० सा० मंदिर नागपुर में राजस्थान के प्रतिनिधि; प्रका०— स्फुट ; प०—रामपुरा बाजार, कोटा।

रमेशचंद्र गोपाल जोशी— ज०—२६ अक्तूबर १९१६; शि०—सा० वि०, शिवाजीराव हाई स्कूल इन्दौर; प्रका०—स्फुट लेख, कविताएँ और कहानियाँ; प०— गिरदावार कानूनगो, सेंधुवा, मध्य भारत।

रमेशचंद्र पांडेय 'निडर'— प्रका०—स्फुट गीत; वर्त— गीतकार न्यूथियेटर्स, कलकत्ता ; प०— वर्णपुरा, मोहम्मदपुर, सारन।

रमेशचंद्र 'भाईसाहब'— ज०— १९२१ ; सा० — भूत० संपा० 'बालभारती' प्रयाग और 'शिशु' ; प्रका० — राजा चूँ चूँ चाँग, नटखट बन्दर, लपट्टू झपट्टू, तीन बकरे, सरल लिपि-ज्ञान ; प०— द्वारा—बालमुकुंद मिश्र,

मन्दिर कृपाशंकर, चाँदनी चौक, दिल्ली।

रमेशदत्त शर्मा— ज०—१६०७ बीना; **शि०**—बी० ए०, एल-एल० बी०, फैजाबाद और प्रयाग वि० वि० ; **प्रका०**—हिंदू युग का इतिहास तथा स्फुट कविताएँ ; **प०**—जमुनिया बाग, फैजाबाद।

रमेश सिनहा—ज०-१६०६; **सा०**—संपादक—'नया साहित्य' बंबई ; **प०**—राजभुवन, सैंडहर्स्ट रोड, बंबई।

राघवाचार्य—ज०—१६१६ ; **शि०**—बी० ए०, एल-एल० बी०; **जा०**-संस्कृत, तामिल, उर्दू; **सा०**—धर्मप्रचार, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्थाओं की स्थापना; संपा०-'वैष्णव धर्म' और 'नृसिंह-प्रिया'; **प्रका०**--श्रीवैष्णव प्रस्थान, स्वामी दयानंद और वैष्णव प्रस्थान, मानमेय परिचय, यज्ञ-रहस्य, वेदान्त-देशिक, भारतीय इतिहास का सिंहावलोकन; **प०**—कुँवरपुर, बरेली।

राघवेंद्रराव— **सा०**—मुधौल एवं तांडूर जैसे अहिंदी प्रांतों में हिंदी - प्रचार, हैदराबाद - हिंदी-प्रचार-सभा के तांडूर केंद्र के व्यवस्थापक, इस समय विजय-विद्यालय, तांडूर में हिंदी अध्यापक और सभा की स्थायी समिति के सदस्य हैं; **प्रका०**— स्फुट लेख; **प०**—शाहपुर, गुलबर्गा (दक्षिण)।

राजकिशोर उपाध्याय—**सा०**—संचा० और संपा० साप्ताहिक 'हलचल'; **प०**—'हलचल'-कार्यालय, गोंड़ा।

राजकिशोर कक्कड़—ज०—१ मार्च १९१६; **शि०**—एम० ए०; **प्रका०**—एलबम—शब्दचित्र,पूर्व-राग—कवि०; **प०**—छीपी तालाब, मेरठ।

राजकिशोर मिश्र—**शि०**—सा० रत्न; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—अध्यक्ष सरस्वती पाठशाला, हूला गंज, कानपुर।

राजकिशोर सिंह—ज०—१६१६ ; **शि०**—काशी वि० वि०; **सा०**—सहा० और प्रधान संपा० 'प्रगति', 'अधिकार', 'संघर्ष', 'छाया', 'लोकमान्य', 'इंडस्ट्रियल-गजट', संवाददाता—हिंदीप्रेस, असोशियेटेड प्रेस, हिंदुस्तान स्टैं-

-डर्ड', 'विश्वमित्र', 'हिंदी-प्रचारक'; मारवाड़ी चैम्बर आव कामर्स, तथा श्रमजीवी हिंदी-पत्रकार-संघ के मंत्री; श्रम आंदोलनों और सत्याग्रहों में सक्रिय भाग ; **प्रका०**—जीवन उप०, भूख का तांडव, युद्धोत्तर भारत, १६४२ आंदोलन की नायिका अरुणा, नेताजी, दिल्ली-चलो, रोटी, ऐशिया छोड़ो; प०—१०२, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता।

राजकुमार पाठक 'रंजन'—**प्रका०**—स्फुट ; प०—शंभेश्वर नाथ धौनी, हरिहरपुर, दुमका, संताल परगना।

राजकुमारी शिवपुरी—ज०—१६२७; शि०—एम०ए०; **प्रका०**—आशादीप (कवि-संग्रह) ; **अप्र०**—बिखरी किरणें, स्मृतियों की आँधी; वि०—कविता के साथ चित्रकला और संगीत से भी आपको प्रेम है; प०—अध्यापिका, विद्या भवन, जोधपुर।

राजकृष्ण गुप्त, झपसटराय बनारसी—ज०—१६ जून १६११; शि०—बी० एस-सी० बनारस ; प्र०—अपने राम की कहानी १६२७ ; **प्रका०**—गरमचाय, आइसक्रीम ; **अप्र०**—रसगुल्ला ; प०—३१।३६ भैरोंनाथ, बनारस।

राजगोपाल कृष्णप्पा, उन्नव—**ज०**—१६०४ ; **शि०**—विशारद; **सा०**— १६२२ से १६३७ तक आंध्र देश के विभिन्न केंद्रों में, १६२७ से १६३९ तक आंध्र जातीय कला-शाला मछली-पट्टण में हिन्दी अध्यापक; १६३६ से ४० तक आंध्र राष्ट्र हिन्दी-प्रचार-संघ के संगठक के रूप में कार्य किया और १६४० से आंध्र राष्ट्र-हिन्दी-प्रचार संघ बेजवाड़ा के मंत्री का कार्य कर रहे हैं ; **प्रका०**—गीताबोध और मंगल प्रभात का अनुवाद तेलगू भाषा में किया ; **वि०**—आंध्र प्रांत में हिन्दी-नाटकों का अभिनय करने को प्रोत्साहन दिया; **प०**—मंत्री आंध्र राष्ट्र-हिंदी-प्रचार-संघ, बेजवाड़ा।

राजदेव दीक्षित—**शि०**—सा० र०, सा० लं० ; **सा०**—दीक्षित पब्लिशिंग हाउस के संस्थापक; **प्रका०**—भारतवर्ष का इतिहास, स्त्री-धर्म-शिक्षा ; प०—बाँस का फाटक, बनारस।

राजदेव पांडेय—ज०—१८६४; **शि०**—सा०आ०; **प्रका०**—स्फुट; **प०** — प्रधान पंडित, फतहपुर, शिवहर, मुजफ्फरपुर।

राजनाथ पांडेय—ज०—१६०८; शि०—एम० ए०, एल० टी० क्किंस कालेज बनारस तथा प्रयाग विश्वविद्यालय; **सा०**—भूतपूर्व हिंदी प्राध्यापक सेंट ऐंड्रूज़ कालेज, गोरखपुर; प्रका०—तिब्बत-यात्रा, वेद का राष्ट्रगान; **नाटक**—लंका-दहन; उप०—मैना; **अप्र०**—हिंदी तद्भवकोश तथा हिंदी-रत्न आदि; प०—प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, विश्वविद्यालय, सागर।

राजनारायण त्रिपाठी 'कमलेश'—ज०—३ जनवरी १६१७; **शि०**—सा० रत्न; **सा०**—संस्थापक हिंदी-साहित्य-परिषद्, हिंदी-साहित्य विद्यालय; **प्रका०**—नीरा, टट्टू-शतक, चिनगारी, उपेक्षिता, नीरवता, हिंदी के साहित्यकार; **प०**—कविकुटीर, कमालपुर पिकार, इटौरा, फैजाबाद।

राजनारायण मिश्र 'प्रभात'—ज०—१ सितंबर १६२३; शि०—बी० ए०, सा० र० ; **अप्र०**—विचारधारा-निबंध, बिखरे मोती (कवि०) ; प०—अध्यापक सरयूपारी हायर सेकेंडरी स्कूल, प्रयाग।

राजपतिसिंह, 'व्यग्र'—**प्रका०**—आजादी की पुकार (दो भाग), झंडा उँचा रहे हमारा; **प०**—विद्यामंदिर, खजुर, भगवानपुर, शाहाबाद।

राजबलि त्रिपाठी—**शि०**—१६२६ से १६४० काशी वि० वि०, व्याकरणाचार्य, शास्त्री; **सा०**—प्रधानाध्यापक पराशर ब्रह्मचर्याश्रम, हहरी, बलिया १६४०-४८; भूत० सम्पादक 'गीताधर्म'; प्रका०—गजेंद्रमोक्ष-रहस्य, हीरकहार; **अप्र०**—गीता का योगधर्म, जीवन-निर्माण; कौमुदीकोश; **वर्त०**—प्रधान हिन्दी अध्यापक, गाँधी हायर सेकेंडरी स्कूल, कप्तानगंज, देवरिया; **प०**—चारघाट, उमरावगंज, आरा (शाहाबाद)।

राजबहादुर आर्य 'पद्म'—ज०—५ जुलाई १६१८ मैनपुरी; **प्रका०**—पीयूष, पद्मिनी; **अप्र०**—दो संग्रह; प०—आर्य-कुटीर, नाहिली, मैनपुरी।

राजबहादुर 'विकल'—प्रका०—कपिलवस्तु, वासवदत्ता, सेनापति सुभाष ; प०—गाँधी पुस्तकालय, शाहजहाँपुर।

राजबहादुर सक्सेना—ज०—१६१६ ; शि०—बी० ए० १६३७ अलीगढ़ वि० वि ; एम० ए० १६४० ; सा०—'आफताब' और 'सेवक' अलीगढ़ का संपादन; प्रका०—तज़ल्ली, नरेक़मर, तसवीरे ख्याल-उर्दू काव्य स्तकें ; सत्य-नारायण की कथा ; प०—'सेवक'-कार्यालय, अलीगढ़।

राजवल्लभ सहाय—ज०—१८६० ; सा०—संपादक 'मर्यादा' और 'आज' बनारस, राष्ट्रीय आंदोलनों में कई बार जेल गये ; प्रका०—संपादक हिंदीशब्द-संग्रह (श्री मुकुंदीलाल श्रीवास्तव के साथ), ग्रीस और रोम के महापुरुष(अनु०), ट्राटस्की की जीवनी (अनु०—श्री रामदास गौड़ के साथ), महासमर की झाँकी, पश्चिमी यूरोप—अनु०; वि०—प्राकृतिक चिकित्सा से प्रेम; प०—संपादक 'समाज', काशी।

राजवीर आर्य—सा०—हिंदी-प्रचार-सभा के वारंगल केंद्र के व्यवस्थापक, १५ स्थानों पर हिन्दी वर्ग और पाठशालाएँ चला रहे हैं; अप्र०—स्फुट कविताएँ ; प०—आर्य-कुमार-सभा, वारंगल (दक्षिण)।

राजाराम पाण्डेय—ज०—१६२१ काशी ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० बनारस और कानपुर ; सा०—मंत्री, नवयुग-साहित्य-परिषद, सहायक सम्पादक 'प्रताप' (दैनिक) तथा 'आँधी-पानी' मासिक, प्रधान सम्पादक—'इन्कलाब' मासिक ; प्रका०—प्रयाण-गीत; अप्र०—हगफूल, स्नेह-सूत्र, टूटे तार, अपनी बात, सुभाष-प्रवास ; प०—'प्रताप'-कार्यालय, कानपुर।

राजाराम रावत 'पीड़ित'—ज०—१६१२ ; प्रका०—भारती (नाट०), वह (खंडकाव्य); अप्र०—दलपति ; प०—चिरगाँव, झाँसी।

राजाराम 'राष्ट्रीय आत्मा'—ज०—१८६८; शि०—खँडवा; सा० — संपादक— 'स्त्री-दर्पण', संस्थापक साहित्य-मण्डल और पत्नी के नाम पर सरस्वती-पुस्तका-

लय ; प्रका०—मुक्ति की युक्ति, विधवा-जीवन ; अप्र०—अनोखी आँखें, छाया, जानकी-जीवन; प०—१०५/५४० आनन्दबाग, कानपुर।

राजाराम 'विप्र'—हिन्दी-प्रचार सभा के गुलबर्गा केंद्र के संचालक, दिनरात हिन्दी-प्रचार में लगे रहते हैं; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—गुलबर्गा (दक्षिण)।

राजीवनयन सिंह—ज०—२८ नवम्बर १९२०; शि०—एम० ए०; प्रका०—स्फुट; प०—शिक्षक, संगल सेमिनरी, मोतिहारी।

राजेंद्र—शि०—एम० ए०, जे० डी०; सा०—पत्रकारिता-विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय (लाहौर) के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष; भूतपूर्व सहायक संपादक-अँगरेजी दैनिक 'ट्रिब्यून' और उर्दू 'हरिजन', वर्तमान संपादक—पंजाब सरकार द्वारा प्रकाशित मासिक 'प्रदीप'; प्रधान हिंदी-प्रचारिणी सभा शिमला; प्रका०—स्फुट; प०—प्रदीप'-कार्यालय, शिमला २।

राजेन्द्रकुमार अजेय—ज०—१९१६; शि०—मालवा; प्रका०—स्फुट; वि०—उर्दू में 'मजबूर' नाम से लिखते थे, अब 'वहिश्त-मियाँ', 'जवानदराज' 'आकिल साहब' के नाम से लिखते हैं; प०—'अमर ज्योति' - कार्यालय, जयपुर।

राजेंद्रनारायण द्विवेदी—ज०—१९१९, चकवा इटावा; शि०—बी० ए०, सा० र०; प्रका०—अमर बापू का बलिदान, विन्दु-नीति; अप्र०—इरम्भर, झोपड़ी की कीमत, पद्मपराग; प०—१६, लारेंस स्क्वायर, नयी दिल्ली।

राजेन्द्र प्रसाद, माननीय, डाक्टर—स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति; ज०—१८८४; शि०—एम० ए०, एम० एल०, एल-एल० डी०, प्रेसिडेंसी कालेज, कलकत्ता; सा०—प्राध्यापक जी० बी. बी. कालेज—१९०८, ऐडवोकेट कलकत्ता हाईकोर्ट १९११ से १३ तक, पटना हाईकोर्ट में १९१६ से २० तक; चंपारन सत्याग्रह में महात्मा गांधी के सहयोगी बने, १९२० से वकालत छोड़ दी, कांग्रेस-अधिवेशन के सभापति १९३२, १९३४, १९३९ और १९४७; अनेक बार जेल-यात्रा,

हिंदी-साहित्यसम्मेलन के नागपुर अधिवेशन के सभापति; राष्ट्रभाषा-सम्मेलन के तीन अधिवेशनों (कोकनाडा, काशी, कलकत्ता) के सभापति; राष्ट्रभाषाप्रचार के सुदृढ़ स्तंभ; हिंदी 'देश' और 'सर्च-लाइट' अँगरेजी के संचालकों में, 'देश' के सफल संपादक; प्रका०—चंपारन में महात्मागांधी, अर्थशास्त्र, संस्कृत का अध्ययन, आत्मकथा; प०—राष्ट्रपति-भवन नयी दिल्ली; अथवा सदाकत आश्रम, पटना।

राजेंद्रप्रसाद मिश्र—सा०—हिंदी-प्रचार-सभा के सहयोगी और हिंदी-प्रचारक, ध्रुवपेठ में इस समय हिंदी-प्रचार के लिए प्रयत्नशील हैं; अप्र०—स्फुट; प०—हिंदी-प्रचार-सभा ध्रुवपेठ, हैदराबाद (दक्षिण)।

राजेंद्र शंकर भट्ट—ज०—१६२१; शि०—अजमेर, इलाहाबाद; सा०—भूत० संपा० 'राजस्थान' अजमेर, 'विश्वमित्र' नयी दिल्ली, 'लोकवाणी' जयपुर, ए० पी० आई० के राजपूताना प्रतिनिधि, सितंबर १६४६ में जयपुर राज्य के प्रकाशन अधिकारी, संयुक्त राजस्थान के प्रकाशन-विभाग के संपा०, अ० भ० हि० सा० स० की स्थायी समिति के सदस्य, संस्थापक राजस्थान हि० सा० स०; प्रका०—स्फुट; प०—चन्दरोड़, जयपुर।

राजेन्द्र सकसेना—ज०—१६२० आगरा; शि०—ग्वालियर; प्रका०—कहा०—भीगीरात, पगदंडियाँ; उप०-रेखा, अनुराग; अप्र०—दो संग्रह ; प०—४० ए०, भीमगंज, कोटा जँक्शन।

राजेंद्रसिंह गौड़—ज०—१५ अगस्त १६०५; शि०—एम० ए० काशी, लखनऊ ; प्रका०—भूगोल की पहली सीढ़ी, निबंधकला, हमारे कवि, प्राचीन कवियों की काव्य-साधना, नोक-झोंक, गड़बड़झाला, म्याऊँ की पूँछ आदि ; प०—१२३ अ, भगवत क्वारटर्स, अतरसुइया, इलाहाबाद।

राजेशदयाल श्रीवास्तव—ज०—१७ दिसम्बर, १६२३ ; शि०—लखनऊ ; प्रका०—श्याम-रस-मयी, रस-रागिनी, राजेश-सतसयी, बालिका और गौरांग-गीता; प०—२८, नवैया, गणेशगंज, लखनऊ।

राजेश दीक्षित—ज०— ८ अगस्त १९१८ कलकत्ता; **जा०**—उर्दू, बँगला, गुजराती, मराठी, संस्कृत और अँगरेजी; **सा०**—भूत० सम्पादक साप्ताहिक 'ताजातार' आगरा, हिंदी काव्यकला-परिषद के जन्मदाता; **प्रका०**—तुलसी रामायण की मनरंजनी टीका, वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत, शिवपुराण आदि का भाषानुवाद; **अप्र०**—कहानियों और कविताओं के कई संग्रह; **वि०**—इस समय मासिक 'रूपमहल' के सम्पादक; **प०** — बेलनगंज, आगरा।

राजेश्वरप्रसाद वर्मा 'चक्र'—ज०—१८९९; **सा०**—भूत०सह० सम्पादक 'युगांतर'; **प्रका०**—स्फुट लेख और कविताएँ; **प०**—डिस्ट्रिक्टबोर्ड, नरकठिया, चंपारन।

राजेश्वर प्रसाद सिंह—**प्रका०**—फिर मिलेंगे, जीवन के सपने, जीवन-क्रम—कहानी-संग्रह; खेल, अभिनय, इंस्पेक्टर बोस, रहस्यमयी—उप०; **वि०**—इस समय 'माया' तथा 'मनोहर-कहानियाँ' के संपादक-मंडल में हैं; **प०**—ठि०-माया प्रेस, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद।

राधाकृष्ण—**सा०** — भूतपूर्व संपादक 'कहानी'; **प्रका०**—सजला, फुटबाल, **प०**—भट्टाचार्य जी लेन, राँची।

राधाकृष्ण प्रसाद—ज०—मार्च १९२० आरा, शाहाबाद; **शि०**—एम० ए०, पटना वि० वि०, आनर्स में सर्वप्रथम; **सा०**—भूत० सम्पादक 'बालक', बिहार सरकार के भूतपूर्व पबलिसिटी अफसर; **प्रका०**—देवता, विभेद, अन्तर की बात, टूटती कड़ियाँ, आदि और अन्त, खरा और खोटा, कटे पंख, हे मेरे देश (उप०); **अप्र०**—समानांतर रेखाएँ, श्रेष्ठ बँगला और रूसी कहानियाँ (अनु०), एक दर्जन बालोपयोगी पुस्तकें; **वर्त०**—सब रजिस्ट्रार, आरा कोर्ट, शाहाबाद; **प०**—मछुवा टोली, बाँकीपुर, पटना।

राधाकृष्ण मिश्र 'वीरेन्द्र',—ज०—भोजपुर, बलिया; **सा०**—सहायक सम्पादक 'विश्वमित्र', 'सेनापति', 'अल्मस्त', 'सरोज'—कलकत्ता; **प्रका०**—मंडलेश्वर रघुवीर, कनक कुमारी, वीर चूड़ावत, किरानी का स्वप्न; **अप्र०**

—काव्य-पथ, स्वास्थ्य-दीपिका ; प०—सहायक शिक्षक नालन्दा कौलिजिएट स्कूल, बिहारशरीफ।

राधादेवी गोयनका,—ज०—१६०५ ; **सा०**—भूत० अध्यक्षा अ० भार० परदा-निवारण-सम्मे०, कलकत्ता; मध्य भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन तथा श्रीमहिला परिषद आदि ; वर्तमान अध्यक्षा —विदर्भ प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ; **प्रका०**—स्फुट लेख ; **प०**—मारवाड़ी सेवासदन, विद्या-मंदिर, अकोला, बरार।

राधामोहन गुप्त 'सौरभ'—ज०—१६१६ ; **सा०**—कलापरिषद् तथा कालिका-नूतन वाचनालय के सहायक मंत्री ; राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय भाग, १६४२ की अगस्त-क्रांति में विद्रोह का नेतृत्व और १६ वर्ष का कारावास-दण्ड ; **प्रका०**—स्फुट ; प०—सौरभ-सदन,ग्राम पत्रालय, शिवहर, मुजफ्फरपुर।

राधारमण टंडन—ज०—१ मार्च १६१२; **शि०**—एम० ए०, बी० एल० मुजफ्फरपुर और पटना; **सा०**—कई संस्थाओं के सभापति और मंत्री, आबेदा हाई स्कूल और तिरहुत एकेडमी के सदस्य, अनेक पत्रों के संवाददाता और कहानी-लेखक ; **अप्र०**—दो-तीन कहानी-संग्रह; प०—एडवोकेट, मुजफ्फरपुर।

राधावल्लभ पांडेय 'बंधु'—पंडित गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' जी के सहयोगी कवि ; **प्रका०**—स्फुट कविताएँ ; **वि०**—दोहों की रचना में विशेष कुशल ; प०—पत्रालय मसवासी, उन्नाव।

राधिकारमणप्रसाद सिंह, राजा—ज०—१८६१ ; **शि०**—एम० ए० ; **सा०**—विहार प्रांतीय हिं० सा० सम्मेलन के द्वितीय अधिवेशन (बेतिया, चंपारन) के सभापति और उसी के पंद्रहवें अधिवेशन (आरा) के स्वागताध्यक्ष ; ना० प्र० सभा, आरा के भूत० सभापति; **प्रका०** —रामरहीम, गल्पकुसुमावली, नवजीवन, प्रेमलहरी, तरंग, गाँधी टोपी, सावनी सभा, पुरुष और नारी,टूटा तारा, सूरदास,नारी क्या : एक पहेली इत्यादि; **वि०**—

सशक्त भाषा-शैली के अधिकारी लेखक; प०—शाहाबाद, बिहार।

राधेलाल शर्मा, 'हिमांशु'—ज०—१९२३; **सा०**—शांति-स्मारक हिंदी-साहित्य-समिति के संस्था० ; **वर्त०**—संपा० 'उदय' साप्ताहिक और 'नवज्योति' मासिक; **प्रका०**—प्राची बाला, सावनघन, दृगदीप; **अप्र०**—सितार और बेला, **प०**—अन्नपूर्णा भंडार, करेली।

राधेश्याम, कथावाचक—ज०—१८९० बरेली; **शि०**—बरेली; **सा०**—सेवा-समिति के संचालक, ऋषिकुल ब्रह्मचर्य-आश्रम ज्वालापुर के कार्यकर्ता, बरेली कालेज हिंदी एम० ए० फंड कमेटी के प्रधान, बरेली-कालेज-बोर्ड, कु० दयाशंकर इंटर कालेज बोर्ड के सद०, प्रकाशक—'भ्रमर' मासिक, राधेश्याम प्रेस के स्वामी; **प्रका०**—नाटक—वीर अभिमन्यु, भक्त प्रह्लाद, श्रीकृष्णावतार, द्रौपदी-स्वयंवर, ईश्वर-भक्ति, मशरिकी हूर आदि जो एलफ्रेड कंपनी के नाटककार की हैसियत से लिखे, कविता-राधेश्याम रामायण तथा अन्य कीर्तन-संबन्धी पुस्तकें; **वि०**—लोकप्रियता और धनोपार्जन की दृष्टि से एक साहित्यकार से अधिक सफल हुए, आपकी कथा की ध्वनि और लय घर घर में पहुँची; **प०**—राधेश्याम प्रेस, बरेली

राधेश्यामद्विवेदी—ज०—२६ फरवरी १९२१; **सा०**—हि० लिपि के प्रचलन के लिए व्यापक आन्दोलन और ग्वालियर की अदालतों में हिंदी का प्रवेश कराना, सार्वजनिक वाचनालय, परीक्षा-केन्द्रों की स्था०; प्र०—१९४२; **प्रका०**—स्फुट; **अप्र०**—प्रेम-प्रदीप, लक्ष्य-सुधा; **प०**—करेरा, ग्वालियर।

रामअनंत पाँडेय—ज०—१९०४; **सा०**—बलिया हिंदी-प्रचारिणी सभा के प्रबंध-मंत्री; नगर काँग्रेस के प्रधान; **प्रका०**—स्फुट कहानियाँ; **प०**—डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट एसोसिएशन, बलिया।

रामकरण जोशी—**शि०**—सा० रत्न; **सा०**—भूत० संपा० 'अमर ज्योति'; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—पो० दौसा, जयपुर।

रामकरण शर्मा 'नागर'—ज०—१८९८; **शि०**—विद्याभूषण; **प्रका०**—पद्य-पुष्पांजलि, जातीय

सुधार; प०—अध्यापक सुरूहुरपुर, कजगाँव, जौनपुर।

रामकिशोर शर्मा 'किशोर'—ज०—१६०५ ग्वालियर; शि०—बी० ए०, लश्कर; प्र०—१६२१; सा०–भरतपुर हिं० सा० सम्मेलन में स्वर्णपदक प्राप्त १६२५; ग्वालियर हिं० सा० सम्मेलन के सहायक मंत्री और उसके अंतर्गत होने वाले कवि-सम्मेलन के संयोजक १६३२; साप्ताहिक 'जयाजीप्रताप' के सहकारी संपादक १६२८ से; भूतपूर्व संयोजक ग्वालियर हिंदी पाठ्य पुस्तक-समिति; प्रका०—योरप का इतिहास, राष्ट्रीय गान, मध्यभारत का इतिहास, निकुंज (संपादित काव्य); अनुवाद—गीता और महादजी सिंधिया—मराठी से, भारतीय कृषि का विकास—अँगरेजी से; प०—'जयाजीप्रताप'-कार्यालय, ग्वालियर।

रामकिशोर शास्त्री—ज०—१ नवंबर १६१६; शि०—बी० ए०, विद्यावाचस्पति, लाहौर; सा०—आर्यसमाज अमेठी, श्री रणवीर विद्या-प्रचारिणी सभा अमेठी, ददनसदन क्लब के सदस्य और पदाधिकारी; श्रीविश्वेश्वरानद वैदिक अनुसंधानालय के संचालकों में एक; संपादक 'मनस्वी'; प्रका०—स्फुट; प०—ददनसदन, अमेठी, जिला सुलतानपुर (अवध)।

रामकिशोरसिंह–ज०–१६८१; प्रका०—पराग-कवि०, संक्षिप्त सूर्य-चिकित्सा, पारिवारिक सूर्य-चिकित्सा; प०—व्यवस्थापक, सूर्य रश्मि औषधालय, हरनौट, पटना।

रामकुमार गुप्त 'मराल'—सा०—भूत० संयुक्त मंत्री हिं० सा० समिति (१६३९-४१); अप्र०—रजकण—कविता-संग्रह; प०—मोती मुहाल, ६५/२, कानपुर।

रामकुमार भारतीय, 'पागल'–सा०—भूत० संपा० 'कला', सह० संपा० 'नवभारत' नागपुर; प्रका०–स्फुट; प०—शांति-निकेतन हिंदी-साहित्य-मंदिर, इतवारी, नागपुर।

रामकुमार वर्मा, 'डाक्टर'—ज०—१५ नवंबर १६०५ सागर; शि०— एम० ए० प्रयाग विश्वविद्यालय, पी-एच० डी० नागपुर विश्वविद्यालय; सा०—भूतपूर्व संपादक पाक्षिक 'प्रकाश'; प्रका०—अंजलि, रूपराशि,

चित्ररेखा, चंद्रकिरण, वीर-हम्मीर, चित्तौड़ की चिता, अभिशाप, निशीथ ; आलो०—साहित्य-समालोचना, कबीर का रहस्यवाद, हिंदी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास; गीत—हिमहास; नाटक—पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी टाई, शिवाजी; संपा०—हिंदी गीति-काव्य, कबीर-पदावली, जौहर, आधुनिक हिंदीकाव्य, (डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा के साथ); वि०—हिंदी सा० के आलो० इतिहास पर आपको नागपुर विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० की उपाधि मिली ; चित्ररेखा पर २०००) का देव-पुरस्कार और चंद्रकिरण पर ५००) का चक्रधर-पुरस्कार मिला ; प०—प्राध्यापक हिंदी - विभाग, विश्वविद्यालय, प्रयाग ।

रामकृष्ण डालमियाँ, सेठ—सा०—हिंदी के अनन्य भक्त और भारतप्रसिद्ध उद्योगपति, कई कंपनियों के मालिक, कई हिंदी पत्रों के संचालक; प्रका०—मेरे जीवन के अनुभव ; वि०—आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती डालमियाँ, एम० ए०, शास्त्री भी हिंदी की कुशल कवयित्री हैं ; प०—डालमियाँ नगर (बिहार) ।

रामकृष्ण धूत—सा०—हिंदी-प्रचार-सभा के कोषाध्यक्ष १९३५, अनेक वर्षों तक कार्यकारिणी समिति के सदस्य रहे, हिंदी पुस्तकालय मुलतान बाजार के संस्थापक, राज्य में खादी आदि के प्रचार में प्रयत्नशील ; प्रका०—स्फुट ; प० ठि० हिंदी-प्रचार-सभा, हैदराबाद (दक्षिण) ।

रामकृष्ण राव—सा०—हैदराबाद स्टेट कांग्रेस के नेता और कार्यकर्ता, स्टेट में हिंदी को राजभाषा बनाने में अथक परिश्रम किया, हिंदी-प्रचार-सभा के उपाध्यक्ष रहे—१९४५ ; प्रका०—स्फुट; प०—वकील, हैदराबाद (दक्षिण) ।

रामकृष्ण शुक्ल 'शिलीमुख'—ज०—१९०१ ; शि०—एम० ए० बरेली, शाहजहाँपुर, आगरा, कानपुर, काशी तथा प्रयाग; सा०—स्थानीय हिंदी-साहित्य-समाज और हिंदी पुस्तकालय की स्थापना; प्रका०—अमृत और विष, प्रसाद की नाट्य कला, आधुनिक हिंदी कहानियाँ, रचना-रहस्य, उसका

प्यार, सुकवि-समीक्षा, रचनातत्व और हिंदी अपठित, स्वर्ण-रेख, जीवनकण, आर्य भाषा और संस्कृत, काव्य-जिज्ञासा ; इनके अतिरिक्त अनेक मौलिक उपन्यास तथा लेख-संग्रह ; प्रि० वि०—आलोचना, ललित साहित्य, शिक्षा और जीवन-तत्व ; प०—अध्यक्ष हिंदी-विभाग, राजपूताना विश्वविद्यालय, उदयपुर।

रामखेलावन चौधरी—ज०—१९२० ; शि०—बी० ए०, लखनऊ विश्वविद्यालय; प्र०—१९४५; प्रका०—चित्रलेखा : एक अध्ययन, पथिक : एक अध्ययन, प्रेमाश्रम : एक अध्ययन, सेवासदन : एक अध्ययन, भाई-बहन के पत्र (बालो०) ; वि०—चौथी और पाँचवी पुस्तक श्री प्रेमनारायण टंडन के साथ लिखी है ; प०—कच्चाबाग, सआदतगंज, लखनऊ।

रामखेलावन पांडेय—शि०—एम० ए०, सा० र० ; सा०—संपा० - 'निशान', 'सुप्रभात' और 'पारिजात' (त्रैमासिक), बिहार प्रादेशिक हि० सा० सम्मे० के भूत० सहायक मंत्री तथा स्थायी समिति के सद०; हि० सा० सम्मे० प्रयाग की स्थायी समिति और पटना वि० वि० के हिन्दी बोर्ड के सद०; प्र०-'तारा' (योगी १९३४); प्रका०—गीति काव्य, चरण चिन्ह, हिंदी-व्याकरण, साहित्य-मीमांसा, आधुनिक हिन्दी-काव्य; अप्र०—प्रसाद की साहित्य-चेतना; प०—अध्यापक जी० बी० बी० कालेज, मुजफ्फरपुर।

रामगोपाल — ज०—१८९८ बिजनौर ; शि० — विद्यालंकार, गुरुकुल काँगड़ी हरद्वार ; सा०—भूत० संपादक 'सैनिक', 'अर्जुन'; प्रका०—श्रद्धानंद और रामदेव की जीवनी ; प०—'अर्जुन'-कार्यालय, दिल्ली।

रामगोपाल संघी—हिंदी-प्रचार सभा के प्रधान मंत्री १९४७, सभा की स्थापना में विशेष योग दिया, तब से प्रबन्ध-मंत्री, उपसभापति, शिक्षा-मंत्री आदि रह चुके हैं ; प्रका०—स्फुट; प०—ठि० हिन्दी प्रचार-सभा, हैदराबाद (दक्षिण)।

रामगोविंद त्रिवेदी—सा०—मासिक 'गंगा' के भूतपूर्व संपादक; प्रका०—वैदिक साहित्य नामक वृहद् ग्रंथ जिसके भूमिका लेखक

माननीय श्री संपूर्णानंदजी हैं; प०—कूसी, दिलदारनगर, गाजीपुर।

रामचंद्र आर्य 'मुसाफिर'—ज०—५ जनवरी १९०७ ; शि०—सा० र०, वैद्यरत्न ; ज्ञा०—उर्दू, अरबी, फारसी, गुजराती, मराठी ; सा०—प्रयाग हि० म० विद्यापीठ और हि० सा० स० के परीक्षा-केंद्रों की स्थापना द्वारा हिन्दी - प्रचार, कांग्रेस और आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्ता, ग्राम-संगठन, अछूतोद्धार, नशा - निवारण आदि में योग ; प्रका०—हरिजन-मीमांसा, गोवध, मुसलमानों का धार्मिक अधिकार, तम्बाकू मनुष्य का शत्रु है, नागरिक शास्त्र ; प०—डी०ए०वी० हाई स्कूल, अजमेर।

रामचंद्र गौड़—शि०—एम० ए०, सा० र० बनारस, नागपुर, आगरा, टेकनोलोजिकल इंस्टीट्यूट लंदन की परीक्षा में उत्तीर्ण; सा०—भूतपूर्व अध्यापक महारानी संयोगिता हाई स्कूल ; होल्कर राज्य टेक्स्ट बुक कमेटी के गणित-विभाग के सभासद हैं ; प्रका०—अलजेब्रा मेड ईजी ; प०— अध्यापक, रोहतक।

रामचन्द्र गौड़—सा०—हिंदी-प्रचार-सभा के भूतपूर्व व्यवस्थापक और कार्यकारिणी समिति के सदस्य; प्रका०— स्फुट; प०—हैदराबाद (दक्षिण)।

रामचंद्र टंडन—ज०—१९ जनवरी १८९९ ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० ; सा०—संपादक 'हिंदुस्तानी' त्रैमासिक ; मंत्री—रोरिक सेंटर आव आर्ट ऐंड कल्चर; प्रका०—हिंदी में—श्रीमती सरोजिनी नायडू, रेणु, टालस्टाय की कहानियाँ, रूसी कहानियाँ, कलरव, कसौटी, सप्त-पर्ण, धरती हमारी है, अँगरेजी में—सांग्स आव मीराबाई, निकलस रोरिक पेंटर ऐंड पैसिफिस्ट, आर्ट अव् असितकुमार हल्दार, आर्ट अव् अमृत शेरगिल, आर्ट अव अनागारिक गोविंद ; प०—हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग।

रामचंद्र द्विवेदी 'प्रदीप'—ज०—१९१६ बड़नगर (मालवा) ; शि०—बी० ए० इंदौर, प्रयाग और लखनऊ ; सा०—१९३९ में बंबई की प्रसिद्ध फिल्म कंपनी बांबे टाकीज में गीतकार के रूप में प्रवेश;

'कंगन','बंधन','पुनर्मिलन','नया-संसार','अनजान','भूला','किस्मत' आदि के सफल गीतकार ; कई गीतों के रेकार्ड भी बन चुके हैं ; प्रका०—पानीपत ; प०—कस्तूर-वाड़ी, विलेपारले, बंबई ।

रामचंद्र प्रफुल्ल—ज०—१९०३; शि०—साहित्य-आयुर्वेद-विशारद; ज्ञा०—संस्कृत, गुजराती; सा०—स्थानीय श्रीकृष्ण-वाचनालय तथा म्युनिसिपैलिटी के कई वर्षों से मंत्री ; भूत० संपा० — मासिक 'विनोद' ; प्रका०—स्फुट; प०—प्रधानाध्यापक, डालमिया ए० वी० मिडिल स्कूल, चिड़ावा, जयपुर ।

रामचंद्र मिश्र, विद्यार्थी—ज०—१ दिसंबर १९१२; शि०—एम० ए० आगरा विश्वविद्यालय(प्राइवेट), सा० रत्न; प्रका०—गुप्त जी की यशोधरा, गीतावली : एक अध्ययन ; प० — प्रधान अध्यापक, भारतीय पाठशाला हाई स्कूल, फरुखाबाद ।

रामचंद्र वर्मा—ज०—१८८९; सा०—१९०७ से 'हिंदी - केसरी' के संपादक रहे; तत्पश्चात् 'बिहार-बंधु', 'नागरी-प्रचारिणी- पत्रिका' और दैनिक तथा साप्ताहिक-'भारत-जीवन' के संपादक रहे; भूतपूर्व सहायक संपादक – 'हिंदी-शब्द - सागर'; प्रका०—काली-नागिन; बरनियर की भारतयात्रा, झाँसी की रानी, महादेव गोविंद रानाडे, आत्मोद्धार, सफलता और उसकी साधना के उपाय, बाल-शिक्षा, उपवास-चिकित्सा, वैधव्य कठोर दंड या शांति, भारत की देवियाँ, महात्मा गांधी, गोपाल-कृष्ण गोखले, हम स्वराज्य क्यों चाहते हैं, आयर्लैंड का इति-हास, सुभाषित और विनोद, साम्यवाद, भूकंप, राजा और प्रजा , मेवाड़-पतन, सिंहलविजय, सूर्यग्रहण, करुणा, वर्तमान एशिया, जातक - कथामाला, वैज्ञानिक साम्यवाद, कर्तव्य, हिंदू राजतंत्र, प्राचीन मुद्रा, रवींद्र-कथाकुंज, भारत के स्त्रीरत्न, छत्रसाल, अक-बरी-दरबार, भारतीय स्त्रियाँ, समृद्धि और शांति, सामर्थ्य, मधु-चिकित्सा, विधाता का विधान, मानवजीवन, गोरों का प्रभुत्व, अमृतपान, अरब और भारत के संबंध, निबंधरत्नावली, असहयोग

का इतिहास, संजीवनी विद्या, रूपक-रत्नावली, शिक्षा और देशी भाषाएँ, हिंदी दास-बोध, पुरानी दुनियाँ, मितव्यय, काश्मीर-दर्शन, लंका के मोती, आँखों देखा महायुद्ध, कविताकुंज, मँगनी के मियाँ, मानसरोवर और कैलाश, उर्दू - हिंदी - कोश, हिंदी कोश, हिंदी - ज्ञानेश्वरी, अंधकार युगीन भारत, रमा, ग्रामीण समाज, हिंदी-प्रयोग, अच्छी हिंदी और प्रामाणिक हिंदी कोश; वि०—अंतिम तीनों पुस्तकों का अच्छा प्रचार हुआ है; प०—ठि०—नागरी-प्रचारिणी-सभा, काशी।

रामचंद्र सिंह—शि०—बी० ए०, बी० टी०, सा०—हिंदी प्रचार शाखा सभा के अध्यक्ष, विद्यार्थियों और अध्यापकों में हिंदी सीखने की रुचि उत्पन्न की; वि०—इस समय हाई स्कूल निजामाबाद में प्रधानाध्यापक हैं; प०—निजामाबाद (दक्षिण)।

रामचरण महेंद्र—ज०—८ मार्च, १९१९; शि०—एम० ए० (हिंदी, अँगरेजी), पी-एच० डी०; राजपूताना वि० वि०; सा०—संचा०—गाँधी पत्रकला विद्यापीठ; सहा०—संपा०—'अखण्ड ज्योति', 'खत्री हितैषी', 'शान्ति'; प्रका०—महान जागरण, तुम महान हो, हमे स्वप्न क्यों दीखते हैं, हम वक्ता कैसे बन सकते हैं? दीर्घ जीवन के रहस्य, विचार संचालन विद्या, दैवी संपदाएँ, सौभाग्य बढ़ाने की कला आदि अनेक व्यावहारिक और दैनिक जीवन में उपयोगी पुस्तकों के लेखक; अँगरेजी में भी पाठ्यक्रम संबंधी पुस्तकें लिखी हैं; वि०—आजकल हिंदी एकांकी नाटकों पर डी० लिट् की उपाधि के लिए खोज करके थीसिस लिख रहे हैं; प०—प्राध्यापक, हरबर्ट कालेज, कोटा, राजपूताना।

रामचरण 'मित्र' हयारण—ज०—१९०४; प्रका०—भेंट (काव्य); अप्र०—सरसी, वीर बुंदेल; प०—झाँसी।

रामजी उपाध्याय—ज०—१९१८; शि०—एम० ए० १९४१ में प्रयाग वि० वि० से, डी० फिल—१९४५; सा० र०; प्र०—भारत की प्राचीन संस्कृति; प०—प्राध्या-

पक, संस्कृत-विभाग, सागर विश्व विद्यालय, सागर।

रामजीदास वैश्य—ज०— १८८५; **प्र०—**१६०५; **सा०—** रायल एशियाटिक सोसाइटी के सदस्य, रायल सोसाइटी आव आर्ट्स और इंटर नेशनल फैकल्टी आव साइंस के फेलो; **प्रका०—**फूल में काँटा, धोखे की टट्टी, मेरी विलायत-यात्रा, चित्र-रेखा—सिनेमा कहानी, सभी झूठ, सुन्नर गँवारिन, काश्मीर की सैर, ग्वालियर के उद्योग-धंधे; **वि०—**१६२५ में आपको 'वफादार दौलते सिंधिया' की उपाधि मिली; **प०—**ग्वालियर।

रामजी मिश्र 'मनोहर'— सा०—सहायक संपादक दैनिक 'विश्वमित्र'; १६४३ में गाँधी सरोवर पटना पर साहित्यिक मेला लगाया, हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी की; स्थायी रूप से पत्र-पत्रिकाओं का एक संग्रहालय बनाया, उसके प्रधान मंत्री; सहायक मन्त्री बिहार-हिंदी-पत्रकार-संघ; मंत्री जिला हिंदी० सा० सम्मे०; और नगर हि० सा० स० पटना; प्रधान मंत्री ना० प्र० सभा; संगीत-प्रचार-सभा, प्रसाद-परिषद् पटना; **संपा०—**'भारती' हस्तलिखित और 'राष्ट्रवाणी' दैनिक; **वर्त०—**हिंदी पत्रों का इतिहास लिख रहे हैं; **प्रका०—** स्फुट; **प०—**पटना।

रामजीलाल 'सहाय'—ज०— २ जून, १६१८; **शि०—**सा० रत्न, इंटर; **सा०—**'समाज-सेवक' और 'नवयुवक' पत्रों के जन्मदाता; **प्रका०—**सहायक भजनावली, चेतावनी; **अप्र०—**स्वदेशाभिमान, गाँधी-गौरव; **प०—**हरिजन-आश्रम, इलाहाबाद।

रामजीवन सिंह — ज०—१ मार्च १६१७; **शि०—**बी० एस-सी, एम० ए० (हिंदी) पटना वि० वि०; **प्रका०—**समाधान; **अप्र०—** गीतिनाट्य—खलिहान, पिंजड़े का पंछी, शारदी; **प०—**जिहुली, चंपारन।

रामजीशरण सक्सेना—ज०— १६०८, एटा; **शि०—**एम० ए०, एल-एल० बी० आगरा और कानपुर में; **प्रका०—**उर्दू और हिंदी

में स्फुट कविताएँ; प०—ऐडवोकेट, बरेली ।

रामदत्त भारद्वाज — ज०—१९०२ ; शि०—एम. ए., एल-एल.बी., एल. टी. दिल्ली, आगरा, प्रयाग; सा० — आजीवन सदस्य—इण्डियन फिलासाफिकल कांग्रेस, फार्मिली मेम्बर आव दि कोर्ट दिल्ली वि. वि., संपा० मंडल में—'नवीन भारत' कासगंज, सेक्रेटरी गोखले पब्लिक लाइब्रेरी, अध्यापक ए० बी० पी० हाईस्कूल, कासगंज ; प्रका०—स्त्रियों के व्रत, त्योहार और कथाएँ, तुलसी-चर्चा, रत्नावली, प्रारंभिक पुस्तकम्, संस्कृत पाठावली, हिन्दी गद्य-कुसुमांजलि, तुलसी का घरबार आदि के अतिरिक्त अनेक ग्रन्थ ; प्रि० वि०—दर्शन शास्त्र (प्राच्य और प्रतीच्य); प०—मोहन मुहल्ला, कासगंज, एटा ।

रामदयाल शर्मा — ज०—१८९० ; सा०—सहायक संपादक 'हिन्दी वंगवासी', कलकत्ता, १९१४-१९ और १९२८-३१, दैनिक, 'भारतमित्र'; प्रका०—ऊषा-हरण-काव्य; अप्र०—महाभारत पर एक दृष्टि, गीता-तत्व-मीमांसा ; प०—कमसड़ी, टीकादेवरी, गाजीपुर ।

रामदहिन मिश्र— ज०—१८८६ ; शि०—काव्यतीर्थ ; सा०—सम्पादक-हिन्दुस्तान प्रेस, बालशिक्षा समिति, ग्रंथमाला कार्यालय, एजूकेशनल बुकडिपो, सम्पादक 'किशोर', संस्था० सत्साहित्य ग्रंथमाला; प्रका०—काव्यालोक, दश कुमार चरित--अनु०, पार्वती-परिणय—अनु०, भारतवर्ष का इतिहास, रचना-विचार, प्रवेशिका हिंदी-व्याकरण, साहित्य— मीमांसा, साहित्य - परिचय, साहित्यालंकार, साहित्य-सुधार, संस्कृत बोध, सरल संस्कृत पाठ्य, काव्य-दर्पण, अप्रस्तुत योजना ; वि०—'काव्यदर्पण' पर उत्तरप्रदेशीय सरकार ने पुरस्कार दिया है ; प०—बाँकीपुर, पटना ।

रामदास राय—ज०—१९२०; प्रका०—भर्तृहरि-शतक, मेघदूत, मुद्राराक्षस (ना०), रघुवंश १० सर्ग तक, मनुकालिक ब्रह्मचारी और राजा, पंचरात्रि, श्रीमद्भगवतगीता, उत्तर-रामचरित ; प०—अध्यापक, भूमिहार ब्राह्मण कालेज, मुजफ्फरपुर ।

रामदास शास्त्री— सा०— भक्तिरस - प्रधान 'भक्त-भारत' नामक मासिक पत्र के संचालक-संपादक; प्रका०— भक्ति-संबंधी स्फुट रचनाएँ; प०—'भक्त-भारत'-कार्यालय, वृन्दावन।

रामदीन पांडेय--ज०-१८६५; शि०—एम० ए० (संस्कृत और हिंदी); प्रका०—उप०-विद्यार्थी, चलती पिटारी, नाट०-ज्योत्स्ना; एकां०-जीवनज्योति; आलो०-काव्य की उपेक्षिता (यशोधरा); निबन्ध-भारतेंदु, हरिऔध; जीवनी-विद्यासागर, व्रजविहारी चौबे, परमानन्द तिवारी; अनु०—जानकी - हरण, सौंदरनन्द महा०, प्राचीन भारत का सांग्रमिक संगठन; अप्र०— हिंदी साहित्य का विस्तृत इतिहास; प०—प्राध्यापक जी० बी० बी० कालेज, मुजफ्फरपुर।

रामदुलारे शुक्ल, 'दुलार'— ज०—१ जूलाई १६०६; शि०— सा० रत्न; प्रका०—मर्यादा (उप०), बापू-बावनी; अप्र०—कमला; वर्त०—प्रकाशक और संपा०— 'मोहिनी'; प०—६५, नया कटरा, इलाहाबाद।

रामदुलारे खरवरिया—सा०- अँगरेजी दैनिक 'हितवाद' के संपा० विभाग में, शांतिनिकेतन हिं० सा० मंदिर के मंत्री; प्रका०— स्फुट; प०— श्रद्धानंदनगर, नागपुर १।

रामदेव सिंह चौधरी—शि० बी० ए०, विशारद; प्रका०—स्फुट; प०—हिंदी- साहित्य - समिति, पिलानी, जयपुर।

रामधन शर्मा शास्त्री—ज०— २५ नवंबर १६०२; शि०—इंटर तक मुरादाबाद राजकीय इंटर कालेज में, एम० ए० (संस्कृत) प्रयाग वि० वि०, एम० ए० (हिंदी) कलकत्ता वि० वि०, एम० ओ० एल० (संस्कृत) पंजाब विश्वविद्यालय, शास्त्री और आचार्य बनारस; सा०—नागरी-प्रचारिणी-सभा की स्थायी और प्रबंधकारिणी समिति के और हिं० सा० सम्मे० के पिछले सात वर्षों से स्थायी समिति के सदस्य; संयोजक हिंदी-कमेटी बोर्ड आव हायर सेकेंड्री एजूकेशन दिल्ली, सदस्य बोर्ड आव स्टडीज इन हिंदी ऐंड संस्कृत दिल्ली वि० वि०,

प्रधान मंत्री अखिल भारतीय ब्राह्मण सभा, उप-प्रधान हिंदी-साहित्य-सम्मेलन दिल्ली तथा इन्द्रप्रस्थ ब्राह्मण सभा, प्रधान-सनातन धर्म-विद्वत् परिषद् दिल्ली; प्रयाग-विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के भूत० अध्यापक तथा वर्तमान प्रधानाध्यापक (संस्कृत, हिंदी) कामर्शल कालेज (दिल्ली विश्वविद्यालय); भूत० रिसर्च स्कालर पंजाब विश्वविद्यालय; **प्रका०**—आदर्श चरितावली, गद्य - सुषमा, रघुवंश, बाल - रामायण - नाटक आदि तथा अनेक अप्र० आलोचनात्मक साहित्यिक लेख-संग्रह और नैषधीय-चरित्र (श्री हर्ष); **वि०**—'बीसवीं शताब्दी के हिंदी महाकाव्य'—विषय पर थीसिस लिख रहे हैं; **वर्त०**—प्रधान, हिंदी-संस्कृत - विभाग, कालेज आव कामर्स; **प०**—४१८, कटरा नील, दिल्ली।

रामधर मिश्र—**ज०**—१६ अप्रैल १६०८; **शि०**—एम० ए०, पी - एच० डी० ; **प्र०**—१६३४, अनुवाद—मोपासा की कहानियाँ; ('कान्यकुब्ज' में प्रकाशित हुई); **सा०**—संपा० 'ज्ञानशिखा' त्रैमासिक; एम०एल० ए०; **प्रका०**—स्फुट लेख और कहानियाँ; **वर्त०**—रीडर, गणित विभाग, विश्वविद्यालय, लखनऊ; **प०**—बादशाह--बाग, लखनऊ।

रमाधारीप्रसाद—**ज०**—१६०१; **शि०**—सा० वि०; **सा०**—संस्थापक बिहार प्रांतीय हिं० सा० सम्मे० तथा उसके सभापति; प्रांत तथा जिले के उत्साही काँग्रेसी कार्यकर्ता, जेल-यातनाएँ सहीं; **प्रका०**—ध्रुव-तारा, जयमाल आदि लगभग आधी दरजन पुस्तकें; **वर्त०**—उप-प्रधान मुजफ्फरपुर जिला बोर्ड; **प०**—ग्राम भगवानपुर, पो० कुरहनी, मुजफ्फरपुर।

रामधारीसिंह, 'दिनकर'—**ज०**—१६०८; **शि०**—बी० ए० (आनर्स); **सा०**—बिहार प्रांतीय कवि-सम्मे० (छपरा) के सभापति; **प्रका०**—रेणुका, हुँकार, रसवंती, द्वंद्वगीत; कलिंग विजय, कुरुक्षेत्र; **अप्र०**—सरस कविताओं के दो-तीन संग्रह; **प०**—सिमरिया घाट, मुंगेर, बिहार।

रामनन्दन पांडेय—**शि०**—

सा० आ० बनारस ; सा०—सोहावल और रीवाँ राज्यों में पदाधिकारी, प्रौढ़ शिक्षण का आयोजन; प्रका०—स्फुट; प०—इंस्पेक्टर आव स्कूल्स, लश्कर।

रामनरेश उपाध्याय, 'धीर'—ज०—जलालपुर; शि०—सा० र०; जौनपुर; सा०—'सूर्य' दैनिक, 'पंडित पत्र' काशी के भूत० संपा०, गीता प्रेस गोरखपुर की रामायण तथा गीता के केन्द्रों का संचा०, स्थानीय हि० सा० समितिके संस्था० तथा मंत्री; प्रका०— नित्यधर्म-भाग, जैमिनिअश्वमेघ, पतिव्रता-धर्म; प०—अध्यापक ई० आई० आर० हाई स्कूल, मुगलसराय।

रामनरेश त्रिपाठी—ज०—१८८६; शि०—जौनपुर; प्र०—१९११; सा०—हिंदी-मंदिर और हिंदी-प्रेस प्रयाग के संस्थापक (१९३१); १९२५ में कविता-कौमुदी (आठभाग) का संपादन-प्रकाशन, १९३१-४१ में 'वानर' का संपादन-प्रकाशन; प्रका०—हिंदी महाभारत, कविता-कौमुदी-८ भाग, पथिक, मिलन, स्वप्न, मानसी, स्वप्नचित्र, हिंदुस्तानी-कोश, जयंत, प्रेमलोक, तरकस, रामचरितमानस की टीका, तुलसीदास और उनकी कविता—२ भाग, मारवाड़ के मनोहर गीत, सुदामा - चरित, पार्वती - मंगल, घाघ और भड्डरी, चिंतामणि, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, सुकवि-कौमुदी, कौन जागता है, शिवाबावनी, सोहर, बाल - कथा-कहानी-१७ भाग, गुपकहानियाँ—२ भाग, मोहनमाला, बताओ तो जानें, बानर - संगीत, हंसू की हिम्मत, नेता - बुझौवल, बुद्धि-विनोद, पेखन, मोतीचूर के लड्डू, अशोक, चंद्रगुप्त, महात्मा बुद्ध, आल्हा, हिंदी - ज्ञानोदय रीडर—६ भाग, कन्या शिक्षावली रीडर-६ भाग, हिंदी प्राइमर-२ भाग, हिंदी पत्रशिक्षक, गाँव के घर; वि०—'स्वप्न' पर आपको हिंदुस्तानी एकेडमी ने ५००) का पुरस्कार दिया; 'पथिक' बर्लिन युनिवर्सिटी में पाठ-ग्रंथ है; प०—वसंतनिवास, सुल्तानपुर (अवध)।

रामनरेशसिंह 'राय'—ज०—मार्च १९१२; सा०—कई वर्षों तक नागरीप्रचारिणी सभा गाजी॰

पुर के उपमंत्री रहे; प्रका०—कानून संबंधी एक पुस्तक, सुदामाचरित्र; प०—लाइब्रेरियन, सिविलवार एसोसिएशन, गाजीपुर।

रामनाथ गुप्त—ज०—दिसम्बर १६१२ फतेहपुर; शि०—फतेहपुर; बी० ए०, डी० वी० कालेज, कानपुर; सा०—'स्वाधीन भारत' बम्बई, 'राजस्थान' साप्ताहिक, 'प्रताप' (१६३५-४२) और 'अरुण' (हस्त लिखित) के सम्पादक-मंडल में रहे; हि०सा० सभा के भूत० मंत्री; प०—संपादक 'राम-राज्य' साप्ताहिक, कानपुर।

रामनाथ शर्मा—ज०—१८८८; प्रका०—ग्वालियर के वृक्ष और उनका उपयोग, ग्वालियर राज्य में हिंदी, व्यावहारिक शब्दकोश; वि०—वन-विभाग के सर्वोच्च पद पर पहुँच कर अब अवकाश ग्रहण किया है; प०—ग्वालियर।

रामनाथ, 'सुमन'—सा०—हरिजनों के उत्थान और उनमें हिंदी-प्रचार करने में विशेष दत्त-चित्त; प्रका०—भाई के पत्र, प्रसाद की काव्य-साधना, घर की रानी, गाँधी-वाणी आदि लगभग दो दरजन ग्रन्थ; वि०—साधना-सदन नामक प्रकाशन-संस्था के संचालक; प०—साधना-सदन, प्रयाग।

रामनारायण उपाध्याय—ज०—२० मई १६१८; सा०—संस्था० ग्रामीण पुस्तकालय, मंत्री खंडवा तहसील कांग्रेस एवं सहकारी सभा-संघ; अप्र०—निमाड़ के लोक-गीत, कलम और हथौड़ा, युग-निर्माण; वर्त०—गाँधी जी पर एक ग्रंथ लिख रहे हैं; प०—कालमुखी, खँडवा।

रामनारायण गट्टाणी—शि०—मैट्रिक; सा०—भवनगिरि तालुका की साहित्य-प्रचार-सभा के संस्थापक एवं सभापति, हैदराबाद हिंदी-प्रचार-सभा के भवनगिरि केंद्र के व्यवस्थापक और हिंदी अध्यापक; प्रका०—स्फुट; प०—भवनगिरि, पो० भोनगिरि, नलगोंडा (दक्षिण)।

रामनारायण त्रिपाठी, 'रमेश'—ज०—१ जनवरी १३१६; शि०—सा० भूषण; सा०—कवि-परिषद की स्थापना; अप्र०—दो काव्य-संग्रह; प०—अध्यापक, वी०पी० एस० स्कूल, मोठ, झाँसी।

रामनारायणदत्त शास्त्री, 'राम' —ज०—१६०६ ; शि०—सा० आ० ; वि०—संस्कृत व्याकरण, इतिहास, पुराण और वेदांत के प्रकांड पंडित ; प्रका०—ऊर्मि, कवि० सं०; संपा०—मूल रामायण, भगवन्नाम - कौमुदी, महाभारत, वाल्मीकि रामायण, पद्मपुराण, मार्कंडेयपुराण, ब्रह्मपुराण, दुर्गा-सप्तशती, नित्यकर्म प्रयोग, संध्या, लघुसिद्धांत कौमुदी, गोपाल तापनीय उपनिषद आदि अनेक पुस्तकें, सीता और पार्वती की छोटी-छोटी जीवनियाँ ; प० — सम्पादकीय विभाग, 'कल्याण' - कार्यालय, गोरखपुर।

रामनारायण मिश्र—ज०—१८६५ ; सा०—भूत० संपा० 'शिक्षा-सुधा' १६३६-१६४०, सक्रिय सद० काशी ना० प्र० सभा, प्रयाग हि० सा० स०, मंत्री—सनातनधर्म सभा और ग्राम-समिति, पंचायत राज और ग्राम-रक्षा आदि में कार्य; प्रका०—सूर्योपासना, हिंदी-साहित्य-कोश, वैष्णवधर्म-परिचय, माडर्न भूगोल ; प०—अध्यापक, सहजनपुर, हरदोई।

रामनारायण मिश्र—ज०—२४ जूलाई १६११ ; प्रका०—सदुपदेश-संग्रह, जीवन के सूत्र, महात्मा ईसा, सफलता के साधन, विजयपथ (अनु० रस्किन); अप्र०—चीन, ब्रह्मदेश, स्याम, फूकी जावा; वर्त०— एक पुस्तक का लेखन जिसमें दो सौ प्रमुख कवियों का आलोचनात्मक उल्लेख ; वि०—चीन, जापान, पूर्वीद्वीप समूह का भ्रमण किया ; प०—ग्राम शेषपुर, पो० सूरापुर, सुल्तानपुर।

रामनारायण मिश्र—ज०—२ फरवरी १६००, हरचंदपुर, रायबरेली ; शि०—एम० एस-सी० प्रयाग और काशी वि० वि० ; प्र०—१६१४ ; प्रका०—रायबरेली का हत्याकांड, रसायन - शास्त्र का संक्षिप्त इतिहास ; प०—सहायक प्राध्यापक, कृषि रसायन-विभाग, विश्वविद्यालय, नागपुर।

रामनारायण मिश्र—सा०—नागरी-प्रचारिणी-सभा काशी के संस्थापकों में, आरंभ से ही उसके सक्रिय कार्यकर्ता और पदाधिकारी, वर्षों तक उसके मंत्री और सभापति रहे, १६५० में दक्षिण - भारत में

हिंदी की गति-विधि का निरीक्षण करने के लिए जानेवाले हिंदी-सेवियों के वर्ग के प्रमुख सदस्य; **प्रका०**—अनेक उपयोगी पुस्तकें; **प०**—ठि० नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

रामनारायण यादवेंदु—**ज०**—१९०९ आगरा ; **प्र०**—१९३० ; **शि०**—सेंट जांस कालेज आगरा, बी० ए० मेरठ कालेज, एल-एल० बी० आगरा कालेज ; **प्रका०**—कहानी-कला, राष्ट्र-संघ और विश्व-शान्ति, दाम्पत्य जीवन, आदर्श पत्नी, इन्दिरा के पत्र, समाजवाद, गाँधी-वाद, भारतीय शासन-विधान, औपनिवेशिक स्वराज्य, भारत का दलित समाज, पाकिस्तान, सामुदायिक समस्या, हिटलर की नयी युद्धकला, हिटलर की विचारधारा, भारतीय संस्कृति और नागरिक जीवन, यदुवंश का इतिहास, अंतर्राष्ट्रीय कोश ; **वि०**—'भारत का दलित समाज' पर 'राधा मोहन गोकुल जी' पुरस्कार प्राप्त; **प०**—नवयुग साहित्य-निकेतन, राजामंडी, आगरा।

रामनारायण विजयवर्गीय—**ज०**—२० दिसंबर, १९१४; **शि०**—बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० र० ; **सा०**—स्थानीय प्रताप-सेवा-संघ, शिवराज युवकसंघ के उत्साही कार्यकर्त्ता ; मध्य-भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में ; उसके महू-अधिवेशन की स्वागत-समिति के प्रधान मंत्री ; **प०**—शिवराज-युवक-संघ, महू, मध्यभारत।

रामनारयाण श्रीवास्तव—**ज०**—१९१३, नारायणपुर, बलिया; **शि०**—बी० ए०, एल-एल० बी०; इलाहाबाद वि० वि० ; **सा०**—अहिन्दी 'प्रांतों' में राष्ट्रभाषा का प्रचार, १९३९ और ४२ के आंदोलनों में जेल-यात्राएँ; **प्रका०**—राजनीति संबधी स्फुट लेख ; **प०**—आदर्श हिंदी हाई स्कूल, ४ पद्मोपोखर रोड, एलगिन रोड, कलकत्ता।

रामनारायणहर्षुल मिश्र—**शि०**—सा० र०—**सा०**—उपमंत्री जिला कांग्रेस कमेटी ; मंत्री हिंदू-सभा ; सभापति-सनातन धर्मसभा तथा रामपुर वैद्य - सभा, संस्था० श्री हर्षुल भारत - गौरव - महौषधालय

तथा श्री हर्षुल-आयुर्वेद विद्यालय; **प्रका०**—धर्मविवेचन तथा अनेक वैद्यक संबंधी लेख ; **प०**—भारत-गौरव महौषधालय, बालाघाट।

रामनिवास शर्मा—**सा०**—हैदराबाद हिंदी - प्रचार - सभा के साहित्य-मंत्री १६४७ ; रेडियो से ब्राडकास्ट भी करते हैं, हिंदी साहित्य गोष्ठी की उन्नति में विशेष योग दिया; **अप्र०**—कहानी, कविता, हास्यरस के लेखों के दो-तीन संग्रह ; **प०**—ठि० हिंदी प्रचार-सभा, हैदराबाद (दक्षिण)।

रामनिवास सारस्वत—**ज०**—१६११ ; **शि०**—बिड़ला कालेज पिलानी ; **सा०**—हिंदी - सभा के संस्थापक ; हिंदी - प्रचार के रचनात्मक कार्यकर्ता; **प्रका०**—स्फुट; **प०**— जेनरल आफिसर, जियाजीराव कॉटन मिल्स, ग्वालियर।

रामपदार्थ देव 'इंदु'—**शि०**—शास्त्री, सा० आ०; **प्रका०**—सहानुभूति (उपन्यास); **अप्र०**— कई आध्यात्मिक ग्रंथ; **प०**—भगवानपुर बढ़ेता, जनार्दनपुर, दरभंगा।

रामपरीक्षा सिंह 'पुष्प'—**ज०**— १ अक्तूबर १६१४; **शि०**—एम० ए० १६४५; सा० र०; **प्र०**—१६२६; **सा०**—जसो स्टेट में राजकुमारों के ट्यूटर, प्राइवेट सेक्रेट्री टू चीफ इंसपेक्टर आव स्कूल्स, 'सन्देश' हस्तलिखित का संपादन, हिंदी-प्रचार; **प्रका०**—स्फुट आलोचनात्मक लेख; **प०**—प्राध्यापक, हिंदी - बिभाग, डिग्रीकालेज, आसनसोल।

रामपालगुप्त—**ज०**—१६२६; **सा०**—मंत्री हिं० सा० समिति; **प्रका०**—स्फुट कहानियाँ; **प०**—७०-६४ मंथुरी मुहाल, कानपुर;

रामपालसिंह,'कुँवर मृदुल'—**ज०**—२२ सितम्बर १६२३; **शि०**— बी० ए० डी० ए० वी० कालेज कानपुर; एम० ए० (अँगरेजी) लखनऊ वि० वि०; **प्र०**—१६३६ 'गृहस्थ' बनारस में प्रकाशित ; **सा०**—भूत० संपा० 'यामा' लखनऊ, 'जनमत' शाहजहाँपुर; **प्रका०**—रात की रानी (कहा०); **वि०**—'मुसाहिबजू' के नाम से व्यंग्य-लेख लिखते हैं; **प०**—उपासना - गृह, सेहरामऊ दक्षिण, शाहजहाँपुर।

रामपालसिंह चंदेल, 'प्रचंड'–**ज०**—१६०६; **सा०**—१६३१ के अ० भा० हि० सा० स० के झाँसी अधिवेशन में प्रबंध-मंत्री, हिंदी साहित्य सभा झाँसी के उत्साही कार्यकर्ता; संस्था०—बुंदेलखंड प्रांतीय कवि - परिषद्, अनेक साहित्यिक समारोहों के आयोजक, १६३० के आंदोलन में सक्रिय भाग; **प्रका०**—बुंदेलखंड वागीश, परिमल, चंदेल - चंद्रहास, ब्रह्म, युग-निर्माण, कवि से, राष्ट्र-प्राण, लेखनी, भविष्य - निर्माण; **प०**—संचालक बुंदेलखंड प्रांतीय कवि-परिषद्, झाँसी।

रामप्रकटमणि त्रिपाठी–**ज०**—१६०७ बलरामपुर, गोंडा; **शि०**—सा० रत्न, व्याकरणाचार्य प्रयाग, काशी, पटना; **अप्र०** — पत्र-पत्रिकाओं में छपे अनेक लेखों के संग्रह; **प०**—हिंदी अध्यापक, लायल कालेजिएट स्कूल, बलरामपुर।

रामप्रकाश अग्रवाल—**ज०**—२० जूलाई १६१६, **शि०**—मेरठ, एम० ए० (हिंदी, संस्कृत, अँगरेजी); **प्रका०**—स्फुट कहानियाँ; **प०**—प्राध्यापक, मेरठ कालेज, मेरठ।

रामप्रताप त्रिपाठी—**ज०**—२० जून १६१८ अढ़नपुर (जौनपुर ; **शि०**—शास्त्री, संस्कृत कालेज काशी, काव्यतीर्थ, बंगाल संस्कृत एसोशियेशन, सा० र०; **सा०**—अनुवादक सा० विभाग हि० सा० स० ; **प्रका०**—मत्स्य पुराण, उपनिषदों की कहानियाँ; **अप्र०**—वायु पुराण, भविष्य-महापुराण, अलंकार - सर्वस्व; कांग्रेसी कार्यकर्ता; **प०**—सहायक मंत्री, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

रामप्रताप मिश्र—**शि०**—सा० र०, सा० वि० ; **सा०**—१६४२ में आजन्म कारावास; **प्रका०**—स्फुट रचनाएँ; **प०**—प्रयाग विद्यापीठ, प्रयाग।

रामप्रसाद त्रिपाठी, डाक्टर—**शि०**—एम० ए०, पी-एच० डी०; **सा०**—अनेक वर्षों तक साहित्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री रहे और उसकी प्रत्येक योजना में सक्रिय सहयोग दिया, युक्त प्रान्त के 'बोर्ड आव हाई स्कूल ऐंड

इंटर एज्युकेशन' की हिंदी-कमेटी के भूत०संयोजक; प्रका०—संक्षिप्त सूरसागर, अनेक पाठ-ग्रन्थ ; प०—विश्वविद्यालय, प्रयाग।

रामप्रसाद विद्यार्थी—ज०—१६ दिसम्बर १९११ ; प्रका०—पूजा, शुभा, अपनों की खोज में, बुकसेलर की डायरी, मुझे आप से कुछ कहना है (निबंध) ; अप्र०—संयोग, कहानियों का एक संग्रह ; प०—रावी, कैलास, सिकन्दराबाद, आगरा।

रामप्रसाद शर्मा 'उपरीन'—ज०—१८९२ ; शि०—वैद्य-भूषण, व्याकरण - रत्न ; सा०—१९०८ से शिक्षा-विभाग में कार्य; १९२१ के आंदोलन में क्रांतिकारी के रूप में कारावास, अछूतोद्धार तथा हरिजन-शिक्षा ; प्रका०—ज्ञानकली, आदर्श जीवन; अप्र०—अछूत, वृद्धा, त्रिवेणी ; प०—चिरगाँव, झाँसी।

राम प्रियाशरण, 'रत्नेश'—ज०—१८९६ पटना; सा०—'देश' और 'आर्यावर्त' के सम्पादक ; 'जौहर' उपनाम से उर्दू में भी लिखते हैं ; रचनाएँ सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं ; प०—आर्यावर्त-कार्यालय, पटना।

रामप्रीति द्विवेदी—ज०—१९०६ ; प्रका०—अनेक स्फुट कविताएँ ; अप्र०—सती-सुकन्या-नाटक; प०—रफीपुर, बाकरगंज, सारन।

रामप्रीति शर्मा 'शिव' (व्रज) प्रियतम (खड़ी)—ज०—१८९६; शि०—पटना; प्र०—१९१७ से व्रज,१९२२ से खड़ीबोली में कविता; सा०—आरा सभा द्वारा प्रका० 'हरिऔध-अभिनन्दन - ग्रन्थ' के सम्पादक, बा० गुलाबराय के 'नवरस' के सम्पा०, सभा० के साहि०-कार्य के प्रेरक, 'राम', 'शिक्षासेवक' तथा 'शिक्षक' के भूत० संपा०, मंत्री ना० प्र० सभा आरा, स्वतंत्र भारत के राष्ट्रपति माननीय डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद अभिनन्दन-ग्रन्थ का संपा० ; प्रका०—नल - दमयन्ती, पिंगल मंजूषा, बालविनोद, राष्ट्रभाषा (नाटक); अप्र०—प्रियतमविनोद, प्रेम, व्याकरण-शास्त्र, रीतिकाल की कला, भोजपुरी सरस रचना

संग्रह; प०—माडल इंसटीट्यूट, आरा।

रामबहोरी शुक्ल—शि०—एम० ए०, बी० टी०, सा० र० प्रयाग तथा बनारस; सा०—काशी नागरी प्रचारिणी सभा के सदस्य, भूत० साहित्य-मंत्री तथा प्रधानमंत्री; हिंदी-साहित्य सम्मेलन प्रयाग की स्थायी-समिति और विश्वविद्यालय परिषद के भूत० सदस्य; प्रका०—काव्य-कलाधार, काव्य-कुसुमाकर, काव्य-प्रदीप, भूमिका और अनमोल रत्न आदि ; अप्र०—अनेक साहित्यिक लेख-संग्रह; प०—प्राध्यापक, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, प्रयाग।

रामबालक पांडेय—ज०—१८६८ ; सा०—असहयोगी आंदोलन के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्ता, पलकाश्रम पुस्तकालय और स्थानीय पाठशालाओं के सहयोगी सदस्य, स्था०—हिंदी-साहित्य-सम्मेलन-परीक्षा-केंद्र तथा रामायण-प्रसार-समिति ; सदस्य हिंदू महासभा, सनातनधर्म तथा आर्यसमाज; प्रका०—राष्ट्र तथा समाज-संबन्धी अनेक स्फुट लेख; प०—गोविंदपुर, सारन।

राममनोहर विचपुरिया—'सम्राट'—ज०—१८६८; सा०—सा० समिति के संचालक, प्रका०—मान का अपमान, नमस्ते; अप्र०—वंशीविद्या, सरला, स्तुति, उपालम्भ-शतक; प०—पुरानी बस्ती, कटनी।

राममूर्ति मेहरोत्रा—ज०—२२ दिसंबर १६१०; शि०—प्रारंभिक किंगजार्ज यूनियन हाई स्कूल संभल में, एम० ए० (हिंदी) आगरा वि० वि०, एम० ए० (इतिहास) और बी० एड० लखनऊ वि० वि०; अ०—१६४०; प्रका०—लिपि-विकास, भाषा-विज्ञान-सार, शब्दोंकाइतिहास, बच्चों की आदतों का विकास, बाल-विकास, जानवरों की अनोखी दुनिया, बुद्धि-परीक्षा, समझ के खेल, दिमागी खेल इत्यादि लगभग एक दरजन पुस्तकें; वि०—भाषा-विज्ञान और मनोविज्ञान प्रिय विषय हैं; इन्हीं पर रेडियो से ब्राडकास्ट करते हैं; प०—आचार्य, सारस्वत खत्री पाठशाला हायर सेकेंडरी स्कूल, प्रयाग।

राममूर्ति सिंह—ज०—१९१४, चुनार; शि०—चुनार, काशी, बी० ए० प्रयाग वि० वि०, बी० टी०, नागपुर वि० वि०, सा० वि०; सा०—मंत्री माध्यमिक शिक्षक-संघ, इटारसी तथा प्रांतीय शिक्षक-संघ नागपुर; प्रका०—स्फुट रचनाएँ; प०—अध्यापक म्युनिसिपल हाई स्कूल, इटारसी।

राममोहन—ज०—२६ जून १९१५; शि०—बी० काम०; प्रका०—कांग्रेस सरकार संयुक्त प्रांत में, चँदौसी-इतिहास; अप्र०—महान् पुरुषों की जीवनियाँ; प०—चँदौसी।

रामरक्षा त्रिपाठी 'निर्भीक,'—ज०—१९१३ अयोध्या; शि०—सा० रत्न; प्रका०—अयोध्या-दिग्दर्शन; प०—बरहटा, अयोध्या।

रामरीझन रसूलपुरी—ज०—१९०६; सा०—भूतपूर्व संपादक 'तिरहुत-समाचार', 'योगी' और 'राष्ट्रदूत'; राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति घाटशिला (सिंहभूम) के संस्थापकों में, उसके शिक्षण-केंद्र के प्रधान निर्देशक; प्रका०—स्फुट; प०—शिक्षा-निरीक्षक, सरायकेला, राजनगर, पो० हल्दी-पोखर, सिंहभूम।

रामलखनदास 'लोकेश'—सा०—प्राचीन ग्रंथों की खोज का कार्य किया; प्रका०—कविता (काव्य); प०—जनार्दनपुर, दरभंगा।

रामलाल—ज०-महसों, बस्ती; सा०—भूतपूर्व संपादक 'किसान संदेश', साप्ताहिक 'समाचार'; प्रका०—सौरभ , विभावरी, सीमांत-काव्य, नीरव निकुंज-निबं०, साधारण विनोद और काशी-विलास—ब्रजभाषा काव्य, सन्मयी; अप्र०—मदनिका, गुप्तकालीन ऐतिहासिक नाटक, संत रैदास, बीसवीं सदी के भगवान; वर्त०—सह संपा० 'कल्याण', गोरखपुर; प०—आनंद सदन, गोरखपुर।

रामलोचनशरण 'बिहारी'—ज०—१८८८; सा०—पुस्तक भंडार, विद्यापति प्रेस, हिमालय प्रेस के संस्थापक; 'बालक', 'होनहार', 'रौनियार-वैश्य' के जन्मदाता और संपादक; प्रका०—व्याकरण-बोध, व्याकरण-चंद्रिका, व्याकरण-नवनीत, व्याकरण-चंद्रो-

दय, बालरचना, रचना-प्रवेशिका, रचना-चंद्रिका, रचना - चंद्रोदय, रचना-नवनीत, नीतिनिबंध, गद्य-साहित्य, गद्यामोद, गद्यप्रकाश, साहित्य-सरोज, साहित्य - विनोद, साहित्य-प्रमोद, राष्ट्रीय साहित्य—६ भाग, राष्ट्रीय कविता-संग्रह, काव्य-सरिता, इतिहास-परिचय, भूगोल-परिचय, स्वास्थ्य-परिचय, प्रकृति-परिचय, प्रतिवेश - परिचय, धर्म-शिक्षा, शिशुकर्म-संगीत, मनोहर पोथी, गणित पढ़ाने की विधि, ऐतिहासिक कथामाला; **वि०**— आपकी स्वर्ण जयंती और पुस्तक भंडार की रजत जयंती के उपलक्ष में एक वृहत् अभिनंदन-ग्रंथ भेंट किया गया था ; **प०**—लहेरिया सराय, बिहार।

रामवचन द्विवेदी, 'अरविंद'—**ज०**—१९०४; **शि०**—सा० लं०; **सा०**—१९०४ बिहार प्रादेशिक अष्टम हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्वागतकारिणी समिति के प्रकाशन विभाग और कवि-सम्मेलन के सद० तथा प्रचारक, संस्थापक—हिंदी-साहित्य - समिति सहसराम, अनंत हिंदीमंदिर दुर्वाली; **प्रका०**—हिंदी-संदेश, वर्ण-दशा, श्रीकृष्ण-संदेश, कथा-कुंज, विनय, स्वप्न-सुन्दरी, धर्म दिवाकर—३ भाग, वीरों की वाणी, भारतीय ; **प०**—**वर्त०**— बिहार संस्कृत-समिति पटना ; स्थायी—श्री अनंत हिंदी मंदिर, दुबैली, नियाजीपुर, शाहाबाद (बिहार)।

रामवरणसिंह—**शि०**—**सा० वि०**; **प्रका०**—स्फुट लेख; **प०**—प्रधानाध्यापक, महात्मा गाँधी महाविद्यालय, समस्तीपुर, पो० शाहेपुर कमाल, मुंगेर।

रामविलासशर्मा, 'डॉक्टर'—**ज०**—१९१२; **शि०**—एम०ए०, पी-एच०डी० (अँगरेजी), लखनऊ विश्वविद्यालय; **सा०**—प्रांतीय प्रगतिशील लेखक-संघ के मंत्री; 'हंस' के कविता-भाग के संपादक; **प्रका०**—चार दिन—उप०, प्रेमचंद—आलो०, भारतेंदु युग—आलो०; भक्ति और वेदांत, कर्मयोग, राजयोग; **अप्र०**—हिंदी आलोचना साहित्य का इतिहास, सदाबहार-सदासुहाग, महायुद्ध का इतिहास; **प०**—अध्यक्ष अँगरेजी विभाग, बलवंत राजपूत कालेज, आगरा।

रामवृक्ष 'बेनीपुरी'— ज०— १६०१; प्र०— १६१७—'प्रताप' में छपी; सा०— 'तरुण भारत', 'किसान मित्र', 'गोलमाल', 'बालक', 'युवक', 'लोकसंग्रह', 'कर्मवीर', 'योगी', 'जनता', 'हिमालय' के भूतपूर्व संपादक; प्रका०—बालो०—बगुला भगत, सियार पाण्डे, बिलाई मौसी; हीरामन तोता, आविष्कार और आविष्कारक, रंगबिरंग, चिड़िया खाना, जानवरों का जीवन, क्यों और क्या, पंचमेल मिठाइयाँ, सतरंगा धनुष, कविता - कुसुम, शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह, विद्यापति, लंगतसिंह; नवयकोपयोगी— साहस के पुतले, जान हथेली पर, फूलों का गुच्छा, पदचिन्ह, झोपड़ी के महल, बहादुरी की बातें, प्रेम; टीकाएँ— बिहारी-सतसई, विद्यापति पदावली, महाकवि इक़बाल, जोश के कलाम; उप०—पतितों के देश में, लालतारा, झोपड़ी का रुदन, दीदी, माटी की मूरतें, सातदिन, आँसू की तस्वीरें, रानी; राजनीति— लाल चीन, लाल रूस, जयप्रकाश, रोजा लुग्जेम; अम्बपाली (नाट०); वि०—कई पुस्तकों के उर्दू संस्करण भी हो चुके हैं; जीवन भर में बारह बार जेल यात्रा, अखिल-भारतीय सोशलिस्ट पार्टी और किसान-सभा के संस्थापकों में एक; वत०— संपादक— 'हिमालय' और 'जनता'; प०—'जनता' कार्यालय, बाँकीपुर, पटना।

रामशंकर द्विवेदी, 'शंकर'— ज०—१६०३ वासलीगंज; शि०—गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, काशी; सा०—जयपुर स्टेट में ऐंग्लो वैदिक हाई स्कूल में प्रधान हिन्दी अध्यापक १६२४, सेवा-समितियों तथा कवि - सम्मेलनों में भाग; प्रका०—पाप का पराभव (उप०), प्रेम-पुष्प, गीता का पद्यानुवाद, राष्ट्रीय गौरव-गीत, हिंदी काव्यालोचनासार; वर्त०—हिंदी अध्यापक, बाबूलाल जायसवाल इंटर कालेज, मिरजापुर; प०—साहित्य-निकेतन, वासलीगंज, मिरजापुर।

रामशरण उपाध्याय—ज०— १८६१; शि०—बी० ए० भूमिहार ब्राह्मण कालेज मुजफ्फरपुर, बी० टी० ट्रेनिंग कालेज पटना—

बिहार भर में सर्व प्रथम; **सा०**—संचालक 'नवीन शिक्षक', स्काउट कमिश्नर; **प्रका०**—मगध का प्राचीन इतिहास; **प०**—सेक्रेटरी बेसिक एजूकेशन बोर्ड तथा इंस्पेक्टर, बेसिक एजूकेशन बिहार, महेंद्रू, पटना।

रामशरणदास पिलखुआ—**जा०**—१६१८ ; **प्रका०**—स्फुट ; **अप्र०**—भारत की अद्भुत महिमा, पातिव्रतधर्म ; **प०**—पिलखुआ, मेरठ।

रामशरण शर्मा—**शि०**—एम० ए० (संस्कृत और हिंदी), प्रभाकर पंजाब वि० वि०, सा० रत्न०, सा० ल० बिहार; **सा०**—सहकारी संपादक 'विकास' जौनपुर हिंदी साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य ; **प्र०**—१६३५; **अप्र०**—चार ग्रंथ; **प०**—आचार्य नागरिक हायर सेकेंड्री स्कूल, जंघई, जौनपुर।

रामसंजीवन सिंह—**ज०**—१ मार्च १९१७; **शि०**—एम० ए०, बी० एस-सी० ; **सा०**—शिक्षक जिला स्कूल भागलपुर, प्राध्यापक गणेशदत्त कालेज बेगूसराय; **प्रका०**—समाधान, स्वर्गदहन ; **अप्र०**—'निर्गुण' के गुण, तुलसीदास, पिंजड़ेका पंछी, अश्रुवती, शारदी, दीप के गीत ; **प०**—प्राध्यापक राजकीय डिग्री कालेज, राँची।

रामसरन शर्मा— **ज०**—३ फरवरी १९१३ ; **शि०**—बी० ए० मेरठ कालेज ; **सा०**—दो बार सत्याग्रह आन्दोलनों में जेल गये ; **प्र०**—अँगरेजी में; **प्रका०**—जलधारा, मालिनिया ऐसी बनी, चतुर्दशी, कटीले तार, शीशे की चोरी; **वि०**—अँगरेजी में 'आउट आफ बिटरनेस' और 'टेल्स आव लव ऐंडवेंचर'–दो ग्रंथ लिखे हैं; रेडियो पर भाषण और नाटक; **प०**—१३८६, नाई वाली गली, नं० २३, करौल बाग, दिल्ली।

रामसहाय मिस्त्री, 'रमाबंधु'—**ज०**—२७ मार्च १८६१; **शि०**—काव्यमनीषी; **प्रका०**—मोहनरानी, मित्र मिलाप, कृष्ण-गीतांजलि, पुनर्विवाह की पत्नी ; **प०**—हटा, दमोह।

रामसिंह गहलौत, गाजीपुरी—**ज०**—११ जूलाई १३१५ ; **शि०**—काशी वि० वि० ; **प्रका०**—

कुक्कुडूँकूँ, कटुकंठी, कौतुकी, उलूकिनी, चंडूदास ; वि०—हास्यरस के लेखक ; प०—जजी कचहरी, गाजीपुर।

रामसिंह, ठाकुर—ज०—१६०२; शि०—हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस ; सा०—प्राध्यापक, अँगरेजी भाषा और साहित्य हिंदू विश्वविद्यालय, डाइरेक्टर आफ पब्लिक इंसट्रक्शन बीकानेर राज्य, सभापति–म्युनिसिपल बोर्ड, बीकानेर श्रीगुण-प्रकाशक सज्जनालय, बीकानेर की प्रमुख सार्वजनिक और साहित्यिक संस्था और श्री शार्दूल ब्रह्मचर्याश्रम; सदस्य—गवर्निंग बाडी हिंदू विश्वविद्यालय बनारस, राजपूताना तथा सेंट्रल इंडिया बोर्ड आव एजुकेशन ; ट्रस्टी—बी० जे० एस० रामपुरिया एजुकेशनल ट्रस्ट बीकानेर; प्रका०—कृष्ण रुक्मणी बेलि, ढोला मारू रा दूहा, राजस्थान के लोकगीत भाग १-२, राजस्थान के ग्राम गीत भाग १ (आगरा), चन्द्र सखी के भजन, (सस्ती) मेघमाला, गद्य काव्य, रतिरानी, संक्षिप्त केशव, जीवन, स्मृतियाँ-संकलित ; अप्र०—जटमल ग्रंथावली, रावजैतसीरो छंद, ऐतिहासिक डिंगलगीत, चारणी गीत (५), राजस्थान के लोकगीत भाग ३-४, राजस्थान के ग्रामगीत भाग २-३-४, कणिका (राजस्थानी कविता), ज्योत्स्ना (गद्यकाव्य), कानन, कुसुमांजलि, इन्द्रचाप-कविता, स्वर्णाश्रम-निबंध, मित्रों के पत्र ; प०—मधुवन, बीकानेर।

रामसिंहासन सहाय श्रीवास्तव 'मधुर'—ज०—१९०३; प्र०—१६२०; सा०—साहित्य-मंत्री हिंदी-प्रचारिणी-सभा बलिया; प्रका०—वर्तमान विद्यार्थी, मधुर-लहरी; प०—मुख्तार, बलिया।

रामसिया, 'रमेश'—सा०–स्थानीय हिंदी-प्रचार-सभा के मंत्री; प्रका०–दुखी भारत, रमेश-कवितावली; अप्र०—दो कविता-संग्रह ; प०—सदर बाजार, हिंगोली, परभणी (दक्षिण)।

राम सुन्दर लाल श्रीवास्तव—ज०—१६८० काशी; शि०—सा० र०, सा० लं०; प्रका०—हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, निबंध-प्रकाश, ममता, त्याग, घर

की लाज, सिंहगढ़-विजय (खंड काव्य); प०—गनेशराम छत्तातले, बनारस।

रामसूरत शुक्ल— ज०—ज०—२ जनवरी १६१६; **सा०**—प्राइमरी स्कूल के संस्था, ना० प्र० सभा काशी के सद; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—संस्थापक, हरिवंश-लोलादर्श पुस्तकालय, करंजही पत्रालय, मलाँव, गोरखपुर।

रामसेवक झा, 'विह्वल'—ज०— १६२७; **सा०**— भूत० संपा० 'मजदूर-संसार'; **प्रका०**—मेरे बापू; **अप्र०** —टूटेदिल-उपन्यास, कृषक-खंड काव्य; प०—बड़गाँव, पतरघट, भागलपुर।

रामसेवक त्रिपाठी 'सेवकेंद्र'—ज०—१६०६; जा०—अँगरेजी, बँगला; प्रका०—मीरा-मानस, ताजमहल, सूरदास, छत्रशाल; प०—झाँसी।

रामस्वरूप—**शि०**-एम० ए०, बी० टी०; **सा०**—टाँडा हिं० प्र० सभा के संस्था०, ना० प्र० काशी के आर्यभाषा पुस्तकालय के निरीक्षक; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—दयानंद कालेज, काशी।

रामस्वरूप गर्ग—ज०—२३ अक्टूबर १६१६; **सा०**—संस्था० और संपा० 'वाणी-मंदिर'-प्रकाशन, संपा०—'राष्ट्र वाणी', भूत० प्रधानाध्यापक बाल-मंदिर, पत्रों के प्रतिनिधि, राजस्थान-पत्रकार-सम्मेलन की कार्य कारिणी-समिति के सदस्य, विशेष संपादक 'जनपथ' काँग्रेस-अंक; **अप्र०**—जीवन का सत्य, सुबोध का भ्रमण, आचार्य विनोबा; प०—'राष्ट्रवाणी'-श्री वाणी-मंदिर कार्यालय, अजमेर।

रामस्वरूप शर्मा, 'कौशिक'—ज०—२ जूलाई १६१५; **शि०**—एम० ए०, एल० टी०, मथुरा, राजपूत कालेज आगरा, नागपुर वि० वि०, गवर्नमेंट ट्रेनिंग कालेज, इलाहाबाद; **सा०**—आचार्य एम० एस. जी. आई. इंटर कालेज गोरखपुर; **प्रका०**—वहीखाता, नागरिक शास्त्र-सोपान—२ भाग; **प०**—अध्यक्ष ट्रेनिंग कालेज, मथुरा।

रामस्वरूप शर्मा, 'मयंक'—ज०—१६१४; **शि०**—सा० र० जालौन, कानपुर, इलाहाबाद; **सा०**—संचालक-महिला महाविद्या-

लय, श्रद्धानंद पार्क, कानपुर; हिंदी- प्रचारिणी-समिति और सा० सभा के उत्साही कार्यकर्ता, सभापति हि०-सा०-समिति और लोक - सेवक - संघ, देश के आंदोलनों में प्रमुख भाग; **प्रका०**—प्रेमतरंग, हनुमान पचासा, तारा-काव्य-संग्रह ; **प०** — अध्यापक मारवाड़ी कालेज, कानपुर।

रामस्वरूप शर्मा 'रसिकेन्द्र'—ज०—२६ जून १९०३ ; **शि०**—सा० वि० ; **सा०**—सह० संपा० 'ज्योति', 'ब्रजभारती', ब्रजसाहित्य-मंडल द्वारा आयोजित व्याकरण समिति के सदस्य, ब्रजभाषा और उसके व्याकरण के परिमार्जन में रुचि ; **प्रका०**—सौंदरी, मोहिनी और पिंगल-प्रबोध ; **अप्र०**—सुधा-पान ; **प०**—हिंदी अध्यापक, चंपा अग्रवाल कालेज, मथुरा।

रामस्वरूप व्यास—ज०—१९०६ ; **प्रका०**—चंद्रिका (कहा०), समाज में स्त्रियों के अधिकार, समाज और विवाह, समाज-शास्त्र और मनोविज्ञान संबंधी दो सौ के लगभग लेख प्रकाशित ; **वि०**—आप आक्सफोर्ड में मनोविज्ञान का अध्ययन कर रहे हैं ; **प०**—ज्वालापुर, सहारनपुर।

रामस्वरूप शास्त्री—ज०—१ अक्टूबर १८९२ ; **शि०**—व्याकरणतीर्थ, न्यायतीर्थ, व्याकरणाचार्य; **सा०**— धर्मसंघ काशी के अध्यक्ष ; **प्रका०**—न्याय-दर्शन, वेदांत - दर्शन, प्राचीन न्याय तथा नव्य न्याय का तुलनात्मक विवरण संस्कृत साहित्य, स्वप्न - विज्ञान, कादम्बरी, किरातार्जुनीय की टीका-टिप्पणी ; **प०**—प्रधानाध्यापक, हिंदी - संस्कृत विभाग, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

रामाधार शर्मा—**शि०**—साहित्य-विशारद ; **सा०**—हैदराबाद हिंदी-प्रचार-सभा द्वारा संचालित 'अजंता' मासिक के संचालक; **अप्र०**—स्फुट ; **प०**—ठि० हिंदी-प्रचार-सभा, हैदराबाद (दक्षिण)।

रामाधार शुक्ल—ज०—१८९३ कपुदा, छिन्दवाड़ा; **सा०**—छिन्दवाड़ा में तहसील कानूनगो और सदर नाजिर, कविताओं पर मध्य-भारतीय सरकार द्वारा १२००) का पुरस्कार प्राप्त किया, जेल में धर्मोपदेशक, सद० काशी ना० प्र०

सभा, मध्यप्रांत विदर्भ हिं० सा० स०, उपमंत्री मध्यप्रांत तथा बरार कान्यकुब्ज - सम्मेलन ; प्रका०—मंगल-कामना, आदर्श, परोपकार, लक्ष्मीपूजन, आदर्श लक्ष्मी, गत महायुद्ध का आल्हा भाग २, हैजा-मोचन; प०—छिंदवाड़ा।

रामाधीनलाल खरे—ज०—१८८४ ; शि०—फारसी, उर्दू, संस्कृत, हिं० सा० सम्मे० उदयपुर से 'कविरत्न', विद्या - विभाग काँकरोजी से 'कवि-भूषण', ओरछा दरबार से 'अन्योक्ति-आचार्य' की उपाधियाँ मिलीं; प्रका०—श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव, छत्रसाल-वंश-कल्पद्रुम, पद्मिनी - चमत्कार, बीकानेर-वीरबाला, जीवहिंसा ; अप्र०—राम-विवाह, हनुमत-विजय; प०—उपरहटी, रीवाँ।

रामानंद शर्मा—ज०-१६००, पुनास, दरभंगा ; ज्ञा०—बँगला, तेलेगू, संस्कृत; सा०—हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार के लिए दक्षिणभारत में पूना और वर्धा से अकथनीय प्रयत्न, स्वयं शिक्षक रहे; प्रका०—उप०-पुनर्मिलन, स्वप्न-भंग, मरीचिका-कहा०, स्वर्ण-प्रभात ना०, हिंदुस्तान की बुलबुल-जी०, चिलका झील की सैर, चयनिका, प्राचीन पद्य-संग्रह; प०—संपादक 'दक्खिनी हिंद', हिंदुस्तानी-प्रचार - सभा, त्यागरायनगर, मद्रास।

रामानुग्रह नारायण लाल—ज०—१८९१ ; शि०—बी० ए० पटना वि० वि० ; सा०—'लक्ष्मी' के संपादक ; प्रका०—वाल्मीकि रामायण (छंदवद्ध अनुवाद-राधेश्यामी तर्ज); अप्र०—दो निबंध और कविता-संग्रह; प०—बहेलिया विगहा, टिकारी, गया।

रामानुग्रह शर्मा, 'नवनिधि'—ज०—१८८३ ; शि०—आचार्य ; प्रका०—पुहुप - कविता - संग्रह ; प०—प्रधान अध्यापक, संस्कृत पाठशाला, मैगंरा, गया।

रानानुजलाल श्रीवास्तव—सा०—भूत संपादक-'प्रेमा' मासिक, 'साथी', प्रेमपुस्तक-माला नामक प्रकाशन - संस्था के संस्था०, कई पाठ्य ग्रंथों का संपा०, मैनेजिंग एजेंट इण्डियन प्रेस लि० जबलपुर शाखा ; प०—इण्डियन प्रेस, जबलपुर।

रामावतार पोद्दार, 'अरुण'—ज०—१६२५ ; प्रका०—अरुणिमा—का० संग्रह, शकुंतला- खंड का०, विद्यापति-प्रबंध का०, सूरश्याम, विश्वमानव पं० नेहरू, कर्ण-गीत नाट्य, प०—किरण कुंज, समस्तीपुर ।

रामावतार मिश्र, 'राम'—ज०—१८६८ ; शि०—१६२३ में साहित्योपाध्याय ; सा०—भूतपूर्व संपा० 'रसिकविनोदिनी' (दो वर्ष तक) ; प्रका०—गणेशजन्म (नाटक), दमयंती-प्रलाप, दिलीय की गो-सेवा, सिद्धार्थजन्म, मनुस्मृति (द्वितीय अध्याय का पद्यानुवाद), कुंज-मिलन, हितोपदेश-टीका ; वि०—कुछ ग्रंथ संस्कृत में भी लिखे हैं ; वर्त०—अध्यापक कान्यकुब्ज संस्कृत विद्यालय, गया ; प०—पुरानी गोदाम, गया ।

रामावतार यादव — ज०—७ जून १६१६ ; शि०—कविराज, विद्यालंकार ; सा०—अध्यापक शिक्षा विभाग फतेहपुर, सद० कार्य समिति भारतीय यादव-साहित्य-परिषद् और आयुर्वेद प्रचा० सभा, एकडला, उपमन्त्री कांग्रेसी ग्राम-पंचायत, एकडला, प्रचार मंत्री निखिल भारत विद्यापीठ आगरा, संपा० 'जागृति' प्रयाग; प्रका०—यादव - इतिहास, यादव-आल्हा, जीवन-जागृति, बाल - कहानियाँ; अप्र०—हिंदी-कोविद, हिंदुस्तानी अध्यापक, ग्राम - रक्षादल आदि ; प०—एकडला, फतेहपुर ।

रामावतार यादव, 'शक्र'—ज०—१६१५ रूपनगर, मुंगेर ; प्रका०—अतंर्गीत, श्रीमद्भगवत गीता का पद्यानुवाद ; अप्र०—केश-कथा, निर्वाण और निर्माण; प०—रूपनगर, सिमरिया घाट, मुंगेर ।

रामावतार विद्याभास्कर—प्रका०—पचदशी, बोधसागर, शतश्लोकी, वाक्यसुधा, योग तारावली, दशश्लोकी, गीता-परिशीलन, नारद-भक्तिसूत्र, बालगीत ; अप्र०—जाग्रत जीवन, मनुष्य जीवन का लक्ष्य, ईश्वर भक्ति, आदर्श परिवार, जीवन-सूत्र, भावसागर, शिक्षकों का मार्ग-दर्शक, बालजागरण, बालोद्बोधन, सत्य-सिद्धांत आदि अनेक ग्रंथ; वि०—'गीता परिशीलन' पर उत्तरप्रदेशीय सर-

कार द्वारा ६००) पुरस्कार प्राप्त किया ; प०—संचालक, बुद्धि सेवाश्रम, बिजनौर, रतनगढ़ ।

रामावतार शर्मा 'विकल'—ज०—१६१२;सा०—'माँ मन्दिर' के संस्थापक ; 'विकल साहित्य माला' के लेखक ; प्रका०—वधशाला, न्यूबाला, मजदूर, दिव्यदर्शन, अंतर्कथा, हिंदी-रहस्य, सूखा पीपल ; अप्र०—कृषकबाला, प्रभात-फेरी, सुमरनी, भैयादूत, श्रद्धानन्द, उषा-निमन्त्रण;प०—'माँ' मन्दिर, मंडी धनौरा, मुरादाबाद ।

रामाशीष सिंह ठाकुर—सा०—'विजय' साप्ताहिक, 'विश्वमित्र' और 'विश्वबन्धु' के भूत० संपा०, 'राष्ट्रवाणी' पटना के वर्त० संपा० ; प्रका—बँगला की कई अनूदित पुस्तकें ; प०—दुबहर, भरसर, बलिया ।

रामाश्रय पयासो—ज०—१६१५; शि०—सा०र०, सा० लं०; सा०—'वीर मंडल' और 'प्रतिभा' मासिक के भूत०संपादक,संस्थापक—अवधेन्द्र साहित्य-परिषद,युवकसंघ, शिव क्लब; प्रका०—नवदल, भग्न चित्र, रजकण, गाओं की ओर, मकरंद, फूलेफूल, कुड्मल, काव्यानुशीलन, नवधा, प्रेमकहानियाँ, नवयुग-विवाह-समस्या, साहित्य-सारिणी; वर्त०—कस्टम इकसाइज़ आफिसर, कोठी स्टेट ; प०—शांतिकुटीर, कोठी स्टेट, (वाया—जैतवार) ।

रामुलु गुप्त, बैसानि—शि०—हि० विद्वान,हि० प्रचारक, राष्ट्र भा० वि; सा०— अध्यापक आँध्र जातीय कलाशाला, वैश्य समाज,रात्रिपाठशाला; संस्थापक—लोकमान्य हिन्दी-मंदिर, आँध्र में हिन्दी-प्रचार का श्रेय आपको है; प्रका०—डा० पट्टाभि सीता रमैया की जीवनी, हिन्दी-तेलगु-स्वयं-बोधिनी; प०—ब्राह्मम स्ट्रीट, बैजवाड़ा ।

रामेश्वर— ज० —१६१२ ; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; प्रका०—स्फुट कविताएँ ; प०—वकील, उरई ।

रामेश्वर 'अशांत'—ज०—१६२८; शि०—इंटर तक; प्रका०—जय-घोष (राष्ट्रीय कविताएँ); अप्र०—माँ का दीवाना, कहानियाँ; प०—कोठी रायसाहब

सालिगराम, गली बताशान, चावड़ी बाजार, दिल्ली।

रामेश्वर 'करुण'—ज०—१६०१; संपा०—'शिक्षा' मासिक; प्रका०—करुणसतसई, बाल-गोपाल, ईसबनीति - कुंज, तमसा।

रामेश्वर गुप्त—शि०—हिंदी भूषण; सा०—साहित्य-मंदिर के संस्थापक और मंत्री; प्रका०—वीणा की झंकार—कविता-संग्रह; अप्र०—दो-तीन कविता-संग्रह; प०—हिंगोली, परभणी (दक्षिण)।

रामसिया 'रमेश' शि०—सा० र०; प्रका०—स्फुट कहानियाँ और कविताएँ; प०—सदर बाजार, हिंगौली, हैदराबाद (दक्षिण)।

रामेश्वर दयाल, दुबे—ज०—१ जूलाई १६११; शि०—एम० ए०, सा० रत्न; सा०—१६३६ से राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा के मुख्य कार्यकर्त्ता, १६४२ से परीक्षा मंत्री और सहायक मंत्री; प्रका०—कवि-विश्वास, बाल-भारती; जी०—भारत के लाल (२ भाग), गुलदस्ता (२ भाग), संपा०—सरल रचना, पत्र मुहावरे और कहावतें, गांधी आश्रम-प्रार्थना; अप्र०—बापू की बातें, बाल कहानियाँ, कुणाल, आदि; वर्त०—प्राध्यापक; प०—राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा।

रमेश्वर दयालु द्विवेदी, 'श्रीकर'—ज०—१६०४; शि०—एम० ए०; प्रका०—स्फुट कविताएँ; अप्र०—पुष्पांजलि, कुंदमाला (संस्कृत से अनुवाद); वि०—आपको 'ज्योत्सना' नामक रचना पर पुरस्कार मिला; प०—अध्यापक, एम० एस० वी० स्कूल, कालपी।

रामेश्वर प्रसाद तिवारी—ज०—१६०६; शि०—सा० रत्न; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—सुपरवाइजर, सुगरफैक्टरी, पीलीभीत।

रामेश्वर प्रसाद दुबे 'मंजु'—ज०—दिसम्बर १६१३, बाबई होशंगाबाद; शि०—इंदौर, पिलानी; सा०—भूत० संपा० 'भारत विजय' हरदा और 'कल्पतरु'; प्रका०—संत नागर जी; अप्र०—तमाखू का इतिहास, मानसिक रोग और उसकी चिकित्सा; प०—सोहागपुर, होशंगाबाद।

रामेश्वर प्रसाद मेहरोत्रा—ज०—१९२५ इंदौर; **सा०**—भूत. संपा० 'विश्वमित्र', 'पूंजी', 'व्यापार'; **अप्र०** — हिंदी-पत्र कारिता; **प०**—संपादक 'जनमत', शाहजहाँपुर।

रामेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव—ज०—१९१२; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०—**प्रका०**—स्फुट कविताएँ; **अप्र०**—दो काव्य-संग्रह; प०—वकील, बघौरा, उरई।

रामेश्वरप्रसाद सिंह—ज०—१९०६; शि०—एम०ए० (हिंदी); **सा०**—सद० हिंदी साहित्य परिषद मुंगेर; **प्रका०**—स्फुट; प०—प्रोफेसर डी० जे० कालेज, मुंगेर।

रामेश्वर 'रसिक'—शि०—'हिंदी कोविद'; **प्रका०**— वीणा की झंकार तथा स्फुट कविताएँ, **प०**—सदर बाजार, हिंगोली, हैदराबाद (दक्षिण)।

रामेश्वरराम पाठक—ज०—१९१२; **शि०**—पटना वि० वि०; **प्रका०**—शस्त्र - विवेक, चेतना; **वर्त०**—व्यायाम और चिकित्सा नामक पुस्तक लिख रहे हैं; प०—ऊपर बाजार, गोपालगंज, राँची।

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'—ज०—१ मई १९१५; शि०—बी० ए०लखनऊवि०वि०, एम० ए० नागपुर वि० वि०, **प्रका०**—तारे-कहा०,मधूलिका,अपराजिता, किरण बेला, ये, वे बहुतेरे, करील, लाल चूनर, समाज और साहित्य, चढ़ती धूप; **अप्र०**—देवयानी; **प०**—प्राध्यापक राबर्टसन कालेज, जबलपुर।

रायकृष्णदास—ज०—१८९२; **सा०**—१९२० में भारतकलाभवन की स्थापना, यह भारतीय ललितकला पुरातत्व का महान संग्रहालय है, इसका संचालन ना० प्र० सभा के तत्वावधान में हो रहा है, प्रांतीय सरकार से सहायता प्राप्त कर स्वतन्त्ररूप से काम करने जा रहा है; **प्रका०** — साधना, छाया-पथ, प्रवाल, पगला—अनूदित, संलाप, अनाख्या, सुधांशु, आँखों की थाह, भारत की चित्रकला, भारतीय मूर्ति-कला, भावुक, व्रजरस, इक्कीस कहानियाँ; **प्रि० वि०** — साहित्य, संगीत, कला; **वर्त०**—कलाभवन

से 'कलाविधि' त्रैमासिक पत्र के प्रकाशन की योजना; भारतीय चित्रकला के इतिहास के लिखने में प्रयत्नशील; राम तथा कृष्ण पर एक ग्रंथ लिखने की योजना; प०—शांति कुटीर, बनारस।

रा० र० खाडिलकर—ज०—१९१४; शि०—बी० एस-सी०, हिंदू विश्वविद्यालय काशी; सा०—१९३५ 'आज' में रिपोर्टर, उप संपा० और सुपरिंटेंडेंट, १९४२ में संपा० 'खबर' और 'नागपुर टाइम्स' में काम; १९४३ संपा० 'संसार', १९४४-४५ संपा० साप्ता० 'संसार' बम्बई, १९४६ संपा० 'अधिकार' लखनऊ, १९४७ संपा० 'नवजीवन', १९४८ से 'आज' में सहा० संपा०; प्रका०—परमाणु बम, रेडियो, दो सिपाही, कीमती आँसू, मालवीय जी (मराठी), कल की दुनिया, कीमती आँसू; प०—'आज'-कार्यालय, काशी।

रावी (रामप्रसाद विद्यार्थी)—ज०—१६ दिसम्बर १९११; प्रका०—पूजा, शुभ्रा, अपनी खोज में या बुकसेलर की डायरी, मुझे आप से कुछ कहना है; प०—कैलास, सिकंदरा, आगरा।

रा० शारंगपाणि—ज०—१३ अक्टूबर १९१५ तंजापुर; शि०—कुंभकोणम; सा०—सहा० संपा० 'दक्खिनी हिंद'; प्रका०—मल्लिका, राजीनामा, हलाहल; वि०—मातृ भाषा तामिल है जिसमें अच्छी कविता करते हैं; प०—'दक्खिनी हिंद'-कार्यालय, १६ कुप्पैया चेट्टि स्ट्रीट, पुराना मांबलम, मद्रास।

रा० स्व० 'भारतीय'—ज०—१२ मार्च १९०३; सा०—संपा० 'ग्राम्यजीवन', संस्था० 'वीर भारत', प्रबन्ध संपा० 'केहरी', प्रधान मंत्री अ० भा० दि० जैन महासभा; प्रका०—वीर पताका-काव्य, पैगामे हमदर्दी, भावना; प०—श्री 'आशा' निकेतन, जारखी, आगरा।

राहुल सांकृत्यायन—ज०—१८९५; सा०—बौद्ध साहित्य और प्राचीन संस्कृति के विद्वान, सुदूर प्रदेशों की अनेक बार यात्रा की, तिब्बत के पुस्तकालयों से प्राचीन बौद्ध ग्रंथों का उद्धार किया, रूस के एक विद्यालय में पर्याप्त समय तक अध्यापक रहे, अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य सम्मेलन के

बंबई अधिवेशन के सभापति, विभिन्न विषयों के पारिभाषिक शब्दों के निर्माण, संकलन और संपादन का महत्वपूर्ण कार्य किया, आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व, गंभीर अध्ययन और उदार स्वभाव का परिचय आपके ग्रंथों से मिलता है ; कहानियाँ, उपन्यास, धार्मिक, दार्शनिक ग्रन्थ, यात्रा-साहित्य, आदि सभी-कुछ आपने लिखा है; **प्रका०**—बोल्गा से गंगा (कहानियाँ), बुद्धचर्या, धम्मपद, मज्झिम-निकाय, दीर्घनिकाय, विनयपिटक, तिब्बत में बौद्धधर्म, तिब्बत में सवा वर्ष, मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी यूरोप यात्रा, लद्दाख-यात्रा, लंका, ईरान, जापान, सोवियतभूमि, साम्यवाद ही क्यों, बाइसवीं सदी, कुरान-सार, पुरातत्व-निबन्धावली, शैतान की आँख, जादू का मुल्क, सोने की ढाल, विस्मृत के गर्भ में, सतमी के बच्चे, दिमागी गुलामी, तुम्हारा क्षय, क्या करें, युवकों-युवतियों घर छोड़ दो आदि चालीस से ऊपर ग्रन्थ जिनमें अधिकांश विशेष लोकप्रिय हैं ; **प०**—ठि० हिंदी-साहित्य सम्मेलन-कार्यालय, इलाहाबाद।

रुक्माराव, 'अमर'—**ज०**—१६२३, बल्लारी (मद्रास प्रान्त) ; **जा०**—दक्षिणी भाषाएँ ; **सा०**—हिंदी प्रचार-कार्य ; **वर्त०**—फौजी शिक्षक; **प०**—ठि० हिन्दी लेखक-संघ, ६७ मिंट स्ट्रीट, मद्रास १ ।

रुद्रदत्त मिश्र—**ज०**—१० जून १६०६; खैराबाद (कोटा); **शि०**—एम० ए० (हिंदी), एम० ए० प्रिवियस (अँगरेजी), सा० रत्न; **सा०**—भूत० सहायक-शिक्षालय-निरीक्षक, संपा० 'मध्यभारत-संदेश'; **प्रका०**—हिन्दी व्याकरण, मध्य-भारत का भूगोल, प्रौढ़ शिक्षा-माला, ग्वालियर हिंदी-रीडर, घनचक्कर राम की कुंडलियाँ आदि लगभग डेढ़ दरजन पुस्तकें; **वि०**—हास्यरस के लोकप्रिय कवि हैं; **वर्त०**—संपा०'जयाजी प्रताप'; **प०**—शारदासदन, लश्कर (ग्वालियर)।

रूपकुमारी बाजपेयी—**ज०**—३ सितंबर १६१७ ; **शि०**—एम० ए० जबलपुर ; **सा०** — हिन्दी-साहित्य संघ और फिलासोफिकल एसोसिएशन की सदस्या ; **प्रका०**—स्फुट कविताएँ और कहानियाँ;

प०—ठि० लेफ्टिनेंट संतवाजपेयी आर० आई० एन० बी० आर०, नेवी आफिस, विजगापट्टम।

रूपनारायण—ज०—१६२३; शि०—सा० लं० लाहौर; सा०—संपा०—हस्तलिखित 'किशोरमित्र', 'पीयूष'; प्रका०—स्फुट ; अप्र०—अनुरक्ति, न्यायदर्शन की प्रश्नोत्तरी; प०—साहित्य - विभाग, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

रूपनारायण पांडेय—ज०—१८८४ ; शि०—लखनऊ ; सा०—'निगमागम-चंद्रिका', 'नागरी-प्रचारक', 'इंदु', 'माधुरी' (प्रारंभिक ५ वर्ष) के भूतपूर्व संपादक, इस समय लगभग १६ वर्षों से फिर 'माधुरी' का संपादन कर रहे हैं ; प्रका०—सुकोक्ति-सुधा-सागर, आँख की किरकिरी, शांति-कुटीर, चौबे का चिट्ठा, दुर्गादास, उस पार, शाहजहाँ, नूरजहाँ, सीता, पाषाणी, सूम के घर धूम, भारत रमणी, बंकिम-निबंधावली, ताराबाई, ज्ञान और कर्म, विद्यासागर, बालकालिदास, बालशिक्षा, तारा, राजारानी, घर-बाहर, भू-प्रदक्षिणा, गल्पगुच्छ ५ भाग, समाज, शिक्षा, महाभारत के कतिपय पर्व, रमा, पतित पति, शूरशिरोमणि, हरीसिंह नलवा, गुप्तरहस्य, खाँजहाँ, मूर्ख-मंडली, मंजरी, कृष्णकुमारी, बंकिमचंद्र, अज्ञातवास, बहता हुआ फूल, पोष्यपुत्र, चंद्रप्रभा - चरित्र, पृथ्वीराज, प्रफुल्ल, शिवाजी, वीर-पूजा, नारीनीति, आचार-प्रबंध, घर जमाई, स्वतंत्रतादेवी, नीतिरत्न-माला, भगवती शतक, रंभा-शुक-संवाद, पत्र-पुष्प, दुरंगी दुनिया, गोरा, बुद्धचरित्र, खोई हुई निधि, गृहलक्ष्मी, विजया, पराग, अशोक, पद्मिनी, सचित्र हिंदी भागवत, सुबोध बालभागवत, सुबोध बाल-महाभारत, सुबोध बालरामायण, प्रतापी परशुराम, महारथी अर्जुन, महावीर हनुमान, गजरा इत्यादि लगभग सत्तर ग्रन्थ; वि०—लखनऊ के साहित्यिकों की ओर से पिछले वर्ष आपका सादर अभिनंदन किया गया ; प०—रानीकटरा, लखनऊ।

रेवतीरंजन सिंह—शि०—सा०रत्न, वृंदावन; ज्ञा०—बँगला, उर्दू, संस्कृत और अँगरेजी; सा०—स्थायी सद० हि० सा० स० प्रयाग

तथा रा० प्र० स० वर्धा की कार्यकारिणी के सद०, सक्रिय सद० ना० प्र० स० काशी ; प्रका०—राष्ट्रभाषा प्रचार-सोपान, प्राथमिक अनुवाद शिक्षा, नीलम की अँगूठी, अनु० ; वि०—मातृभाषा बंगाली है और आपने पश्चिमी बंगाल राष्ट्र० भा० प्र० स० का संगठन किया है ; प०—२० ए अमृत बैनर्जी रोड, कालीघाट. कलकत्ता २६, अथवा गिरिगोविंद - मंदिर, वृन्दावन।

रैवतसिंह ठाकुर— ज०—१६०७ किशनगढ़ ; शि०—हाई स्कूल तक ; प्रका०—क्षत्रिय-भजनावली, लक्ष्मण -विलास, डूँगर राज्य का पद्यात्मक इतिहास ; वि०—लक्ष्मण-विलास पर डूँगर राज्य से ५००) का पुरस्कार और जागीर मिली ; संस्कृत कार्यालय अयोध्या ने 'साहित्य-मनीषी' उपाधि से विभूषित किया ; अप्र०—गुहिल गौरव-प्रकाश, छत्रसाल-दसक; प०—सैन्य विभाग, उदयपुर।

लक्ष्मण नारायण गर्दे—ज०—१८८६ काशी; ज०—संस्कृत,मराठी, बँगला, गुजराती, अँगरेजी; सा०—भूतपूर्व संपादक 'वेंकटेश्वर-समाचार,' 'बंगवासी', 'भारतमित्र', 'नवनीत', पुनः 'भारतमित्र' (६ वर्ष तक), 'श्रीकृष्ण-संदेश' आदि अनेक पत्र ; कलकत्ते की कांग्रेस कमेटी के सभापति, 'कल्याण' के योगांक, संतांक, वेदांतांक, साधनांक के विशेष संपादक; प्रका०—मौलिक—नकली प्रोफेसर, मियाँ की करतूत, महाराष्ट्र रहस्य, सरल-गीता, श्रीकृष्ण-चरित्र, एशिया का जागरण ; अनुवाद—एकनाथ-चरित्र, ज्ञानेश्वर-चरित्र, तुकाराम-चरित्र, श्रीअरविंद-योग, योग-प्रदीप, हिंदुत्व, गांधी-सिद्धांत, आरोग्य और उसके साधन, जापान की राजनीतिक प्रगति, माँ; अप्र०—अनेक स्फुट लेख-संग्रह; प०—पत्थर गली, रतन-फाटक, काशी।

लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज—बी० ए०, एल० टी० ; प्रका०—मनन, दिल्ली का सुल्तान, योरप का रावण हर हिटलर, बालोपयोगी लगभग दो दरजन पुस्तकें; प०—अध्यापक, कान्विन ताल्लुकदार कालेज, लखनऊ।

लक्ष्मणसिंह चौहान, ठाकुर—शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; प्रका०—सौभाग्य-लाड़ला नैपोलियन और उत्सर्ग; प०—नेपियर टाउन, जबलपुर।

लक्ष्मीकांत त्रिपाठी—ज०—२७ अक्तूबर १८९८, पुखरायाँ कानपुर; शि०—प्रारंभिक कानपुर में, एम० ए० प्रयाग वि० वि०; सा०—स्थानीय हिंदी अनाथालय के प्रधान मंत्री, कान्यकुब्ज हाई स्कूल के प्रबंधक, स्थानीय ना० प्र० स० के प्रधान मंत्री; प्रका०—'पूर्ण'-संग्रह, भारतीय इतिहास के वीर और वीरांगनाएँ, नूतन हिंदी-पाठावली; संपा०—कानपुर के प्रसिद्ध पुरुष, कानपुर के विद्रोही और कानपुर का इतिहास; प०—१६/१५३ पटकापुर, कानपुर।

लक्ष्मीकांत त्रिपाठी शास्त्री—ज०—हरद्वार १९१६; शि०—सा० आ० और सा० रत्न, लखनऊ वि० वि०; सा०—लखनऊ हिंदी लेखक-संघ के संस्थापक, अ० भा० आयुर्वेद सम्मेलन के संयोजक, रेडियो पर वैद्यक और साहित्य पर वार्ता, मंत्री गृह-उद्योग सहकारी समिति लखनऊ, व्यवस्थापक मृत्युंजय फार्मेसी, संपा०—'आयुर्वेद केसरी' साप्ताहिक; अप्र०—रसगंगाधर विमर्श, हिंदी भाषा का विकास, कादम्बरी और ध्वन्यालोक पर टीकाएँ; प०—श्री मृत्युंजय-भवन, ऐबटरोड, लखनऊ।

लक्ष्मीचंद्र बाजपेयी—ज०—१९१६; शि०—कानपुर; प्रका० अन्तिम मिलन, जीवन-संघर्ष, नीला लिफाफा, रानी का रंग, युगचित्र मन की आँख; अप्र०—अगस्त ४२ की कहानियाँ, श्रीमती विश्वास, ज्वाला (गद्य काव्य); प०—लाटूश रोड, कानपुर।

लक्ष्मीदेवी नशीने—सा०—'होमिय-दिग्दर्शन' की संपा०; अप्र०—झिलमिलतारा; प०—ठि० डा० रविकिशोर नशीने, जवाहर रोड, रायपुर।

लक्ष्मीधर बाजपेयी—जा०—१८८७, मैथा (कानपुर); जा०—संस्कृत, उर्दू, अँगरेजी, बँगला, मराठी, गुजराती; सा०—महाराष्ट्र में हिंदी-प्रचार, लोकमान्य तिलक द्वारा संपा० 'मराठी केशरी' के हिंदी-

स्तंभ के संपादक, भूत० संपा०—'हिंदी केशरी' नागपुर (१९०७-८), 'आर्यमित्र' आगरा (१९१३-१६), 'राष्ट्रमत' इलाहाबाद (१९३७-३९), संचालक—तरुणभारत - ग्रन्थावली और लक्ष्मी आर्ट प्रेस, नमक-सत्याग्रह में जेल; प्रका०—भौतिक धर्मशिक्षा, गार्हस्थ्य शास्त्र, सदाचार और नीति, काव्य और संगीत, प्रेसीडेंट अब्राहमलिंकन, छत्रपति शिवाजी, हिन्दी-गद्य-निर्माण, वज्राघात, राजकुमार कुणाल, चाणक्य और चन्द्रगुप्त, हिंदी मेघदूत आदि; प०—गाँधीनगर, कानपुर।

लक्ष्मीनारायण टंडन—ज० —१२ जुलाई १९११ ; शि०—बी. ए. १९३३ और 'ला' (प्रिवियस १९३५) लखनऊ वि० वि०, एम.ए. नागपुर वि० वि० १९३९; सा०रत्न, एन०डी०; प्र०—१९४०; सा०—भूतपूर्व संपादक मासिक 'प्रकाश' और जातीय पत्र 'खत्री हितैषी', वर्तमान सहायक तथा प्रबंध संपादक पाक्षिक 'पंच परमेश्वर'; प्रका०—आलो०-हिंदी के प्रतिनिधि कवि, ध्रुवस्वामिनी : एक अध्ययन, पंचवटी : एक अध्ययन, मातृभाषा के पुजारी, यात्रा-संबंधी—संयुक्तप्रांत की पहाड़ी यात्राएँ, संयुक्त प्रांत के तीर्थ-स्थान, ऐतिहासिक लखनऊ और प्रमुख भारतीय तीर्थ-स्थान; हृदय ध्वनि (कवि), बालो०—करेलारानी, कमासुत नेवता, उड़न खटोला, मरकहे पंडित, घोड़े का सवार, उजबकसिंह, लाल बुझक्कड़, तोंद का टिकट, किराये की अम्मा, दो वीर बालक, रोगी का स्वर्ग और देश के लिए (नाटक), रचनाबोध; अप्र०—गुलबकावली के फूल, चंदा मामा, हमारे देवी-देवता, नेताओं की झाँकी, दुलारे-दोहावली-समीक्षा, भोजन ही अमृत तथा भोजन ही विष है, उपवास और चिकित्सा (प्राकृतिक चिकित्सा); वि० — १९४२ से क्षय-रोग से पीड़ित, अब रोग से मुक्त, परन्तु काम करने की शक्ति से रहित ; प०—प्रेमी कुटीर, पंजाबी टोला, राजाबाजार, लखनऊ।

लक्ष्मीनारायण दीक्षित—ज०—१९०० नेवाड़ी (इटावा); शि०—एम० ए०, सा० र० प्रयाग, आगरा ; प्रका०—स्फुट ; प०—ऐंग्लो बंगाली इंटरकालेज, प्रयाग।

लक्ष्मीनारायण दीनदयाल अवस्थी—**ज०**—देवास, १९०२; **सा०**—मध्यभारतीय हिं० सा० समिति में कार्य, 'वीणा', 'वाणी' 'हितैषी' के भूत० संपा० ; **प्रका०**—महात्माबुद्ध, कर्म, एडिसन और उनके आविष्कार, चींटी और दीमक, प्रारंभिक भूतत्व-शास्त्र, प्राण घातक कीटाणु, मधुमक्खी और उनके व्यवसाय, प्रेम सम्बन्धी रोग, काला पहाड़ (उप०), बाल-गल्पांजलि, बालवीर-गाथा, मेंढ़क, प्राणि-शास्त्र, भारतीय सर्प, सरल प्रसूति-शास्त्र, सार्वजनिक स्वास्थ्य, छुआछूत के रोग, पृथ्वी की जन्म कथा, दूध-दही, घी, बनस्पति घी, मच्छर, खटमल, जूँ, पिस्सू, मक्खी, खाज के कीड़े, कृमि, हवा, पानी, पृथ्वी, गृह- निर्माण, घरकी सफाई, मध्यभारत का भूगोल, स्वास्थ्य पुस्तक–८ भाग, नागरिक शास्त्र–८ भाग, प्रकृति-विज्ञान–८ भाग, मध्य भारत के १६ जिलों के १६ भूगोल ; **वर्त०** — मध्यभारतीय सरकार की पाठ्य योजना के विधायक ; **प०**—१३, ऊषागंज, इन्दौर।

लक्ष्मी नारायण पांडेय 'धर्मेन्द्र'—**ज०**—१ अक्टूबर १९२३, **शि०**—दारागंज हाई स्कूल प्रयाग, सा० र० ; **अप्र०**—यात्रा के अनुभव, प्रबंध-पथ-प्रदर्शक ; **प०**—लाला रामलाल अग्रवाल इंटर कालेज, सिरसा, प्रयाग।

लक्ष्मीनारायण मिश्र–**ज०**—१९०३ बस्ती, रामपुर, आजमगढ़ **शि०**—काशी विश्वविद्यालय से १९२६ में बी० ए० ; **सा०**—सैंतीसवें अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य सम्मेलन, (हैदराबाद-अधिवेशन, १९४६) के अंतर्गत साहित्य-परिषद के सभापति; **प्रका०**—अंतर्जगत(कविता१९२५),नाटक—अशोक (१९२६),संन्यासी(१९३०), राक्षस का मंदिर (१९३१), मुक्ति का रहस्य (१९३२) , राजयोग (१९३३), सिंदूर की होली (१९-३३), आधी रात (१९३६), गरुड़ध्वज(१९४५),नारद की वीणा (१९४६), वत्सराज (१९५०) दशाश्वमेध (१९५०), अशोक वन (एकांकी-संग्रह)१९५०; महाकाव्य-सेनापति कर्ण ; अनुवाद—प्रसिद्ध

नाटककार इब्सन के 'डाल्स हाउस' और 'दि पिलर्स आव सोसाइटी'; वि०— अंतर्जगत की रचना विद्यार्थी जीवन में की, अशोकनाटक इंटरमीडिएट में लिखा; अनेक ग्रंथ विश्वविद्यालयों की ऊँची कक्षाओं में स्वीकृत हैं; गाँधी अभिनंदन-ग्रंथ की सभी अँगरेजी कविताओं के अनुवादक आपही थे; नेहरू-अभिनंदन-ग्रंथ में आपका 'एक दिन' शीर्षक एकांकी प्रकाशित है; प०—क्रास्थवेट रोड, इलाहाबाद।

लक्ष्मी नारायण मूँदड़ा, 'भारतीय'— ज०—१९१७; शि०—औरंगाबाद, ग्वालिअर; सा०—आचार्य मशरूवाला और विनोबा भावे के सहयोगी, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति में कार्य, सस्ता साहित्य-मंडल की मध्यप्रांतीय शाखा और लोकोदय-प्रकाशन के भूतपूर्व संचा०, हैदराबाद में सत्याग्रह, जेल-यात्रा, मंत्री—प्रांतीय हरिजन-सेवक-संघ; वर्त०—आजकल आचार्य विनोबा भावे और दादा धर्माधिकारी के संपादकत्व में निकलने वाले 'सर्वोदय' मासिक के संपादकीय विभाग में काम करते हैं और उसके व्यवस्थापक हैं; प्रका०—स्फुट लेख; प०—बजाज बाड़ी, वर्धा।

लक्ष्मीनारायणलाल, रायसाहब—ज०—१३ मार्च १९१३; सा०—भूत० एम० एल० ए०; 'लक्ष्मीप्रेस' के संस्थापक, भूत० संपादक 'लक्ष्मी', 'गृहस्थ'; प्रका०—समुद्रयात्रा, हिंदू मुस्लिम-एकता, गीतारत्नावली, आरती, श्रीराम-हृदय, चित्रगुप्त-कथा; प०—वकील, औरंगाबाद, बिहार।

लक्ष्मीनारायण शुक्ल—ज०—१९०५ गोरखपुर; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०, सा०र० प्रयाग, लखनऊ; प्रका०—पद्यात्मक, गंगागरिमा; प०—एडवोकेट, गोरखपुर।

लक्ष्मीनारायणसिंह, 'सुधांशु'—ज०—१८ जनवरी १९०८; शि०—भागलपुर से एम० ए०; सा०—भूत० संपा०—'कुमार', 'साहित्य', 'राष्ट्रसंदेश'; अप्र०—भ्रातृ-प्रेम, गुलाब की कलियाँ, रसरंग, वियोग, काव्य में अभि-व्यंजनावाद, जीवन के तत्व, काव्य

के सिद्धांत, प०—रूपसपुर, धमदाहा, पूर्णिया।

लक्ष्मीनारायणशर्मा, 'मुकुर'—ज०—५ जनवरी १६२५; शि०—बी० ए०; अप्र०—अभियान-गीत, हरीदूब, आकाश, आलिंगन, कवि आरसी की काव्य-कला; प०—दर्गहपूर, बछवारा, मुंगेर।

लक्ष्मीनारायण, शैव्य, शास्त्री—ज०—६ फरवरी १६१९; सा०—अलीगढ़ हि० सा० परिषद व यंगमैंस यूनियन, हि० सा० स० और पंजाब की परीक्षाओं के लिए ब्रह्म विद्यालय और पेशावर में संस्कृत-छात्र संघ तथा व्यायाम शाला की स्थापना; ओकाड़ा मिल्स मजदूर यूनियन की स्थापना, राजस्थान की संस्था 'समाचार वाहिनी' का संचालन, संचा० 'क्षत्राणी' और 'क्षत्राणी-सेवा-सदन', संपा० दैनिक 'हिन्दू-संदेश' जोधपुर; प्रका०—अन्तर्वर्ती, आँख, वैद्याभिसार, कांगेस और हमारा देश, हम क्या करें, नेताशाही का नग्नचित्र; वि०—वृहत्तर राजस्थान के प्रमुख व्यक्तियों का परिचयात्मक विवरण देने वाले ग्रन्थ और 'मैथिल' मासिक के प्रकाशन का आयोजन; प०—दैनिक 'हिंदू-संदेश'-कार्यालय, जोधपुर।

लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी—ज०—१ फरवरी १६०४; शि०—एम० ए०, सा० रत्न, शास्त्री, प्रभाकर, मैनपुरी, कलकत्ता; ज्ञा०—संस्कृत बँगला, अँगरेजी; सा०—हि० सा० स० की ओर से मद्रास में हिंदी-प्रचार, सह० संपा० 'खिलौना'; प्रका०—भगवान रामचन्द्र, रमेश चन्द्र दत्त, स्वामीविवेकानंद, जगदीश चंद्र बोस, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पृथ्वीराज, नल दमयंती, फुर-फुर-फुर, भैंसासिंह, नेपोलियन बोनापार्ट, मिचौनी, रसगुल्ला, हिंदी-व्याकरण और रचना ३ भाग, भाव-विलास, रहिमन नीति दोहावली, शिवा—बावनी, भूषण—रत्नावली, भावविलास का संपा०; अप्र०—पंचतंत्र की टीका, चंद्र गुप्त मौर्य, रहीम रत्नाम्बुनिधि, नन्ददास-रत्नावली; प०—प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मधुसूदन विद्यालय इंटर कालेज, सुल्तानपुर।

लक्ष्मी निवास गनेरीवाल, राजा—ज०—१६०७ हैदराबाद;

सा०—भूतपूर्व हिंदी-प्रचार-सभा हैदराबाद, अहिंदी प्रांत में हिंदी का प्रचार; प्रका०—स्फुट; प०—सीताराम बाग, हैदराबाद (दक्षिण)।

लक्ष्मीप्रसाद मिश्र, 'कविहृदय'—ज०—१२ जनवरी १९१३; शि०—जबलपुर; प्र०—१९३४ में 'शैशव'; सा०—प्रतिनिधि 'जयहिन्द', 'शुभचिंतक', 'अमर-भारत', 'देशदूत' तथा 'कर्मवीर'; भूत० मंत्री शिक्षक-संघ, अध्यक्ष-प्रगतिशील साहित्य-संघ; प्रका०—स्फुट कहानियाँ और बालोपयोगी साहित्य; प० शिक्षक म्यूनिसिपल कमेटी, परकोटा, सागर।

लक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा'—ज०—४ अक्टूबर १८८७; जा०—अँगरेजी, संस्कृत, गुरमुखी, बँगला; सा०—१९३५ से हिंदी लेखक-संघ के सद०; १९२२ से राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया; प्र०—रैन अँधेरी; प्रका०—बंधुवियोगी, काल का चक्र, प्रेमबंधन, महिला-गायन, स्तुति-प्रबंध, साहित्यपूर्णिमा साहित्य - नागरिका, कोकिला, साहित्यिक दासविलास, प्रेमशतक; प०—रमानिवास, हटा, दमोह।

लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय—ज०—११ अगस्त १९१५, अलीगढ़; शि०—प्रारंभिक अलीगढ़ में, एम० ए०, डी० फिल०, डी० लिट० प्रयाग वि० वि०; सा०—भूत० संपा० 'साहित्य-संदेश' १९४४; प्रका०—आधुनिक हिंदी साहित्य (१८५० से १९०० तक), भारतेंदु की विचार-धारा, साहित्य-चिंतन, हिंदी साहित्य और उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि; वर्त०—अखिल भारतीय परिषद् के मुख-पत्र 'हिंदी-अनुशीलन' का संपादन; प०—प्राध्यापक हिंदी - विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।

लखनलाल मिश्र—ज०—१९११; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—ग्राम घोसी, गोनवाँ, गया।

लज्जारानी—शि०—बी० ए०, साहित्यरत्न, इलाहाबाद; सा०—सहायक संपादिका 'नवचित्रपट', प्रका०—स्फुट; प०—९२, दरियागंज, दिल्ली।

लज्जाशंकर झा, रायबहादुर, रिटायर्ड आई० ई० एस०; ज०—२८ जुलाई १८७३; शि०—सागर,

जबलपुर, बी० ए० म्योर सेंट्रल कालेज, प्रयाग; सा०—डिस्ट्रिक इंस्पेक्टर, प्रोफेसर, वाइस प्रिंसपल, ट्रेनिंग कालेज हिन्दू वि० वि० काशी; प्रका०—भाषा-शिक्षण-पद्धति, शिक्षा और स्वराज्य, आक्सफोर्ड प्रेस रीडर, साहित्य सरोज-भाग २, सरल महाभारत, प०—२६३, गोल बाजार, जबलपुर।

लल्लनप्रसाद द्विवेदी—ज०—१६२१; शि०—सा० रत्न; अप्र०—अनमेल विवाह नाटक, जवाहर; प०—श्रीकृष्ण हाईस्कूल, बरहज, गोरखपुर।

लल्लीप्रसाद पांडेय—द्विवेदी युग के लेखक; ज०—१८८६; सा०—भूत० कार्यकर्ता 'हिंदी-केसरी', कुछ समय तक 'कलकत्ता-समाचार' के सहयोगी संपादक रहे, १६१७ से २२ तक इंडियन प्रेस, प्रयाग में कार्य किया; कुछ वर्ष से 'बाल-सखा' के संपादक हैं, 'सरस्वती' के प्रसिद्ध संपा० द्विवेदीजी के कुछ वर्ष तक सहायक के रूप में रहे; भूत० प्रधान मंत्री काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा; प्रका०—रायबहादुर (उल्था), ठोकपीटकर वैद्यराज (अनुवाद); इनके अतिरिक्त लगभग दो दर्जन अनुवादित पुस्तकें और अनेक अप्र० लेख-संग्रह; प०—इंडियन प्रेस, इलाहाबाद।

ललितप्रसाद गुप्त, 'मकरंद'—ज०—१६२१; शि०—सा० वि०, बी० टी० सी०; सा०—संपा० 'झंकार', संचा० काव्य-समिति; प्रका०—आजादी के दीवाने-कवि०; अप्र०—जीवन-नौका, बदला; वर्त०—अध्यापक अग्रवाल विद्यालय, मोतीनगर, लखनऊ; प०—महमूदनगर पत्रालय, मलिहाबाद, लखनऊ।

ललितप्रसाद श्रीवास्तव—ज०—१६१६, रेवती, बलिया; शि०—सा० र०; जा—बँगला, गुजराती, महाराष्ट्री; सा०—१६३६, १६३६ में रचनात्मक कार्य, १६४० के सत्याग्रह में बंदी, ४२ में सेवाग्राम आश्रम में रहे; भूत० संपा० 'रामराज्य', संपा० 'दलित प्रकाश' साप्ताहिक; प्रका०—स्फुट; अप्र०—पुष्पा, सेवाग्राम की विभूतियाँ, अभिलाषा; प०—आर्यनगर, कानपुर।

ललिताप्रसाद सुकुल—ज०—वसंतपंचमी १६०४ ; बरार, मध्यप्रदेश ; शि०—एम० ए० हिंदी और (अँगरेजी) प्रयाग वि० वि० ; सा०—सभा० बंगीय हिन्दी परिषद कलकत्ता, अध्यक्ष हिन्दी विभाग कलकत्ता वि० वि० १६३३से; प्रका०—सुदामा चरित्र, धोखा-धड़ी, अनु०—अँगरेजी साहित्य की झाँकी, मीराबाई, सज्जाद सुंबुल ; नवकथा (योरपीय कहानियों का अनु०), संपा०—मीरा-स्मृति ग्रंथ और भारतेंदु-कला अप्र०—हिन्दी गद्य गाथा, षोडषी, मेरा दृष्टिकोण, शिक्षा-समस्या, भक्तसाधक और उपासक, कबीर-कौस्तुभ ; प०—केंट हाउस, मिशन रो एक्सटेंशन, कलकत्ता।

लाखनसिंह—ज०—१६२१; सा०—'चित्र-प्रकाश', 'उषा', 'विशाल भारत' और 'मोहनी' के संपा० ; प्रका०—हिन्दी साहित्य का सुलभ इतिहास; प०—दिल्ली।

लालचंद जैन—शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; सा०—अ० भा० दिगंबर जैन परिषद् के सभापति ; प्रका०—समय-सार का सरल अनु० ; प०—एडवोकेट, रोहतक।

लालचंद्र हितैषी (अलावलपुरी)—ज०–१० सितम्बर १६१५; शि०—पंजाब वि० वि०; सा०—१६३३ में जालंधर से 'संदेश' का संचालन-प्रकाशन; गुरुकुल काँगड़ी और 'आर्यमित्र' में कार्य, संपा०–'प्रकाश', 'आर्यावर्त' ; राजनैतिक अभियोग में ५ वर्ष का कारावास; प्रका०—गीता-गान, हितैषी के गीत, ऋषि-गान, सत्यार्थ-प्रकाश-आंदोलन का इतिहास, ६ उपनिषदों का अनुवाद; प०–आर्य-समाज, दिल्ली।

लाल जी राम शुक्ल—ज०–१७ अप्रैल १६०४; शि०—एम० ए०, बी० टी० काशी वि० वि०, १६२१ से २५ तक गांधी आश्रम में; प्रका०—बाल-मनोविज्ञान, सरल-मनोविज्ञान, बालशिक्षण, मानसिक चिकित्सा, बाल-मनोविकास, नवीन मनोविज्ञान और शिक्षा, शिक्षा-विज्ञान, चारुचिंतन, समाज-विकास ; अप्र०—अनुभव-प्रकाश, असाधारण मनोविज्ञान; प०—टीचर्स ट्रेनिंग कलेज, बनारस,

लालता प्रसाद पाठक, 'जगदीश'–ज०—१६१७; कवि-परिषद् मोठ के उपसभापति, कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्ता; प०—मोठ, झाँसी।

लालविहारी शास्त्री, 'वियोगी'—ज०—१६२१; **सा०**—बनारस और प्रांतीय हिंदू महासभा के मंत्री एवं सद०; **प्रका०**—स्फुट लेख और कविताएँ; **अप्र०**—एक उपन्यास; **प०**—रेशम कटरा, बनारस।

लालसिंह शक्तावत—ज०—१८६४; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; प्रका०—स्फुट; **सा०**—प्रतापवाचनालय के संस्थापक; प्रि० वि०—उपनिषद् साहित्य; प०—सेटिलमेंट आफिसर, उदयपुर।

लीलाधर शर्मा पांडेय–ज०—पाटिया ग्राम, अल्मोड़ा, १६८०; शि०—शास्त्री, सा० र० अल्मोड़ा, काशी; **सा०**—मंत्री अभिमन्यु पुस्तकालय काशी, संस्था० नवयुग पुस्तकालय, सद० पार्वतीय छात्र संघ काशी; **प्रका०**—भारत में समाजवाद और उसका भविष्य, महाकवि वाणभट्ट, कविशेखर, त्रिविक्रम भट्ट, कुमारिल, मृच्छकटिक का हिंदी अनुवाद; **वर्त०**—'महाशक्ति' और 'आर्य - महिला' के संपा०; **प०**—३४।२४ लाहौरी टोला, बनारस।

लूणाराम कौशिक, 'अरुण'—ज०—१६१२; **सा०**—राजस्थानी संघ बंबई का मंत्रित्व; **प्रका**—विभावरी; **अप्र०**—प्रभात संगीत; प०—भास्कर भुवन-फाणस वाडी, बंबई २।

लेखावती जैन—ज०–१६०७; सा०–अनेक उत्तम व्याख्यान दिये; पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल की भूतपूर्व सदस्या; प्रका०—अनेक सुन्दर पुस्तकें; प०—अंबाला।

लोकनाथ—ज०—२५ दिसंबर १६१५; शि०—बी० ओ० एल० और 'विद्वान' (मद्रास वि० वि०), एस० टी० सी० (बम्बई) और वर्धा; **सा०**—हिन्दी-प्रचार-सभा मद्रास की शिक्षा परिषद तथा व्यवस्थापक सभा के सदस्य; दक्षिण भारत हिंदी-पंडित परिषद् के उपाध्यक्ष, मैसूर की हिंदी-प्रचारक समिति और मैसूर शिक्षा-विभाग के नेतृत्व में स्थापित

हिंदी उपसमिति के सदस्य; भूत० संपादक 'समाज', गोरक्षा, हरिजनों के मंदिर-प्रवेश आदि के लिए संस्थाएँ बनाकर आन्दोलन किया; प्रका०—सर सी० वी० रमन की जीवनी, अहिंसा धर्म की परमावधि, गोधन, हिन्दी ग्रामर मेड ईज़ी, हिन्दुस्तानी सेल्फ टॉट, शकुंतला का चरित्र (कन्नडी कवि०); वर्त०—स्था० वर्धाशिक्षण गोष्ठी; कन्नड में भी कविताएँ और कहानियाँ लिखते हैं; प०—शांति मंदिर, उलसूर, बंगलौर।

लोकेश्वरनाथ सक्सेना, 'बालमित्र'—शि०—बी० ए०, कानपुर; प्र०—१९४६; सा०—'बाल-सेवा' सचित्र मासिक और 'बाल-सन्देश' पाक्षिक पत्र का प्रकाशन और संपादन, बाल-सेवा-सदन की स्थापना; प०—बाल-सेवा-सदन, गाँधी नगर, कानपुर।

लोचनप्रसाद पांडेय—ज०—१८८६; शि०—संबलपुर; सा०—महाकोशल इतिहास-समिति के जन्मदाता और अवैतनिक संपा०; हि० सा० स० के संस्थापन में योग, प्रान्तीय हि० सा० स० के चतुर्थ अधिवेशन (१९२१) और प्रान्तीय इतिहास परिषद के रायपुर अधिवेशन (१९३९) के सभापति, हि० सा० स० मेरठ अधिवेशन १९४८ में 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि प्राप्त की; प्रका०—दो मित्र-प्रवासी, नीति कविता, कविता-कुसुम, रघुवंश-सार, वीर भ्राता लक्ष्मण, कविता-कुसुममाला, हमारे पूज्यपाद पिता छत्तीसगढ़ भूषण हीरालाल, प्रेमप्रशंसा, छात्र-दुर्दशा, साहित्य-सेवा, चरितमाला, आनन्द की टोकनी, मेवाड़-गाथा, माधव-मंजरी, बाल-विनोद, बालिका-विनोद, महानदी, नीति-शतक का पद्यानुवाद, कृषकबाल-सखा, कोशल-प्रशस्ति-रत्नावली, कोशल-रत्नमाला, पद्यपुष्पांजलि, जीवन-ज्योति; वि०—'महानदी' खंडकाव्य पर आपको 'काव्य-विनोद' की उपाधि मिली; प०—बालपुर, रायगढ़।

वंशलोचन प्रसाद—श्रीराम-लोचनशरणजी के अनुज; ज०—१८९२; प्रका०—कहानियों का गुच्छा, व्याख्यान संबंधी कई

पुस्तकें; प०—पुस्तक भंडार, लहरियासराय।

वंशीधर—शि०—व्याकरणाचार्य; सा०—जैन धर्म के प्रचारक; प्रका०—स्फुट लेख; प०—ठि० वीरसेवा-मंदिर, सरसावा, सहारनपुर।

वंशीधर मिश्र ज०—२ जनवरी १६०२; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०; सा०—भूत० संपा० 'लोकमत', 'जन सेवक' साप्ताहिक लखीमपुर से प्रकाशित किया; राष्ट्र०—२६ वर्षों से निरंतर कांग्रेस के कार्य, राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय भाग—८ बार जेल गये, सद०—अ० भा० कांग्रेस कमेटी, प्रधान हरिजन-सेवक-संघ, प्रधान जिला किसान-संघ, सभा० युक्तप्रांत किसान-संघ, प्रधान जिला कांग्रेस कमेटी, प्रधान गांधी विद्यालय, १२ वर्षों से डि० बोर्ड के सदस्य; प्रका०—गणित-चमत्कार, सुगृहिणी, हुक्का हुवा, अजब देश, आओ नंगे रहें, हँसें-हँसाएँ; वर्त—सद० विधान परिषद दिल्ली, ह्विप उत्तरप्रदेशीय लेजिस्लेटिव असेम्बली, कांग्रेस पार्टी; प०—लखीमपुर, खीरी।

वररुचि झा 'श्री कात्यायन'—ज०—१६१५; शि०—एम० ए० (इतिहास) पटना कालेज; सा०—सह० संपा० 'राष्ट्रवाणी', 'विश्वमित्र' के संपादकीय विभाग में कार्य; कांग्रेसी कार्यकर्ता, १६४२ में जेल-यात्रा; अप्र०—जागरण, रणभेरी, राजपूत-गौरव, संध्या; प०—सभापति जिला-किसान-सभा, महेशपुर, संथाल परगना।

वसंत अनंत गर्दे—ज०—१६ दिसंबर, १६१०; शि०—बी० एस-सी० १६३२, बी० टी० १६३७, रा० भा० कोविद वर्धा १६३८, रा० भा० विशारद मदरास १६३८, सा० र० १६४५; सा०—उपप्रमुख सेवासदन हाई स्कूल १६४४ तक, प्रधान अध्यापक, शिक्षा मंत्री—हिं० प्रचार संघ, सद०—हिं० सा० सम्मे० प्रयाग की स्थायी समिति, अध्यापक–शिक्षा-शास्त्र और मनोविज्ञान; प्रका०—हिंदी मराठी अनुवाद माला भाग १, मौखिक मार्ग-दर्शिका, राष्ट्रभाषा की बातचीत (संकलित); प०—६६१, सदाशिव पेठ, पुणे २।

बसंत पुराणिक—ज०—१९१७, बरहानपुर (म० प्रां०); सा०—१९४९ में जबलपुर से 'समत' का प्रका० ; प्रका०—स्फुट रचनाएँ ; प०—ठि० हिंदी लेखक संघ, ९७ मिंट स्ट्रीट, मद्रास १ ।

बसंतलाल टोपणलाल शर्मा—शि०—आयुर्वेद महामहोपाध्याय, हिं० सा० सम्मे० के परीक्षार्थियों को अवैतनिक शिक्षा देते हैं ; प्रका०—स्फुट ।

वासुदेव उपाध्याय—ज०—१५ अप्रैल १९१० ; शि०—एम० ए० काशी वि० वि० ; सा०—कराची हिं० सा० सम्मे० में समाज शास्त्र परिषद् के सभापति, अ० भा० हिं० सा० सम्मे० प्रयाग में वर्गों के संयोजक, अध्यापक दयानंद कालेज, लखनऊ, संपा० भारतीय दर्पण ग्रन्थमाला; प्रका०—गुप्त साम्राज्य का इतिहास दो भाग, विजयनगर साम्राज्य का इतिहास, भारतीय सिक्के, भारतीय गौरव, भारत की प्राचीन ग्राम-व्यवस्था, पूर्व मध्य कालीन भारत; अप्र०—भारत की ऐतिहासिक प्रशस्तियाँ, भारतीय संस्कृति का विस्तार—२ भाग, भारतीय स्मृतियाँ, ऐतिहासिक निबंध ; इनके अतिरिक्त अनेक शोध संबंधी लेख; वि०—मंगला-प्रसाद पारितोषिक तथा बंगाल हिंदी - मंडल-पुरस्कार - विजेता ; प०—२९/१७ गनेश दीक्षित, काशी ।

वासुदेव नारायण—ज०—१९२७; प्रका०—स्फुट कविताएँ; वर्त०—उपसंपादक—'रोशनी' ; प०—गोल बगीचा, गया ।

वासुदेवप्रसाद मिश्र—ज०—२ जनवरी १९११; शि०—एम० ए० हिंदी और संस्कृत, आगरा और प्रयाग विश्वविद्यालय; सा०—सम्मेलन-परीक्षाओं के केंद्र-व्यवस्थापक; प्र०—स्वामी विवेकानंद के 'ज्ञानयोग' का बँगला से अनुवाद; प्रका०—स्फुट; अप्र०—संस्कृत-हिंदी-कोश, अवधी के गीत; प०—अध्यापक राजकीय हाई स्कूल, उन्नाव ।

वासुदेवप्रसाद मिश्र—ज०—१३ अप्रैल, १९०३ ; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी० प्रयाग और सागर वि० वि०; सा०—इंडियन ओरियंटल कानफ्रेंस और नागरी-

प्रचारिणी - सभा काशी के सदस्य; प्र०—मेघदूत और कालिदास ; प्रका०—स्फुट ; प०—वकील, होशंगाबाद ।

वासुदेवप्रसाद मेहरोत्रा—सा०—संपा० और संचा० 'महाशक्ति' उपसभापति सुहृद-साहित्य-गोष्ठी ; प्रका०—स्फुट; प०—'महाशक्ति'-कार्यालय,५/३५त्रिपुराभैरवी,काशी।

वासुदेव वर्मा—ज०—१६०३ जलालपुरजहाँ, जिला गुजरात (पश्चिमीपाकिस्तान);प्र०—१६२४; सा०—आरंभ में उर्दू पत्रों के संपादक रहे, १६३० से स्त्री-समाज के लिए उपयोगी 'शांति' पत्रिका का प्रकाशन-संचालन ; पहले यह लाहौर से प्रकाशित होती थी, बट-वारे के पश्चात् से दिल्ली में इसका कार्यालय ले आये; प्रका०—स्फुट; प० — 'शांति'-कार्यालय, आनंद पर्वत, नयी दिल्ली ।

वासुदेवशरण अग्रवाल—ज०—१६०४ ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० ; प्रका०—उरु-ज्योति; अर्वाचीन विवेचनात्मक पद्धति से संपादित किये हुए प्राचीन संस्कृत, पाली तथा अन्य भारतीय भाषाओं के ग्रंथों के संस्करण ; भारतीय संस्कृति से संबंधित ग्रंथों का लेखन और प्रकाशन; भारत की जनपदीय भाषाओं का अध्ययन और प्रका-शन; वि०—भूत० क्यूरेटर, प्राविं-शियल म्यूजियम; प०—हेवेटरोड, लखनऊ ।

वासुदेव शर्मा — प्रका० — आनंद-इंदु-विलास, गार्हस्थ्य-आश्रम, नाड़ि-विज्ञान, जयपुर का पद्यात्मक इतिहास ; प०—प्रधान अध्यापक, बदनावर, धार ।

वासुदेव शास्त्री, 'करुणेश'—ज०—१६१६ भरतपुर ; प्रका०—स्त्री शिक्षा-साहित्य, वैवाहिक आनंद संस्कार, विधवा और समाज, व्या-ख्यान रत्नमाला—४ भाग, श्लोक-पंचरत्न, शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के अणुभाष्य का अनुवाद—१ भाग; प०—अध्यापक, महाराजा स्कूल, काँकरोली, मेवाड़ ।

विंदाचरण वर्मा—ज०—१६०७; शि०—बी० एस-सी०, डिप-इन-एड० ; सा०—प्रबंध मंत्री 'सुहृद-संघ' मुजफ्फरपुर ; प्रका०—स्फुट ; प०—प्रधानाध्यापक हाई स्कूल मोतिहारी, बिहार ।

विंध्यवासिनी देवी—ज०—१६१८; **सा०**—पटना रेडियो से साहित्य पर ब्राडकास्ट; **प्रका०**—स्फुट; **अप्र०**—ज्वाला—उपन्यास; सरिता—कवितासंग्रह ; **प०**—रामभवन, दिघवारा, सारन।

विंध्याचल प्रसाद गुप्त—ज०–१६०५;शि०–साहित्य-भूषण; प्र०—गरीब किसान - कहानी, १६३७ में ; **प्रका०**—आँधी-पानी, काँटों की राह में, पकौड़ी शाह, जिंदाबाद ओ० टी० आर०, अमर हो (शिष्ट हास्य) ; **अप्र०**—बिखरे आँसू, हिमालय पर चढ़ाई आदि; प०–चनपटिया,चम्पारन।

विक्षिप्त—ज०—२० दिसंबर १६२७ (उन्नाव); शि०—एम० ए० डी० ए० वी० कालेज, कानपुर ; **प्रका०**— बौखलाहट, किनारे किनारे (प्रेस में); **अप्र०**—रावण, हिन्दी में कहानी; **वर्त०**—संचा व संपा०'आँधी-पानी', सहा० संपा—'इंकलाब'; **प०**—डबल ई० आई० आर० क्वार्टर, ब्लाक ४६ जुही, कानपुर।

विजय कुमार मुंशी—ज० २१ जुलाई १६१६; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०, आनंद कालेज धार, क्रिश्चियन कालेज इंदौर, हिंदी वि० वि० प्रयाग, आगरा; प्र०—'भेंट' १५ जून १६३६; प्र०—एक एकांत पहाड़ी पर टिमटिमाते हुए दीप से; **सा०**—आजीवन सदस्य म० भा० हि० सा० समिति, धार हि० सा० सदन में अध्यापन; **प्रका०**—साधकों के जीवन-पथ पर (संग्रह), त्याग का तीर्थ; परिवार (श्री गंगाप्रसाद शुक्ल के साथ संपादित कविता-संग्रह); **अप्र०**—स्वप्न ओ चट्टान; **वर्त०**—एडीशनल सिविल जज़ (द्वितीय श्रेणी) और मैजिस्ट्रेट (प्रथम श्रेणी) बदनावर; प०—रासमंडल, धार।

विजयबहादुर श्रीवास्तव–ज०–१६११; शि०–बी० ए०, एल०-एल० बी० ; **प्रका०**—त्रिपुरी का इतिहास; **अप्र०**—भारतीय शासन से संबंधित एक अँगरेजी ग्रंथ और दो साहित्यिक लेख-संग्रह; **प०**—१०६ नार्थ सिविंग स्टेशन, ब्यौहार बाग, जबलपुर।

विजय बाबू मिश्र—ज०—१७ सितंबर १६१७ ; शि०—

सा० वि० ; सा०—गवर्नमेंट इंटर कालेज और सनातन धर्म इंटर कालेज इटावा में अध्यापन, हिंदी साहित्य संघ इटावा, हिंदी पुस्तकालय, हिंदी विशेष-योग्यता-पाठशाला, कविसम्मेलनों, वाक् प्रतियोगिताओं, हिंदी भवन आदि अनेक संस्थाओं के संस्थापकों में ; प्रका०—स्फुट; प०—प्रधान-हिंदी संस्कृताध्यापक, सिटी हायर सेकेंडरी स्कूल, बाराबंकी ।

विजय वर्मा—ज०—१८६२; शि०—बी० ए० ; सा०—भूत० संपा० 'सहेली', संस्थापक-सहेली-संघ, 'विश्व-वाणी' के सम्पादक-मण्डल में कार्य, १६३० के आंदोलन में इनकम टैक्स की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया ; प्रका०—भारत-रहस्य, बड़े बाबू, वह युवक, अगुणी, नया कदम, जीवन-ज्योति, नये एशिया के निर्माता, नया संसार आदि ; प०—सहेली-संघ, बहादुरगंज, प्रयाग ।

विजयशंकर मल्ल, 'जयेश'—ज०—१६२१ ; शि०—एम. ए. हिंदू वि० वि० काशी, श्रेणी प्रथम, सर्व प्रथम ; सा०—अध्यापक क्वींस कालेज, अवैतनिक प्रधानाध्यापक श्री भगवानदीन साहित्य विद्यालय काशी ; प्रका०—हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद ; अप्र०—अनेक कहानियों तथा आलोचनात्मक निबन्धों के संग्रह ; प०—अध्यापक हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय, काशी ।

विजयसिंह पटेल, 'विजय'—ज०-१६०८; अप्र०-लेख, काव्य, कहानी-संग्रह; प०-रईस, भोपाल ।

विद्याकुमारी भार्गव—ज०—१६१७; शि०—जबलपुर; प्रका०—श्रद्धांजलि ; प्रि० वि०—मीरा की कविता ; प०—भार्गव-हाउस, जबलपुर ।

विद्याधर चतुर्वेदी—ज०—१६०५ गोरखपुर ; शि०—एम० ए०, एल० टी०, सा० र० ; सा०—मद्रास और आसाम में हिन्दी प्रचार, माथुर-चतुर्वेदी-पुस्तकालय के मन्त्री, सम्मेलन व प्रयाग महिलाविद्यापीठ की परीक्षाओं का प्रचार ; प्रका०—स्फुट ; वि०-प्राचीन साहित्य की खोज कर रहे हैं ; प०—सहकारी अध्यापक, हाई स्कूल, भिंड ।

विद्याधर शुक्ल, 'पतवार'—सा०—बम्बई के दैनिक 'विकास' में 'तरंगाघात' कालम में आप मनोरंजनात्मक लेख लिखते हैं; प्रका०—स्फुट; प०—दैनिक 'विकास'- कार्यालय, बम्बई।

विद्याभास्कर, 'अरुण'—ज०—६ अप्रैल १९२०, हरगोविंदपुर (गुरुदासपुर, पंजाब); शि०—एम० ए० (हिंदी), शास्त्री; प्रका०—वीरकाव्य और कवि (१९४५), निशांत—कविता-संग्रह (१९४७), गद्य-मंजरी—संपादित (१९४८), प्रबंध-पीयूष (१९५०), पद्य-पद्मिनी—संपादित (१९५०); अप्र०—सबेरा और खामा, आधुनिक हिंदी साहित्य; प०—प्राध्यापक, राजकीय कालेज, लुधियाना (पंजाब)।

विद्याभास्कर शुक्ल—ज०—१९१०; शि०—एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, पी० ई० एस० लखनऊ, मध्यप्रांत और अयोध्या; सा०—हाईस्कूल बोर्ड की हिंदी कमेटी, बाटनी, जुआलोजी, एग्रीकलचर आदि कमेटियों तथा नागपुर विश्वविद्यालय की बोर्ड आफ स्टडीज इन बाटिनी, फैकल्टी आव साइंस के सदस्य, स्था० कालेज आव साइंस हिंदी साहित्य-समिति, नागपुर; प्रका०-मेरे गुरुदेव(अनु०), श्रीरामकृष्ण-लीलामृत, शिकागोवक्तृता, श्रीरामकृष्ण-वचनामृत, परिव्राजक-भक्तियोग, विज्ञानप्रवेशआदिअनेकअनुवादित, मौलिक तथा वैज्ञानिक ग्रंथ और कई अप्र० लेख-संग्रह; वि०—अध्ययन के समय आपने'रुचि राम साहनी प्राइज'आदि अनेक पारितोषिक तथा छात्रवृत्ति पायी, आपने 'फासिस प्लांट्स' वैज्ञानिक आविष्कार में भी यथेष्ट प्रयत्न किया है तथा कई वर्ष से अब तक रिसर्च में संलग्न रहे; प०—एसिस्टेंट प्रोफेसर आव बाटिनी, कालेज आव साइंस, नागपुर।

विद्याभूषण अग्रवाल—शि०—एम० ए०, एल० टी०; सा०—कई साहित्य-परिषदों के जन्मदाता, मथुरा हिंदी सा० परिषद के भूत० मंत्री, व्रज सा० मंडल के कार्यकर्ता; प्रका०—बिजली-चमत्कार; अप्र०—शिक्षा-शास्त्र; प०—शंभूदयाल इंटर कालेज, गाजियाबाद, मेरठ।

विद्याभूषण, 'विभू'—ज०—४ दिसम्बर १८८२; शि०—एम० ए०, ए० टी० सी०, बी० ए० भूगोल, सा० र०, एफ० आर० जी० एस० (लंडन); सा०—हि० सा० स० की भूगोलसमिति के सद०; प्रका०—चित्र कूटचित्रण, सुहराब और रुस्तम बिरजानंद-विजय, पद्य-पयोनिधि, ज्योत्स्ना, लाल खिलौने, खेलो भैया, गुड़िया, ढपोर शंख, गोबर गणेश, शेख चिल्ली, लाल बुभक्कड़, लाल राष्ट्रीय राग—३ भाग; अप्र०—पुरन्दर पुरी, चंदा (पद्य), मेरी कहानी, पृथ्वी का परिधान, अपूर्ण-पंख शंख, देवर्षि दयानंद (महाकाव्य); प०—अध्यापक डी. ए० वी० हाई स्कूल, इलाहाबाद।

विद्यावती कोकिल—ज०—१९१४; शि०—प्रयाग; सा०—भूतपूर्व संपादिका —'ज्योति'; प्रका०—अंकुरिता, माँ; प०—ठि० श्रीत्रिलोकीनाथ सिनहा, एम० ए०, एल० टी०, सहायक मंत्री, कायस्थ पाठशाला, प्रयाग।

विनयमोहन शर्मा—ज०—१७ जुलाई १९०६; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० काशी वि० वि०; सा०—१९२८ से ३० तक 'कर्मवीर' के सहा० संपा०, १९४० तक 'राज्य' के संपादकीय विभाग में; प्रका०—भूले गीत, साहित्य-कला, कवि प्रसाद: आँसू तथा अन्य कृतियाँ, अनूदित—गृहशास्त्र, शरीर-विज्ञान, आरोग्य-शास्त्र; वि०—आपका असली नाम शुकदेव प्रसाद तिवारी है; 'वीरात्मा' नाम से भी कविताएँ लिखते हैं; प०—प्राध्यापक, हिंदी विभाग, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।

विनोदशंकर व्यास—सा०—भूतपूर्व संपादक और संचालक पाक्षिक 'जागरण', 'आज' के संपादकीय विभाग में काम किया; प्रका०—मधुकरी-दो भाग, कहानी—एक कला, विदेशी पत्रकार, प्रसाद जी की उपन्यास-कला; प०—मान-मंदिर, बनारस।

विपिन कुमार—सा०—भूत० संपा० 'कर्मवीर', 'आगामीकल'; प्रका०—स्फुट; प०—सहायक संपादक 'जनशक्ति', राष्ट्रीय प्रेस, इटारसी।

विपिनविहारी त्रिवेदी—शि०—एम० ए० कलकत्ता विश्वविद्या-

लय ; सा०—कलकत्ते की साहित्यिक संस्थाओं से घनिष्ट संबंध रहा; प्रका०—स्फुट आलोचनात्मक और गवेषणात्मक लेख ; वि०—डी० लिट्० की उपाधि के लिए 'पृथ्वीराज रासो' के संबंध में थीसिस प्रस्तुत कर दी है ; प०—प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

विपिन विहारी वर्मा—ज०—२६ फरवरी १८६२ ; शि०—बार-ऐट ला० ; सा०—प्रबंधक बेतिया राज्य, राज्य की ओर से कवि-सम्मेलनों के आयोजक, पुरस्कार-वितरण-कर्त्ता, महाराजा नवल किशोर साहित्य-परिषद् के संरक्षक, राज्य की ओर से २०००) का पुरस्कार विहार प्रान्तीय हि० सा० स० के तत्वावधान में दिये जाने की घोषणा की है ; प०—बेतिया, चंपारन।

विमलारानी—ज०—१४ अगस्त १६२२ ; शि०—बी० ए०—आगरा विश्वविद्यालय ; प्रका०—अनुराग—कहानी-संग्रह; अप्र०—दो गद्यगीत-संग्रह ; प०—ठि० कुँवर शीलेंद्रसिंह, एम०ए०, एल-एल० बी०, अलीगढ़।

विलास गयासपुरी—शि०-सा० रत्न ; प्र०—१६४५ ; प्रका०—स्फुट लेख ; अप्र०—ग्रामगीतों का संग्रह, वीथिका, जिन्हें भूल न सका ; प०—फतहाबाद, मुजफ्फरपुर।

विश्वंभरनाथबाजपेई,'व्रजेश'-ज०—१६१२ उन्नाव ; प्रका०—उल्का, रेखा ; प०—फिजीशियन ऐंड सर्जन, बड़वाहा, मध्यभारत।

विश्वंभरनाथ मेहरोत्रा—शि०—एम० ए० प्रयाग विश्वविद्यालय ; सा०—प्रयाग की साहित्यिक संस्थाओं से घनिष्ट संबंध ; प्रका०—नंददास का भँवर गीत (संपादित) तथा स्फुट आलोचनात्मक लेख ; वि०—प्रयाग विश्वविद्यालय में रिसर्च स्कालर रहकर पर्याप्त समय तक अनुसंधान कार्य किया ; प०—हिंदी अध्यापक, सरस्वत खत्री पाठशाला हायर सेकेंडरी स्कूल, इलाहाबाद।

विश्वंभरप्रसाद गौतम—ज०—१८६८ कटनी, जबलपुर; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी, सा० र०,

प्रयाग, नागपुर ; सा०—म्यूनीसिपिल कमेटी कटनी के सभापति, उत्तरी विभाग सहकारी-संघ के सभापति, डिस्ट्रिक्ट कौंसिल जबलपुर के सदस्य, और महाकौशल कांग्रेस कमेटी के सदस्य ; प्रका०—शिशुबोध (पद्य), हिंदुस्थान का इतिहास ; प०—वकील, जबलपुर।

विश्वंभरप्रसाद शर्मा—ज०—१९९३ ; सा०—भूत० संपा० 'माहेश्वरी', 'आर्यकुमार', 'विकास,' 'नव भारत'; संपा—'आलोक', भूत० मंत्री-आर्यसमाज सहारनपुर, हिन्दी-प्रचार के लिए संस्थाओं की स्थापना, १९४१ में राज-द्रोह में ६ मास कारावास, हिन्दी सा० सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य, 'गृहिणी' मासिक का संचालन किया ; प्रका०—महारथी लाजपतराय, नारी-जागरण, गृहस्थादर्श, आर्य-समाज और राजनीति, राष्ट्र-पिता का बलिदान, राष्ट्रनिर्माता जमनालाल बजाज ; प०—'आलोक'-कार्यालय, गीता ग्राउंड, सीताबार्डी, नागपुर।

विश्वंभर, 'मानव'—ज०—२ नवंबर १९१२ ; शि०—एम० ए०, सनातनधर्म कालेज, कानपुर, आगरा वि० वि० में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया ; सा०—कलाकार-संघ की स्थापना में प्रयत्नशील; प्रका०—शेफाली, अवसाद, निराधार, सोने से पहले, खड़ी बोली के गौरव ग्रंथ, महादेवी की रहस्य-साधना, हमारे कवि, कामायनी की टीका ; प०—साहित्य-परामर्श दाता, किताब-महल, इलाहाबाद।

विश्वंभरसहाय, 'प्रेमी'—ज०—१९००; सा०—संस्था० प्रेमी प्रिंटिंग प्रेस, संपा०—'पंचायती राज', सद० स्थायी समिति हिं०सा०स०; प्रका०— अनाथ अबला, अभागिनी कमला, सम्राट अशोक, हर्ष, रामजीवनी, दयानंद जीवनी, प्रगतिशील आर्य, क्रांति चिरंजीवी हो ; प०—बुढ़ाना दरवाजा, मेरठ।

विश्वनाथ जोशी—ज०—१९१६, लक्ष्मणगढ़, सीकर ; शि०—सा० र०, आयुर्वेदाचार्य ; प्रका०—स्फुट ; अप्र०—ध्वन्यालोक (अनु०) ; प०—प्राध्यापक सेकसरिया कालेज, नवलगढ़, (जयपुर)।

विश्वनाथ तिवारी—**ज०**—१ जनवरी १६१४ ; **शि०**—एम० ए०, सा० र०, सा० लं० लखनऊ; **सा०**—प्रचार-मंत्री देवरिया जनपद साहित्य सम्मेलन, मंत्री खेतान सार्वजनिक पुस्तकालय पडरौना, 'आज', 'संसार', 'लीडर' के संवाददाता, तुलसी सा० विद्यालय के संचालक, काँग्रेस के कार्यकर्ता, कस्तूरबा-कोष-समिति के सदस्य, भ्रष्टाचार-विरोध में जेल; **प्रका०**—बलिया का नवीन भूगोल, प्राकृतिक भूगोल; **प०**—प्राध्यापक सतीशचंद्र कालेज, बलिया।

विश्वनाथप्रसाद—**ज०**—२० अगस्त, १६०५; **शि०**—एम०ए० (संस्कृत, हिंदी), सा० आ०, सा० र०, बी० एल०, पटना विश्वविद्यालय; **सा०**—सारन जिले के द्वितीय हिंदी सा० सम्मेलन के सभापति ; बिहार प्रां० हिं० सा० सम्मे० के मंत्री १६३८-४० ; अब इसके सदस्य, पटना विश्वविद्यालय के संदर्भ ग्रंथों के संपादक-मंडल के सदस्य, अनेक उच्च परीक्षाओं के परीक्षक, छपरे की सुविख्यात संस्था श्रीशारदा नाट्य-समिति तथा श्रीशारदा नवयुवक समिति के जन्मदाताओं और कर्णधारों में, हिन्दुस्तानी पारिभाषिक कोश तैयार करने के लिए बिहार सरकार द्वारा नियुक्त उपसमिति के सदस्य ; **प्र०**—१६२५ ; **प्रका०**—मोती के दाने—कवि० ; **अप्र०**—विविध लेख पत्र-पत्रिकाओं और अभिनंदन-ग्रंथों में प्रकाशित, इँगलिस्तान से डाक्टरेट की उपाधि लेकर अभी लौटे हैं ; **प०**—अध्यापक, हिंदी विभाग, पटना कालेज, पटना।

विश्वनाथप्रसाद मिश्र—**ज०**—१६०६ ब्रह्मनाल-काशी ; **शि०**—एम० ए०, सा० र० काशी, प्रयाग; **सा०**—भगवानदीन विद्यालय में लगभग १७ वर्ष तक बिना शुल्क अध्यापन, भूतपूर्व संपादक 'वर्णाश्रम', 'सनातन धर्म' ; **प्रका०**—हिंदी में बाल-साहित्य का विकास, काव्यांग-कौमुदी तृतीय भाग, पद्माकर-पंचामृत, बिहारी की वाग्विभूति, रानियाँ, बुद्धमीमांसा, हम्मीर-हठ, रसिकप्रिया की टीका, काव्य-निर्णय की टीका, गीतावली की व्याख्या, प्रेमचंदजी की कहानी-

कला, रसमीमांसा और मानस-टीका (अप्रकाशित); प०—हिंदी अध्यापक, काशी विश्वविद्यालय, काशी।

विश्वनाथ मुखर्जी—ज०—१६२३ काशी; सा०—संस्थापक किरण-साहित्य-मंडल, 'किरण' और पुस्तकालय; **प्रका०**—स्फुट लेख; प०—किरण-साहित्य-मंडल, सिद्गीर बाग, बनारस।

विश्वनाथ राय—ज०—१६०६; **शि०**—एम० ए०, एल-एल० बी०; **प्रका०**—भारत में म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्टबोर्ड का विकास, मिश्र की स्वाधीनता का इतिहास, चीन की राज्य क्रांति, ग्राम्य अर्थशास्त्र, मुसलिम लीग का षड्यन्त्र, प्रेम के आँसू, मायावी संसार, विनाश की ओर, महात्मा गांधी, हिटलर, नेपोलियन, टाल्सटाय, महाराणा प्रताप, शिवाजी, समर्थ गुरु रामदास, राजेंद्रप्रसाद; प०—अध्यापक डी० ए० वी० कालेज, काशी।

विश्वनाथ शर्मा—शि०—सा० र०; **सा०**—भूतपूर्व संपादक 'देव-धर्म', संस्थापक–राकेशमंदिर; **प्रका०**—साध, मरमे रोशन; **अप्र०**—अनुभूति, चिनगारी और पतझड़ के गीत, सांध्य-प्रदीप (कहा०सं०); प०—'राकेश'-संपादक, चुरू, राजस्थान।

विश्वनाथ शुक्ल—सा०—संपा० 'आलोक' कोरिया राज्य, बैकुंठपुर में हिंदी-प्रचार; **अप्र०**—मृच्छकटिक का अनुवाद; प०—हिंदी अध्यापक, गवर्नमेंट हाई स्कूल, बैकुंठपुर, खुरगुजा।

विश्वप्रकाश—ज०—१६०७; **शि०**—बी० ए०, एल-एल० बी०, प्रयाग वि० वि०; **सा०**—संपादक—'वेदोदय', 'चमचम'; **प्रका०**—बालोपयोगी—सिंधबाद जहाजी की कहानी, छत्रपति-शिवाजी, गुलगुल तुरही, चंद्र-खिलौना, परी रानी, बाल नाट्य-शाला, महात्मा गांधी, महिलोपयोगी—स्त्रियों के रिश्ते, विधवाओं का इंसाफ, नवीन पाक-विज्ञान, महिला-सत्यार्थ-प्रकाश; **उप०**—हृदय के आँसू, नील-संगिनी, सुहाग का सिंदूर, महात्मा नारायण की जीवनी, दिव्य-प्रभा, भगवत्गीता का अनुवाद; प०—कला-प्रेस, प्रयाग।

विश्वप्रकाश दीक्षित, 'बटुक' —ज०— २० जूलाई १९१९; शि०—सा० र०; सा०—सत्याग्रह में कारावास, निश्चय पर दृढ़ रहे, 'रामराज्य' की नीति के कारण नजरबन्दी, भूत० संपा०— 'विश्वबंधु' लाहौर, 'रामराज्य' मेरठ; प्रका०—प्रतिच्छाया (होमवती देवी और कृष्णचन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के साथ), क्षितिज; अप्र० — क्रुद्ध रक्त, पंचपात्र; प०—ठि० पं० श्रीनिवास शर्मा, ग्राम चन्दसारा, डा० खरखोदा, मेरठ।

विश्वबंधु शास्त्री— शि०— एम० ए०, एम० ओ० एल०; सा०—डी० ए० वी० कालेज, लाहौर के अनुसंधान और ग्रंथ-प्रकाशन के भूत० अध्यक्ष; प्रका०— अथर्वप्रतिशाख्य, आर्योदय, वेदसंदेश-चार भाग, वेदसार; इनके अतिरिक्त अनेक सुन्दर संपादित पुस्तकें; वि०—आप वेदों के सर्वांग-सम्पूर्ण विश्वकोश के संपादन-प्रकाशन में लगे हैं; यह ग्रंथ लगभग बीस हजार पृष्ठों का है; प०— अध्यक्ष, विश्वेश्वरानंद वैदिक अनुसंधानालय सभा, शिमला।

विश्वमोहनकुमार सिंह— ज०— १९०० ; शि०— एम० ए०; प्रका०—कई स्फुट लेख, कहानियाँ, दो अप्र० उपन्यास; प०— प्रिंसिपल, चन्द्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगा।

विश्वमोहन सिनहा—ज०— माधोपुर (सारनाथ); शि०— एम० ए०; सा०—भूत० संपा० 'पारिजात', सहा० संपा० 'प्रदीप'; प्रका०—स्फुट; प०—सोशलिस्ट पार्टी, बाँकीपुर, पटना।

विश्वानंद—शि०—एम०ए०, बी० एल०, गुरुकुल वैद्यनाथ धाम और हिंदू वि० वि० काशी पटना वि० वि०; सा०—संस्था० मित्रमंडल पुस्तकालय, खगड़िया; संपा०-'शांति-संदेश'; प्रका०— स्फुट; प०—अध्यक्ष हिंदी-विभाग, कोशी कालेज, खगड़िया, मुंगेर।

विश्वेश्वरनाथ रेउ—ज०— १८९० जोधपुर; १९४२ ई० में शासन-विभाग की ओर से 'महामहोपाध्याय' की उपाधि पायी; सा०— चार वर्ष तक इतिहास-

कार्यालय में काम किया; संस्कृत के प्रोफेसर तथा जोधपुर के पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष भी रहे; प्रका०—भारत के प्राचीन राजवंश, राजा भोज, राष्ट्रकारों का इतिहास, मारवाड़ का इतिहास, मेवाड़गौरव, राठौर-गौरव, विश्वेश्वर-स्मृति, शैव-सुधाकर (अनुवाद), कृष्ण-विलास और वेदांत-पंचक (संपादित), ढोला-मारवाड़, शिवरहस्य, शिवपुराण तथा कृष्णलीला आदि; वि०—कई पुस्तकों पर इन्हें पुरस्कार भी मिला है; प०—जोधपुर।

विश्वेश्वरनारायण 'विजूर'—ज०—१६१४; शि०—बंबई और मद्रास विश्वविद्यालय; जा०—कन्नड़, कोंकडी, मराठी, गुजराती, हिंदी, अँगरेजी, अर्धमागधी, तैलंगी तथा संस्कृत; प्रका०—स्फुट; अ्प्र० वि०—अक्षरकला, चित्रलिपि; प०—अध्यापक गणपति हाई स्कूल, मंगलौर।

विष्णुकुमारी श्रीवास्तव, 'मंजु'—ज०—मुरादाबाद; शि०—सा० र० प्रयाग; सा०—३ वर्ष तक राजकुलारी सनातन-धर्म कन्या विद्यालय कानपुर में आचार्य, अब उक्त विद्यालय की मंत्राणी, भूतपूर्व संपादिका—'स्त्रीदर्पण'; प्रका०—मीरापदावली, फुलझरी, दुखिया दुलहिन; प०—'मंजु-निलय', नवाबगंज, कानपुर।

विष्णुदत्त पोडियाल वैद्य—प्रका०—स्फुट; प०—गली पटवान, टालू बाजार, भिवानी, हिसार।

विष्णुदत्त मिश्र, 'तरंगी'—सा०—स्थानीय हिंदी-प्रचार-समिति के अध्यक्ष; प्रका०—स्फुट; प०—६२ रामनगर, नयी दिल्ली।

विष्णु प्रभाकर—ज०—२१ जून १६१२; शि०—बी० ए०, प्रभाकर; सा०—सम्पादक 'मानव धर्म' (मातृभूमि-अंक); हिसार में हिंदी-प्रचार-कार्य, सभापति हि० सा० मण्डल दिल्ली, सदस्य प्रांतीय हि० सा० सम्मेलन की कार्यकारिणी, प्रांतीय प्रगतिशील लेखक-संघ, इंडिया जर्नल ऑव वर्ल्ड अफेयर्स; प्रका०—आदि और अन्त, इन्सान, रहमान का बेटा; अप्र०—निशिकांत, सफर के साथी, ढलती रात, क्रांति; प०—डाकपेटी नं० १६७, दिल्ली।

विष्णुप्रसाद व्यास—ज०—१६२६ शिवपुरी (ग्वालियर); शि०—बी० ए० तक स्थानीय विक्टोरिया कालेज में; एम० ए० (आनर्स, हिंदी) १६४८ में काशी वि० वि०; सा०—भूत० संपा० साप्ताहिक 'जीवन' और 'प्रजापुकार', 'सन्मार्ग' के काशी वि० वि० से प्रतिनिधि, दैनिक 'नवप्रभात' और साप्ताहिक 'मंगलप्रभात' के भूत० सहा० संपा०; प्रका०—स्वास्थ्य-स्वच्छता और समाज-सेवा; प०—उपसंपादक , साप्ताहिक 'मध्यभारत-संदेश', ग्वालियर।

विष्णुराम सनावद्या, 'सुमनाकर'—ज०—१६१२ ; शि०—हिं० रत्न, सा० मनीषी ; प्रका०—सुविचार-दिवाकर ; प०—संतोष-कुटीर, ऊन, होलकर राज्य।

विष्णुशरण, 'इन्दु'—ज०—७ जूलाई १६२३ ; सा०—मेरठ जनपद हि० सा० सभा के प्रधान मन्त्री ; प्रका०—स्फुट ; प०—२२३ दामोदर बिलडिंग, सराय लालदास, मेरठ।

वी. डी. ज्ञानी—ज०—बरहानपुर (म० प्रां०) ; शि०—बी० एस सी०, एल-एल० बी०; सा०—मद्रास में हिन्दी-प्रचार ; प्रका०—स्फुट रचनाएँ ; प०—प्रधान अध्यापक, शुद्धाद्वैत वैष्णव हाई स्कूल, मद्रास।

वी० पी० वर्मा, 'भरसरी'—ज०—१६१५; जा०—उर्दू, बँगला, मराठी ; प्रका०—स्फुट कहानियाँ; प०—भरसर, बलिया।

वीरसिंह जू देव, (महाराज बहादुर सवाई महेंद्र)—ज०—१६ अप्रैल १८६६ ; शि०—इन्दौर, राजकोट ; सा०—के० सी० एस० आई० ओरछा नरेश ; वि०—आप का दो हजार रुपए का 'देव-पुरस्कार' प्रतिवर्ष सर्वश्रेष्ठ काव्य ग्रन्थ पर दिया जाता है, स्वयं भी अनन्य हिंदी-भक्त और कवि हैं ; प०—ओरछा।

वीरहरि त्रिवेदी—सा० र०, प्रभाकर ; ज०—१६०७ सागर ; शि०—हिन्दू कालेज अमृतसर और देहली ; जा०—उर्दू, गुजराती, बँगला ; सा०—सम्मेलन परीक्षार्थियों को निःशुल्क शिक्षा ; प्रका०—झाँसी की रानी (नाटक), निर्मल नीति-निकुंज, स्वरोदय

ज्ञान, चाणक्य-नीति; प०—काटन ट्रेडिंग कंपनी, देवनगर, कानपुर।

वीरेंद्रकुमार—ज०— जून १६१८; शि०—एम० ए०, डी० फिल० प्रयाग वि० वि० प्रथम श्रेणी सर्वोच्च स्थान प्राप्त, डी० फिल की थीसिस 'लार्ड हार्डिंज का शासनकाल' पर थी; सा०—हिंदी-प्रचार और देशकी सांस्कृतिक उन्नति के लिए दूर देश चीन में चीनी विद्यार्थियों को राष्ट्रभाषा-शिक्षा देने में ३ वर्षों से प्रयत्नशील हैं; अप्र०—हिंदी की पाठ्य पुस्तकें; प०—नेशनल कालेज आफ ओरियंटल, स्टडीज़, सन यै लू, चीह ट्रस्ट लिन, नानकिंग, चीन।

वीरेंद्रकुमार–शि०—बी० ए०; प्रका०—आत्मपरिणय - कहानी; अप्र०—दो कहानी और कविता-संग्रह; प०—इंदौर।

वीरेंद्रनारायण—ज०—भागलपुर; शि०—बी० एस-सी० पटना वि० वि०; सा० — पहले 'राष्ट्र-वाणी' के संपादक-मंडल में थे, अब 'नयी धारा' के उप-संपादक हैं; प्रका०—स्फुट एकांकी और कहानियाँ; प०—'नयी धारा'-कार्यालय, पटना।

वीरेंद्रपाल सिंह—ज०—१५ मार्च १६२० एटा; शि०—सा० र० लाहौर, प्रयाग; सा०—साप्ताहिक पत्र 'वीरभूमि' के जन्मदाता तथा संपादक, भूत० संपा० 'सुधाकर'; प्रका० — बाल-पद्यावली, रचना-प्रबोध; अप्र०—गोशाला (पद्य), जमुना किनारे, राजपूताने की मुद्रा; प०—आर्य-समाज भवन, उदयपुर।

वीरेंद्र विद्यार्थी–ज०–१८६४; शि० — बी० ए०, एल० टी०; प्रका०—स्फुट लेख तथा कविताएँ; प० — अध्यापक पृथ्वीनाथ हाई स्कूल, कानपुर।

वीरेंद्रसिंह चौहान— ज० — १६१६ फरुखाबाद; सा०—संचालक 'अमर ज्योति'; रचनात्मक कार्यों में संलग्न, राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस व जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य, संयुक्त मंत्री जयपुर राज्य प्रजा-मंडल; प्रका०—स्फुट लेख; प०—प्रजामंडल - कार्यालय, जयपुर।

वृंदावनलाल वर्मा—ज०—१८६० मऊरानीपुर; शि०—बी०

ए०, एल-एल० बी०; प्रका०—उपन्यास—लक्ष्मीबाई, कचनार, मुसाहिबजू, अचल मेरा कोई, कुंडलीचक्र, कभी न कभी, प्रेम की भेंट, प्रत्यागत, हृदय की हिलोर, माधव जी सिंधिया, सत्रह सौ उन्नीस, आनंदघन, राणासाँगा, टूटे काँटे; नाटक—राखी की लाज, झाँसी की रानी, काश्मीर का काँटा, फूलों की झोली, बाँस की फाँस, लो भाई पंचों लो, पीले हाथ, मंगल मोहन, कब तक, नीलकंठ, सगुन, पायल, जहाँदारशाह; कहानी-हर सिंगार, दबे पाँव, कलाकर का दंड; प०—मयूर प्रकाशन, मनिक चौक, झाँसी।

वृंदावन विहारी— ज०—१६११; शि०—पटना विश्व वि०; सा०—सहा० मंत्री आरा साहित्य मडंल, पटना आ० इ० रे० स्टेशन से रुपक ब्राडकास्ट करते हैं; प्रका०—मधुवन, आकांक्षा (उप०), लालचंद (उप०), अनन्त श्री कामता सखी(आलो०); प०—शिक्षक टाउन स्कूल, आरा।

वेंकटेश चंद्र पांडेय, 'कवि कोल्हू'— ज०— २५ जूलाई १६१६ बरेली; शि०— एम० ए० (हिन्दी और इतिहास) आगरा वि० वि०; सा०—पीलीभीत में हिन्दी साहित्य परिषद् के संस्थापक, सद०कवि मंडल, सुहृद-गोष्ठी, हि० प्रचार-सभा, अलीगढ़; प्रका०—चप्पल, मेरा टामी; प०—गवर्नमेंट हाई स्कूल, अलीगढ़।

वेंकटेश शर्मा, 'प्रभात'—ज०—१६२४; शि०—एम० ए०, सा० र०, जोधपुर, आगरा वि० वि०; सा०—हि०सा० सम्मेलन परिक्षाओं के केंद्रों और साहित्य-गोष्ठियों के आयोजन द्वारा हिंदी-प्रचार; प्रका०— तुलसी-वंदना, डिंगल-साहित्य की महत्ता, गांधी-गरिमा, क्रान्तिदधि, हिदी-पद्य-संग्रह और गद्य-चयनिका (टीका), आदर्श महापुरुष, प्रतिभा, एकांकी-सुषमा, प्रतिशोध और प्रतिज्ञा (निष्कर्ष); अप्र०—अर्चना; प०—हिंदी अध्यापक, उम्मेद हाई स्कूल, जोधपुर।

वेणीप्रसाद शर्मा — ज०—१६०८; प्रका० — पावनगिरि भजनावली, सत्यनारायण कथा;

प०— शांति-कुटीर, खाचरोट, ग्वालियर।

वेणीमाधव शर्मा — ज०— काशी १९१७ ; शि०—बी० ए०, बी० टी० ; **सा०**—अमर-भारती-प्रेस के सम्पादक; **प्रका०**—हमारा हिन्दी-साहित्य ; प०— अमर भारती प्रेस, काशी।

वेणुकुमारी शुक्ल—शि०— बी० ए०, एल० टी लखनऊ वि० वि० ; **प्रका०**—स्फुट कहानियाँ; **अप्र०**—पहचाना नहीं ; प०— कैंट रोड, देहरादून।

वेदरत्न, सरदार—सा०— हिंदी प्रेमी, मद्रास धारा सभा के सदस्य, तामिलनाड हिन्दी-प्रचार-सभा के अध्यक्ष ; प०— वेदारण्यम, तंजौर।

वैंकट राव प्रख्या—ज०— मध्यप्रांत ; शि०—बी० ए०, सा० रत्न ; जा० — अँगरेजी और तेलुगु (मातृभाषा) ; **सा०**—हिंदी लेखक-संघ मद्रास के भूत० प्रधान मन्त्री, 'छत्तीसगढ़ केसरी' के वर्त० सम्पा० विभाग में ; **अप्र०**— स्फुट रचनाएँ ; प०—ठि० हिंदी लेखक-संघ, ६७ मिंट स्ट्रीट, मद्रास १।

वैदेहीशरण दुबे—ज०-१८९६; शि०—शास्त्री ; **सा०**—कांग्रेस के कार्यकर्ता, गाँधी जी के रचनात्मक कार्य का अनुशीलन ; प्रका०— वैदेही विहंगम, गीता-बोध, सीता-वनवास ; प०—दिघवालिया, कचनार, सारन।

व्योहार राजेंद्रसिंह—ज०— १९०० ; शि०– मिडिल १९१०, मैट्रिक १९१८, इंटर रावर्टसन कालेज, असहयोग में १९२० में कालेज छोड़ा ; **सा०**-१९२० में राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश, छात्र-संघ के मन्त्री १९२२ तक, प्रांतीय धारा सभा के सदस्य १९२७ में, विदेशी-वहिष्कार-आंदोलन के मंत्री, ग्राम-उद्योग-संघ के सदस्य, जबलपुर सेंट्रल बैंक के मन्त्री और वर्तमान सभापति ; १२ वर्ष तक डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के सदस्य ; १९३२ में स्काउट असोसिएशन के मन्त्री, १९३३ में महाकोशल हरिजन सेवक-संघ के सभापति, धारा सभा के कांग्रेसी सदस्य—३ बार, जबलपुर साहित्य-संघ के सभापति १९३४ से १९५०, १९३८ में धारा

सभा से स्तीफा, १९४० में जेल-यात्रा, हिंदी साहित्य सम्मेलन के रायपुर अधिवेशन के सभापति, १९३९ में त्रिपुरी कांग्रेसी के उप-सभापति और प्रदर्शनी-विभाग के सभापति; १९४२ में गाँधी-आश्रम की स्थापना, १९४६ में 'युगारंभ' के सम्पादक, १९४८ में मध्यप्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के मेरठ अधिवेशन में समाजशास्त्र-परिषद के सभापति; प्रका०—ग्राम-सुधार-१ भाग, ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार, तुलसीदास की समन्वय-साधना (इस पर गोयल-पुरस्कार मिला जो साहित्य-संघ जबलपुर को दिया), नक्षत्र, मानस-सुधा, सप्तश्लोकी गीता, मौन के स्वर, त्रिपुरी का इतिहास; अप्र०—अर्थशास्त्र के सिद्धान्त, समालोचना के सिद्धांत, गांगेय कर्ण, तुलसी और कालिदास आदि; प०—साठिया कुआँ, जबलपुर।

व्रजकिशोर, 'नारायण'—ज०—१९१८; शि०—बी० ए०, लाहौर; सा०—भूत० हिंदी प्रोफेसर महिला कालेज गुजरांवाला, भूत० सम्पादक 'हिंदी मिलाप' लाहौर, 'लोकमान्य' कलकत्ता, 'दैनिक हिन्दुस्तान' बम्बई, अब बिहार सरकार के वयस्क शिक्षा-विभाग की मुखपत्रिका 'रोशनी' के प्रधान संपा०; प्रका०—सिंहनाद, आज का प्रेम, यशस्विनी; अप्र०—अनारकली, लक्ष्य; प०—'रोशनी'-कार्यालय, शिक्षा समिति बिहार सरकार, पटना।

व्रजकिशोर मिश्र—श्रीकृष्णबिहारी मिश्र के सुपुत्र; शि०—एम० ए० प्रयाग विश्वविद्यालय; सा०—लखनऊ और सीतापुर की प्रमुख साहित्यिक संस्थाओं के कार्यकर्त्ता, भूतपूर्व प्राध्यापक हिंदी-विभाग, कान्यकुब्ज कालेज, लखनऊ; प्रका०—स्फुट; अप्र०—'रत्नाकर' का उद्धव-शतक (आलोचना); वि०—पी० एच० डी० की उपाधि के लिए अपनी थीसिस प्रस्तुत की है; प०—प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

व्रजनन्दन सिंह—ज०—१९२०; सा०—बंगाल राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति की कार्यकारिणी के

स्थायी सदस्य, राष्ट्रभाषा के प्रचार में संलग्न ; १९३७-४४ तक कांग्रेस के साथ, कारावास; **प्रका०**— राष्ट्रभाषा - परिचय, हिंदी-बँगला-शब्दकोश ; **वर्त०**—हिंदी और बँगला का तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन ; **प०**—कोटवाँ रानीगंज, बैरिया, बलिया ; अथवा १०१ ग्रे स्ट्रीट, कलकत्ता ५ ।

व्रजनाथ शर्मा— **ज०**— १८८७, लखनऊ; **शि०**— एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० लं०; **सा०**—उप सभापति— रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, युक्त प्रदेश धर्म रक्षिणी सभा, मूलचंद रस्तोगी ट्रस्ट; मान्य सदस्य हि० सा० स०, प्राच्य विभाग लखनऊ वि० वि० के सद०, कई शिक्षा और चिकित्सा संस्थाओं के जन्मदाता, सदस्य—बोर्ड आफ ओरियंटल स्टडीज़, उत्तराखंड विद्यापीठ तथा नवलकिशोर संस्कृत विद्यालय; **प्रका०**—महात्मा गांधी, राज्य-विधान तथा व्यावहारिक वेदांत पर लेख, अँगरेजी में भीकई पुस्तकें लिखीं; **प०**—रानीकटरा, चौपटियाँ, लखनऊ ।

व्रजभूषण मिश्र— **प्रका०**— केवल पंद्रह मिनट, ब्रह्मचर्य आसान है; **अप्र०**—हिंदी-साहित्य में अध्यात्म; **प०**— २३, मदन-मोहन घेरा, वृन्दावन ।

व्रजभूषण शर्मा— **प्रका०**— घनानंदसुधा, कामायनी का विवेचन, सिद्धराज-समीक्षा, माध्यमिक निबंधमाला; **प०**—अध्यक्ष हिंदी विभाग, गवर्नमेंट इंटर कालेज, प्रयाग ।

व्रजमोहन, डाक्टर— **ज०**— १९०८; **शि०**—एम० ए०, एल-एल० बी०, पी-एच० डी० कानपुर, आगरा और इंगलैंड में; **सा०**—भूत० मंत्री हिंदी-परिषद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, मंत्री हिन्दी - प्रकाशन - मंडल काशी विश्वविद्यालय तथा अध्यक्ष विज्ञान-परिषद ; **प्रका०**—समतल-भूमिति भाग—४, ठोस ज्यामिति, प्रारंभिक कलन; **अप्र०**— अँग्रेजी-हिन्दी गणितीय शब्दावली, नियामक ज्योमिति, मायावर्ग, हिन्दू त्योहारों में व्यवहार बुद्धि; **प०**— प्रोफेसर गणित विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी ।

व्रजमोहन तिवारी—ज०—१९०२; शि०— एम० ए०, एल० टी०; प्रका०— झलक (कविता-संग्रह), वीरों की कहानियाँ, सरस कहानियाँ— चार भाग; अप्र०—दो-तीन आलोचनात्मक लेख और कविता-संग्रह; वि०— अंग्रेजी में भी सुन्दर काव्य-रचना करते हैं; प०—अध्यापक, अंग्रेजी विभाग, कान्यकुब्ज कालेज, लखनऊ।

व्रजमोहन शर्मा—शि०—एम० ए०, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, पी-एच० डी०, डी० लिट्०; प०—आत्मवीर सुकरात; सा०—संपा० 'निर्बल सेवक'; प्रका०—सत्याग्रह का कर्तव्य, नवयुवकों पर ऋषि दयानंद के अधिकारों की आलोचना, इंगलैंड का इतिहास, भारतवर्ष का इतिहास, भारत और संघ-शासन, नागरिकता पर ४ पुस्तकें, राज्य-शास्त्र के मूल सिद्धांत; प०—रीडर राजनीति-विभाग, विश्व विद्यालय, लखनऊ।

व्रजगोपाल गोस्वामी—शि०—एम० ए० पंजाब विश्वविद्यालय के रिकार्ड होल्डर हैं; प्रका०—स्फुट दार्शनिक निबंध और कविताएँ; प०—प्राध्यापक बी० एम० कालेज, शिमला।

व्रजरत्न दास—ज०—१८९०; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी० काशी और प्रयाग वि० वि०; ज०— संस्कृत, उर्दू, फारसी, बँगला; सा०—काशी ना० प्र० सभा के उपमंत्री (सं० १९८१), अर्थमंत्री (सं० १९९५–९७), प्रबंध-समिति के लगभग बीस वर्ष से सदस्य, स्थायी सदस्य; प्र०—१९०५; प्रका०—संपादित–खुसरो की हिंदी कविता, प्रेमसागर, तुलसी-ग्रंथावली (सभा की ओर से), रहिमन - विलास, संक्षिप्त राम-स्वयंवर, मुद्राराक्षस, नंददास-कृत भ्रमरगीत, भाषाभूषण, जरासंध-वध-महाकाव्य, इंशा: उनका काव्य और कहानी, भूषण - ग्रंथावली, सत्य-हरिश्चंद्र, भारतेंदु-ग्रंथावली (द्वितीय भाग), भारतेंदु नाटकावली (दो भाग), भारतेंदु-सुधा; अनुवाद–हुमायूँ नामा, नआसिरुल उमरा (दो भाग), काव्यादर्श; मौलिक—सर हेनरी लारेंस, बादशाह हुमायूँ, यशवंतसिंह, खड़ी

बोली हिंदी-साहित्य का इतिहास, उर्दू साहित्य का इतिहास, हिंदी साहित्य का इतिहास, भारत की नारियाँ, स्वातंत्र्य युद्ध, भारतेंदु हरिश्चंद्र, हिंदी नाट्य-साहित्य, शाहजहाँ; वि०—आप भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र की पुत्री के पुत्र हैं; प०—बुलानाला, काशी।

ब्रजलाल, 'ब्रजेंद्र'–ज०—बरोही, फतहपुर; सा०—भूत० संपा० 'अखंड भारत' दैनिक बंबई; संस्थापक और प्रधान मंत्री—इंडियन प्रेस वर्कर्स एसोसिएशन, भूत० प्रधानाध्यापक; प्रका०—स्फुट; प०—४/२०५ पुराना कानपुर।

ब्रज वल्लभदास नवनीत लाल मेहता, डाक्टर–ज०—१३ अक्टूबर १९०४; शि०—एम० ए०, पी-एच० डी०; प्र०—१९२६; प्रका०—भारतवर्ष का इतिहास—२ भाग, भारतीय इतिहास की सरल कहानियाँ, नवीन हाई स्कूल भूगोल, भारतवर्ष का प्रादेशिक भूगोल, भारतवर्ष—आर्थिक एवं प्रादेशिक अध्ययन, हमारा भूमंडल भारतीय शासन और नागरिक जीवन, नागरिक शास्त्र के सिद्धांत; प०—प्राध्यापक, बलवंत राजपूत कालेज, आगरा।

व्रजविहारीओझा–ज०—१९१३; शि०—सा० र० काशी; सा०—संस्कृत-शिक्षा-सुधार में संगठन कार्य, १९३२ के सत्याग्रह में जेल; प्रका०—आदर्श नागरिकता, भारतीय राजनीति-प्रवेशिका, मेरे जेल के दिन; प०—बिड़ला हाउस, लालघाट, बनारस।

ब्रजेंद्रनाथ गौड़—सा०—भूत० संपादक—'उर्मिला', 'कृषक', मासिक 'विज्ञापक' और 'विजय'; प्रधानमंत्री और संचालक श्रमजीवी लेखक-मंडल; प्रका०—अतृप्त मानव, सिंदूर की लाज, पैरोल पर, भाई-बहन, सीप के मोती, युद्ध की कहानियाँ, मन के गीत; अप्र०—आवारा, बिखरी कलियाँ, कागज की नाव; प०—ठि० बंबई टाकीज, मलाड, बंबई।

शंकरदयाल भण्डारी, 'शंकर'—ज०—१५ जनवरी १९१७; सा०—आजाद नवयुवक संघ और पुस्तकालय की स्था०; प्रका०—स्फुट लेख; प०—आजाद नवयुवक संघ, मकरन्दनगर, कन्नौज।

शंकरदयाल, 'सूर'—जन्मांध होते हुए भी व्रजभाषा में बराबर काव्य-रचना करते हैं; ज०—१९१७; **अप्र०**—दो कवित्त-संग्रह; प०—बार, झांसी।

शंकरदेव—ज०—१९०७; **शि०**—विद्यालंकार, गुरुकुल कांगड़ी; **सा०**—गुरुकुल में अध्यापन तथा संपादन आदि का कार्य; **प्रका०**—अंतिम, कोरिया की स्वातंत्र्य-कथा; प०—गुरुकुल काँगड़ी।

शंकरनाथ सुकुल—ज०—१३०७; शि०—एम० ए० (त्रय), बी०टी०, सा०आ०; **सा०**—'हिंदुस्तान टाइम्स' के भूत०संपादक; **प्रका०**—मतिराम-ग्रंथावली, केशव-ग्रंथावली; **वि०**—इस समय भारतेंदु जी पर एक खोजपूर्ण पुस्तक लिख रहे हैं; **प०**—सहायक अध्यापक, मधुसूदन विद्यालय हाई स्कूल, सुल्तानपुर, अवध।

शंकरलाल नागदा, 'मधु'—ज०—१९२० जावद; शि०—मंदसौर, उज्जैन; **सा०**—कई पत्रों के संपादक, संस्थापक—हिंदी-साहित्य समिति; **प्रका०**—स्फुट कहानी-निबंध; प०—जावद, मालवा।

शंकरलाल मगनलाल, 'राम'—ज०—१८९६; **सा०**—राष्ट्र-भाषा-प्रचार-समिति वर्धा के प्रामाणित प्रचारक, भूत० संपा०—'विनय', व्यवस्थापक समाज सेवा-मंडल नादोल, भूत० हिंदी अध्यापक शिक्षण-पद्धति पाठशाला; **प्रका०**—भेर उतरवाना, तात्कालिक उपाय (गुजराती में), सद्गुण माला, काव्य-चंद्रोदय, दिव्य किशोरी, गुरु-कीर्तन, गजराती-हिंदी-टीचर; **वि०**—आपकी प्रथम दो रचनाओं का हिंदी-रूपांतर छप रहा है; प०—५४।२१ पश्चिम नहर किनारा, कानपुर।

शंकरलाल वर्मा—ज०—१९०८; **सा०**—तेंदूखेड़ा में सम्मे० परीक्षा-केंद्र खोला; स्वयं व्यवस्थापक; **प्रका०**—जिले का भूगोल, त्रिमूर्ति, जगन्नाथ यात्रा; **प०**—प्रधान अध्यापक, शाला डोभी, पो० डोभी, होशंगाबाद।

शंकरराव लोढ़े—शि०—एम० ए०, सा० र०, इंदौर, नागपुर; **सा०**—हिंदी-मंदिर-पुस्तकालय, वाचनालय तथा हिंदी-अध्यापक

केंद्र के मंत्री; प्रका०—आत्म संयम (ग्वालियर शिक्षा-विभाग द्वारा पुरस्कृत); प०—अध्यापक वासुदेव आर्ट्स कालेज, वर्धा।

शंकरसहाय वर्मा—ज०—४ दिसम्बर १६०३; शि०—एम० ए०, बी० टी०, सा० र०, इंदौर; प्रका०—विविध विषयों पर लेख, आग के लिए (एकांकी), ग्राम गीतों का संग्रह और संपा०; प०—इंस्पेक्टर आव स्कूल्स, होल्कर राज्य।

शंकरसहाय सक्सेना—ज०—१६०४; शि०—एम० ए०, एम० काम—एटा, कानपुर, आगरा, कलकत्ता; सा०—मेवाड़ (उदयपुर) में प्रताप-जयंती, हल्दी-घाटी का मेला, प्रजा-मंडल तथा अन्य संस्थाओं की स्थापना और संगठन, बरेली कालेज-हिन्दी-प्रचारिणी सभा तथा नगर हिंदी-सभा के प्रधान कार्यकर्ता; प्रका०—औद्योगिक तथा व्यापारिक भूगोल, भव्य-विभूतियाँ, उज्ज्वलरत्न, भारतीय सहकारिता आंदोलन, आर्थिक भूगोल, ग्राम्य अर्थ-शास्त्र, भारत का आर्थिक भूगोल, पूर्व की राष्ट्रीय जागृति, गाँवों की समस्याएँ, प्रारंभिक अर्थशास्त्र; इनके अतिरिक्त चीन की राष्ट्रीय जागृति और कार्ल-मार्क्स के आर्थिक सिद्धांत आदि अनेक अप्र० ग्रंथ; प्रि० वि०—राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, ग्राम-समस्याएँ तथा साहित्य; प०—प्राध्यापक, बरेली कालेज, बरेली।

शंभुदयाल सक्सेना—ज०—१६०१, फर्रुखाबाद; शि०—सा० रत्न०; सा०—संपादक—त्रैमासिक 'राजस्थानी', 'शोध पत्रिका', संस्थापक नवयुग-ग्रंथ-कुटीर, फर्रुखाबाद १६३१; बीकानेर शाखा स्थापित १६३६; बाल मंदिर, बीकानेर १६३७; प्रका०—कविता—उत्सर्ग, अमरलता, मिखारिन, नीहारिका, रैन-बसेरा और वंचिता; उपन्यास—मीठी चुटकी, बहूरानी, भाभी; नाटक—साधना-पथ, गंगाजली, बल्कल और पंचवटी, चित्रपट, बंदनवार, धूपछाँह और पान की कहानी—कहानी-संग्रह; प्रबंध-प्रकाश और काव्यालोचन निबंध; संक्षिप्त जायसी, संक्षिप्त

भूषण और केशव-काव्य आदि का संपादन किया ; इनके अतिरिक्त लगभग बीस सुन्दर बालोपयोगी पुस्तकें लिखी हैं जिनमें कई के अनेक संस्करण हो चुके हैं; अनेक पाठ-पुस्तकों का संपादन भी किया है; घर की रानी, आँधी, पत्थर सगाई, तथागत, काव्य-समीक्षा, पंचामृत आदि रचनाएँ अप्र० हैं ; प०—अध्यापक सेठिया कालेज, बीकानेर।

शंभुनाथ पांडेय—ज०—१९१२; शि०—आयुर्वेदाचार्य ; सा०—भूत० संपा० 'ज्ञानोदय', 'अष्टांग', भूत० प्रधान चिकित्सक आयुर्वेद कालेज, कानपुर ; अप्र०—स्फुट; प०—सेक्रेटरी, शारदा भवन लाइब्रेरी, रामपुर, फतेहपुर।

शंभुनाथ, 'शेष'—ज०—१९१५; शि०—बी० ए०; सा०— दिल्ली में 'कवि-समाज' द्वारा साहित्यिक चेतना का विकास करना, हिंदी सा० सम्मे० की कार्य-समिति के सदस्य, हिन्दी साहित्य सभा पहाड़ गंज नयी दिल्ली के उपाध्यक्ष ; प्रका०—उन्मीलिका ; अप्र०—सुवेला; प०—चूना मंडी, नयीदिल्ली।

शंभुनाथ सक्सेना—ज० १४ जनवरी १९२०; सा०—भूत० संपा० 'सरिता' दिल्ली, 'विश्वमित्र' दिल्ली, 'जयाजीप्रताप' (हिंदी विभाग), 'विचार', 'इंडियन नेशन', 'आनन्द'; बिड़ला मिल्ल के प्रचाराध्यक्ष, नूतन प्रकाशन मन्दिर के जन्मदाता, प्रधान मन्त्री बृहत्तर ग्वालियर पत्रकार-संघ तथा साहित्यकार-संघ, सद० मध्यभारत पत्रकार-संघ, प्रतिनिधि—कामर्स ऐंड इंडस्ट्रीज, म० भा०; प्रका०—मधुमक्खी पालन, हाथ से कागज बनाना, चमड़ा पकाना, हमारे ग्राम-गीत, वे चेहरे, पतझड़, हमारी शेरवानी, कब्रों की दुनियाँ, जीवन के प्रश्न, अवर फोक सांग्स; अप्र०—नितीन की कहानी, अनुभव के रजकरण; वि०—ग्रामोद्योग में रुचि, सुप्रसिद्ध पत्रकार डा० लंका सुन्दरम के साथ मध्य भारतीय औद्योगिक सर्वे की योजना बना रहे हैं; प०—मदने की गोट, लश्कर, ग्वालियर।

शंभुप्रसाद बहुगुणा—ज०—१९१५ गढ़वाल; शि०—एम० ए०, लखनऊ वि० वि०, डिप०

साइ०; प्रका०—मौलिक—तुलसी मुक्तावली २ किरण, शवरी मंगल, हिमवंत का एक कवि, घन आनंद, मौथिल कोकिल; संपा०—नंदिनी, नागिनी ; प०—प्राध्यापक, हिंदी विभाग, आइसाबेला थोवर्न कालेज, लखनऊ ।

शंभुरत्न मिश्र, 'मुकुल'– ज०—१६२७ ; शि०—इंटर तक शाहजहाँपुर, बरेली, कन्नौज, लखनऊ; सा०—भूत० संपा० 'शान्ति' और 'छाया' ; प्रका०—उप०—गलतियाँ, अमावस, स्नेहदान, विषकन्या, मंजिल, अश्रु गीत, मन के गीत, टेढा रास्ता, धूल के धब्बे, पत्थर की दीवारें, इलाज, भीगी-रात, दुख के दिन ; प०—कोषाध्यक्ष, कानपुर शुगर वर्कस, कानपुर ।

शंभूलाल, 'मुकुल'—प्रका०—स्फुट ; अप्र०—स्वतंत्र भारत, समाज की वेदीपर, अपना गाँव—ना०, युगपंथ, अंतर्दाह—कवि० ; प०— सह० संपादक, 'प्रकाश', देवघर, बिहार ।

शंभूलाल शर्मा— ज०—१६०६; शि०—कृषिविद्यालंकार, कांकरौली, उदयपुर और मेवाड़ ; सा०—संस्था० व्याख्यान - सभा तथा भूत० संपा० 'विद्याविनोद', स्काउट मास्टर, संचा० नवप्रभात-मंडल, भूत० अध्यापक राजनगर स्कूल तथा एम० एम० स्कूल; 'भारत - भारती' के बाल - विभाग के भूत० सहयोगदाता; प्रका०—स्फुट काव्य तथा लेख ; प०—प्रधान अध्यापक, लम्बरदार स्कूल, उदयपुर ।

शकुंत भारद्वाज— ज०—२३ जूलाई १६२४; सा०—व्यवस्थापक बीकानेर राज्य 'साहित्य-सम्मेलन-पत्रिका', तथा उसकी स्थायी समिति के सद०, उपमंत्री सर्वहितकारिणी सभा - पुस्तकालय चूरू; प्रका०—बुदबुदे, दीपदान; अप्र० — दीपाधार ; प०—प्राणथ नीढ़, चूरू ।

शकुन्तला कुमारी, 'रेणु'—ज०—१६२१; शि०—भरतपुर; प्रका०—स्फुट; अप्र०—आरती, सती सीता; प०— नवरत्न सरस्वती भवन, झालरापाटन सिटी।

शकुन्तला देवी खरे— श्री नर्मदाप्रसाद खरे की पत्नी ;

ज०—१६१७; शि०—जबलपुर; प्रका०— स्फुट कहानियाँ और कविताएँ; प०— फूटा ताल, जबलपुर।

शकुन्तला,'प्रभाकर'—ज०—१६२२; सा०—श्रमजीवी लेखक मंडल की महिला मंत्राणी; प्रका०— स्फुट कविताएँ तथा कहानियाँ; प०—प्रधानाध्यापिका आर्य पुत्री पाठशाला, ताँदलिया-वाला, लायलपुर।

शचीनंदनप्रसाद सिंह, राजकुमार—ज०—१६२४; सा०—सद० हि० सा० प० मुंगेर; प्रका०—मधुयामिनी (कविता-संग्रह); प०—राजपाटी, मुंगेर।

शचीरानी गुर्टू— ज०—१६२२; शि०—एम० ए० हिंदी और अँगरेजी, सा०आ० (संस्कृत); प्रका०-साहित्य-दर्शन, कला-दर्शन, प्रेरणा (कहानी), विश्व की प्रधान नारियाँ, टूटता धागा और रेखा-चित्र (कहानी-संग्रह); बालोपयोगी रचनाएँ-अनार शाहजादी, सीता, सावित्री, अबोला रानी कैसे बोली, वि०—'नवयुग' —संपादक श्री इंद्रनारायण गुर्टू की पत्नी हैं; प०—३, दरियागंज, दिल्ली।

शफीदाउदी—ज०—१८७५; शि०—बी० ए०; सा०—उपसभापति नागरी प्र० सभा वैशाली, १६२० के असहयोग आंदोलन में भाग, १६२४-३५ तक दिल्ली व्यवस्थापिका सभा के सद०, १६३१ में गोलमेज सभा में गांधी जी के साथ सम्मिलित हुए; प०—वैशाली, मुजफ्फरपुर।

शमशेर बहादुर सक्सेना—ज०—१५ फरवरी १६२२; शि०—एम० काम० बरेली और प्रयाग; सा०— अध्यक्ष सोशल सर्विस लीग; प्रका०—स्फुट; प०—प्राध्यापक हरप्रसाद जैन कालेज, आरा।

शमशेरबहादुर सिंह—शि०—बी० ए० १६४२; प्रका०-आकाश और धरती (अनुवाद), दो पाप (लेख-संग्रह), लाट मोर्चा (स्केच); प०—उपसंपादक 'माया' और 'मनोहर कहानियाँ', इलाहाबाद।

शमशेर बहादुर सिंह—ज०—१६०६; अप्र०—आलो० लेख और कविताएँ; प०—'नया साहित्य'-कार्यालय, बंबई।

शरदचंद्र भटोरे— ज०— १९१४ ; शि०— सा० वि०, शास्त्री ; सा०—कार्यकर्ता हरिजन - सेवक - संघ और हिन्दी साहित्य-समिति धार, हरिजनों में शिक्षा-प्रचार ; प्रका०—नवराष्ट्र-निर्माता ऋषि दयानन्द, हमारी प्रतिज्ञा, शांति-संदेश-वाहक महात्मा-गांधी ; प०—४, धारेश्वर, धार ।

शर्मनलाल अग्रवाल—ज०— १ अगस्त १९१७ ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० रत्न डी० ए० वी० कालेज कानपुर, आगरा ; सा०—भूत० मंत्री ना० प्र० स० आगरा, प्रांतीय हिं० सा० स०, व्रज - साहित्य - मंडल मथुरा ; सभापति मथुरा पत्रकार-संघ, संगीत-प्रचारक-मंडल मथुरा, सहा० संपा०—'सैनिक', 'साहित्य संदेश'; संपा०—'ज्योति', 'सावधान'; प्रका०—हिटलर, बापू की अमर कहानी, निबंध द्वादशी, चरणों में, नवप्रभात ; प०—घीया मंडी, मथुरा ।

शशिकांता—प्रका०—आराधना, पूजा आदि गद्यकाव्य और कहानी-संग्रह ; प०—शाहजहाँपुर ।

शशिधर बाजपेयी—ज०— १९०३; सा०—सद० प्रगतिशील लेखक-संघ; प्रका०—साहसी युवराज ; प०—मॉडर्न आयुर्वेदिक फार्मेसी, मुंगेर ।

शशिनाथ चौधरी— ज०— १८९८; शि०—बी० ए० १९२१, बी० एड० १९२४; प्रका०— १९१५; प्रे०— स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ; सा०—भूत० संपा० 'तरुण भारत' १९२२, 'मिथिला-मित्र', 'गंगा,' 'इंडियानेशन', प्रचारक वर्धा राष्ट्र० भा० प्र० स०, संस्था० मैथिली सा० परिषद ; प्रका०—भगवान बुद्ध, मिथिला-दर्शन; अप्र०—सौन्दर्य-विज्ञान, प्रेम-तत्व, सदाचार-सोपान ; वर्त०—बम्बई प्रान्त के शिक्षा विभाग में काम कर रहे हैं; प०— मिश्र टोला, दरभंगा ।

शशिनाथ तिवारी, 'शशि'— ज०—१ जनवरी, १९१९; शि०— बी० ए० (आनर्स); प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—पटना ।

शांतिप्रसाद बालभट्ट—ज०— २ फरवरी १९१०; सा०—आपके कई नाटक रंगमंच पर सफलता-

पूर्वक खेले गये, हिंदी रंगमंच के उत्थान के लिए कल्पना - मंदिर की स्थापना की, आदर्श पुस्तकालय के जन्मदाता, 'रूपक', 'हृदय', 'भानु' तथा 'ललिता' आदि में संपादन - कार्य ; प्रका०—रचना-सहचरी, भयंकर भूल, नरसी ; प०—बनियापाड़ा, मेरठ ।

शांतिप्रिय द्विवेदी—सा०—भूतपूर्व संपादक 'कमला' (१६३६ से ४२), 'भारत', 'वीणा'; प्रका०—जीवन - यात्रा, हमारे साहित्य-निर्माता, साहित्य की संचारिणी, कवि और काव्य, युग और साहित्य, सामयिकी, पथचिन्ह ; प०—लोलार्क कुंड, काशी ।

शांति मेहरोत्रा— ज०— ६ मार्च, १६२६, नेनुआ, बूँदी ; शि०— एम० ए० (अर्थ शास्त्र) लखनऊ वि० वि०; वि०—आप श्री बैकुंठनाथ मेहरोत्रा की पत्नी हैं, प्र०—१६४४; सा०—'शांति' के संपादक मण्डल की सदस्या, संपा० 'भारत जननी' ; रेडियो पर कविता-पाठ; प्रका०—निष्कृति, डा. बड़थ्वाल पारितोषिक प्राप्त; मरीचिका—कस्तूबा पारितोषिक प्राप्त; रेखा—सेकसरिया पारितोषिक प्राप्त; पगध्वनि, जयंती, बिदा, अंकुर-गाँधी पारितोषिक प्राप्त; प०—प्रयाग ।

शांतिस्वरूप गुप्त—ज०—७ मार्च १६१४ मैनपुरी ; शि०—हरदोई, बी० ए० १६३४, एम० ए० (साहित्य) १६३६, प्रथम श्रेणी, १६३६ में एम० ए० (अँगरेजी), १६४६ में डी० फिल० प्रयाग वि० वि०, १६४८ में डी० फिल० (इतिहास) बेलियन कालेज आक्सफोर्ड ; सा०—१६३६-४८ प्रयाग वि० वि० में इतिहास के प्राध्यापक, १६४८ में इंडियन फारेन सर्विस में, विदेशी विभाग में अंडर सेक्रेटरी ; प्रका०—भूटान के साथ अँगरेजी सरकार के संबंध १७७२-१६८०, भारत की उत्तर-पूर्वी सीमा की ओर अँगरेजी सरकार की नीति—१८३६-८६ ; प०—फर्स्ट सेक्रेट्री भारतीय दूतावास, नैपाल ।

शारंगधर शामजी—ज०—२ मार्च, १६०२ ; जा०—मराठी, गुजराती ; सा०—हिंदी-वर्ग के संस्थापक १६३६ ; स्थानीय हिंदू एसोसिएशन के हिंदी - प्रचार-

विभाग के मंत्री ; प्र०—१६३० ; प्रका०—स्फुटलेख; प०—रावले, नासिक, महाराष्ट्र ।

शारंग पाणि—ज०—१३ अक्तूबर १६१५ ; शि०—कुँभकोणम् ; सा०—११ वर्ष तक दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा में कार्य ; प्रका०—स्फुट लेख ; प०—सहायक संपादक 'दक्खिनी हिंद', त्याग रायनगर, मद्रास ।

शालग्राम द्विवेदी—ज०—१८६३ ; शि०—एम० ए०, विशारद, जबलपुर; सा०—माडल हाई स्कूल जबलपुर के भूतपूर्व शिक्षक, राष्ट्रीय - हिंदी - मंदिर के प्रारंभिक काल में 'श्रीशारदा' के उपसंपादक तथा शारदा - पुस्तक माला के संपादक ; जबलपुर के स्पेंसर ट्रेनिंग कालेज में अध्यापक थे; प्रका०—साहित्य-सरोज, समर-सखा, नवीन पत्र-प्रकाश, रचना-शिक्षक आदि अनेक छात्रोपयोगी पुस्तकें; प०—सुपरिंटेंडेंट, राजकीय नार्मल स्कूल, रायपुर।

शिखरचंद जैन—ज०—६ जूलाई १६०७; शि०—इंटर तक, सा० रत्न ; सा०—'खंडेलवाल जैन हितेच्छु' के संपा०, वीर वाचनालय के संस्था०, प्रका०—सूर : एक अध्ययन, नारी हृदय की अभिव्यक्ति, हिंदी - नाट्य चिंतन, प्रसाद का नाट्य - चिंतन, जीवन की बूँदे, हिंदी जैन साहित्य-समाज, अखंड भारत, कणिकाएँ, गुनगुन, बालकों और छात्रों की समस्याएँ, युग-जीवन के साहित्यिक निबन्ध, प०—मोती महल, दीतवारिया, इन्दौर ।

शिबोलारानी, 'कुसुम'—ज०—४ अप्रैल १६१८ ; शि० दिल्ली ; प्रका०—प्रथम पहर ; लगभग ५० कहानियाँ और १०० गद्यकाव्य ; प०— दिल्ली ।

शिरेफ़ अलेक्जेंडर ग्रियर्सन—हिंदी-प्रेमी अँगरेज ; ज०—२६ अप्रैल १८८३ ; सा०—आपने प्रसिद्ध डाक्टर ग्रियर्सन द्वारा किये गये 'पद्मावत' के अँगरेजी अनुवाद को पूरा किया, जो रायल एशियाटिक सोसाइटी से प्रकाशित हुआ १६४४ ; आप १६०७-४४ तक इंडियन सिविल सर्विस के सदस्य रहे ; वर्त०—लंदन की इंडिया आफिस लाइब्रेरी में

प्राच्य साहित्य के अध्ययन का काम कर रहे हैं; प०—हाल पैलेस स्पार्शोल्ट वालटेज वर्क्स, इङ्गलैंड।

शिवकुमार ओझा—ज०—१६१६; शि०—एम० ए०, आर० ए०; प्रका०—सोहागदान, देव-दर्शन, नेहरू की झाँकी; प०—८२, सेंट्रल अवेन्यू, कलकत्ता।

शिवकुमार ठाकुर—सा०—भूत० सहायक संपादक 'राष्ट्रीय मोर्चा' साप्ताहिक कानपुर, और संपादक दैनिक 'हिंदू राष्ट्र' जोधपुर; प०—अध्यक्ष चतुर्भुज ग्रंथागार, अलीगढ़।

शिवकुमार त्रिपाठी, 'संतप्त'—सा०—मुजफ्फरपुर से प्रकाशित 'लाल चिट्ठी' मासिक पत्र के भूतपूर्व संपादक-व्यवस्थापक; कहानी प्रधान त्रैमासिक 'कल की बात' और पाक्षिक 'मर्यादा' के प्रकाशन संपादन में आजकल लगे हैं; प्रका०—अचिरा, आरती, वासंतिका, धूप-छाँह (कवि० संग्रह), सपएवालों की दुनिया में और बिहार: एक अध्ययन—पर्यटन-संबंधी लेख-संग्रह, मंदिर का अंत और नारी (कहा० संग्रह); अप्र०—आलोक, नई शादी, टीपू सुल्तान, काजी साहब (उप०); प०—दोस्तपुर, सुल्तानपुर।

शिवकुमार शर्मा—ज०—१० नवंबर १६१०; शि०—१६२७ में बुलंदशहर के कृषि-स्कूल से कृषि में डिप्लोमा पाया; सा०—मई १६२६ में टेंगानिया (पूर्वी अफ्रीका) के कृषि-विभाग में कृषि-अधिकारी पद पर नियुक्त हुए, १६३१ में स्वदेश लौटे, १६३२ में २६ जनवरी को बंदी बने, १६३६ तक काँग्रेसी कार्य, १६३६-४२ तक धामपुर फैक्टरी के फार्म-सुपरिंटेंडेंट, ८ सितंबर १६४२ को पुनः बंदी, १६४४ में छूटे, १६४४ से ४७ तक बिहारी लौरिया शुगर मिल्स के फार्म सुपरिंटेंडेंट, १६४७ में त्यागपत्र देकर बिजनौर से 'कृषि-संसार' का संपादन-प्रकाशन कर रहे हैं, संस्थापक भारती प्रेस और किसान-सस्ता-साहित्य-प्रकाशन-समिति, सस्ते प्रकाशन—धरती माता के प्राण, खाद ही राष्ट्रीय संपत्ति है, भूमि क्षय की भीषण समस्या, अमृत और विष; वर्त०—मंत्री-

जिला कांग्रेस कमेटी; प०—भारती प्रेस, बिजनौर।

शिवकुमार श्रीवास्तव—ज०—१६२४; प्रका०—काव्य-उषापान, ताजमहल, पावसगीत; कहानी—ताँगेवाला; प०—सदर बाजार, सागर।

शिवचंद्र, 'नागर'— ज०—मार्च १६२६; शि०—बी० ए०, सा० र० प्रयाग वि०वि० जा०—अँगरेजी, गुजराती, बंगला; प्र०—१६४४; प्रका०—ज्योत्सना, प्रणय गीत; अनु०—किसका अपराध, ध्रुवस्वामिनी देवी (नाटक), बालो०—परियों के देश में, बारह हाथ की नाक, लंबे सींग; अप्र०—ऊर्मि, शलभ, कवि के आँसू, प्रेस में— स्वप्न दृष्टा, राजाधिराज, शिशु और सखी, रेखाचित्र, स्वर्ग और पृथ्वी, टूटा हुआ तार; वर्त०—रूसी भाषा का अध्ययन, जीवित साहित्यिकों के रेखाचित्र लिखने की योजना; प०—ग्वालियर लॉज, गुजराती स्ट्रीट, मुरादाबाद।

शिवचन्द्र शुक्ल— ज०—१८६७, रायबरेली; अप्र०—वैद्यक-दर्पण, प०—शांतिकुटीर; छुलाहा, रायबरेली।

शिवचरणलाल मालवीय, 'शिव'; ज०—६ जून १६०६; सा०-संपादक— 'ताती-विजय'—१६२६–३०, 'कर्मयुग' १६३०, 'स्वराज्य' १६३१ से अब तक; १६३६ में 'विक्रम'-साप्ताहिक का भी संपादन किया था; प्रका०—स्फुट लेख और कहानियाँ; प०—शिवनिवास, हरीगंज, खँडवा।

शिवदत्त शास्त्री— ज०—कर्णवास १६०४; प्रका०—शैल-शिला और प्रभाती; प०—द्वारा श्री इन्द्रदत्त शर्मा, वैद्य, घंटाघर के पास, संभल, मुरादाबाद।

शिवदत्त श्रीवास्तव—ज०—१३ दिसम्बर १६१३; शि०—एम० ए०, विशारद, डी० टी०-टी० सी०; हरदोई, बुलन्दशहर, मथुरा और लखनऊ; प्रका०—२७ अप्रैल १६३४; सा०—लखीमपुर के राजकीय हाईस्कूल में अध्यापक, हरदोई में सरस्वती-निकुंज के प्रबन्ध मन्त्री; प्रका०—

स्फुट ; प०—सरस्वती निकुंज, पुराना बोर्डिंग हाउस, हरदोई।

शिवदान सिंह चौहान—सा०—'प्रभा', 'नया हिंदुस्तान', 'हंस' के भूत० संपा० ; प्रगतिशील लेखक संघ का कार्य ; प्रका०—स्पेन का गृह-युद्ध; कुछ अन्य पुस्तकें ; प०— ठि० नेशनल कल्चरल फ्रंट, कश्मीर।

शिवनंदन कपूर—प्रका०—धार्मिक कहानियाँ, लल्लू-कल्लू, अमर कहानियाँ, प्राचीन कहानियाँ, वीर-गान ; वि०—'बाल-साहित्य-मंदिर' के नाम से एक प्रकाशन संस्था खोली है ; प०—मशकगंज, लखनऊ।

शिवनंदनप्रसाद—ज०-१६१८; शि०—१६३५ में बी० ए० प्रयाग वि० वि०, १६४१ में एम० ए०, पटना वि० वि०, १६४२ में सा० रत्न ; प्र०—कर्तव्य के पथ पर, 'हिन्दू पंच' में १६३६ ; सा०—पटना वि० वि० की सिनेट के सदस्य (१६४४ से ४८), पटना विश्वविद्यालय के हिंदी बोर्ड के सदस्य १६४८ ; गया के हिंदी साहित्य-सम्मेलन के संस्थापकों में, उसके प्रथम मंत्री थे ; प्रका०—साहित्य-वातायन, काव्यालोचन के सिद्धांत, पंत जी का गुंजन, कहानी के तत्व, हिंदी कविता का अध्ययन, ध्रुवतारा और शंखनाद (कविताएँ), मास्टरपीस-एकांकी नाटक, समीक्षावली-आलोचनात्मक निबंध ; प०—प्राध्यापक, हिंदी विभाग, जी० बी० बी० कालेज, मुजफ्फरपुर।

शिवनंदनप्रसाद—शि०—बी० ए० पटना वि० वि० से १६४० में, डिप० एड० १६४२ में; प्र०—मानव और प्रश्न १६३७ में; सा०—नागपुर की पिछड़ी जातियों में हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रचार ; प्रका०—तानाशाही, चंगुल, जुल्म का नंगानाच, युद्ध में चर्चिल, फौलादी रूस, हमारे सिपाही, जापानी सिपाही, पैसिफिक की लड़ाई, बिहार में युद्धोद्योग, हिटलर के कारनामे, जापान का रहस्य-भेद, हमारा मित्र चीन, हम जीतेंगे, हिटलर का पंजा, पाँचवाँ दस्ता, ऊटपटाँग; अनुवाद—स्वास्थ्य के तीन मार्ग, स्वर्ग की झलक, महासागर की संक्षिप्त कहानी;

प०—भट्टाचार्जी लेन, अपर बाजार, राँची।

शिवनंदनप्रसाद सिंह—ज०—१८६४; प्र०—१६१०; प्रका०—शिवनंदन-पचासा (२६१३); प०—मीरगंज, गया।

शिवनाथ—ज०—अगस्त १६१७; शि०—एम० ए० (हिंदी) काशी वि० वि०, सा० र०; **सा०**—संपा० 'आज' साप्ता०, 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका,' भगवानदीन साहित्य विद्यालय काशी में भूत० अध्यापक; **प्रका०**—आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी कारकों का विकास, आधुनिक साहित्य की आर्थिक भूमिका, अनुशीलन; संपा०—हिन्दी शब्द-संग्रह, वर्तमान हिन्दी-साहित्य; **अप्र०**—हम्मीर रासो, छत्रप्रकाश; प०—हिंदी भवन, विश्वभारती, शांति-निकेतन।

शिवनाथ दुबे—ज०—२ जनवरी १६२० धानापुर बनारस; **प्रका०**—स्फुट चरित्र, कल्याण के 'नारी-अंक' में ६५ जीवनियाँ लिखीं; **प०**—संपादकीय विभाग, मासिक 'कल्याण', गोरखपुर।

शिवनाथसिंह, 'शांडिल्य'—ज०—१८६७ माछरा; **सा०**—हिंदुस्तानी मिडिल स्कूल, किसान विद्यालय इंटर कालेज और भारत-प्रेम-पुस्तकालय के संस्था०; श्री पृथ्वीसिंह धर्मार्थ औषधालय तथा ज्ञानप्रकाश-मंदिर के जन्मदाता, प्रधान–प्रौढ़-शिक्षा-समिति मेरठ, भूत० संपा० 'त्यागी'; सदस्य मेरठ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड; **प्रका०**—चौधरी-बाल-साहित्य-माला के लेखक; शिकारियों की सच्ची कहानियाँ, बाल गुलिस्ताँ, बाल बोस्ताँ, फूलदान, सच्ची रोमांचक कहानियाँ, हँसती-बोलती तस्वीरें, मनोरंजक कहानियाँ, चटपटी कहानियाँ, अक्लमंदी की कहानियाँ, उर्दू कवियों की नीति कविताएँ, रूमी कहानियाँ, वीरबल की कहानियाँ, नसीहत की कहानियाँ, पागल, चिड़िया की नसीहत, सावनमल का इंसाफ, शिकारी शहजादे; प०—माछरा, मेरठ।

शिवनारायण उपाध्याय—ज०—१६ मार्च १६२२; **शि०**—सा० भूषण; **अप्र०**—संघर्ष का स्वर, रोज की कहानी, दो झोपड़े; **प०**—कालमुखी, खँडवा।

शिवनारायण द्विवेदी—सा०—साप्ता० 'सावधान' के भूत० संपा०, 'नवभारत' के वर्त० सह० संपा० ; प०—रायपुर।

शिवनारायण, मुंशी—ज०—१८८०; शि०—१६०३ में बी. ए., सा०—'अबला हितैषी' के एक वर्ष तक संपा. रहे;प्रका०—कायस्थ सज्जन चरित्र, जयपुर नरेश महाराजा माधवसिंह की लंदन-यात्रा, विलायती शराब का सामंजस्य, कैलाश कुमारी, ईश्वर-प्रार्थना ; प०—जयपुर।

शिवनारायण लाल—ज०—१८ मार्च १६०४; शि०—मध्यमा (सर्वप्रथम, तृतीय स्थान), विशेष योग्यता (सर्वप्रथम, द्वितीय स्थान); सा०—गाँधी विद्यालय सेकेंडरी हायर स्कूल के प्र० मंत्री, सार्वजनिक पुस्तकालयों के कार्यकर्ता ; प्रका०—जनरल साइंस रीडर, स्फुट लेख ; प०—बैजनाथाश्रम, बछरावाँ, रायबरेली।

शिवपूजन सहाय—ज०—१८६३, उनवास गाँव, शाहाबाद; शि०—१६०३ कायस्थ जुबिली एकेडमी हाई स्कूल और कलकत्ता वि० वि० ; सा०—१६१३ में बनारस दीवानी अदालत में नकलनवीस, १६१५ में कायस्थ जुबिली एकेडमी में, १६१७ में आरा जार्ज टाउन स्कूल में, राष्ट्रीय विद्यालय में हिंदी-शिक्षक, भूत० संपा० 'मारवाड़ी-सुधार' मासिक आरा १६२०, 'मतवाला मंडल' कलकत्ता १६२३, 'माधुरी' लखनऊ १६२५, 'गंगा' सुलतानपुर १६३०, 'जागरण' पाक्षिक काशी १६३२, 'बालक' मासिक लहरियासराय, 'आदर्श', 'समन्वय', 'उपन्यास-तरंग', 'मौजी' कलकत्ता, 'गोलमाल' पटना, 'हिमालय' पटना, आदि के संपा० रह चुके हैं; वर्त० संपा०—राजेन्द्र-कालेज की मुख-पत्रिका 'राजेन्द्र भारती' के आरंभ से ही संपादक; काशी ना० प्र० स० के द्वारा भेंट दिये गये 'द्विवेदी-अभिनंदन-ग्रंथ' १६३२, तथा पुस्तक भंडार लहरिया सराय के 'जयंती-स्मारक-ग्रंथ' का १६३८ से ४१ तक संपादन, देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद की ६५ वीं जयंती पर आरा ना० प्र० सभा की ओर से भेंट दिये गये ५००

पृष्ठों के अभिनंदन-ग्रथ का संपादन १६४६ में किया; राजेन्द्र बाबू की आत्म - कथा का भी संपा० कर चुके हैं जिसका उल्लेख स्वयं राजेन्द्र बाबू ने ही 'कथा' में किया है, अपने स्वर्गीय पिता की पुण्य स्मृति में श्री वागीश्वरी पुस्तकालय स्था० किया; १६४१ में बिहार प्रादेशिक हिं० सा० स० के सत्रहवें अधिवेशन के सभापति; **प्रका०**—देहाती दुनिया, विभूति, (कहा०), संसार के पहलवान, भीष्म, अर्जुन, बिहार का बिहार, हिंदी अनुवाद, दो घड़ी (हास्य); संपा०-प्रेम-कली, प्रेम-पुष्पांजलि, सेवाधर्म, त्रिवेणी, साहित्य-सरिता (यह आठ वर्षों से पटना वि० वि० की आइ० ए० परीक्षा के लिए स्वीकृत है); **वि०**—वि०वि० की उच्च शिक्षा की उपाधि के न होते हुए भी १६३६ में छपरा के राजेन्द्र (डिगरी) कालेज ने आपको हिंदी-विभाग का अध्यक्ष नियुक्त करके अपना गौरव बढ़ाया; **प०**-सभापति, राष्ट्र भाषा समिति सचिवालय, पटना।

शिवप्रताप पांडेय—**ज०**—१६१६; हिन्दी साहित्य-मंडल, श्रीभगवान धर्मार्थ औषधालय, साहित्य-सदन आदि की स्थापना की; **प्रका०**—प्रताप कहानी-कुंज, युक्तिसाधन, मधु का भारतीय आंदोलन, झाँसीवाली रानी, विद्युल्लता, हिंदी छन्द - शास्त्र; **प०**—साहित्यसदन, खोल, जिला गुडगावाँ, पंजाब।

शिवप्रसाद मिश्र — **ज०**—१६११ काशी; **शि०**—एम०ए०, सी० टी०, **प्रका०**—पूर्व कालिदास (नाट०), भाषा की शिक्षा, अध्ययनकला, विजयी सेना; **अप्र०**—अदृष्ट, अभिनय, बनारसी बैठक; **वर्त०**—पत्रकार; **प०**— ३३।७२ ज्ञानवापी, बनारस।

शिवप्रसाद मिश्र, 'रुद्र'—**ज०**—१६११ काशी; **सा०**—दैनिक 'सन्मार्ग' के सम्पादकीय विभाग में कार्य, संपादक 'सरिता'; **प्रका०**-स्फुट; **प०**—विश्वनाथ गली, बनारस।

शिवप्रसाद लोहानी—**ज०**—नूरसराय पटना; **शि०**-**सा० र०**; **प्रका०**— लगभग सवा सौ

आलोचनात्मक और सामयिक लेख ; प०—नूरसराय, पटना।

शिवप्रसाद व्यास, 'शिव'—ज०—१६१४; शि०—सा० लं०, सा० भूषण; सा०—संचा० हिंदी-मन्दिर, मंत्री सनातन-धर्म-सेना संघ, क्षत्रिय-सेवा-संघ के सहयोगी; प्रका०—हिन्दुत्व की ज्वालाएँ, इधर साधना उधर सिद्धि, कल्प वृक्ष, झूठी साध्वी, हिन्दू नित्य-चर्या, कर्म-मार्ग ; प०—हिन्दी मन्दिर, नरसिंहगढ़ राज्य।

शिवप्रसाद सक्सेना—ज०—१६२५ ; शि०—एम० ए० (हिंदी-राजनीति), एल-एल० बी०; प्रका०—स्फुट; अप्र०—भारतीय राजनीति - दर्शन, प्लेटो और चाणक्य ; प०—प्राध्यापक, राजनीति विभाग, गाँधी कालेज, शाहजहाँपुर।

शिवबालक शुक्ल—ज०—१६२०, हरदोई ; शि०—एम० ए० लखनऊ वि० वि० ; प्रका०—स्फुट आलोचनात्मक लेख; अप्र०—श्रीधर पाठक : जीवन और साहित्य : एक अध्ययन ; प०—प्राध्यापक, रुक्मागंद क्षत्रिय कालेज, हरदोई।

शिव रत्न शुक्ल, 'सिरस'—प्रका०—प्रभु चरित्र, श्रीरामावतार, आर्य - सनातनी - संवाद, परिहास-प्रमोद (चंपू), भिक्षां देहि, भरत भक्ति–महाकाव्य, श्री शिवाजी महाभाष्य, शांत रसालंकार, उद्धव-व्रजागंना, खड़ी बोली वर्ण-वृत्त; प०—बछरावाँ, रायबरेली।

शिवराम श्रीवास्तव, 'मणींद्र'—ज०—१६११; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी० ; सा०—स्थानीय साहित्य-संघ के संरक्षक; प्रका०—स्फुट कविताएँ ; प०—वकील, उरई।

शिवशंकर जोशी—ज०—१५ जुलाई १६२२; शि०—बी० ए०, रतलाम, उज्जैन और इंदौर; सा०—भारतीय संस्कृति-सदन, रतलाम के उत्साही कार्यकर्ता; हिंदी-प्रचार में संलग्न, चिराग, बीबियों के ताज; प०—भारतीय संस्कृति-सदन, कोठारी मुहाल, रतलाम।

शिवशंकर पांडेय—ज०—१६०७; प्र०—१६३३; प्रका०—गो-साहित्य और कृषि-संबंधी

विषयों पर लिखा है; प०—पांडेय बंधु-आश्रम, इटारसी।

शिवशंकर शर्मा—शि०—बी० ए०, बी० टी० ; प्रका०—स्फुट कविताएँ ; अप्र०—भीगी पलकें ; प०—अध्यापक, धर्म-समाज हाई स्कूल, अलीगढ़।

शिव सहाय चतुर्वेदी—ज०—२८ अगस्त १८८८; शि०—नार्मल पास ; ज्ञा०—बँगला, गुजराती, मराठी ; सा०—संपा० व संयो० प्रेमी-अभिनंदन-ग्रंथ, संयो०—लोक सा० उपसमिति, सदस्य बुन्देलखंड सा० सम्मेलन; काँग्रेसी कार्यकर्ता, नागरिक सभा और स्थानीय वोटर्स असोसिएशन के संस्थापकों में ; प्रका०—भारतीय नीति-कथा, सती-प्रथा का इतिहास, सतीदाह, गृहिणी - भूषण, योरप में बुद्धि-स्वातन्त्र का इतिहास, बैलून - विहार, जननी - जीवन, आदर्श बहू, छाया - दर्शन, रामकृष्ण के सदुपदेश, मेरे गुरुदेव, बुन्देलखंड की ग्राम्य कहानियाँ, आर्थिक सफलता, स्वास्थ्य-संदेश, वाणिज्य या व्यवसाय-प्रवेशिका, बच्चों के सुधारने के उपाय, स्त्रियों का कार्य-क्षेत्र ; अप्र०—पाषाण नगरी, केतकी के फूल, काठ का सुवा, होनहार बालक ; वर्त०—ग्राम-साहित्य-संकलन ; प०—देवरी, सागर।

शीलभद्र साहित्यिक(अंबिकाकान्त मिश्र)— शि०—सा० र०, बँगला, मैथिली, पंजाबी; सा०—'योगी' के संपा० मण्डल में रहे ; प्रका०—कामामनी-मीमांसा (मैसूर हिंदी परिषद की 'प्रभाकर' परीक्षा में स्वीकृत) ; अप्र०—चिर अतृप्ति (गद्य-काव्य); प०—व्यवस्थापक, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा।

शुकदेव दुबे—ज०—१६१६; शि०—बी० ए० तक, सा० रत्न ; ज्ञा०—बँगला, मराठी, गुजराती ; प्रका०—कौमुदी (कहा०), हिंदी-रचना, नैपोलियन, महाराणा साँगा, वनवासी राम , वनवासी पांडव ; अप्र०—झलकियाँ, मिजराब, मृत्यु-पथ पर ; प०—ठि० भारती भंडार,लीडर प्रेस, प्रयाग।

शुकदेव नारायण—ज०—मार्च १६२८; शि०—बी० ए० ; प्र०-१६४६ ; प्रका०—तीन ताड़

(कहा०),टेढ़ा क्रम (उप०);प०—पो० बाक्स ५६, बाँकीपुर, पटना।

शुकदेव पांडेय— जा०—१८६३ ; शि०— एम० एस-सी० म्योर कालेज इलाहाबाद, प्रका० वैज्ञानिक शब्दावली (ज्योतिष और गणित), गणित, बीजगणित, त्रिकोनामिति; प०—आचार्य, बिड़ला कालेज,पिलानी।

शुकदेवप्रसाद तिवारी,'निर्बल'—**ज०**—१८८८ ; **सा०**—भूत० संपा०—'पंचराज' नासिक, 'नवशक्ति' बंबई, 'नवीन राजस्थान', 'महिला-संसार', 'महिला-दर्पण', और हिंदी-साहित्य-ग्रंथ माला; सत्याग्रह-आन्दोलन में जेल; स्थानीय कांग्रेस के उपसभापति, स्थानीय म्यु० कमेटी के मंत्री ; संपादक—'हिंदू' ; **प्रका०**— ग्राम गीत , होली की राख, हिंदी गान-कुसुमांजलि, ग्रामीण जीवन, खद्दर-पचरत्न, राष्ट्र की ध्वनि, महिला सभा-सरोज; **अप्र०**—उषा (खंड काव्य), होशंगाबाद का इतिहास; **प०**—'निर्बल'-निकेतन,सोहागपुर।

शुकदेवप्रसाद वर्मा—**सा०**—**सद०** कार्यसमिति भारतेंदु साहित्य सम्मेलन, प्रबंधक श्यामसुंदर-ट्रस्ट, आन्दोलनों में कारावास; **प्रका०**—स्फुट लेख; **प०**—बलुआटाल, मोतिहारी।

शुकदेवराय—**ज०**— १६१६; **शि०**—विशारद; **सा०**—उप-सभा०-पटना हिंदी साहित्य परिषद्, स० मंत्री विहार प्रादेशिक हि० सा० स०; **प्रका०**—स्फुट कहानियाँ और बिहार की लोक - कथाएँ ; **अप्र०**— रैन - बसेरा (उप०); **प०**— सहकारी संपादक 'हुँकार' साप्ताहिक,पटना।

शुकदेव सिंह , 'सौरभ'—**ज०**—१६०१; **प्रका०**—कविता—शरशय्या, साकेत-संताप, अमरत्व; उपन्यास—मिलन, आदर्श-जीवन, हम क्या चाहते हैं ! जीवन-संग्राम आदि; **प०**—टीकमगढ़ ।

शुभकरण कविया—**ज०**—१६०६; **शि०**—एम० ए० (हिंदी १६३६); एल-एल० बी० काशी विश्वविद्यालय; **सा०**—स्थानीय हिंदीप्रचारिणी सभा के संस्थापकों में, दो वर्ष तक उसके मंत्री रहे, प्रधान मंत्री अखिल भारतीय चारण-सम्मे० ; **प्रका०**—स्फुट

काव्य और आलोचनात्मक लेख; प०—न्यायाधीश, न्याय-विभाग, जोधपुर।

शेषनारायण— ज०— १२ फरवरी १६१२ ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० प्रयाग वि० वि०, हि० सा० सम्मे० प्रयाग से सा० र० १६३६ में, राजकीय संस्कृत कालेज से शास्त्री; सा०—सा०समितियों की स्था०, रामायण-गीता-परीक्षा-केन्द्र की स्थापना; प्रका०—स्फुट ; प०—दारागंज, प्रयाग।

शेषमणि त्रिपाठी— ज०— १८६८ कोटिया, बस्ती; शि०—प्रयाग, आगरा, काशी ; एम० ए०, सा० र०, बी० टी०; सा०—शिक्षा-विभाग में आजमगढ़, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया और सुल्तान-पुर आदि स्थानों के इंस्पेक्टर तथा इंचार्ज डिपुटी इंसपेक्टर; प्रका०—अकबर की राज्य-व्यवस्था, वेणी-विमर्श, शिक्षा का व्यंग्य, स्काउट, रोवर स्काउटों की दीक्षा-संस्कार, माता का हृदय, माघ - विमर्श, दंडीविमर्श, आलमगीर के पत्र, निबंध-निचय और तैराकी; प०—डिप्टी इंसपेक्टर आव स्कूल्स, इलाहाबाद।

शैलकुमार दत्त-ज०—१६१५; शि०—इंटर तक; प्रका०—चावल के दाने, बंगाल का अकाल, संगीत; प०—१०|१०० खलासी लाइन, कानपुर।

शैलकुमारी चतुर्वेदी—ज०— १० जूलाई १६२३ ; शि०—प्रभाकर, मैट्रिक, विशारद; प्रका०—पाकशास्त्र ; अप्र०—कमला नेहरू (जीवनी) , महिला - गीतांजलि (गीति-संग्रह) , गल्प संग्रह, एकांकी संग्रह ; प०—ठि० श्री उमेश चतुर्वेदी, जयपुर।

शैलबाला—ज०—मार्च १९-२२; शि०—इंदौर, बी० ए०, बी० टी०--काशी वि० वि०; सा०—हैदराबाद और औरंगाबाद रेडियो से एकांकी, कविताएँ आदि प्रसा-रित, हैदराबाद के हिंदी माध्यम के हाईस्कूल की भूत० प्रधाना-ध्यापिका, हैदराबाद में हिंदी प्रचार-सभा की परीक्षाओं की संचालिका; प०— ठि० हिंदी प्रचार - सभा , हैदराबाद , दक्षिण।

श्याम जी शर्मा — ज० — १८७४ ; प्र०—१८६५ ; प्रका० —श्यामविनोद रामायण, श्याम-विनोद-दोहावली (७०० दोहे), रामचरितामृत महाकाव्य, वृंदविलास (वृंद के दोहों पर कुंडलियाँ), अबलारक्षक, खड़ी बोली-पद्यादर्श, स्वाधीन विचार, विधवा-विहार ; प०—भदवर, बिहार ।

श्यामदत्त मिश्र — ज० — १९०२; शि०—१९३० में मैट्रिक, पटना ट्रेनिंग स्कूल से सी० टी० (स्वर्णपदक और सम्मान के साथ), बी० ए० ; सा० — १९३२ में अध्यापक, भारतेंदु-साहित्य-परिषद् के संचालक ; 'सैनिक' (आगरा) और 'संत-संदेश '(गया) के भूत० सह० संपा०, 'प्रदीप' (गया) और 'शिक्षक-संदेश' (गया) के प्रधान संपा०; १९३१ में भरतपुर में श्रीगणेश-पुस्तकालय की स्थापना, प्रकाश-परिषद्, यंग सिटीजंस यूनियन तथा स्थानीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के कार्यकर्ता ; प्रका० — रघुवीर-गाथा (जीवनी १९३३) ; अप्र०—रीतिकाल के कवि ; प०— प्रधान हिंदी अध्यापक, राजेंद्र विद्यालय, गया ।

श्यामधारी प्रसाद — ज०— १९०६ ; प्रका० — रुदन ; प० — सभापति, लोकल बोर्ड, मुजफ्फरपुर ।

श्यामनारायण कपूर—ज०— १९०८ ; शि०—बी० एस-सी०, ए० एच०, बी० टी० आर्ट०, कानपुर; सा०—साहित्य-संस्थाओं, पुस्तकालयों और बाल-संघ के संस्था०, हिंदी साहित्य-पुस्तकालय मौरावाँ, आयल टेकनालाजिस्ट एसोसियेशन इंडिया तथा साहित्य-निकेतन कानपुर और बरेली के सचा० ; प्रका०—जीवट की कहानियाँ, विज्ञान की कहानियाँ, भारतीय वैज्ञानिक, आविष्कारों की कहानियाँ, बिजली और अन्य कहानियाँ, फोटोग्राफी और अन्य कहानियाँ, साबुन-विज्ञान; अप्र० —हिमालय-आरोहण, पुस्तकालय-विज्ञान, भारतीय तिलहन व उसके तेल ; प० — साहित्य-निकेतन, श्रद्धानंद पार्क, कानपुर ।

श्यामनारायण पांडेय—ज०— १९१० ; शि०—सा० रत्न, सा०

आ०; सा०—रिसर्च स्कालर के रूप में राजकीय संस्कृत कालेज में भूत० साहित्यिक अन्वेषक ; प्र०—त्रेता के दो वीर ; प्रका० — हल्दी घाटी, जौहर (महा०), आरती (स्फुट), तुमुल (खंड०), रूपान्तर (अनु०) ; वि०—'हल्दी घाटी' पर देव-पुरस्कार प्राप्त किया और 'जौहर' पर ना० प्र० स० काशी द्वारा वर्ष का सर्वश्रेष्ठ काव्य घोषित होने के कारण 'द्विवेदी-पदक' मिला ; प०—सारंग तालाब, बनारस कैंट।

श्यामनारायण बैजल—ज०—२० नवंबर १६१३; शि०—एम० ए० (हिंदी) प्रथम श्रेणी, कानपुर, एल० टी० (प्रयाग); अप्र०—दुलहिन की बात तथा अन्य कहानियाँ, साहित्य के द्वार पर, भारतीय संगीत, भारतीय ललित कलाएँ ; प० — वकील, मदारी दरवाजा, बरेली।

श्याम बर्थवार—ज०—दिसंबर १६०५ ; सा० — भूत० संपा० साप्ता० 'चिनगारी' गया १६३६, मासिक 'गरीब' गया १६४६, और सप्ता० 'क्रांति'; प्रका०—बंदियों का स्वर्ग, लेनिन, क्रांति या प्रतिक्रिया, हमारा समाज, लेनिन और स्टालिन, मजदूर क्रांति, समाज-विज्ञान, वैज्ञानिक समाजवाद, धुआँ (उप०), गद्दार (उप०); प०—कचहरी रोड, गया।

श्यामबहादुर सिंह— ज०—१६१४, सुलतानपुर; सा०—बम्बई प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्थायी सदस्य, राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के प्रमुख कार्यकर्ताओं में, हिन्दी-ज्ञान मंदिर लि० की प्रकाशन-समिति के सदस्य ; प्रका०—स्फुट लेख और कहानियाँ; प०—१०६, पारसी बाजार स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई।

श्याममनोहर त्रिपाठी—सा०—स्थानीय हिंदी-परीक्षा-केंद्र के व्यवस्थापक और हिंदी-प्रचार सभा के उत्साही कार्यकर्ता, मेदक जिले के कई स्थानों में हिंदी-प्रचार का कार्य आपके प्रयत्न से ही आरंभ हुआ ; प०—हिंदी-परीक्षा-केंद्र-व्यवस्थापक, संगारेड्डी, मेदक (दक्षिण)।

श्याममोहन त्रिवेदी—ज०—रायबरेली; शि०—एम० ए० तक (हिन्दी) प्रयाग वि० वि०; प्रका०—स्फुट; प०—अध्यापक, हुसेनगंज, फतहपुर।

श्यामलाल काबरा—ज०—१८६६; शि०—मैट्रिक तक; सा०—स्थानीय हिंदी-साहित्य-परिषद् के सदस्य; प्रका०—समाजसुधार-संबंधी स्फुट गायन जो सामाजिक ट्रैक्टों के नाम से छप चुके हैं; प०—ठि० हिंदी-साहित्य-परिषद्, जयपुर।

श्यामलाल कुटरियार—ज०—१९०५; सा०—बिहार प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सदस्य और पुस्तकालय विभाग के कार्यकर्ता; प्रका०—विज्ञान-संबंधी स्फुट लेख; प०—ग्राम अकबरपुर, गया।

श्यामलाल राठौर—सा०—स्थानीय हिंदी-प्रचार-सभा के मंत्री, हिंदी-परीक्षाओं के केंद्र-व्यवस्थापक और हिंदी-प्रचारक; गाँव-गाँव घूमकर हिंदी का संदेश पहुँचाया, हिन्दी-शिक्षण-वर्गों का संचालन और निशुल्क हिंदी अध्यापन किया, स्थानीय हिंदी-प्रचार-सभा की स्थायी समिति के सदस्य, आर्य-समाज तथा प्रत्येक सार्वजनिक संस्था के कार्यकर्ता; प्रका०—स्फुट; प०—मंत्री हिंदी-प्रचार-सभा, नाँदेड़, दक्षिण।

श्याम वदन पाठक, 'श्याम'—ज०—मार्च १९२१; प्रका०—सरदार पटेल, सरोजिनी नायडू; वि०—रेडियो पर कहानी और कविताएँ; प०—मूक-बधिर विद्यालय, बाँकीपुर, पटना।

श्यामविहारी तिवारी, 'देहाती'—सा०—भूत० मंत्री चंपारन जिला साहित्य-सम्मे०; अप्र०—देहाती-दुलकी; प०—बसवरिया, बेतिया, चंपारन।

श्यामविहारी मिश्र, रावराजा डाक्टर—ज०—१२ अगस्त १८७३ इटौंजा; शि०—एम० ए०, डी० लिट्०, बस्ती, लखनऊ। सा०—कौंसिल आव स्टेट के भूत० माननीय सदस्य १९२४-२८, प्रका०—लवकुशचरित्र, मदन-दहन, विक्टोरिया-अष्टदशी, व्यय, भूषण-ग्रंथावली-टीका, रूस का संक्षिप्त इतिहास, जापान का

संक्षिप्त इतिहास, हिंदी हस्तलिखित ग्रंथों की खोज की रिपोर्टें, मिश्रबंधुविनोद—४ भाग, हिंदी नवरत्न, भारतविनय, पुष्पांजलि, वीरमणि, बुद्धपूर्व भारत का इतिहास, मुस्लिम आक्रमण के पूर्व भारत का इतिहास, आत्म-शिक्षण, बूँदी-वारीश, सूरसुधा, गद्यपुष्पांजलि, सुमनांजलि, उत्तर भारत-नाटक, नेत्रोन्मीलन, पूर्वभारत नाटक, शिवाजी, धर्मतत्त्व, ईशानवर्मन, हिंदी साहित्य का इतिहास, हिंदी-अपील, संक्षिप्त हिंदी-नवरत्न, हर-काशी-प्रकाश, देवसुधा, विहारीसुधा, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, रामराज्य-नाटक; प०—मिश्रभवन, गोलागंज, लखनऊ।

श्यामसुंदर गुप्त—ज०—१८ जूलाई १९२४, गोसाईंगंज; शि—सा० रत्न ; अप्र०—हल्दीघाटी-एक आलोचनात्मक अध्ययन; वर्त०—१८५७ की महाक्रांति नामक पुस्तक लिख रहे हैं; प०—अध्यापक गोसाईंगंज, फैजाबाद।

श्यामसुन्दरपालीवाल, 'मधुर'—ज०—१९११; प्रका०—स्फुट कविताएँ प०—नारहट, झाँसी।

श्यामसुंदर माणिक प्रसाद दुबे—सा० — स्थानीय हिंदी-प्रचार-सभा के सहयोगी कार्यकर्ता और काँग्रेसी; प्रका०—स्फुट; प०—हिंदी अध्यापक, हलीखेड़, बीदर (दक्षिण)।

श्यामसुंदर लाल दीक्षित—ज०—१६ अगस्त १९१४; शि०—एम० ए०, सा० रत्न, कविरत्न, प्रभाकर; सा०—भूत० संपादक मासिक 'मराल', अँगरेजी 'ग्लोब', 'सनाढ्योपकारक' और दैनिक 'ताजा समाचार'; प्रका०-काव्य—जवाहर-दोहावली, भारती, हुंकार, गांधी - त्रयोदशी, १५ अगस्त, पुरुषोत्तम, श्याम-संदेश; जीवनी—सरदार वल्लभ भाई पटेल, राजगोपालाचार्य, सरोजिनी नायडू; विजय लक्ष्मी पंडित; नाटक—भर्तृहरि, सत्य हरिश्चंद, शकुंतला, दहेज के नाम पर; कहानी—शहरों के परदे में, मुगल बादशाह, नारंगियाँ, उरोजी; अनुवाद—सुहद-भेद-मित्रलाभ, ट्रैविलर; आलोचना—प्रेमचंद और गोदान, व्रज-माधुरी-सार की टीका, विनयपत्रिका,

कवितावली की टीका, सेवासदन; अप्र०—उर्मिला, गीता, इला; प०—प्राध्यापक, हिंदी विभाग, बरेली कालेज, बरेली।

श्यामसुंदर व्यास— ज०—३ सितंबर १९२७; शि०—एम० ए० (हिंदी) आगरा वि० वि०; सा०—भूत० संपा० दैनिक 'नयी दुनिया' (तीन वर्ष तक), साता० 'हजामत' और दैनिक 'अशोक'; प्रका०—पुरखों की नाक, स्वर्ग का अतिथि, तीर्थ-यात्रा, सुबोध नागरिक शास्त्र; अप्र०—गिलट के झुमके, कविता (उप.), देश-देश के विधान, मालवा के साहित्यिक; वर्त०—अध्यापक मालव-कन्या-विद्यापीठ, इंदौर; प०—६ लोधीपुरा, इंदौर १।

श्यामसुंदर शर्मा—प्रका०—तिलोत्तमा (नाटक), आधी रात (उप.), वह और मैं (कहा.); प० — २१५, बहादुरगंज, प्रयाग।

श्यामसुन्दर, 'श्याम'—शि०—सा० लं०, शास्त्री; प्रका०—स्फुट और शिशु; अप्र०—मंगल प्रभात और बैजू-विजय; प०—संस्कृताध्यापक, गाँधी राष्ट्रीय विद्यालय, हमीरपुर।

श्यामसुन्दर, 'श्यामू संन्यासी'—जा०—मराठी, गुजराती, अँगरेजी, उर्दू; सा०—भूत० प्रबन्धक सरस्वती प्रेस बनारस, 'आपबीती' और 'मजदूर' का संपा०, 'हंस' और 'कहानी' के सम्पा० में सहयोग; रियासती जनता में आंदोलन के लिए तीन वर्ष की कैद; प्रका०—कोयले, ईंट-रोड़े, मजदूर, नये नाटक, नये मोती, यह समय आराम का नहीं, चित्रलेखा यशोधरा, काराटामारा, रूसी लोककथाएँ, शहादत, स्नेहपट्टा, कँटीले तार; अप्र०—लुँगाड़े, गुनहगार, हम नहीं आयेंगे, पथ के पत्थर; वर्त०— कम्युनिस्ट पार्टी के प्रकाशन-विभाग का संगठन; प०—संचालक-सहयोगी प्रकाशन-विभाग, हीराबाग, बम्बई।

श्यामाकांत पाठक—ज०—१८९७; शि०—सा० शास्त्री, बी० लिट्; प्रका०—श्याम-सुधा, बुंदेलकेसरी, ऊषा, दर्पदमन, भारतीय ज्योतिष शास्त्र; वि०—बुंदेल केसरी पर आपको महेंद्र

महाराज पन्ना ने १०००) का पुरस्कार दिया ; प०—जबलपुर।

श्रीअनन्त शास्त्री — ज०—१६२०, फगवाड़ा नगर (पूर्वी पंजाब); शि०—लाहौर और कपूरथला से प्रभाकर, मौलवी फाजिल, मुंशी फाजिल और आदिम फाजिल ; जा०—अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत, लैटिन, ग्रीक, स्पेनिश, इजिप्शियन और पाली आदि बीस भाषाओं के विद्वान; सा०—समय-समय पर ईरान, अफगानिस्तान, अरब, इजिप्ट, न्याजा लैंड, बेलजियम और कांगो आदि देशों का भ्रमण किया ; केनिया में हिंदी-प्रचार कार्य आरम्भ किया, मोम्बासा में आठ केंद्र, तथा पूर्वी अफ्रीका के नैरोबी, किसुम, कम्पाला, दारेसलाय, अरुशा, मोशी, नकुस, टाँगा आदि नगरों में एक-एक दो-दो केंद्र स्थापित किये ; विशेष प्रयत्न करके यहाँ के राजकीय बालक और बालिका विद्यालयों में हिंदी-शिक्षा का प्रबन्ध कराया; हिंदी का एक पत्र प्रकाशित करने और हिंदी-प्रेमियों का एक सम्मेलन बुलानेकी योजना ; वर्त०—केनिया सरकार के शिक्षा-विभाग में काम कर रहे हैं ; प०—पोस्टबाक्स १३१, मोम्बासा, कीनिया ; अथवा पोस्टबाक्स ३८१३, नैरोबी, कीनिया।

श्रीकांत — प्रका० — मगही लोकगीतों की रूपरेखा ; प०—मगध विद्यापीठ, नारायणपुर, एकानसराय, पटना।

श्रीकांत शास्त्री — शि०—मैट्रिक १६४२, शास्त्री १६४८ काशी विद्यापीठ ; सा०—भूतपूर्व सम्पादक कलकतिया 'आलोक' और मासिक 'नया कदम'; प्रका० स्फुट लेख ; अप्र०—सेक्स और हंगर ; प०—मलयपुर, मुंगेर।

श्रीकृष्ण अग्रवाल—ज०—१५ फरवरी १६२६, शि०—बी० ए० ; सा०—संस्थापक हिन्दुस्तानी-सेवा-दल, साहित्य-मंत्री—क्रियाशील कलाकार - मण्डल; प्रका०—स्फुट ; प०—ब्राह्मण घाट, करेली (मध्य प्रांत)।

श्रीकृष्णपद भट्टाचार्य—ज०—२२ अप्रैल १६०६, सीलट

शि०—वेदांतशास्त्री ; सा०—सहा० संपा० बँगला-हिंदी-विश्व-कोश ईनसाइक्लोपीडिया ; १६२१ के अहिंसा-आंदोलन में सक्रिय भाग ; प्रका०—स्फुट लेख ; प०—आचार्य, आयुर्वेद विश्व-विद्यालय, झाँसी ।

श्रीकृष्ण मिश्र—ज०—१८६४; शि०—एम० ए०, बी० एल ; सा०—सभा० स्थानीय हि० सा० सम्मे०; प्रका०—महाकाल-उप०, प्रेमा-उप०; देवकन्या-नाटक ; प०—वकील , वाणी- मंदिर, छोटी केलावाड़ी, मुंगेर ।

श्रीकृष्णराय, 'हृदयेश'—ज० १६११ ; सा०—नागरी प्रचारिणी सभा गाजीपुर के व्यवस्थापक और प्रधान मन्त्री; प्रका०—युवक और हिमांशु; प०—अध्यापक, एम० ए० बी० हाई स्कूल, गाजीपुर ।

श्रीकृष्ण लाल—ज०—मार्च १६१२ ; शि०—एम० ए०, डी० फिल, प्रयाग विश्वविद्यालय ; प्रका० — आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास—१६०० से १६२५ तक (डी० फिल की डिग्री के लिए लिखित थीसिस का अनुवाद), हिंदी कहानियाँ ; प०—प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, विश्व-विद्यालय, काशी ।

श्रीकृष्ण शर्मा—ज० — ४ अगस्त १६०१ ; सा०—फिजी में कई साल तक आर्यसमाज और हिंदी का प्रचार, फिजी के 'वैदिक संदेश' के संस्थापक-संपादक, कई पुस्तकें लिख चुके हैं ; वर्त०—सम्पादक 'आर्य-ज्योति' ; प०—आर्य समाज, राजकोट ।

श्रीधर पंत—शि०—एम०ए० (संस्कृत, हिंदी), बी० टी०—प्रका०—तुलसी-मंजरी (तुलसी-काव्य-संकलन) ; प्रि० वि०—संगीत ; प०—प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, बरेली कालेज, बरेली ।

श्रीधर शंकर जोशी—ज०—१६ अगस्त १६०२ ; शि०—मैट्रिक १६२०, एफ०ए० १६२३, बी०ए० १६२५ प्रयाग वि०वि० से, एम० ए० (हि०) १६३२; आगरा—वि० वि०, बी० टी०— १६३३ नागपुर वि० वि०; प्रका०—स्फुट लेख, ग्रंथ बोर्ड आव हाई स्कूल ऐंड इंटर० शिक्षा अजमेर;

वर्त०—अध्यापक महाराज शिवाजी राव हाईस्कूल, इंदौर; प०—१२ रेशम वाला लेन, इन्दौर।

श्रीनाथ पालित—ज०—१६०६; शि०—प्रवेशिका कलकत्ता विश्वविद्यालय १६३०, विशारद; सा०—केसरवानी हिंदी पुस्तकालय के संस्था०, म्यूनिसिपल कमिश्नर, जातीय सभाओं के मंत्री, गौरक्षण संस्था के सद०; भूत० संपा० 'केसरी' और 'चिनगारी'; स्थानीय-हिंदी-साहित्य-सभा के सहयोगी, अष्टम बिहार प्रांतीय सम्मे० के मंत्री, गोरक्षा-सम्मे० के प्रथम अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष; प्रका०—द्वंद्वात्मक भौतिकता अथवा समाजवादी फिलासफी, गोवंश का व्यावहारिक रूप, लव-कुश नाटक; प०—३६, कचहरी रोड, गया।

श्रीनाथ मिश्र—ज०—१७ जूलाई, १६०३; शि०—सा० रत्न; अप्र०—कलकंठी, कलंकिनी, मधुवन; प०—अध्यापक म्युनिसिपल स्कूल, गाजीपुर।

श्रीनाथ मोदी—ज०—२० जून १६०४ जोधपुर; सा०—हिन्दी-प्रचारिणी-सभा जोधपुर के संस्थापकों में, २३ वर्ष की सरकारी नौकरी छोड़कर हिन्दी के प्रचार-कार्य को स्वीकारा, ज्ञान-भंडार संस्था की स्थापना की, हिंदी-परीक्षार्थी-सहायक पुस्तकालय खोला, जादू की लालटेन द्वारा चार वर्ष तक गाँवों में प्रचार-कार्य, जातीय-पत्र 'ओसवाल मारवाड़ी जैन विकास' का संपा०; प्रका०—अर्द्ध भारत की समस्याएँ, उगता राष्ट्र, पंचों की बड़ी पूजा, पंचों को कुकड़ूँकूँ, सुधार-संगीत—४ भाग, स्त्रियों के शुभ गीत—२ भाग, ज्ञानमाला, २६ ट्रेक्ट, ग्रामसुधार नाटक, जिनगुणमाला, मुनिज्ञान सुन्दर, तीन भालू, चियाँ मियाँ, धनवान बनने का सरल उपाय; प०—किताब घर, सोजती गेट, जोधपुर।

श्रीनाथ सिंह, ठाकुर—ज०—१६०१; सा०—संपादक 'गृहलक्ष्मी' १६२४, 'शिशु' १६२४, 'देशबंधु' १६२६, 'बालसखा' १६२६ से कई वर्ष तक, साप्ता० व दैनिक 'अभ्युदय' १६३१, 'सरस्वती' १६-३४-३८, 'देशदूत' १६३६ से कई

वर्ष तक, हिंदी-उर्दू 'हल' १६३६, १६४० में हिंदी पत्र 'दीदी', संस्थापक 'दीदी'-प्रेस, 'बालबोध' मासिक का प्रकाशन; प्रका०—प्रजामंडल, जागरण, उलझन, एकाकिनी, स्त्रीदर्पण; प०—'दीदी'-कार्यालय, इलाहाबाद।

श्रीनारायण चतुर्वेदी—ज०—१६१६, सा०—संपा० 'अमर ज्योति', राजस्थान-पत्रकार-संघ के संयो०, जयपुर-पत्रकार-संघ के मंत्री, सेंट्रल मारकेटिंग ऐंड इंडस्ट्रियल फेडरेशन के डायरेक्टर, प्रांतीय कांग्रेस के सदस्य; प०—प्रधान सम्पादक 'अमर ज्योति', जयपुर।

श्रीनारायण चतुर्वेदी, 'श्रीवर'—ज०—जनवरी १८६५; शि०—एम० ए०, एल० टी०—प्रयाग; सा०—लीग आव नेशंस जेनेवा की शिक्षा-विशेषज्ञ समिति के सद० १६२६—३०; वर्ल्ड फेडरेशन आव एजुकेशनल एसोसिएशंस, टोरंटो के भारतीय सदस्य; व्यवस्थापक शिक्षाविभाग एवं कृषि औद्योगिक प्रदर्शनी लखनऊ; प्रका०—कई कविता-संग्रह, अनेक साहित्यिक लेखसंग्रह, उत्तरप्रदेशीय शिक्षा-प्रसार-विभाग के भूत० अध्यक्ष; प०—अखिल भारतीय रेडियो, दिल्ली।

श्रीनारायण शर्मा गौतम—ज०—१६८६; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—वैद्य, जयपुर।

श्रीनिवास—ज०—२ अक्टूबर १६२०; शि०—सा० लं०; जा०—कन्नड़, मराठी, गुजराती; सा०—बम्बई-हिन्दी विद्यापीठ के अन्तर्गत शिक्षण, कारावास दण्ड प्राप्त; प्रका०—स्फुट लेख; वि०—मातृभाषा कन्नड़; वर्त०—सहा० सम्पा० 'रामराज्य'; प०—२५ मजीदाबाद, सूटरगंज, कानपुर।

श्रीनिवास उपाध्याय—शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०; सा०—दो-तीन सार्वजनिक संस्थाओं के प्रधान; वि०—चौधरी 'प्रेमघन' के छोटे भाई हैं; प०—अयोध्या।

श्री निवास दगडूलाल शर्मा—सा०—हैदराबाद-हिन्दी-प्रचार-सभा परभणी के मन्त्री, स्टेट सत्याग्रह में प्रमुख भाग लिया; प्रका०—स्फुट; प०—हिन्दी-प्रचार-सभा परभणी (दक्षिण)।

श्रीनिवास राघवन—शि०—एम० ए० ; जा०—संस्कृत, अँगरेजी; सा०—'नरसिंहप्रिया' नामक हिंदी पत्र के संपा०; प्रका०—स्फुट निबंध; प०— संपादक 'नरसिंह-प्रिया', पुदुकोटाई, मद्रास ।

श्रीपतिलाल दुबे— सा०—साप्ता० 'सैनिक' आगरा के प्रकाशक ; अनेक बार जेल यात्रा ; अप्र०—स्फुट काव्य ; प०—'सैनिक'-कार्यालय, आगरा ।

श्रीपति शर्मा— ज०— ६ नवंबर १९२०; शि०—एम०ए०, बी० टी०, सा० रत्न ; सा०—सेकसरिया कालेज, बस्ती में अँगरेजी विभाग के अध्यक्ष; हि०सा० स० प्रयाग और महिलाविद्यापीठ-परीक्षा केंद्रों के व्यवस्थापक, ना० प्र० स० बस्ती के मंत्री; प्रका०—कहानी-और प्रेमचंद; प०— प्राध्यापक, सेकसरिया कालेज, बस्ती ।

श्रीपत्त शर्मा— ज०—१९०७; मालवा (भूपाल) ; शि०—किशनगढ़; अप्र०—फागबिहार, प्रहेलिका-पच्चीसी; प०—ठि० राजकवि श्री घनश्यामदास जी, किशनगढ़ ।

श्रीप्रकाश जैन—ज०—१९१५; शि०— १९३४ में न्यायतीर्थ, १९३५ में जैन - दर्शन - शास्त्री, १९३६ में काव्यतीर्थ ; प्र०—१९३३ ; सा०—भूत० संपा० 'जैनबंधु'; प्रका०—स्फुट; अप्र०—'निक्षेपचक्र' (संस्कृत से अनु०) ; प०—जयपुर ।

श्रीमन्नारायण अग्रवाल—ज०—जूलाई १९१२; शि०—एम० ए०; सा०—कई साल तक 'सबकी बोली' और 'राष्ट्र भाषा-समाचार' के संपादक रहे, १९३९ से १९४२ तक समिति के प्रधान मंत्री रहे; प्रका०—सेगाँव का संत, रोटी का राग और मानव नामक कविता-संग्रह ; वि०—१९३५ में आई० सी० एस० के लिए इँगलैंडयात्रा; प०—आचार्य, गोविंदराम सेकसरिया कालेज आव कामर्स, वर्धा ।

श्रीमन्नारायण शास्त्री— ज०—१९०१ अलवर ; प्र०—१९२४ ; प्रका०—प्रेमोल्लास और विनय-विनोद नामक काव्य; प०—प्रधान संस्कृत अध्यापक, अलवर हाई स्कूल, अलवर ।

श्री मोहनशरण मिश्र—शि०—बी० ए०, साहित्याचार्य, व्याकरण

चार्य, वेदांततीर्थ, विशारद; **अप्र०**—व[illegible] देन, ध्वन्यालोक ; **प०**—प्र[illegible] हिंदी अध्यापक, निर्भय नरेंद्र [illegible]ल, निरंजनपुरा, गया।

श्री[illegible] चैतन्यप्रकाश—सा०—भूत० सहा० संपा० मासिक 'मित्र' और साप्ता० 'समाज - सेवक', हिं० प्रचा० सभा राजासाही बंगाल के मंत्री, पुस्तकालय - पाठशालाएँ स्थापित कीं ; **प्रका०**—स्फुट ; **प०**—करसियाँग, दार्जिलिंग।

श्रीराम पांडेय—शि०—एम० ए० काशी विश्वविद्यालय; **प्रका०**—स्फुट ; **प०**—हिंदी अध्यापक, महाराजसिंह हाईस्कूल, बहराइच।

श्रीराम बोहरा—ज०—१९२३; **सा०**—भूत०संपा०—'मनोविज्ञान', 'सचित्र पद्यावली'; **प्रका०**—सिनेमा संसार का इतिहास, सिनेमा और साहित्य, राष्ट्रनिर्माण में सिनेमा, (कहा० संग्रह), आग की लपटें, टूटे तारे, घिरती दुनिया ; **अप्र०**—सिनेमा-निर्माण-कला; **वर्त०**—संपा० **'कला'** (मासिक) ; **प०**—परसराम बिल्डिग, पुल के ऊपर, जोधपुर।

श्रीराम, 'मधुकर'—ज०—१५ जनवरी १९२०, मुरार ग्वालियर ; **सा०**—संपा० 'पथिक', 'प्रवीर', (मासिक) और 'सावधान' (साप्ता०); **प्रका०**—मधुकर-गुंजन, उर-उद्गार (कवि०), अलकावली (कहा०) ; **प०**—'सावधान'-कार्यालय, पुखरायाँ, कानपुर।

श्रीराम मितल—ज०—१ अक्तूबर १९०३ ; **शि०**—आगरा कालेज से एम० ए०, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, विशारद ; **प्रका०**—गणित भाग २ और न्यू स्कूल रेखागणित दो भाग; **प०**—प्राध्यापक, गणित विभाग, बिड़ला कालेज, पिलानी जयपुर।

श्रीराम मिश्र—ज०—१८८९; **शि०**—बी० ए०, एल-एल० बी० देहली, शाहजहाँपुर, बनारस और इलाहाबाद ; **सा०**—अवैतनिक सहायक कलक्टर, सभा० वार एसोसियेशन फैजाबाद, मंत्री साकेत-साहित्य-समिति फैजाबाद, संस्थापक आदर्श ए० वी० स्कूल फैजाबाद, सभा०—हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन की डिविजनल कमेटी; **प्रका०**—सर्पिणी, हरिविलास-रामायण ; **प०**—ऐडवोकेट, श्रीनिकेतन, फैजाबाद।

श्रीराम शर्मा—ज०—१६१०; शि०—सा० रत्न ; सा०-संस्था० विदर्भ प्रान्तीय हिं० सा० संस्था ; प्रका०—हिन्दी साहित्य की वर्तमान विचारधारा, कलाकार का सत्य, बिखरी प्रतिमा ; वर्त०—संपादक मासिक 'प्रवाह', अकोला; प० — नार्मल स्कूल के सामने, अकोला, बरार ।

श्रीराम शर्मा—ज०—१८६५; शि०—बी० ए० ; सा०—मासिक 'विशाल भारत' कलकत्ता के संपादक ; प्रका०—शिकार, बोलती प्रतिमा, प्राणों का सौदा, हमारी गाएँ, झाँसी की रानी, पपीता, जीवनकण, जंगल के गीत, अश्रु-माल (अनुवाद), १६४२ के संस्मरण, नेता जी सुभाष (अँगरेजी में सपादित); प०—'विशाल भारत'-कार्यालय, कलकत्ता; अथवा बल्का बस्ती, आगरा ।

श्रीराम शुक्ल—ज०—१ जून १६०४; शि०—इंटर, सा० रत्न; सा०—भाषा-प्रचार, श्री मनोरंजन पुस्तकालय, श्री सरस्वती भवन पुस्तकालय, श्री विशारद हिन्दी मंडल, श्री नागरी-प्रचारक-समिति, श्री स्वतंत्र कवि मंडल, (सभी हरदा में) के मंत्री, अध्यक्ष अथवा जन्म-दाता ; संचा० काव्य सुमनमाला जिसके अंतर्गत ४ काव्य प्रकाशित हुए, अध्यक्ष भारतेंदु-अभिनय-मंडल ; प्रका० — शुक्ल-सुमन, भाग्य-विजय ; अप्र०—रत्नमाला, कंचन-प्रभात, काश्मीर-केशरी (नाटक) ; प०—गोदी पट्टी, बड़वाहा; अथवा ग्रेन कंट्रोल आफिस, बड़वाहा, इंदौर ।

श्री वत्स — ज०—१६२५ ; शि०—सा० रत्न; अप्र०—जीवन के रूप ; प०—व्यवस्थापक उमा प्रेस, धामपुर ।

श्री हरि—शि०—मैट्रिक तक; सा० — भूत० संपा० 'कर्मवीर', 'प्रताप' ; प्रका० — लाल किला, झाँसी की रानी, सन सत्तावन, बढ़े चलो, दिल्ली चलो ; प०—आजमगढ़ ।

श्रुतिप्रकाश वाशिष्ठ–सा०—पंजाब सरकार द्वाराप्रकाशित 'प्रदीप' के संपादन मेंसहयोग;प्रका०–स्फुट; प०–'प्रदीप'-कार्यालय,शिमला २ ।

संकटाप्रसाद बाजपेयी—ज० —१८६ ; शि०—बी० ए०,

एल-एल० बी० लखनऊ तथा प्रयाग ; **सा०**—१९१७ में बनारस हिंदू-विश्वविद्यालय कोर्ट के सदस्य निर्वाचित हुए, १९१८ से जिला बोर्ड का अवैतनिक कार्य, अवैतनिक मैजिस्ट्रेट, भूत० प्रतिनिधि केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा, १९१९ में नगर बोर्ड के सभापति नियुक्त हुए, सह० संस्था० सहकारी बैंक खीरी, सहकारी विभाग की प्रांतीय समिति के सदस्य, १९२६ में प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य, खीरी के शिक्षा-विभाग के भूत० सभापति, जिला बोर्ड के कर्मचारियों की प्रान्तीय सभाओं के भूत० सभापति, हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन तथा पुस्तकालय के मंत्री, गोशाला-समिति के सभापति, सदस्य प्रान्तीय सहकारी बैंक और गन्ना एडवाइजरी कमेटी, लखनऊ बोर्ड, खीरी प्रांतीय-संकीर्तन और रामायण मंडल के भूत० उपसभा०, श्री सनातन धर्म सभा हाई स्कूल के प्रबंधक, संपादक 'कान्यकुब्ज' पत्रिका, सभापति स्थानीय कविमंडल, सदस्य नागरी-प्रचारिणी-सभा और हिंदी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—लखीमपुर, खीरी।

सन्तकुमार वर्मा — **ज०** — ११ फरवरी १९१४ ; **शि०**—बी० ए०, एल-एल० बी० कलकत्ता और प्रयाग वि० वि० ; **प्र०**—१९३०, कैदी की अभिलाषा ; **सा०**—बिहार-प्रादेशिक हि० सा० स० की स्थायी समिति के सद०, सारन जिला हि० सा० स०, सीवान-साहित्य-परिषद, दयालबाग इंटर कालेज, कायस्थ पाठशाला, और विश्वविद्यालय कालेज आदि के मन्त्री ; कई पत्रों के सम्पादक, १९३० से कांग्रेस में कार्य और और आंदोलनों में सक्रिय भाग ; **प्रका०**—महादेवी वर्मा, घाघ और उनकी कहावतें, हमारे राष्ट्रीय कवि, कविवर निराला, आदि ; **वर्त०** — काव्य-कुटीर - प्रकाशन-मंडल का आयोजन ; **प०**—वकील, सारन, सीवान।

संतपाल शर्मा—**जा०**—गुजराती मराठी, उर्दू, अँग्रेजी; **सा०**—१९२५ में श्रद्धानन्दजी के साथ रहे, १९२७ आर्य-समाजदिल्ली मेंउपदेशक, बम्बई और मद्रास में हिंदी-प्रचार १९३५

में, संपा० 'अनाथ-हित-कारी', हिंदी प्रचार के लिए दिल्ली पंजाब में आंदोलन १९३७; १९४० में प्रसिद्ध पत्रकार बी० जी० हार्निमैन के पत्र 'बम्बईसेंटिनल' में संवाददाता; अप्र०—विश्व-वृत्तांत; प०—वृत्त-विवेचक, 'वेंकटेश्वर-समाचार' साप्ताहिक, बम्बई ४।

संतप्रसाद सिंह, 'संत'—ज०—११ फरवरी १८९७; शि०—सा० वि०; **प्रका०** — रामदूत, हरिजन गान, एलेक्शन; प०—प्रधान अध्यापक, हिंदी मिडिल स्कूल, चिरैयाकोट, आजमगढ़।

संतराम—ज०—१८८६ होशियारपुर; शि०—बी० ए०; **सा०**—'ऊषा' का संपादन-प्रकाशन १९१५-१७; 'भारती', 'युगांतर' के भूत० संपादक; **प्रका०**—एकाग्रता और दिव्यशक्ति, मानसिक आकर्षण द्वारा व्यापारिक सफलता, अलबरूनी का भारत—३ भाग, मानवजीवन का विधान, भारत में बाइबिल—२ भाग, कौतूहल भांडार, आदर्श पत्नी, आदर्श पति, दंपति मित्र, विवाहित प्रेम, बालक, शिशुपालन, रतिविज्ञान, रतिविलास, इत्सिंग की भारत-यात्रा, पंजाबी गीत, अतीत कथा, वीर गाथा, कामकुंज, दयानंद, स्वर्गीय संदेश, अंतर्जातीय विवाह, नीरोग कन्या, सुशील कन्या, रसीली कहानियाँ, सुंदरी-सुबोध, सद्गुणी बालक, बाल-सद्बोध, बच्चों की बातें, आदर्शयात्रा, सद्गुणी पुत्री, विश्व की विभूतियाँ, स्वदेश-विदेश-यात्रा, जानजोखिम की कहानियाँ, रणजीत-चरित, महिलामणिमाला, वीर पेशवा, गुरुदत्त लेखावली, लोकव्यवहार, कर्मयोग आदि लगभग पचास पुस्तकें।

संतोकलाल माणिकलाल भट्ट—ज०—२५ नवंबर १८९५; **शि०**—बम्बई, वर्धा से राष्ट्रभाषा-कोविद, हिंदी शिक्षक; **सा०**—राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति, वर्धा की ओर से प्रचारक और अवैतनिक अध्या०; **प्रका०**—गजल गीता, हिंदुस्तानी प्रारंभ (व्याकरण); **अप्र०**—कृष्ण जन्मोत्सव; प०—सीनियर क्लर्क एजूकेशनल इंस्पेक्टर, उत्तर विभाग, अहमदाबाद।

संपतकुमार मिश्र—सा०—भूत० संपादक 'माहेश्वरी-बंधु'

कलकत्ता (१९२६-३५); मारवाड़ी-ब्राह्मण-सभा और मारवाड़ी-मित्र-मंडल के प्रधान मंत्री; 'सनातन' और 'भारतीय धर्म' के प्रधान संपादक और राजस्थान क्षत्रिय महासभा के सहायक मंत्री; प०—लछमनगढ़, जयपुर।

संपतलाल पुरोहित—सा०—संपा० 'छाया' मासिक, दिल्ली; प्रका०—धरती के देवता; प०—साहित्य-मंडल, दीवान हाल, दिल्ली।

संपत्यकुमाराचार्य, डाक्टर—सा०—गोगी के प्रमुख हिंदी-कार्यकर्ता और प्रचारक, वनपर्ती में हिंदी का विशेष प्रचार किया, गोगी-हिंदी-प्रचार-सभा और परीक्षा-केंद्र के व्यवस्थापक; प्रका०—स्फुट; प०—हिंदी-प्रचार सभा गोगी, गुलबर्गा (दक्षिण)।

संपूर्णदत्त शर्मा—शि०—आयुर्वेदाशास्त्री; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—ठि० गोपाललाल शर्मा मिश्र, भरतपुर।

संपूर्णानंद, माननीय—ज०—१ जनवरी १८९१; शि०—बी० एस-सी०, एल० टी०, क्वींस कालेज बनारस और प्रयाग वि० वि०; सा०—अध्यापक प्रेममहाविद्यालय वृंदावन और हरिश्चंद हाई स्कूल बनारस, राजकुमार कालेज इंदौर (१९१५-१८), प्रधान अध्यापक डूँगर कालेज बीकानेर (१९१८-२१), प्राध्यापक काशी विद्यापीठ (१९२२ से), भूतपूर्व संपादक अँगरेजी दैनिक 'टूडे' (१९३०), हिंदी मासिक 'मर्यादा' (१९२१), अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के १९२२ से (कुछ समय छोड़कर) बराबर सदस्य रहे, उत्तरप्रदेशीय काँग्रेस कमेटी के तीन बार सभापति, अखिल भारतीय समाजवादी सम्मेलन के द्वितीय बंबई-अधिवेशन के सभापति, अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के उन्तीसवें पूना-अधिवेशन के अध्यक्ष, उत्तरीप्रदेशीय सरकार के शिक्षा-सचिव (१९३८-३९) और वर्तमान; 'समाजवाद' नामक ग्रंथ पर १२००), का मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिला; प्र०—१९१५; प्रका०—समाजवाद, अंतर्राष्ट्रीयविधान, सम्राट हर्षवर्द्धन, चेतसिंह और काशी का विद्रोह, महारानी सिंधिया, चीन की राज्यक्रांति, मिश्र की राज्यक्रांति,

भारत के देशी राष्ट्र, देशबंधु चितरंजनदास, महात्मा गाँधी, गणेश, ब्राह्मण, सावधान! आदि लगभग डेढ़ दर्जन ग्रंथ ; प०— जालपा देवी, बनारस; अथवा सेक्रेटेरियट, लखनऊ।

संपूर्णानन्दश्रीवास्तव—**शि०**—एम० ए०, बी० टी०, विशारद, ; **सा०**—आनंद पुस्तक भवन के संचालक और स्वामी ; **सभा०** ग्राम-पंचायत ; **प्रका०**—**संपा०**—जयहिंद-पुस्तक, बालबोध रीडरभाग १ व २, महात्मा गाँधी; **अप्र०**—नयन नीर, परिणय; **प०**—अध्यापक नेशनल हायर सेकेंडी स्कूल, काशी।

सच्चिदानंद सिंह (आनंदशास्त्री)—**सा०**—भूत० संपा० 'नव शक्ति' पटना ; **प्रका०**—स्फुट ; **वर्त०**— संचालक मुंगेर-प्रचार-विभाग; **प०**—गौरव डीह, खरग-पुर-हवेली, मुंगेर।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन—**ज०**—७ मार्च १६११ कसिया गोरखपुर; **प्र०**—१६२४; **सा०**—'विशाल-भारत' के भूत० संपा०; **प्रका०**—विपथगा, शेखर-एकजीवनी, भग्नदूत, विश्वप्रिया, वातायन, श्री-फ्लावर्स, आफ्टर डान, कैप्टिव ड्रीम्स, प्रिजिन डेज़ ऐंड अदर पोयम्स; **अप्र०**—पतन, बंदी, स्वप्न, त्रिशंकु, वेश, कम्युनिज़्म क्या है, ऐंगिल्स ; **वि०**—आजकल 'दिल्ली' से साहित्यिक पत्र मासिक 'प्रतीक' का संपादन-प्रकाशन कर रहे हैं ; **प०**—संपादक हिंदी मासिक 'प्रतीक', दिल्ली।

सतीशचंद्र—**ज०**—विष्णुपुर, सीतामढ़ी; **सा०**—किसान-सभा के प्रकाशन-प्रबंधक ; भूत० संपा० 'ज्योति' ; **अप्र०**—एशिया-दर्शन ; **प०**—सोशलिस्ट पार्टी, बाँकीपुर, पटना।

सतीशचन्द्र गुप्त—**ज०**—१६००; **शि०**—गुरुकुल वि० वि० वृंदावन, और पंजाब वि० वि०; **सा०**—१६२० से देश-सेवा में रत, 'गाँधी ग्राम-पत्रिका' के संपादक; **प०**—रेडक्रास बिल्डिंग, लखनऊ।

सतीशचन्द्र चित्रे—**ज०**—१८ अक्तूबर १६१७, झाँसी; **शि०**—एम० ए० (फिलासफी), बी० एस-सी० (कृषि) आगरा वि० वि० ; **ज्ञा०**—उर्दू, मराठी, फारसी, अँगरेजी, फ्रेंच, बँगला; **प्रका०**—जीवन और अंक, सोक्रेट

डाक्ट्रिन आव थाट, हमारे बाग और रसोई घर तथा अनेक बालोपयोगी पुस्तकें ; **अप्र०**— मनोवैज्ञानिक कहानियाँ, रेखाएँ (ह्रस्व सामुद्रिक),मानसिक शक्ति के चमत्कार,पौधों में जीव; **वि०**— तालाब के पौधों से आयोडिन निकालने में प्रयत्नशील; **प०**— रामचन्द्र भवन, हाथी भाटा, अजमेर ।

सतीशचंद्र शर्मा—**ज०**—ज०—१५ अगस्त १६१५; **शि०**—शास्त्री, सा० वि०; **सा०**– संस्था. पुस्तकालय, वाचनालय और व्यायामशालाएँ; मंत्री लोकमान्य समिति, भूत० संपा० 'सत्याग्रह-समाचार'१६१६ में, बिहार प्रांतीय हिंदी - साहित्य - सम्मेलन और हिं० सा० स० की स्थायी समिति के सद०, प्रधानमंत्री अ० भा० संस्कृत छात्र-संघ, अदालतों में देवनागरी लिपि के प्रचार-आंदोलनों में सक्रिय भाग; **प्रका०**–पाठ्यक्रम की पुस्तकें ; **प०**—संपादक 'नारद', छपरा ।

सत्यकुमार—**सा०**—हिंदी के कार्यकर्ता और प्रचारक; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—हिंदी अध्यापक, सरकारी हाई स्कूल, तांडूर, (दक्षिण)।

सत्यजीवन वर्मा—**ज०**—१८६८, बस्ती; **शि०**—एम० ए० काशी वि० वि०; **सा०**— अध्यापक कायस्थ पाठशाला विश्वविद्यालय कालेज प्रयाग १६२६, उत्तरप्रदेशीय हिंदुस्तानी एकेडमी प्रयाग के भूत० सुपरिंटेंडेंट १६२८, पुनः एकेडमी छोड़कर कायस्थ पाठशाला कालेज में हिंदी अध्यापक १६४६ से, हिंदी-लेखक-संघ की स्था० १६३४, मासिक 'लेखक' का संपा० और प्रका० १६३७, पुनः १६३५; 'दुनिया' के संपा० और प्रका०, शारदा-प्रेस के संस्था.; **प्रका०**—बीसलदेव रासो, सूर-रामायण, चित्रावली, नयन, मुरली- माधुरी प्रायश्चित, स्वप्नवासवदत्ता, प्रेम-पराकाष्ठा, १६ कहानियाँ, चीनी यात्री सूयेनच्वाँग, पतिनिर्वाचन, खलीफा, हिंदी के विराम-चिन्ह, व्याख्यानत्रयी, तार के खंभे, एलबम, जानी दुश्मन, लेखनी उठाने के पूर्व या लेखक-बंधु,

आकाश की झाँकी, विश्व की कहानी, प्रसिद्ध उड़ाके, आकाश पर अधिकार, एशिया की कहानियाँ, नैषध-चरित्र, मनोहर कहानियाँ—४ भाग, रूमानियाँ की कहानियाँ; **वि०**—हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान स्व० श्री जगन्मोहन वर्मा के सुपुत्र हैं, हिंदी लेकर एम० ए० करनेवालों में अपने प्रांत में अग्रणी ; **प०**—१०/बी०, बेली रोड, प्रयाग।

सत्यदेव एस०पांडेय—**ज०**—१२ जून १९२३ ; **शि०**—कृषि-विशारद; **प्रका०**—कृषि विषय पर स्फुट लेख; **प०**—संस्थापक, कृषि साहित्य-प्रचारक - संघ, साँवता वाडी, वरुड, बरार।

सत्यदेव स्वामी—**सा०**—हिं० सा० स० की कार्यकारिणी और पत्रकार-परिषद के सद०, दैनिक 'नवभारत' के सह० संपा० ; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—'नवभारत'-कार्यालय, नागपुर।

सत्यनारायण मोटूरि—**सा०**—१९३७-३८ में राष्ट्रभाषा-चार-समिति वर्धा के प्रधान मंत्री, पश्चात हिंदी-प्रचार-सभा मद्रास के प्रधान मंत्री; हिंदी-प्रचार-सभा (मद्रास) द्वारा प्रकाशित 'हिंदुस्तानी-समाचार' के कई वर्ष तक प्रधान संपादक रहे; **प०**—हिन्दी-प्रचार-सभा, त्याग रायनगर, मद्रास।

सत्यनारायण तिवारी—**शि०**—गुजराती, अँगरेजी ; **सा०**—लोकमत के सहा० संपा०;**प्रका०**—स्फुट ; **प०**—बांबे स्पेशल होटल महल, नागपुर।

सत्यनारायण देसु—**ज०**—१ जून १९२५ दोड्लेरू (दक्षिण); **शि०**—विशारद, राष्ट्रभाषा-प्रवीण (मद्रास) ; **प्रका०**—आचार्य रंगा, राष्ट्र की विभूतियाँ, भारत के नवरत्न, बाल-कथा-मंजरी, कथा-कुसुम, जीवन-सुधा ; **वि०**—कई पाठ्य-ग्रन्थों की टीकाएँ भी लिखीं, हाई स्कूल चिलकलूरिपेट (गुंटूर) में हिंदी अध्यापक और लक्ष्मी हिंदी-विद्यालय के संचा० हैं ; **प**—चौतरा स्ट्रीट, गुंटूर (दक्षिण)।

सत्यनारायण पांडेय—**शि०**—एम० ए० ; **सा०**—स्थानीय साहित्य-सभा के जन्मदाता और सभापति ; **प्रका०**— स्फुट

आलोचनात्मक निबंध और पाठ-ग्रंथ ; प०— प्राध्यापक हिंदी विभाग, सनातनधर्म कालेज कानपुर ।

सत्यनारायण लोया—सा०—स्थानीय वंशीलाल बालिका विद्यालय, दो मारवाड़ी विद्यालय, एक पुस्तकालय और मारवाड़ी शिक्षा-निधिके संचालन में आपका विशेष हाथ है ; हिंदी-प्रचार-सभा हैदराबाद के भूत० शिक्षा-मंत्री, प्रधान मंत्री (१९४४) ; सभा के अंतर्गत शिक्षा-मंडल के संयोजक ; प०—हैदराबाद (दक्षिण) ।

सत्यनारायण शर्मा—ज०—१९२१ ; ज्ञा०—संस्कृत, अँगरेजी फ्रेंच और जर्मन ; सा०—भूत० संपा० 'नव जागृति' और भूत० सह० संपा० 'जागृति' ; प्रका०—इन्कलाब जिंदाबाद, आत्महंता, टूटती जंजीरें, दुनिया मेरी दृष्टि में, आँसुओं का देश, जीवन - यात्रा और तूफान ; अप्र०—अधुनातन हिंदी साहित्य, गीता में मैंने क्या देखा; प०—अमरबाजार, राँची ।

सत्यनारायण शर्मा—शि०—व्या० आ०, सा० वि० ; सा०—लंका में ढाई वर्ष तक हिंदी-प्रचार; लंका नागरी-प्रचारिणी सभा का संस्थापन ; प्रका० — प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए सिंहली भाषा की पाँच पुस्तकें लिखीं ; अप्र०—हिंदी-सिंहली कोश; प०—प्रधानाचार्य खड्गप्रसाद राष्ट्रीय विद्यालय, कटक, स्टेशन मीरामंडी ।

सत्यप्रकाश, डाक्टर—शि०—बी० एस-सी०, एफ० ए० एस-सी० ; संपा०—समाचार-पत्र शब्द-कोश ; प्रका०—सृष्टि की कथा; अप्र०—अनेक सामयिक निबंध - संग्रह ; प०—बेली एवेन्यू, प्रयाग ।

सत्यप्रकाश, 'मिलिंद'—ज०—१९२२; शि०—सा० र०, बी० ए० प्रयाग विश्वविद्यालय; सा०—साम्यवाद का समर्थन ; अप्र०—प्रयोग कालीन बच्चन, आधुनिक साहित्य और कवि, यामा में नयी सूझ, सिगरेटशाला ; प०—अनूप शहर ।

सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, 'सत्य'—ज०—२ जनवरी १९१४ लखनऊ ; शि०—बी० ए० आनर्स, एम० ए० (इतिहास), एल० टी० १९३८, सा० र० १९४१; ज्ञा०—पाली, ब्राह्मी, खरोष्ठी ; सा०

— पुरातत्व - विषयक अनुसंधान लखनऊ वि० वि०, पंजाब वि० वि० में 'इंडियन अंग्डरदि गुप्ताज' विषय पर थीसिस समर्पित की जिसका साम्प्रदायिक अशांति के कारण निर्णय न हो सका, भारतीय विद्या - प्रचार समिति आगरा के सद०, प्रयाग महिला विद्यापीठ के अवैतनिक अध्यापक; प्रका०—इंडिया आव कालिदास, ए शार्ट नोट आव इण्डियन एजूकेशन ; वर्त०—सदस्य भारतीय वि० प्र० सभा, संस्कृत वि० वि० की स्था० में प्रयत्नशील ; प०—१२१ रेस्ट कैम्प, टूँडला, आगरा।

सत्यभक्त, स्वामी (दरबारीलाल जैन)—ज०—१८९९, शाहपुर, सागर; शि०—सागर और बनारस, सा० रत्न और न्यायतीर्थ ; प्र०—१९१८; सा०—स्याद्वाद विद्यालय काशी में अध्यापक १९१९, पश्चात सिवनी और इंदौर (९ वर्ष तक) में अध्यापक, १९३४ में सत्यसमाज, और वर्धा में सत्याश्रम की स्थापना, भूत० संपा० 'परवारबंधु' और 'जैन जगत' ; प्रका०—दृष्टिकांड, आचार, कांड, व्यवहार-कांड, नया संसार (भ्रमण-वृत्तांत), गागर में सागर, बिंदूत-सिंधु, नाग-यज्ञ (नाटक), मेरी विकास - कथा (रूपक), सत्यसंगीत (कविताएँ), आत्मकथा, सूरजप्रश्न, सुलझी गुत्थियाँ, चतुर महावीर, नयीदुनिया का नयासमाज, विवाह-पद्धति, ईसाई धर्म, जीवन और उपदेश, कृष्णगीत, बुद्ध-हृदय, जैन-धर्म-मीमांसा (खंड—दर्शन, इतिहास, ज्ञानकांड, चरित्रकांड), महात्मा राम, क्यों सलाम करूँ, शीलवती, लिपिसमस्या (टेलीग्राफी की), अनमोल पत्र, न्यायप्रदीप, सत्यसमाज और प्रार्थना, भावनागीत, मुसलिम भाइयों से, हिंदू भाइयों से, मंदिर का चबूतरा (उपन्यास), जीवन-सूत्र, सुख की खोज (कहा०), हिंदू-मुसलिम-मेल, इत्तदाद, निरतिवाद, सर्वधर्मसमभाव, कुरान की झाँकी, अग्निपरीक्षा ; प०—सत्याश्रम, वर्धा।

सत्यव्रत—शि०—सिद्धांतालंकार गुरुकुल कांगड़ी; सा०—प्राध्यापक राजाराम कालेज कोल्हापुर, मद्रास, मैसूर आदि में हिंदी-प्रचार ; गुरु कुल विश्वविद्यालय के उपकुल-

पति; प्रका०—ब्रह्मचर्य - संदेश, प्रामाणिक उपनिषदों के अनुवाद, अपनी पत्नी श्रीमतीचद्रावती लखनपाल के सहयोग से 'शिक्षा-शास्त्र' नामक पुस्तक लिखी; प०—कन्या गुरुकुल, देहरादून।

सत्याचरण—ज०—५ जूलाई १६१०; शि०—शास्त्री, एम० ए०, बी०टी०, राजकीय जुबिली हाई स्कूल और सेंट ऐंड्रूज कालेज गोरखपुर, मेरठ कालेज, लखनऊ और काशी विश्व विद्यालय; सा०—भूत० प्राध्यापक सेंट ऐंड्रूज कालेज गोरखपुर, भूत० प्रधान अध्यापक डी० ए० वी० हाई स्कूल गोरखपुर और इलाहाबाद, उत्तरप्रदेशीय हाई स्कूल-इंटर शिक्षा-बोर्ड के भूत०सदस्य, आगरा विश्वविद्यालय-सिनेट के सदस्य, प्रवासी भारतीय-विभाग और अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के मंत्री, उदयपुर हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में समाज-शास्त्र परिषद के सभापति, वैदिक-धर्म-प्रचारार्थ अमरीका और योरप-यात्रा की; प्रका०—हिंदी अँगरेजी के कई पाठ-ग्रंथ; वि०—आज कल भारतीय सरकार की ओर से ब्रिटिश वेस्ट इंडीज (और ब्रिटिश गाइना) के कमिश्नर हैं; प०—पोस्टबाक्स ५३०, पोर्ट आव स्पेन, ट्रिनिडाड, (ब्रिटिश वेस्ट इंडीज)।

सत्येंद्र (गौरीशंकर), डाक्टर—ज० १६०७; शि०—एम० ए०, पी-एच० डी० राजकीय हाई स्कूल आगरा, आगरा कालेज; सा०—धर्मवीरदल और मित्रसभा के संस्थापक, नागरी-प्रचारिणी सभा आगरा के विशिष्ट आयोजनों के सक्रिय कार्यकर्ता, साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य, हिंदी-साहित्य-परिषद्-मथुरा, सुहृदय-साहित्य-गोष्ठी, व्रज-साहित्य-मंडल आदि के संस्थापकों में; भूतपूर्व संपादक—'उद्धारक', 'ज्योति', 'साधना', 'व्रजभारती', 'आर्यमित्र'; भूतपूर्व प्राध्यापक हिंदी - विभाग, पोद्दार कालेज, नवलगढ़; प्रका०—साहित्य की झाँकी, गुप्तजी की कला, नागरिक कहानियाँ, कुणाल, मुक्तियज्ञ, वसंत-स्वागत, बलिदान, विज्ञान की करामात, भारतवर्ष का इतिहास; अप्र०—प्रेमचंद: व्यक्ति और कला, रचना-कौशल और कला,

मानव-वसंत, हिंदी एकांकी, इतिहास और विवेचन, विक्रम का आत्म-मेध; प०–प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, वनस्थली विद्यापीठ।

सत्येन्द्र नारायण अग्रवाल–शि०—बी० ए०; **सा०**—भूत० संपा० 'बीसवीं सदी'; **प्रका०**—दक्षिण भारत की यात्रा; प०—नया बाजार, भागलपुर।

सत्येन्द्र शरत्—ज०—१० अप्रैल १९८९; शि०—एम० ए० प्रयाग वि० वि०; प्र०—आवारा–एकांकी; **प्रका०**—नील कमल (कहा०), तार के खंभे (एका०), मौत के कतरे; **वर्त०**—सहा० संपा० 'प्रतीक' द्वैमासिक प्रयाग; प०–१८ हेस्टिंग्जरोड, इलाहबाद।

सत्येंद्र श्याम—शि०—एम० ए० (हिंदी), प्रयाग वि० वि०; **सा०**—सहायक सम्पादक (वर्तमान) 'नवचित्रपट' दिल्ली; **प्रका०**—स्फुट निबन्ध; प०—९२, दरियागंज, दिल्ली।

सदानन्द आर्य, 'सुमन'—ज०—८ अगस्त १९२१; शि०—बी० ए०, सा० र० अलीगढ़; **अप्र०**—अंतर्वेद, मनस्ताप, बलिवेदी पर; प०—ए० एस० हाई स्कूल, मवाना, मेरठ।

सदाशिवराव वैद्य—शि०—वैद्य-विशारद और मैट्रिक; **सा०**—राष्ट्रीय और सामाजिक आंदोलन के कार्यकर्ता, जड़चर्ला के हिंदी-परीक्षा-केंद्र के व्यवस्थापक; **प्रका०**—स्फुट; प०—संचालक जनता औषधालय, जड़चर्ला, महबूबनगर (दक्षिण)।

सद्गुरुशरण अवस्थी—ज०—४ जुलाई १९०१; शि०—एम० ए०, कानपुर, आगरा; **सा०**—अनेक शिक्षा-संस्थाओं की प्रबन्ध समितियों के सदस्य, सद० श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामंडल; **अप्र०**—भ्रमित पथिक, गौतम बुद्ध, त्रिमूर्ति, फूटा शीशा, हिंदी गद्य-गाथा, विचार-विमर्श, तुलसी के चार दल, मुद्रिका, दो नाटक, शकुंतला-परिणय, विभीषण-भ्रम, सुदामा-चरित, सती का अपराध, महाभिनिष्क्रमण, हृदय-ध्वनि, नायक और नाटक; **वि०**—हाल में प्रकाशित श्री हीरालाल-अभिनंदन ग्रंथ का आपने बड़ी योग्यता से संपादन किया था;

प०—अध्यक्ष हिंदी विभाग, बी० एन० एस० डी० कालेज, कानपुर।

कन्हैयालाल ओझा—ज०—नवम्बर १९१८ ; शि०—बी० ए०, सा० रत्न ; प्रका०—तुलसीदास; अप्र०—कई नाटक, कहानी और कविता-संग्रह ; वर्त०—उपाध्याय, हिन्दी विद्यापीठ महा विद्यालय, उदयपुर; प०—स्टेनोग्राफर, रेल दफ़्तर, मेवाड़ राज्य।

सभामोहन अवधिया, 'स्वर्ण सहोदर'—ज०—१९०२; शि०—सा० विशारद ; सा०—संस्थापक-ग्राम-सेवादल और अयोध्यावासी स्वर्णकार-सभा ; प्रका०—मंडलाजल-प्रलय, बच्चों के गीत, ग्राम-सुधार के गोंडी-गीत, हकीकतराय, वीर बालक बादल, ललकार, वीर शतमन्यु, बाल-खिलौना आदि कई बालोपयोगी पुस्तकें ; प०—प्रधान अध्यापक, हिंदी मिडिल स्कूल, अमगवाँ निवास, मंडला।

समर्थमल नथमल सिंघी—प्रका०—बुद्धिधन; प०—सिरोही, राजस्थान।

समर्थमल शाह—ज०—१९०७ ; प्रका०—स्फुट; अप्र०—मोंटीसोरी की शिक्षण-पद्धति ; प०—सिरोही, राजस्थान।

स० महालिंगम—शि०—बी०ए०; सा०—दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा के परीक्षा मंत्री ; प्रका०—स्फुट कहानियाँ और सामाजिक निबन्ध; प०—दक्षिणभारत हिंदी-प्रचार-सभा, त्यागरायनगर, मद्रास।

सरजूप्रसाद श्रीवास्तव—ज०—१० नवंबर १९१३ बस्ती ; शि०—एम०ए० (अँगरेजी) लखनऊ वि० वि० ; प्र०—सारंग ; प्रका०—स्फुट ; अप्र०—रवींद्रनाथ ठाकुर (आलोचना) ; प०—अध्यापक, महराजसिंह हाई स्कूल, बहराइच।

सरदारसिंह चौहान—ज०—१९१३; शि०—विशा०; सा०—ग्रामीणों और हरिजनों में हिंदी-प्रचार, स्थानीय कांग्रेस के मंत्री ; प्रका०—स्फुट संवाद ; अप्र०—प्रतिबिंब (निबंध-संग्रह) ; प०—म्याना, मंडल गुना (मध्यभारत)।

सरयूप्रसाद पांडेय—ज०—१८९९ ; शि०—एम० ए० ; प्रका०—बच्चोंकी मिठाई, राजर्षि;

प०—अध्यापक राजकीय जुबिली हाई स्कूल, गोरखपुर।

सरस वियोगी—ज०—१९११ मेवाड़ ; शि०—बी० ए० ; सा० —भूत० संपा० 'त्यागभूमि' और दैनिक 'नेता' ; प्रका०—चुनौती; अप्र०—लगभग दो दर्जन ग्रंथ ; ब्रह्मपुरी, अजमेर।

सरस्वती कुमार, 'दीपक'—ज०—१९१८; सा०—साप्ताहिक 'चित्रपट' के संपादकीय विभाग में काम किया, प्रसिद्ध कलाकार पृथ्वीराज कपूर के नाटक 'दीवार' के गीत लिखे हैं ; प०—मेरठ।

सरस्वती कुमारी — ज० — १९१७ ; शि०—बी० ए०, बी० टी०; सा०—गुजरात प्रांतीय हिंदी साहित्य - सम्मेलन की सभानेत्री ; प्रका०—स्फुट लेख और कविताएँ; प०—अध्यापिका आर्यकन्या महाविद्यालय, बड़ौदा।

स० रामचन्द्र—ज०-१९१५; शि०—शास्त्री, बी० ओ० एल० ; सा०—तंजौर दक्षिण भारत हिंदी प्रचार-सभा की शिक्षा-समिति के सदस्य, मद्रास तथा मैसूर वि० वि० के शिक्षा-बोर्ड के सदस्य ; प्रका०—हिंदुस्तानी व्याकरण, हिंदी व्याकरण, सरल हिंदी व्याकरण (तीन भाग) ; प्रि० वि०—भाषा विज्ञान ; प०—प्राध्यापक हिंदी-विभाग वीमेन क्रिश्चियन कालेज, कैथेड्रल पोस्ट, मद्रास।

सरोजकुमारी ठाकुर—शि०—एम० ए०, सा० र० ; प्रका०—स्फुट भावात्मक कविताएँ एवं कहानियाँ; प०—बालाबाई का बाजार, लश्कर, ग्वालियर।

सरोज भटनागर—सा०—सद०-क्रियाशील कलाकार मंडल, जबलपुर ; प्रका०—स्फुट ; प०—अध्यापिका हितकारिणी कालेज, जबलपुर।

सर्वदानंद वर्मा—उत्तरप्रदेशीय शिक्षा मंत्री माननीय श्री संपूर्णानंदजी के सुपुत्र; प्रका०—संस्मरण, नरमेध, नरक, रानी की डायरी, निकट की दूरी; प०—श्रीनिवास, कानपुर।

सांवलिया विहारीलाल वर्मा—ज०—छपरा १८ जून १८९६ ; शि०—पटना वि० वि० से बी० एल०, एम० ए० (अर्थशास्त्र-सर्व प्रथम रहे) ; सा०—अध्यापक

पटना कालेज १६२१-२३, हिं० सा० स० की स्थायी समिति के १६२३ में सद०, विहार प्रा० हिं० सा० स० के सद० जन्म (१६२०) से, प्रांतीय सम्मेलन के सोनपुर-अधिवेशन के सभा०; **प्रका०**—यूरोपीय महाभारत, महेंद्रप्रसाद (देशरत्न राजेंद्र बाबू के अग्रज की जीवनी), गद्य-चंद्रोदय, गद्य-चंद्रिका, बद्री केदार; **वि०**—समस्त भारतीय यात्रा-विवरण नौ भाग—प्रथम 'बद्री - केदार - यात्रा' प्रकशित हुआ है, दूसरा 'दक्षिण-यात्रा' प्रेस में है, संसार के धर्म—ग्यारह भाग, प्रथम भाग 'इसलाम' प्रेस में है, 'भारतीय धर्म और दर्शन'—पाँच भाग (पृ० सं० १५००) तैयार हो रहे हैं, इसका संक्षिप्त संस्करण सम्मेलन से प्रकाशित हो रहा है, भारतीय यात्रा-विवरण लिख रहे हैं; **प०**—सीतामढ़ी कोर्ट।

साधुराम शुक्ल—**ज०**—१६१६; **शि०**—लखीमपुर; **सा०**—भूत० मंत्री स्थानीय छात्र-संघ तथा श्री सनातन धर्म-सभा, कुमार सम्मेलन और हरिजन-सेवक-संघ; **अप्र०**—अज्ञेयवाद तथा स्फुट लेख और कविताएँ; **प०**—संपादक साप्ताहिक 'जन-सेवक', लखीमपुर, खीरी।

सावित्री दुलारेलाल—**शि०**—बी० ए० लखनऊ, एम० ए० आगरा वि० वि०; **सा०**—भूत० संपा०—मासिक 'सुधा' और 'बालविनोद'; कई कवि-सम्मे० की सभानेत्री; **अप्र०**—गीत-संग्रह; **वि०**—रेडियो पर कविता-पाठ; **प०**—कविकुटीर, लाटूश रोड, लखनऊ।

सावित्रीदेवी सिंह, 'किरण'—**अप्र०**—ढलते आँसू, सप्तकिरण; **प०**—जिलाधीशगृह, गाजीपुर।

सिंहासन तिवारी, 'कांत'—**ज०**—१६१५; **शि०**—सा० रत्न; **जा०**—अँगरेजी, संस्कृत, बँगला; **सा०**—प्रधानाध्यापक राष्ट्रभाषा विद्यालय; **प्रका०**—शांति; **अप्र०**—युगांतर, बलिदान, मानसऊर्मि; **प०**—राष्ट्रभाषा-विद्यालय, परमहंसाश्रम, बरहज, गोरखपुर।

सितलसिंह गहरवार—**ज०**—१८६५; **शि०**—मैट्रिक १८८७; **प्र०**—१८६०; **प्रका०**—स्फुट

कविताएँ; प०— इमामगया, गया।

सिद्धप्पा— सा०—जानापुर कल्याणी के उत्साही हिंदी-सेवक और प्रचारक, राजेश्वर तालुका काँग्रेस के अध्यक्ष ; प०—काँग्रेस-कार्यालय, जानापुर, कल्याण, गुलबर्गा (दक्षिण)।

सिद्धिनाथ शर्मा, 'सिद्ध'— ज०—२ मार्च १८६२ ; सा०—धर्मार्थ औषधालय के संस्थापक ; प्रका०—सिद्धामृत, सत्य - कथा, बाल - संध्या, सत्यदेव - पूजाविधि; अप्र०—वृहदाशुबोध की टीका ; प०— राजपुरोहित , पिपलोदा (मालवा)।

सिद्धिराज ढढ्ढा—ज०—१६०६; शि०—एम० ए० (राजनीति), एल-एल० बी० ; सा०—उपाध्यक्ष प्रयाग यूथलीग (प्रयाग वि० वि०), मंत्री-इंडियन चैम्बर आव कामर्स, पदाधिकारी हरिजन उत्थान समिति, बंगाल हरिजन बोर्ड, डाइरेक्टर—युगांतर प्रकाशन मंदिर जयपुर,प्रधान संपा० 'लोकवाणी' दैनिक, १६४२ के अगस्त आंदोलन में नजरबंद, प्रधान मंत्री राजस्थान प्रांतीय काँग्रेस कमेटी, संयुक्त राजस्थान-संघ - सरकार के उद्योग व व्यवसाय मंत्री; प्रका०—मानवधर्म (अनु०) ; प०—चौड़ा रास्ता, जयपुर।

सिद्धेश्वरप्रसाद,'मंजु'—ज०—१६१५ ; प्र०—१६४२ ; सा०—भूतपूर्व संपा० साप्ता० 'गृहस्थ' (गया, डेढ़ वर्ष तक), हिसुआ हिंदी-साहित्य-परिषद् के संस्थापकों में, उसके मंत्री भी रहे; प्रका०—स्फुट कविताएँ और निबंध ; प०—हिसुआ, गया।

सिद्धेश्वरप्रसादसिंह—ज०—१६१५; शि०—विशारद; प्र०—१६४० ; सा०—राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के प्रचारक ; प्रका०—स्फुट कहानियाँ ; प०—रौनागढ़, चाकंद, गया।

सिद्रामप्पा—सा०—स्थानीय सार्वजनिक संस्थाओं के संचालक, सक्रिय सहायक और हिंदी-प्रचारक; प्रका०—स्फुट; प०—अफजलपुर, गुलबर्गा (दक्षिण)।

सियाप्रसाद अष्ठाना—ज०—६ अक्तूबर १६०७ ; शि०—साहित्य-मनीषी, आयुर्वेदरत्न और

एच० एम० बी० ; प्रका०—बाल-संगीत; प०— बसंतपट्टी, अदौरी, मुजफ्फरपुर ।

सियाराम—ज०— १९१० ; शि०—बी० एस-सी०, एल-एल० बी० ; सा०—स्थानीय आर्यकुमार सभा, हिंदू-सभा और हिंदी-प्रचार मंडल के कार्यकर्ता ; हिंदी विद्यापीठ के अवैतनिक अध्यापक ; प०—अध्यापक, हिंदी विद्यापीठ, बदायूँ ।

सियारामशरण गुप्त—कविवर डाक्टर मैथिलीशरण गुप्त के अनुज ; जा०—अँग्रेजी, बँगला, संस्कृत, गुजराती, मराठी; प्रका०—उपन्यास—गोद, नारी ; कहा०—अंतिम आकांक्षा, मानुषी; नाटक—पुण्यपर्व ; काव्य — मौर्यविजय, दूर्वादल, आत्मोत्सर्ग, अनाथ, विषाद, आर्द्रा, पाथेय, मृण्मयी, बापू, उन्मुक्त, निष्क्रिय प्रतिशोध, कृष्णाकुमारी, झूठसच (निबंध-संग्रह) ; प०—चिरगाँव, झाँसी ।

सीतारामखत्री, 'मृगेंद्र'—ज० १९२७ ; सा० —मंत्री स्थानीय बालमंडल, संस्था० 'मृगेंद्र'-पुस्तकालय ; प्रका०— मृगेंद्र-द्वादशी ; अप्र० — बाल वीणा, केशर-क्यारी ; प० — तालबेहट, झाँसी ।

सीताराम चतुर्वेदी — ज०— काशी ; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० ; सा० — रंगमंच पर आपके नाटक सफल ढंग से अभिनीत हो चुके हैं ; प्रका०—लगभग एक दर्जन ग्रंथ ; प०—आचार्य, सतोशचंद्र कालेज, बलिया ।

सीताराम—ज०—२० दिसंबर १९१०, लोसल (जयपुर) ; शि०—शास्त्री, प्रभाकर, सा० र०, इंटर; सा०—हिन्दी सा० सम्मे० की स्थायी समिति के भूत० सदस्य, हिंदू-धर्म सम्मेलन के प्रचार-विभाग के उपाध्यक्ष, हिन्दी विद्यामन्दिर आबूरोड के जन्मदाताओं में, हिंदी विद्यापीठ आबू के मंत्री, नवयुवक मंडल लोसल के भूत० सभापति, 'छात्रहितैषी' के भूत० संपा०, हिंदी विश्वविद्यापीठ उदयपुर की साहित्य-परिषद के सदस्य, राष्ट्रभाषा परीक्षाओं के आबूरोड केंद्र के व्यवस्थापक, संस्कृति-मन्त्री राजस्थान विश्वविद्यापीठ ; प्रका०—आदर्श-निबन्ध (संपादित), राज-

स्थानी संस्कृति की महत्ता, देश-दर्शन, परिचय, सम्मेलन की आवश्यकता क्यों ? प०—अध्यापक इण्डियन रेलवे हाई स्कूल, आबूरोड ।

सुंदरलाल दुबे, 'निर्बल-सेवक'—ज०—१६००, सतवासा (नर्मदातट); **सा०**—निर्बल-सेवक-औषधालय, रामायण-मंडल और हरिजन-सेवक-संघ के मन्त्री, ग्राम कांग्रेस-कमेटी के सदस्य और सभा० ; प०—निर्बल - सेवक-आश्रम, सतवासा, सोहागपुर ।

सुन्दरलाल सक्सेना—ज०—१९१६; शि०—सा० वि०, आयुर्वेद वि०, मैट्रिक, बी० टी० सी० ; **सा०**—१६४२ के आंदोलन में १० मास का जेल, श्री बुन्देलखंड हिं० सा० संघ और बजरंग पुस्तकालय, कोटरा के स्था०, वर्त० संचालक वाणी- मंदिर व्यायाम-शाला कोटरा ; **प्रका०**— श्रीकृष्ण जन्म (का०) ; **अप्र०**—संस्कृत के कुन्दमाला नाटक का अनु०; प०—रामपुरा, जालौन ।

सुकुमार पगारे—ज०—१६१४; **सा०**—एम. एल. ए., 'कर्मवीर' के सम्पादक, १६४१-४२ के स्वतंत्रता आंदोलन में जेल, महाकोशल हरिजन सेवक-संघ के मंत्री, 'जन-शक्ति' के संपादक-प्रकाशक ; **प्रका०**—युगवाणी ; **अप्र०**—मौन साधना, आश्रय; प०—'जन-शक्ति'-कार्यालय, राष्ट्रीय प्रेस, इटारसी ।

सुखदेव पांडेय, लेफ्टिनेंट कमांडर—ज०—१३ अप्रैल १८६३; **शि०**—एम० एस-सी० म्योर सेंट्रल कालेज, इलाहाबाद; **सा०**—सहकारी प्राध्यापक गणित - विभाग काशी विश्वविद्यालय १६१८, डा० गणेशप्रसाद के निर्देशन में अनुसंधान - कार्य किया, काशी विश्व-विद्यालय के अंतर्गत अनेक संस्थाओं के सहयोगी कार्यकर्ता अथवा मंत्री रहे, आचार्य बिड़ला इंटर कालेज पिलानी, अवैतनिक मंत्री बिड़ला-शिक्षा-ट्रस्ट १६२६, कुलपति बिड़ला विद्याविहार, युद्ध-काल में टेक्निकल ट्रेनिंग-केंद्र के अवैतनिक आचार्य रहे, जयपुर स्टेट काउंसिल के उप-सभापति ; **प्रका०**—हाई स्कूल और इंटर कक्षाओं के लिए गणित विषयक

कई ग्रंथ हिंदी में लिखे, गणित-ज्योतिष की पारिभाषिक शब्दावली प्रस्तुत की ; प०—बिड़ला शिक्षा-ट्रस्ट, पिलानी, जयपुर।

सुखमंगल शुक्ल—शि०—एम० ए० (हिंदी) लखनऊ वि० वि० ; सा०—साहित्य-संघ बहराइच के संस्थापक; प्रका०—स्फुट ; प०—अध्यापक, राजकीय हाई स्कूल, बहराइच।

सुखसंपतिराय भंडारी—ज०—१८६५ ; सा०—संपादक 'वेंकटेश्वर समाचार' १६१३, 'सद्धर्म-प्रचारक'—१६१४, 'पाटलिपुत्र'—१६१५, 'मल्लारि मार्तंड'—१६१६, 'नवीन भारत' १६२३, 'किसान' १६२६-३०, अ० भा० काँगरेस कमेटी के सदस्य, 'हिंदी इँग्लिश-डिक्शनरी' के यशस्वी संपादक ; प्रका०—भारतदर्शन, तिलकदर्शन, भारत के देशी राज्य, राजनीति-विज्ञान ; वि०—इनके अतिरिक्त लगभग अठारह पुस्तकें लिखी हैं, भारत के देशी राज्य पर इंदौर दरबार से ५०००) का पुरस्कार मिला, इनकी हिंदी - इँग्लिश-डिक्शनरी (सात भाग) की अनेक विद्वानों और तत्कालीन वाइसराय महोदय ने सराहना की थी; प०—डिक्शनरी पब्लिशिंग हाउस, ब्रह्मपुरी, अजमेर।

सुज्ञानसिंह रावत—ज०—१८७० ; प्रका०—गजेंद्र - मोक्ष (कविता) ; प०—भगवानपुर, उदयपुर।

सुतीक्ष्ण मुनिजी उदासीन—ज०—१८९० ; जा०—संस्कृत, गुरुमुखी, अँगरेजी, उर्दू ; सा०—भूतपूर्व प्रधान मंत्री गुरु श्रीचन्द्र उदासीन - उपदेशक - सभा तथा स्वतंत्र प्रचार - कार्य ; प्रका०—गुरु मत का सच्चा प्रचार, जगत गुरु की जीवनी, सच्चा इतिहास-समाचार, मुनि परशुराम-सूत्र की टीका, जगदगुरु का संतोपदेश, हिंदू-धर्मरक्षा - भजनावली, जीवनी बाबा हरीदासजी उदासीन, सच्चे का बोलबाला आदि।

सुदर्शन—प्रका०—सुदर्शन-सुमन, सुदर्शन - सुधा, तीर्थ-यात्रा, सुप्रभात, पुष्पलता, गल्पमंजरी, चार कहानियाँ, भाग्यचक्र, बच्चों का हितोपदेश, राजकुमार सागर, झंकार; वि०—इस समय सिनेमा-

क्षेत्र में गीत लिख रहे हैं; इस क्षेत्र में भी आपने यश पाया है; प०—सिलवर्टन स्टेशन, महीम, बंबई।

सुदामाप्रसाद द्विवेदी, 'क्षितिज' —ज०—११ जूलाई १६२२; शि०—सा०आ०, सा० र०, संगीताचार्य; प्रका०—स्फुट कविताएँ, गद्य-गीत और कहानियाँ; प०—प्रधान अध्यापक, मिडिल स्कूल, खातेगाँव।

सुधाकर— ज० — १६२६; शि०—बी० ए०, शास्त्री, महाराजा कालेज, जयपुर; प्र० १६६१; प्रका०—स्फुट कविता और निबंध; प०— ठि० श्री हीरालाल शास्त्री, जयपुर।

सुधाकर झा, डाक्टर—ज०—फरवरी, १६०६; शि०—एम०ए०, पी-एच०डी० लंदन; सा०—१६३१ में पी-एच० डी० की डिग्री के लिए विलायत गये, विभिन्न भाषाओं के अध्ययनार्थ योरोपीय देशों की राजधानियों में भ्रमण किया; प्रका०—स्फुट आलोचनात्मक लेख; प०—अध्यापक, पटना कालेज, पटना।

सुधींद्र, डाक्टर— ज० — १६१७; शि०—कोटा, कानपुर, एम०ए०, नागपुर वि० वि०, पी-एच० डी० राजस्थान वि० वि०; सा०—भूत०संपा० 'जीवन-साहित्य', गाँधी-आश्रम में काम किया; प्रका०—संग्रह—शंखनाद, प्रलय-वीणा, अमृतलेखा, जयभारत, मेरे गीत; कविता—जौहर; आलो०—हिंदी कविता का क्रांति-युग, केशवदास : एक समीक्षा; राम रहमान एकांकी, संपा०-सूर-संगीत, गद्य-गरिमा, बालभारती, गाँधी-संगीत, आधुनिक कवि, चरैवेति, कल्पना तथा प्रतिभा, नवीन गीत-संग्रह; अप्र०—साधना, झलक — उपन्यास, तुलसी : एक अध्ययन आदि; वि० — डाक्टर आव फिलास्फी के लिए आपकी थीसिस का विषय 'हिंदी कविता में युगांतर' था; प०—अध्यक्ष हिंदी- विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली।

सुबोधचंद्र शर्मा, 'नूतन' — ज०—१६०६, जबलपुर; शि०—प्रभाकर, विशारद; प्रका०—गुजराती की पुस्तकों का हिन्दी में

अनुवाद, विविध विषयों पर अनेक लेख; अप्र० त्योहारों की कहानियाँ, नूतन हिंदी-प्रवेश, प्रेमसागर की कहानियाँ, हमारा उद्धार कैसे हो? ; प०—प्रधान संपादक 'शिक्षा-सुधा', मंडी धनौरा, मुरादाबाद।

सुबोध मिश्र, 'सुरेश'—ज०—१९१८ ; शि०—राँची; ज्ञा०—गुजराती, मराठी और बँगला; सा०—संचालक अन्नपूर्णा मंडल-दो शाखाएँ—(१) अन्नपूर्णा पुस्तकालय और (२) अन्नपूर्णा दातव्य औषधालय; सह० संपा० 'अन्नपूर्णा' (हस्त-लिखित), मिश्रा ड्रामेटिकल क्लब के जन्मदाता, भूत० प्रधान संपा० 'छोटा नागपुर संवाद'; प्रका०—नाटक-समाज की बलि-वेदी, वोट की चोट और कांग्रेसी हौवा; विविध-रुद्रनारायण; लंकेश, लाल, भाई और पैरोडी, प०—अन्नपूर्णा औषधालय, राँची।

सुभाषचंद—ज०—१५ जनवरी १९२६; शि०—विद्यालंकार; सा०—संपा०—'शिक्षा-सुधा'; प्रका०—स्फुट; प०—मुरादाबाद।

सुमति शंकरलाल कवि—ज०-१९०० ; शि०—काव्यभूषण; प्रका०—पिया उअने बीजी वातों ; अप्र०—स्फुट निबंध; प०—५४।२१ पश्चिम नहर किनारा, कानपुर।

सुमनेश (शिवराज) जोशी—ज०—१५ सितंबर १९१६; प्र०—१९३४; सा०—राष्ट्रीय आंदोलन में जेल; प्रका०—लगभग दो दर्जन पुस्तकें; अप्र०—विद्रोह के गीत; प०—जोधपुर।

सुमित्रा कुमारी सिनहा—ज०—१९१५ ; प्रका०—अचल सुहाग, वर्ष गाँठ, आशापर्व, विहाग, पंथिनी; सा०—सभानेत्री स्था० म्यू० बोर्ड, सदस्या सुभाष कालेज कमेटी व हि० सा० सम्मेलन, प्रधान मन्त्राणी उन्नाव नारी सेवा-संघ, हि० सा० सम्मेलन की राधामोहन पुरस्कार-समिति की सदस्या, भूत० उपसभानेत्री उन्नाव महिला कांग्रेस मंडल ; वि०—'विहाग' पर सेकसरिया पुरस्कार प्राप्त ; आप हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री महेशचरण सिनहा की सुपुत्री और चौधरी राजेन्द्र शंकर

की धर्मपत्नी हैं; प०—युगमन्दिर, उन्नाव।

सुमित्रानंदन पंत—ज०—१४ मई १६०० कौसानी, अल्मोड़ा; शि०—नवीं कक्षा तक राजकीय हाई स्कूल अल्मोड़ा, दसवीं कक्षा जयनारायण हाईस्कूल बनारस, इंटर के लिए म्योर सेंट्रल कालेज प्रयाग, इंटर में ही कालेज छोड़ दिया; जा०— अँगरेजी, संस्कृत, बँगला; सा०—कई वर्ष तक मासिक 'रूपाभ' का संपादन किया; प्रका०—उच्छ्वास, पल्लव, पल्लविनी, वीणा, ग्रंथि, गुंजन, युगांत, युग-वाणी, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, स्वर्णधूलि, मधु-ज्वाल, परी, क्रीड़ा, रानी, ज्योत्स्ना (ना०), पाँच कहानियाँ (कहानी-संग्रह), उमर खैयाम की रूबाइयाँ (अनुवाद); वि०—अखिल भारतीय रेडियो और हिंदी साहित्य-सम्मे० के बीच समझौते के फलस्वरूप आप सलाहकारिणी समिति के अध्यक्ष नियुक्त हुए हैं; युक्त प्रान्तीय सरकार की ओर से आप को पुरस्कार प्रदान किया गया है; प०—अखिल भारतीय रेडियो कार्यालय, प्रयाग।

सुमेरचंद्र जैन—ज०—१७ अक्टूबर १६१८, बिलराम, एटा; शि०—आगरा, बंगाल, बम्बई, बनारस से शास्त्री, न्यायतीर्थ, सा० रत्न; सा०—जैनधर्म का विस्तृत अध्ययन, चंदाबाई अभिनन्दन ग्रंथ की तैयारी जिसमें स्त्रियों की प्राचीन तथा आधुनिक दशा का खोजपूर्ण विवरण होगा, जैनधर्म-प्रचार के संबंध में यूरोप का भ्रमण, विदेशों से पत्र-व्यवहार एवं उनके सहयोग से धर्म का प्रचार, इटली के प्रसिद्ध दार्शनिक जोसेफ टुक्की ने आपकी प्रशंसा की है, स्वाध्याय शालाएँ स्थापित की, हरिजनों के उत्थान में रुचि; प्रका०—सम्राट खारवेल का इतिहास, निबंध माला, शकुन सिद्धांत-दर्पण धर्म-शिक्षा और भणभर; प०—संचालक वीर सरस्वती भवन, सरधना, मेरठ।

सुरजनदास, स्वामी—ज०—१६११; शि०—व्याकरण, वेदांत और सांख्योग शास्त्री, साहित्याचार्य (जयपुर संस्कृत महाविद्यालय में सर्वप्रथम जिसके उपलक्ष में

उदयपुर राज्य से स्वर्णपदक मिला); प्रका०-स्फुट ; वि०—संस्कृत में भी अधिकारपूर्वक रचना करते हैं ; प०—प्रधानाध्यापक, दादू महाविद्यालय, जयपुर ।

सुरेंद्रचंद्र, 'वीर'— शि०—सा० आ०, कविरत्न, मथुरा और बनारस ; सा०—दो पत्रों का संपादन ; प्रका०—नागौर का नाहर-काव्य ; वर्त०—'लोकमित्र' मासिक के संचालक ; प०—वीर प्रिंटिंग प्रेस, फीरोजाबाद ।

सुरेंद्र शर्मा—ज०— १८६६ कोटल्य, आगरा; शि०—कलकत्ता वि० वि०; सा०—'प्रताप', 'विश्व-मित्र', 'सैनिक,' 'विद्यार्थी' आदि पत्रों के संपा० विभाग में कार्य ; भूत० पत्रकार सूचना-विभाग, उत्तरप्रदेश ; प्रका०—गुरु गोविंद सिंह, सयाजीराव गायकवाड़, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लाला लाजपति राय, रण बाँकुरा दुर्गादास, महा राणा राजसिंह, वीरभूमि मेवाड़, देवी मीरा, नारी जीवन, विचार धारा और विचार-चित्र, ज्ञान-प्रभा पुस्तक-माला बोर्ड से स्वीकृत ; वर्त०—'स्वतंत्रता के पुजारी' नामक ग्रंथ-माला की रचना ; प०—६४० ए० कटरा, प्रयाग ।

सुरेंद्रसिंह—शि०-एम० ए०; सा०—हिं० सा० समिति कानपुर के उपसभा० ; अप्र०—राष्ट्रीय कविताएँ ; प०—७०/६४ मथुरी-मुहाल, कानपुर ।

सुरेशचंद्र शर्मा—सा०—स्थानीय हिं० प्रचा० सभा के सहायक और कार्यकर्ता; प्रका०—स्फुट ; प०—हिंदी-प्रचार-सभा, हैदराबाद (दक्षिण) ।

सुरेशप्रसाद श्रीवास्तव-ज०-४ जनवरी १६१३ झाँसी ; शि०—बी० ए० १६३३ प्रयाग वि० वि०, एम० ए० १६३५, अलीगढ़ वि० वि०,राजकीय ट्रेनिंगकालेज प्रयाग; अप्र०—स्फुट ; प०—प्राध्यापक, अग्रवाल इंटर कालेज, प्रयाग ।

सुरेशसिंह, कुँअर—ज०—१६१२ कालाकाँकर ; शि०—लखनऊ व काशी ; सा०—पं० रामनरेश त्रिपाठी और पं० सुमित्रा नन्दन पंत के सहयोगी, 'बानर' और 'कुमार' के भूत० संपा० ; नमक-आन्दोलन और असहयोग में सक्रिय भाग तथा दो बार जेल

यात्रा ; प्रका०—हमारी चिड़ियाँ, हमारे जानवर, जीवों की कहानी, चिड़ियाखाना ; अप्र०— हमारे जलचर, हमारे कीड़ेमकोड़े, भारतीय पक्षी, चाँद-तारा, हमारे पेड़-पौधे आदि ; वि०—जीवन-विज्ञान में विशेष रुचि ; प०—१८, कैसर बाग, लखनऊ।

सुरेश्वर पाठक–ज०–१९०६ ; शि०—विद्यालंकार; सा०—भूत० संपा० 'देश' पटना, 'प्रभाकर', 'नवयुग', 'साहु-मित्र' मुंगेर, कार्य-कर्त्ता हरिजन सेवक-संघ; प्रका०—रचना-मयंक, व्याकरण - मयंक, गौरव-गाथा, बिहार-वैभव, अरण्य-कांड की टीका ; प०—रतैठा, हवेली खरगपुर, मुंगेर।

सुलाखे गुरू जी—सा०—१९१६ से हिंदी-प्रचार-प्रसार के कार्य में लगे वयोवृद्ध कार्यकर्ता, हिंदी - वाचनालय के संस्थापक, निस्वार्थ हिंदी-शिक्षक ; प्रका०—स्फुट ; प०—अध्यापक हिंदी-प्रचार-सभा, उस्मानाबाद, दक्षिण।

सुशीला देवी—शि०—विद्या लंकृता, गुरुकुल की स्नातिका ; सा०—स्थानीय हिंदी-प्रचार-सभा की अध्यक्षा, महिलाओं में हिंदी-प्रचार किया ; प्रका०—समाज और साहित्य-संबंधी स्फुट लेख ; प०—१५ जारा रोड, सिंकदराबाद (दक्षिण)।

सुशीलादेवी त्रिपाठी, श्रीमती—ज०—१९२६; प्रका०—स्फुट कहानियाँ और कविताएँ ; प०—ठि० लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, पत्रकार, अलवर।

सूबेदारसिंह चौहान—ज०—३० अप्रैल १९१७ ; प्रका०—खँडहर; अप्र०— मैना; प०—प०—इसलामिया स्कूल, मुजफ्फर नगर।

सूरजभान—शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; प्रका०—आर्य-मतलीला, जीवन-निर्वाह, ब्याही-बहू, स्त्री-शिक्षा-दर्पण; प०—वकील देवबंद, सहारनपुर।

सूरजमल रांगी— अप्र०—लगभग २००० स्फुट कविताएँ ; वि०—स्वामी सत्यभक्त के शिष्य, 'लोकमंगल' और 'लोक-धर्म' के प्रचारक; प०—उदयपुर।

सूर्यकांत, डाक्टर—शि०—विद्याभास्कर और वेदांत-रत्न

(गुरुकुल), शास्त्री और व्याकरण तीर्थ (कलकत्ता वि० वि०), एम० ए०, एम० ओ० एल०, डी० लिट्० (पंजाब वि० वि०), डी० फिल० (ऑक्सन); सा०—भूत० रीडर संस्कृत-विभाग, पंजाब वि० वि० (लाहौर); भूत० सदस्य हिंदी-संस्कृत-परीक्षा-समिति पंजाब वि० वि० (लाहौर), भूत० अध्यक्ष संस्कृत विभाग, ओरियंटल कालेज, लाहौर ; प्रका०— हिंदी-साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास,साहित्य-मीमांसा आदि लगभग एक दरजन ग्रंथ।

सूर्यकांत त्रिपाठी,'निराला'—ज०—१८९६, महिषादल राज मेदनीपुर; शि०—संगीत, साहित्य, बँगला और अँगरेजी; सा०—भूत० संपा० 'समन्वय' श्री रामकृष्ण मिशन कलकत्ता से प्रकाशित, 'मतवाला'; गांधी और नेहरू जैसे नेताओं के विरोध में हिंदी का समर्थन, प्रांतीय हि० सा० स० फैजाबाद में हिन्दी के प्रति अवज्ञा का विरोध किया; प्रका०—काव्य—परिमल, गीतिका, तुलसी दास, अनामिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते; उपन्यास—अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरूपमा, चोटी की पकड़, काले कारनामे; अनुवाद—आनन्दमठ, कपाल कुण्डला, चन्द्रशेखर, दुर्गेशनंदिनी, कृष्णकांत का दिल, युगलांगुल दे, रजनी, देवी चौधरानी, राधारानी, विषवृक्ष, राजसिंह, महाभारत, परिव्राजक श्री रामकृष्ण कथामृत—४ भाग, विवेकानन्द जी के व्याख्यान ; कहानियाँ—लिली, चतुरी-चमार, सुकुल की बीबी, सखी; रेखाचित्र—कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा; निबंध—प्रबन्ध-पद्म, प्रबन्ध-प्रतिमा, चाबुक; समीक्षा—रवीन्द्र-कविता-कानन; जीवनी—ध्रुव, भीष्म, राणा प्रताप; विविध—हिंदी-बँगला-शिक्षा, रस-अलंकार, वात्सायन कामसूत्र, तुलसीकृत-रामायण की टीका ; अप्र०—राजयोग; नाट०—समाज, शकुन्तला; प०—प्रयाग।

सूर्यकांत भट्ट, 'हृदय'—ज०—४ जूलाई १९१२ ; प्रका०—स्फुट कहानियाँ; प०—जयपुर।

सूर्यदेव नारायण श्रीवास्तव—प्रका०—कहा०—सरिता, समाज की चिता, पराया पाप, चुंबक, होम शिखा, देशभक्त, भाई-बहन, आपबीती, बासी बीवी, पत्र देवता, सिंदूर की लकीर तथा सहचरी, नाटक—भारत, सिकन्दर, चाणक्य, विक्रमादित्य, जयचंद, यशोधरा, जयद्रथ-वध, वैशाली-गौरव, चाँदी का परदा, करुण पुकार, भारत-दर्शन, नारी-दर्शन, संत-दर्शन, बिहार-दर्शन, मगध-दर्शन, वैशाली-दर्शन, मिथिला-दर्शन, प०—अध्यापक जिला स्कूल, मुजफ्फरपुर, बिहार।

सूर्य देव शर्मा—ज०—१ मार्च १०६३; शि०—एम० ए०, एल०टी०, डी० लिट०, शास्त्री, सा० लं०, डी० ए० वी० कालेज, लाहौर; सा०—संचा० आर्यकुमार-सभा, प्रधान—हिंदी सा० सभा अजमेर, कमिश्नर—हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन; प्रका०—लगभग दो दर्जन शिक्षा संबंधी और धार्मिक ग्रंथ; प०—उपआचार्य डी० ए० वी० कालेज, अजमेर।

सूर्यनारायण चतुर्वेदी, 'दिवाकर'—ज०—१८९८; प्रका०—हिंदी दुर्गापाठ (दुर्गा सप्तशती का अनुवाद), होली की भेंट, अप्र०—नृत्य कौमुदी, ढूँढाडी गीत; प०—जयपुर।

सूर्य नारायण चौधरी—ज०—१९११; शि०—पटना वि० वि०, एम० ए० १९३५; प्रका०—अनूदित-बुद्ध चरित-प्रथम-द्वितीय भाग; अप्र—जातक-माला और अश्वघोश-कृत सौन्दर-नन्द के अनुवाद; प०—कठौतिया काझा, पूर्णिया।

सूर्यनारायण, 'दिनेश'—ज०—१८८६; प्रका०—देव-कृत संस्कृत पद्यों का अनुवाद; अप्र०—कल्याणमल्ल-कृत 'अनंगरंग' का पद्यात्मक अनुवाद, पुराण-प्रकाश (सुंदर-कृत चौरपंचाशिका का पद्यानुवाद), वीर-विनोद (भरतपुर नरेशों का छंदोबद्ध इतिहास); वि०—भरतपुर के महाराज से पुरस्कार प्राप्त; प०—राजकवि, भरतपुर।

सूर्यनारायण दीक्षित—ज०—१८८२; शि०—एम० ए०, एल-एल० बी०, लखीमपुर, खीरी,

बरेली सेंट्रल हिंदू कालेज, लखनऊ विश्व विद्यालय; सा०—राजपूताना की एक स्टेट के दीवान, महाराणा कालेज श्रीनगर काश्मीर में अँग्रेजी के प्रोफेसर, सभापति म्यूनिसिपल बोर्ड लखीमपुर खीरी, चेयरमैन शिक्षा समिति डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड लखीमपुर खीरी; प्रका०—अनु०—मनहरण (उप०), चंद्रगुप्त (नाटक), अकबर के राजत्व काल में हिंदी—इस पर ना० प्र० स० काशी से पदक प्राप्त हुआ; प०—वकील, लखीमपुर, खीरी।

सूर्यनारायण व्यास—ज०—मार्च १६०१ उज्जैन; जा०—संस्कृत, गुजराती, मराठी, फारसी प्राकृत, पुरातन लिपि, ज्योतिष; सा०—नर्मदा वैली रिसर्च सोसाइटी के सद०, संपा० 'विक्रम', अध्यक्ष विज्ञान-परिषद और म० भा० सा० समिति; प्रका०—संस्कृत-हिंदी में कई पुस्तकें प्रकाशित, कालिदास की अलका, वाल्मीकि की लंका, यूरोप-यात्रा (प्रेस में); प०—ज्योतिषाचार्य, उज्जन।

सूर्यनारायण शर्मा—ज०—१८८३; शि०—व्याकरणाचार्य, व्याख्यान वाचस्पति, साहित्यभूषण, सा०—समाज-सुधारक-मंडल द्वारा प्रकाशित 'समाज-सुधार' के भूत० संपादक, जयपुर-नरेश के हिंदी, संस्कृत और धर्मशास्त्र के शिक्षक, स्थानीय संस्थापकों की प्रबन्ध-समिति के सदस्य, मन्त्री अथवा सभापति; अवसरप्राप्त संस्कृत-आचार्य महाराजा कालेज जयपुर; प्रका०—धर्म-मंडल, श्रीकृष्ण-दूत, उद्योगलहरी, हिन्दुस्तान, खंडेले का इतिहास, शिशु-पालनोपदेश; प०—जयपुर।

सूर्यबलीसिंह, कुँवर—ज०—५ अक्टूबर १६०८; शि०—रायपुर, क्रिश्चियन कालेज प्रयाग, एम० ए० काशी वि० वि० और सा० रत्न; सा०—दीनदयाल विद्यालय में अवैतनिक उपमन्त्री, साहित्य-समीक्षक संघ काशी के साहित्य मन्त्री एवं प्रधान मन्त्री रघुराज-साहित्य-परिषद, 'बांधव' के संपा०, रामपुर 'मित्र मंडल समिति' और साहित्य-गोष्ठी के कार्यकर्ता, १६४२ में २० मास तक जेल में

रहे ; प्रका०—हिन्दी की प्राचीन और नवीन काव्य - धारा, जीवन-ज्योति, राजनीति-विमर्श, स्वतंत्र भारत की शिक्षा ; प०—इंसपेक्टर आव स्कूल्स, रीवाँ।

सूर्यराज व्यास—ज०—१९१४ ; शि०—बी० ए० विशारद, प्रभाकर प्रयाग ; सा०—महिला विद्यापीठ जोधपुर के संस्थापक, प्रधान मन्त्री साहित्य मंडल जोधपुर, हिंदी - प्रचारिणी सभा तथा राजस्थान हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रधान मन्त्री, संस्थापक मरुधर प्रकाशन मन्दिर तथा पुष्करण पब्लिशिंग हाउस ; प्रका०—वीर गिरधर जी, वीर तेजा तथा अन्य महापुरुषों की जीवनियाँ, संपा० 'राजपूताना पुष्करण ब्राह्मण'; प०—महकमा खास, सरदार पुरा, चौपासनी सड़क, जोधपुर।

सोमदेव शर्मा—ज०–१९०७; शि०—अलीगढ़ ; सा०—संपा० 'अश्विनी कुमार' लाहौर (१९३९-४०), 'ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज पत्रिका-१९४४; प्रका०—आयुर्वेद प्रकाश (संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या सहित), आयुर्वेदिक प्रश्नोत्तरावली २ भाग, आयुर्वेद का संक्षिप्त इतिहास, पदार्थ-विज्ञान ; अप्र०—काव्य - मीमांसा, वैदिक आयुर्वेद तथा रस-कामधेनु के हिंदी अनुवाद ; वि०—वैदिक साहित्य और आयुर्वेद का अन्वेषण; वर्त०—उपआचार्य ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज पीलीभीत ; प०—भवीगढ़, पो० साधू आश्रम, अलीगढ़।

सोमनाथ गुप्त—ज०–१९०५ अमरोहा मुरादाबाद; शि०—सा० र०, बी० ए० १९२७ प्रयाग वि० वि० प्रथम श्रेणी, पी - एच० डी० आगरा वि० वि०, थीसिस का विषय—हिंदी नाटक साहित्य का विकास ; सा०—१७ वर्षों से अजमेर, राजपूताना एजूकेशन बोर्ड, आगरा वि० वि० से संबंध, पाठ्यक्रम , निर्माण समितियों के सद०, ऐकेडेमिक कौंसिल, कला विभाग, राजपूताना वि० वि० तथा संयोजक हिंदी-कमेटी, सद० स्थायी समिति हिं० सा० स० ; प्रका०—मौलिक-हिंदी भाषा-ज्ञान प्रकाश, साहित्य-बोध, हिंदी नाट्य साहित्य का इतिहास, साहित्य

सिद्धांत, संपा०—अष्टछाप पदावली, चयनिका, प्रबन्ध-काव्य-संग्रह, हिंदी आलोचनाएँ, कुछ साहित्यिक स्वप्न; प०— हिंदी अध्यापक, जसवन्त कालेज, जोधपुर।

सोहनलाल द्विवेदी—शि०—एम० ए०, एल-एल० बी० काशी विश्वविद्यालय; सा०—लखनऊ के दैनिक पत्र 'अधिकार' के कई वर्ष तक संपादक रहे, अनेक बार कविसम्मेलनों के सभापति नियुक्त हुए; प्रका०—भैरवी १९४१, वासवदत्ता-१९४२, कुणाल, विषपान १९४३, गाँधी-अभिनदन-ग्रंथ, युगाधार, वासंती, चित्रा १९४४, सेवाग्राम, पूजागीत, प्रभाती १९४५ बालो०—बाँसुरी, झरना, बिगुल १९४४, सात कहानियाँ १९४५, बच्चों के बापू १९४६; प०—बिंदकी फतहपुर।

सौभाग्यमल—ज०—१९१५; शि०—एम० ए०; प्रका०—मेरी अँजली; प०—सिरोही।

सौभाग्य मल जैन—ज०—१९१३; शि०—बी० ए० १९३६ महाराजा कालेज जयपुर, १९३७ में विशारद, बी० टी०; सा०—भूत० प्रधान अध्यापक जैन श्वेतांबर सुबोध मिडिल स्कूल जयपुर, अध्यापक ओसवाल हाई स्कूल अजमेर १९४०; प्रका०—स्फुट प्रहसन और कविताएँ; प०—अध्यापक दरबार हाई स्कूल, बीकानेर।

स्वदेश कुमार—ज०—१३ जून १९२१ मेरठ; शि०—एम० ए० मेरठ कालेज; सा०—दिल्ली से प्रकाशित 'सरिता' के सह० संपा०, १९४२ के आन्दोलन में सक्रिय भाग, ३ माह की कैद; प्रका०—स्फुट लेख, कहानियाँ और कविताएँ; प०—नंदन गार्डन, मेरठ।

स्वराज्यप्रसाद त्रिवेदी—ज०—१९२०; शि०—बी० ए०; सा०—भूत० सहा० मंत्री तथा वर्तमान अर्थ मंत्री, प्रांतीय सम्मेलन, संपादक-आलोक, सह० संपादक—अग्रदूत; अप्र०—गौतम बुद्ध (ना०) तथा अन्य कहानी और कविता-संग्रह; वि०—'मद्य-निषेध' कविता साहित्य-सम्मेलन द्वारा पुरस्कृत; प०—रायपुर।

स्वामीराम—ज०—बरार; शि०—मैट्रिक तक; प्रका०—

सचित्र योगासन, सुधावृष्टि, दृष्टि-योग, रामतरंगमाला, नरनारायण-संवाद ; प०—तुलसी-वाटिका, सिंधानियाँ मार्ग, सिविल लाइंस, लुधियाना।

हंस कुमार तिवारी—सा०-भूत संपा०—'किशोर', 'बिजली', 'छाया','ऊषा'; सदस्य गया जिला सा० सम्मेलन, नागरिक सभा, सांस्कृततिक संघ; प्रका०—साहित्यिकी, कला, साहित्यायन—आलो०, समानांतर-कहानी०,अनागत, रिमझिम, संचयन-कवि; प०—मानसरोवर-प्रकाशन, गया।

हंसराज भाटिया—ज०—३१ मार्च १९०५; शि०—एम० ए०; गवर्नमेंट कालेज, लाहौर; सा०—२३ वर्ष से अध्यापन कार्य, अध्यक्ष दर्शन - विभाग बिड़ला कालेज, और ग्राम-शिक्षा-विभाग, बिड़ला शिक्षा-ट्रस्ट पिलानी, राजपूताना; प्रका०—शिक्षा-मनोविज्ञान, पंजाब सरकार द्वारा पुरस्कृत और ट्रेनिंग कालेजों में स्वीकृत; वि०—आपके लेख विदेशों में छपते और रेडियों पर प्रसारित होते हैं; बाल मनोविज्ञान और शिक्षा-मनोविज्ञान पर अध्ययन, हास्य रस पर निबंध और एकांकी भी लिखे हैं; प०—बिड़ला कालेज, पिलानी।

हंसराज, 'राकेश'—ज०—६ जून १९२१; शि०—बी० ए० सा० वि०, राजपूताना वि० वि०; सा०—स्थानीय नागरी प्र० सभा के प्रधान मंत्री; कांग्रेस के सक्रिय सदस्य, घरेलू उद्योग धंधों के विकास में प्रयत्नशील; प्रका०—स्फुट निबंध; प०—मेहता बिल्डिंग, जालौरी मुहल्ला, जोधपुर।

हजारीप्रसाद द्विवेदी (व्योमकेश शास्त्री), डाक्टर—शि०—शास्त्राचार्य; सा०—शांति-निकेतन (बंगाल) में भूतपूर्व हिंदी अध्यापक, ओरियंटल कांफ्रेंस (दरभंगा), साहित्य- परिषद सम्मेलन-अधिवेशन (कराची), और उत्तरप्रदेशीय नव संस्कृति-संघ (बनारस) के सभापति; संपा० 'हिंदी विश्व भारती' और अभिनव - ग्रन्थमाला, बनारस, लखनऊ, पटना, कलकत्ता, नागपुर विश्वविद्यालयों की शिक्षा समितियों से सम्बंध; प्रका०—कबीर, सूरसाहित्य, हिंदी-साहित्य

की भूमिका, अशोक के फूल, बाणभट की आत्मकथा प्राचीन भारत का कला-विलास, हमारी साहित्यिक समस्याएँ, विचार और वितर्क, साहित्य का साथी, नख दर्पण में हिंदी कविता, सूरदास की कविता, प्रबंध - चिन्तामणि का हिंदी अनुवाद, नाथ समुदाय, चारुचंद्रलेख; **अप्र०**—कबीरपंथी साहित्य, पुरातन प्रबंध - संग्रह, दो बहनें आदि, रवींद्रग्रंथावली, मालवीय जी का जीवनवृत्त, **वि०**—लखनऊ विश्वविद्यालय ने आपकी साहित्य-सेवा से प्रभावित होकर डी० लिट्० की उपाधि देकर आपका सम्मान किया, 'सूर-साहित्य' नामक ग्रंथ पर मध्यभारतीय हिंदी परिषद की ओर से पुरस्कार और 'कबीर' नामक ग्रंथ पर हिंदी साहित्य-सम्मेलन की ओर से मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया ; **प०** — अध्यक्ष हिंदी-विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय, काशी ।

हजारीलाल श्रीवास्तव, 'अधीर' — **ज०** — ब्रह्मपुरी, चाँदा, १९१२; **सा०**—प्रका० और संपा० 'इन्द्र धनुष', संस्था० प्रगतिशील साहित्य गोष्ठी, प्रचारमंत्री नागपुर कवि-स्नेहमंडल; **प्रका०**—स्फुट लेख, कहानी और कविताएँ; **अप्र०**— फैशनेबुल गर्ल, उप०-**वि०**—आपकी धर्मपत्नी भी कविता करती हैं ; **प०** — हंसापुरी, नागपुर नं० २ ।

हनुमानप्रसाद, 'दिनेश'—**शि०**—विशारद; **सा०**—स्थानीय भारतेंदु-समिति के संस्थाओं में; **अप्र०**—कृष्णावतार (नाटक), निराश प्रेमी (कहानियाँ), धोखानंद शास्त्री और फैशन की मार (प्रहसन), गोदान और भारतीय रंग-मंच; **प०**—अध्यापक सिटी मिडिल स्कूल, कोटा ।

हनुमान प्रसाद पोद्दार—**ज०**—१८९२ शिलाँग, आसाम; **ज०**—संस्कृत, अँग्रेजी, मराठी गुजराती और बंगला आदि भाषाओं के ज्ञाता; **सा०**—लगभग पच्चीस वर्षों से भारतीय प्रमुख धार्मिक पत्र 'कल्याण' (हिंदी) और 'कल्याण-कल्पतरु' (अँगरेजी) के संपादक; **प्रका०** — तुलसीदल, नैवेद्य, उपनिषदों के चौदह

रत्न, लोक-परलोक - सुधार, भव रोग की रामबाण दवा, प्रेम-दर्शन, कल्याण-कुंज, मानव-धर्म, साधन-पथ, भजन-संग्रह, स्त्री-धर्म प्रश्नोत्तरी, गोपी-प्रेम, मन को वश में करने के उपाय, आनंद की लहरें, ब्रह्मचर्य, भगवन्नाम और दिव्य-संदेश; प०—'कल्याण'-कार्यालय, गोरखपुर।

हनुमान शर्मा—ज०—१८७६; शि०—स्वाध्याय से; प्रका०—गणपति-पूजन, विष्णु-पूजन-विधि, पंचदेव-पूजनविधि, व्रत-परिचय, संध्या, भारत में तमाखू, भारत में खाँड, भारत में रत्न, हिंदू त्योहार, पशु-पत्नी, गृह-शांति, सोमवती कथा, भारत में भूत, वेदांत-सार-रामायण, भारत में बाजीगर, धन्नी देवी, समर-सार, मुद्रा-प्रकाश, काम प्रबंध, जयपुर का इतिहास, मान-विजय, नाथवंश प्रशस्ति, हस्त रेखा, विद्या-कला और व्यवसाय आदि लगभग साठ ग्रंथ; वि०—आपके सौजन्य से अनेक कलापूर्ण चित्र हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए; प०—चौमूँ, जयपुर।

हरखसिंह—ज०—१८६० के लगभग; प्रका०—लगभग १५० मगही गीत जिन्हें आप स्वयं सस्वर गाते हैं; वि०—युद्धकाल में इन गीतों का खूब प्रचार हुआ; प०—परैया, गया।

हरदासशर्मा, 'श्रीश'—ज०—१६०४; जा०—उर्दू, संस्कृत, अँग्रेजी; सा०—सदस्य-सम्मेलन, विद्वान् परिषद्, सकरार-साहित्य-मंडल के संस्थापक; अप्र०—अनेक कविता-संग्रह जिनमें 'सतसई' भी है; प०—प्रधान अध्यापक, सकरार, झाँसी।

हरदेव मिश्र, 'नंदन'—ज०—१८८८; सा०—अध्यापक, संस्कृत-विभाग, खदखुरा संस्कृत कालेज; प्र०—१६२०; प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—मैकलौटगंज, गया।

हरदेव शर्मा त्रिवेदी—ज०—१६०६; शि०—ज्योतिष मार्तण्ड, ज्योतिःशास्त्री, दैवज्ञमणि उज्जैन तथा जयपुर; सा०—भूत० संपा० 'श्री मार्तंड पंचांग', गत दस वर्षों से 'श्री स्वाध्याय' और 'श्री विश्व विजय पंचांग' का सफल संपादन, भूत० प्रधान व्यवस्थापक मेहर आलम जंत्री (उर्दू), 'शिरोमणि

तिथि पत्रिका' और 'श्री बटुक-पंचांग', अनेक सार्वजनिक संस्थाओं के सम्मानित सदस्य, स्थानीय रियासतों में हिंदी-प्रचार; प्रका०—चेतावनी-समीक्षा अथवा सत्ययुग का स्वप्न, इसकी २००० प्रतियाँ बिना मूल्य वितरित हुईं, तथा २५०) का पारितोषिक महाराजा उदयपुर की ओर से मिला, अनुवाद—श्री सप्तपदी हृदय श्री परशुराम स्तोत्र और श्री राष्ट्रालोक का अनुवाद; प्रि० वि०—ज्योतिष; वि०—आपके ज्योतिष-ज्ञान और भविष्यवाणियों की बहुत प्रशंसा हुई है; प०—श्री स्वाध्याय सदन, सोलन, शिमला।

हरदेवसहाय—ज०—१८९२; प्रका०—गाय ही क्यों, गाय या भैंस, गो-संकट-निवारण, मीठा जहर, गायों का इलाज, देश के दुश्मन; वि०—'गाय ही क्यों' की भूमिका डा० राजेंद्रप्रसाद ने लिखी, इसकी ५०००० प्रतियाँ छपी हैं; प०—सातरौद खुर्द, हिसार।

हरदेवी शर्मा—ज०—१९१३, अलीगढ़; शि०—लाहौर, 'भिषक्' परीक्षा प्रथम श्रेणी; प्रका०—महिला रोग-विज्ञान, बालरोग-विज्ञान; वर्त०—अध्यक्ष नारी-जीवन-औषधालय; प०—द्वारा पं० सोमदेव शर्मा, ललित हरि आयुर्वेदिक कालेज, पीलीभीत।

हरनामदास सेठ, 'दुखी'—ज०—२५ अक्टूबर १९००, साँभर (जोधपुर); शि०—एम० ए० (गणित, सर्वप्रथम) आगरा विश्वविद्यालय; प्रका०—लगभग ३०० स्फुट कविताएँ; प०—प्रोफेसर गणित-विभाग, डिग्री कालेज, जोधपुर।

हरनामसिंह चौहान—ज०—१८८९; प्रका०—आर्यन-विजय, भारत राजवंशी इतिहास, चौहान-चंद्रिका, परमार-मार्तंड और तकली-गान; प०—मालापुरा, सोहागपुर।

हरनारायण शर्मा, 'किंकर'—ज०—१९०८; सा०—हिंदी परिषद अलवर के संस्थापक; प्रका०—युगधर्म, आजादी के गीत, जीवन के मंत्र; अप्र०—स्वराज्य-सतसई, अखंड भारत, आदि; प०—किंकर-कुटीर, जती की बगीची, अलवर।

हरवंश सहाय— **सा०**—एम० एल० ए०, भूत० सभा० चंपारन जिला साहित्य सम्मेलन, आंदोलनों में कारावास; **प्रका०**—अमेरिका की स्वाधीनता का इतिहास; **प०**—बरिअरिआ, संग्राम-पुर, चंपारन।

हरशरण शर्मा, 'शिव'—**ज०**—१६०२; **शि०**—सा० रत्न; **प्रका०**— मानस-तरंग, सुषमा और मधुश्री; **वि०**—आपकी धर्म-पत्नी प्रभा देवी भी अच्छी कविता करती हैं; उनका 'पिकी' काव्य प्रेस में है; **प०**—डिप्टी-इंस्पेक्टर आव स्कूल्स, दक्षिणी शहडोल, बी० एन० आर० (विंध्यप्रदेश)।

हरिकृष्ण अवस्थी— **ज०**—१६१५ के लगभग; **शि०**—कान्यकुब्ज कालेज लखनऊ से इंटर १६३६, बी० ए० (१६३८) और एम० ए० (१६४०) लखनऊ वि० वि०—प्रथम श्रेणी में प्रथम; **सा०**—लखनऊ विश्व-विद्यालय के तत्वावधान में प्रकाशित त्रैमासिक 'ज्ञानशिखा' के सहायक संपादक, लखनऊ और सीतापुर की साहित्यिक संस्थाओं के सक्रिय पदाधिकारी और कार्यकर्ता, स्वतंत्रता आंदोलन में सोत्साह भाग लिया; **प्रका०**—तुलसीकृत उत्तरकांड(विस्तृत भूमिका सहित); **वि०**—कविवर देव पर पी-एच० डी० के लिए थीसिस लिख रहे हैं; **प०**—प्राध्यापक हिंदी-विभाग, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

हरिकृष्ण, 'कमलेश'—**ज०**—१६०० के लगभग; **प्रका०**—स्फुट कविताएँ; **प०**— वैद्य, डीग तहसील, भरतपुर।

हरिकृष्ण खरे— **ज०**—१६२२; **शि०**—एम० काम० प्रयाग वि० वि०; **प्रका०**—स्फुट वाणिज्य संबंधी लेख; **वि०**—हिंदी माध्यम से ही उच्च शिक्षा देते हैं; १६४६ से एफ० एन० जी० एस० हैं; **प०**—प्राध्यापक हिंदी-वाणिज्य विभाग, शिवाजी कालेज, पिलानी।

हरिकृष्ण, 'जौहर'—**ज०**—१८८०; **जा०**—उर्दू, संस्कृत, अँग्रेजी, फारसी, बँगला, मराठी तथा गुजराती; **प्र०**—१८६३; **सा०**—संपादक—'मित्र,' 'उपन्यासतरंग', 'द्विज-

राज,' 'वेंकटेश्वर - समाचार', 'भारत-जीवन', 'वंगवासी'; नागरी प्रचारिणी सभा, कलकत्ता की स्थापना; मदन थियेटर्स लिमिटेड में नाटककार रहे; कई कंपनियों में स्टेज और फिल्म के लिए नाटक लिखने का काम किया; **प्रका०**— उपन्यास— कानिस्टेबुल वृत्तांत-माला, भूतों का मकान, नर-पिशाच, भयानक भ्रमण, मयंकमोहिनी, शीरी फरहाद, जादूगर; ऐतिहासिक— अफगानिस्तान का इतिहास, जापान-वृत्तांत, देशी राज्यों का इतिहास, रूस-जापान युद्ध, सागर-साम्राज्य, सिक्ख - इतिहास, नेपोलियन; विविध—हाजी बाबा, सर्वे सेटिलमेंट, ट्रांसलेशन ऐंड रीट्रांसलेशन, भूगर्भ की सैर, विज्ञान और बाजीगर, कबीर मंसूर; अनुवाद— श्रीमद्भागवत, महाभारत, अध्यात्म-रामायण, कल्कि पुराण, मार्कंडेय-पुराण, काशी, याज्ञवल्क्य-संहिता, अत्रि - संहिता, हारीत - संहिता; नाटक—सावित्री सत्यवान, पति-भक्ति, प्रेमयोगी, वीर भारत, कन्याविक्रय, चंद्रहास, सती लीला, भार्यापतन, प्रेमलीला, औरत का दिल, ऊषाहरण, देश का लाल, सालिवाहन; प०—'वेंकटेश्वर-समाचार'-कार्यालय, बंबई।

हरिकृष्ण त्रिवेदी— ज०— १६१६; **शि०—** अल्मोड़ा; **सा०**—'सैनिक' (आगरा) का संपादन, 'हंस'-कार्यालय में कार्य; **प्रका०**—राजनीतिक व आर्थिक विषयों पर लेख, सुभाष जी की जीवनी, प्रबोधकुमार-कृत 'महा-प्रस्थानरिपथे' का हिंदी अनुवाद, कहानियाँ; **प०**—दैनिक 'हिंदोस्थान'-कार्यालय, दिल्ली।

हरिकृष्ण, 'प्रेमी'— ज०— गुना, ग्वालियर; प्र०—१६२७; **सा०**— भूत० सहा० संपा०— 'त्यागभूमि', 'कर्मवीर' और मासिक 'भारती' लाहौर; एक वर्ष बंबई में रहकर फिल्मों के कथानक, संवाद और गीत लिखे; लाहौर में भारती प्रेस की स्थापना की; मासिक 'सेवा' भी निकाली; सामयिक साहित्य-सदन लाहौर के संस्थापकों में एक, मासिक 'शिक्षा' के भूत० संपादक; **प्रका०** —आँखों में, जादूगरिनी, अनंत के

पथ पर, अग्निगान, प्रतिभा; नाटक—पाताल-विजय, रक्षा-बंधन, शिवा-साधना, प्रतिशोध, आहुति, विषपान, मित्र, उद्धार, छाया, बंधन; एकांकी—मंदिर।

हरिकृष्ण राय —शि०—सा०र०; सा०—संस्थापक हिंदी-प्रचारिणी सभा बलिया और—सम्मेलन-परीक्षा-केंद्र बैरिया (बलिया), श्री भवनाथ पुस्तकालय वाजिदपुर; प्रका०—राष्ट्रभाषा और तुलसी-छंदमंजरी तथा अनेक साहित्यिक आलोचनात्मक लेख; प०—प्रधान अध्यापक, मिडिल स्कूल, बलिया।

हरिदत्त दुबे—ज०—१८६६; शि०—एम० ए० सागर, जबलपुर; प्रका०—अनेक पाठ्य पुस्तकें, लेख और काव्य-संग्रह; वि०—अँग्रेजी में भी लिखते हैं; प०—हिंदी अध्यापक, राबर्टसन कालेज, जबलपुर।

हरिदत्त शर्मा—पं० भीमसेन शर्मा के सुपुत्र; ज०—१५ जून १६०६; शि०—एम० ए० (हिंदी) आगरा वि० वि०, वेदांत-आचार्य, व्याकरण-शास्त्री, सांख्य-तीर्थ, काव्यालंकार, आयुर्वेदाचार्य, शास्त्री (प्रथम); सा०—संपा०—'भारतोदय' (मासिक); प्रका०—काव्य-दीपिका, छंदमंजरी, लघु-चंद्रिका, प्रबन्ध-मंजरी, सद्उक्ती-करनचरितम्; वर्त०—आचार्य, संस्कृत महाविद्यालय, प्रबंधक—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, संचा०—आयुर्वेद फार्मेसी, अध्यापक, बलवंतराजपूत कालेज आगरा, कोषाध्यक्ष आल इण्डिया विद्यापीठ; प०—बलवंत राजपूत कालेज, आगरा।

हरिद्वार त्रिपाठी—ज०—१६२१; शि०—व्याकरण, धर्मशास्त्राचार्य, सा० र०, सा० लं, काव्यतीर्थ, न्यायशास्त्री; सा०—मन्त्री—हिं० सा० परिषद काशी, सभापति और मन्त्री—सुहृद-साहित्य-गोष्ठी, युवक-समाज, १६४२ के आंदोलन में भाग; स्थापना—मिडिल स्कूल प्रभुपुर काशी; प०—सुहृद-साहित्य-गोष्ठी, 'सरिता'-कार्यालय, काशी।

हरिद्वारी लाल शर्मा—ज० १६०२; शि०—महाराज संस्कृत

कालेज जयपुर; प्रका०— आनंद-बहार ; प०—जयपुर।

हरिनंदन चौधरी—ज०—१३ अक्टूबर १९१८; शि०—एम० ए०, डिप० एड०, सा० र० ; अप्र०—हिंदी काव्य में सामाजिक चेतना और एकांकी नाटक ; प्र०—अध्यापक, जी० बी० बी० कालेज, मुजफ्फरपुर।

हरिनामदास महन्त— ज० १८८० ; शि०—सक्खर ; सा०—सनातन धर्म युवक सभा, पंचायती गौशाला के सभापति ; सिंध हिंदी विद्यापीठ सक्खर के संस्थापक और सभापति ; प्रका० — विचार-माला, ओरिजिन एंड ग्रोथ आव उदासी, विष्णुसहस्रनाम, कृष्णजी की मुरली, धन्य सद्गुरु, प्राचीन मुनियों का पुरुषार्थ, गुरुवनखंडी जपुजी, जीवनचरितामृत, जगद्गुरु श्रीचद्रजी की माया-सटीक।

हरिनारायण—ज०—१९१३; शि०—महाराजा कालेज जयपुर से इंटर, विशारद ; प्रका०—कृष्ण-सुदामा, पतिव्रता पत्नी, मान-मंगल, वीर-वधू, जयपुरेंद्रमान सुयश-प्रकाश ; प०—ठि० राव गजानंद कवि, जयपुर।

हरिनारायण, 'आशुकवि'—ज०—१८६३ ; शि०—शास्त्री, (प्रथम श्रेणी में), महोपाध्याय, आशुकवि और कविभूषण (उपाधियाँ) ; सा०— स्थानीय हिंदी-प्रचारिणी-सभा के भूत० मंत्री और हिंदी-साहित्य-परिषद के उप सभापति, अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य सम्मेलन के बत्तीसवें अधिवेशन की स्वागत-समिति के उपाध्यक्ष; प्रका०—शिक्षा-रत्नावली, माधव-मान, महाकाव्य, श्रीहरि-गीतांजलि; अनुवाद—गीतगोविंद, भर्तृहरिशतक; संस्कृतग्रंथ—अलंकार-कौतुक, अलंकार-लीला, प्रेम-सुधा, उदर-प्रशस्ति, सिद्धिस्तव, वाणी-लहरी, लक्ष्मी-नक्षत्र-माला, नाकवंश-प्रशस्ति, अन्योक्ति-शतक, दर्पदलन ; प०— जयपुर।

हरिनारायण, पुरोहित—ज०—१८६४ ; शि०—बी० ए० सर्वप्रथम, विद्यार्थी जीवन में नार्थ ब्रुक पदक (दो बार) और लार्ड लैंसडाउन पदक (सर्वश्रेष्ठ आने के फलस्वरूप) प्राप्त किया ; सा०—४० वर्ष तक राजसेवा करके १९२९

में अवसर प्राप्त किया, जयपुर में हिंदी-प्रचार करने का विशेष प्रयत्न किया, पारीक पाठशाला हाई स्कूल को सात हजार का दान दिया, बालाबक्श राजपूत चारणमाला के संस्थापक; **प्रका०**— संपादित—विशूचिका—निवारण, तारागण सूर्य में, महामति मि० ग्लेडस्टन, सतलड़ी, सुन्दर-सार, महाराजा मिर्जा राजा मानसिंह प्रथम, व्रजनिधि-ग्रंथावली, सुन्दर-ग्रंथावली, महाकवि गंग के कवित्त, गुरु गोविंदसिंह के पुत्रों की धर्म-बलि ; **वि०**—आजकल मीराबाई की पदावली का संपादन और उनकी जीवन-सामग्री का संकलन कर रहे हैं; आपके पास संत-साहित्य और हस्तलिखित ग्रंथों का अच्छा संग्रह है; **प०**— जयपुर।

हरिप्रसाद द्विवेदी, 'वियोगी-हरि'— **ज०**—१८६६, छत्रपुर राज्य; **सा०**—प्रयाग में रहकर 'सम्मेलनपत्रिका' और सूरसागर का संपादन किया; १९३२से गाँधी-सेवा-संघ के सदस्य हुए और 'हरिजन-सेवक' का संपादन किया; **प्रका०**— प्रेमशतक, प्रेम-पथिक, प्रेमांजलि, प्रेम-परिचय, संक्षिप्त सूरसागर, तरंगिनी, शुकदेव, श्रीछद्मयोगिनी, साहित्य-विहार, कवि-कीर्तन, अनुराग-वाटिका, ब्रज माधुरीसार, चरखा-स्तोत्र, महात्मा गांधी का आदर्श, बढ़ते ही चलो, चरखे की गूँज, वकील की राम-कहानी, असहयोग-वीणा, वीर-वाणी, श्री गुरु-पुष्पांजलि, वीर-सतसई, पगली, मन्दिर-प्रवेश, विश्वधर्म, प्रबुद्धयामुन, बिहारी-संग्रह, सूर-पदावली, वृत्तचंद्रिका, भजनमाला, योगी अरविंद की दिव्यवाणी, युद्धवाणी, संतवाणी, ठंडे छींटे, प्रेमयोग, गीता में भक्तियोग, भावना, प्रार्थना, अंतर्नाद, विनयपत्रिका की टीका, तुलसी-सूक्तिसुधा, हिंदी-गद्य-रत्नावली, हिंदी पद्य-रत्नावली, मीराबाई-पदावली ; **प०**— हरिजन-उद्योगशाला, किंग्सवे, दिल्ली।

हरिप्रसाद, 'रसिक'— **ज०**—६ मार्च १८९२ ; **शि०**—बी० एम० सी० डी०; **सा०**—संपा० 'प्रकाश' मासिक, मंत्री हिं० सा०

स० चम्पारन जिला, सभा० आर्य समाज बेतिया ; प्रका०—गद्य-विनोद, प्रेम-प्रवाह; अप्र०—रसिक-कवितावली, श्रद्धांजलि, अन्तर्ज्वाला ; वर्त०— अध्यापक, विपिन विद्यालय, बेतिया; प०—साहित्य-सदन, बेतिया, चंपारन।

हरिप्रसाद, 'हरि'— ज०—१६१५; प्रका०—स्फुट कविताएँ; अप्र०—भगवान महावीर (महाकाव्य) ; प०— कटरा बाजार, ललितपुर।

हरिभाऊ उपाध्याय—जा०—१८६२; शि०— हिंदू कालेजियट स्कूल, काशी; प्र० — १६१३; जा०—अँगरेज़ी, गुजराती, मराठी उर्दू; सा०—भूत० संपा 'नवजीवन', त्यागभूमि', 'मालव-मयूख', 'राजस्थान','जीवनसाहित्य';स्वदेश की स्वतंत्रता-प्राप्ति के आंदोलनों में सदैव सक्रिय भाग लिया, कई बार जेल गये; प्रका०—मौलिक-स्वतंत्रता की ओर, बुद्बुद् और स्वगत, युगधर्म (जब्त); अनुवादित ग्रंथ—जीवन का सद्व्यय, कांग्रेस का इतिहास, मेरी कहानी, आत्मकथा, सम्राट अशोक और रागिनी, काकर का जीवन-चरित; प०—ठि० सस्ता साहित्य-मंडल, कनाट सरकस, नयी दिल्ली।

हरिमोहन झा—ज०—१६०८; शि०—एम० ए०; प्रका०—भारतीयदर्शन-परिचय, तीस दिन में संस्कृत, तीस दिन में अँगरेजी, संस्कृत रचना-चंद्रोदय, संस्कृत रचनाचंद्रिका, अनुवाद-चंद्रोदय, कन्यादान (उप०); प०—प्राध्यापक, दर्शन-विभाग, बी० एन० कालेज, पटना।

हरिमोहनलाल श्रीवास्तव, 'मोहन'—ज०—१३ अगस्त १६१७; शि०—एम० ए०; सा०—भूत० संपा० 'विजय' पाक्षिक दतिया, प्रधान-गांधी पुस्तकालय दतिया;प्रका०—मेरी आह, झाँसी की रानी, दतिया का जन-आंदोलन,अलंकार, पिंगल और रस तथा हिंदी गद्य-काव्य का आलोचनात्मक इतिहास, हिंदी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास; प०—अध्यापक लार्ड रीडिंग हाई स्कूल, दतिया।

हरिलाल बाथ्रे—शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०; सा०—

हैदराबाद हिंदी-प्रचार-सभा के अध्यक्ष, प्रधान मंत्री, कोषाध्यक्ष आदि विभिन्न पदों पर रह कर हिंदी-सेवा की है; **प्रका०**—स्फुट; प०—वकील, हैदराबाद (द०)।

हरिवंश प्रसाद दुबे, 'नाना जी'— **प्रका०** — आजादभारत नाटक, श्यामा काव्य; प०—गढ़ा, जबलपुर।

हरिवंश राय 'बच्चन'—ज०—२७ नवम्बर, १९०७; **शि०**—एम० ए० (अँगरेजी) प्रयाग वि०वि०; प०—'तेराहार' १९३२; **प्रका०**—मधुशाला (१९३३), मधुबाला—१९३५, मधु - कलश (१९३७), निशा-निमंत्रण १९३८, एकांत संगीत (१९३९), आकुल अंतर (१९४३), सत - रंगिनी (१९४५), बंगाल का अकाल (बँगला में अनूदित) (१९४६), हलाहल (१९४६), खादी के फूल (सुमित्रानंदन पंत के सहयोग में), सूत की माला (१९४८), प्रारंभिक रचनाएँ—३ भाग; **अप्र०**—मिलन-यामिनी ; **प०**—प्राध्यापक, अँगरेजी - विभाग, विश्वविद्यालय, प्रयाग।

हरिवल्लभ—ज० — **१९११**, सीसावली कोटा, **शि०**—सा० र०; **सा०**—प्रधान मंत्री श्री भारतेन्दु समिति कोटा, भूत० संपा० 'भारतेन्दु'; **प्रका०**—बुद्बुद्, काया कल्प (ना०) तथा अन्य पाठ्यक्रम की पुस्तकें; **अप्र०**—किरण, प्रभाती, मिलन, हाड़ोती कहावतें, हाड़ोती गीत; **वर्त०**—संपा० 'विकास' त्रैमासिक; **प०**—सिटी हाई स्कूल, कोटा।

हरिवल्लभ दाधीच—ज०—१९०५; **शि०**—अँगरेजी, **प्रका०**—अमृतवर्षा नाटक; **सा०**—दो पुस्तकालयों की स्थापना; प०—बूँदी, राजस्थान।

हरिशंकर— ज० — **१९२१** देवरिया, ग्राम महुआ पाटन; **शि०**—एम० ए०, एल० टी०; **प्रका०**—स्नेहदान (कहा०), प्राचीन भारत, इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट लेख; **प०**—प्राध्यापक, सेंट ऐंड्रूज कालेज, गोरखपुर।

हरिशंकर— ज० —१९२४; **का०**—'हिन्दी-प्रचार-पत्रिका' के संपा०, बम्बई हिंदी-विद्यापीठ के मंत्री ; **प्रका०**—स्फुट आलोचना-

त्मक लेख ; प०—१२५, गिरगाँव रोड, बम्बई ४।

हरिशंकर उपाध्याय—सा०—कई पत्रों के सम्पादक; प्रका०—संपादक—मारवाड़ी समाज की आहुतियाँ, बिहार के आधुनिक कवि, दिनकर : एक अध्ययन, सारन जिले के कवि और लेखक; वि०—'साजन साहित्य रत्न' नाम से हास्यरस के लेखक ; प०—गिरिजा पुस्तक मंदिर सलेमपुर, छपरा; अथवा संपादक—'आदर्श' १९८।१ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

हरिशंकर द्विवेदी—शि०—पटना विश्वविद्यालय के स्नातक ; सा०—भूतपूर्व सम्पादक 'विश्व मित्र' बम्बई ; प्र०—१९३९ ; प०—संपादक 'विश्वमित्र', दिल्ली।

हरिशंकर वैदिक — ज०—१९२६ गौरा ग्राम, आजमगढ़ ; प्रका०—बिंदी (कोशकाव्य) और कवि का प्रणाम (एकांकी) ; प० —भदैनी, बनारस।

हरिशंकर शर्मा—कविवर श्री नाथूराम शर्मा 'शंकर' जी के पुत्र; ज०—१८९३, अलीगढ़ ; सा० —'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' और 'देव-पुरस्कार' के निर्णायक; भूत० संपा०—'आर्यमित्र', 'भारतोदय', 'सैनिक', 'साधना', 'प्रभाकर' आदि उत्तर प्रदेशीय हिंदी-पत्रकार-सम्मेलन प्रयाग १९४७ के अध्यक्ष, अ० भा० हि० सा० स० (वृंदावन) द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष ; १९४२ में जेल यात्रा, आर्य-समाज के कार्यकर्ता ; प्रका०—४२ पुस्तकें लिखीं, मुख्य ये हैं:—प्रतापी-प्रताप, सूक्ति-सरोवर, जीवन-ज्योति, गौरव-गाथा-, पद्य-प्रभा, वीरांगनाएँ, विचित्र विज्ञान, रस-रत्नाकर, उर्दू साहित्य-परिचय, चिड़िया घर, पिंजरापोल, धर्म का आदि स्रोत (अनु०), घासपात और विक्रम (कवि०); वि०—घास पात पर २०००) का देवपुरस्कार, विक्रम पर ५०१) पुरस्कार बम्बई अ० भा० कवि-सम्मेलन से प्राप्त, आपके पुत्र और पुत्र-वधुएँ सभी लेखक और ख्याति प्राप्त विद्वान हैं; आपके सुपुत्र प्रो० दयाशंकर जी ने कई पुस्तकें लिखी हैं; प०— ठि० निराला प्रेस, आगरा।

हरिशरण शर्मा, 'शिव'—ज०—२ जूलाई १६०२; शि०—सा० र० ; प्रका०—मानस-तरंग, सुषमा, मधुश्री ; **अप्र०**—आदर्श (उप०), स्तवक (कवि०), प्रवाहिनी (कवि०); **प०**—सब - इंसपेक्टर आव स्कूल्स, रीवाँ।

हरिश्चन्द्र देव वर्मा, 'चातक'—ज०—१६०८; शि०—कविरत्न, काव्यालंकार, काव्यमनीषी, गुरुकुल डी० ए० वी० कालेज, कानपुर, बँगला का यथेष्ठ ज्ञान; **प्रका०**—नैवैद्य, वासंती, क्रांतिदूत, भावों के स्वर्ग में; **अप्र०**—तपोवन, शतसन्दर्भ, वे चित्र, (कहा०), प्राचीन भारत के अस्त्र - शस्त्र, महाकवि तुलसीदास, विलियम वर्डस वर्थ की जीवनी और उनकी कविताएँ, हिंदी साहित्य में करुण रस, उर्दू से हमें क्या सीखना चाहिए ? **प०**—शांतिकुटीर, अतरौली, छिबरामऊ, फरुखाबाद।

हरिसेवक द्विवेदी, 'विप्लवी', डाक्टर—ज० —१६२२ ; शि० सा० र०, बी० एस सी०, एम० पी०, एम० बी० ; प्र०—दुनिया किधर ; **सा०**—हिंदी परीक्षाओं की व्यवस्था, प्रधानमंत्री समाजवादी पार्टी, किसान-संगठन के उत्साही कार्यकर्ता ; **प्रका०**—भारतीय पत्रकार, क्रांतिकारी साजिस, अनुकरण, सफाई ; प०—सम्पादक 'जीता-संसार', लश्कर, ग्वालियर।

हरिहर निवास द्विवेदी—ज०—८ जुलाई, १६१२, शिवपुरी ; शि०— एम०ए०, एल-एल० बी० ग्वालियर, कानपुर, नागपुर ; **सा०**—पोहरी और मुरार में सम्मे० की परीक्षाओं के केंद्र खुलवाये; **प्रका०**—महात्मा कबीर, महाराणी लक्ष्मी बाई; हिंदी साहित्य, श्रीसुमित्रानंदन पंत और गुंजन; शासन-शब्द-संग्रह ग्वालियर राज्य के विधानों तथा शासन- कार्य में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का संग्रह, कानून हकशफा-टीका, कानून सियेबुलूग टीका ; **अप्र०**—राजनीति - विज्ञान; प्रसाद और कामायनी, हिंदी साहित्य की एक शताब्दी—१६०० से २०००; प० — कोडीफिकेशन आफीसर, ग्वालियर राज्य।

हरिहर मिश्र—ज०—१६०६; शि०—बी० एस-सी०, एल-एल०

बी० ; प्रका०—स्फुट कविताएँ, —कहानियाँ ; कई उपन्यास भी ; प०—झाँसी।

हरिहर शर्मा—**सा०**—१६३८-४० तक राष्ट्रभाषा-प्रचार - समिति वर्धा के परीक्षामंत्री रहे ; इस समय स्वतंत्ररूप से हिंदी-प्रचार कर रहे हैं ; प०—वर्धा।

हरिराव त्रिवेदी; 'हरि'—**ज०**—फरवरी १८७३ ; **शि०**—**सा०** आ० ; **जा०**—उर्दू, अँगरेजी; **प्रका०**—नाटक—कैकेई, हरदौल, कससमा ; **वर्त०**—**१४** बर्षों से श्रीविश्वनाथपुरी में ललिता घाट पर भक्ति-भजन में निमग्न; प०—रमा-निवास, हटा, दमोह।

हरीशमित्र भनोत—**सा०**—शिमला से प्रकाशित 'राजनीति' के संपादक; **प्रका०**—स्फुट सामयिक लेख ; प० — रुकबिले लाज, शिमला।

हरेकृष्ण धवन—**ज०**—१४ जनवरी, १८८०; **शि०**—बी०ए०, एल-एल० बी० लखनऊ ; **जा०**—उर्दू, फारसी, संस्कृत , अँगरेजी; **सा०**—म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के समय समय पर सदस्य ; १८९६ से १९११ तक कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में प्रतिनिधि ; हिंदू यूनियन क्लब और प्रेम-सभा के संस्थापकों में ; अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के लखनऊ-अधिवेशन में प्रमुख सहयोग ; जातीय मासिक 'खत्री-हितैषी' के प्रधान संपादक—**१६३६** से ४१ तक, कालीचरण हाई स्कूल के भूत० प्रबंधक और हितैषी ; **अप्र०**—सिद्धांत-निर्णय (नाटक—यह एक बार खेला जा चुका है), शंकराचार्य की शतश्लोकी, ऋग्वेद के कुछ अंश और ईशोपनिषद् का पद्यानुवाद; प०—चौक, लखनऊ।

हर्षुल मिश्र, कविराज—**शि०**—बी० ए०, प्रभाकर पंजाब विश्वविद्यालय; **सा०**—छत्तीसगढ़ श्रमजीवी संघ के १६३८ से अध्यक्ष; स्थानीय कांग्रेस कमेटी के भूत० सभापति, छुईखदान स्टेट कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष, सत्याग्रह आंदोलन में कई बार जेल-यात्रा, रायपुर हिंदू सभा के भूत० मंत्री; **प्र०**-१९३०; **प्रका०**—हर्षुलधर्म-विवेचन; प०—बालाघाट।

हवलदार त्रिपाठी, 'सहृदय'—ज०—शाहाबाद; शि०—सा० आ; सा०—भूत० संपा० 'बालक' और 'हिमालय'; वर्त० संपा० 'जनता'; अप्र०—स्फुट कविताएँ; प०—'जनता'-कार्यालय, बाँकीपुर, पटना।

हवलदारीराम गुप्त, 'हलधर'—ज०—हरिहर गंज; सा०—मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय (बिहार) और महावीर हिन्दी पुस्तकालय के संयुक्त मंत्री, संपादक रौनियर बंधु; प्रका०—वैश्य-कर्म, जातीय संगठन, आदर्श विवाह, कुरीतिनिवारण - सुनीति-संचारण, सुलभ स्वास्थ्य - रक्षा, त्यागी भरत, वीरलक्ष्मण, बंगाल की बेटी, बालक-विनोद, प०—रौनियर बंधु-कार्यालय, डालटनगंज, पलामू, बिहार।

हिंगलाजदान कविया, बारहट—ज०—१८६७; प्रका०—मेवाड़-महिमा; अप्र०—मृगया-मृगेंद्र; प०—जयपुर।

हिरण्मय—शि०—सा० र०; सा०—हाई स्कूल टेक्स्ट बुक कमेटी मैसूर की हिंदी - सबकमेटी के भूत० सदस्य, साहूकार धर्मप्रकाश डी० बनुमय्या हाई स्कूल मैसूर के भूत० अध्यापक, कर्नाटक प्रान्तीय हिन्दी - प्रचार - सभा की कार्यकारिणी समिति बेंगलोर के भूत० सदस्य; प्रका०—ज्योतिषाचार्य की चार पुस्तकें (कन्नड भाषा से हिंदी में अनुवादित) तथा अनेक साहित्यिक लेख; प०—हिंदी प्रचार-समिति, मैसूर।

हीरादेवी चतुर्वेदी—ज०—२ मई १९१५; शि०—हिंदी, अँगरेजी; प्रका०—मंजरी, नीलम, मधुबल और उलझी लड़ियाँ; वर्त०—महिलोपयोगी मासिक 'मनोरमा' का संपा०; वि०—रेडियो पर गीत प्रसारित होते हैं; प०—बेलविडियर प्रेस, प्रयाग।

हीरालाल—ज०—१८९९ जोबनेर; शि०—बी० ए० जयपुर कालेज; सा०—राजसेवा (१९२१-२७), वनस्थली बालिका विद्यालय, भूत० अध्यक्ष जयपुर राज - प्रजा मण्डल, राष्ट्रीय कार्यकर्ता; प्र०—१९१७; प्रका०—जीवन-कुटीर के गीत; अप्र०—धर्मविजय नाटक;

प० — जीवन-कुटीर, वनस्थली, जयपुर।

हीरालाल जैन—ज०— १६ अप्रैल १८६६, गांगई, गाडरवारा, होशंगाबाद ; शि०—एम० ए०, संस्कृत, एपीग्राफी और पैलोग्राफी (सर्वप्रथम आये), १६२२ में एल-एल० बी० प्रयाग वि० वि०, डी० लिट्० नागपुर वि० वि० ; **सा०**—आरंभिक तीन वर्ष तक प्रयाग विश्वविद्यालय में रिसर्च स्कालर रहे, १६२५ में मध्यभारतीय शिक्षाविभाग में प्रोफेसर नियुक्त हुए ; **प्रका०**—सम्पादक नल-कुमार - चरित, करकंडू - चरित; श्रावक, कारंजा - जैनमाला, देवेंद्र कीर्ति-जैन - माला, जीवराम जैन-माला, ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन-ग्रन्थमाला काशी, माणिकचन्द जैन-ग्रन्थमाला, जैन - शिलालेख-संग्रह, जैन - सिद्धान्त के महान प्राचीन ग्रन्थ षट्खडागम का संपादन ; **वर्त०**—हिन्दी में अप-भ्रंश भाषा परिचय और इतिहास की सामग्री एकत्र कर रहे हैं जो 'नागरी - प्रचारिणी पत्रिका' में प्रकाशित हुई है ; प० —प्राध्यापक, विश्वविद्यालय, नागपुर।

हीरालाल जैन , 'कौशल'—ज०—११ मई १६१४; **शि०**—सा० रत्न, शास्त्री, न्यायतीर्थ, विद्याभूषण,प्रभाकर, सर हुकुमचंद महाविद्यालय इन्दौर ; **सा०**—पिछले ११-१२ वर्षों से 'जैन-प्रचारक' के संपादक, अनेक साहित्यिक संस्थाओं के पदाधिकारी, अध्यापक हिंदी और धर्म ; **प्रका०**—अनेक संपादित ग्रन्थ ; प०—हायर सेकेंडी स्कूल, सदर बाजार, दिल्ली।

हीरालाल जैन पांडे,'हीरक'—शि०—सागर और काशी, बी० ए० काशी वि० वि०, सा० आ०, सा० र० ; **सा०**— सभापति साहित्य साधना-समिति बनारस ; **प्रका०**--बाहुबली काव्य; **अप्र०**—बेलाकली, मुक्ताहार और अंजलि; प० – भोपाल।

हीरालाल दीक्षित—शि०—एम० ए० और पी - एच० डी० लखनऊ वि० वि० ; पी - एच० डी० की थीसिस का विषय 'केशव-दास का काव्य' था; **प्रका०**—स्फुट आलोचनात्मक लेख; वि०—

कई बार अस्थायी रूप से लखनऊ वि० वि० में हिंदी के प्राध्यापक रह चुके हैं; प०—अहियागंज, लखनऊ।

हीरालाल पालित—ज०—१९१८; शि०—प्रेममहाविद्यालय बृंदाबन और काशी विद्यापीठ; सा०—काशी विद्यापीठ में दर्शन-शास्त्र के स्नातक १९२६, तीन बार जेल जा चुके हैं; प्रका०—बालचर, द्वंदात्मक भौतिकवाद अथवा समाजवाद की फिलासफी (अँगरेजी सरकार ने इसे जब्त किया था); समाजवाद-संबंधी स्फुट लेख; वि०—आचार्य श्री नरेंद्रदेव से विशेष प्रभावित; प०—मुरारपुर, गया।

हुकुमचन्दबुखारिया, 'तन्मय'—ज०—१९२१; शि०—सा० रत्न ललितपुर; सा०—१९४१ और ४२ के राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय भाग और जेल-यात्रा दो बार; प्रका०—आहुति (कवि०), पाकिस्तान, प्रह्लाद, और बुंदेल-खंडी भाषा में लोक-गीत लिखे; अप्र०—मेरे बापू; प०—ललितपुर, झाँसी।

हृषीकेश चतुर्वेदी—ज०—१९०८; प्र०—१९२२; प्रका०—विजयवाटिका, गीतांजलि, रसरंग, संयुक्तवर्ण-विज्ञान, मेघदूत, वृद्ध नाविक; अप्र०—गीता, भंग का लोटा, गागर में सागर; प०—आगरा।

हृषीकेश शर्मा—सा०—अध्यापन द्वारा अहिंदी प्रांतों में प्रचार-प्रसार करनेवाले साहित्य-सेवी; 'सबकी बोली' के प्रबंधक रहे; इस समय 'राष्ट्रभाषा-प्रचार' के प्रबंध संपादक हैं; प०—मंत्री राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति वर्धा।

हेमंतकुमार वर्मा—ज०—१९११; प्र०—१९४०; अप्र०—लवकुश, वीरनारायण, नीराजना कीर्ति, हिमकण, धूमिल चित्र; प्र० वि०—चित्रकला; प०—६४७ मालदारपुर, जबलपुर।

हेमंत भट्टाचार्य—शि०—सा० वि०; सा०—हस्तलिखित 'राष्ट्रवाणी' और 'राष्ट्रभाषा' के संपा०, आसाम प्रांतीय राष्ट्रभाषा ट्रेनिंग स्कूल खोले, राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय भाग; प्रका०—नवीन असमिया राष्ट्रभाषा-शिक्षक,

ब्रह्मपुत्र-उत्पत्ति-इतिहास, हिंदी असमिया-व्याकरण, हिंदी-असमिया-मुहावरे और कहावतें; अप्र० — हिंदुस्तानी - प्रवेशिका, साहित्य, हिंदी - असमिया - शब्द-कोश; प०—नौगाँव, आसाम।

हेमचन्द चतुर्वेदी—ज०-२४ जनवरी १६२५; शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०, साहित्य रत्न; सा०—साहित्य-संसद प्रयाग के सद० ; प्रका०-स्फुट लेख; वर्त०— डिस्ट्रिक सप्लाई आफिसर, रायबरेली; प०—गंगा दरवाजा, अनूप शहर, बुलन्दशहर।

होमवतीदेवी— ज०—१६०६ मेरठ;प्रका०-उद्‌गार, अर्घ्य, प्रतिच्छाया-कविता संग्रह, निसर्ग, धरोहर ; प०—पर्णकुटी, नेहरु रोड, मेरठ।

होरीलाल शर्मा — ज०—१६१६ शाहजहाँपुर; शि०—एम० ए० (संस्कृत और हिंदी); प्रका० —दीपदान, पथ-शूल, प्रलापिनी, किरण-वधू ; अप्र०-प्रणय सलिल, चन्द्रकुसुम, गृहस्वामिनी ; प०— अध्यापक , गवर्नमेंट कालेज, अल्मोड़ा ।

(प्रथम खंड समाप्त)

हिंदी-सेवी-संसार

दूसरा खंड

हिंदी-संस्थाओं का परिचय

अनंत हिंदी मंदिर—दुर्बोली, निमाजीपुर, शाहाबाद (बिहार); स्था० — १९३५, श्री रामवचन द्विवेदी 'अरविंद', सा० लं०, उद्दे०—हिंदी-प्रचार तथा ज्ञानार्जन; मंदिर के पुस्तकालय में १२०० पुस्तकें हैं, वाचनालय में कई पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं।

अन्नपूर्णा पुस्तकालय — तिलसा, इसमें ३००० पुस्तकें हैं।

अभिमन्यु पुस्तकालय-काशी-१९३५ में सर्वश्री बनारसीलाल, मन्नूलाल, गंगाशंकर, दुर्गाप्रसाद, राजमणि, संतशरण, गिरिवरप्रसाद आदि द्वारा स्थापित; लगभग ३००० पुस्तकें हैं, २५ पत्र-पत्रिकाएँ वाचनालय में आती हैं, एक रात्रिपाठशाला का संचालन होता है, नवंबर १९५० से 'शांतिदूत' नामक एक त्रैमासिक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया है, पुस्तकालय का यह कार्य विशेष महत्व का है।

अर्थशास्त्र परिषद्—विश्वविद्यालय प्रयाग—लगभग ६००, सदस्य हैं; अर्थशास्त्र के ज्ञान का प्रचार उद्देश्य है; सारा काम हिंदी में होता है; 'ज्योति' नामक वार्षिक पत्रिका प्रकाशित होती है।

आचार्य शुक्ल-साधना मंदिर, कानपुर; संस्था का भवन लगभग ४०००० रुपये का है; इसके पुस्तकालय में ३९४८ पुस्तकें हैं; इसने कचहरियों में हिंदी-प्रचार का कार्य आरंभ किया है।

आजाद भवन पुस्तकालय—फतेहपुर, जयपुर; स्था०-अगस्त १९४२; सेठ सोहनलाल दूगड़ संचालक हैं, पुस्तकें बालोपयोगी हैं और नगर के भीतर-बाहर निःशुल्क दी जाती हैं, संख्या लगभग ७५०० है; इसके उपविभाग वाचनालय में ६३ पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं।

आयुर्वेद प्रचारिणी सभा—सेवती मखदुमपुर, गया—१९३७ में पं० हर्षानंद शर्मा द्वारा स्थापित; आयुर्वेद-साहित्य का हिंदी में निर्माण।

आर्यकन्या महाविद्यालय—कारेली बाग, बड़ोदा; हिंदी माध्यम द्वारा शिक्षा; विशारदा, स्नातिका, और आचार्या की पदवी मिलती हैं, सम्पूर्ण शिक्षा १३ श्रेणियों में विभक्त हैं।

उपनगर हिंदी-केंद्र-सभा—बम्बई—स्था०—१९४१; हिंदी भाषी जनता का संगठन और उन में शिक्षा का प्रचार किया जाता है; राष्ट्र भा० प्र० स० और हि० सा० स० की परीक्षाओं के परीक्षार्थियों को पढ़ाया जाता है।

उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद—यहाँ हिंदी का स्वल्प ज्ञान प्रत्येक उर्दू पढ़ने वाले को कराया जाता है।

कन्यागुरुकुल, ६० राजपुर रोड, देहरादून—हिंदी-माध्यम द्वारा प्राचीन वेदशास्त्र, उपनिषद्, गीता, धर्म आदि की शिक्षा दी जाती है; गुरुकुल में ३०० आश्रमवासिनी छात्राएँ हैं जिनके लिए हिंदी-शिक्षा अनिवार्य है।

कलाकार-परिषद, शिवहर—१९४८ में श्रीयुत मदन साहित्यभूषण द्वारा स्थापित, चार श्रेणियों में सदस्य विभक्त हैं—साधारण, विशिष्ट, संरक्षक और विशिष्ट संरक्षक; साहित्य और कला की वृद्धि के साथ-साथ नवीन प्रतिभाओं की खोज उद्देश्य है, परिषद के संचालन के लिए ९ सदस्यों की कार्यकारिणी हैं, उसके अंतर्गत दो उपसमितियाँ हैं, (अ) सम्पादन-समिति, (ब) प्रचार-समिति।

कवि परिषद, बुंदेल खंड—१९३८ में रावत रामपालसिंह चंदेल 'प्रचंड' द्वारा स्थापित, परिषद की शाखाएँ बुंदेलखंड, उत्तरप्रदेश तथा मध्यप्रांत में हैं, अनेक कवि-सम्मेलनों का आयोजन हुआ, इसके सदस्यों की संख्या २३९ है; इसके प्रकाशन-विभाग से प्राचीन कवियों की कृतियों का संपादन, तथा प्रकाशन हुआ है; सर्वश्री मैथिली शरण गुप्त और सियाराम शरण गुप्त इसके संरक्षक हैं; समस्त भारत के कवि-सम्मेलनों में इसकी ओर से सफल कवि भेजे जाते हैं।

कवि-मंडल, लखीमपुर—नये कवियों को प्रोत्साहन देने तथा जनता में काव्य की अभिरुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से स्थापित; मासिक बैठकों द्वारा जनता में काव्याभिरुचि उत्पन्न करता है; कई 'काव्यकुंज' नामक पुष्प प्रकाशित हुए।

कवि-वासर, सागर पोखरा, बेतिया, चंपारन—स्थानीय एक-मात्र हिंदी संस्था; हिंदी साहित्य

के प्रचार के उद्देश्य से १६४६ में स्थापित; 'कविता' नामक मासिक पत्रिका निकालने की योजना है।

काव्य-समिति, महमूदनगर, मलिहाबाद, लखनऊ—नवीन कवियों को प्रोत्साहन देने के लिए अप्रैल १६४३ में स्थापित; ४५ सदस्य; (क) साप्ताहिक कवितागोष्ठी, (ख) पुस्तकालय एवं वाचनालय का संचालन, (ग) पुस्तक-प्रकाशन, (घ) 'झंकार' हस्तलिखित मासिक का प्रकाशन—इसके विभाग हैं।

कुमारसभा पुस्तकालय (श्री बड़ाबाजार), १५६, हरीसन रोड, कलकत्ता ७–१६१८ में स्थापित, पुस्तकों की संख्या—६००० हिंदी, ७५० अँग्रेजी, ३०० बालो०, ५०० संस्कृत; ६० पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं; पाठकों की दैनिक उपस्थिति २००; सदस्य ४५०; अहिंदी प्रांत मे हिंदी-प्रचार का सराहनीय कार्य किया है।

कुमार-साहित्य-परिषद् (मारवाड़), मिरची बाजार, जोधपुर—१६४४ में स्थापित; बालक और बालिकाओं में हिन्दी-प्रचार उद्देश्य है, कार्य-क्षेत्र गाँवों में है, हिंदी-परीक्षा - केन्द्रों की व्यवस्था, साक्षरता और प्रौढ़ शिक्षण केंद्रों की स्थापना, हस्तलिखित और मुद्रित पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, परिषद की ओर से २१ शाखाएँ; १२ वाचनालय और १ पुस्तकालय स्थापित हुआ है ; परिषद् के सक्रिय विभाग हैं—साहित्य-विभाग, शिक्षण-विभाग, राष्ट्रभाषा-प्रचार-विभाग, महिला - विभाग, बाल-विभाग, शोध-विभाग, सदस्य-विभाग, वाचनालय और पुस्तकालय-विभाग, कला-विभाग और ग्रामविभाग ; परिषद् ने महाराज-स्थान कुमार-साहित्य-सम्मेलन की स्थापना की है जिसकी कई श्रेष्ठ योजनाएँ हैं।

कृषि-साहित्य - प्रचारक -संघ, सावता वाडी, वरुड, बरार—१६४७ में श्री महादेवराव गोविंदराव चौधरी, सत्यदेव एस. पाँडे द्वारा स्थापित, ५० सदस्य, हिंदी भाषा में कृषि-साहित्य के प्रचारार्थ; वेही कृषक-बंधु इसके सदस्य हो सकते हैं जो ५ एकड़ भूमि जोतते हैं; हरियाली उत्सव प्रतिवर्ष आषाढ़ पूर्णिमा को मनाया जाता है।

कृष्णदेव पुस्तकालय, मुस्तफापुर, भंडारी, पटना—**स्था०**—१९४१; ४० सदस्य; १५२५ पुस्तकें हैं और ८ पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं।

केंद्रिय सहकारी शिक्षाप्रसार मंडल, इटावा—श्री व्रजेंद्र मिश्र तथा सुधेशकुमार जी 'प्रशांत' द्वारा १९३९ में स्थापित; इसके अधीन एक केंद्रीय पुस्तकालय है जिसकी पुस्तकें ६० ग्रामों में भेजी जाती है।

क्रियाशील कलाकार-मंडल, ६४०, साठिया कुँआ जबलपुर—क्रियाशील कलाकारों को प्रोत्साहन और प्रश्रय देने के लिए १९४८ में श्री चंद्रकांत श्रीवास्तव द्वारा स्थापित; इसके कार्य के क्षेत्र हैं—साहित्य, संगीत, अभिनय और प्रदर्शनी; साहित्य - विभाग का प्रबन्ध कार्यकारिणी करती है, ३५ सदस्य हैं; १) शुल्क है; प्रत्येक शनिवार को गोष्ठियाँ होती हैं, नागपुर, सागर आदि स्थानों में इसके सहायक और संचालक हैं।

गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी में हिंदी के माध्यम द्वारा उच्चतम शिक्षा दी जाती है; रसायन, भौतिक शास्त्र, विद्युत् आदि विषयों के लिए उपयुक्त पारिभाषिक शब्दों का संग्रह किया गया है; हिन्दी-पत्रकार-कला की शिक्षा यहाँ दी जाती है; सूर्यकुमारी ग्रंथमाला और स्वाध्याय-मंजरी का प्रकाशन भी चालू है।

गुरुकुल-विश्वविद्यालय, वृंदावन—१८९८ से हिंदी के माध्यम द्वारा शिक्षा दी जाती है; ऊँची से ऊँची कक्षा तक हिंदी पढ़ना अनिवार्य है; मौलिक निबन्ध में उत्तीर्ण होने पर विद्यार्थी को विषय निर्देश सहित वाचस्पति की उपाधि दी जाती है; श्रीधर-अनुसंधान विभाग द्वारा शोधपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन भी होता है।

ग्राम - सेवा - मंडल, हिसार, पंजाब—स्थानीय विद्याप्रचारिणी सभा से संबंधित; गाँवों में हिन्दी-प्रचार के उद्देश्य से १९३३ में स्थापित; मण्डल द्वारा 'ग्राम-सेवक' नामक मासिक पत्र मई १९३६ से निकल रहा है जो विज्ञापन नहीं लेता; लगभग पचीस हजार रुपए हिंदी-प्रचार के लिए खर्च किये गये हैं।

ग्राम हिंदी साहित्य संघ, दर्गाहपुर, मुंगेर—श्री महेंद्र नारायण शर्मा द्वारा १६४१ में स्थापित; १०० सदस्य; एक पुस्तकालय का संचालन जिसमें १५०० पुस्तकें हैं, 'नवसाहित्य-संदेश' हस्तलिखित पत्रिका निकलती है।

ग्राम्य सुधार नाट्य-परिषद, गोरखपुर—गाँवों में नाटकों का अभिनय करके प्रचार करना प्रधान उद्देश्य है; कई नाटक प्रतिवर्ष परिषद के सदस्यों द्वारा खेले जाते हैं।

चौधरी पुस्तकालय, हुसेनपुर—१६२५ में श्री श्यामसुन्दर चौधरी, बी० ए०, बी० एल० द्वारा स्थापित, ८५ सदस्य; शु०—१) प्रति मास; १००० पुस्तकें हैं; सरकारी सहायता भी प्राप्त है।

छात्र - साहित्य-संघ, मँडावा जयपुर; १६४५में श्रीगींडाराम वर्मा 'चंचल' द्वारा स्थापित, सम्मेलन परीक्षाओं की व्यवस्था होती है; हस्तलिखित पत्रिका का प्रकाशन होता है; प्रांत के साहित्यिकों को प्रकाश में लाने का प्रबन्ध; प्राकृतिक वस्तुओं का संग्रहालय है।

जनता-शिक्षण-मंडल, खिरोदा, पूर्व खानदेश—'सेवाश्रम' का पुनरुद्धारित रूप; १६३८ में उक्त 'मंडल' के नाम से स्थानीय गाँवों में राष्ट्रभाषा - शिक्षा और खादी-प्रचार इत्यादि के उद्देश्य से श्रीधनाजी नाना चौधरी द्वारा स्थापित; राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा और हिं० सा० सम्मेलन की परीक्षाओं की शिक्षा-व्यवस्था भी है; अनेक प्रचारक अवैतनिक काम करते हैं।

जनपद - हिंदी-साहित्य - सम्मेलन, कालाकाँकर, प्रतापगढ़—जनवरी १६४७ में श्री वागेश्वर दयाल दीक्षित, कुँवर सुरेश सिंह आदि द्वारा स्थापित; ५५ सदस्य हैं; स्थानीय संस्थाओं और साहित्यिकों का संगठन करना उद्देश्य है; सम्मेलन के अधिवेशन जिले के भिन्न-भिन्न भागों में होते हैं; हिं० सा० सम्मे० से सम्बद्ध है।

जानकी पुस्तकालय, शीतलगंज, बुलंदशहर—१ जूलाई १६१० को स्थापित; २२०० पुस्तकें हैं; कई पत्र आते हैं।

ज्ञानलता मंडल, ३६ एल०, मुगभाट क्रासलेन, गिरगाँव, बंबई ४—१६४२ में जन-जागृति, हिंदी-प्रचार और साक्षरता-प्रचार के उद्देश्य से स्थापित ; शिक्षण-कार्य-क्रम में हिंदी, मराठी और गुजराती तीनों को स्थान प्राप्त है परन्तु 'राष्ट्रभाषा'- विभाग सबसे बड़ा है ; ४० केन्द्र हैं जिनमें प्रति वर्ष साढ़े तीन हजार व्यक्ति शिक्षा पाते हैं, दो सौ अवैतनिक प्रचारक काम करते हैं; सम्मेलन परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को तैयार किया जाता है ; एक भारतीय विद्यापीठ की स्थापना की, साक्षरता-प्रसार और प्रौढ़-शिक्षण की व्यवस्था भी होती है ; बम्बई का भारतीय तरुण-मंडल इसी से सम्बद्ध है ; मंडल के सदस्यों की एक साधारण सभा है और एक कार्यकारिणी समिति है, प्रत्येक विभाग का कार्यवाहक इस कार्यकारिणी का सदस्य होता है ; इसकी बैठक महीने में एक बार अवश्य होती है ।

टी० ग्राम वाचनालय प्रचार फंड, बड़वाहा, इंदौर—गाँवों में हिंदी-प्रचार - प्रसार के उद्देश्य से स्थापित ; इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन कलकत्ता, मध्यभारत हिंदी-साहित्य - समिति इंदौर से संबंधित ।

तरुणसंघ, चंपानगर, भागलपुर—श्री गोपालचंद्र पांडेय, अनाथबंधु घोष, नलिनीरंजन वंद्योपाध्याय, द्वारा ५ जनवरी १६४६ को स्थापित; १२५ सदस्य हैं, निरक्षरता-निवारण उद्देश्य है; एक पुस्तकालय का संचालन होता है ।

तरुणसमाज पुस्तकालय, प्रभुपुर, बनारस—१६४६ में श्री हरिद्वार त्रिपाठी, नरोत्तम प्रसाद द्वारा स्थापित; ७०० पुस्तकें हैं ।

तिलक पुस्तकालय, रानीगंज—१६२० में श्री बनारसीलाल मालोरिया द्वारा स्थापित ; शुल्क ३) वार्षिक साधारण सदस्य और ६) विशेष सदस्य के लिए ; ४००० पुस्तकें हैं ।

तुलसी-सत्संग, तुलसी चौरा, अयोध्या—१६४३ में स्थापित, गोस्वामी तुलसीदास जी के साहित्य का प्रचार उद्देश्य है ।

तुलसी - साहित्य - समिति,

हनुमान फाटक, काशी—तुलसी साहित्य के प्रचार और प्रकाशन के उद्देश्य से स्थापित, तुलसी-जयन्ती-समारोह में अनेक विद्वान निमंत्रित होते हैं।

दयानन्द पुस्तकालय,बाँदा—१९२५ में स्थापित, स्वाध्याय भवन, आर्यसमाज-मंदिर के अन्तर्गत; १४१८ पुस्तकें हैं ; वाचनालय १९३७ में स्थापित हुआ; हि० सा० सम्मेलन से इसे पर्याप्त सहायता मिलती है।

दरबार कालेज, रीवाँ—१९३५ में स्थापित; बी० ए०, एम० ए० परीक्षाओं का सम्बन्ध आगरा वि० वि० से है; इस वर्ष २०० विद्यार्थी हैं; चार प्राध्यापक हैं—सर्वश्री महावीरप्रसाद अग्रवाल एम० ए०, दीपचंद जैन एम० ए०, श्रीचन्द्र जैन एम० ए०, कृष्णचंद्र वर्मा एम० ए०; श्रीअग्रवाल जी पी-एच० डी० के लिए 'सूर का बाल-मनोविज्ञान' विषय पर थीसिस लिख रहे हैं; साहित्यिक और सांस्कृतिक आयोजनों के लिए हिंदी विभाग के अंतर्गत 'हिंदी-परिषद' है।

देवनागरी परिषद,धामपुर—१९४० में श्रीदेवर्षि सनाढ्य द्वारा स्थापित; १०३ सदस्य हैं; श्री रानी फूल कुँवरि का संरक्षण प्राप्त है; हिंदी-प्रचार, निर्धनों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है; इन प्रयत्नों के फलस्वरूप धामपुर की लगभग तीन चौथाई जनता हिंदी भाषी बन गयी है।

नवयुवक परिषद, रानीगंज, पूर्वी बंगाल—श्रीगोविंदराम शराफ द्वारा १९४७ में स्थापित; दो विभाग हैं—वादविवाद - समिति और संदेश - कार्यालय; प्रति रविवार को सामाजिक और साहित्यिक विषयों पर वार्तालाप होता है; 'संदेश' हस्तलिखित पत्रिका निकलती है; परिषद की सदस्यता का शुल्क ६) वार्षिक है।

नवयुवक सार्वजनिक पुस्तकालय, गंगानगर, बीकानेर—१९४२ में स्थापित, ३०० सदस्य; अल्पकाल में ही राज्य का श्रेष्ठ पुस्तकालय बन गया; वार्षिक आय ५ हजार रुपया है, इसमें विद्याविनोदिनी की परीक्षा होती है; कई विभाग हैं—१. हिन्दी

विद्यामंदिर, २. साहित्य - गोष्ठी, ३. वाचनालय—जिसमें कई पत्र-पत्रिकाकाएँ आती हैं।

नागरी-निकेतन, बड़वाहा—१६४८ में श्री किशोरीलाल त्रिवेदी द्वारा स्थापित; निकेतन की ओर से प्रकाशन की पंचवर्षीय योजना बनी है जो नागरी-ग्रंथमाला के नाम से होगी; सभी प्रकार के ग्रंथ छापने के लिए तैयार है।

नागरी - प्रचारिणी - सभा, आगरा—१६११ में स्थापित; ८०० सदस्य हैं; सभा के पुस्तकालय में १०००० पुस्तकें हैं, बालकों और महिलाओं के लिए उसमें अलग विभाग हैं; वाचनालय में लगभग ६० पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं; पढ़नेवालों की दैनिक संख्या ३०० तक रहती है; गाँवों के लिए गश्ती विभाग का प्रबंध है, सभा की ओर से एक विद्यालय चलता है जिसमें २०० विद्यार्थी निःशुल्क पढ़ते हैं, ३ योग्य शिक्षक नियुक्त हैं; खोज-कार्य का प्रबंध है; विद्वानों के व्याख्यान होते रहते हैं; 'सत्यनारायण स्मारक ग्रंथमाला' के अंतर्गत कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; सभा के पास पर्याप्त भूमि और निजी भवन है; वार्षिक अनुमानित व्यय ६०००) से ऊपर है।

नागरी प्रचारिणी सभा, आजमगढ़—हिंदी भाषा और साहित्य की उन्नति तथा देवनागरी लिपि के प्रचारार्थ स्थापित; साहित्यिक गोष्ठियाँ, कवि - सम्मेलन आदि समय-समय पर होते हैं।

नागरीप्रचारिणी सभा, आरा—१६०१ में सर्वश्री रामकृष्णदास अमीरचंद्र और सकलनारायण द्वारा स्थापित; ६०० सदस्य हैं, प्रबन्ध एक कार्यकारिणी समिति के अधीन है जिसका चुनाव प्रति तीसरे वर्ष होता है; सभा के पुस्तकालय में १३००० पुस्तकें और १२० हस्त-लिखित ग्रंथ हैं; वाचनालय में प्रायः सभी प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं; ५० वर्षों से लगातार हिंदी-प्रचार हो रहा है, सभा का प्रकाशन-विभाग अलग है जिसके द्वारा १५ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; मैथिल कवि विद्यापति को हिंदी-कवि सिद्ध करने का श्रेय सभा को ही है; १०००० रुपये

के व्यय से 'हरिऔध'-अभिनंदन-ग्रंथ का आयोजन किया; डा० राजेन्द्रप्रसाद को भी अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया; सभा का स्थायी कोष १४०००) का है और ७५०००) का निजी भवन है, वार्षिक आय लगभग २०००) है; डिस्ट्रिक्ट और म्यूनिसिपल बोर्ड तथा बिहार सरकार से सहायता मिलती है।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी हिंदी की सबसे पुरानी और सबसे अधिक सेवा करनेवाली इस सर्व भारतीय संस्था की स्थापना हिन्दी-भाषा-प्रचार, प्राचीन साहित्यकेउद्धार और नवीन साहित्य की अभिवृद्धि के उद्देश्य से १६ जूलाई १८९३ में डाक्टर श्यामसुन्दरदास, पं० रामनारायण मिश्र और ठाकुर शिवकुमार सिंह द्वारा की गयी थी; इसके कार्यकर्ताओं के उद्योग से १८९८ में सरकारी कचहरियों में नागरी का प्रवेश हुआ और अदालती आवेदनपत्र तथा सम्मन आदि हिन्दी में लिखे जाने लगे; इस समय इसके सदस्यों की संख्या लगभग २६०० है; सभा, हिंदी प्रचार का उद्देश्य रखनेवाली अनेक संस्थाओं से सम्बन्ध रखती है, समूचे भारत में ऐसी ५२ संस्थाएँ हैं; सभा का कार्य १० विभागों में बँटा है, जो कार्य का संगठन करते हैं:- **(क) आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी**—इसमें २०० से ऊपर पत्र पत्रिकाएँ आती हैं; १९४७के आँकड़ों के आधार पर कुल ३३२२९पुस्तकें हैं, १३३० पुस्तकें अन्य प्रान्तीय भाषाओं की और २७८२ हस्त-लिखित ग्रन्थ हैं; **(ख) सत्यज्ञान पुस्तकालय, ज्वालापुर**—इसमें आध्यात्मिक और स्वास्थ्य संबंधी १५८७ पुस्तकें हैं; **(ग) हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज**—अनेक रिसर्च स्कालर इस विभाग के अन्तर्गत काम करते हैं, लगभग २३ विषयों पर खोज-कार्य हो रहा है और प्रतिवर्ष अनेक बहुमूल्य ग्रंथों का पता लगता है; १९९९ से युक्तप्रांतीय सरकार ४००) वार्षिक सहायता देती रही है; तत्सम्बन्धी सफलता देखकर १९२१ से सरकार ने २०००) प्रतिवर्ष देना आरम्भ किया; **(घ) अनुशीलन विभाग-**द्वारा भारतीय प्रेस सम्बन्धों की

परंपरा का अनुशीलन श्रीविश्वनाथ प्रसाद मिश्र की अध्यक्षता में हो रहा है; (ङ) कोश-विभाग— १६४५ में श्री रामचन्द्र वर्मा के संपादकत्व में एक अधिकृत हिंदी-शब्द-सागर का निर्माण हुआ और संक्षिप्त शब्द-सागर तैयार हुआ, साथ ही उर्दू अँगरेजी के पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्यायवाची शब्दों से 'राजकीयकोश' तैयार हो रहा है; **(च) प्रकाशन और विक्रय विभाग** के अंतर्गत लगभग ३०० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, १८६७ से त्रैमासिक नागरी प्रचारिणी पत्रिका का प्रकाशन होता है जिसमें विविध विषयों के खोजपूर्ण निबंध प्रतिवर्ष प्रकाशित होते हैं; सभा निम्नलिखित ग्रन्थ मालाएँ करती हैं:—नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला, मनोरंजन ग्रन्थ माला, प्रकीर्णक पुस्तकमाला, सूर्यकुमारी पुस्तकमाला, देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला, बालाबख्श-राजपूत-चारण पुस्तकमाला, देव-पुरस्कार पुस्तकमाला, महेंद्र लालगर्ग विज्ञान - ग्रन्थावली, रुक्मिणि तिवारी पुस्तकमाला, रामविलास पोद्दार स्मारक-माला, नव - भारतीय ग्रन्थ-माला, अर्ध शती याज्ञिक ग्रन्थावली; (छ) **प्रसाद साहित्य गोष्ठी तथा बोध व्याख्यान-माला-विभाग** १६३० से स्थापित, इसके अंतर्गत जयंतियाँ व्याख्याय और अभिनय होते हैं; **(ज) पुरस्कार और-पदक-विभाग**-सभा की ओर से राजा बलदेवदास पुरस्कार, बटुक प्रसाद - पुरस्कार, रत्नाकर-पुरस्कार, डाक्टरछन्नूलाल पुरस्कार, जोधसिह-पुरस्कार, माधवी देवी महिला पुरस्कार, डा० हीरालाल-स्वर्ण-पदक, द्विवेदी स्वर्ण पदक, सुधाकर पदक ग्रीञ्ज,पदक, राधाकृष्ण दास - पदक, बलदेवदास-पदक; गुलेरी-पदक, रेडिचे-पदक, पुच्छरत - पदक, भैरव प्रसाद - स्मारक पुरस्कार, अर्ध-शती भूषण-पदक, डा० श्यामसुंदर दास - पुरस्कार, वसुमति - पुरस्कार दिये जाते हैं; **(झ) सत्यज्ञान निकेतन**—ज्वालापुर हरिद्वार स्थित सभा का मुख्य केंद्र है, इसके द्वारा हिंदी विद्यामंदिर की स्थापना हुई, यहाँ की सरस्वती व्याख्यान-माला के अन्तर्गत अनेक व्याख्यान होते हैं,

यहाँ से पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं; (ञ) **संकेतलिपि विद्यालय विभाग** द्वारा शीघ्रलिपि की शिक्षा का प्रबंध किया जाता है; **(ट) भारतीय कला-विभाग**— भारतीय साहित्य और संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाली अमूल्य वस्तुओं के,जो समय समय पर विभिन्न स्थानों में पायी जाती हैं, संग्रह के लिए 'भारत कला भवन' की स्थापना १९४० में;इसमें राजघाट की वस्तुओं का संग्रह होरहा है,भारतीय पुरातत्व के डाइरेक्टर जेनरल ने कला-भवन की उत्तरोत्तर स्मृद्धि और उन्नति से संतुष्ट होकर अब यह नीति निर्धारित कर दी है कि सारनाथ के अतिरिक्त काशी तथा आसपास के अन्य स्थानों से प्राप्त अथवा प्राप्त होने वाली पुरातत्व संबंधी वस्तुएँ कलाभवन में ही रहेंगी; उत्तर-प्रदेशीय सरकार इसे २५००) वार्षिक सहायता देती है; भवन के दर्शकों की संख्या ५५०० प्रतिवर्ष रहती है; सभा को अ० भा० हि० सा० सम्मेलन की जन्मदात्री होने का गौरव प्राप्त है।

नागरी - प्रचारिणी - सभा, गाजीपुर—नागरी लिपि और साहित्य-प्रचार के लिए स्थापित; १२५ सदस्य हैं; लगभग २० वर्षों से कचहरियों और जनता में लिपि प्रचार-कार्य; अनेक कवि-सम्मेलनों, साहित्य-गोष्ठियों, प्रतियोगिताओं की योजना की; साहित्यिकों की जयंतियाँ भी मनायीं।

नागरी - प्रचारिणी - सभा, गोरखपुर — १९०८ में स्थापित; सभा के अन्तर्गत पुस्तकालय और वाचनालय है, कई स्थानों में इस की शाखाएँ हैं; प्रतिवर्ष साहित्यिक समारोह मनाये जाते हैं।

नागरी - प्रचारिणी - सभा, (बालुकाराम) भगवानपुर रत्ती, मुजफ्फरपुर, बिहार—१९३३ में पटना वि० वि० के उपकुलपति श्री चंद्रशेखर प्रसाद नारायण सिंह द्वारा स्थापित; २८ मार्च १९३४ में सभा ने महात्मा गाँधी, पं० जवाहरलाल नेहरू, बा० राजेंद्रप्रसाद जी को बुलाकर भूकम्प के अवसर पर सभा की; गाँधी जी से राष्ट्र भाषा-प्रचार के लिए शुभ कामनाएँ प्राप्त कीं, सदस्य ७५, सभा

के अन्तर्गत और सम्बन्धित संस्थाएँ—बालुकाराम गरम सभा, बालुकाराम महाविद्यालय, बालुकाराम सेविका विद्यालय, दातव्य औषधालय, हिंदी-मन्दिर, प्रार्थना-मंदिर, महेश्वर रात्रि विद्यालय, और कस्तूरबा-वाचनालय हैं, सभा को १६३४ में बा० विंधेश्वरी प्रसाद, अध्यक्ष विहार व्यवस्थापिका सभा से ३००), १६३७ में श्री सी० पी० सिंह (जिलाबोर्ड) से १२००), प्रांतीय अर्थसचिव श्री अनुग्रहनारायण सिंह से २५१) प्राप्त हुये; समय समय पर जयंतियाँ तथा महोत्सव मनाये जाते हैं, महोत्सवों में वैशाली जीवन की झांकी देनेवाले नाटक तथा ललित कला के चिन्ह रक्खे जाते हैं, सभा की ओर से खोज-विभाग काम कर रहा है, अनेक हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुये हैं।

नागरी प्रचारिणी सभा (मुन्नालाल), अजमेर—१८६८ में आर्यसमाज अजमेर द्वारा श्री मुन्नालाल की पुण्य स्मृति में स्थापित; ४० सदस्य हैं; शुल्क ५); बहुत आय की अचल सम्पत्ति इस सभा के हितार्थ अब तक लगी है ; सभा महीने में एक बार अवश्य होती है ; एक पुस्तकालय है जिसमें हिंदी, संस्कृत उर्दू के बहुमूल्य ग्रन्थ हैं जिन की संख्या २००० है ; लेखकों को पुरस्कार मिलता है; एक वाचनालय है, इसमें अनेक प्रमुख पत्र आते हैं।

नागरी प्रचारिणी सभा, मुरादाबाद— १६१२ में पं० ज्वालादत्त शर्मा आदि द्वारा स्थापित, लगभग २०० सदस्य हैं, अदालतों में हिंदी - प्रयोग के लिए आन्दोलन ; टाइपराइटर-योजना चलायी जा रही है।

नागरी प्रचारिणी सभा, हरनौत—श्री० लालसिंहजी त्यागी के प्रयत्न से १६३६ में स्थापना हुई; उद्देश्य—नागरी लिपि-प्रचार, राष्ट्रभाषा हिंदी के द्वारा ऊँची शिक्षा का प्रबन्ध और गाँवों में पुस्तकालय स्थापित करना था; इसके लिए एक महाविद्यालय खोजने की आवश्यकता हुई, गाँधीजी के कथनानुसार सेवदह ग्रामवासियों के पूर्ण सहयोग से श्री

राजेन्द्र साहित्य-महाविद्यालय की स्थापना हुई; हिंदी-शिक्षा और ग्रामसुधार इसके उद्देश्य हैं; संस्था के अन्तर्गत दो पुस्तकालय हैं जिनमें लगभग १५०० पुस्तकें हैं तथा अनेक मासिक - दैनिक समाचार पत्र आते हैं; हिंदी विश्व-विद्यालय, प्रयाग की हिंदी परीक्षाओं का केन्द्र है ।

नैपाली भारती असोसिएशन, पुरानी धर्मशाला, गोरखपुर— नैपाली और भारतीय जनता में सद्भावना स्थापित करने के लिए स्थापित ; संस्था के अन्तर्गत पुस्तकालय तथा वाचनालय है जिन के द्वारा हिंदी-प्रचार होता है ।

पंडित परिषद्, अयोध्या— साहित्य-चर्चा के उद्देश्य से पं० सूर्यनारायण शुक्ल द्वारा १९२७ में स्थापित ; हिंदी-संस्कृत और वैद्यक संबंधी परीक्षाएँ होती हैं, जिनका पंजाब प्रांत में बहुत आदर है ; इसके पास हिंदी-साहित्य-पुस्तकालय है, अन्य स्थानों में भी केंद्र खोलने की सुविधा दी जाती है ।

पराशर ब्रह्मचर्याश्रम, हल्दी, बलिया—१९१७ में पं० रघुनाथ त्रिवेदी धर्मशास्त्री द्वारा संस्थापित; हिंदू संस्कृति और आदर्शों के अनुसार शिक्षा दी जाती है ; आश्रम का भवन १० हजार रुपये के व्यय से बना है, आश्रम के अंतर्गत देहाती समाज में विद्या-प्रचार के उद्देश्य से एक पुस्तकालय भी है जिसमें १५०० पुस्तकें हैं ।

पुष्प भवन, पाढ़म, मैनपुरी— स्वर्गीय भवानीप्रसाद द्वारा १९२० में स्थापित ; सदस्य २०० ; हिं० सा० सम्मे० से सम्बद्ध ; एक हिंदी मिडिल स्कूल की स्थापना की, हिंदी साहित्य विद्यालय का संचालन जिसमें सम्मेलन-परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं ।

प्रताप साहित्य मंडल, बैजगाँव, बेथर, उन्नाव — स्थापना पं० प्रतापनारायण मिश्र (भारतेंदु-युग के प्रसिद्ध साहित्यसेवी) की पुण्य स्मृति में हुई, यह नाम 'प्रताप-स्मृति संघ' के नाम का रूपांतर है जिसकी स्थापना मिश्र जी के मित्र स्वर्गीय पं० परमादीन पांडेय द्वारा हुई थी; विश्व-प्रेम और हिंदी-प्रेम का प्रचार उद्देश्य है ; १९२२ में मिश्र

जी के वंशज श्री प्रयागनारायण ने प्रताप-स्मारक-समिति - वाचनालय की स्थापना की जो इस मंडल का अंग है ; 'प्रताप'-साहित्य का संकलन हो रहा है ।

प्रभात अभिषद, वर्धा—हिंदी पत्रिकाओं और लेखकों में मध्य-स्थता करना उद्देश्य है ; लेखकों से सामग्री प्राप्त करके विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिए भेजती है ; अभिषद का सम्पर्क उच्च कोटि के सभी विषयों के लेखकों और पत्रों से है ।

'प्रसाद' - परिषद्, काशी—कविवर श्री जयशंकर प्रसाद की पुण्य स्मृति में २२ मई १९३९ में स्थापित ; साहित्य समारोहों और गोष्ठियों का आयोजन ; सम्मेलन के सहयोग से रेडियो की हिन्दी-विरोधी-नीति का इसने पूर्ण रूप से खंडन किया था ।

प्रीति परिषद्, सदर, मेरठ—१९४४ में स्थापित ; सदस्य ४६; 'प्रीति-परिषद-वाचनालय' खोला है जिसमें २० पत्र - पत्रिकाएँ आती हैं ।

प्रेम-सभा, सदर बाजार, जबल-पुर—सभा के अंतर्गत एक पुस्त-कालय है, साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन होता है ।

बजरंग परिषद्, २०१ हरिसन रोड, कलकत्ता—१९१७ में स्थापित; कार्य चार विभागों द्वारा सुविधा-पूर्वक चलता है — सेवा-विभाग, पुस्तकालय-विभाग, नाट्य विभाग, और व्यायाम-विभाग; समाज और साहित्य दोनों की सेवा होती है ।

बाल-विद्यापीठ , बालभवन , (कचहरी के सामने), कानपुर—बाल-साहित्य का वैज्ञानिक ढंग से सृजन और प्रचार उद्देश्य है ; बालहित की शिक्षा-संस्थाएँ स्थापित करना और केंद्र खोलना ; विद्या-पीठ की तीन परीक्षाएँ हैं—प्रवेश, विशारद और रत्न ; प्रकाशन का भी प्रबन्ध है, पुस्तकें सस्ती और बालोपयोगी हैं ।

बाल हिंदी पुस्तकालय—(यज्ञनारायण), वैना, पो० कड़सर, शाहाबाद—गाँवों में हिंदी-प्रचार प्रसार के उद्देश्य से स्थापित; लग-भग ६००० पुस्तकें हैं ; हिं० सा० सम्मेलन, श्री रामायण और श्री गीता परीक्षा-समिति की सभी

परीक्षाओं के केन्द्र यहाँ हैं और परीक्षार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

भारतीय कला-विद्यालय—दस्साँ स्ट्रीट, दिल्ली—पत्र-व्यवहार द्वारा लेखन-कला सिखाने की पहली संस्था; ७०० से अधिक विद्यार्थी; इस संस्था के कार्यक्षेत्र के विस्तृत होने की आशा है।

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी—१९४३ में दानवीर सेठ शांति प्रसाद ने अ० भा० प्राच्यविद्या सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन के अवसर पर स्थापित की; जैन, बौद्ध, वैदिक ज्ञान की विलुप्त, अनुपलब्ध और अप्रकाशित सामग्री का अनुसंधान और प्रकाशन; लोकहितकारी-साहित्य का निर्माण उद्देश्य है ; प्रधान कार्यालय, डालमिया नगर में है, एक शाखा मद्रास में है ; पीठ के तीन विभाग हैं —(क) **प्रकाशन विभाग**—इसके अंतर्गत मूर्तिदेवी जैन-ग्रंथमाला, मूर्तिदेवी - पाली ग्रंथमाला, ज्ञानपीठ - लोकोदय ग्रंथमाला का प्रकाशन होगा, और १५००) का पुरस्कार सर्वोत्कृष्ट रचना पर दिया जायगा; (ख) **ग्रन्थागार तथा संग्रहालय** में प्राचीन ग्रंथों का संकलन हो रहा है; (ग) **अनुसंधान विभाग**—में कन्नड शाखा द्वारा प्राचीन ग्रंथों का सम्पादन होता है; विभागों को चलाने के लिए कई समितियाँ हैं जिनमें हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड, तामिल और अँग्रेजी के विद्वान हैं।

भारतीय विश्वविद्यालय, पाढ़म मैनपुरी — १९३५ में स्थापित; २१२ सदस्य हैं, शुल्क—१) वार्षिक; भारतीय कला-विज्ञान की शिक्षा उद्देश्य है; (क) इसके पुस्तकालय में हिंदी, संस्कृत, फारसी, उर्दू के हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत हैं; (ख) प्रकाशन - कार्य की योजना है, (ग) साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी तैय्यार होते हैं।

भारतीय संघ—जेकब सर्किल, बम्बई—१९४० में स्थापित; हिंदी भाषा-भाषियों की यह प्रिय संस्था है ; इसके अन्तर्गत पुस्तकालय, वाचनालय, व्यायामशाला, साक्षरताप्रचार आदि वर्ग हैं ;

संघ ने बम्बई कारपोरेशन से १ हज़ार वर्ग गज भूमि अपने भवन के लिए प्राप्त की है।

भारतीय संस्कृति-सदन, रतलाम—१६४५ में श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी द्वारा स्थापित; सदस्य तीन प्रकार के—साधारण, सहायक और आजीवन; शुल्क—साधारण १), सहायक ५) और आजीवन १०१) वार्षिक; भारतीय संस्कृति का रक्षण और प्रचार उद्देश्य है; सार्वजनिक पुस्तकालय और वाचनालय का संचालन होता है; हि० सा० सम्मे० के परीक्षार्थियों के लिए निःशुल्क अध्यापन-कार्य, साहित्यिक उत्सव मनाना; 'भारतीय सस्कृति' नामक त्रैमासिक का प्रकाशन होता था; अजकल पत्रिका बंद है, पुनः प्रकाशन का प्रबंध हो रहा है; संस्था को रियासत के प्रतिष्ठित व्यक्तियों का संरक्षण मिला हुआ है।

भारतीय साहित्य-सम्मेलन, दिल्ली—भारतीय साहित्य, विशेषतः हिंदी की उन्नति और भारतीय चिकित्सा—प्रचार के उद्देश्य से १६४० में स्थापित; सदस्य तीस; २०० परीक्षार्थी उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं; हिंदी विद्यालय, पुस्तकालय और वाचनालय स्थापित करने की योजना है।

भारतेंदु - अभिनय - परिषद्, शिवहर , मुजफ्फरपुर—अभिनय-कला के प्रचार तथा जन-जागरण द्वारा सामाजिक क्रांति लाकर समुचित सुधार करने के उद्देश्य से १६४५ में श्री मदन साहित्यभूषण द्वारा स्थापित; सदस्य ११३; अब तक २२ अभिनय किये, जनता का सहयोग बराबर मिलता है।

भारतेंदु समिति, कोटा—स्थापनाकाल लगभग १६२६; हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रचार उद्देश्य है, पुस्तकालय, प्रौढ़ पाठशला, प्रदर्शनी, प्रकाशनों द्वारा हिंदी सेवा कर रही है; कोटा सरकार से रजिस्टर्ड है; हिंदी सा० सम्मे० प्रयाग, काशी ना० प्र० सभा से सम्बद्ध है; समिति के अन्तर्गत (१) राजस्थान-हिंदी विद्यापीठ का संचालन हो रहा है जिसमें निःशुल्क शिक्षा दी जाती है, (२) भारतेन्दु-पुस्तकालय

चलता है, (३) 'भारतेन्दु' पत्र सन् १६४७ से प्रकाशित होता है; (४) भारतेन्दु-व्याख्यान-माला के नाम से व्याख्यान सभा आदि का आयोजन होता है; सदस्यों की संख्या ७०० है।

भारतेंदु साहित्य-संघ, मोतिहारी, बिहार—१६४० में सर्वश्री तारकेश्वर प्रसाद, गणेश चौबे, गणेशप्रसाद शाह, और कमलनाथ देव द्वारा स्थापित; ६० सदस्य हैं; संघ बिहार प्रादेशिक हि० सा० स० से सम्बद्ध है; संथालों में रोमन-लिपि-प्रचार और जनगणना में बिहारियों की मातृभाषा 'हिन्दुस्तानी' लिखने का विरोधी; रेडियो की हिंदी-विरोधी नीति के विरुद्ध, कचहरियों में हिंदी-प्रवेश के लिए आंदोलन; हिंदी परीक्षार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है; संघ के तत्वावधान में एक वाचनालय और एक पुस्तकालय चलता है, उसमें १३०० पुस्तकें हैं।

भारतेन्दु - साहित्य - समिति, विलासपुर—१६३५ में श्री भारतेन्दु हरिश्चंद्र की अर्धशताब्दी के अवसर पर स्थापित ; ३०० सदस्य ; (क) प्रति वर्ष वसंतपंचमी के अवसर पर साहित्य-संगीत-कला का सम्मेलन, भारतेन्दु और तुलसी-जयंतियों का आयोजन, (ख) अ० भा० सा० सम्मे० की परीक्षाओं के लिए पाठ्य पुस्तकों का संग्रह करना और विद्यार्थियों को तैयार करना, (ग) जिला साहित्य सम्मेलन का आयोजन; समिति प्रांतीय एवं अखिल भा० सम्मे० में प्रतिनिधि भेजती है, (घ) पुस्तक-प्रकाशन का कार्य भी आरम्भ हो चुका है।

महिला उद्योग परिषद, गोरखपुर—संस्था की योजना घरेलू उद्योगों, और कला-कौशल का विस्तार करना हैं ; महिलाओं में हिंदी-प्रचार किया जाता है; हिंदी परीक्षाओं की पढ़ाई का प्रबंध है।

महिला विद्यापीठ, प्रयाग—हिंदी के माध्यम द्वारा स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार किया जाता है ; कई परीक्षाओं का संचालन किया जाता है जिनमें हिंदी भाषा अनिवार्य है ; पहली कक्षा से लेकर एम० ए० तक हिंदी पढ़ाने का सुचारु प्रबंध है; संस्था के अंतर्गत विद्यापीठ कालेज भी है ; वस्तुतः

महिलाओं में हिंदी का प्रचार करने में विद्यापीठ का प्रयत्न सराहनीय रहा है।

माथुर - चतुर्वेदी पुस्तकालय, मैनपुरी—१६१८ में स्थापित; पुस्तकालय का निजी भवन है; हिंदी सा० स० और प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं का केन्द्र है; लगभग ४००० पुस्तकें हैं।

माध्यमिक शिक्षा - विभाग, ट्रावनकोर और कोचिन राज्य—१६२८ से हिंदीशिक्षा का प्रबंध दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा की प्रेरणा और राजकीय सहायता से हो रहा है; राष्ट्रभाषा-रूप में हिंदी के स्वीकृत होने पर दूसरी श्रेणी से सभी माध्यमिक शिक्षालयों में हिंदी-शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी; पाठक्रम का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि पाँच वर्ष अर्थात् १६५५ तक विद्यार्थी को हिंदी का पूर्ण व्यावहारिक ज्ञान अवश्य हो जाय; राज्य के ४८१ हाई स्कूलों और ६४१ मिडिल और लोअर मिडिल स्कूलों में हिंदी-शिक्षा का प्रबंध है; राज्य के अंतर्गत २४ कालेज हैं जिनमें से अधिकांश में ऊँची कक्षाओं में हिंदी पढ़ाई जाती है; प्रोफेसर श्री ए० चंद्रहासन एम० ए० को हिंदी - शिक्षा का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है; उनका प्रयत्न और विश्वास है कि उत्तरी भारतीय विद्वानों और राजकीय सहयोग से पाँच से दस वर्ष के भीतर ही वे ट्रावनकोर और कोचिन राज्य को पक्का हिंदी-भाषी-क्षेत्र बनाने में सफल हो जायँगे।

मानस-संघ, पो० रामवन, वाया सतना — मानस के पारायण द्वारा विश्वकल्याण के उद्देश्य से स्थापित, २०००० सदस्य, ८२५ शाखाएँ हैं; 'मानस-मणि' मासिक पत्र १० वर्षों से प्रकाशित हो रहा है; ४५ पुस्तकें प्रकाशित की हैं; संघ-कार्यालय में मानस का अखंड पारायण होता है।

मारवाड़ी नवयुवक - मंडल, बेगम बाजार, हैदराबाद—संस्था पुरानी है पर हिंदी की ओर ध्यान देना १६४३ से आरम्भ हुआ; इसका श्रेय श्री बद्री विशाल जी को है; मंडल द्वारा कवि - सम्मेलनों, वाद-विवादों, व्याख्यानों का

आयोजन भी होता है; इसके अन्तर्गत एक प्रकाशन - विभाग है जिससे लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

मारवाड़ी-सेवा-दल, दिल्ली—१६४१ में स्वर्गीय सेठ जमनालाल बजाज द्वारा स्थापित; दल का कार्य विशेष रूप से सामाजिक क्षेत्र में हुआ है, किन्तु हिंदी-प्रचार में भी इसने योग दिया; रेडियो की हिंदी-विरोधी-नीति की आलोचना और उसके विपक्ष में प्रचार करता रहा है, मारवाड़ी-समाज में हिंदी को सर्वप्रिय बनाया है।

मित्र - मंडल - संघ, हरनौत, पटना--१६४२ में हिंदी-प्रचार के उद्देश्य से स्थापित; (क) सूर्यरश्मि चिकित्सामाला का प्रकाशन; (ख) निःशुल्क मित्र पुस्तकालय और वाचनालय का संचालन; (ग) प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली का विकास तथा (घ) तत्संबंधी साहित्य की अभिवृद्धि—इसके विभाग हैं।

मिरांडा हाउस, दिल्ली—दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत छात्राओं का कालेज जिसकी संचालिका श्रीमती कमलादेवी गर्ग हैं; इसमें मैट्रिक से एम० ए० तक हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है; 'भारती-परिषद्' इसकी साहित्यिक संस्था है जो 'भारती' नामक पत्रिका का संचालन करती है।

मौलिक साहित्य - अभिषद् (सिंडिकेट), १६ बिजलीनगर, नागपुर १—साहित्यिकों की रचनाएँ पारिश्रमिक की परिपाटी पर विभिन्न पत्रों को प्रेषित करनेवाली संस्था; नवीन कलाकारों को भी प्रोत्साहन दिया जाता है।

यदुवंश-पुस्तकालय, मुज़फ्फरपुर—१६३७ में स्थापित; लगभग ६०० पुस्तकें हैं और १२ पत्र पत्रिकाएँ आती हैं, सम्मेलन-परीक्षाओं के लिए तैयारी करायी जाती है।

युगाधार, प्रतापगढ़, अवध—सितम्बर १६४६ में श्री मारकंडेय सिंह द्वारा स्थापित; २१५ सदस्य; जयंतियाँ, कवि-गोष्ठियाँ आदि आयोजित होती हैं, प्रसिद्ध कवि भिखारी दास की कृतियों का संकलन तथा प्रकाशन करना है।

रघुराज-साहित्य-परिषद्, रीवाँ, मध्यप्रदेश— हिंदी - भाषा-साहित्य

की सर्वांगीण उन्नति के उद्देश्य से १९३२ में स्थापित; वाचनालय, पुस्तकालय, सम्मेलन-परीक्षाओं के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करना कार्य हैं; ८० सदस्य हैं।

राँची कालेज, राँची—७०० विद्यार्थी हिंदी के हैं, हिंदी साहित्य-संघ का संचालन होता है, चार अध्यापक हैं— सर्वश्री वीरेंद्र श्रीवास्तव एम० ए० (हिंदी, संस्कृत, कालेज-पत्रिका के हिंदी-विभाग के संपादक), वैद्यनाथ पांडेय एम० ए०(हिंदी, संस्कृत), केसरीप्रसाद सिंह एम० ए०, रामसंजीवन सिंह एम० ए०, डिप० एड०।

राजकीय कालेज, अजमेर—विद्यार्थियों की संख्या १२५ है, अध्यक्ष हैं श्रीविष्णु अंबालाल जोशी एम० ए०, हिंदी-साहित्य-गोष्ठी और हिंदी-साहित्य-परिषद् का संचालन होता है और वार्षिक पत्रिकाओं में हिंदी के लिए समुचित स्थान रहता है, कालेज का संबंध आगरा विश्वविद्यालय से है।

रामायण-प्रचार-समिति, बरहज, गोरखपुर—महात्मा बालकराम विनायक की संरक्षता में स्थापित हुई, बाद में गीता-प्रेस गोरखपुर के व्यवस्थापक की देख-रेख में रही; अब बरहज में श्री राघवदास द्वारा संचालित होती है; मुख्य ध्येय भारतीय संस्कृति तथा साहित्य का प्रचार देश-विदेश में करना; पाँच परीक्षाएँ होती हैं—शिशु परीक्षा, प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा प्रथमा खंड, उत्तमा द्वितीय खंड; समिति की रामायण-परीक्षा के लगभग साढ़े तीन सौ केंद्र देश-विदेश में हैं, दस हजार परीक्षार्थी प्रतिवर्ष सम्मिलित होते हैं।

राष्ट्रभाषा-परिष्कार-परिषद्, कनखल, उत्तरप्रदेश (निर्माण-केन्द्र) और ३६, वाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकता ७ (प्रकाशन-केंद्र); भाषा-परिष्कार-कार्य के उद्देश्य से श्री किशोरीदास बाजपेयी द्वारा स्थापित; स्वावलंबी संस्था है; कुल छह सदस्य हैं, पदाधिकारी कोई नहीं है; प्रत्येक पर एक काम का दायित्व है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-मंडल, सांगवी, पूर्व खानदेश—श्री वि० श्री० चौधरी द्वारा १९४४ में

स्थापित; राष्ट्रभाषा विद्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय और वाद विवाद सभा का संचालन होता है; १०० विद्यार्थी विद्यालय में निःशुल्क अध्ययन करते हैं; पाँच अवैतनिक अध्यापक हैं।

राष्ट्रभाषा-प्रचारक-मंडल, ठि० भारती विद्यामंदिर, नड़ियाद—जूलाई १६३६ में स्थापित; आस-पास के स्थानों में कई परीक्षाकेंद्र खोले और अनेक प्रचारक तैयार करके कार्य को आगे बढ़ाया।

राष्ट्रभाषा-प्रचारक-मंडल, सूरत—**स्था०**-६ मई १६३७ को पं० परमेष्ठी दास जैन, न्यायतीर्थ; **सद०**—४१५ हैं, सदस्यों की तीन श्रेणियाँ हैं; शुल्क—सामान्य सदस्य २), आश्रयदाता १००), उपाश्रयदाता ५०) और आजीवन सदस्य २५); **कार्य०**—मंडल की ओर से राष्ट्रभाषा विद्यामंदिर का संचालन होता है; इसकी २० शाखाएँ हैं जिसमें २००० विद्यार्थी प्रतिवर्ष शिक्षा पाते हैं; एक राष्ट्रभाषा-अध्यापन-मंदिर चलता है जिसमें अध्यापकों को शिक्षा दी जाती है; मंडल के पुस्तकालय में ४३१० पुस्तकें हैं और वाचनालय में ४५ पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं; हिंदी-प्रचार के उद्देश्य से ग्राम सभाएँ और साहित्यिक चर्चाएँ रक्खी जाती हैं। श्री परमेष्ठीदास जैन 'निबंध स्पर्धा', स्व० गमनलाल सूतरवाला स्मारक वक्तृत्व-स्पर्धा होती हैं, 'बाल साहित्य-प्रकाशन' की भी व्यवस्था हुई है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार - कार्यालय, खालवाडो, कंसारावाड, नडियाद—**स्था०**—१ जून १६४६; **उद्दे०**—राष्ट्रभाषा-प्रचार; **कार्य**—यहाँ के पुस्तकालय में ४०० पुस्तकें हिंदी की हैं, प्रति वर्ष लगभग २००० विद्यार्थी तैयार किये जाते हैं।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-सभा, उत्कल, कटक—**स्था०**—१६३२; सभा को उत्कल सरकार से १६४८ में १००००) की सहायता के साथ-साथ स्थानीय गवर्नर तथा प्रधानमंत्री की सद्भावना प्राप्त हुई, प्र० मंत्री श्रीहरेकृष्ण मेहताब ने गाँधी राष्ट्र-भाषा भवन का शिलान्यास किया; शिक्षक - शिक्षण - शिविर खोला

जिसमें शिक्षण-कला पढ़ाई जाती हैं; सभा का कार्य निम्नलिखित भागों में विभक्त है:—**प्रकाशन विभाग**–अब तक ६ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; **अनुवाद समिति**—उत्कलभाषा के ग्रन्थों का अनुवाद,श्री हरेकृष्ण मेहताब के 'ओडिशा का इतिहास' अनूदित हो रहा है; **प्रेस**–राष्ट्रभाषा पत्र यहाँ से छपता है; **पुस्तकालय** कई भाषाओं में १४०० पुस्तकें हैं; **वाचनालय**—दैनिक, अर्धसाप्ताहिक, साप्ताहित, मासिक २३ पत्रिकाएँ-पत्र आते हैं; **पत्र-विभाग**–राष्ट्रभाषा-पत्र का संपादन तथा वितरण होता है; **पुस्तक-विक्री-विभाग**—इसके द्वारा वर्धा की परीक्षा पुस्तकों की बिक्री का प्रबंध होता है; **प्रचार-विभाग**–इसके अन्तर्गत १३ स्थायी शाखा-केंद्र चलते हैं और ५ केंद्र सामयिक हैं, इनका संचालन सभा के प्रचारक करते हैं; इनके अतिरिक्त ६७ केंद्र अलग हैं; सभा की कार्यकारिणी समिति में २० सदस्य रहते हैं।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-सभा, गोवालिया टैंक, बम्बई —**स्था०**— १९३५, श्री जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में ; **कार्य**—सभा पहले द० भा० हि० प्र० सभा मद्रास की परीक्षाओं की व्यवस्था करती थी, १९३६ से रा० भा० प्र० सभा, वर्धा से सम्बद्ध है ; शुरू में गाँधी-सेवा-सेना-कार्यालय गिरगाँव, हिंदी महिला-समाज, सारस्वत-महिला-समाज, गुजराती - हिंदू-स्त्री-मंडल आदि में कार्य आरम्भ हुआ ; ३७ में ६०३ विद्यार्थी बैठे, हिंदी-शिक्षा को स्कूलों में अनिवार्य विषय बनवाया ; ३६ में २० केंद्रों में हिंदी के वर्ग चलने लगे, १६०० विद्यार्थी बैठे ; ४१ में परीक्षा केंद्रों की संस्था १० और वर्गों की ३२ हो गयी ; ४५ में वर्धा - समिति के आदेशानुसार 'हिंदुस्तानी' की नीति अपनायी; १९४८ तक परीक्षा-केंद्रों की संख्या ३२ और प्रचार-केंद्रों की ८० हो गयी ; सभा का कार्य-क्षेत्र पूरे नगर बम्बई और सारे उपनगरों तक फैला है ; साहित्य - प्रतियोगिताओं और भाषणों का प्रबंध किया जाता है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-सभा, सम्बल पुर, उड़ीसा—**स्था०**— १९४६ ; **कार्य**—१९४६ में १६ परीक्षार्थी बैठे; १९४७ में प्रांतीय सरकार की ओर से हिंदी-शिक्षण-शिविर खोला गया; उसमें २६ शिक्षक पास हुए, १९४८ में २७ शिक्षक निकले ; सभा का प्रचार कार्य उत्तरोत्तर वृद्धि पर है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति (गुजरात प्रांतीय), बाला हनुमान, खाड़िया, अहमदाबाद—१९४२ में स्थापित ; नगर में वर्धा की परीक्षाओं के १७३ वर्ग चलते हैं और ६१ स्थानों में शिक्षा की व्यवस्था है ; १०३ प्रचारक विभिन्न स्थानों में काम कर रहे हैं ; १९५० में १२३२६ परीक्षार्थी सम्मिलित हुए, इसके अंतर्गत १० नगर समितियाँ हैं और संपूर्ण गुजरात सुविधा की दृष्टि से १० भागों में विभक्त कर दिया गया है जिसमें ५५१ केंद्र हैं और ६०१ प्रचारक काम करते हैं; २५ पदाधिकारियों की समिति द्वारा इसका संचालन होता है।

राष्ट्रभाषा - प्रचार - समिति, गुवाहाटी, आसाम—नवंबर १९३८ में स्थापित ; इसकी व्यवस्थापिका परिषद में ६० सदस्य हैं ; प्रचार, साहित्य-निर्माण, अध्यापन-मंदिर, पुस्तकालय तथा वाचनालय, परीक्षा, अर्थ, अन्यान्य प्रवृत्तियाँ आदि आठ विभाग हैं ; ३६ प्रधान और ४३ सहायक, कुल ६६ कार्यकर्ता समिति के अंदर कार्य करते हैं ; प्रचार-केंद्रों की संख्या ३६ हैं; आठ हजार छात्र और १५०० छात्राएँ हिंदी का अभ्यास कर रही हैं; हिंदी का प्रचार ५१ हाई स्कूलों और १५ मिडिल स्कूलों में हो रहा है; अगस्त १९३६ में सरकारी हाई स्कूलो की ५, ६, ७ वीं कक्षाओं में हिंदुस्तानी पढ़ाने की व्यवस्था हुई; इस प्रांत के संयुक्त मंत्रिमंडल ने १०००) की सहायता समिति को दी ; १९४१ और ४२ में यह सहायता २४००) कर दी गयी; अब तक एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित की हैं, समिति प्रचारक भी तैयार करती है ; २० प्रचारक अब तक तैयार किये जा चुके हैं ; हिंदी के १० और मारवाड़ी - हिंदी के ८ पुस्तकालय इसके अंतर्गत हैं ; रा० भा० प्र० समिति वर्धा की परी

क्षाएँ तथा हाई स्कूलों की वार्षिक परीक्षाएँ भी होती हैं ; प्रांतव्यापी प्रचार-आंदोलन के लिए समिति प्रति वर्ष बारह-चौदह हज़ार रुपए खर्च करती है ; प्रांतीय समिति के अंतर्गत १८ स्थानीय शाखा-समितियाँ हैं जिनका संचालन महिलाएँ ही करती हैं और सबके अलग-अलग सदस्य तथा पदाधिकारी हैं, इन सभी समितियों के सदस्यों की संख्या ७०० है ; साहित्यिक समन्वय और सांस्कृतिक पुनरुज्जीवन को दृष्टि में रखकर समिति ने असमीया हिन्दी साहित्य परिषद् स्थापित की है।

राष्ट्रभाषा - प्रचार - समिति, (पश्चिम बंग), ४२।१ हवलदार पाड़ा रोड, कालीघाट, कलकत्ता, २६–स्था०–१६४६; भारत राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति और वर्धा-प्रचार समिति के दोनों लिपियों में हिंदुस्तान को मान्यता देने पर श्री रेवतीरंजन सिनहा द्वारा हुई; **कार्य०**—दक्षिणी कलकत्ता-हिंदी-शिक्षार्थी-संघ के रूप में कई प्रचार-केन्द्रों में वर्ग चलाये; १६४६ में कलकत्ते में २३ केंद्र तथा प्रान्त में ६ परीक्षा-केंद्र चले; दूसरे वर्ष कुल ४७ केंद्र स्थापित हुए; १६४८-४६ में प्रान्तीय सरकार द्वारा ५०००) और १६४६-५० में ३०००) की आर्थिक सहायता मिली; प्रचार-कार्य में वंगभाषी जन ही संगठकों और प्रचारकों के रूप में कार्य कर रहे हैं।

राष्ट्रभाषा-प्रचार - समिति, (महाराष्ट्र), पूना–**स्था०**–श्री शंकर-रावदेव की अध्यक्षता में १६३८ में स्थापित; **कार्य**—प्रचार-क्षेत्र में कोठाणा, कुलाबा, रत्नागिरि और गोवा चार जिलों में बाँट दिया गया; श्री प्रताप सेठने प्रचार कार्य के लिए समिति को ६ हजार रुपये दान दिये, समिति ने ११ सवेतन प्रचारक नियुक्त किये, प्रचार में रा० भा० प्र० सभा कार्य-क्रम की परीक्षाओं को अपनाया; हिंदी-वर्ग खोले गये और हिंदी-प्रचार-समितियाँ स्थापित हुईं; ३६ में हिंदी-मराठी-शब्दकोश छपाया शिमला-अधिवेशन से इसका नाम 'अखिल राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति' रक्खा गया था ; परन्तु वर्धा-समिति के नियम द्वारा बरार

नागपुर के महाराष्ट्र प्रान्त से अलग हो जाने पर इसका नाम महाराष्ट्र-राष्ट्र-भाषा- प्रचार-समिति ही रहा; १९४१में शंकररावदेव के त्यागपत्र देने के बाद इसका स्वतंत्रकार्यालय जो पूना में था, भंग कर दिया गया और प्रचारकार्य तिलक महाराष्ट्र विद्यालय को सौंप दिया गया, १९४३ से फिर स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त किया; १९४० से 'राष्ट्रभाषा-शिक्षक—विद्यालय' चलाया गया, स्थानाभाव के कारण विद्यालय का कार्य शिवाजी मराठी स्कूल और 'कन्याशाला' में होता है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा—**स्था०**—४ जूलाई १९३६ को नागपुर, अ० भा० हि० सा० स० के अधिवेशन के अवसर पर 'हिंदी-प्रचार-समिति' के नाम से स्थापित; ६ सितम्बर १९३८ से इस का नाम राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति पड़ा; **कार्य०**—समिति का कार्य इन विभागों में बँटा है:—**प्रचारविभाग** प्रचार के कार्यक्रम को प्रान्तों के आधार पर बाँटा गया; प्रांतीय प्रचार समितियाँ सीधे वर्धा-केंद्र से सम्बद्ध हैं और उसी के कार्यक्रम को पूरा करती हैं--ये हैं, बिहार-सेवा-समिति, असम प्रांतीय हिंदी-प्रचार-समिति, अखिल महाराष्ट्र-हिंदी-प्रचार-समिति, गुजरात राष्ट्रभाषा-प्रचार - समिति, सिंध-रा०भा०प्र०स०; (वर्तमान कार्यालय भारत-विभाजन के बाद अजमेर आ गया है), पूर्व भारत हिन्दी-प्रचार-सभा उत्कल; प्रचार-कार्य को बढ़ाने के लिए ७५ हजार रु० श्री पद्मपतसिंहानिया कानपुर, निवासी, ५ हजार श्री घनश्यामदास बिड़ला तथा ६ हजार अमलनेर के श्रीप्रताप सेठ ने दिये ; प्रचार कार्य के लिए प्रांतों में दौरे किये जाते हैं; बलूचिस्तान और लंका में भी प्रचार-कार्य आरम्भ किया; १९४६ में प्रचारक-शिक्षण-शिविर खोला; **परीक्षा - विभाग**—हिंदी - प्रवेश, हिंदी-परिचय, हिंदी - कोविद, राष्ट्र भाषा-रत्न की परीक्षाएँ समिति द्वारा ली जाती हैं; १९४८ से 'बातचीत'-परीक्षा प्रचलित की, १९४८ के आकड़ों के अनुसार १२०९८६ परीक्षार्थी बैठे, १२९४ केंद्र रहे और १४१४ प्रचारक थे ; १५जून १९३७ को राष्ट्रभाषा-

अध्यापन - मन्दिर की स्थापना की गयी; **प्रकाशन व पुस्तक-बिक्री-विभाग** - अहिंदी-भाषी प्रांतों के अनुकूल पाठ्य-क्रम के लिए पुस्तकें तैयार करने का उद्देश्य लेकर १९३८ से प्रकाशन आरंभ हुआ; अब तक २३ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं ; **मासिक पत्र**—१९३९ में 'राष्ट्रभाषा' मासिक निकाला; बाद में उसका नाम 'सबकी बोली' कर दिया गया ;१९४१ से उसके स्थान पर 'राष्ट्रभाषा-समाचार-पत्र' चलाया गया और ४३ से उसका नाम 'राष्ट्र-भाषा' रह गया ; जनवरी १९५१ से 'राष्ट्रभारती' नामक सुंदर साहित्यिक मासिक का प्रकाशन आरंभ किया गया है ; **पुस्तकालय** में हिंदी में प्रत्येक विषय की पुस्तकें है और अन्य प्रांतीय भाषाओं की पुस्तकें भी हैं ; **वाचनालय** में ४४ श्रेष्ट पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं, ये हिंदी तथा अन्य प्रांतीय भाषाओं की भी होती हैं ; **शीघ्रलिपि व मुद्रालेखन-यंत्र-निर्माण-विभाग**—शीघ्रलिपि के वर्ग चलते हैं और यंत्र के निर्माण का प्रयत्न हो रहा है ; **राष्ट्रभाषा-प्रेस**—४६ से इस का कार्य आरंभ हुआ ; प्रेस की पूँजी ५० हजार रुपये की है ; **भवन - विभाग**—समिति ने ८ एकड़ जमीन खरीद कर भवन निर्माण-कार्य आरंभ किया है ; राष्ट्रभाषा कार्यकर्ताओं के लिए एक हिंदी-नगर बसाने का काम जारी है; इस कार्य पर १½ लाख रुपया व्यय हो चुका है ; **कार्यालय विभाग**—डाक विभागों की डाक और कागज-पत्र रखने के लिए अलग काम करता है; वि०—भारत की यही ऐसी संस्था है जिसने भारत के बाहर पूर्वी अफ्रीका, मारिशश, फिजी आदि विदेशों में अनेक परीक्षाकेंद्र खोलकर हिंदी का प्रचार किया है।

राष्ट्रभाषा - प्रचार - समिति (विदर्भ-नागपुर), नागपुर—स्था०—३० जून १९४० ; उद्दे०—हिंदी-प्रचार; कार्य०—प्रारम्भ में ८ केन्द्र थे, पं० हृषीकेश शर्मा के उद्योग से इनकी संख्या बढ़ती गयी ; कई राष्ट्रभाषा - पुस्तकालय खोले गये जिनमें से नांदीगोमुख केन्द्र का पुस्तकालय मुख्य है; १९४५ में राष्ट्र-भाषा-सेवा-मंदिर की स्थापना हुई,

परीक्षाओं और प्रचार-कार्य में रा० भा० प्र० सभा वर्धा का कार्यक्रम अपनाया गया ; वहाँ की 'कोविद' और 'राष्ट्रभाषा-परिचय' की परीक्षाएँ प्रांतीय सरकार और नागपुर वि० वि० से मान्य हैं।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति(सिंध), अजमेर—स्था०--हिंदी प्रचारकार्य सिंध में शिकारपुर की 'श्री प्रियतम धर्म-सभा' और १९१४ में डा० चोइथराम द्वारा स्थापित 'ब्रह्मचर्याश्रम' के अधीन था; हिंदी-प्रचार की आवश्यकता समझ कर १९३७ में श्री काका कालेलकर की अध्यक्षता में होने वाले सिंध प्रां० हिं० सा० सम्मे० के अवसर पर इस समिति की स्थापना हुई ; सभा का प्रबंध दो प्रबन्धकारिणी समितियों के अधीन है—प्रधान सभा और कार्य कारिणी ; कार्य—समिति की शाखाएँ जिलों में थीं ; १९४० से काका कालेलकर की अध्यक्षता में राष्ट्रभाषा-सम्मेलन हुआ ; १९४० से 'कौमी बोली' का प्रकाशन आरम्भ हुआ ; हिंदी-भाषियों के लिए 'कौमी बोली किताब घर' की स्थापना की गयी ; सिंध भर में ३३ पुस्तकालय खोले गये ; समय समय पर अनेक साहित्यिकों के दौरे होते रहे ; इसका सम्बन्ध राष्ट्रभाषा-प्रचार - समिति वर्धा से रहा ; १९४७ में पाकिस्तान की स्थापना से सारा कार्य नष्ट हो गया; अब समिति का कार्यालय अजमेर में है और सिंधी भाइयों में अब भी हिंदी-प्रचार का काम जारी है ; राजस्थान में इसके २० केन्द्र हैं।

राष्ट्रभाषा - प्रचारिणी-सभा, नयागंज, कानपुर—१९४० में पं० सत्यनारायण जी पांडेय एम० ए० द्वारा स्थापित; सभा द्वारा हजारों प्रतियाँ उन मुसलमान विद्वानों की सम्मतियों सहित वितरित की गयीं जो निष्पक्ष होकर हिंदी को 'लोकभाषा' मानते हैं; निजी भवन बनाने में भी प्रयत्नशील है।

राष्ट्रभाषा-प्रेमी-मंडल, पूना—२२ अक्टूबर १९३९ में स्थापित; सदस्य संख्या १३२; मंडल के अंतर्गत निःशुल्क पुस्तकालय और वाचनालय है।

राष्ट्रभाषा-विद्यालय, गायघाट, काशी—स्था०—१९३९ श्रीगंगाधर-मिश्र और श्रीबलदेवप्रसाद मेहरोत्रा;

इसका उद्देश्य हिंदी - माध्मम द्वारा उच्च श्रेणी की शिक्षा देना है; **कार्य**—साहित्यिक उत्सव, शारदा-महोत्सव, जयंतियाँ और राष्ट्रभाषा-सप्ताह मनाया जाता है, १६४७ में निराला-स्वर्णजयंती अ० भा० कार्यक्रम के साथ मनायी गयी; विद्यालय में हि० सा० सम्मे० और हिंदी-विद्यापीठ देवघर की परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है।

राष्ट्रभाषा-विद्यालय, पूना—स्थानीय नगरपालिका द्वारा मान्य, राष्ट्रभाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार के उद्देश्य से १६४० में स्थापित; सदस्य-संख्या १००; राष्ट्रभाषा-प्रचार - समिति द्वारा संचालित परीक्षाओं के लिए सुबह-शाम नाममात्र शुल्क पर वर्ग चलाये जाते हैं; प्रारंभिक शिक्षा निःशुल्क दी जाती है; संस्था के सब कार्यकर्त्ता अवैतनिक हैं; इसके विभाग— प्रकाश - पुस्तकालय—१००० पुस्तकें हैं तथा हिंदी की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाएँ भी आती हैं; चर्चाविभाग - प्रति शनिवार को चर्चाएँ होती हैं; समय-समय पर हिंदी साहित्य-सेवियों के व्याख्यानों का आयोजन, कभी काव्यगायन भी होता है; विद्यालय की ओर से 'सेवा' नाम की हस्तलिखित मासिक पत्रिका निकलती है।

राष्ट्रीय महाविद्यालय, सेवती, गया—**संस्था०**—डाक्टर अंशुमान शर्मा, २० मई १६४२; **उद्दे०**—आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा-दान जिसमें पूर्व और पश्चिम की विशेषताओं का समावेश हो, प्राचीन भारतीय साहित्य का अन्वेषण तथा मुद्रण, साहित्य-सृजन में प्रोत्साहन देने के लिए पुरस्कार-वितरण; **वि०**—विद्यालय के चलाने में विद्यापीठ, संग्रह, उद्योग, अन्वेषण, साहित्य, प्रचार, अर्थ, सदस्य, कार्य आदि विषयों के लिए अलग अलग समितियाँ है; इन समितियों का संगठन पंचवर्षीय योजना के अनुसार होता है; **कार्य०**—कुमार-विद्यालय है जिसमें बालकों को शिक्षा मिलती है; सा० स० प्रयाग और हिंदी विद्यापीठ देवघर की परीक्षाओं के लिए केन्द्र है।

राष्ट्रीय विद्यालय,(खड्ग-प्रसाद) कटक, उड़ीसा—सम्मेलन और वर्धा-समिति की सभी परीक्षाओं की शिक्षा देने और राष्ट्रभाषा-प्रचारक तैयार करने के लिए मार्च, १६४२ में स्थापित ; राष्ट्र-भाषा-प्रचारार्थ दो केन्द्र स्थापित किये हैं।

लोकमान्य समिति, चितरंजनपथ, छपरा—**स्था०**—१६२५, **कार्य**—राष्ट्रलिपि देवनागरी के प्रचार के लिए इसने प्रबल आंदोलन किया ; कचहरियों और अर्द्धसरकारी संस्थाओं में देवनागरी के प्रयोग का प्रयत्न कर रही है।

लोकवार्ता - परिषद् (बुंदेलखंड), टीकमगढ़— उद्दे०—लोक वार्ता-शास्त्र और नृतत्व शास्त्र का अध्ययन और अन्वेषण ; **कार्य**—(क) चार वर्ष से लोक-साहित्य का संग्रह हो रहा है; (ख) 'लोकवार्ता' नामक त्रैमासिक का प्रकाशन; (ग) तत्सम्बन्धी उच्चकोटि के साहित्य का प्रकाशन; (घ) देशी शब्दों का एक पारिभाषिक कोश तैयार हो रहा है; **वि०**—उक्त विषयों से प्रेम करने वाले कोई भी सज्जन सदस्य बन सकते हैं ; ११) वार्षिक चन्दा देनेवालों को 'लोक-वार्ता' के अतिरिक्त वर्ष भर के प्रकाशित ग्रन्थ बिना मूल्य मिलेंगे और ५१) एक बार देने मात्र से सारा साहित्य बिना मूल्य मिलता रहेगा।

विक्टोरिया कालेज (राजकीय), पालघाट—इंटर में ५० और बी० ए० में १० विद्यार्थी हिंदी पढ़ रहे हैं ; कालेज के अन्तर्गत साहित्यिक कार्यक्रम के लिए हिंदी-संघ है ; कालेज के हिंदी-पुस्तक-भंडार में लगभग ४००० हिंदी पुस्तकें हैं ; कालेज के उत्साही हिंदी अध्यापक श्री कटील गणपति शर्मा बी. ओ. एल., एल. टी., सा. रत्न हैं।

विक्रम-हिंदी-साहित्य-समिति, जावद, मालवा—**स्था०**—१६४३; **सदस्य** ४५ ; **कार्य०**—सम्मेलनों और नाट्यअभिनयों का आयोजन होता है; विक्रमोत्सव मनाया जाता है, सम्मेलन की परीक्षाओं का प्रबंध किया जाता है, हस्तलिखित मासिक 'साहित्योद्यान' का प्रकाशन।

विद्यापीठ, काशी—**स्था०**—१६२०; प्रारम्भ से ही सब कक्षाओं में हिंदी की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है; प्रकाशन - समिति की ओर से अब तक लगभग बीस साहित्यिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

विद्या प्रचारिणी-सभा, बलहापारा, कानपुर — इसकी स्थापना 'हिंदी साहित्य के तीर्थों' के केंद्र में हुई, मतिराम, भूषण, नीलकंठ, राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' आदि का जन्म इसी प्रदेश में हुआ था; **उद्दे०**— गाँवों में छिपे हुए प्राचीन साहित्य और कवियों की खोज करना; **कार्य०**—सभा के पुस्तकालय में उच्च कोटि की पुस्तकें हैं; निर्धन विद्यार्थियों के लिए परीक्षोपयोगी पुस्तकें भी सम्मिलित हैं; सभा के विद्यालय में सा० सम्मे० और विद्यापीठ तथा कोविद परीक्षाओं की पढ़ाई का प्रबंध है।

विद्या-प्रचारिणी-सभा, हिसार, पंजाब—**स्था०**—नवम्बर १६२२में एडवोकेट ठाकुरदास भार्गव द्वारा; अनेक सभासद हैं जिनके सहयोग से ३१ हिंदी पाठशालाएँ खोली गयीं जिन्हें १६२८ में हिसार के शिक्षा - विभाग ने स्वीकृत करके सहायता दी, पंजाब भर के डिस्ट्रिक्ट बोर्डों में, हिसार के स्कूलों में हिंदी की शिक्षा का अधिक प्रबंध है; भार्गव जी ने सभा को ४० हजार रुपये दान दिये; १६२६ में सभा ने अपने सातरोंद विद्यालय के लिए स्व० लाला लाजपतराय शिल्पशाला चलायी जिसमें बुनाई, कताई, आदि का काम सिखाया जाता है; सभा की पाठशालाओं द्वारा सात हजार से अधिक व्यक्तियों ने हिंदी-शिक्षा प्राप्त की; अब तक सभा ने हिंदी - प्रचार में लगभग ढाई लाख रुपया खर्च किया है।

विद्यार्थी सार्वजनिक पुस्तकालय, बछरावाँ, रायबरेली—**स्था०**—राजामऊ निवासी मुंशी चन्द्रिकाप्रसाद; **वि०**—इस पुस्तकालय में महात्मा गाँधी, पं० नेहरू, पं० पंत, आचार्य नरेन्द्रदेव आदि बड़े नेता आ चुके हैं, इसका निजी भवन २० हजार रुपये का है; **कार्य०**—अनेक पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं; वाचनालय भी है,

कोविद और मध्यमा परीक्षाओं की पुस्तकें विद्यार्थियों के उपयोगार्थ संगृहीत हैं; पुस्तकालय काशी ना० प्र० सभा से सम्बद्ध है।

विद्याविभाग, काँकरोली (मेवाड़) —हिंदी-साहित्य-निर्माण के लिए स्थापित; विभाग के अंतर्गत पुस्तकालय, वाचनालय, सरस्वतीभंडार, ग्रंथ-प्रकाशनविभाग आदि ६ विविभाग हैं जिनका अपना-अपना महत्व है; लगभग १६ पुस्तकें प्रकाशित कीं; कई उत्साही कार्यकर्ताओं द्वारा संचालन होता है।

विश्वभारती कलावनम्, देन्दुलूर—स्था०—१ नवम्बर १६४७; कार्य०—आंध्र प्रांत में हिंदी को जनप्रिय बनाना, काशी ना० प्र० सभा से सम्बन्ध है; संस्था की ओर से तेलगु और हिंदी में ये परीक्षाएँ होती हैं–प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, साहित्य - विशारद और साहित्य - शिरोमणि, इनका मान अपेक्षाकृत ऊँचा है; विद्यार्थियों की पढ़ाई का समुचित प्रबंध है।

विश्वविद्यालय, ट्रावनकोर—इंटर, बी० ए० और बी० एस-सी० में हिंदी द्वितीय भाषा के रूप में मान्य है; १६४६ के आँकड़ों के हिसाब से लगभग ६०० विद्यार्थी हिंदी पढ़ते हैं; प्रोफेसर ए० चंद्रहासन विश्वविद्यालय के बोर्ड आव स्टडीज़ इन हिंदी के अध्यक्ष हैं; इस समिति के अन्य सदस्य—श्री पी० के० नारायण नैयर एम० ए०, श्री पी० लक्ष्मी कुट्टी एम० ए०, एल० टी०; श्री के० भास्करम नैयर एम० ए०; श्री के० एस० चिंतांबरम् बी० ओ० एल०; श्री जनेत आर० रोशन एम० ए०; श्री एन० ई० विश्वनाथ शास्त्री एम० ए०; श्री पंडित अवधनंदन; विश्वविद्यालय का संबंध स्थानीय चौबीस कालेजों से है और सभी में हिंदी-शिक्षा का प्रबंध है; 'विद्वान' परीक्षा का संचालन भी वि० वि० द्वारा होता है, हिंदी अध्यापकों के लिए मान्य होने के कारण यह परीक्षा विशेष लोकप्रिय है।

विश्वविद्यालय, दिल्ली—संस्कृत और हिंदी दोनों एक ही विभाग के अधीन है जिसका संचालन कमेटी आव कोर्सेस इन संस्कृत ऐंड हिंदी द्वारा होता है; इसके सात सदस्य हैं—म० म०

डाक्टर लक्ष्मीधर शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल०, पी-एच० डी०; पं० नरेंद्रनाथ चौधरी, एम० ए० काव्यतीर्थ; पं० कैलाशनाथ कौल, एम० ए०, एम० ओ० एल०; प्रो० रामदेव एम० ए०; हरिवंश कोचर, वेदलंकार, एम० ए०; पं० गंगाराम शास्त्री, एम० ए०, श्री प्रभासेन एम० ए०; श्री सुरेंद्र शास्त्री एम० ए०; ये सभी संस्कृत तथा हिंदी के प्रेमी और प्राध्यापक हैं; विश्वविद्यालय में हिंदी आनर्स तथा एम० ए० का कोर्स है; शिक्षा विश्वविद्यालय में ही होती है; विश्वविद्यालय के अंतर्गत प्रिपेयरेट्री क्लास में हिंदी का सौ अंक का एक प्रश्नपत्र अनिवार्य है; (ख) बी० ए० में (त्रिवर्षीय) योजना के अनुसार सौ अंकों के प्रश्नपत्र अनिवार्य हैं; (ग) बी० ए० आनर्स में आठ प्रश्न पत्रों में छः हिंदी के होते हैं और (घ) एम० ए० में छः प्रश्नपत्र हैं; हिंदी पढ़ाने के लिए अलग अध्यापक हैं; पी-एच० डी० के लिए विद्यार्थी खोज कर रहे हैं; उनमें लड़कियाँ भी सम्मिलित हैं; एम० ए० में विद्यार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है।

विश्वविद्यालय, नागपुर—यह अभी बोर्ड के रूप में है, पढ़ाई नहीं होती; इसलिए हिंदी-विभाग का केवल एक अध्यक्ष होता है, हिंदी-विभाग के अंतर्गत हिंदी-साहित्य-समिति है; वर्तमान अध्यक्ष श्री विनयमोहन शर्मा हैं।

विश्वविद्यालय, बंबई—बंबई विश्वविद्यालय की हिंदी-कमेटी के सदस्य—(१) दीवान बहादुर श्री के० एम० झावेरी एम० ए०, एल-एल० बी०, १ पिताले मैनशन, कंडेवाडी, गिरगांव, बंबई ४ (सभापति); प्रोफेसर श्री बी० डी० वर्मा एम० ए०, आनंद भवन, ७५६।३ पी० वाई० सी० हिंदू जिमखाना, पूना ४; (३) प्रोफेसर एच० एल० अल्लूक एम० ए०, डी० ए० वी० कालेज, शोलापुर; (४) प्रोफेसर आर० आर० देशपांडे एम० ए०, १६ मुधे भुवन, दादर, बंबई १४; (५) प्रोफेसर जे० सी० जैन, २३ शिवाजी पार्क, बंबई २४।

वीरसार्वजनिक पुस्तकालय, इंदौर—युवकोंमें साहित्यिक अभि-

रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से जूलाई १९३७ में स्थापित ; सदस्य ७५; विद्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय और प्रकाशन-विभाग हैं ; प्रथम में सम्मेलन की उच्च परीक्षाओं के लिए शिक्षा दी जाती है; अंतिम में जैन - साहित्य - संबंधी दो पुस्तकें प्रकाशित करके अमूल्य वितरित की गयी हैं।

वीरेंद्र-साहित्य-परिषद्, टीकमगढ़, झाँसी — स्था०— १९१०, श्री सवाई महाराज वीरसिंह देव के संरक्षण में रावराजा डा० श्यामविहारी मिश्र द्वारा स्थापित; **कार्य०**—संस्था द्वारा बुंदेलखंड प्रांत में हिंदी-प्रचार का विशेष प्रयत्न हो रहा है ; देवेन्द्र- पुस्तकालय में २००० पुस्तकें तथा अनेक पत्र पत्रिकाएँ हैं ; कई अन्य पुस्तकालय भी खोले गये हैं जिसमें सुधा-वाचनालय स्त्रियों के लिए,पद्मसिंह शर्मा पुस्तकालय, कवींद्र केशव-पुस्तकालय प्रसिद्ध हैं; परिषद् की ओर से २०००) का देवपुरस्कार एक वर्ष खड़ीबोली और दूसरे वर्ष व्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ काव्य पर दिया जाता है ; 'मधुकर' मासिक का प्रकाशन होता था जो बुंदेलखंडीय साहित्य,संस्कृति और समाज का प्रतिनिधित्व करता था ; कई ग्रंथों का—बुंदेलखंडी विश्वकोश, बुंदेलखंड का गौरव-ग्रंथ, बुंदेलखंडी भाषा-कोश, ग्रामगीत-संग्रह—सम्पादन और प्रकाशन हुआ है ; **वि०**— परिषद् को राज्य का संरक्षण प्राप्त है।

व्रज-साहित्य-मंडल, मथुरा—**स्था०** — २० अक्तूबर १९४० ; **उद्दे०**—वृहत्तर व्रजक्षेत्र की भाषा, कला, साहित्य, संस्कृति और इतिहास की रक्षा और अनुसंधान ; **कार्य०**—इन विभागों में बँटा है:—**साहित्य-विभाग** का संचालन ७ सदस्यों की एक समिति द्वारा होता है ; ग्राम-साहित्य का संकलन हो चुका है; 'व्रजभारती' त्रैमासिक का प्रकाशन होता है,व्रजसाहित्य-परिषद् की स्थापना हुई है ; हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का कार्य हो रहा है; **प्रचार - विभाग** के अन्तर्गत व्रज क्षेत्र में अनेक केंद्र खोले गये हैं, वार्षिक सम्मेलन, कविसम्मेलन तथा प्रचारात्मक कार्यों की योजनाएँ कार्यान्वित होती हैं ; 'भारतेंदु

कलश', 'ताम्रपत्र' तथा 'श्रीनिवास पुरस्कार' दिये जाते हैं; व्रज-विद्यापीठ खोलने की व्यवस्था की गयी है, इसमें तीन विभाग—संग्रहालय, शोध तथा परीक्षा होंगे, व्रजभाषा का व्याकरण तैयार करने का प्रबंध हो रहा है।

शतदल, रानीकटरा, लखनऊ—प्रमुख साहित्यिकों के बीच एकता स्थपित करने और जनता की रुचि सत्साहित्य के प्रति जागरित करने के उद्देश्य से १९४८ में स्थापित; १९५० से पंडित रूपनारायण पांडेय के सभापतित्व में विशेष कार्य किया है।

शांति-निकेतन-हिंदी-साहित्य मंदिर—१६, बिजलीनगर, नागपुर नं० १—**स्था०**—१५ अप्रैल १९४५, पं० कामताप्रसाद मिश्र, 'शास्त्री' और कुमार साहू शास्त्री; **सद०**— १२३२; **शु०**—१) प्रति मास; **उद्दे०**—प्रांतीय, अंतर्प्रान्तीय लेखकों, कलाकारों, पत्रकारों से सम्पर्क और सहयोग स्थापित करके साहित्य में होने वाले भ्रष्टाचार को रोकना, उन्हें उत्साहित करना और उनकी कृतियों को प्रकाशित करना; **कार्य**—गोष्ठियाँ, जयंतियाँ और कवि-सम्मेलन किये जाते हैं, मध्य प्रांतीय विदर्भ हि० सा० स० के १३ वें अधिवेशन में प्रतिनिधित्व, प्रांतीय लेखकों का परिचय-प्रकाशन; अ० भा० कुमार हिन्दी सा० स० के तृतीय अधिवेशन में प्रतिनिधित्व किया; 'अंजलि' हस्तलिखित का प्रकाशन; एक निबंध-संग्रह के प्रकाशन का आयोजन हो चुका है।

शांति-स्मारक हिंदी-साहित्य-समिति, करेली, मध्यप्रदेश—**संस्था०**—श्री व्रजभूषणलाल श्रीवास्तव 'पथिक', श्रीहिमांशु द्वारा १९४०; **सद०**—८; **शुल्क** –) प्रति मास; **उद्दे०**— जिले के साहित्यिकों का संगठन; **कार्य**—शहीद-स्मारक-भवन का निर्माण तथा उसमें पुस्तकालय खोलने का आयोजन; हस्तलिखित 'ज्वाला' पत्रिका निकलती है।

श्रवण-ज्ञानमंदिर-पुस्तकालय, हरद्वार—**स्था०**— १९३९; **स्व०** महंत शांतानंदनाथ; इसका उद्‌घाटन पं० मदनमोहन मालवीय ने

किया ; कार्य—इसके अंतर्गत ४ विभाग हैं—(क) वाचनालय—कई भाषाओं में अनेक विषयों की पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं ; (ख) पुस्तकालय — लगभग ५५०० पुस्तकें हैं ; (ग) सभा-भवन—अनेक विषयों पर प्रतिष्ठित विद्वानों के भाषण होते हैं ; प्रकाशन विभाग—श्रवणनाथ-ज्ञान-मंदिर-प्रकाशनमाला के नाम से पुस्तकें छपती हैं ; इनके अतिरिक्त एक आयुर्वेदिक पाठशाला है, जिसके छात्रों का पूरा भार मंदिर उठाता है, धर्मार्थ औषधालय द्वारा निःशुल्क शिक्षा दी जाती है, एक श्रवणनाथ-पार्क १८ हजार रुपये से निर्मित हुआ जहाँ व्यायाम के लिए उत्तम प्रबंध है ; अ० भा० हिं० सा० स० का ३१ वाँ अधिवेशन इसी संस्था के योग से हरद्वार में हुआ।

संस्कृत-भवन-पुस्तकालय, कठौतिया, पो० काभा, पूर्णिया—स्था०—१६३८ ; सद०—२३ ; संस्था के पास १००० ग्रन्थ हैं।

सनातन-धर्म हिंदी-विद्यापीठ, जयपुर—सद०—२००० ; कार्य०—संस्था अ० भा० हिं० सा० सम्मे० से सम्बद्ध है और उसी के हिंदी-प्रचार के कार्यक्रम को अपनाती है ; विद्यापीठ में सम्मेलन-परीक्षाओं की पढ़ाई होती है ; छात्रों के निःशुल्क छात्रावास की व्यवस्था है ; व्यायामशाला भी है।

सरस्वती-पुस्तकालय, १०७।५० जवाहरनगर, कानपुर—स्था०—१६३८ ; सद०—१२१ ; कार्य—पुस्तकों की संख्या ४ हजार है ; पुस्तकालय का अपना भवन है।

सरस्वती-सदन, हरदोई—स्था० १६११ ; सर्वश्री गिरीशचन्द्र गुप्त, मधुसूदन चतुर्वेदी, मोहनलाल टंडन, स्व० लाला भगवानदास, स्व० महेशप्रसादसिंह ; सद०—३१७ ; कार्य०—पुस्तकालय भवनमें निःशुल्क पढ़ाई की अनुमति है ; वाचनालय में २२ पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं, सरकारी, ना० प्र० स० काशी और हिं० सा० स० प्रयाग के प्रकाशन आते हैं; वाचनालय का 'गाँधीवाद' नामक अलग विभाग है जिसमें तत्सम्बन्धी साहित्य का अच्छा संग्रह है; साहित्यिक गोष्ठियाँ और जयंतियाँ निरंतर मनायी जाती

हैं ; वि०— सदन, ना० प्र० स० काशी और हिं० सा० सम्मे० प्रयाग से सम्बद्ध है ; सरकार से रजिस्टर्ड भी है।

साकेत-साहित्य-समिति, फैजाबाद—हिंदी-साहित्य की वृद्धि के उद्देश्य से १९४० में स्थापित ; समय-समय पर साहित्यगोष्ठी और गंभीर विषयों पर विचार करना, साहित्य की नवीन खोज की रिपोर्ट जनता को सुनाना कार्य है; साहित्य-प्रदर्शिनी का आयोजन समिति करती है।

सार्वजनिक पुस्तकालय (कालिका नंदन), शिवहर—१९४६ में स्थापित हुआ ; उद्दे०—सत्साहित्य-प्रचार और संकलन द्वारा जनता के मानसिक स्तर को उठाना ; **कार्य**—हिंदी, संस्कृत और अँग्रेजी की पुस्तकें हैं, वाचनालय में लगभग २५ पत्र आते हैं ; एक वयस्क शिक्षण - विद्यालय चलता है, १९४६ में पं० छविनाथ पांडेय की अध्यक्षता में विराट वार्षिक समारोह मनाया गया।

सार्वजनिक पुस्तकालय, बलहापारा, कानपुर—**स्था०**—१९४१, पं० शंभूरत्न त्रिपाठी वियोगी ; **सद०**—१०० से ऊपर ; **कार्य**—हिंदी परीक्षोपयोगी अनेक पुस्तकें हैं ; विद्यापीठ की परीक्षाओं का प्रबंध रहा है, लगभग २० पत्र पत्रिकाएँ आती हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालय, मँझियावाँ ; टाँगी, जिला गया—**स्था०**—१९४४, श्री त्रिवेणी शर्मा 'सुधाकर' ; संस्था के पास ६५५ पुस्तकें हैं और ७ पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालय, सीवान जि० सारन—**स्था०**—१९२६ ; **सद०**—८०।

साहित्य-परिषद्, सीवान, सारन—**स्था०** — १९४१ ; **सद०**—१४० साधारण और ५० विशेष; जयंतियों, गोष्ठियों, व्याख्यान-प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है।

साहित्य-परिषद् (**महाराजा नवलकिशोर**), विक्टोरिया मेमोरियल लाइब्रेरी, पो० बेतिया, चम्पारन—**स्था०**—२८ नवम्बर १९४८, श्री विपिनविहारी वर्मा, श्री भगवती प्रसाद वर्मा आदि; **सद०**—३०१;

उद्दे०—सत्कृतियों का प्रकाशन; जयंतियाँ और कवि - गोष्ठियाँ आदि मनायी जाती हैं।

साहित्यमंडल, नाथद्वारा—मंडल द्वारा सम्मेलन-परीक्षाओं के लिए परीक्षार्थी तैयार किये जाते हैं; निजी भवन का निर्माण हो रहा है।

साहित्य-मंडल (श्रीश), सकरार, झाँसी — जनवरी १९३५ में स्थापित; नवीन लेखकों और कवियों को प्रोत्साहन देना, संशोधन करना आदि उद्देश्य; सदस्य-२५ हैं।

साहित्यमंदिर, सदर बाजार, हिंगोली, हैदराबाद राज्य—**सद०**–७५, मंदिर के पुस्तकालय में १००० पुस्तकें हैं; हिन्दी की परीक्षाओं का केंद्र है, लगभग १३० विद्यार्थी वर्धा की परीक्षाओं में बैठ चुके हैं।

साहित्यकार-संसद (राजस्थान), अजमेर—**स्था०**—१९४७, सरस वियोगी; **सद०**—१८ वर्ष से अधिक आयु का कोई भी सदस्य हो सकता है जो राजस्थान का जन्म से या स्थायी निवासी हो, सदस्यों की चार श्रेणियाँ हैं–साधारण, मान्य, स्थायी और संरक्षक (जो १००१ या सम्पत्ति दान दे); उद्दे०–राजस्थानी साहित्यकारों का संगठन और राजस्थानी साहित्य की खोज-शोध और प्रकाशन करना ; वार्षिक अधिवेशन प्रति वसंतपंचमी को होता है; अनेक संस्थाएँ इससे सम्बन्धित हैं, रंग-मंच की भी नीव डाली गयी है।

साहित्य-संघ, उरई—**स्था०**–१९३९; संस्था ने अल्पकाल में ही नगर तथा जिले में साहित्यिक जागृति कर ली है; साहित्यिक व्याख्यान-माला का आयोजन होता है; वाचनालय में कई पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं; अदालतों में हिंदी-प्रचार का कार्य-क्रम अपनाया गया है।

साहित्य-सदन, अबोहर, पंजाब—१९२५ में एक पुस्तकालय के रूप में स्थापित हुआ था, अब इसके केंद्रीय पुस्तकालय में लगभग १५ हजार पुस्तकें हैं जो हिंदी, संस्कृत, अँगरेजी, गुरुमुखी, मराठी आदि भाषाओं में हैं, चलते पुस्तकालय का आयोजन है ; वाचना-

लय में भारत की प्रमुख भाषाओं के पत्र आते हैं ; एक संग्रहालय भी है जिसमें हस्तलिखित ग्रंथ, भिन्न भिन्न काल के सिक्के, शिल्पकला की उत्तमोत्तम वस्तुएँ, आदि संगृहीत हैं; १६४० से बा० पुरुषोत्तमदास टंडन के उद्योग से एक निःशुल्क पाठशाला संचालित ; सदन से 'दीपक' मासिक पत्र प्रकाशित होता है ; साक्षरता-प्रचार के लिए यह गाँवों में निःशुल्क बाँटा जाता है ; यह पत्र सभी प्रांतों में शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत है, प्रकाशन और मुद्रण का प्रबंध है ; परीक्षोपयोगी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं ; प्रचार-कार्य के लिए अलग विभाग है ; देवनागरीलिपि के सर्वप्रिय बनाने में लगभग १५ हजार वर्णमाला चार्ट तथा गुरुमुखी और उर्दू-भाषी जनता में हिंदी प्रचार के लिए 'हिंदी-गुरुमुखी-शिक्षक' और उर्दू-हिंदी - शिक्षक जैसी पुस्तकें मुफ्त बाँटी जाती हैं ; सदन की ओर से पंजाब की रत्न, भूषण, प्रभाकर; हिं० सा०, सम्मे० की प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा; पंजाब-काश्मीर के लिए परिचय तथा कोविद - परीक्षाओं के केंद्रों की व्यवस्था, पढ़ाई का प्रबंध और वर्गों के चलाने का आयोजन होता है ; यह हि० सा० सम्मे० से सम्बद्ध है ; हि० सा० सम्मे० का ३०वाँ अधिधवेशन सदन में ही हुआ ; सदन के पास भव्य भवन है ; इसका वार्षिक व्यय लगभग ४ हजार है ।

साहित्य - सदन, सरदारपुरा, जोधपुर — **स्था०** — ६ अगस्त १६४२ ; उद्दे०—हिंदी साहित्य के लिए ठोस सामग्री प्रकाशित करना है; कार्य०—सदन के तत्वावधान में अ० भा० और राजस्थान प्रांतीय कुमार - सम्मेलन हुआ जिसका उद्घाटन बा० पुरुषोत्तमदास टंडन ने किया ; साप्ताहिक गोष्ठियाँ, सांस्कृतिक सम्मेलन, भाषण और विचार-विमर्श होते हैं, जन-आन्दोलन को लेकर नाटक खेले जाते हैं; सदन के कई विभाग हैं—**प्रकाशन-विभाग** की ओर से पुस्तकें प्रकाशित होती हैं ; **वाचनालय - विभाग** के अन्तर्गत वाचनालय स्थापित किये जा रहे हैं ; और सांस्कृतिक विभाग

की ओर से प्रौढ़ शिक्षालयों का प्रबंध है; 'प्रौढ़-शिक्षक-हस्तामलक' नामक पुस्तक के संपादन का आयोजन हो रहा है।

साहित्य-सदन सार्वजनिक पुस्तकालय, गूढ़, बछरावाँ, रायबरेली—**संस्था०**—चौधरी रामेश्वरप्रसाद ; **कार्य०** — कई पत्र आते हैं, पुस्तकों की संख्या १८०० है; संस्कृत के बहुत से हस्तलिखित ग्रंथ हैं।

साहित्य-समिति, रतनगढ़, बीकानेर—**स्था०**—१६४० वसंत-पंचमी ; **सद०**—२५० ; **शु०**—१) वार्षिक ; **उद्दे०**—साक्षरता और प्रौढ़शिक्षा-प्रसार ; **कार्य०**—(क) समय समय पर अधिवेशन होते हैं ; जयंतियों और कविसम्मेलनों का आयोजन होता है ; (ख) बीकानेर राज्य के सा० सम्मे० का अधिवेशन हुआ ; सम्मेलन परीक्षाओं का केन्द्र है।

साहित्य-सम्मेलन, सरदार शहर, बीकानेर ; **स्था०**—दिसम्बर १६४० ; **सदस्य**—७०० ; **कार्य०**—प्रथम अधिवेशन सरदार शहर और दूसरा रतनगढ़ में मनाया गया ; इसकी ओर सम्मेलन की पढ़ाई का प्रबंध होता है ; तीन पारितोषिक दिये जाते हैं ; उनमें 'श्री गिरधारीलाल टाँटिया' पुरस्कार प्रसिद्ध है ; बीकानेर के साहित्यकारों की कृतियों के प्रकाशन का प्रबंध हो रहा है ; एक 'कानूनी कोश' तैयार करने की योजना है।

सुभाष-पुस्तकालय, शाहाबाद, हरदोई — **स्था०** — १६४६, श्री रामस्वरूप पाठक; **सद०**—३१ ; वाचनालय-विभाग में कई पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं।

सुहृद् संघ, मुज्फ्फरपुर—**स्था०**—१५३५, श्री नीतीश्वरप्रसाद सिंह; **उद्दे**—हिंदी और नागरी लिपि का प्रचार; साहित्य के अंगों की पुष्टि, हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाना और भारतीय संस्कृति सम्बंधी एक संग्रहालय खोलना; **कार्य**—१४ जून १६३६ को प्रथम वार्षिकोत्सव; नवम्बर १६३६ में पुस्तकालय और वाचनालय की स्थापना; रेडियो की हिंदी-विरोधी नीति का घोर विरोध किया; ग्राम गीत, कहानियों, कहावतें आदि

के संकलन के लिए एक समिति नियुक्त हुई; बिहार प्रांत में निरक्षरता-निवारण-समिति के रोमन-लिपि-सम्बंधी प्रस्ताव के विरुद्ध प्रांतव्यापी आंदोलन किया; देहातों में हिंदी-प्रचार और निरक्षरता-निवारण का कार्य-क्रम अब भी चल रहा है; रात्रि-पाठशालाएँ हो रही हैं; न्यायालयों में हिंदी-प्रवेश के लिए वकीलों और मुख्तारों में प्रचार तथा उनको सदस्य बनाया; पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के लिए समिति बनी; संघ काशी ना० प्र० स० और हि० सा० सम्मे० से सम्बद्ध है; इसे जिला बोर्ड से सहायता प्राप्त है।

सुहृद-साहित्य-गोष्ठी, नीलकंठ, काशी— स्था०—१६४१, श्री रामस्वरूप पाठक; उद्दे०—हिंदी साहित्य का सुगठित प्रचार, भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं गौरव की रक्षा; कार्य–एक पुस्तकालय का संचालन होता है, स्थायी रूप से एक विद्यालय चलाया जाता है; सम्मेलन परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को तैयार किया जाता है; 'सरिता' नामक मासिक प्रकाशित करने की व्यवस्था की जा रही है, कवि-सम्मेलनों, जयंतियों का आयोजन होता है; शाहाबाद, हरदोई में सुभाष पुस्तकालय की स्थापना की।

सेवासमिति, जैतो, पटियाला संघ—स्था० — १६१६, सर्वश्री शिवलाल, प्यारेलाल, दौलतसिंह आदि; सद०—७०; शु०—३) वार्षिक; उद्दे०—हिंदी-प्रचार तथा जन-सेवा; कार्य—'तिलक कन्या पाठशाला' नाम से एक विद्यालय का संचालन होता है, सफलतापूर्वक २२ वर्ष तक समिति ने एक हाई स्कूल चलाया जो अब बंद होगया है, एक वाचनालय 'प्रताप-वाचनालय' के नाम से चल रहा है, समिति हिंदी-साहित्य-सम्मेलन से सम्बद्ध है, वार्षिक व्यय ४०००) है, आय अधिकतर स्थानीय जनों के चंदे से होती है।

सोम-सदन, सीतापुर—स्था०—१६३५; संस्थापक श्री दुखभंजन 'सोम'; १६४० के सत्याग्रह में राष्ट्रीय होने के कारण संस्था नष्ट कर दी गयी, १६४५ में पुनःस्थापना हुई; उद्दे०—साहित्य-संग्रह और

लेखकों को पारिश्रमिक देकर प्रकाशित करना; संस्था के सदस्य तीन श्रेणियों में विभक्त हैं—श्रीमान, शिरोमणि और सज्जन; २०१) तक देने वाले प्रथम, ५१) देनेवाले द्वितीय श्रेणी में और शेष तृतीय श्रेणी में समझे जाते हैं।

स्मारक पुस्तकालय (राजनारायण मिश्र), लखीमपुर—१९४२ की क्रांति के संबंध में फाँसी पानेवाले श्री राजनारायण मिश्र की स्मृति में १९४९ में श्री वंशीधर मिश्र ऐडवोकेट द्वारा सथापित; ६०० पुस्तकें; निजी भवन बन रहा है।

हंसराज कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय—बी० ए० (आनर्स) तथा एम० ए० तक हिंदी-कक्षाएँ, कला तथा विज्ञान के छात्रों के लिए भी हिंदी का अनिवार्य अध्यापन; विद्यालय-संसद, कार्यालय, पुस्तकालय आदि की सभी कार्यवाही हिंदी में; हिंदी सिखाने की नियमानुकूल रात्रि-कक्षाएँ; दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी माध्यम के लिए प्रयत्नशील; अविभक्त भारत में डी० ए० वी० कालेज लाहौर के नाम से पंजाब प्रांत में हिंदी का प्रचारक तथा समर्थक; विभागाध्यक्ष डा० ओ३म् प्रकाश एम० ए०, एल-एल० बी०, पी-एच० डी०।

हनुमान पुस्तकालय, रतनगढ़—स्था०—सेठ सूरजनागरमल कलकत्ता द्वारा १९१९ में; **सद०**—३२७, निःशुल्क; उद्दे०—सत्साहित्य द्वारा जनसमाज का बौद्धिक विकास; १६००० पुस्तकें हैं; लगभग ७५ पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं; निजी विशाल भवन है; कई रात्रि पाठशालाएँ, बालिका विद्यालय, शिल्प एवं व्यायामशालाएँ खोली गयीं; २७ ग्राम-पाठशालाएँ संचालित हैं।

हिंदी-अध्यापक-संघ, इरणाकुलम्—स्थानीय हिंदी प्रचारकों की संगठित संस्था है; पाक्षिक बैठकें होती हैं; इनमें सब प्रचारक सम्मिलित परामर्श द्वारा कार्यक्रम और संगठित रूप से काम करने की व्यवस्था बनाते हैं।

हिंदी-अध्यापक-संघ, पालघाट, मलबार (दक्षिण)— स्थानीय

हिंदी-अध्यापकों की संगठित संस्था है ; साहित्यिक परामर्श और हस्त-लिखित मासिक का संचालन मुख्य कार्य है ; लगभग २० सदस्य हैं।

हिंदी - काव्य-कक्षा - परिषद्, आगरा—श्री राजेश दीक्षित और श्री कुलदीप एम. ए. द्वारा १६४४ में स्थापित ; स्थानीय साहित्यिकों का सहयोग प्राप्त है ; सम्मेलन-परीक्षाओं के लिए श्री सत्यनारायण विद्यापीठ स्थापित किया है जिसमें निःशुल्क शिक्षा दी जाती है ; इसके 'विजय - पुस्तकालय' में १०००० से अधिक पुस्तकें हैं और वाचनालय में २०० पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं, निजी भवन-निर्माण की योजना चल रही है।

हिंदी-छात्र-संघ, अलवर—**स्था०**—१६ जनवरी १६४६ ; **सद०**—२००; साहित्यिक गोष्ठियाँ, जयंतियाँ और समारोह मनाये जाते हैं ; संघ के अंतर्गत (क) हिंदी विद्यालय की स्थापना हुई जिसमें हिं० सा० स० प्रयाग और राज्य सा० स० की परीक्षाओं के लिए अध्यापन कार्य होता है; (ख) प्रौढ़-शिक्षणालय में ग्रामीण प्रौढ़ व्यक्तियों को साक्षर बनाया जाता है ; (ग) 'भारती' नामक हस्त-लिखित मासिक का प्रकाशन होता है।

हिंदी-परिषद् (बंगीय), १५ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता १२—हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार प्रसार, निर्माण और शोधकार्य को प्रोत्साहित करने तथा प्राचीन हिंदी ग्रंथों के उद्धार एवं प्रकाशन की व्यवस्था करने के उद्देश्य से सितंबर १६४५ में स्थापित, हिंदी तथा अन्यान्य भारतीय भाषाओं के साहित्य तथा साहित्यिकों को पर-स्पर एक दूसरे के निकट लाना एवं उनमें परस्परिक समन्वय स्थापित करना भी इसका प्रमुख ध्येय है ; स्थायी, सहायक और साधारण—तीन प्रकार के सदस्य हैं ; परिषद ने थोड़े समय में ही कई महत्वपूर्ण कार्य किये हैं ; मीरा स्मृति-ग्रंथ जैसी सुंदर कृति के प्रकाशन का श्रेय इसी संस्था को प्राप्त है।

हिंदी-पंडित-संघ, (दक्षिण विशाख जिला), अनकापल्लि (दक्षिण)—स्थानीय हिंदी अध्या-

पकों को संगठित करने के उद्देश्य से श्री डी० वी० रामास्वामी, श्री वी० अच्युतराव आदि द्वारा स्थापित; अध्यापकों के अधिकार सुरक्षित रखने का भी उद्योग संघ करता है।

हिंदी-पत्रकार सम्मेलन (युक्त-प्रांतीय), पोस्टबाक्स ५१, कानपुर—पत्रकार-कलाकी उन्नति करकेस्थानीय पत्रकारोंके हितों की रक्षाके उद्देश्यसे स्थापित; हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के संपादकीय विभागों में काम करने-वाले सज्जन, पत्रों के संवाददाता और लेखक १) वार्षिक देकर इसके सदस्य हो सकते हैं; अ० भा० पत्रकार-संघ से संबद्ध है; कार्य-संचालन के लिए १५ सदस्यों की समिति है।

हिन्दी-प्रचार-परिषद (मैसूर), १० शंकरमठ मार्ग, बँगलोर ४—१९४४ में हिन्दी भाषा और साहित्य-प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित; स्थानीय नगरपालिका से सहायता पाती है; इसका पुस्त-कालय और वाचनालय भी है; परिषद को आरम्भ से ही राज्य का संरक्षण प्राप्त है; पहले ५००) की और अब १०००) प्रतिवर्ष की सहायता मिलती है, कई परीक्षाओं का संचालन होता है; इनके परीक्षक प्रायः विभिन्न विश्वविद्यालयों के अधिकांश अध्यापक होते हैं जिससे इनका स्तर ऊँचा है; नागरी-प्रचारिणी-सभा काशी और हिंदी-साहित्य-सम्मेलन से संबद्ध है; कुछ पुस्तकों का प्रकाशन भी किया है।

हिंदी-प्रचार-मंडल, बदायूँ—१९३७ में स्थापित; १९४१ से इसके अंतर्गत एक विद्यालय चल रहा है जिसमें स्थानीय विद्वान अवैतनिक शिक्षा देते हैं; सम्मेलन, हिंदी-विद्यापीठ बिहार और अ० भा० आर्यकुमार सभा की परीक्षाओं का केंद्र है; कचहरी का काम हिंदी में कराने के लिए प्रयत्नशील है; प्रचार-कार्य में लगभग ६००) प्रति वर्ष व्यय होता है; हिं० सा० सम्मेलन और ना० प्र० सभा काशी से संबंधित भी है।

हिंदी-प्रचार-संघ, पूना—**स्था०**—२१ जून १९३४; श्री ग० र० वैशंपायन; **उद्दे०**—हिंदी का देवनागरी लिपि द्वारा महाराष्ट्र भर में प्रचार; **सद०**—४१६;

दो प्रकार के सदस्य—एक आजीवन और दूसरे साधारण; कार्य०—संघ सम्मेलन के आदेशानुसार कार्य करता है; अबोहर के अधिवेशन में संघ की ओर से भिन्न-भिन्न स्थानों से १६ कार्यकर्ता उपस्थित थे; पूना-वंसत-व्याख्यान-माला के अन्तर्गत व्याख्यानों का आयोजन-किया गया; लगभग ८५० विद्यार्थियों ने संघ द्वारा शिक्षा प्राप्त की; संघ का कार्य कई विभागों में बँटा है; (क) शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत अवैतनिक शिक्षक काम करते हैं; (ख) वाचनालय-विभाग में २३६५ पुस्तकें हैं, सदस्यों की संख्या १५८ है; (ग) प्रचार-विभाग के अन्तर्गत विद्वानों को आमंत्रित कर भाषण कराये जाते हैं; (घ) प्रकाशन और पुस्तक बिक्री-विभागों के अन्तर्गत परीक्षोपयोगी पुस्तकों की छपाई और बिक्री का प्रबंध होता है।

हिंदी-प्रचार-सभा, तामिल-नाड—स्था०—१६३७; सद०—४००; उद्दे०—हिंदी-प्रचार का संचालन और नियंत्रण; कार्य०—सभा की देख-रेख में प्रांत के ११ जिलों में २०० केंद्र हिंदी-प्रचार में संलग्न हैं; ५०० से अधिक प्रचारकों की संख्या है; प्रतिवर्ष १०,००० विद्यार्थी परीक्षा में बैठते हैं; सभा के प्रयत्नों से अनेक स्कूलों में हिंदी अनिवार्य विषय बन गया है; सभा की ओर से राष्ट्र-भाषा विशारद विद्यालय और एक प्रचारक शिक्षण-विद्यालय का संचालन होता है; एक मासिक पत्रिका 'हिन्दुस्तानी पत्रिका' के नाम से प्रकाशित होती है; सभा प्रचार-कार्य पर २५,०००) प्रतिवर्ष व्यय करती है; सभा का प्रधान कार्यालय तिरुचिरापल्ली में है और यहीं उसका एक भवन है जिसमें विद्यालय चलता है।

हिन्दी-प्रचार-सभा (दक्षिण भारत), मद्रास—सभा के जन्मदाता महात्मा गांधी थे, इसके सभी कार्यालय मद्रास के त्यागराय-नगर में अपने ही एक विस्तृत अहाते में हैं; करीब सवा सौ से अधिक कार्यकर्ता भिन्न-भिन्न विभागों में कार्य करते हैं; सभा का कार्य इस समय लगभग ८०० केंद्रों में है जिनको प्रांतीय सरकार, मैसूर,

तिरुवांकूर और कोचीन देशी राज्यों का सहयोग प्राप्त है; हिंदी परीक्षाओं में स्कूलों, कालेजों के छात्रों के अतिरिक्त लगभग ६००० महिलाएँ भी प्रतिवर्ष सम्मिलित होती हैं; सभा का सारा कार्य व्यवस्थापिका समिति के अधीन है; इस समिति के अंतर्गत कार्य-कारिणी समिति सभा की योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए, निधिपालक - मंडल संपत्ति का प्रबंध करने के लिए, शिक्षा-परिषद् हिंदी-प्रचार-शिक्षण-परीक्षा साहित्य निर्माण का कार्य करने के लिए है; सारे प्रान्तों का प्रचार कार्य प्रांतीय सभाएँ करती हैं; प्रचार - प्रणाली में प्रचारक सम्मेलन, प्रमाण - पत्र - वितरणोत्सव, यात्री-दलों का भ्रमण, शिविर संचालन, वादविवाद सभाएँ, नाटक-प्रदर्शन, वाचनालयों और पुस्तकालयों की स्थापना एवं संचालन, हिंदी-विद्यालय-प्रेमी - मंडल-प्रचार संघ, प्रचार-सप्ताह आदि साधन काम में लाये जाते हैं; योग्य प्रचारकों का संगठन करने के लिए सभा ने प्रामाणिक प्रचारक-योजना बनायी है जिसमें लगभग ८०० प्रचारक अपनी योग्यता, चरित्र-बल, लगन और राष्ट्रीय भावनाओं के कारण जनता में विशिष्ट स्थान प्राप्त किये हुए हैं; परीक्षा-विभाग में लगभग ३०० परीक्षक काम करते हैं; प्रकाशन-विभाग से १२५ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें अक्षर-बोध से लेकर कोश तक शामिल हैं; सभा का पुस्तकालय और वाचनालय भी अति लोकप्रिय है; सभा की एक अत्यन्त उपयोगी तथा परिणामकारक-प्रवृत्ति उसका विद्यालय-विभाग है; मद्रास, कोयंबटूर, धारवाड़ आदि में विद्यालय हैं; इन विद्यालयों के उपाधिधारियों को सरकार और राज्यों ने मान्यता दी है; दक्षिण के विश्वविद्यालयों में हिंदी को इसी सभा के यत्न से स्थान मिला है; सभा दक्षिण भारत की सर्वप्रिय संस्था है और अब इस बात की योजना कर रही है कि कुछ ऐसी योजनाएँ आरम्भ की जायँ जिनके द्वारा अन्य प्रांतीय संस्कृति तथा साहित्य की चर्चा भी हो और राष्ट्रीय साहित्य के

संवर्द्धन में वह सहायक हो सके।

हिन्दी-प्रचार-सभा, मदुरा — सभा की ओर से ५० प्रचारक नगर में काम करते हैं, उनमें कई स्त्रियाँ हैं; सभा हिंदी की प्रारंभिक और उच्च शिक्षा के लिए कई वर्ग चलाती है; सारे दक्षिण भारत में यह सबसे बड़ा प्रचार-केन्द्र है।

हिंदी-प्रचार-सभा, हैदराबाद—स्था०—१६३५; कार्य०—पहले सभा दक्षिणभारत हिं० प्र० सभा मद्रास की परीक्षाओं की व्यवस्था करती थी, फिर उक्त सभाओं की 'हिन्दुस्तानी'-समर्थन नीति के कारण यह स्वयं अपनी परीक्षाएँ १६४१ से चलाने लगी—प्रारंभिक परीक्षाएँ प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा; उच्च परीक्षाएँ-विशारद और भूषण हैं; हि० सा० सम्मे० की परीक्षाओं का भी प्रबन्ध है; १६४८ से वर्धा प्र० सभा की 'परिचय' और 'कोविद' परीक्षाओं को भी सम्मिलित कर लिया है, परीक्षार्थियों की संख्या २००० से ऊपर होती है और राज्य भर में ४० केंद्र हैं, सभा ने हिंदी की पढ़ाई के लिए १७६ शिक्षण-केंद्र खोले हैं और हिंदी भाषा-भाषियों की सुविधा के लिए मिडिल स्कूल हैं जहाँ संपूर्ण शिक्षा हिंदी माध्यम द्वारा दी जाती है, इन सबसे ३०००० विद्यार्थी लाभ उठाते हैं; हिंदी-प्रचार को बल पहुँचाने के लिए प्रति पूर्णिमा को गोष्ठी होती है, उदीयमान साहित्यिकों को प्रोत्साहन देने के लिए 'प्रेमचन्द - पुरस्कार' की व्यवस्था की गयी है जिसका धन १००) है, सभा का प्रकाशन-विभाग अलग है; अनेक बालोपयोगी और पाठ्यक्रम की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; 'अजंता' नाम का उच्चकोटि का मासिक भी निकलता है; सभा ने अपना पंद्रह-वर्षीय कार्य-विवरण अभी प्रकाशित किया है जिससे उसकी हिन्दी-सेवा-पूर्ण विवरण ज्ञात होता है।

हिन्दी-प्रचार-समिति, इरणाकुलम्—कोचिन स्टेट में राष्ट्रभाषा प्रचारार्थ स्थापित; दक्षिण भारत-हिन्दी-प्रचार-सभा मद्रास की प्रमुख शाखा; कार्यकारिणी समिति में स्त्रियाँ भी हैं।

हिन्दी-प्रचार-समिति, छावनी, बँगलोर—राष्ट्रभाषाके प्रचार-प्रसार के उद्देश्य को लेकर १९३४ में स्थापित; स्थानीय विद्यालयों में हिंदी के अधिकार दिलाने का प्रयत्न; दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार समिति, राष्ट्रभाषा - प्रचार समिति, वर्धा और हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं का प्रबन्ध; अनेक राष्ट्रभाषा-प्रेमियों का सहयोग प्राप्त; हिंदी-प्रेमियों की सुविधा के लिए पुस्तकालय और वाचनालय का प्रबंध है; विद्यार्थियों को छात्र-वृत्तियाँ और पुरस्कार भी दिये जाते हैं।

हिन्दी-प्रचार-समिति, तिरुवन्तपुर—१९३० में श्री के० वासुदेवन पिल्ले द्वारा त्रिविंड्रम में स्थापित; ट्रावनकोर की धारा-सभा में हिंदी-पाठन का प्रस्ताव पास कराया, पीछे यह संस्था दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-समितिके अधीन हुई ; अब यह ट्रावनकोर राज्य के ४० केंद्रों में प्रचार-कार्य करती है, दक्षिण भारत में हिंदी-परीक्षाओं में बैठनेवाले परीक्षार्थियों में सबसे अधिक संख्या इसी क्षेत्र से होती है; ट्रावनकोर की सरकार इस संस्था को प्रति मास सहायता देती है।

हिंदी-प्रचार - समिति, भूपाल—संस्था० — कृष्णगोपाल श्रीवास्तव द्वारा हिंदी साहित्य-सेवियों और हितैषियों से सहयोग प्राप्त करके साहित्य-निर्माण के उद्देश्य से स्थापित ; कार्य०—हिं० सा० सम्मे० प्रयाग, रा० भा० प्र० सभा, वर्धा और प्रयाग म० विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिए केंद्र खोले ; कविसम्मेलनों और जयंतियों का आयोजन होता है ; समस्त भूपाल और आस-पास के राज्यों में कार्य होता है ; राष्ट्रभाषा विद्यालय संचालित है ; उर्दू - प्रदेश में इस संस्था ने अच्छा काम किया है ; मध्यमालव हिंदी - विद्यापीठ तथा एक विशाल भवन बनाने की योजना चल रही है।

हिंदी-प्रचारिणी-सभा, खुर्जा—राष्ट्रभाषा और साहित्य की उन्नति के लिए १९३९ में स्थापित; १५५ सदस्य हैं, रेडियो-नीति-विरोधी आंदोलन किया; डाकघर, मुंसिफी, तहसील आदि में हिंदी-प्रचार का

सतत प्रयत्न : डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बुलन्दशहर की पाठशालाओं में हिंदी-प्रचार।

हिंदी-प्रचारिणी-सभा, त्रिचनापल्ली—सुदूर दक्षिण प्रांत में हिंदी-प्रचारक संस्था, हिंदी-प्रचार सभा मद्रास के अन्तर्गत; यहाँ से हिंदी की 'हिंदी-पत्रिका' भी १९३८ से निकल रही है जिसके द्वारा हिंदी का विशेष प्रचार किया जाता है।

हिन्दी - प्रचारिणी - सभा, पो० बा० १३१, मोम्बासा, कीनिया (ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका)–विदेश में स्थापित इस हिंदी-प्रचारिणी-संस्था की लगभग २५ शाखाएँ पूर्वी अफ्रीका में चल रही हैं; इन शाखाओं के कार्यकर्ता नगरों और गाँवों में बसे हुए भारतीयों में हिंदी-प्रचार करते हैं और तीन महीनों में एक बार एकत्र होकर नयी योजनाएँ बनाते हैं; सभा का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है अन्य देशों में प्रतिनिधि और प्रचारक भेजकर हिंदीके कार्य-क्षेत्र को आगे बढ़ाना, सभाके संस्थापकों और संचालकों में श्री अनंत शास्त्री का नाम विशेष उल्लेखनीय है; इनके सहयोगी श्री राधाकृष्ण शास्त्री मार्च १९५१ में लंदन जाकर और हिंदी-प्रचार-केंद्र खोलकर भारतीय राष्ट्र-भाषा प्रचार करेंगे; अन्य समीपवर्ती द्वीपों और देशों में भी प्रचारक भेजने की योजना है।

हिंदी-प्रचारिणी-सभा, बलिया—१९२३ में स्थापित; 'बलिया के कवि और लेखक', 'रसिक गोविंद और उनकी कविता' तथा 'सरस सुमन' आदि का प्रकाशन हुआ है; सदस्य ५०; सभा के अन्तर्गत एक चलता पुस्तकालय है।

हिंदी-प्रचारिणी-सभा, (बिहार प्रांतीय), पटना–१९४१में स्थापित; हिंदी - साहित्य की उन्नति करना, आवश्यक विषयों के ग्रंथों से उसे सुसज्जित करना आदि इसके उद्देश्य हैं; सदस्य १७१ हैं; सोलह जिले में अनेक शिक्षा - शाखाएँ स्थापित हैं।

हिन्दी-प्रचारिणी-सभा, लायलपुर — हिंदी साहित्य-निर्माण के उद्देश्य से स्थापित; समय-समय पर अनेक साहित्यिक योजनाएँ बनाती है।

हिन्दी-प्रचारिणी-सभा, (हरियाणा) भिवानी, हिसार, पंजाब—१९४१ में स्थापित ; सदस्य ५० ; हरियाणा - हिंदी-साहित्य-मंडल की स्थापना करके प्रांतीय सम्मेलन किया ; 'एकता' साप्ताहिक निकाला ; सम्मेलन के अबोहर-अधिवेशन में आर्थिक सहायता दी; हस्तलिखित मासिक 'हिंदी-हितैषी' निकाला।

हिंदी-प्रेमी-मंडल, कुम्बकोणम्—मंडल की ओर से हिंदी की उच्च शिक्षा देने के लिए एक विद्यालय का संचालन होता है।

हिन्दी-प्रेमी - मंडल (जिला), बल्लारी,मद्रास—२ अक्टूबर १९३१ को श्री टी० बी० केशवराव जी के प्रयत्न से स्थापित; प्रांत के विभिन्न भागों में मंडल के प्रचारक काम करते हैं ; १९४७ से एक हिन्दी महाविद्यालय का संचालन होता है जिसे दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा और मद्रास सरकार ने मान्यता दी है, आरम्भ से अबतक मंडल ने लगभग १०००० परीक्षार्थी तैयार किये हैं।

हिंदी - भवन, शांतिनिकेतन, बंगाल — **संस्था०**—विश्वभारती, १९३७, शिलान्यास दीनबंधु ऐण्ड्रूज,पौराहित्य रवींद्रनाथ ठाकुर, द्वारोद्‌घाटन पं० जवाहरलाल नेहरू; **उद्दे०**—मध्ययुग में प्रयुक्त साम्प्रदायिक और शास्त्रीय शब्दों के कोश का निर्माण, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान पर छोटी सरल पुस्तकें निकालना, हिंदी-भाषा और साहित्य पर अन्य भाषाओं में परिचयात्मक पुस्तकें निकालना ; **कार्य०**—(क) अहिंदी - भाषी-जनता में हिंदी-प्रचार, (ख) 'विश्वभारती' त्रैमासिक का प्रकाशन; (ग) कबीर-पंथी साहित्य, रवींद्र - साहित्य का अनुवाद ; (घ) एक पुस्तकालय भी चल रहा है।

हिंदी-भवन (हिमाचल), दार्जिलिंग—**स्था०**—११ जून १९४१ ; सम्मेलन के भूत० मंत्री श्रीव्रजराज की प्रेरणा से; **उद्दे०**—पर्वतीय प्रांत में राष्ट्रभाषा और साहित्य का प्रचार ; **कार्य०**—हिंदी पुस्तकालय तथा निःशुल्क वाचनालय की स्थापना ; हिंदी वि० वि० प्रयाग, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति की परीक्षाओं का आयोजन है ; १९३४

में शिशु-हिंदी-पाठशाला स्थापित जो आज हिंदी-मिडिल-इँगलिश स्कूल के रूप में वर्तमान है, एक संस्कृत ट.ल की स्थापना; साहित्यिक गोष्ठियाँ और व्याख्यान; १९३६ में निरक्षरता-निवारणार्थ एक रात्रि-पाठशाला खुली जो १९४३ में बंद हो गयी; एक हरिजन-पाठशाला खोली गयी, जहाँ निःशुल्क शिक्षा दी जाती है; १९४५ से थियोसाफिकल सोसाइटी पुस्तकालय भवन में ही स्थित है; १९४४ से विवेकानंद स्टडी सर्किल की साप्ताहिक बैठक यहीं होती है; भवन का कार्य निम्नलिखित विभागों में बँटा है—१. सार्वजनिक पुस्तकालय; २. निःशुल्क वाचनालय; ३. निःशुल्क हिंदी-प्रचार-विभाग; ४. हिंदी-साहित्य-परिषद; ५. हिंदी-मिडिल इँगलिश स्कूल; ६. संस्कृत पाठशाला; वि०—भवन को कई हजार रुपए की सहायता मिलती है; २७ आजीवन सदस्य और लगभग २०० साधारण सदस्य हैं।

हिंदी-भाषा-आश्रम, मंधना, कानपुर—इसके पुस्तकालय में कई पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं, निज की भूमि है जिसमें 'हिंदी-भवन' बनाने का प्रबंध हो रहा है।

हिंदी-भाषा-प्रचारिणी समिति, केवलारी, पथरिया, सागर—**स्था०**—१९२०; **सद०**—५००; **कार्य०**—समिति का संचालन श्री शारदा-साहित्य-सदन केवलारी के अन्तर्गत होता है; १९२० में एक गोष्ठी और १९२५ में चलता-फिरता पुस्तकालय और वाचनालय; गाँवों में हिंदी-प्रचार, दैनिक 'प्रभात' और मासिक 'प्रभात-संदेश' दो हस्तलिखित पत्रों का प्रकाशन; १९२६ में शरद-व्याख्यानमाला, व्याख्यान-विनोदिनी-सभा चलायी; १९२७ में 'शिक्षा-सुधा' हस्तलिखित प्रकाशित की; १९२८ में 'शिक्षक' का प्रकाशन; १९३१ में ५०० व्यक्तियों को साक्षर बनाया; १९४२ में १४ हिंदी की प्राथमिक-शालाएँ स्थापित कीं; १९३३ में कुछ गाँवों में पुस्तकालय और वाचनालय खोले; १९३४-३५ में ६ सदाचार-प्रचारिणी शाखाएँ खोलीं; रामगढ़ में नागरिक मंडल खोला, ३ वर्ष में ४१ नाटक खेले

गये ; १९३६ से मुंशी काशीप्रसाद 'स्मृतिपदक' की घोषणा की; १९३७ में प्रांतीय साक्षरता-प्रचार-सम्मेलन किया गया ; १९३८ में साक्षरता-प्रसार का विशेष कार्यक्रम रहा ; १९३९ में २१ सभाएँ हुईं और हस्तलिखित ग्रंथों की खोज हुई ; १९४० में साक्षरता-प्रसारशालाओं की संख्या ९० तक हो गयी; १९४३ में समाचार-पत्र-प्रदर्शिनी की ; १९४४ में रेडियो की हिंदी-विरोधी-नीति की आलोचना सभाओं द्वारा; १९४५ में चलते-फिरते वाचनालय स्थापित किये ; १९४६ में लेखकों की सहायता के लिए एक कार्यालय खोला ; १९४७ में साक्षरता-प्रसार-सम्मेलन, ग्राम-गीत-संग्रह, व्याख्यान आदि कार्यक्रम किये।

हिंदी-लेखक-संघ, ९७ मिंट स्ट्रीट, मद्रास १—**स्था०**—६ नवम्बर १९५० ; **उद्दे०** — दक्षिण भारत के साहित्यिकों की खोज और संगठन ; प्रकाशकों और पत्रकारों में सहयोग की भावना भरना ; **कार्य०**—प्रत्येक रविवार को गोष्ठी में रचनाएँ पढ़ी जाती हैं ; हि० सा० स० प्रयाग की परीक्षाओं के लिए कक्षाएँ खुली हैं ; उत्तरी और दक्षिणी भारत के बीच सांस्कृतिक संबंध स्थापित करने का प्रयत्न हो रहा है ; अ० भा० हिं० सा० स० के सभापति सेठ गोविंददास ने अपने दक्षिण भारत के भ्रमण में इसका सभापतित्व किया था।

हिंदी-वाग्वर्द्धिनी-सभा, तिरुवन्तपुरम्—सभा की बैठक प्रति रविवार को होती है; हिंदी प्रचारकों का संगठन; हिंदी में भाषण देनेवाले विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण; मान्य हिंदी-सेवियों को बुलाकर भाषण कराना उद्दे० है।

हिन्दी-विद्यापीठ, उदयपुर—यह मेवाड़ ही नहीं, राजस्थान की निराली संस्था है, साक्षरता-प्रसार, प्रौढ़ शिक्षण, प्राचीन साहित्य की शोध आदि ठोस रचनात्मक कार्य इस संस्था द्वारा होते हैं ; विद्यापीठ के कई विभाग हैं :— १. महाविद्यालय, २. श्रमजीवीविद्यालय, ३. सरस्वती-मंदिर, ४. प्रौढ़-शिक्षण-विभाग, ५. किशोर-शाला विभाग, ६. प्राचीन साहित्य शोध-विभाग, ७. सार्वजनिक पुस्तकालय और वाचनालय, सम्मेलन

परीक्षाओं के लिए नियमित अध्ययन का प्रबन्ध है।

हिन्दी-विद्यापीठ, देवघर-हिंदी की कई उच्चकोटि की परीक्षाएँ संचालित हैं; हिंदी के माध्यम द्वारा अनेक औद्योगिक विषयों की शिक्षा दी जाती है; साहित्य-महाविद्यालय की ओर से पहली कक्षा से उत्तमा परीक्षा तक हिंदी की अनिवार्य शिक्षा दी जाती है।

हिन्दी-विद्यापीठ (बम्बई), बम्बई; **स्था०**—१९३८; **उद्देश्य**—हिंदी-प्रचार तथा साहित्य की उन्नति; **कार्य०**— विद्यापीठ का कार्यक्रम कई विभागों में बँटा है--: **परीक्षा-विभाग** — हिंदी-प्रवेश, हिंदी-प्रथमा, हिंदी उत्तमा, हिंदी-भाषा-रत्न, और साहित्यसुधाकर परीक्षा ली जाती हैं; भाषा-रत्न, बम्बई म्यूनिसिपलिटी, प्रांतीय सरकार और हिं० सा० स० द्वारा मान्य हैं, परीक्षाएँ निःशुल्क ली जाती हैं; १९४७ के आँकड़ों के अनुसार १८३११ विद्यार्थी परीक्षा में बैठे; **प्रचार-विभाग**–प्रचारक निःशुल्क शिक्षा देते हैं, संख्या लगभग ५०० है; बम्बई नगर, उपनगर, प्रान्त तथा मैसूर में लगभग ७५ केंद्र हैं; **प्रकाशन-विभाग**-इसके द्वारा लगभग ३० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, पुस्तकें प्रायः परीक्षोपयोगी हैं, १९४३ में हिन्दी-प्रचार-पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया; ७ अंक छपकर बंद हो गयी, १९४७ से पुनः प्रकाशन आरम्भ हुआ; **पुस्तकालय**–दो शाखाएँ हैं, एक गिरगाँव में और दूसरी दादर में; प्रथम में १५०० और दूसरे में ८०० पुस्तकें हैं, इनके २५० सदस्य हैं।

हिन्दी-विद्याभवन, सीकर—श्रीयुत पं० मुरलीधर द्वारा १९३६ में हिन्दी-प्रचारार्थ स्थापित; सम्मेलन और पंजाब की हिंदी-परीक्षाओं की पढ़ाई का यहाँ प्रबन्ध है, सरकार का सहयोग भी प्राप्त है।

हिन्दी विद्यामंदिर, आबूरोड—**स्था०**—१९३०; पं० सीताराम शास्त्री वाशिष्ठ और श्री भोलानाथ चतुर्वेदी; **सद०**—२१०; **कार्य०**–यह सिरोही राज्य की प्रमुख साहित्यिक संस्था है; हिं० सा० सम्मे० से सम्बद्ध है; इसका निजी पुस्तकालय और वाचनालय है;

साहित्यशाला, राष्ट्रभाषा-शाला ; शिशुशाला और रात्रिशाला के द्वारा शिक्षा दी जाती है ; हिन्दी-प्रचार के लिए कवि-सम्मेलन, जयंतियों का आयोजन होता है ; शिक्षाबोर्डों में हिन्दी को उचित स्थान इसी के प्रयत्नों से मिला है।

हिन्दी-शिक्षित-समाज, अयोध्या—**स्था०** – १९३७; **अंग**—**साहित्य-विभाग**— साहित्य-चर्चा के लिए; **परीक्षा-विभाग**—विभिन्न परीक्षाओं के लिए निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध ; **पुस्तकालय**—१००० पुस्तकें हैं ; **संग्रहालय** विभाग में प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों का संग्रह है।

हिंदी-सभा, नवलगढ़–**संस्था०**–प्रोफेसर सत्येंद्र तथा अन्य सहयोगी १९४३; **सद०**—३००; **उद्दे०**–हिंदी-साहित्य का सर्वांगीण विकास; **कार्य०**—हि० सा० स० से सम्बंध, (क) हिंदी-विद्यालय का संचालन जिसमें सम्मेलन की परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी पढ़ाये जाते हैं; (ख) एक पुस्तकालय—पुस्तकें १०००० हैं; वाचनालय--३० पत्र आते हैं; (ग) गाँवों में पुस्तकों के वितरण का आयोजन; (घ) साहित्यिक गोष्ठियाँ; (च) सभा ने हिंदी को जयपुर और नवलगढ़ की राजभाषा और राजपूताना वि० वि० में माध्यम बनाने में बड़ा प्रयत्न किया; (छ) एक संग्रहालय स्थापित किया जिसमें हस्तलिखित ग्रंथ और लेखकों के चित्र संगृहीत हैं; (ज) पुस्तकों और पत्रिका का प्रकाशन होता है।

हिंदी-सभा, भागलपुर—सभा ने हिंदी-प्रचार में प्रशंसनीय कार्य किया है, स्थानीय अधिकांश साहित्य-सेवियों का सहयोग प्राप्त है।

हिंदी-सभा, सीतापुर–**स्था०**–१९४४; सभा का वार्षिक अधिवेशन सर्वांगीण होता है; सभा के अन्तर्गत 'अवधी-साहित्य-परिषद' है जिसका काम अवधी को प्रोत्साहन देना है।

हिंदी-समाचार-पत्र-प्रदर्शनी, कसारहट्टा रोड, हैदराबाद, दक्षिण —**स्था०–१९३५,** श्री वेंकटलाल ओझा; **उद्दे०**—हिंदी समाचारपत्रों का संग्रह, प्रदर्शन, पत्रकारकला के इतिहास का संकलन और प्रकाशन, हिंदी-पत्रकारों की

जीवन-सामग्री तथा चित्रों का प्रकाशन; कार्य०—इसके चार प्रदर्शन क्रम से १९३७, ३९, ४४ और ४५ में हो चुके हैं, अंतिम प्रदर्शनी का उद्घाटन मध्यप्रांत की धारा-सभा के अध्यक्ष श्री घनश्याम सिंह द्वारा हुआ; अब तक लगभग २५०० पत्रों के प्रथमांक, विशेषांक तथा अंतिमांक संगृहीत हो चुके हैं; १८५२ का 'मालवा' अखबार अत्यन्त प्राचीन है; राधा कृष्णदास, बालमुकुन्द गुप्त जैसे साहित्यकारों के लिखित तथा अप्राप्य हिन्दी-पत्रों के इतिहास संगृहीत हैं; आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, महात्मा गाँधी, प्रो० रामदास गौड़ तथा कई पत्रकारों के पत्रों की प्रतिलिपियाँ संगृहीत हैं; संस्था के पास प्रांतीय भाषाओं के पत्रकार-कला-सम्बन्धी विशेषांक और ग्रन्थों का संग्रह है; इसकी ओर से हिंदी-समाचार-पत्र-सूची भाग १, १८२६–१९२५ तक और हिन्दी - समाचार - पत्र-निर्देशिका छपी है जिनका संपादन पं० बनारसीदास चतुर्वेदी तथा वंकटलाल ओझा ने किया है; संस्था के प्रबन्ध और परामर्श के लिए एक स्थायी समिति है।

हिन्दी-समिति, कालाकाँकर, अवध—**स्था०**—कुँवर सुरेशसिंह, जनवरी १९४७; **सद०**–७५; समिति के कार्य-संचालन के लिए दो सभाएँ हैं—एक, साधारण सभा दूसरी, कार्यकारिणी समिति, समिति की साधारण बैठक प्रति बृहस्पतिवार और विशेष बैठक प्रत्येक पूर्णिमा को होती है; कार्य चार विभागों में बँटा है—१—ग्राम-साहित्यविभाग; २—अध्ययन-विभाग; ३—परीक्षा-विभाग; ४—प्रचार-विभाग।

हिन्दी-समिति, दोहरी, पो० डीह, रायबरेली—**संस्था०**—श्री रघुनाथसिंह राजकुमार; **कार्य०**—(क)—प्रतिवर्ष उत्सव, समय समय पर कार्यक्रमों द्वारा हिन्दी का प्रचार; (ख) बलवंत राष्ट्रीय पुस्तकालय और जयसिंह-वाचनालय का संचालन होता है; (ग) प्राथमिक पाठशाला के विद्यार्थी पढ़ते हैं; (घ) ग्राम-साहित्य का संकलन हो रहा है; **वि०**--समिति का वार्षिकोत्सव जून में होता है।

हिन्दी-साहित्य-गोष्ठी, सदर बाजार, जबलपुर—**स्था०**—१९४७; **उद्दे०**—स्थानीय साहित्यिकों और सेवियों में संगठन और सौहार्द्र उत्पन्न करना, गोष्ठियों और साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

हिन्दी - साहित्य - परिषद , कानपुर—**संस्था०**— श्री शिव-कुमार शुक्ल; कानपुर की यह विशिष्ट संस्था है, ५० वर्षों से हिन्दी-सेवा में संलग्न है।

हिन्दी साहित्य- परिषद् गुरुद्वारारोड, लखनऊ; **स्था०**—१९३८; **उद्दे०**—साहित्य-निर्माण, प्रकाशन, प्रचार; **वि०**—प्रबंध के लिए स्थायी समिति तथा कार्यसमिति का निर्वाचन होता है, आवश्यक विषयों पर परामर्श देने के लिए एक "परामर्शदात्री समिति" भी बनी है; **कार्य०**-(क) प्रतिवर्ष १६ साहित्यिकों की जयंतियाँ मनायी जाती हैं; बालसाहित्य समाज की स्थापना, जिसकी १३ शाखाएँ नगर में और २२ बाहर बनी हैं।

हिन्दी-विद्यापीठ, लखनऊ—**स्था०**—१९४२ ; **कार्य०**—हि० सा० सम्मे० प्रयाग और महिला विद्यापीठ प्रयाग की परीक्षाओं के लिए शिक्षा दी जाती है; विद्यापीठ स्वयं ६ परीक्षा लेता है—शिशु, प्रथमा, प्रवेशिका, मध्यमा, उत्तमा, रामायण परीक्षा ; लगभग १५००० विद्यार्थी परीक्षाओं में बैठते हैं ; १२२ केन्द्र स्थापित हो चुके हैं।

हिन्दी-साहित्य-परिषद्, गुवाहाटी (आसाम)—साहित्य-समन्वय और सांस्कृतिक पुनरुज्जीवन के हेतु फरवरी १९४२ में स्थापित ; असमीया और हिन्दी में ऊँची से ऊँची संयुक्त परीक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन तथा 'असम-दर्शन' नामक ग्रन्थ का संपादन हो रहा है ; 'काव्य और अभिव्यंजना' प्रकाशित हो चुकी है।

हिन्दी-साहित्य-परिषद्, गोंडा—मार्च १९३९ में संथाल जिला हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर स्थापित; सदस्य-संख्या १५० जिन में अनेक ईसाई और मुसलमान भी सम्मिलित हैं ; प्रान्तीय सरकार और जिला बोर्ड से भी सहायता मिलती है ; परिषद् द्वारा संथालों में देवनागरी लिपि का प्रचार खूब

जोरों से जारी है; परिषद् विशाल भवन बनाने जा रही है।

हिन्दी-साहित्य-परिषद्, बख-तियारपुर, पटना—**स्था०**—२ अक्टूबर १९५० ; श्री शिवपूजन सहाय द्वारा उद्घाटन हुआ; **उद्दे०**—मगध-जनपद के लोक-गीतों, कथाओं तथा पहेलियों का संकलन, संपादन और प्रकाशन; **कार्य०**—प्रति पक्ष 'रसचक्र' नाम से एक गोष्ठी होती है।

हिंदी-साहित्य-परिषद्, मथुरा—**स्था०**—१९३२ ; **कार्य**—इसी के द्वारा 'व्रज-साहित्य-मंडल' संस्था का जन्म हुआ; स्वयं खड़ी बोली की सेवा कर रही है; परिषद ने ७००) आजाद हिन्द-फौज - रक्षा-समिति को भेजा था।

हिन्दी-साहित्य-परिषद्, मिर्जा-पुर—**स्था०**—श्री वल्लभदासबिन्नानी; साप्ताहिक बैठकें होती हैं, जयंतियाँ, गोष्ठियाँ और कवि-सम्मेलन होते हैं, प्रकाशन-कार्य भी होता है।

हिन्दी-साहित्य-परिषद्, मेरठ—१९३९ में स्थापित ; कवि-सम्मेलनों, व्याख्यानों, गल्प-सम्मेलनों आदि की आयोजना करती है, भारतीय ग्रंथमाला में साहित्यिक विषयों की विवेचना का प्रबन्ध; एक त्रैमासिक हस्तलिखित का प्रकाशन करती है।

हिन्दी-साहित्य-परिषद्, राठ, हमीरपुर—**स्था०**— २९ अगस्त १९४३; यह परिषद पुरानी संस्था 'कवि-संघ' का रूपांतर है; **कार्य०**—जयंतियों और कवि-सम्मेलनों का आयोजन; तीन वर्षों में २९ विशेष बैठकें हुईं; परिषद का जनपद सा० सम्मे० और बुंदेलखंड हि० सा० सम्मे० से सम्बद्ध।

हिन्दी-साहित्य-परिषद्, लखी-मपुर—१९४० में स्थापित; कहानी-सम्मेलन, हास्य-सम्मेलन, कवि-सम्मेलन, निबन्ध-सम्मेलन आदि का आयोजन हुआ करता है।

हिन्दी-साहित्य-परिषद्, लाल-गंज, रायबरेली—**स्था०**—पंडित देवीरत्न अवस्थी 'करील', नवम्बर १९४५, आचार्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी की स्मृति में; **सद०**—५१; **कार्य०**—(क) द्विवेदी और तुलसी-जयंती का समारोह, (ख) सम्मेलन-परीक्षाओं की पढ़ाई का प्रबन्ध।

हिंदी-साहित्य-परिषद्, श्रीनगर, काश्मीर—हिन्दी-प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित, परिषद द्वारा सम्मेलन की कोविद और परिचय परीक्षाओं का प्रचार किया जाता है ; सदस्य १२५ के लगभग हैं।

हिन्दी - साहित्य - परिषद् , सिरसा, इलाहाबाद— स्था०— १ मई १९३२, बा० पुरुषोत्तमदास टंडन; सद०—२९३; कार्य— राष्ट्रभाषा का गाँवों में प्रचार, जयन्तियों का आयोजन।

हिन्दी - साहित्य - पुस्तकालय, मौरावाँ, उन्नाव–३ सितम्बर १९१७ को पं० बालकृष्ण पाठक, पं० मेड़ीलाल त्रिपाठी; बा० जयनारायण कपूर ने नींव डाली ; सेठ दीनदयाल की आर्थिक सहायता से वृद्धि हुई ; और 'हिन्दी साहित्य पुस्तकालय' के नाम से यह प्रसिद्ध हुआ; २५ जून १९२४ को पं० सूर्य प्रसाद जी द्वारा दिये गये एक भवन में यह स्थायी रूप से स्थित हुआ; ६ जनवरी १९२२ को यंगमेंस लाइब्रेरी मौरावाँ के नाम से एक अँगरेजी पुस्तकालय खुला और वह भी ३१ दिसम्बर १९२९ को इसी में शामिल हो गया; इसका संचालन ११ व्यक्तियों की एक कार्यकारिणी करती है; सद०—१९०; कार्य० —१८ वर्षों का समाचार-साहित्य है; हिन्दी, संस्कृत और फारसी के अप्राप्य ग्रंथ यहाँ सुरक्षित हैं हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या ११६ है, हरिजनों को निःशुल्क सदस्य बनाया जाता है; १० कोस की परिधि में जनता लाभ उठाती है; (क) पुस्तकालय की ओर से एक पुस्तकालय - प्रचार - समिति की स्थापना १९२४ में हुई, गाँवों में 'पुस्तक-वितरक' नामक कर्मचारी इसकी पुस्तकें पहुँचाता है ; (ख) २८ दिसम्बर १९१९ को एक साहित्य-समिति की स्थापना हुई; इसके द्वारा जयंतियों, परिषदों, कवि-सम्मेलनों, प्रदर्शनियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है; १९४७ में 'स्वर्ग में कवि-दरबार' किया गया; (ग) १९३५ में एक वृहत् पुस्तकालय प्रदर्शनी का आयोजन हुआ, इसमें पुस्तकालय विज्ञान की प्रगति ग्राफ, चार्टों और चित्रों द्वारा प्रदर्शित

की गयी ; इसीके फलस्वरूप 'उन्नाव - जिला - पुस्तकालय-संघ' और 'अवध-साहित्य-मंडल' की स्थापना हुई, पुस्तकालय में ३५ पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं और पुस्तकों की संख्या ६६०० है।

हिन्दी-साहित्य-मंडल, कानपुर —अदालती लिखा-पढ़ी हिंदी में कराने के लिए इसने अपना प्रचार-क्षेत्र वकील-समाज को बनाया, अनेक मुख्तार और वकील इसके सदस्य हैं।

हिन्दी - साहित्य - मंडल , भिवानी, हिसार, पंजाब—साहित्य की अभिवृद्धि के लिए स्थापित ; सदस्य सौ ; स्थानीय साहित्यिकों और हिंदी-प्रेमियों को संगठित किया ; निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध करता है ; अनेक साहित्यिक आयोजन किये हैं।

हिन्दी-साहित्य-संघ, गोपाल मंदिर, चौक, गया—**उद्दे०**—हिंदी की सर्वांगीण उन्नति करना ; **कार्य**—(क) प्रसिद्ध कवियों की जयंती मनाना ; (ख) उत्कृष्ट कृतियों पर पुरस्कार दिये जाते हैं।

हिन्दी-साहित्य-संघ, जालौन —हिंदी-प्रचार के उद्देश्य से स्थापित ; पुस्तकालय की ओर विशेष ध्यान दिया गया ; सदस्य संख्या बढ़ती जा रही है।

हिन्दी-साहित्य-सभा, बाँदा—अदालतों में हिंदी-प्रचार के लिए स्थापित ; स्थापना-काल १९१४; बाँदा की कचहरियों में हिंदी के अंतर्गत नागरी-प्रचारक-पुस्तकालय है जिसके ८० सदस्य हैं; सभा में सम्मेलन की परीक्षाओं के लिए एक केंद्र भी है।

हिन्दी-साहित्य-सभा, (राजपूताना), झालरापाटन—स्था०—१९१५ ; स्थापना के समय सभा का स्थायी कोष १५०००) था ; **सद०**—तीन श्रेणियाँ हैं ; **साधारण**—जो ॥) दें ; **स्थायी**—जो ५०) तक दें और १००) देने वाले **आजीवन सदस्य** होते हैं ; **उद्दे०**—हिंदी में सभी विषयों पर सस्ते ग्रन्थों का प्रकाशन ; **कार्य**—अब तक कई विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; **वि०**—सभा एक प्रेस और पुस्तकालय खोलना और मासिकपत्र चलाना चाहती है।

हिन्दी-साहित्य-सभा, लश्कर, ग्वालियर — १९०२ में 'नागरी-हितैषिणी सभा' की स्थापना ; १९०७ में क्षेत्र विस्तृत करने के उद्देश्य से 'हिंदी-साहित्य-सभा' नाम धारण किया; १९३८ में उक्त नाम से रजिस्ट्री करायी; इस समय राज्य के अनेक प्रमुख स्थानों में इसकी शाखाएँ हैं ; ग्वालियर में हिंदी को राजभाषा स्वीकार करा के महत्वपूर्ण कार्य किया गया है ; साहित्य-निर्माण के उद्देश्य से सभा ने 'हिंदी-मनोरंजन-ग्रंथमाला' और 'बालसखा-पुस्तकालय' इत्यादि प्रकाशन-संस्थाओं को जन्म दिया ; 'हिंदी-उर्दू-कोश' और 'व्यावहारिक शब्द-कोश' प्रकाशित किया; प्रांतीय सम्मेलन का आयोजन किया ; इसके कई अधिवेशन राज्य के प्रमुख स्थानों में हुए ; सभा के सतत प्रयत्न से १९३८ में हि० सा० स० का बाइसवाँ अधिवेशन बड़ी सफलता से हुआ ; १९११ में पुस्तकालय; १९१३ में चलता पुस्तकालय स्थापित किये ; पुस्तकालय में अब २५५० पुस्तकें हैं ; वाचनालय में २५ पत्र आते हैं ; १९२८ में सम्मेलन की परीक्षाओं का केंद्र स्थापित किया ; परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए अध्यापन का प्रबंध भी है ; निजी विशाल-भवन बनाने के लिए भी सभा प्रयत्नशील है ।

हिन्दी-साहित्य-समिति, अमरावती—सर्वश्री आचार्य ज्वालाप्रसाद एम० ए०, डी० फिल० (संरक्षक), हरिकृष्ण खरे एम० काम० और रतनकुमार जैन एम० काम०, सा० रत्न (संचालक) द्वारा अहिंदी प्रांत में हिंदी-प्रचार के उद्देश्य से स्थापित ; यहाँ सम्मेलन परीक्षाओं का केंद्र है और निःशुल्क रात्रि-पाठशाला चलायी जाती है ।

हिन्दी-साहित्य-समिति, दशपुर—स्था०—१९४२ ; साहित्यिक समारोह मनाये जाते हैं।

हिन्दी-साहित्य-समिति, देहरादून—स्था०—१९३४ ; **सद०**—१५० से ऊपर ; **कार्य०**—समिति ने पर्वतीय प्रदेश में हिंदी-प्रचार-कार्य में योग दिया; इसकी स्थायी सम्पत्ति लगभग ५५,००० रुपये की है ; साहित्यिक समारोह और गोष्ठियाँ होती रहती हैं ।

हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर—स्था०–१२ सितम्बर १९१२; पं० गंगाप्रसाद शास्त्री और जगन्नाथ दास ; **सद०**—५४६ ; सभा के पुस्तकालय में ७५०० पुस्तकें (मुद्रित) तथा ५०० हस्तलिखित हैं ; समिति के प्रयत्नों से हि० सा० सम्मेलन का सप्तदश अधिवेशन श्री गौरीशंकर हीराचंद्र ओझा के सभापतित्व में हुआ, जयंतियाँ मनायी जाती हैं, सम्मेलन की परीक्षाओं का केंद्र है और विद्यार्थियों को शिक्षा में सहायता मिलती है ; कई स्थानों पर पुस्तकालय खोले हैं।

हिन्दी-साहित्य-समिति (मध्य-भारत), इंदौर—**स्था०**—१० जनवरी १९१५, सर्वश्री सरदार किबे, गिरधर शर्मा 'नवरत्न', गोपालचंद शर्मा, डा० रामसिंह ; **उद्दे०**—हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि ; **वि०**—समिति का संचालन दो सभाओं द्वारा होता है—साधारण सभा और प्रबंधकारिणी समिति ; प्रथम में सारे सदस्य होते हैं, प्रबंधकारिणी समिति प्रति तीसरे वर्ष निर्वाचित होती है जिसमें ११ पदाधिकारी और २३ सदस्य होते हैं ; इस समिति के अंतर्गत ६ सदस्यों का मंत्रिमंडल निम्नलिखित विभागों का संचालन करता है-प्रबंध, अर्थ, प्रेस, प्रचार और पुस्तकालय ; **कार्य०**—(क) रा० ब० डा० सरयूप्रसाद और श्री राजा सर सेठ हुकुमचंद के नाम से एक ग्रंथमाला का प्रकाशन—पुस्तक-संख्या ६७ ; (ख) डा० सरजूप्रसाद स्वर्णपदक दिया जाता है; (ग) प्रतिवर्ष सम्मेलन की ऊँची परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा, विद्यापीठ का संचालन अवैतनिक अध्यापकों द्वारा, विद्यापीठ में गोविंदराम सेक्सरिया चैरिटी ट्रस्ट से राजनीति - विभाग में सेठ गोविंदराम सेक्सेरिया-आसन की स्था० ; यह विद्यापीठ अब गाँधी विद्यापीठ के नाम से प्रसिद्ध है ; (घ) 'वीणा'-पत्रिका का प्रकाशन ; (च) पुस्तकालय—पुस्तक-संख्या १२०००, वाचनालय का संचालन; —पत्रों की संख्या १०० (छ) समिति के पास एक छापाखाना है ; (ज) समिति का स्थायी कोश–५००००) का है ; समिति के भवन का शिलान्यास महात्मा गाँधी

द्वारा हुआ और इसके संरक्षक कई सम्मानित व्यक्ति हैं।

हिन्दी-साहित्य-समिति, राजापुर, मालवा—**स्था०**—१ अगस्त १९४७; **कार्य**—समिति की बैठक प्रति पक्ष होती है।

हिन्दी - साहित्य - समिति (विदर्भ), अकोला, बरार—**संस्था०**—पं० श्रीराम शर्मा साहित्यरत्न, १९४२; **कार्य०**—(क) साहित्य-सेवियों की आर्थिक सहायता, पुरस्कार-वितरण; (ख) प्रकाशन-कार्य होता है; २-३ पुस्तकें प्रकाशित हैं।

हिन्दी-साहित्य-समिति, होशंगाबाद, सोहागपुर—**स्था०**—१९३३, पं० सुंदरलाल दुबे, 'निर्बल सेवक'; **सद०**—३५; **कार्य**—जिले में प्रचार-कार्य करती है; प्रति वर्ष अधिवेशन होता है; कविसम्मेलनों, व्याख्यानों का प्रबंध होता है; पारितोषिक दिये जाते हैं, समिति हि० सा० स० और म० प्रा० विदर्भ सा० स० से सम्बद्ध है।

हिंदी साहित्य-सम्मेलन, जैतो—**सद०**- १०४; **उद्दे०**—राज्य में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने में प्रयत्न करना; **कार्य**—शिक्षा में हिंदी को माध्यम बनाने का आन्दोलन, गोष्ठियों का कार्यक्रम चलता है, प्रौढ़शिक्षा-प्रसार में प्रयत्न, हिंदी-परीक्षाओं के लिए निःशुल्क शिक्षा; प्रयागी सम्मेलन और भटिंडा-सम्मेलन से जिला हिं० सा० सम्बद्ध है।

हिंदी - साहित्य - सम्मेलन (दिल्ली प्रांतीय), दिल्ली—**स्था०**—मार्च १९४५; **कार्य**—रेडियो की हिंदी-उपेक्षा का विरोध किया; सम्मे० की विशेष समिति का आयोजन किया; दिल्ली नगरपालिका-चुनाव में भाग लेकर कई प्रतिनिधि निर्वाचित कराये।

हिंदी - साहित्य - सम्मेलन, पटियाला—**उद्दे०**—पूर्वीपंजाब के पटियाला संघ में हिंदी को राष्ट्रभाषा और शिक्षा का माध्यम बनवाना, सर्वसाधारण में हिंदी-प्रचार; कवियों, लेखकों और अन्य संस्थाओं को प्रोत्साहन; **संस्था०**—श्री सत्यपाल गुप्त प्रभाकर; **सद०**—२०००; शुल्क—१) वार्षिक; सभा का प्रबंध करने के लिए एक कार्यकारिणी है।

हिंदी - साहित्य - सम्मेलन—प्रयाग—**स्था०**—१९१०, काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा की प्रेरणा से स्थापित; **उद्दे०**—साहित्यिक-अंगों की पुष्टि और उन्नति, देशव्यापी व्यवहारों और कार्यों को सुलभ बनाने के लिए राष्ट्रलिपि देवनागरी और राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार, हिंदी को अन्तर्प्रान्तीय भाषा बनाने, सरकारी प्रबंधों, कार्यालयों, कचहरियों में प्रवेश कराने का आंदोलन, विश्वविद्यालयों में उच्चशिक्षा का माध्यम हिंदी को बनाये जाने का आंदोलन, हिंदी की उच्च परीक्षाओं की व्यवस्था, उदीयमान लेखकों, कवियों, पत्रकारों को उत्साहित करना और पदक तथा पुरस्कार से सम्मानित करना; हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज तथा प्रकाशन आदि; **कार्य**—सम्मेलन का कार्य कई विभागों में बँटा हुआ है :—**परीक्षा-विभाग**—सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, इसकी परीक्षाओं में १९४५ के आँकड़ों के अनुसार लगभग ५५०० विद्यार्थी प्रतिवर्ष बैठते हैं; ये हिंदी विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के नाम से प्रसिद्ध हैं; अहिंदी-भाषी दक्षिणी भारत में उक्त परीक्षाओं से सरल परीक्षाओं का प्रबंध राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा को सौंप दिया गया; पंजाब और काश्मीर में भी सरल परीक्षाओं की व्यवस्था की; हिंदी वि० वि० की सबसे ऊँची परीक्षा 'साहित्य रत्न' है, इसके अनेक केंद्र भारतवर्ष में हैं; ये परीक्षाएँ उत्तर प्रदेशीय बोर्ड तथा अन्य प्रांतों के विश्वविद्यालयों द्वारा मान्य हैं; प्रयाग में इन परीक्षाओं की पढ़ाई के लिए 'हिंदी - साहित्य-विद्यालय' की स्थापना की, परीक्षा केन्द्रों की संख्या ४०० के लगभग है, निरीक्षक इनकी देख-रेख करते हैं; **प्रचार-विभाग** के उद्योग से प्रांतीय और जनपदीय सम्मेलनों का आयोजन होता है, पुस्तकालय और वाचनालय स्थापित होते हैं; विद्यालय खोले जाते हैं; परीक्षाओं के केन्द्र स्थापित किये जाते हैं; सदस्य बनते हैं और कारखानों, मिलों, व्यक्तिगत व्यापारिक सस्थाओं में हिंदी को जनप्रिय बनाया जाता है; प्रचारकों का संगठन है, वे लोग

जिलों में दौरा करते हैं; **संग्रह-विभाग**—श्री पुरुषोत्तमदास टंडन इस विभाग को सर्वश्रेष्ठ बनाना चाहते हैं; इसमें १६५०० पुस्तकें हैं, वाचनालय में १५० मासिक, दैनिक और साप्ताहिक पत्र आते हैं; पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, पं० रामदास गौड़, पं० गणेश शंकर विद्यार्थी आदि स्वर्गीय साहित्यिकों के पत्र और अलबम तैयार हैं; संग्रहालय भवन में सभी साहित्यिकों और देशी-विदेशी मल्लों के चित्र हैं; **साहित्य-विभाग**—इसके अन्तर्गत खोज द्वारा प्राप्त प्राचीन पुस्तकों, मौलिक ग्रंथों और अनूदित कृतियों के प्रकाशन का प्रबंध होता है; लगभग २०० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; विज्ञान तथा वाणिज्य विषय के लिए पारिभाषिक शब्दों के गढ़ने और पुस्तकों के संपादन का अलग से प्रबंध है; वहीं से सम्मेलन-पत्रिका भी निकलती है; सम्मेलन से सम्बद्ध भारत में दूर-दूर स्थापित ६० संस्थाएँ हैं जो इससे प्रेरणा ग्रहण करती हैं, निम्नलिखित पारितोषिक दिये जाते हैं:—मंगला प्रसाद पारितोषिक, सेकसरिया महिला पारितोषिक, मुरारका पारितोषिक, जैन पारितोषिक, राधामोहन गोकुल जी पारितोषिक, नारंग पुरस्कार—केवल पंजाब निवासी हिंदी कवि को, गोपाल पुरस्कार, रत्नकुमारी पुरस्कार ; ये अलग अलग विषयों और नियमों के अनुसार दिये जाते हैं; यह हिंदी की विशेष संस्था है, इसे अनेक राष्ट्रीय नेताओं और प्रमुख साहित्यकारों का आश्रय प्राप्त हो चुका है; बा० पुरुषोत्तमदास टंडन इसके गाँधी माने जाते हैं।

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, फरीदकोट—उद्दे०—जनमत संगठित करके हिंदी को राज्य में उचित स्थान दिलाना; **सद०** — १२५, शु०—१); कार्य०—संघ के सा० स० जिला भटिंडा सा० स० के साथ कार्य होता है साहित्यिकों की जयंतियाँ मनायी जाती हैं।

हिंदी - साहित्य - सम्मेलन (भटिंडा जिला)—स्था०—१ मई १६४६, पं० खुशीराम शर्मा वाशिष्ठ; **सद०** १००० ; शु० १) वार्षिक; **कार्य**—जिले

के प्रत्येक कस्बे में हि० सा० सम्मेलन की परीक्षाओं की शाखाएँ स्थापित कीं; हिंदी माध्यम द्वारा शिक्षा दी जाती है; पठन-पाठन निःशुल्क है; गोष्ठियाँ होती हैं; यह सेवा समिति जैतो से सम्बद्ध है।

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन (मध्य प्रांत विदर्भ), नागपुर; **स्था०**—१६३८; **सद०** ४५०, **कार्य०**—अब तक १२ अधिवेशन हो चुके हैं, भानु-अभिनन्दन ग्रन्थ और नक्षत्र प्रकाशित हुए; कई प्रौढ़ केंद्र तथा प्रारम्भिक हिंदी स्कूल स्थापित किये हैं; यह हि० सा० सम्मेलन से सम्बद्ध है।

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन (मध्य भारतीय), उज्जैन—इस संस्था ने प्रांत में साहित्यिक संगठन तथा जागरण के लिए अनेक कार्य-क्रम रक्खे हैं जिनमें मुख्य हैं हिंदी भाषा का प्रचार, प्रांतीय साहित्यिकों का संगठन तथा प्रांत में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना।

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन (विदर्भ प्रांतीय), अकोला, बरार—हिं० सा० सम्मेलन से संबद्ध यह प्रथम संस्था है जिसने विदर्भ प्रांत में हिंदी-प्रचार किया है; सदस्य लगभग ४५०; कई प्रौढ़ शिक्षा-केंद्र तथा प्रारंभिक हिंदी स्कूल स्थापित किये हैं।

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन (विहार प्रादेशिक), पटना—स्था०—१६१६; कार्य०—प्रांत की सबसे प्राचीन हिंदी-सेवी-संस्था है, प्रांत की ५० संस्थाएँ इससे सम्बद्ध हैं; १६४५ में सम्मेलन में चीनी विद्वान प्रो० तानमुन शान ने अध्यक्ष-पद ग्रहण किया, यहीं से बहुसंख्यक विद्यार्थी सम्मेलन-परीक्षाओं में बैठते हैं।

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन (संयुक्त प्रान्तीय) प्रयाग; स्था०—१६२०; इसका कार्य कुछ दिन स्थगित रहा, १६४० से पं० श्री नारायण चतुर्वेदी के प्रयत्नों से फिर कार्य आरम्भ हुआ; १६४१ में फैजाबाद में इसका अधिवेशन हुआ; 'अखिल भारतीय रेडियो की भाषा-नीति' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई; रेडियो-विरोधी-दिवस मनाया, कचहरियो में हिन्दी-प्रयोग के लिए आन्दोलन किया।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, सारण, मशरक—**१९३७** में स्थापित;

जिले में शाखाएँ खोलने, प्रांत के लेखकों आदि के परिचय की सूची तैयार करने में प्रयत्नशील।

हिंदी - साहित्यालय, हटा, दमोह—**स्था०**— मई १६३१ ; **कार्य**—संस्था के पास दो हजार पुस्तकें और कई पत्रों की फाइलें हैं ; बिना शुल्क के जनता इनसे लाभ उठाती है।

हिंदी - हितैषिणी - सभा, मुजफ्फरपुर— **स्था०**— १६१४ ; **कार्य**—सभा के अधीन पुस्तकालय, वाचनालय, मिलन-मंदिर, परीक्षा - केंद्र तथा शिक्षालय चल रहे हैं ; सभा का निजी भवन और पार्क है ; हि० सा० सम्मे० की परीक्षाओं के उपयुक्त पुस्तकें हैं ; वाचनालय में लगभग ३० पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं।

हिंदुस्तानी एकेडमी,प्रयाग—आवश्यक पुस्तकों के अनुवाद कराने के उद्देश्य से १६२५ में प्रस्तावित और १६२७ में स्थापित; प्रमुख मौलिक रचनाओं को पुरस्कृत करना और साहित्य-सेवा को प्रोत्साहन देना, उत्तम लेखकों को संस्था का सदस्य चुनना, एक बड़ा पुस्तकालय संचालित करना आदि इसके उद्देश्य हैं ; प्रति वर्ष अनेक विद्वानों द्वारा साहित्यिक विषयों पर व्याख्यान दिलाये जाते हैं ; कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन भी एकेडमी की ओर से हुआ है ; 'हिंदुस्तानी' नामक तिमाही पत्रिका प्रकाशित होती है।

दूसरा खंड समाप्त

एक निवेदन

अक्टूबर १९५१ के पश्चात हिंदी-सेवी-संसार का पूरक खंड प्रकाशित होगा। इसके लिए अपनी सम्मति, विषय-प्रतिपादन-प्रणाली के संबंध में अपने सुझाव और असावधानी अथवा अज्ञानता के कारण होने वाली अशुद्धियों के संबंध में आवश्यक संशोधन यह प्रति देखते ही भिजवाने की कृपा करें।

आप का कृपापूर्ण सहयोग प्राप्त होने पर ही हिंदी-सेवी-संसार इस रूप में सामने आ सकेगा कि वह आवश्यक संदर्भ-ग्रंथ का काम देता हुआ अपना नाम सार्थक कर सके।

विनीत

संपादक

समस्त-साहित्य-सेवियों की सेवा में निवेदन

हिंदी-सेवी-संसार के दूसरे संस्करण का पूरक खंड

छह-सात महीने बाद प्रकाशित होगा
अतएव प्रार्थना है कि अपने या अपने परिचित साहित्य-सेवियों के प्रकाशित परिचयों में
आवश्यक संशोधन निश्चित रूप से

अक्टूबर, ५१ के अंत तक भिजवा दें

साथ साथ प्रस्तुत संस्करण के संबंध में

सम्मति, सुझाव और संशोधन

शीघ्र से शीघ्र भेजने की कृपा करें।

रानीकटरा, लखनऊ

विनीत
संपादक

हिंदी-सेवी-संसार

तीसरा खंड

हिंदी के प्रकाशक

अग्रवाल प्रेस, अग्रवाल भवन, मथुरा — ५-७ समालोचनात्मक पुस्तकें 'व्रज साहित्य-माला' के अंतर्गत प्रकाशित; नायिका-भेद, सूर-निर्णय आदि इनके सभी प्रकाशन सुंदर हैं; श्री प्रभूदयाल मीतल अध्यक्ष हैं।

अग्रवाल प्रेस, प्रयाग—लगभग तीस पुस्तकें प्रकाशित जिनमें अधिकांश पाठ-ग्रंथ हैं; श्री रामस्वरूप गुप्त व्यवस्थापक हैं।

अनेकांत-मुद्रणालय, मोहा आंकड़िया (काठियावाड़)—गुजराती से अनुवादित कई ग्रंथ प्रकाशित; श्री परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ अध्यक्ष हैं।

अपर इंडिया पबलिशिंग-हाउस, अमीनाबाद, लखनऊ—हिंदी-प्रकाशन का काम नया शुरू किया है; तीन-चार ग्रंथ छापे हैं।

'अरुण' कार्यालय, मुरादाबाद—कई पुस्तकें प्रकाशित; अरुण सीरीज एवं कहानी - मासिक 'अरुण' का प्रकाशन किया है।

अवध पब्लिशिंग हाउस, पानदरीबा, लखनऊ— बालोपयोगी और साहित्यिक ग्रंथों के प्रकाशक; भारत-निर्माता, पटेल-अभिनन्दन-ग्रंथ आदि मुख्य हैं; स्व० डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल का सारा साहित्य प्रकाशित कर रहे हैं; श्री भृगुराज भार्गव अध्यक्ष हैं।

आत्माराम एंडसंस, काश्मीरी गेट, दिल्ली—हिंदी विभाग द्वारा २५-२६ विविध विषयक पुस्तकें प्रकाशित; श्री भीमसेन व्यवस्थापक हैं।

आनन्द पुस्तक भवन, पहाड़िया, बनारस कैंट—चार-पाँच विविध विषयक पुस्तकें प्रकाशित जिनमें आरती मुख्य है; श्री सम्पूर्णानंद श्रीवास्तव अध्यक्ष हैं।

आरती-मंदिर, सिमली, पटना—१६४० के लगभग स्थापित; प्रकाशित पुस्तकों में संस्कृत का अध्ययन मुख्य है; लगभग दो वर्ष तक मासिक 'आरती' का प्रकाशन किया; श्री प्रफुल्लचंद ओझा 'मुक्त' अध्यक्ष हैं।

इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग — सत्साहित्य-प्रकाशन-संस्था; स्व० श्री चिंतामणि घोष द्वारा स्थापित; अब तक सब

विषयों में ५०० के लगभग पुस्तकें प्रकाशित कीं जिनमें सचित्र हिंदी महाभारत, सटीक रामचरित मानस, विश्वकवि रवींद्रनाथ आदि मुख्य हैं, 'सरस्वती सिरीज' के अंतर्गत लगभग ७० पुस्तकें प्रकाशित; लगभग पचास वर्षों से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका 'सरस्वती', तीस वर्षों से बालोपयोगी मासिक 'बालसखा', साप्ताहिक 'देशदूत' आदि का प्रकाशन हो रहा है; श्री हरिकेशव घोष अध्यक्ष हैं।

इलाहाबाद प्रेस, ७८ ए, त्रिवेणी रोड, इलाहाबाद— ३ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें प्रसाद का कथा-साहित्य मुख्य है।

एजूकेशनल पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड, लखनऊ—ज्ञानवर्धक साहित्य के प्रकाशक; १९३९ में स्थापित; 'हिंदी विश्वभारती' के नाम से एक सुंदर ज्ञानकोश का प्रकाशन किया जा रहा है जिसके २० खंड प्रकाशित हो चुके हैं; अन्य प्रकाशित पुस्तकों में भारत-निर्माता, मानो न मानो, अंतर्राष्ट्रीय ज्ञानकोश प्रसिद्ध हैं।

कल्याणदास एंड ब्रदर्स, बड़े महाराज का मंदिर, बनारस सिटी—विविध विषयक लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित।

किताबमहल, जीरोरोड, प्रयाग—विविध विषयक ग्रंथों के प्रकाशक; लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित।

किताबिस्तान, प्रयाग—इनकी प्रकाशित पुस्तकें सुंदर छपाई के कारण समादृत हैं; इनमें यामा, दीपशिखा, सप्तरश्मि मुख्य हैं। लंदन में इन्होंने अपनी एक शाखा खोली है।

किसान-सस्ता-साहित्य-प्रकाशन-समिति, बिजनौर—किसान सीरीज में ४-५ पुस्तकें प्रकाशित, 'कृषि-संसार' मासिक का प्रकाशन।

क्षात्रधर्म - साहित्य - मंदिर, जयपुर—राजस्थानी साहित्य के प्रकाशक; अक्टूबर १९४० से संचालित; 'क्षात्रधर्म' और 'क्षात्रधर्म-संदेश' नामक कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; कुँवर श्रीभूरसिंह राठोर अध्यक्ष हैं।

गंगापुस्तकमाला, लखनऊ—१९२० के लगभग श्रीदुलारेलाल

भार्गव द्वारा स्थापित; ढाई सौ के लगभग पुस्तकें प्रकाशित जिनमें मिश्रबंधु-विनोद, हिंदी-नवरत्न, बिहारी-रत्नाकर, रंगभूमि आदि मुख्य हैं; लगभग सोलह वर्षों तक मासिक 'सुधा' और 'बालविनोद' का प्रकाशन किया।

गयाप्रसाद ऐंड संस, आगरा—१९०५ में स्थापित; हिंदी, उर्दू, अँग्रेजी, की लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित कीं; श्री रामप्रसाद अध्यक्ष हैं।

गाँधी-ग्रंथ-माला, काशी-विद्यापीठ, बनारस छावनी—गाँधी जी को श्रद्धांजलि के रूप में ६ पुस्तकें प्रकाशित।

गीताप्रेस, गोरखपुर—धार्मिक साहित्य के प्रकाशक; ढाई सौ के लगभग पुस्तकें प्रकाशित, जिनमें अनेक पुस्तकें सस्ती और सुंदर छपी होने के कारण समादृत हैं; लगभग चौबीस वर्षों से मासिक 'कल्याण' और अँग्रेजी 'कल्याण-कल्पतरु' का प्रकाशन होता है।

गुप्त बुकडिपो, दानापुर छावनी (बिहार)—२ पुस्तकें प्रकाशित, श्री लक्ष्मीनारायण अध्यक्ष हैं।

गुप्त-स्मारक - ग्रंथ - प्रकाशन समिति, १४७ हरिसन रोड, कलकत्ता— स्व० श्री बालमुकुंद गुप्त-संबंधी दो-तीन पुस्तकें प्रकाशित जिनमें गुप्त - निबंधावली और गुप्त-स्मारक-ग्रंथ प्रमुख हैं; इन प्रकाशनों की बिक्री की आय से हिंदी के स्वर्गीय साहित्य-सेवियों के संबंध में भी इसी प्रकार के ग्रंथ छपेंगे।

ग्रंथमाला-कार्यालय, बाँकीपुर, पटना—लगभग पचास पुस्तकें प्रकाशित जिनमें साहित्यालोक और आर्यावर्त मुख्य हैं; कई वर्षों से मासिक 'किशोर' का प्रकाशन हो रहा है; श्री देवकुमार मिश्र अध्यक्ष हैं।

चंद्र-कार्यालय, भिवानी, हिसार (पंजाब)— मीनाकारी शिक्षक, स्वर्णकार - विज्ञान आदि कई पुस्तकें प्रकाशित; श्री चंदूलाल व्यवस्थापक हैं।

चलसानि सुब्बाराव, ईंटानगर, तेनाली—पाठ-ग्रंथों की कुंजियाँ प्रकाशित की हैं; स्वयं अध्यक्ष हैं।

चाँद - कार्यालय, प्रयाग— लगभग डेढ़ सौ पुस्तकें प्रकाशित कीं; अठारह वर्षों तक मासिक 'चाँद' का प्रकाशन किया; कई वर्षों तक 'नयी कहानियाँ', 'रसीली कहानियाँ' नामक दो कहानी पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं।

छात्रहितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग— १६१८ में स्थापित; लगभग १५० पुस्तकें अब तक प्रकाशित कीं जिनमें कविप्रसाद की काव्य - साधना, ब्रह्मचर्य ही जीवन है, गुप्त जी की काव्यधारा आदि मुख्य हैं; बच्चों के लिए सरल भाषा में जीवनी-माला भी निकाली गयी है जिसमें लगभग सत्तर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए० संचालक हैं।

जनसेवक-समिति, लखीमपुर, खीरी—अप्रैल १६४६ में स्थापित; साप्ता० 'जनसेवक' पं० वंशीधर मिश्र के संपादकत्व में निकल रहा है; जन-सेवक-पुस्तकमाला के प्रकाशन का आयोजन है; ४ ग्रंथ प्रकाशित हैं।

जागरण - साहित्य - मंदिर, बनारस—३-४ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें 'बापू को न बचा सका' का विशेष प्रचार हुआ है।

जी०आर० भार्गव ऐंड संस, चँदौसी— लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें प्रमुख देशों की शासन-प्रणालियाँ मुख्य हैं; श्री राधेश्याम भार्गव व्यवस्थापक हैं।

ज्ञान-प्रकाश - मंदिर, माछरा, मेरठ— १६१८ में स्थापित; महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य, टाल्सटाय की आत्म-कहानी, विचार आदि प्रकाशन प्रसिद्ध हैं।

ज्ञानमंडल, काशी— ५० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें हिंदी-शब्द-संग्रह, हिंदुत्व आदि प्रसिद्ध हैं; लगभग बीस वर्षों से दैनिक व साप्ताहिक 'आज' का प्रकाशन होता है।

ज्ञानमंदिर, जवाहरगंज, जबलपुर—१०-१२ पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

ज्ञानमंदिर, भीष्म एंड कम्पनी, पटकापुर, कानपुर— 'बुलबुल' और 'कोकिल' सीरीज में लगभग ४० पुस्तकों का प्रकाशन; श्री नारायणप्रसाद व्यवस्थापक हैं।

ज्योतिष - निकेतन, चौक, भूपाल—ज्योतिष तथा सामुद्रिक शास्त्र की कई पुस्तकों का प्रकाशन; २६ जून १६४१ में स्थापित; पं० ईशनारायण जोशी शास्त्री व्यवस्थापक हैं।

झलक-पुस्तकमाला, धनराज लेन, अमरावती (बरार)—'युगजीवन' द्विमासिक प्रकाशित होता है; पुस्तकें प्रकाशित करने की भी योजना है।

टी० सी० जर्नल्स लिमिटेड, सुंदरबाग, लखनऊ—छात्रोपयोगी कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं; सभी पुस्तकें अध्यापकों की लिखी हुई हैं।

डी० आर० शर्मा एंड संस, जोधपुर — बालोपयोगी पुस्तक-प्रकाशक; २० के लगभग पुस्तकें प्रकाशित; श्री गिजुभाई की बालोपयोगी पुस्तकों का अनुवाद यहाँ से प्रकाशित हुआ है।

तरुण - कार्यालय, प्रयाग—तरुण सीरीजके अंतर्गत ५-७ पुस्तकें प्रकाशित, मासिक 'तरुण' का कई वर्षों तक प्रकाशन हुआ।

तरुण-भारत-ग्रंथावली, गाँधीनगर, कानपुर — पहले प्रयाग में था, अब कानपुर में है; अनेक पुस्तकें प्रकाशित; पं० लक्ष्मीधर बाजपेयी अध्यक्ष हैं।

तरुण-भारत-ग्रंथावली, दारागंज, प्रयाग—स्थापित—१६१८; लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित; अधिकतर युवकोपयोगी साहित्य; श्रीसोमदेव बाजपेयी व्यवस्थापक हैं।

तारा-मंडल, रोसड़ा, दरभंगा; १६४० में स्थापित; प्रकाशित पुस्तकों में आरसी, संचयिता, आभा आदि मुख्य हैं; प्रसिद्ध कवि श्री आरसीप्रसाद सिंह प्रबंधक हैं।

धर्म-ग्रंथावली, श्री दुबे निवास, दारागंज, प्रयाग—स्व० श्री विद्याभास्कर शुक्ल द्वारा १६३३ में स्थापित; लगभग २५ धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित जिनमें 'गंगा-रहस्य' मुख्य है; श्री गंगाधर दुबे अध्यक्ष हैं।

नन्दकिशोर एंड ब्रादर्स, चौक बनारस — लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित; अधिकतर पाठ्य पुस्तकें है; काशी विश्व विद्यालय से डी० लिट्० उपाधि के लिए स्वीकृत दो तीन थीसिसें जैसे आधुनिक काव्य-धारा, प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय

अध्ययन भी प्रकाशित की हैं; श्री विश्वनाथ भार्गव प्रबंधक हैं।

नवजीवन पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग—२-३ पुस्तकें प्रकाशित; श्रीनाथगुप्त अध्यक्ष हैं।

नवयुग-ग्रंथ-कुटीर; बीकानेर —लगभग ५० प्रस्तकें प्रकाशित; श्रीशंभूदयाल सक्सेना संचालक हैं।

नवयुग साहित्य-निकेतन, आगरा—राजनीति साहित्य का प्रकाशन; स्था०—जनवरी १९३८; **संचा०**—श्रीरामनारायण यादवेंदु, बी०ए०,एल-एल० बी०; औपनिवेशिक स्वराज्य, समाजवाद, गाँधीवाद, यदुवंश का इतिहास, भारतीय शासन-प्रणाली आदि प्रकाशन मुख्य हैं।

नवयुग-साहित्य-सदन, खजूरी बाजार, इंदौर—विविध विषयक लगभग २५ पुस्तकें प्रकाशित; श्री गोकुलदास अध्यक्ष हैं।

नवलकिशोर-प्रेस, हजरतगंज, लखनऊ—स्थानीय सबसे प्राचीन प्रकाशन-संस्था; १८५८ के लगभग मुंशी नवलकिशोर द्वारा स्थापित; डेढ़ हजार के लगभग पुस्तकें प्रकाशित; लगभग २५ वर्षों से प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'माधुरी' का प्रकाशन हो रहा है; श्री मुंशी रामकुमार भार्गव अध्यक्ष हैं।

नरेंद्रसाहित्य-कुटीर—दीतवारिया, इंदौर—१९४० में स्थापित; लगभग १५ पुस्तकें प्रकाशित; मासिक 'नवनिर्माण' का प्रकाशन भी होता है; श्रीशिखरचंद व्यवस्थापक हैं।

नागरीनिकेतन, विजयनगर, आगरा—१९३८ में स्थापित; ५-७ पुस्तकें प्रकाशित, डा० श्याम सुंदरलाल दीक्षित संचालक हैं।

नागरी-प्रचारिणी-सभा, प्रकाशन-विभाग, काशी—प्रकाशित पुस्तकों की संख्या लगभग दो सौ; ये पुस्तकें कई मालाओं में प्रकाशित हैं जिनका क्रम इस प्रकार है—मनोरंजन-पुस्तकमाला, सूर्यकुमारी-पुस्तकमाला, देवीप्रसाद पुस्तकमाला, बारहट बालाबख्श राजपूत-चारण-पुस्तकमाला, देवपुरस्कार-ग्रंथावली, नागरी-प्रचारिणीग्रंथमाला, महिला पुस्तकमाला, प्रकीर्णक पुस्तकमाला, इनके प्रकाशनों में ये पुस्तकें बहुमूल्य एवं श्रेष्ठ हैं—पृथ्वीराज रासो, वृहत्

हिंदी शब्दसागर, द्विवेदी - अभिनंदन-ग्रंथ, सूरसागर।

नागरीभवन, आगर, मालवा—१६११ में स्थापित; कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

नारायण-पब्लिशिंग हाउस, अजीतमल, इटावा—सचित्र 'कौन क्या है' का प्रकाशन; श्री प्रेमनारायण अग्रवाल अध्यक्ष हैं।

नारायण पब्लिशिंग हाउस, अमीनाबाद, लखनऊ— अनेक पाठ्यग्रंथों के प्रकाशक; श्री लक्ष्मण प्रसाद भार्गव अध्यक्ष हैं।

नालंदा - प्रकाशन, धननूर बिल्डिंग, तीसरी माला, सरफीरोज शाह मेहता रोड, बंबई १—दो-तीन पुस्तकें प्रकाशित।

निष्काम - प्रकाशन, मेरठ—चार-पाँच पुस्तकें प्रकाशित; श्री अरुण बी०ए० प्रबंधक हैं।

निष्काम - साहित्य - मंडल, पूना १—दो पुस्तकें प्रकाशित, लगभग १० प्रेस में हैं, 'निष्काम' मासिक भी प्रकाशित होता है, श्री रत्नांबरदत्त व्यवस्थापक हैं।

नूतन प्रकाशन-मन्दिर, मदने की गोट, लश्कर (ग्वालियर)—एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित; श्री शंभुनाथ सकसेना व्यवस्थापक हैं।

न्यू लिटरेचर (नया साहित्य), २५७ चक, इलाहाबाद—कविता-कहानियों की लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित; श्री ओंकार 'शरद' व्यवस्थापक है।

पी०सी० द्वादश श्रेणी, अलीगढ़—कई पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित, कई वर्ष तक मासिक 'शिक्षक' का प्रकाशन किया।

पुष्पराज - प्रकाशन - भवन, उपरहटी, रीवाँ—स्थानीय एकमात्र प्रकाशन-संस्था; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; आचार्य गिरिजा प्रसाद त्रिपाठी व्यवस्थापक हैं।

पुस्तक - जगत, कदमकुआँ, पटना ३—लगभग ७६ पुस्तकें प्रकाशित; 'पुस्तकालय', 'जयप्रकाश' आदि पुस्तकें मुख्य हैं।

पुस्तक-भंडार, काशी—श्रीसूर्यबलीसिंह द्वारा १६१७ में स्थापित; लगभग ४० विविध विषयक पुस्तकें प्रकाशित की हैं; अब साहित्यिक प्रकाशन करते हैं।

पुस्तक-भंडार, पटना ४—लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित;

मासिक 'बालक' का अनेक वर्षों से प्रकाशन होता है; कार्यालय पहले लहरियासराय (दरभंगा) में था।

पुस्तक-भंडार, लहरियासराय,—१६१६ के लगभग श्रीरामलोचनशरण द्वारा स्थापित; लगभग पचास पुस्तकें प्रकाशित; इसकी रजतजयन्ती के अवसर पर जयंती-स्मारक - ग्रन्थ प्रकाशित किया; लगभग १६ वर्षों से बालोपयोगी मासिक 'बालक' का प्रकाशन कर रहे हैं; श्रीवैदेहीशरण अध्यक्ष हैं; अब कार्यालय पटना में है।

पुस्तक-मन्दिर, काशी—स्थापित १६२६; कहानी-उपन्यास की लगभग ३६ पुस्तकें प्रकाशित; श्री विनोदशंकर व्यास अध्यक्ष हैं।

पुस्तक - मंदिर (हिंदी-प्रचार-सभा), मद्रास—अहिंदी प्रांत की प्रसिद्ध प्रकाशन - संस्था ; अनेक पुस्तकें प्रकाशित जो पाठ्य-क्रम में स्वीकृत हैं; कई वर्ष मासिक 'हिंदी प्रचारक', 'दक्षिण भारत' का प्रकाशन किया; इस समय १०-१२वर्षों से 'हिंदी-प्रचार-समाचार' मासिक का प्रकाशन हो रहा है।

पुस्तक-संसार, ७ ब० कोल्हापुर हाउस, सब्जी मंडी, दिल्ली—विविध विषयक चार-पाँच पुस्तकें प्रकाशित; औद्योगिक ग्रंथमाला प्रकाशन की भावी योजना है।

प्रकाश-गृह, ३१ ए० बेली-रोड, प्रयाग—श्री 'पहाड़ी' लिखित लगभग १२-१३ पुस्तकें प्रकाशित; स्वयं श्री पहाड़ी ही संचालक हैं।

प्रदीप-कार्यालय, मुरादाबाद—लगभग २५ पुस्तकें प्रकाशित; मासिक 'प्रदीप' का भी कुछ समय तक प्रकाशन हुआ; बंबई में भी शाखा है—उदयन, २७१ बिट्ठल भाई पटेल रोड, बंबई ४; श्री जगदीश भारती अध्यक्ष हैं।

प्राचीन साहित्य-शोध-संस्थान, उदयपुर - विद्यापीठ, उदयपुर — ५-६ शोधपूर्ण प्रकाशन; पृथ्वीराज रासो का प्रामाणिक प्रकाशन खंड-रूप में हो रहा है; 'शोध-पत्रिका' त्रैमासिक का प्रकाशन भी होता है; श्री पुरुषोत्तमदास मेनारिया मंत्री हैं।

प्रीमियर बुकडिपो, ३८, म्यूनिसिपल मारकेट, कनाट सरकस, नयी दिल्ली—कहानी - उपन्यास

की ४ पुस्तकें प्रकाशित, ४ प्रेस में हैं।

प्रेमा पुस्तकमाला, जबलपुर—संचा०— श्री रामानुजलाल श्रीवास्तव;८-१० पुस्तकें प्रकाशित हैं।

बंबई बुकडिपो, १६५। १, हरिसनरोड, कलकत्ता— २०-२२ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें अधिकतर जासूसी उपन्यास हैं।

बंबई भूषण प्रेस, मथुरा—लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें अधिकतर पाठ्य ग्रंथ हैं; अब साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन की योजना है; श्री अभिमन्यु सिंह प्रकाशन-विभाग के अध्यक्ष हैं।

बी० श्री रामुल गुप्त, गवर्नर पेट,बेजवाड़ा-चार पाँच विद्यार्थियों के उपयोग की पुस्तकें प्रकाशित; स्वयं हिंदी-प्रचारक भी हैं।

बुन्देलखंड-कवि - ग्रंथमाला, महारानी लक्ष्मीबाई का मंदिर, बड़ाबाजार, झाँसी—लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित; अध्यक्ष श्री रावत रामपाल सिंह।

भारत पब्लिशिंग हाउस, आगरा—ग्रामसुधार-संबंधी साहित्य की प्रकाशन-संस्था; १६३८ में स्थापित; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; श्री महेंद्र द्वारा संचालित।

भारती प्रेस, ८ बी० एलगिन रोड, इलाहाबाद— लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित; डा० हरदेव बाहरी अध्यक्ष हैं।

भारती-भंडार, आरा—बाल-साहित्य-प्रकाशक; १०-१२ पुस्तकें छपी हैं।

भारती-भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग—विविध विषयक लगभग २०० पुस्तकें प्रकाशित; 'प्रसाद', 'पंत', 'बच्चन', 'निराला' नरेन्द्र शर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र आदि के अधिकांश ग्रंथ यहीं से छपे हैं; भारतीय विषयक ग्रंथमाला शुरू की है जिसकी दो तीन पुस्तकें छप चुकी हैं; श्री वाचस्पति पाठक प्रबंधक हैं।

भारतीय गौरव - ग्रंथमाला, ७२ हजरतगंज, लखनऊ—लगभग १५ पुस्तकें प्रकाशित; श्री कैलाशनाथ भटनागर संचालक हैं।

भारतीय ग्रंथमाला, वृंदावन, —अर्थसाहित्य के प्रकाशक; लगभग बीस पुस्तकें प्रकाशित

जिनमें अर्थशास्त्र - शब्दावली, राजनीति - शब्दावली, भारतीय अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि मुख्य हैं ; श्री भगवानदास केला संचालक हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुंड रोड, बनारस—लगभग २५ पुस्तकें अब तक प्रकाशित ; मूर्ति-देवी जैन ग्रंथमाला के अंतर्गत लगभग १० जन-धर्म-विषयक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं ; श्रीमती रमारानी जैन अध्यक्षा हैं।

भारतीय प्रकाशन - मंदिर, आगरा—स्व० अध्यापक रामरत्न जी की पुण्य स्मृति में स्थापित ; 'रत्नाश्रम' इसका दूसरा नाम है ; 'आशा' साप्ताहिक एवं 'नौनि-हाल' मासिक का प्रकाशन किया; कई विद्यार्थी-उपयोगी पुस्तकें प्रका-शित ; श्री श्यामाचरण लवानियाँ व्यवस्थापक हैं।

भार्गव पुस्तकालय, बनारस—जासूसी एवं धार्मिक साहित्य के प्रकाशक ; लगभग ढाई सौ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें भाभी के पत्र, अभागे दंपति, राबर्ट ब्लेक की चार आना, छः आना, आठ-आना और एक रुपया सीरीज मुख्य हैं ; तीन वर्ष तक महिलोप-योगी मासिक 'कमला' का प्रकाशन किया।

भूगोल-कार्यालय, प्रयाग—भौगोलिक-साहित्य के एक मात्र प्रतिष्ठित प्रकाशक; १६१५ के लग-भग स्थापित; अब तक करीब चा-लीस पुस्तकें प्रकाशित जिनमें भारत वर्ष का इतिहास समादृत है ; मासिक भूगोल और 'देश-दर्शन' का भी अनेक वर्षों से प्रकाशन होता है; श्रीरामनारायण मिश्र, बी० ए० अध्यक्ष हैं।

मदनमोहन, चँदोसी—१६३२ से प्रारंभ; १५ पुस्तकें प्रकाशित; स्वयं संचालक हैं।

मधुर-मंदिर, हाथरस—लगभग ३० पुस्तकें प्रकाशित; 'नया संसार' साप्ताहिक, 'हिंदू-राष्ट्र' पाक्षिक, 'रागिनी' मासिक भी छपते हैं ; श्रीदेवकीनंदन बंसल अध्यक्ष हैं।

मनोरंजन - पुस्तकमाला, जार्जटाउन, प्रयाग—१६४३ में स्थापित; इस समय 'सजनी-सीरीज' का प्रकाशन हो रहा है जिनमें कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं;

'सजनी' नाम की एक पत्रिका भी निकल रही है; श्रीनरसिंहराम शुक्ल व्यवस्थापक हैं।

महाबोधि सभा, सारनाथ, बनारस—१८६१ में स्थापित; अब तक लगभग बीस पुस्तकें प्रकाशित; 'धर्मदूत' पत्र भी निकलता है।

माखनलाल दम्माणी, कोट-गेट, बीकानेर—१६३४ से प्रकाशन किया; लगभग पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

मानसरोवर साहित्य-निकेतन, राजोगली, मुरादाबाद — कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं; श्रीराजनारायण संचालक हैं।

मानस - संघ, पो० रामवन वाया सतना (मध्य प्रदेश)—रामचरित मानस के आधार पर ४५ पुस्तकें प्रकाशित; और भी छापने का विचार है।

मानिकचंद बुकडिपो, पटनी बाजार, उज्जैन — १६०१ में स्थापित; पाठ-ग्रंथों के अतिरिक्त कुछ ललित साहित्य संबंधी ग्रंथ भी छापे हैं।

मायाप्रेस, मुट्ठीगंज, प्रयाग—कहानी - साहित्य के प्रकाशक; १६२६ में स्थापित; माया सीरीज का प्रकाशन किया है जिसमें लगभग चालीस पुस्तकें छप चुकी हैं; मनोहर सिरीज भी शुरू की है और २० पुस्तकें छप चुकी हैं। 'माया' और 'मनोहर कहानियाँ' नामक दो कहानी - पत्रिकाओं का प्रकाशन भी होता है; थोड़े समय से 'मनमोहन' बालोपयोगी मासिक का प्रकाशन शुरू किया हैं; श्री क्षितींद्र मोहन मित्र व्यवस्थापक हैं।

मारवाड़ी प्रेस, हैदराबाद (दक्षिण)--हिंदी की छोटी-बड़ी कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं; स्थानीय सबसे बड़े प्रकाशक हैं।

मास्टर बलदेवप्रसाद, सागर—कई पुस्तकें प्रकाशित जिनमें नौनिहालों की टोली, महात्मा गाँधी, पांचजन्य आदि मुख्य हैं; कई वर्ष तक बालोपयोगी पाक्षिक 'बच्चों की दुनिया' का प्रकाशन किया; स्वयं अध्यक्ष हैं।

मिश्रबन्धु-कार्यालय, जबलपुर—बालोपयोगी साहित्य और पाठ-ग्रंथों के प्रकाशक; लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें सरल नाटकमाला,

आदि मुख्य हैं; श्री नर्मदाप्रसादमिश्र व्यवस्थापक हैं।

मोतीलाल बनारसीदास, गाय घाट, बनारस— हिंदी-संस्कृत की लगभग सौ पुस्तकें प्रकाशित जिन में कई पाठ्य पुस्तकें हैं, पाकिस्तान बनने से पहले इनका प्रधान कार्यालय लाह... थ

युग ... उन्नाव—लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित ; चौधरी श्री राजेंद्रशंकर अध्यक्ष हैं।

युगांतर-प्रकाशन-मंदिर लि०, चौड़ा रास्ता, जयपुर — दैनिक 'लोकवाणी' और 'युगांतर' का प्रकाशन; अध्यक्ष श्री जवाहरलाल।

राघव-प्रकाशन-मंडल, दोस्तपुर, सुल्तानपुर (अवध)—स्थापित १९४१ ; १०-१२ विविध विषयक पुस्तकें प्रकाशित ; प्रबन्धक श्री शिवकुमार त्रिपाठी।

राजकमल प्रकाशन लि०, १ फैज बाजार, दिल्ली —विविध विषयक लगभग दो सौ पुस्तकें प्रकाशित ; प्रबन्धक समिति में महाराज करणीसिंह (बीकानेर), महाराज कुमार डा० रघुवीरसिंह मुख्य हैं ; १९४६ में २५, चौपाटी रोड, बंबई में शाखा खोली जिसके अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल मुंशी हैं ; नयी दिल्ली में भी १९५१ से एक दूकान खोली है, वर्तमान कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश हैं।

राजराजेश्वरी-साहित्य-मंदिर, सूर्यपुरा, शाहाबाद— प्रकाशित पुस्तकों में राम-रहीम, पुरुष और नारी आदि मुख्य हैं; श्रीमान् राजा राधिकारमण प्रसादसिंह द्वारा संरक्षित है।

रामदयालअग्रवाल (रायसाहब) कटरा, प्रयाग—लगभग सवा सौ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें चित्रावली रामायण, हिंदी साहित्य का गद्य-काल मुख्य हैं; अनेक पाठग्रंथ ही प्रकाशित किये हैं।

रामनारायण लाल, कटरा, प्रयाग—लगभग तीन सौ पुस्तकें प्रकाशित, जिनमें अनेक पाठ्यक्रम में स्वीकृत हैं; प्रकाशित पुस्तकों में हिंदी-साहित्य का इतिहास, भारतेंदु नाटकावली, सटीक वाल्मीकीय रामायण मुख्य हैं, श्री बेनीप्रसाद अग्रवाल (वकील साहब) हैं।

रामनारायण ऐंड संस, अस्पताल मार्ग, आगरा— १९१० में

स्थापित; लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें अनेक पाठ्यक्रम में हैं ; रामप्रसाद सीरीज का प्रकाशन भी किया है; श्रीहरिहरनाथ अग्रवाल व्यवस्थापक हैं।

राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, हिंदी नगर, वर्धा—अनेक पुस्तकें प्रकाशित जो राष्ट्रभाषा प्रचार-सभा के पाठ्यक्रम में स्वीकृत हैं ; कई वर्षों तक 'सबकी बोली' 'राष्ट्रभाषा-समाचार' मासिक का प्रकाशन किया ; अब 'राष्ट्रभाषा' और 'राष्ट्रभारती' का प्रकाशन होता है।

राष्ट्रीय साहित्य-प्रकाशन-परिषद, २३२ सदर, मेरठ—बारह-तेरह कविता पुस्तकें प्रकाशित जिन में 'जननायक' महाकाव्य प्रमुख ; अध्यक्ष श्री परमात्माशरण।

राष्ट्रीय - साहित्य प्रकाशन-मंदिर, दिल्ली— गांधी साहित्य का प्रकाशन मुख्य है ; कई पुस्तकें प्रकाशित ; श्री श्रीराम अध्यक्ष हैं।

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, अस्पताल मार्ग, आगरा—अनेक पाठ-ग्रंथ प्रकाशित ; लगभग दो वर्षों तक साहित्यिक मासिक 'मराल' का प्रकाशन भी किया ; श्रीराजनारायण व्यवस्थापक हैं।

लक्ष्मी-हिंदी-विद्यालय, चिलकलूरिपेट, जिला गुंटूर—लगभग १० विद्यार्थी-उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित ; श्री देसु सत्यनारायण संचालक हैं।

लहरी बुकडिपो, काशी—१५-२० जासूसी पुस्तकें प्रकाशित जिनमें 'चंद्रकांता संतति' (६खंड) और भूतनाथ (७खंड) प्रसिद्ध हैं।

लोक-सेवा-प्रकाशन - मंडल, बाह, आगरा—एक-दो पुस्तकें प्रकाशित।

वाणी-मंदिर, छपरा—स्व० ठा० मंगलसिंह द्वारा संस्थापित ; पचास के लगभग पुस्तकें प्रकाशित जिनमें प्रेमचंद की उपन्यास-कला, साकेत-समीक्षा आदिमुख्य हैं ; सुश्री विद्यावती देवी संचालिका हैं।

वाणी-मंदिर, जयपुर—सर्वोदय साहित्य की पुस्तकें प्रकाशित ; युगांतर-प्रकाशन-मंदिर लि० द्वारा संचालित।

विक्रम - परिषद (अखिल-भारतीय)—६३ । ४३ उत्तर बेनिया बाग, काशी—कालिदास-

ग्रंथावली का प्रकाशन हो रहा है, तीन खंड प्रकाशित हो चुके हैं; श्री सीताराम चतुर्वेदी मंत्री हैं।

विद्याभास्कर बुकडिपो, ज्ञानवापी, बनारस—१९३० से प्रकाशन प्रारंभ किया; अब तक लगभग चालीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; श्री देवेन्द्रचंद्र विद्याभास्कर व्यवस्थापक हैं।

विद्यामंदिर, रानीकटरा, लखनऊ—'हिंदी-सेवी-संसार' के प्रकाशक; १९४१ में साहित्यरत्न श्री प्रेमनारायण टंडन एम० ए० द्वारा स्थापित; लगभग ६० पुस्तकें अब तक प्रकाशित जिनमें 'एक अध्ययन' माला का काफी प्रचार है; 'साहित्यिक पारिभाषिक शब्दावली', 'हिंदी रचना उसके अंग', आदि पुस्तकें प्रमुख हैं; लगभग चार वर्षों से मासिक (अब पाक्षिक) बालोपयोगी 'होनहार' का प्रकाशन हो रहा है; श्री तेजनारायण व्यवस्थापक हैं।

विद्यामंदिर लिमिटेड, दिल्ली—लगभग २५ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें स्वाधीनता के पथ पर और पथिक प्रसिद्ध हैं; लगभग तीन वर्ष तक मासिक 'हिंदी-पत्रिका' का प्रकाशन हुआ; श्री रामप्रताप गोंडल अध्यक्ष हैं।

विद्यारंभम् प्रेस एंड बुकडिपो, मुल्लकाल, अलेप्पी (ट्रावनकोर)—मलयालम और तामिल साहित्य के प्रकाशक, अब हिंदी प्रकाशनों की ओर रुचि बढ़ी है।

विद्यार्थी-पुस्तक-मंदिर, मोतीझील, मुजफ्फरपुर—लगभग २५ पुस्तकें प्रकाशित; श्री जगतनारायण गुप्त व्यवस्थापक हैं।

विद्याविभाग, काँकरोली, मेवाड़—लगभग १५ पुस्तकें छप चुकी हैं जिनमें कई प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के आधार पर संपादित और कई वल्लभ संप्रदाय से संबंधित हैं।

विनय-प्रकाशन-मंदिर, इंदौर—प्रकाशित पुस्तकों में उग्रजी का उपन्यास 'जीजी जी' है; श्रीरामकृष्ण भार्गव अध्यक्ष हैं।

विनोद-पुस्तक-मंदिर, अस्पताल मार्ग, आगरा—लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित; 'पं० नेहरू' नामक अभिनंदन-ग्रंथ प्रसिद्ध प्रकाशन;

श्री राजकिशोर अग्रवाल अध्यक्ष हैं।

विप्लव-कार्यालय, शिवाजी मार्ग, लखनऊ—१९१९ से प्रारंभ; अब तक लगभग २५ पुस्तकें प्रकाशित जिसमें दादा कामरेड, पिंजड़े की उड़ान, देशद्रोही, मानव के रूप आदि प्रसिद्ध हैं; कई वर्षों तक 'विप्लव' और 'विप्लवी ट्रैक्ट' का प्रकाशन किया; श्रीमती प्रकाशवती पाल व्यवस्थापिका हैं।

विभु-प्रकाशन, लखपतराय, गली, इलाहाबाद—श्री विद्याभूषण 'विभु' लिखित चार पुस्तकें प्रकाशित; श्री विमिलेश अध्यक्ष हैं।

विशाल-भारत बुकडिपो, कलकत्ता—प्रकाशित पुस्तकों में शुक-पिक, भेड़ियाधसान, कुमुदिनी आदि प्रसिद्ध हैं; श्री अयोध्यासिंह अध्यक्ष है।

विश्वविद्यालय, लखनऊ—पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत गवेषणात्मक निबंध और ब्रजभाषा सूर-कोश आदि दो-तीन महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित किये हैं; श्री डा० दीनदयालु गुप्त अध्यक्ष हैं।

वीर-सेवा-मंदिर, सरसावा, सहारनपुर—जैन-धर्म विषयक कई पुस्तकें प्रकाशित, मासिक 'अनेकांत' का भी प्रकाशन होता है; श्री जुगलकिशोर मुख्तार अधिष्ठाता हैं।

व्रजसाहित्य-मंडल - मथुरा—व्रजभाषा और साहित्य-संबंधी ७-८ ग्रंथ प्रकाशित किये हैं जिनमें व्रज की लोक कहानियाँ, व्रज-लोक-संस्कृति मुख्य हैं।

शक्ति-पब्लिकेशंस, माडेल टाउन, लुधियाना — दो पुस्तकें प्रकाशित; दो तीन प्रेस में हैं।

शारदा-शांति-साहित्य-सदन, केवलारी, पथरिया, सागर (मध्य-प्रदेश)—लगभग २५ पुस्तकें प्रकाशित; 'परिचय-पारिजात' मासिक का प्रकाशन भी होता है; श्री दुर्गानारायण वीरत्र्यईश अध्यक्ष हैं।

शिव-प्रकाशन, अस्पताल मार्ग, आगरा—लगभग २०पुस्तकें प्रकाशित; अधिकतर पाठ्य पुस्तकें हैं।

शिवाजी-प्रकाशन-मंदिर, सुंदरबाग, लखनऊ—लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें पद्मावत का भाष्य, अनुरागिनी प्रमुख हैं; श्री राधाबाई अध्यक्षा हैं।

शिवाजी बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ—स्थापित १६४२; दस पुस्तकें प्रकाशित जिनमें छब्बीस कवियों की समालोचना प्रमुख है; श्री कंठराव भट्ट व्यवस्थापक हैं।

शिशु-ज्ञान-मंदिर, शिशु-प्रेस, प्रयाग—१६१६ में स्व० श्री सुदर्शनाचार्य द्वारा स्थापित; प्रकाशित बालोपयोगी पुस्तकों की संख्या१०० है; लगभग चौतीस वर्षों से मासिक 'शिशु' का प्रकाशन हो रहा है; श्री सत्यवान शर्मा अध्यक्ष हैं।

श्यामकाशी प्रेस, मथुरा—१८७० में स्थापित; कई धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित; श्री हीरालाल संचालक हैं।

श्रीराम मेहरा एंड कंपनी, माईथान, आगरा — लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें अधिकांश पाठ्य ग्रंथ हैं; साहित्यिक पुस्तकों में प्राचीन कवियों की काव्यसाधना प्रमुख है; स्वयं अध्यक्ष हैं।

संगीत-कार्यालय, हाथरस—स्थापित १६३२; संगीत-विषयक लगभग तीस पुस्तकें प्रकाशित; मासिक 'संगीत' का प्रकाशन भी होता है; श्री प्रभुलाल प्रबंधक हैं।

सत्याश्रम, वर्धा— स्थापित १६३६; अधिकतर स्वामी सत्यभक्त की कृतियाँ प्रकाशित की हैं; पहले 'सत्य-संदेश', 'नयी दुनियाँ' छपते थे, अब 'संगम' छप रहा है।

सरस्वती-प्रकाशन, कानपुर—एक उपन्यास 'समस्या' प्रकाशित, कई प्रेस में हैं।

सरस्वती - प्रकाशन-कार्यालय, मथुरा—धार्मिक और छात्रोपयोगी ग्रंथों के नये प्रकाशक; हिंदी-अँगरेजी-कोश छाप रहे हैं।

सरस्वती - प्रकाशन - मंदिर, आरा—लगभग तीन वर्ष तक 'बालकेसरी' मासिक का प्रकाशन हुआ; १० पुस्तकें प्रकाशित; श्री-देवेन्द्रकिशोर जैन व्यवस्थापक हैं।

सरस्वती - प्रकाशन - मंदिर, जार्ज टाउन, प्रयाग—प्रकाशित पुस्तकों में इतिहास प्रवेश, पाँच कहानियाँ आदि मुख्य हैं; लगभग तीन वर्षों से कहानी-मासिक 'छाया' का प्रकाशन हो रहा है; श्री सुशील वर्मा एम०ए० अध्यक्ष हैं।

सरस्वती प्रेस, बनारस कैंट—स्व० श्रीप्रेमचंद जी द्वारा स्थापित प्रसिद्ध प्रकाशन-संस्था; १०० के

लगभग पुस्तकें प्रकाशित; जाग्रत-महिला-साहित्य, हंस-पुस्तक-माला, गल्पसंसारमाला, प्रगतिशील पुस्तकें आदि का प्रकाशन हुआ; श्रीप्रेमचंद जी द्वारा संचालित 'हंस' और 'कहानी' मासिक पत्रों का भी प्रकाशन हुआ; कई वर्ष तक साप्ताहिक 'जागरण' का प्रकाशन भी किया; इस समय श्री श्रीपतराय व्यवस्थापक हैं।

सरस्वती - मंदिर, जतनबर, बनारस—लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित; अधिकतर आलोचनात्मक हैं; 'जौहर' प्रमुख है।

सरस्वती-सदन, जालोरी गेट, जोधपुर—५ पुस्तकें प्रकाशित; तारा. जी. एंड संस अध्यक्ष हैं।

सस्ता-साहित्य-मंडल, दिल्ली—राष्ट्रीय एवं नैतिक साहित्य के प्रकाशक; १९२५ में अनेक धनी-मानी विद्वानों द्वारा स्थापित; अब तक लगभग तीन सौ पुस्तकें प्रकाशित; सर्वोदय-ग्रंथ-माला, टाल्सटाय-ग्रंथावली, गांधी-साहित्यमाला आदि मालाओं के अंतर्गत सुरुचिपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित कीं; 'जीवन-साहित्य' नामक पत्र भी कई वर्षों से प्रकाशित किया; मेरी कहानी, विश्व-इतिहास की झलक, गाँधी-अभिनंदन - ग्रंथ; संक्षिप्त आत्मकथा आदि प्रकाशन मुख्य हैं; श्री मार्तंड उपाध्याय इस समय व्यवस्थापक हैं।

साधना-सदन, ६६ लूकरगंज, प्रयाग—लगभग २५ पुस्तकें प्रकाशित; अधिकतर श्री रामनाथ सुमन का जीवनोपयोगी साहित्य प्रकाशित हुआ; स्वयं अध्यक्ष हैं।

सावन-भादों-प्रकाशन-मन्दिर, अरविंद कुटीर, गोंदिया, (मध्य प्रदेश)—दो तीन पुस्तकें प्रकाशित; 'सावन-भादों' मासिक भी प्रकाशित होता है।

साहित्य-कार्यालय, दारागंज, प्रयाग—१९२२ में स्थापित; अब तक कई पुस्तकें प्रकाशित जिनमें 'चोंच महाकाव्य' प्रसिद्ध है; श्री सिद्धिनाथ दीक्षित संचालक हैं।

साहित्य - निकुंज, यूनिवर्सिल प्रेस, शिवचरण लाल रोड, इलाहाबाद—लगभग २० विविध विषयक पुस्तकें प्रकाशित।

साहित्य - निकेतन, दारागंज, प्रयाग—प्रकाशित पुस्तकों में रामू-

श्यामू, भैंसासिंह, नर्त्तकी, महाभारत की कहानियाँ मुख्य हैं।

साहित्यनिकेतन, श्रद्धानन्दपार्क, कानपुर—१९३८ में स्थापित; कई पुस्तकें प्रकाशित जिनमें मानव, भारतीय वैज्ञानिक, संस्कृत साहित्य की रूपरेखा आदि प्रमुख हैं; अनेक साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना है; प्रसिद्ध लेखक श्री श्यामनारायण कपूर, बी० एस०-सी० संचालक हैं।

साहित्यभवन लि०, जीरो रोड, प्रयाग—लगभग १२५ विविध विषयक पुस्तकें प्रकाशित; राजर्षि श्री पुरुषोत्तम दास टंडन द्वारा स्थापित; संत कबीर, विदेशों के महाकाव्य, कबीर का रहस्यवाद आदि प्रकाशन मुख्य हैं।

साहित्य-रत्न-भंडार, ४ महात्मा गाँधी मार्ग, आगरा—स्थापित १९१९; लगभग ७० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें अधिकतर आलोचनात्मक हैं; मासिक 'साहित्य-संदेश' का भी प्रकाशन कई वर्षों से होता श्री महेन्द्र संचालक हैं।

साहित्य-रत्नमाला-कार्यालय, २० धर्मकूप, बनारस — लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; प्रामाणिक हिंदी-शब्द-कोश अच्छी हिंदी और हिंदी-प्रयोग प्रकाशन प्रमुख हैं; श्रीरामचंद्र वर्मा संचालक हैं।

साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी—श्री रामकिशोर गुप्त द्वारा स्थापित; लगभग साठ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें साकेत, पंचवटी, मेघनादवध, भारत-भारती, झूठ-सच आदि मुख्य हैं; हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि बाबू मैथिलीशरण जी गुप्त और उनके अनुज बाबू सियाराम शरणजी की प्रायः सभी रचनाएँ यहीं छपी हैं श्रीचारुशीलाशरण गुप्त अध्यक्ष हैं।

साहित्य-कार्यालय, सुइथाकलाँ, जौनपुर—१९१८ में अंबिकादत्त त्रिपाठी द्वारा स्थापित; पन्द्रह पुस्तकें प्रकाशित; श्रीरामनारायण मिश्र व्यवस्थापक हैं।

साहित्य-सेवा-सदन, बनारस—लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी जिनमें भ्रमर-गीत-सार मुख्य है।

साहित्य-सौध, १५ बंकिम-चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता १२—

लगभग ५ समालोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित।

सुलभ साहित्य - सदन, गया —६ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें श्रीकृष्ण-संदेश मुख्य है।

सुषमा-साहित्य-मंदिर (भारत प्रकाशन), १६२ जवाहरगंज,जबल पुर—लगभग २४ पुस्तकें प्रकाशित ; सुभद्रा कुमारी चौहान-साहित्य पूरा यहीं से प्रकाशित हुआ ; 'गीतांजलि' का हिंदी अनुवाद प्रमुख है।

हिंद किताब्स लि०,२६१-६३ हार्नबी रोड, बम्बई—स्थापित १६४४; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित जिसमें सुदर्शन जी की बालोपयोगी पुस्तकें प्रमुख हैं।

हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय, हीराबाग, बंबई— श्री नाथूराम प्रेमी द्वारा १६१३ में स्थापित ; सबसे पहला ग्रंथ स्व० पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी-कृत 'स्वाधीनता' (जानस्टुअर्ट मिल की 'लिबर्टी' का अनु०) निकाला था ; अब तक इसकी विविध पुस्तक-मालाओं में लगभग २०० ग्रंथ निकल चुके हैं ; रविबाबू, द्विजेन्द्रलाल, शरचन्द्र चटर्जी आदि के प्रसिद्ध ग्रंथों के सुंदर और सस्ते अनुवाद प्रकाशित करने का सौभाग्य इसे प्राप्त हुआ है।

हिंदी - ज्ञान - मंदिर लि०, २६ चर्चगेट स्ट्रीट, फोर्ट, बंबई —विविध विषयों की लगभग २१ पुस्तकें प्रकाशित।

हिंदी-परिषद (बंगीय), १५ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता १२ —४-५ ग्रंथ प्रकाशित किये हैं जिनमें मीरा - स्मृति - ग्रंथ मुख्य है।

हिंदी-परिषद(विश्वविद्यालय), प्रयाग—स्था० – १६३२ ; 'कौमुदी' वार्षिक निकलती है ; हिंदी-विभाग के अंतर्गत अनुसंधान-कार्य के फलस्वरूप तैयार कई महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित किये हैं जिनमें सेनापति का कवित्व-रत्नाकर (संपादित), नंददास (संपादित), सूरदास, आधुनिक हिंदी-साहित्य आदि मुख्य हैं।

हिंदी-पुस्तक-भंडार, हीराबाग, सी. पी. टैंक, बंबई—लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; मासिक 'पुस्तक-पत्रिका' का भी कुछ समय तक

प्रकाशन हुआ; श्री भानुकुमार जैन अध्यक्ष हैं।

हिंदी-प्रचारक-मंडल, अमीनाबाद, लखनऊ—लगभग १५ पुस्तकें प्रकाशित; श्री रामदास मिश्र अध्यक्ष हैं।

हिंदी-प्रेस, कटरा, प्रयाग—लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित; 'विद्यार्थी', 'खिलौना', 'विभोर' आदि बालोपयोगी मासिक भी छपते हैं; श्री शिवनंदन शर्मा अध्यक्ष हैं।

हिंद-बुक-स्टाल, त्रिवेंद्रम—विद्यार्थी-उपयोगी हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन की योजना है; श्री एस० दामोदरन पिल्लई व्यवस्थापक हैं।

हिंदी-भवन, जालंधर- पंजाब की प्रसिद्ध प्रकाशन-संस्था; लगभग बीस पुस्तकें प्रकाशित कीं जिनमें साहित्य-मीमांसा, सुकवि-समीक्षा, कामायनी का सरल अध्ययन मुख्य हैं; बटवारे में हिंदी का विशाल-भंडार नष्ट कर दिया गया; अब लाहौर छोड़कर जालंधर और प्रयाग में कार्य कर रहे हैं; श्री इंद्रचंद्र नारंग प्रयाग-शाखा के स्वामी हैं।

हिंदी-समाज, विश्वविद्यालय, लखनऊ—हिंदी विभाग के अंतर्गत साहित्यिक आयोजनों का संचालन करने वाली संस्था; एम० ए० के लिए स्वीकृत थीसिसों के संपादित संस्करण प्रकाशित कर रहे हैं।

हिंदी-साहित्य-कुटीर, बनारस—लगभग २५ समालोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित; वियोगी हरि-कृत विनय-पत्रिका की टीका प्रमुख है।

हिंदी-साहित्य-सदन— किरथरा, मक्खनपुर, मैनपुरी—कई पुस्तकें प्रकाशित जिनमें प्राणों का सौदा, शिकार, बोलती प्रतिमा आदि मुख्य हैं।

हिंदी-साहित्य-समिति, बिड़ला कालेज, पिलानी, जयपुर राज्य—**स्था०**—१८ सितम्बर १९३०, 'हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तक प्रकाशित की है।

हिंदी - साहित्य - सम्मेलन, प्रयाग—हिंदी की मुख्य प्रचारक तथा प्रकाशन-संस्था, माननीन श्रीपुरुषोत्तमदास टंडन द्वारा स्थापित; लगभग डेढ़ सौ पुस्तकें निम्न मालाओं में प्रकाशित—सुलभ साहित्यमाला, बालसाहित्यमाला

आधुनिक कविमाला, वैज्ञानिक पुस्तकमाला, विविध; अनेक योग्य विद्वानों द्वारा संचालित; सम्मेलन से त्रैमासिक सम्मेलन पत्रिका भी प्रकाशित होती है। अष्टछाप और वल्लभ-संप्रदाय, हिंदी काव्य में प्रकृति-चित्रण, भारतीय ग्राम अर्थशास्त्र, भोजपुरी ग्राम्यगीत, तपोभूमि, हिंदू-राज्य-शास्त्र, वायु-पुराण, पालि साहित्य का इतिहास आदि प्रकाशन महत्वपूर्ण हैं।

हिन्दुस्तानी ऐकेडेमी—इलाहाबाद—भिन्न-भिन्न विषयों की उच्चकोटि की पुस्तकें प्रकाशित पुस्तकों की संख्या लगभग दो दरजन हैं जिनमें बेलिक्रिसन रुकमणी री, सतसई सप्तक, शंकराचार्य, भारतेंदु हरिश्चंद्र, मराठी साहित्य का इतिहास, हर्षवर्धन, हिंदी-पुस्तक - साहित्य, पाटलीपुत्र की कथा आदि प्रमुख हैं; 'हिंदुस्तानी' नामक तिमाही पत्रिका भी प्रकाशित होती है।

हिंदुस्तानी पब्लिकेशंस, शाहगंज, इलाहाबाद — कहानी-उपन्यास की लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित; श्रीगयाप्रसाद तिवारी बी० काम० अध्यक्ष हैं।

हिंदुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, आलोक प्रेस, बनारस— श्री स्व० प्रेमचंद के द्वितीय पुत्र श्रीअमृतराय द्वारा स्थापित; 'हंस' मासिक का प्रकाशन अब यहीं से होता है; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; स्वयं श्री अमृतराय अध्यक्ष हैं।

हिंदुस्तानी बुकडिपो, फतेहगंज लखनऊ—श्रीविष्णुनारायण भार्गव द्वारा संस्थापित; १०० के लगभग पुस्तकें प्रकाशित जिनमें श्रीमद्-भागवत, आँखों की थाह, निकट की दूरी, लखनऊ-गाइड आदि मुख्य हैं; इस समय श्रीविष्णु-नारायण भार्गव व्यवस्थापक हैं।

तीसरा खंड समाप्त

हिंदी-सेवी-संसार

चौथा खंड

हिंदी-पत्र-पत्रिकाएँ

अंकुश—१९४७ में प्रकाशित साप्ता० ; **संपा०**— श्री लक्ष्मी-नारायण गौड़; मू०—४); प०—लालमणि प्रेस, फरुखाबाद।

अकेला—१९४८ से प्रकाशित जातीय साप्ताहिक ; **संचा०**—श्री विश्वनाथ प्रसाद गुप्त ; **संपा०**—श्री शिवनारायण शर्मा; प०—तिनसुकिया, आसाम।

अखंड ज्योति — १९३९ से प्रकाशित मासिक ; **संस्था० और संपा०**—श्री राम शर्मा आचार्य ; **सह० संपा०** — श्री रामचरण महेन्द्र; मू०—२॥) ; प०—अखण्ड-ज्योति-प्रेस, मथुरा।

अग्रदूत—१९४२ से प्रकाशित राष्ट्रीयताप्रधान साप्ता० ; **संपा०**—श्री के० पी० वर्मा ; प०—रायपुर।

अग्रवाल—नवम्बर १९४६ से प्रकाशित जातीय मासिक; **संपा०**—श्री भद्रसेन गुप्त ; मू०—४) ; प०—२४ क्लाइव स्क्वायर, नयी दिल्ली।

अग्रवाल-पत्रिका—१९४८ से प्रकाशित जातीय मासिक ; **संपा०**—सर्वश्री मनोहरलाल गर्ग और गंगाशरण ; **सहा०**—श्री राधा कृष्ण कसेरा ; म०—५) ; प०—हाथरस।

अग्रवाल-हितैषी — जातीय मासिक ; **संपा०**— श्री पूर्णचंद अग्रवाल ; मू०—५) ; प०—हींग की मंडी, आगरा।

अतीत — पद्यात्मक कहानी प्रधान मासिक ; नवम्बर १९४७ से प्रकाशित ; **संपा०**—श्री देवी दास शर्मा ; **सहा०**—श्री निर्भय; मू०—६) ; प०—अतीत महल, हाथरस।

अदिति—आध्यात्मिक त्रैमासिक; **संपा०**—डा० इन्द्रसेन; वि०—योग व दर्शन सम्बन्धी स्वस्थ मानसिक भोजन प्रस्तुत करती है ; मू०—५) ; प०—पो० बा० ८५, नयी दिल्ली तथा पांडीचेरी।

अनुभूत योगमाला—१९२१ से प्रकाशित आयुर्वेद-प्रचारिणी पत्रिका जो पहले पाक्षिक रूप में निकलती थी; **संपा०**—श्री विश्वेश्वरदयालु वैद्यराज ; मू०—४); प०—बरालोकपुर, इटावा।

अनेकान्त— १९३२ से प्रकाशित जैनधर्म-सम्बन्धी मासिक ;

संपा०—श्री युगलकिशोर मुख्तार; **मू०**—४) ; प०—वीर-मन्दिर, सरसाँवा, सहारनपुर।

अभिनय—अगस्त १९३८ से प्रकाशित सिनेमा-सम्बन्धी मासिक; **संचा०-संपा०**—श्री विश्वनाथ बूबना और श्री रणधीर; **मू०**—६); प०—३५, बड़तल्ला मार्ग, कलकत्ता।

अभ्युदय—कहानी-प्रधान साप्ताहिक; १९४२ से प्रकाशित; मू० ७); श्री नरोत्तमप्रसाद नागर प्रधान संपादक हैं; प०—प्रयाग।

अमरज्योति—३० अगस्त १९४८ से प्रकाशित समाजवादी दृष्टिकोण का साप्ता०; **संपा०**—श्री नारायण चतुर्वेदी; **मू०**—६); **प०**—चौड़ा रास्ता, जयपुर।

अमर-ज्योति—१९४८से प्रकाशित कांग्रेसी और गाँधीवादी मासिक; **संचा०**—श्री हरिवंश मिश्र; **संपा०**—सर्व श्री सूर्यवंश मिश्र, ललित श्रीवास्तव, राधेकृष्ण, भँवरलाल; **प०**—११।२०९,सूटरगंज,कानपुर।

अमर-ज्वाला—१९४८ से प्रकाशित; **संपा०**—श्री डोगीलाल अग्रवाल; प०—बेलनगंज, आगरा।

अमर भारत—**संस्था०**—श्री गोस्वामी, श्रीगणेशदत्त जी; १९४८ से प्रकाशित; **मू०**—३४); **प०**—दरियागंज, दिल्ली।

अरुण—मई १९३२ से प्रकाशित मासिक; **सम्पा०**—श्रीपृथ्वीराज मिश्र; **मू०** ४॥); **प०**—अरुण प्रेस, मुरादाबाद।

अरुणोदय—हिंदू महासभाई नीति का समर्थक १९३५ से प्रकाशित; **सम्पा०**—श्री आदित्य कुमार बाजपेयी; **मू०** ६॥); **प०**—हिंदू राष्ट्र-पब्लिकेशंस, इटावा।

अर्थसंदेश—फरवरी १९४७ से प्रकाशित अर्थशास्त्रीय त्रैमासिक; **संपा०**—श्री भगवतशरण अचौलिया; **सहा०**—श्रीदयाशंकर नाग; **मू०**—६); प०—सेकसरिया कामर्स कालेज, दिल्ली।

अलवर-पत्रिका—मत्सत्यराज की राष्ट्रीय पत्रिका; १९४३ से प्रकाशित साप्ता०; **संपा०**—श्री मोदीकुंज बिहारी लाल गुप्त; **मू०**—५); प०—अलवर प्रेस, अलवर।

अलीगढ़ हेराल्ड—१९३९ से

प्रकाशित साप्ता० ; प०—मास्टर भवन, द्वारकापुरी, अलीगढ़ ।

अवध — १९३२ से प्रकाशित साप्ता० ; भूत० संपा०—सर्वश्री राजेश्वर सहाय, गीतार्थी जी, विश्वंभरनाथ, पशुपतिनाथ, शिवनाथसिंह, रामप्रतापसिंह, श्यामसुंदर शुक्ल ; वर्त० — शिवनाथसिंह कान्हेय; मू०–६); प०–प्रतापगढ़ ।

अशोक—१९४८ से प्रकाशित; संचा०—श्री रामकृष्ण भार्गव ; संपा०—श्रीकृष्ण चन्द्र मुदगल, प०—४, महारानी मार्ग, इन्दौर ।

अशोक—१९४७ से प्रकाशित मासिक ; संपा० — श्री सुधीर भारद्वाज ; मू०—५॥) ; प— मोरी गेट, दिल्ली ।

आँधी—१९४७ से प्रकाशित मासिक ; संपा०—श्री कमलापति त्रिपाठी ; प०—संसार-प्रेस, गायघाट, काशी ।

आँधी-पानी—हास्यरस-प्रधान मासिक ; संपा० मंडल—सर्वश्री विक्षिप्त, राजाराम पांडेय और प्रेमशंकर मिश्र ; मू०—६) ; प०—गाँधीनगर, कानपुर ।

आगामी कल—१९४१ से प्रकाशित; आरंभ में खँडवा से मासिक रूप में छपता था, १५ अगस्त १९४७ से इंदौर और खँडवा से साप्ताहिक रूप में निकलता है; संपा०—श्री प्रयागचंद्र शर्मा ; मू०—६); प०—(१) खँडवा; (२) ३९, महात्मा गाँधी मार्ग, इंदौर ।

आज–निर्भीक राष्ट्रीय दैनिक; प्रारंभ में श्रीबाबूराव विष्णु-पराड़कर प्रधान संपादक थे; प०–ज्ञानमंडल यंत्रालय, काशी ।

आज—काशी के दैनिक का साप्ताहिक संस्करण; मू० ६); संपा०— श्री राजवल्लभ सहाय; प०—बनारस ।

आजकल—मई १९४५ में श्री अनंत मराल शास्त्री के संपादकत्व में प्रकाशित राजकीय मासिक; संपा०—श्रीदेवेंद्र सत्यार्थी; सहा० –श्री करुणाशंकर पांड्या, और श्री केशवगोपाल निगम; 'नववर्षांक' और 'गांधीअंक' विशेषांक निकाले हैं; मू०—६); प०—प्रकाशन-विभाग, ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली ।

आजाद हिंद — १९४७ से प्रकाशित साप्ता०; संपा०—डा०

कैलाश ओ० पी० शाखाल; प०—मंगलवाड़ी, गिरगाँव, बंबई।

आत्मधर्म—१६४५ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्रीरामचंद्र; मू०—३); प०—अनेकांत मुद्रणालय, मोटा आँकाशीया, काठियावाड़।

आदर्श—१६४० के लगभग समाजवादी और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से प्रकाशित; संचा०—श्री अवधकिशोरसिंह; संपा०—श्री विश्वनाथसिंह; मू०—७); प०—१६८।१ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

आदर्श—अप्रैल १६४८ से से प्रकाशित मासिक; समाजवादी दृष्टिकोण; संपा०—जवाहर चौधरी; मू०—५॥); प०—१३४६, पीपल महादेव, दिल्ली।

आदिवासी—१६४६ से प्रकाशित बिहार राजकीय विभाग द्वारा संचालित साप्ता०; संपा०—श्री राधाकृष्ण; मू०—१॥); प०—बिहार राजकीय प्रेस, राँची।

आपबीती—१६४६ से प्रकाशित कहानी प्रधान मासिक; संपा०—श्रीकृष्णप्रसाद सेठ; प०—रहमान बिल्डिंग, चर्चगेट स्ट्रीट, बंबई १।

आयुर्वेद—जूलाई १६४८ से प्रकाशित आयुर्वेद प्रचारक मासिक पत्र; संपा०—श्री रामनारायण शर्मा (अध्यक्ष श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद-भवन); मू०—४); प०—संख्या १, गुप्तलेन, जोड़ासाकूँ, कलकत्ता।

आयुर्वेद—१६४७ से प्रकाशित स्वास्थ्य, और आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली-संबंधी त्रैमासिक; संपा०—श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत; मू०—३); प०—श्यामसुंदर रसायनशाला, काशी।

आयुर्वेद महासम्मेलन-पत्रिका—१६१३ के लगभग प्रकाशित आयुर्वेद-संबंधी मासिक; संपा०—श्री आशुतोष मजूमदार; मू०—५); प०—चाँदनी चौक, दिल्ली।

आयुर्वेद-सेवक—१६४८ से प्रकाशित आयुर्वेद-प्रचारक मासिक; संपा०—सर्वश्री गुलराज शर्मा मिश्र, शिवकरण शर्मा छंगाणी; मू०—५=); प०—नयी शुक्रवारी, नागपुर।

आरोग्य — जूलाई १९४७ से प्रकाशित स्वास्थ्य-संबंधी मासिक; **संचा० संपा०**— श्री विठ्ठलदास मोदी ; मू० — ४) ; प०— गोरखपुर ।

आर्य-जगत—१९४० से प्रकाशित साप्ताहिक; अवैतनिक संपा० —श्री रामचन्द्र शर्मा; प०—आर्य-समाज, किला, जालंधर ।

आर्यभानु — १९४६ से प्रकाशित साप्ताहिक ; संपा० — श्री विनायक राव विद्यालंकार ; सहा० —श्री कृष्णदत्त; प०—जामबाग, हैदराबाद, दक्षिण ।

आर्यमहिला — आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद की मासिक मुखपत्रिका; संपा०—श्रीमती सुंदरी देवी एम० ए०, बी० टी० और श्री लीलाधर शर्मा; 'सती - अंक' 'परलोकांक', 'धर्मांक' आदि निकाले ; मू० ५) ; वि०—पारिश्रमिक दिया जाता है ; प०— जगतगंज, बनारस ।

आर्यमित्र— आर्यसमाजी साप्ताहिक ; लगभग ३५ वर्षों से निरंतर प्रकाशित ; तब से अब तक अनेक विद्वान् संपादन कर चुके हैं ; प० —हिल्टन रोड, लखनऊ ।

आर्यवीर जागृति—विदेश में प्रकाशित हिंदी-पत्रिका ; संपा०— प० लक्ष्मणदत्त ; प०—२२, फर्कुंतार स्ट्रीट, पोर्ट लुइस, मोरिशस ।

आर्यसेवक—आर्य प्रतिनिधि सभा विदर्भ प्रांत का पाक्षिक मुखपत्र ; १९०६ में स्थापित ; भूत० संपा०—ठा० शेरसिंह ; संपा० —श्री इंद्रदेवसिंह, एम० एस-सी० ; प०—अकोला, बरार ।

आर्यावर्त्त—बिहार का पुराना राष्ट्रीय दैनिक ; अनेक विद्वानों द्वारा संपादित ; प०—पटना ।

आलोक—१९४७ से प्रकाशित साप्ता० ; संपा०—श्री हरिनारायण शर्मा और श्री ताराचंद यादव ; मू०—६) ; प०—सीता बर्डी, नागपुर ।

आलोक — काँग्रेसी नीति का समर्थक साप्ता० ; १९३६ से प्रकाशित, १९३९ में बंद, १९४४ में पुनः प्रका० ; संपा०—विश्वम्भर प्रसाद शर्मा ; सहा०—भूत०— कृष्णलाल हंस, प्रयागदत्त शुक्ल ; वर्त०—गोविंदसिंह ; विशे० — 'दीपावली' और 'स्वाधीनता-अंक';

मू०—४) ; प०—नागपुर।

इंडियन टाइम्स—विदेश में प्रकाशित हिंदी मासिक ; संपा०—श्री रामसिंह ; मू०—६ शिलिंग ; प०— इंडियन टाइम्स प्रेस, पो० बा० ३४१, सूवा, फीजी।

इन्दौर-समाचार—१६४४ से प्रकाशित ; संपा०—श्री कमलाकांत मोदी ; प०—गांधी मार्ग, इन्दौर।

इतिहास—१५ अगस्त १६४८ से प्रकाशित मासिक ; मू०—४); संपा० और प्रका०— श्रीब्रिशन स्वरूप ; प०—कटरा बड़ियान, दिल्ली।

इन्कलाब—पाक्षिक; संपा०—श्री राजाराम पांडेय और श्री विक्षिप्त; मू०—३); प०—गाँधीनगर, कानपुर।

उजाला—१६३२ से प्रकाशित दैनिक; संपा०—श्रीगणपतिचन्द्र केला ; मू०—२०) ; प०—उजाला प्रेस, आगरा।

उज्ज्वल—दिसंबर १६४७ से प्रका० मासिक; संपा—श्रीराम अट्रावलकार ; सहा० संपा०—सर्व श्री चां० ग० चौधरी, वि० आ० चौधरी ; मू०—४); प०—८८, जिल्हापेठ, जलगाँव, पूर्व खानदेश।

उत्थान—१४ फरवरी १६४८ से प्रकाशित साप्ता० ; संपा०—श्री मातादीन भगेरिया ; मू०—६) ; प०—राजस्थान प्रिंटिंग-वर्क्स, जयपुर।

उदय—जून १६४६ से प्रकाशित उद्योग संबंधी मासिक ; संपादक श्री कपूरचंद जैन मू०—६); वि०—मौलिक लेखों पर ४) प्रति पृष्ट तक पारिश्रमिक दिया जाता है; चार विशेषांक प्रकाशित किये हैं। प०—न्यूज पबलिकेशंस, नया कटरा, दिल्ली।

उदय — १६४८ से प्रकाशित साप्ता० ; संपा०—श्री राधेलाल शर्मा 'हिमांशु'; सहा० — श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव ; 'सुभद्रा अंक' प्रकाशित किया ; मू०—५); प०—शांति प्रेस, नरसिंहपुर।

उद्यम—१६१८ के लगभग प्रकाशित व्यवसाय और उद्योग-धन्धों से संबंधित पत्र ; संपा०—श्री वि० ना० वाडेगाँवकर ; वि०—'कृषि-अंक', 'फोटोग्राफी-

अंक' आदि निकाले; मू०—७) ; प०—धर्मपेठ, नागपुर।

उद्योग—व्यापार संबंधी पत्रिका जो मार्च १९४६ से 'नवभारत-प्रकाशन द्वारा संचालित है ; संपा०—श्री बी० डी० मुकर्जी तथा श्रीकेदारनाथ गुप्त; मू०—५); पू०—लिबर्टी प्रेस, दारागंज, प्रयाग।

उषा — नारी-समस्या - संबंधी मासिक; मू०—६); प०—जम्मू, (काश्मीर)।

ऊषा—१९४३ से प्रकाशित साप्ता०; संचा०—श्री राजेंद्रप्रसाद अग्रवाल; संपा०—श्री पन्नालाल महतो 'हृदय'; भूत० संपा०—श्री शारदानंदन पांडेय और श्री हंसकुमार तिवारी; 'पत्रकार-अंक' विशेषांक निकाला; मू०—५) ; प०—ऊषा-कार्यालय, गया।

एकता—१९४८ में प्रकाशित साप्ता०; संपा०—श्री प्रहलाद काकानी; मू०—६); प०—ढाबा रोड, उज्जैन।

एकता—हरियाणा प्रांत का राष्ट्रीय साप्ताहिक; १९४२ में स्थापित; भूत० संपा०—श्रीमुरलीधर दिनोदिया, बी० ए०; इस समय श्रीरुद्रमलजी संपादक हैं; मू०—५); प०—भिवानी, हिसार, पंजाब।

ओसवाल—१९३४ से प्रकाशित पाक्षिक; संपा०—श्रीमूलचंद बोहरा; मू०—४॥ ; प०—रोशन मोहल्ला, आगरा।

कन्नौज-समाचार—१९३८ से प्रकाशित मासिक ; संपा०—श्री अनीसुल रहमान ; मू०—१॥) ; प०—कन्नौज।

कबीर-संदेश—मासिक पत्र ; संपा०—श्री उदयशंकर शास्त्री ; प०— हरक , पो० सतरिख , बाराबंकी।

कमल—१९४५ से प्रकाशित मासिक ; संपा०— श्री चंद्रशेखर शर्मा ; सहा०—श्री कृष्णचन्द्र-मुद्गल; मू०—६); प०—वकील पुरा, दिल्ली।

कर्मभूमि—१९ फरवरी १९३९ से प्रकाशित साप्ता० ; संपा०—सर्व श्री भक्तदर्शन, भैरवदीन और ललिताप्रसाद नैथाणी ; वि०—१९४२ में कुछ समय तक प्रकाशन स्थगित रहा ; मू०—६) ; प०—लैंसडाउन, गढ़वाल।

कर्मयोग—१६४६ से प्रकाशित मासिक ; संपा०—श्री हरिशंकर शर्मा 'कविरत्न' ; मू०—४) ; प०—गीता-मंदिर-प्रेस, सिकन्दरा, आगरा ।

कर्मवीर—१६३६ से प्रकाशित प्रसिद्ध राष्ट्रीय साप्ताहिक ; पहले १६१६ में जबलपुर से निकला था ; फिर खँडवा से स्व० श्री विष्णुदत्त शुक्ल और स्व० श्री माधवराव सप्रे की स्मृति में प्रकाशित हुआ ; संपा०—श्री माखनलाल चतुर्वेदी; मू०—५); प०—कर्मवीर प्रेस, खँडवा ।

कलकी दुनिया— साम्यवादी दृष्टिकोण लेकर १६४६ से प्रकाशित ; संपा०—श्री गणेशचन्द्र-जोशी ; सहा०— श्री जगदीश 'प्रभाकर' और श्री जगदीश जोशी ; मू०—१०) ; प०—जालोरी द्वार, जोधपुर ।

कलाधर—कविता-प्रधान मासिक ; १६४७ से प्रका० ;संपा०—श्री मूलचन्द भौंर ; सहा०— श्री माधवेश ; मू०—४) ; प०—पाली, मारवाड़ ।

कलानिधि—१६४७ के लगभग प्रकाशित कला संबंधी त्रैमासिक ; संपा० मंडल— सर्व श्री महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त; हुमायूँ कबीर, वासुदेवशरण अग्रवाल, मोतीचंद्र, रविशंकर म० रावल, व्रजमोहन व्यास तथा रायकृष्णदास ; मू०—१६) ; प०—मभूत-कला-भवन, बनारस ।

कल्पना—साहित्यिक मासिक ; संपा० — श्री शिवसिंह चौहान और सुश्री कुमारी संतोष सकसेना; मू०—४।।) ; विशे०—'स्वतंत्रता-अंक' ; प०—भारत प्रेस, जीरो रोड, इलाहाबाद ।

कल्पना— अप्रैल १६४८ से प्रका० मासिक ; संपा०—श्री आनंद और श्रीचंद्रभूषण; मू०—६) ; प०—मेरठ ।

कल्पवृक्ष—१६२२ से प्रका० मासिक ; संपा०—श्री दुर्गाशंकर नागर; मू०— २।।) ; प०—उज्जैन ।

कल्याण— १६२६ से प्रका० धार्मिक मासिक ; संपा०— श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार ; सहा०— सर्व श्री चिम्मनलाल गोस्वामी, पाण्डेय रामनारायणदत्त, गौरीशंकर

द्विवेदी, माधवशरण; शिवनाथ दुबे, रामलाल एवं कृष्णचंद्र अग्रवाल ; वि०—इसकी ग्राहक संख्या १ लाख से भी ऊपर है ; मू०—६॥) में ही विशेषांक तथा शेष ११ अंक मिलते हैं ; साधारण अंकों में भी ठोस सामग्री होती है ; प०—गीता-प्रेस, गोरखपुर ।

कहानियाँ—१६४७ से प्रका० मासिक ; **संपा०**—श्री गुरुप्रसाद उप्पल ; **मू०**—६) ; **प०**—संत-प्रकाशन, कदमकुआँ, पटना ।

कांग्रेस—१६४७ से प्रकाशित साप्ता० ; प०—भोगीपुरा, आगरा ।

कानपुर-समाचार— १६४७ से प्रकाशित साप्ता० ; **संपा०**—श्री बी० अवस्थी; प०—कानपुर ।

कान्यकुब्ज—१६०५ से प्रकाशित जातीय मासिक; **संपा०**—श्री रमाशंकर मिश्र 'श्रीपति'; **मू०**—४); प०—२, हुसैनगंज, लखनऊ ।

कामांजलि—१५ अगस्त १६४८ से प्रकाशित काम-विज्ञान संबंधी मासिक; **संपा०**—श्रीयुत 'प्रभात'; प०—सिवनी, मध्यभारत ।

कामना—अप्रैल १६४७ से प्रकाशित द्वैमासिक; संपादकमंडल में सर्वश्री विजयमिश्र, अमर निर्मल, राजेंद्र सक्सेना (कहानी-विभाग), श्री 'पलायनवादी' (कविता-विभाग) हैं; मू०—४॥); प०—कोटा जँकशन ।

किलकारी—मार्च १६४८ से प्रकाशित बालो० मासिक; **सं०**—श्री दीपचंद छंगाणी; **मू०**—५); प०—नरसिंह दड़ा, जोधपुर ।

किशोर—अप्रैल १६४८ से प्रकाशित किशोरोपयोगी मासिक; **संचा०** — श्री देवकुमार मिश्र; **संपा०**—श्री रघुवंश पांडेय; **वि०**—'उपकथांक', 'रवींद्र-अंक' 'विक्रमाँक', 'कालिदासांक', 'गाँधी-अंक' आदि विशेषांक निकाले; **मू०**—४); प० — बाल-शिक्षा-समिति, बाँकीपुर, पटना ।

किसान—१६४७ से प्रकाशित साप्ता०; **संपा०**—सर्वश्री राजाराम शास्त्री, कृष्णबिहारी अवस्थी, कमलदेव शर्मा; **मू०**—६); प०-कानपुर ।

किसान—१६२० से प्रकाशित साप्ता०; **संपा०**—श्री भटनागर; प०—रकाबगंज, फैजाबाद ।

किसान-संदेश—१९४६ से प्रकाशित साप्ताहिक; संपा०—श्री शिवदयाल श्रीवास्तव; मू०—५); प०—कोटा।

कुमार-बालो० सचित्र मासिक १९३२ से प्रकाशित ; बीच में प्रकाशन स्थगित हुआ ; १५ अगस्त १९४७ से पुनः प्रकाशित ; संपा० — कुँअर सुरेशसिंह ; मू० — ५) ; प०—प्रकाशगृह, कालाकाँकर।

कुमार—१९४४ से प्रकाशित बालो० मासिक; संपा०—श्री राजाराम लोढ़ा; मू०—३); प०—मंदसौर, ग्वालियर।

कृषक—कृषि-संबंधी मासिक ; संपा०—श्री मणिकचन्द्र बोंद्रिया; प०—घाट मार्ग, नागपुर २।

कृषक—१९३७ से प्रकाशित साप्ता०; प०—बक्सर, शाहाबाद।

कृषि—जनवरी १९४६ से प्रकाशित कृषि-संबंधी मासिक; संपा०—श्री माणिकचंद बोंद्रिया; सहा०—श्री गोरेलाल अग्निभोज; मू०—६); प०—धर्मपेठ, नागपुर।

कृषि-संसार—मार्च १९४८ से प्रकाशित; संपा०—श्री शिवकुमार शर्मा; वि०—'कंपोस्ट-विशेषांक', और 'गन्ना अंक' आदि निकाले हैं; मू०—७।); प०—बिजनौर।

कोली राजपूत — १९४० से प्रका० जातीय मासिक; संपा०—श्री एम० आर० तँवर ; प०—अजमेर।

क्षत्राणी—मई १९४८ से प्रका० पाक्षिक; संपा०—श्रीरामपाली भाटी 'प्रभाकर'; मू०—५); प० — क्षत्राणी-सेवा-सदन, जोधपुर।

क्षत्रिय-गौरव — १९४५ से प्रकाशित जातीय साप्ताहिक; संपा० — श्री रावत सारस्वत; मू०—६); प० — राजपूत प्रेस, जयपुर।

क्षत्रिय-वीर—१९४६ से प्रकाशित जातीय साप्ताहिक ; संपा०—कुँवर रूपसिंह भाटी; मू०—८); प०—जोधपुर।

क्षात्र-धर्म संदेश—क्षत्रियों में जागृति उत्पन्न करनेवाला मासिक ; जनवरी १९४२ से संचालित; मू० ३) ; आर्थिक स्थिति संतोष-प्रद; श्रीभूरसिंह राठौर संपादक हैं; पहले जोधपुर से निकलता था, अब जयपुर से प्रकाशित ; प०—

क्षात्र - धर्म साहित्य - मंदिर, जयपुर।

खंडेलवाल जैन - हितेच्छु—१६२६ से प्रकाशित पाक्षिक; **संपा०**—श्रीनेमिचंद्र बालधीवाल; **मू०**—२); प०—मदनगंज, किशनगढ़।

खंडेलवाल जैन-हितेच्छु—१६२४ से प्रकाशित पाक्षिक; **संपा०**—श्री नाथूलाल जैन शास्त्री; **सहा०**—श्री भँवरलाल जैन; **मू०**—२); प०—रंगमहल, इन्दौर।

खत्री-हितैषी—१६३५ से प्रकाशित जातीय मासिक; आरंभ में सर्वश्री हरेकृष्ण धवन, प्रेमनारायण टंडन आदि संपादक थे और बाद में श्री लक्ष्मीनारायण टंडन रहे; प०—लखनऊ।

खादीजगत—२५ जुलाई १६४१ से प्रकाशित त्रैमासिक; **संपा०**—श्रीमती आशादेवी तथा श्री कृष्णदास गाँधी; मू०—६); प०—वर्धा।

खिलौना—१६२६ के लगभग प्रकाशित बालो० मासिक; **संपा०**—श्री रघुनंदन शर्मा; मू०—२॥); प०—नयाकटरा, इलाहाबाद।

गाँव—१६१७ से प्रकाशित ग्रामोत्थान-संबंधी मासिक; **संपा०**—श्री अखौरी नारायण सिंह; **सहा०**—श्री जगदीश प्रसाद श्रमिक; **संपा० मंडल**—सर्वश्री दीपनारायण सिंह, गोरखनाथ सिंह, रामशरण उपाध्याय तथा मथुरा प्रसाद; मू० ४); प०—बिहार कोआपरेटिव फेडरेशन, पटना।

गाँव की बात—१६४७ से प्रकाशित किसानोपयोगी पत्र; **संपा०**—श्री सालिगराम पथिक; मू०—६); प०—श्री मोतीलाल नेहरू मार्ग, प्रयाग।

गीताधर्म—कई वर्ष से प्रकाशित धार्मिक मासिक; **संस्था०**—श्री स्वामी विद्यानंद जी; मू० ४); प०—बनारस।

गोशुभचिंतक—गो-शुभचिंतक मंडल का पाक्षिक मुख-पत्र, १६४२ से संचालित; मू० ३); श्री खेदहरण शर्मा एवं श्री गोवर्धनलाल गुप्त संपादक हैं; प०—गया।

गोसेवक—१६४७ से प्रकाशित गो-सेवा-संबंधी मासिक; **संपा०**—श्री शुकदेव शास्त्री; मू०—५); प०—चौमूँ, जयपुर।

गुरुकुल पत्रिका—१९४८ से प्रकाशित शिक्षा-संस्कृति संबंधी मासिक; संपा०—श्री रामेश वेदी और श्री सुखदेव; मू० — ५); प०—गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरद्वार।

गृहिणी—जनवरी १९४८ से प्रकाशित महिलोपयोगी मासिक; संपा०—सर्वश्री राधादेवीगोयनका, महाबल कुमारी राम, शारदा देवी शर्मा, शकुंतला देवी खरे; प्रबंध-संपा०—श्री विश्वंभरनाथ शर्मा; मू०—६); प०— आलोक प्रेस, नागपुर।

ग्रंथालय—नवंबर १९४८ से प्रकाशित पुस्तकालयविज्ञान संबंधी मासिक; संपा०—श्रीमुरारीलाल नागर, एम० ए०; प०—विश्वविद्यालय ग्रंथालय, दिल्ली।

ग्रहवाणी—वैज्ञानिक फलित ज्योतिष के प्रचारार्थ प्रति पूर्णिमा और अमावास्या को प्रका० पाक्षिक; संपा०—श्री गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' मू०—५); प०—इलाहाबाद।

ग्रामउद्योग—१९४७ से प्रकाशित साप्ता०; संपा०—श्री मोहनलाल हरित्स 'प्रभाकर'; मू०—६); विशे०—'वृक्ष-अंक', 'वृक्षारोपण-अंक', 'स्वाधीनता-अंक', 'दशहरा-अंक', 'दीपावली - अंक'; प० — उदय प्रेस, बैदवाड़ा, दिल्ली।

ग्रामवाणी—पाक्षिक; १५ फरवरी १९४८ से प्रका०; संपा०—श्री रामनारायण उपाध्याय; विशे०— 'गाँधी - स्मृति - अंक' 'स्वतंत्रता-अंक' 'लोक-साहित्यांक', 'सर्वोदय-अंक'; मू०—४); प०—हरीगंज, खँडवा।

ग्राम-संसार—१५ जून १९४८ से प्रकाशित अर्द्ध-साप्ता०; संपा०—श्रीकमलापति त्रिपाठी; मू०—१०); प०—गायघाट, काशी।

ग्रामोद्योग पत्रिका—अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ मगनवाड़ी (वर्धा) की मासिक मुखपत्रिका; संपा०—श्री जे० सी० कुमारप्पा; मू०—२); प०—वर्धा।

ग्राम्यजीवन—फरवरी १९४८ से प्रकाशित ग्रामोपयोगी साप्ता०; संचा०—श्री पन्नालाल 'सरल'; संपा०—श्री रामस्वरूप भारतीय; मू०—५); प०—जारखी, आगरा।

चंडी—शाक्तधर्म की मासिक पत्रिका ; प्रयाग-शाक्त-सम्मेलन की मुखपत्रिका ; १९४१ से प्रका० ; संपा०—पंडित रामदत्त शुक्ल ; मू०— ४) ; प०—कटरा, इलाहाबाद।

चमचम—१९३० के लगभग प्रकाशित बालो० मासिक; संस्था०—श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय; संपा—सर्वश्री विश्वप्रकाश, श्रीप्रकाश, विमलेश ; मू०—२।।); प०—कला-प्रेस, इलाहाबाद।

चाँद—१९२३ से प्रकाशित महिलोपयोगी मासिक; संपा०—सर्वश्री महादेवी वर्मा, नंदकिशोर तिवारी, सत्यभक्त आदि और भूत० श्री नंदगोपालसिंह सहगल वर्त०; 'फाँसी-अंक', 'मारवाड़ी अंक', 'स्वतंत्रता-अंक', 'गाँधी-अंक' आदि विशेषांक निकाले ; मू०—६।।); प०—पो० बा० ३, इलाहाबाद।

चातक—१९४० में स्थापित; पहिले मासिक था अब साप्ताहिक है; श्री लालत्रिभुवन सिंह 'प्रवासी' और श्री हरिवंशसिंह बी० ए० संपादक हैं; मू०—३।।); प०—चातक-प्रेस, प्रतापगढ़ (अवध)।

चारण—१९४८ में प्रकाशित त्रैमासिक जातीय पत्र ; संपा०—श्री देवीदान रत्नू ; मू०— ६) ; प०—मोतीनिवास, उदयमंदिर, जोधपुर।

चित्रपट—अनेक सामयिक विषयों से युक्त साप्ताहिक पत्र ; १९३३ में श्री ऋषभचरण जैन द्वारा संचालित ; अब तक अनेक विद्वान् संपादक रह चुके हैं ; इस समय श्रीसत्येन्द्र श्याम एम० ए० संपादक हैं; प०—९२, दरियागंज, दिल्ली।

चित्रप्रकाश—सिनेमा-पत्र, साप्ताहिक ; प्रधान संपादक श्री करुणाशंकर ; सहा०—श्रीवीरेन्द्र-कुमार त्रिपाठी ; कई वर्षों से प्रका० ; प०—दिल्ली।

चिनगारी—जनवरी १९४८ से प्रका० मासिक ; संपा०—श्रीकुशवाहाकांत ; मू०—६) ; प०—मिर्जापुर।

चेतना—१९४८ से प्रका० साप्ता० ; हिंदू राष्ट्रवाद का समर्थक ; संपा०—श्रीराजारामद्रविड़; मू०—१०) ; प०—आस भैरव, काशी।

चेतना—सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण; १५ अगस्त १६४८ से प्रकाशित; प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है; संपा०—श्री परमेश्वर बगड़का; मू०—४॥); प०—१२४, गायवाड़ी, बंबई २।

चौपाल—१६४७ से प्रकाशित ग्रामोपयोगी मासिक; संस्था०—श्री राजेन्द्र मोहन शर्मा; संपा०—श्री रमेशचंद मिश्र; मू०—४≡); प०—ग्राम-हितैषी-कार्यालय, श्यामबाग, हाथरस।

चौरसिया ब्राह्मण—जातीय मासिक, १६३३ से संचालित; मू०—१); पंडित प्रह्लाददत्त ज्योतिषी संपादक हैं; प०—रेवाड़ी, पंजाब।

छत्तीसगढ़-केसरी—२६ जनवरी १६४८ से प्रकाशित साप्ता०; रायपुरी काँग्रेस कमेटी का मुखपत्र है; संपा०—श्री नंदकुमार दानी और श्री दीपचंद डागा; मू०—५); प०—रायपुर।

छाया—कामविज्ञान संबंधी सचित्र मासिक पत्रिका; मू०—६); प०—स्वास्थ्य-सदन, दिल्ली।

छाया—१६४१ से प्रकाशित कहानी मासिक; मू०—३); पहले श्री नरसिंहराम शुक्ल संपादक थे, अब श्रीमान् पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी संपादक हैं; प०—जार्जटाउन, प्रयाग।

जनता—१६४८ से प्रकाशित दैनिक; संपा०—श्री शिखर चन्द्र; मू०—२४); प०—यूनाइटेड प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, इन्दौर।

जनता—१५ अगस्त १६४८ से प्रकाशित; प्रजातन्त्रवादी दृष्टिकोण; संपा०—श्री चिरंजीलाल अग्रवाल; मू०—८); प०—नाटनियों का रास्ता, जयपुर।

जनता—समाजवादी दृष्टिकोण से प्रकाशित; संपा०—श्री रामवृक्ष बेनीपुर; प०—कदमकुआँ, पटना।

जनपथ—१६४८ से प्रकाशित सामाजिक साप्ता; संपा०—श्री देवकुमार; मू०—६); प०—सरकिल आर्ट प्रेस, ३१ बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।

जनमत—दैनिक; संपा०—श्री गणेशचंद्र जोशी; मू०—१५); प०—जालोरी द्वार, जोधपुर।

जनमत—साप्ता०; **संस्था०**—श्री प्रेमकृष्ण खन्ना ; भूत० संपा० —श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री श्रीचंद्र अग्निहोत्री ; **वर्त०**—श्री रामेश्वरप्रसाद मेहरोत्रा ; मू०—१२) ; प०—शाहजहाँपुर ।

जनयुग—१६४२ में 'लोकयुद्ध' के नाम से प्रकाशित साप्ताहिक, बाद को नाम बदल दिया गया ; संपा०—श्री बी० एम० कौल ; मू०—६) ; प०—सैंडहर्स्ट मार्ग, बंबई ।

जनवाणी—जनवरी १६४७ से प्रकाशित मासिक ; समाजवादी दृष्टिकोण; संपा०—सर्वश्री नरेंद्रदेव, रामवृक्ष बेनीपुरी, बैजनाथ सिंह 'विनोद' ; मू०—८) ; प० —गौदोलिया, बनारस ।

जनशक्ति—१६४२ से प्रकाशित दैनिक ; संपा०—श्री गिरजा कुमार सिनहा; मू०—२५) ; प० —नया बिहार, पटना ।

जन संस्कृति—१६५१ से प्रकाशित पाक्षिक; संपा०—श्री सीताराम 'मृगेंद्र' ; मू० — १।) ; प०—श्री मृगेंद्र-पुस्तकालय, तालबेहट, झाँसी ।

जनसेवक—अप्रैल १६४८ से प्रकाशित राष्ट्रीय मासिक ; **संपा०** —श्री उदयनारायण शुक्ल ; **मू०** —४।) ; प०—मेरठ ।

जयभारती—महाराष्ट्र-राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति का मासिक मुखपत्र; दिसंबर १६४७ से प्रकाशित; **संपा०** —श्री पंढरी मुकुंद डोंगरे; **सहा० संपा०**—सर्वश्री रा० दा० चितले, प्र० रा० भुपटकर, चिं० ब० ओकार, प० ब० उमराणीकर ; श्री रा० मुँदड़ा; मू०—४) ; **प०** —६०३ सदाशिव लक्ष्मी रास्ता, पो० ५५८, पूना २ ।

जयभूमि — १६४० से प्रकाशित ; मू०—१५) ; प०—वीर प्रेस, मनिहारों का रास्ता, जयपुर ।

जयहिंद—१६४७ से प्रकाशित समाजवादी साप्ता० ; **संपा०** —श्री हीरालाल जैन, श्री महावीर प्रसाद शर्मा, श्रीनंद चतुर्वेदी ; मू०—६) ; प०—कोटा ।

जयहिंद — १६४६ से प्रकाशित ; संपा०—श्री कालिकाप्रसाद दीक्षित कुसुमाकर; प०–नवलपुर ।

जयाजी-प्रताप—११ जनवरी १६०५ से प्रकाशित ; आरंभ में

साप्ताहिक था, १६१६ में दैनिक हुआ ; पुनः साप्ता० हुआ और १६४७ से अर्द्ध साप्ता० है; संपा० —श्रीशंभूनाथ सक्सेना; मू०—७); प०—लश्कर, ग्वालियर।

जागरण — १६३२ से प्रकाशित दैनिक ; कानपुर से भी छप रहा है; प०—(१) स्वतंत्र जर्नल्स लि०, झाँसी। (२) कस्तूरबा मार्ग, कानपुर।

जागृति—१६४७ से प्रकाशित; संपा०—श्रीकरतार सिंह नारंग ; मू०—२४) ; प०—किशन पोल बाजार, जयपुर।

जागृति—१६३७ से प्रकाशित साप्ता०; संपा०—श्री जगदीशचंद्र 'हिमकर'; सहा०—श्री महावीर प्रसाद शर्मा 'प्रेमी'; मू०—६); प०—१४, बनारस मार्ग, सलकिया हवड़ा।

जाग्रत महिला—श्री कस्तूरबा स्मृति दिवस फरवरी १६४८ से प्रकाशित ; नारी जागरण-संबंधी मासिक ; प्रबंध संपा०—श्रीशलभ और श्री उत्सवलाल शर्मा ; प०—महिलामंडल, उदयपुर।

जिन - वाणी— १६४३ से प्रकाशित मासिक; संपा०—सर्व श्री फूलचंद जैन सारंग और केशरी किशोर केशव; मू०—४); प०—जनरल विद्यालय, भूपालगढ़।

जीता संसार—जून १६४५ से प्रकाशित समाजवादी साप्ता० ; संपा०—डा० हरिसेवक द्विवेदी, मू०—४॥) ; प० —लश्कर

जीवन—१६४७ से प्रका० मासिक; संपा०—सर्व श्री विष्णु-कुमार शुक्ल, बनवारी लाल वर्मा और मधुसूदन चतुर्वेदी; मू०—६); प०—१६, वाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकत्ता।

जीवन—१६४२ से समाजवादी दृष्टिकोण से साप्ताहिक रूप में प्रकाशित; १६४६ से अर्द्ध साप्ता०; संचा०—जीवन - साहित्य-ट्रस्ट; संपा०—श्रीजगन्नाथप्रसाद मिलिंद; प० — जीवन - प्रेस, लश्कर, ग्वालियर।

जीवन सखा — १६३६ से प्रकाशित स्वास्थ्य और प्राकृतिक चिकित्सा संबंधी मासिक; संपा०—डा० बालेश्वर प्रसाद सिंह; वि०—कई विशेषांक निकाले हैं; प०—लूकरगंज, इलाहाबाद।

जीवन - साहित्य — अगस्त १९४० से प्रकाशित अहिंसा-प्रचारक गाँधीवादी मासिक; सपा०—श्री हरिभाऊ उपाध्याय और श्री यशपाल जैन बी० ए०, एल-एल० बी०; प०—सस्ता-साहित्य मंडल, नयी दिल्ली।

जैन-उद्योग — २१ अप्रैल १९४८ से प्रकाशित गृह-व्यवसाय-संबंधी मासिक; संपा०—श्री बी० सी० जैन; मू०—३); प०—जैन उद्योग-समिति, ३५५ गंज जामुन मार्ग, नागपुर।

जैन गजट—जातीय साप्ता०; संपा० — श्री वंशीधर- शास्त्री; मू०—३||); प०—नयी सड़क, दिल्ली।

जैन - जगत—अप्रैल १९४७ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री हीराराव चावडे़; सहा०—सर्वश्री जमनालाल जैन और दरबारी लाल सत्यभक्त; मू०—२); छात्रों से १); प०—भारतजैन महामंडल, वर्धा।

जैन - प्रचारक — १९११ से प्रकाशित; प्रधान संपा०—श्री राजेंद्रकुमार जैन ; संपा०—चिंतामणि जैन; मू०—३); प०—दिल्ली।

जैन-प्रभात—अगस्त १९४७ से प्रकाशित; संपा०—श्री पन्नालाल साहित्यचार्य, सहा०—श्री मुन्नालाल समगौरिया; मू०—३); प०—सागर।

जैन-बोधक—लगभग ६७ वर्ष से प्रकाशित पाक्षिक ; संपा०—श्री वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री ; प०—शोलापुर।

जैन-मित्र—१९१० से प्रकाशित साप्ताहिक; मू०—५||);संस्था०—तथा प्रका०—श्री मूलचंद किशनदास कापाड़िया; प०—सूरत।

जैन-संदेश—१९३६ से प्रकाशित; संपा०—श्री बलभद्र जैन ; प०—मोतीकला, आगरा।

जैनसिद्धांत-भास्कर— प्राचीन शोध और पुरातत्व संबंधी पत्र; १९३३ से त्रैमासिक रूप में प्रकाशित; अब छमाही है; मू०—३) ; अवै० संपा०—सर्वश्री ए० एन० उपाध्ये, गो० खुशालचंद जैन, कामताप्रसाद जैन, नेमिचन्द्र जैन शास्त्री; प०—जैन-सिद्धांत, आरा।

ज्ञान-शक्ति—१९१३ से प्रकाशित साप्ताहिक; संपा०—श्री योगेश्वर और श्री शिवकुमार शास्त्री; मू०—३) ; प०—ज्ञान-शक्ति-प्रेस, गोरखपुर ।

ज्ञानशिखा—लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग के तत्वावधान में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका ; संपा० मंडल—सर्वश्री आचार्य नरेंद्रदेव, डा० ब्रजमोहन शर्मा, डा० बलजीतसिंह, डा० रामधर मिश्र, मुरारिशंकर मांगलिक, प्रो० को० अ० शु० अय्यर, डा० बनमालीशरण मांगलिक, डा० शिवकंठ पांडेय, डा० नंदलाल चटर्जी, ओम् प्रसाद गुप्त ; प्रबंध संपा०—डा० दीनदयालु गुप्त ; सहा०—श्री हरिकृष्ण अवस्थी, मू०—८) ; प०—अध्यक्ष हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

ज्ञानोदय—बालो० मासिक ; संपा०—श्री शंभुनाथ पांडेय ; मू० —३) ; प०—कानपुर ।

ज्योतिर्विज्ञान— १९४८ के लगभग प्रकाशित ज्योतिष - शास्त्र संबंधी मासिक; संपा०—श्री मूलचंद शर्मा; मू०—६); प०—महू, मध्यभारत ।

झरना — नवंबर १९४७ से प्रकाशित बालोपयोगी मासिक ; संपा०—श्री नेमिचंद भावुक ; मू०—५) ; प०—जोधपुर ।

तरंग—हास्यरस प्रधान पाक्षिक; संपा०—श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी;' प०—काशी ।

तरुण जैन—१९४४ से प्रकाशित मासिक; संपा०—सर्वश्री भँवरमल सिंघी, चाँदमल मुतोड़िया; मू०—५); प०—नवयुवक प्रेस, ३, कमर्शियल बिल्डिंग, कलकत्ता ।

ताजातार—१९४१ से प्रकाशित साप्ता०; संपा०—श्री राजेन्द्रकुमार दीक्षित; मू०—४॥); प०—शंकर-प्रेस, बेलनगंज, आगरा ।

तारणबंधु— आध्यात्मिक सिद्धान्तों का प्रचारक मासिक; १९३३ से प्रकाशित; मू०—२॥); श्री बाबूलाल डेरिया संपादक एवं श्री रामलाल पांडेय प्रकाशक हैं; प०—इटारसी ।

तारा—सिनेमा-संबंधी मासिक ; पहले साप्ताहिक रूप में छपता था; संपा०—श्री धर्मपाल गुप्त; मू०—३);

प०—५६५ कूँचा सेठ दरीबा कला, दिल्ली।

तारा— विदेश से प्रकाशित हिंदी पत्रिका; १६४२ से यह मासिक रूप में निकल रही थी; कुछ दिन पाक्षिक रहकर लीथो पर छपी; अब त्रैमासिक है; संपा०—श्री शार्नदास; मू०—१२ शिलिंग; प०—'तारा'-कार्यालय, नसोनू, सूवा, फीजी।

तिजारत—१६४७ से प्रकाशित व्यवसाय संबंधी साप्ता०; संपा०—श्री सीतानंदनसिंह; मू०—६) ; प०—पो० बा० ५३, बाँकीपुर, पटना।

तिरहुत-समाचार—१६०८ से प्रकाशित साप्ता० ; प०—मुजफ्फरपुर।

तेज प्रताप—१६ सितंबर १६३७ से प्रकाशित; संचा०—श्री कांतिचंद्र जोशी ; संपा०—श्री अवतारचंद्र जोशी; मू०—६); प०—मुंशी बाजार, अलवर।

त्यागभूमि—१६४८ से नव-निर्माण के उद्देश्य से प्रकाशित साप्ता०; संचा०—श्री हरिभाऊ उपाध्याय; संपा०—श्री सरस वियोगी; मू०—६) वि०—इसके पहले मासिक रूप में छपता था; प०—सस्ता साहित्य - प्रेस, अजमेर।

त्यागी—१६०८ से प्रकाशित त्यागी ब्राह्मणों का जातीय मासिक; संपा०—श्री रामचन्द्र शर्मा, मू०—३); प०—मेरठ।

दक्खिनी हिंद—१६४७ से प्रकाशित राजकीय मासिक; संपा०—श्री रामानंद शर्मा, सहा०—श्री रा० सारंग पाणि; मू०—४); प०—अध्यक्ष सूचना-प्रचार - विभाग, फोर्ट सेंट जार्ज, मद्रास।

दयानंद - संदेश—१६३८ से प्रकाशित; संपा०—सर्वश्री आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्री, देव बंधु शर्मा, सहा०—सत्यकाम सिद्धांतशास्त्री; प०—नयी दिल्ली।

दरबार—१६२७ से प्रकाशित; प०—अजमेर।

दलितप्रकाश—१२ नवंबर १६४७ से प्रकाशित सामाजिक साप्ता०; संपा०—श्री ललित श्रीवास्तव और श्री लक्ष्मीचंद्र बाजपेयी; संचा०—श्री भगवानदीन

एम० एल० ए० ; मू०—४) ; प०—लाटूश रोड, कानपुर ।

दादू-सेवक— धर्म संप्रदाय-विशेष का मासिक; प०—दादू-सेवक प्रेस, पीतलियों का चौक, जौहरी बाजार, जयपुर ।

दिगम्बर जैन— १६१५ से प्रका० मासिक ; कुछ अंश गुजराती में भी छपता है ; मू०—२॥) संपा० तथा प्रका०—श्री मूलचंद्र किशनदास कापड़िया, प०—चंदा वाड़ी, सूरत ।

दीपक—पंजाब में शिक्षाप्रसार के लिए कई वर्षों से प्रकाशित मासिक ; मू०—२॥) ; श्रीतेजराम जी संपादक हैं ; प०-साहित्य-सदन, अबोहर, पंजाब ।

दृष्टिकोण— आलोचनात्मक मासिक; फरवरी १६४८ से प्रका०; संपा०—सर्वश्री नलिनविलोचन शर्मा, शिवचंद शर्मा ; संपा०मंडल में सर्वश्री राहुल सांकृत्यायन, रामविलास शर्मा, नगेंद्र नागाइच, धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, जगन्नाथ शर्मा और देवेन्द्र शर्मा हैं ; मू०—८); प०—शारदा-प्रकाशन, बाँकीपुर, पटना ।

देहाती—१० मई १६४८ से प्रका० ग्रामोपयोगी साप्ता० ; संपा०—श्री रमेश ; मू०—६) ; प०—गुड़ की मंडी, आगरा ।

धन्वंतरि—१६२३ से प्रका० आयुर्वेद-संबंधी मासिक; संपा०—श्रीदेवीशरण गर्ग; भूत०संपा०—श्री बाँकेलाल गुप्त; 'नारी-अंक', 'रक्तरोगांक' और 'सिद्ध-योगांक' आदि विशेषांक निकाले हैं; मू०—५≡); प०—विजयगढ़, अलीगढ़ ।

धर्मदूत—बौद्ध धर्म के उद्देश्यों का प्रचारक मासिक ; मई १६३५ से प्रारंभ ; संपा०—श्री त्रिपिटकाचार्य भिक्षु धर्मरक्षित ; मू०—२) ; प०— सारनाथ, बनारस ।

धूपछाँह—जुलाई १६४८ से प्रका० कहानी-प्रधान मासिक ; संपा०—श्री बालमुकुंद गुप्त एम० ए० ; सहा०—सर्वश्री सोमनाथ शुक्ल, रमाकांत दीक्षित, रत्नप्रकाश हज़ेला ; मू०—५) ; प०—३२।८५ बगिया मनीराम, कानपुर ।

ध्वज—१६३६ से प्रकाशित ; संपा०—सर्वश्री राजमल लोढ़ा और मदनकुमार चौबे ; मू०—

४) ; प०—मन्दसौर, ग्वालियर ।

नंदिनी—अगस्त १६४७ से प्रका० गो-सेवा संबंधी मासिक ; संपा०—श्री धर्मलालसिंह ; मू०—४) ; प०—सदाकत - आश्रम, पटना ।

नयाकदम—१६४८ से प्रका० मासिक; संपा०—श्री वीरेंद्र त्रिपाठी; मू०—४) ; प०— बल्लीमारान, दिल्ली ।

नया जीवन— १६४७ से पुस्तक रूप में प्रका० मासिक ; संपा०—श्री कन्हैयालाल मिश्र ; मू०—१०); प०—विकास-लि०, सहारनपुर ।

नयायुग—१६४७ से प्रका० जनवादी साप्ता० ; संपा०— श्री योगेन्द्रदत्त शुक्ल ; मू०—६) ; प०—रेल-मार्ग, फरुखाबाद ।

नया राजस्थान— १६४७ से प्रका० साप्ता०; संपा०—श्री रामनारायण चौधरी; प०—अजमेर ।

नया संसार—समाचार-साप्ता. का नया कहानी-प्रधान साप्ता० रूप ; संपा०—श्री आशाकांत बी० आचार्य और श्री रामगोपाल विजय वर्गीय ; संचा०—श्री रूपनारायण पांडेय ; प०—जयपुर ।

नया संसार—साप्ता० पत्र ; संपा०—श्री नवनिधि शर्मा ; संचा०—श्री भगवानदास बंसल ; मू०—३) ; प०—मधुर मंदिर प्रेस, हाथरस ।

नया समाज—जुलाई १६४८ से प्रका० मासिक ; संपा०—श्री मोहन सिंह सेंगर ; परामर्श-दाता—सर्व श्री महादेवी वर्मा, काका कालेलकर, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा जैनेंद्रकुमार ; मू०—८) ; प०—१०० नेताजी-सुभाष बोस रोड, कलकत्ता ।

नया हिंदुस्तान— १६४६ से प्रका० साप्ता० ; किसानों और जनता का हित उद्देश्य है; संपा०—सर्व श्री किशोरी रमण, ठाकुर-प्रसाद और स्वामीनाथ ; मू०—८) ; प०—जगतगंज, बनारस ।

नयी कहानियाँ— कहानी-प्रधान पत्रिका मासिक ; १६३६ से प्रका० ; श्री रामसुंदर शर्मा प्रधान संपादक हैं; मू०—४॥) ; प०— २८ एडमांसटन रोड, प्रयाग ।

नयी दुनियाँ— १६४७ से

प्रका० दैनिक ; संपा०—श्रीकृष्ण कांत व्यास ; प०—कड़ावघाट, इन्दौर ।

नव चित्रपट—जनवरी १६४८ से प्रका० सिनेमा संबंधी पाक्षिक; संपा०—श्रीसत्येन्द्रश्याम; मू०—६); प०—६२,दरियागंज, दिल्ली ।

नवजीवन—१६३६ से प्रका० साप्ता० ; संपा०— श्री कनक-मधुकर ; मू०— ५) ; प०— उदयपुर ।

नवजीवन—अक्टूबर १६४७ से प्रका० दैनिक ; भूत०संपा०— श्री भगवती चरण वर्मा ; मू०— २४) ; प०—लखनऊ ।

नवज्योति— सामयिक समस्याओंसे युक्त दैनिक और साप्ता०; संपा०—श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी ; प०—केसरगंज, पो० बा० ७२, अजमेर ।

नवभारत—अगस्त १६४८ से प्रका० दैनिक ; संपा०—श्रीहरिहरनिवास द्विवेदी तथा श्री विजयगोविंद द्विवेदी ; मू०— २४) ; प०— सराफा बाजार, लश्कर, ग्वालियर ।

नवभारत—१६३४ से प्रका०; संपा०—श्रीरामगोपाल महेश्वरी; प०—नागपुर ।

नवभारत—३ जनवरी १६४८ से साप्ता० रूप में प्रका०; संपा०— श्री परशुराम नौटियाल ; मू०— ८); पता—संपा०— पो० बा० ६६०७, शांताक्रूज, बम्बई २३ ; संचा०—३८, प्रोस्पेक्ट चैंबर्स, होर्नबी रोड, फोर्ट, बंबई ।

नवयुग—१६३२ से प्रकाशित अनेक चित्रों से युक्त साप्ता०; भूत० संपा० श्री अवनींद्र विद्यालंकार; वर्त० संपा०—श्री इन्द्रनारायण गुर्टू और श्री महावीर अधिकारी; वि०—प्रति मास लगभग डेढ़ लाख प्रतियाँ बिकती हैं; लेखकों को पारिश्रमिक दिया जाता है; मू०—१५); प०—मोरी गेट, दिल्ली ।

नवयुग-संदेश— अक्टूबर १६४५ से श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी के संपादकत्व में प्रकाशित राष्ट्रीय साप्ता०; १६४७ में प्रकाशन स्थगित हुआ; वर्त० संपा०— श्री सांवलप्रसाद चतुर्वेदी; प०—भरतपुर ।

नवराष्ट्र—संपा०—श्री देवव्रत शास्त्री; सहा०—श्री सुमंगल प्रकाश; प०—पटना।

नवराष्ट्र—१९४८ से प्रकाशित साप्ता०; संपा०—श्री शिवकुमार शर्मा; सहा०—श्री मुरारीसिंह; मू०—६); प०—बिजनौर।

नवविहान—फरवरी १९४८ से प्रकाशित मासिक; मू०—६); प०—नया डाकबँगला मार्ग, पटना।

नवशक्ति—१९३४ से श्री देवव्रत शास्त्री के संपादकत्व में प्रकाशित साप्ताहिक; वर्त० संपा०—श्री युगलकिशोर सिंह; मू०—७); प०—नव-शक्ति प्रेस, पटना।

नवीन भारत—१९४७ से प्रकाशित दैनिक; संपा०—जगत नारायण लाल एम० एल० ए०; मू०—२४); प०—कदम कुआँ, पटना।

नेता जी—१९४७ से प्रकाशित दैनिक; मू०—२५); प०—ट्रापीकल बिल्डिंग, कनाट सर्कस; नयी दिल्ली।

न्याय-बोध—१९४७ से प्रकाशित केंद्रीय और धारासभा के नियमों से संबंधित मासिक; संपा०—श्री नरहरि बलवंत चंदूरकर; मू०—८); प०—तिलकमार्ग, नागपुर।

नागरी-प्रचारिणी - पत्रिका—जून १८९६ से प्रका०; २४ वर्षों तक मासिक रही, बाद को त्रैमासिक हो गयी; आरंभ में सर्वश्री गौरीशंकर हीराचंद ओझा, मुंशी देवी प्रसाद, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, श्यामसुंदरदास संपादक रहे; १९२०-२३ तक श्री ओझा जी पुनः संपादक रहे; डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने 'विक्रमांक' निकाला; सर्वश्री सुधाकर द्विवेदी, किशोरीलाल गोस्वामी (सहा०), कालिदास, राधाकृष्णदास, वेणी प्रसाद, मुंशी देवीप्रसाद, कृष्णदेव प्रसाद गौड़ (सहा०), रामचंद्र शुक्ल, केशव प्रसाद मिश्र, मंगलदेव शास्त्री, जयचंद नारंग, लल्ली-प्रसाद पांडेय, पद्मनारायण आचार्य, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र और कृष्णानंद गुप्त भी इसके संपादक रह चुके हैं; मू०—१०), सदस्यों से ३); इँगलैंड, अमरीका, रूस, अफ्रीका, पोलैंड, हालैंड, अरब,

मारिशस, फिजी और बर्मा में भी इसके सदस्य हैं; वि० अनुसंधानात्मक लेख पारिश्रमिक देकर प्रकाशित किये जाते हैं; प० — नागरी-प्रचारिणी -सभा, काशी।

निराला—अगस्त १९४८ से प्रकाशित मासिक; **संपा०**— श्री हरिशंकर शर्मा ; मू०—६) ; प०—निराला प्रेस, आगरा।

निर्भीक—२१ जनवरी १९४८ से प्रकाशित साप्ताहिक; **भूत० संपा०**—सर्वश्री लक्ष्मी नारायण, भैरवचंद शर्मा, नवनीत दास वैष्णव, रवींद्रकुमार वर्मा, प्रेमनारायण जोशी ; **वर्त० संपा०**—सर्वश्री रूपचंद्र, बाबू लाल इंदु और रवींद्रकुमार वर्मा; **संस्था०**—वकील रामनारायण; मू०—७); प०—जैन प्रेस, कोटा।

नृत्यशाला—१९४८ में प्रका० मासिक; **संपा०**—श्री 'सुधाकर'; मू०—२४); प०—संगीत-कार्यालय, हाथरस।

पंकज—१९४८ से प्रकाशित मासिक ; **संपा०**—श्री श्रीरामशर्मा मू०—५॥) ; प०— १८१७, चावड़ी बाजार, दिल्ली।

पंचायतराज – १९४८ से प्रका० साप्ता० ; **संपा०**—श्री विश्वंभर सहाय 'प्रेमी' ; मू०—६) ; प०—मेरठ।

पंडिताश्रम पत्रिका— १९३९ के लगभग प्रका० मासिक; **संपा०**—ज्योतिषाचार्य श्री संकर्षण-व्यास ; मू०—३) ; प०—हरिसिद्धि प्रिंटिंग प्रेस, नयी सड़क, उज्जैन।

परमहंस—१९४८ से प्रका० साप्ता० ; **संपा०**—श्री सालिगराम पथिक, **संस्था०**— बाबा राघवदास ; प०—मोतीलाल नेहरु मार्ग, प्रयाग।

परलोक—विविध विषय विभूषित मासिक ; १९३३ में स्थापित; मू०—२) ; श्री केदारनाथ शर्मा संपादक हैं ; प०— ब्रह्मचर्याश्रम, भिवानी, पंजाब।

पराग — सितंबर १९४८ से प्रका० मासिक ; **संपा०**— श्री कुलदीप ; मू०— ४) ; प०— आगरा।

पांचजन्य— स्वयंसेवक संघ की नीति का समर्थक साप्ता० ;

संपा०—श्रीराजीवलोचन; मू०—१०); प०—सदरबाजार,लखनऊ।

पारिजात—१९४५ से प्रका० द्वैमासिक ; संपा०—श्री रघुवंश पाण्डेय, श्री देवकुमार मिश्र; मू०—६) ; प०—ग्रंथमाला-कार्यालय, पटना ।

पूँजी—पहली अप्रैल १९४८ से प्रका० औद्योगिक एवं व्यावसायिक साप्ताहिक ; संपा०— श्री रामस्वरूप भालोरिया, मू०—५७); प०—४१ ए, ताराचंददत्त स्ट्रीट, कलकत्ता ।

प्रकाश— १९४८ से प्रका० साप्ताहिक ; संपा०—श्री प्रताप-साहित्यालंकार ; मू०— ६॥) ; प०-वैद्यनाथधाम, देवघर, बिहार।

प्रकाश—२ अक्टूबर १९४८ से प्रका० राजकीय पाक्षिक ; मध्य-प्रांत और बरार के समाज-शिक्षा-विभाग का मुख-पत्र ; प्रधान संपा०—डाक्टर रामकुमार वर्मा; सहा०—सर्वश्री इन्द्रबहादुर खरे, जीवन नायक, मु० प० भीसीकर, और शरत्चंद्र मुक्तिबोध ; मू०—८) ; प०—नागपुर।

प्रकाश—१९१२ के लगभग प्रका० राजकीय पाक्षिक ; रीवाँ-राज का मुख पत्र ; संपा०—ठा० अर्जुनसिंह ; विशे०—'विक्रमांक', 'विंध्यप्रदेशांक', प्रतिवर्ष 'विजय-दशमी-अंक' प्रकाशित होता है; मू०—३) ; राजाओं से ११) ; प०—रीवाँ राज ।

प्रगतिशील—पाक्षिक पत्र ; संस्था०—श्री देवी नारायण मैणवाल ; संपा०—श्री हरिनारायण मैणवाल ; मू०— ६) ; प०—हरिमोहन इलेक्ट्रिक प्रेस, पुरानी बस्ती, जयपुर ।

प्रजापुकार—१९४६ से प्रका० साप्ता० ; संस्था०—श्री त्र्य०दा० पुस्तके, संपा०–त्र्यंबक सदाशिव गोखले और श्रीश्यामलालपांडवीय; प०—लश्कर, ग्वालियर।

प्रजामित्र—१९४५ से प्रका० पाक्षिक ; संचा०— श्रीदौलतराम गुप्त ; संपा०— श्री हरिप्रसाद 'सुमन' ; सहा०—श्री विद्याधर ; मू०—३) ; प०—रामा प्रेस, चम्बा।

प्रजामित्र—१९४६ से प्रकाशित साप्ता० ; संपा०—श्री तारा-

नाथ रावत ; मू०—५) ; प०—बीकानेर ।

प्रजासेवक—१६४१ के लगभग प्रकाशित साप्ता० ; संपा०—श्री अचलेश्वरप्रसाद शर्मा ; विशे०—'गांधी-जयंती-अंक', 'युद्धांक', 'आजाद-हिंद-अंक', 'देशी-राज्य-अंक' ; प०—जोधपुर ।

प्रताप—१६१३ से प्रकाशित साप्ता० ; संस्था०— स्व० श्री गणेशशंकर विद्यार्थी; भूत० संपा०—श्रीसुरेशचंद्र भट्टाचार्य ; प०—कानपुर ।

प्रतीक—जून १६४७ से प्रकाशित द्वैमासिक ; वर्ष में ६ अंक ऋतुओं के अनुसार निकलते हैं ; संपा०—सर्वश्री सियारामशरण गुप्त, नगेन्द्र, श्रीपतिराय, स० ही०वात्स्यायन ; मू०—६); प०—१४ हेस्टिंग्ज रोड, इलाहाबाद ।

प्रतीक—लगभग तीन वर्षों से द्वैमासिक था, जनवरी १६५१ से मासिक रूप में छप रहा है; संपा०—श्री सच्चितानंद हीरानंद वात्स्यायन ; वि०—साहित्य और कला का प्रतिनिधित्व कर रहा है; मू०—८); प०—१४ डी, फिरोज शाह मार्ग, नयी दिल्ली ।

प्रदीप — दैनिक पत्र ; कुछ वर्षों से प्रकाशित ; प०—पटना ।

प्रदीप—अगस्त १६३६ से प्रकाशित मासिक ; संपा०—श्री जगदीश भारती ; मू०—१०) ; वि०—पारिश्रमिक दिया जाता है ; प०—मुरादाबाद ।

प्रदीप — १५ मई १६४८ से प्रकाशित पूर्वी पंजाब के प्रचार विभाग का पाक्षिक मुखपत्र; प्रधान संपा०— श्री लाजपतराय नायर; संपा०—प्रो०राजेंद्र और श्री मदन मोहन गोस्वामी; वि०—प्रत्येक लेख पर पारिश्रमिक दिया जाता है ; मू०—४||); प०—प्रचार-विभाग, पूर्वी पंजाब, शिमला ।

प्रभात — १६३३ के लगभग प्रकाशित साप्ता० ; संस्था०—स्व० लाडलीनारायण गोयल; संपा०—बाबा नृसिंहदास ; सहा०—श्री सरस वियोगी ; वि०—कई बार प्रकाशन स्थगित हो चुका है; मू०—६);प०—मनोरंजन प्रेस, जयपुर ।

प्रभात—प्रगतिशील साप्ता० ; मू०—८) ; प०—औरंगाबाद, बनारस ।

प्रवासी—प्रवासी भारतीयों की समस्याओं से संबंधित मासिक; १९४७ से स्व० श्री भवानीदयाल संन्यासी के सम्पादकत्व में प्रकाशित; मू०—१०); प०—आदर्श नगर, अजमेर।

प्रवाह — अप्रैल १९४८ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री ब्रजलाल बियाणी; संपा०—श्री गोविंद व्यास; मू०—६); प०—राजस्थान प्रिंटिंग ऐंड लीथो वर्क्स, अकोला, बरार।

प्राची—१९५० से प्रकाशित साहित्यिक मासिक; संपा०—प्रोफेसर श्री कपिल; मू०—८); प०—मुंगेर।

प्राणाचार्य — फरवरी १९४७ से प्रकाशित आयुर्वेद संबंधी मासिक; संपा०—वैद्य बाँकेलाल गुप्त; सहा० — श्री गिरिजादत्त पाठक; मू०—४=); प०—विजय गढ़, अलीगढ़।

प्राणिशास्त्र—भारतीय प्राणि-शास्त्र-परिषद का त्रैमासिक मुख-पत्र; संपा०—श्री देवीशंकर मिश्र एम० एस-सी०; वि०—आर्ट पेपर पर बड़ी सजधज से प्रकाशित होता है; इस ढंग के पत्र हिंदी में बहुत कम हैं; विषय के अधिकारी विद्वानों का सहयोग प्राप्त है; मू०—१५); प०—२, हुसेनगंज, लखनऊ।

प्रेम-संदेश—१९४१ से प्रकाशित सनातनधर्म संबंधी मासिक; संस्था०—श्री विंदुजी; संपा०—श्री नाथूराम अग्निहोत्री 'नम्र'; प०—प्रेमधाम, वृन्दावन।

फीजी समाचार — विदेश में प्रकाशित हिंदी का समाचार-प्रधान साप्ताहिक पत्र; संपा०—श्री रामखिलावन शर्मा; मू० — १० शिलिंग; प०—इंडियन प्रिंटिंग ऐंड पब्लिशिंग कंपनी, मार्क्स स्ट्रीट, सूबा, फीजी।

फौजी अखबार — १९०९ से प्रकाशित साप्ता०; संपा०—श्री मलखान सिंह; वि० – अँगरेजी, उर्दू, गुरुमुखी, रोमन, और तामिल भाषाओं में भी छपता है; प० — कनाट सरकस, नयी दिल्ली।

बलपौरुष - १९४८ से प्रकाशित स्वास्थ्य और व्यायाम-संबंधी मासिक; संपा०—डा० सदानंद

त्यागी ; मू०—६॥) ; प०—मुक्ता-राम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता ।

बारीमित्र—१६२६ से प्रकाशित जातीय मासिक ; **संपा०**—श्री जे० एल० बारी ; प०—१३०, अलोपीबाग, इलाहाबाद ।

बालक—१६२७ में प्रकाशित बालो० मासिक ; **भूत० संपा०**—सर्वश्री आचार्य रामलोचनशरण, रामवृक्ष बेनीपुरी, शिवपूजनसहाय, अच्युतानंददत्त ; **विशे०**—'एँड-रूज़-अंक', 'भारतेंदु-अर्द्ध शताब्दी-अंक' ; **मू०**—४) ; **वि०**—पहले कार्यालय लहरियासराय में था ; **प०** — पुस्तक-भंडार, बाँकीपुर, पटना ।

बालबोध—अक्टूबर १६४४ से प्रकाशित बालो० मासिक ; **संपा०**—ठा० श्रीनाथसिंह ; **मू०**—४) ; **प०** — दीदी - कार्यालय, कटरा, प्रयाग ।

बालभारती—सितम्बर १६४८ से प्रकाशित बालो०मासिक; **संपा०**—श्री राजू दादा ; **प०**—२६६ कर्नलगंज, इलाहाबाद ।

बालभारती—१६४७ के लगभग प्रकाशित बालो० मासिक ; **संपा०**—श्रीमन्मथनाथ गुप्त ; **वि०**—भारत सरकार द्वारा संचालित है ; **मू०**—३) ; **प०**—प्रकाशन विभाग,ओल्ड सेक्रेटरियट, दिल्ली ।

बालविनोद—१६३३ के लगभग प्रकाशित बालो० मासिक ; **संपा०**—श्रीमती सरस्वती डालमियाँ; **मू०**—३) ; **प०**—३६, लाटूश-रोड, लखनऊ ।

बालसखा—जनवरी १६१७ से प्रकाशित बालो० मासिक ; **भूत० संपा०** — सर्वश्री बद्रीनाथ भट्ट, कामताप्रसाद गुरु, देवीदत्त शुक्ल, गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', ठा० श्रीनाथ सिंह ; **वर्त० संपा०**—श्री लल्लीप्रसाद पांडेय ; **मू०**—४) ; **प०**—इंडियन प्रेस, इलाहाबाद ।

बालसेवा— जून १६४८ से प्रकाशित बालो० मासिक ; **संपा०**—श्री लोकेश्वरनाथ सकसेना ; **सहा०**—सर्वश्री धर्मदेव, केशवचंद्र हजेला, सर्वेश्वरनाथ तथा भानुप्रताप अवस्थी; **मू०**—३) ; **प०**—गाँधीनगर, कानपुर ।

बालहित—जनवरी १६३७ से प्रकाशित मनोविज्ञान - संबंधी मासिक ; **संपा०**—श्री कालूराम

श्रीमाली और श्री जनार्दनराय नागर, मू०—३); प०—विद्या-भवन समिति, उदयपुर।

बिजली—पाक्षिक; **संपा०**—रामदयाल त्रिवेदी 'प्रवीण'; **प०**—पद्मा, हजारीबाग, बिहार।

बिहार—नवंबर १९४७ में प्रकाशित राजकीय मासिक; **संपा०**—श्री नंदकिशोर तिवारी; **मू०**—५); **प०**—प्रकाशन विभाग, बिहार सरकार, पटना।

बिहार कांग्रेस—१९४८ के लगभग प्रकाशित मासिक; **संपा०**—श्री श्यामसुन्दरदास; मू०—६); **प०**—सदाकत आश्रम, दीघा, पटना।

बेकार-सखा—१९४७ से प्रकाशित मासिक; **मू०**—४); **प०**—शिकोहाबाद।

ब्राह्मण—जनवरी १९४५ से प्रकाशित; **संपा०**—श्री देवदत्त शास्त्री; **सहा०**—श्री संतकुमार जोशी; **मू०**—४); **प०**—चरखेवालान, दिल्ली।

भक्त-भारत—भक्ति-संबंधी मासिक; **संचा०-संपा०**—श्री रामदास शास्त्री; **प०**—वृन्दावन।

भविष्य—१९४६ से प्रकाशित मारवाड़ी समाज का मासिक; **संचा०**—श्री आर० सी० भरतिया; **संपा०**—श्री कृष्ण मोर; **विशे०**—'मारवाड़ी सम्मेलनांक'; **प०** जोगीवाड़ा, नयी सड़क, दिल्ली।

भाग्योदय—१९४८ में प्रकाशित बालो० पाक्षिक; **संपा०**—श्री टी० कृष्णास्वामी; **मू०**—३), प०—गोलबाजार, जबलपुर।

भानुदय—१९२२ से प्रकाशित ईसाई-धर्म-संबंधी मासिक; **संपा०**—श्री पी० डी० सुखनंदन; **सहा०**—श्री जोनाथन राव; **मू०**—१); प०—मिशन प्रेस, जबलपुर।

भारत—१९३३ से प्रकाशित दैनिक और साप्ताहिक; **संस्था०**—स्व० श्री सी० वाई० चिंतामणि; **संपा०**—श्री बलभद्रप्रसाद मिश्र; **वि०**—कई प्रसिद्ध विद्वान् संपादन कर चुके हैं; दैनिक का **मू०**—३७); प०—लीडर प्रेस, इलाहाबाद।

भारत-जननी—१९४५ से प्रकाशित मासिक; **संपा०**—श्री कालिकाप्रसाद और सुश्री शांति एम० ए०; प०—५४, हिवेट रोड, इलाहाबाद।

भारतवर्ष — १६४८ से प्रकाशित दैनिक ; संपा०—श्री रामगोपाल विद्यालंकार ; हिंदू राष्ट्रवादी-नीति का पोषक ; मू०—३५) ; प०—दिल्ली द्वार, दिल्ली।

भारत - स्नेहवर्द्धनी—१६४८ से प्रकाशित मासिक ; संपा०—श्रीमती मीरा मंत; वि०—अँगरेजी में भी छपता है ; प०—पो० बा० ५६६, पूना।

भारती—जून १९४८ से प्रकाशित मासिक ; संपा०—श्री नागेश्वर ; सहा०—कुमारी ब्रजदेवी; मू०—४।।) ; प० — ए ४।१३ तिब्बिया कालेज, करोलबाग, दिल्ली।

भारती—१६४७ से प्रकाशित मासिक ; संपा०—श्री जगदीश चंद्र 'विद्रोही' ; प०— साधना-कुटीर, दिल्ली।

भारती — अगस्त १६४७ से प्रकाशित बालोपयोगी मासिक ; संचा० - संपा० — डा० धनरानी कुँअर ; सहा० — श्री महिपाल सिंह ; मू०—३।।) ; प०—ऐबटरोड, लखनऊ।

भारती—काश्मीर की एकमात्र मासिक पत्रिका ; १६४० से प्रकाशित ; मू०—६) ; प०—भारतीय-प्रेस, जम्मू, काश्मीर।

भारतीय — अगस्त १६४७ से प्रकाशित मासिक ; संचा०—श्री जगन्नाथप्रसाद मालवीय ; संपा०—श्री रामेश्वर भट्ट ; मू०—६।।=) ; प०—५०, खुशहाल-पर्वत, इलाहाबाद।

भारतीय धर्म—धार्मिक मासिक; १९४२ से प्रारंभ ; मू० — ३) ; श्री पं० पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी संपादक हैं ; प०—गुलाब बाड़ी, अजमेर।

भारतीय विद्या—कई वर्ष से प्रकाशित त्रैमासिक ; संपा०—श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी और श्री सीताराम चतुर्वेदी ; भारतीय संस्कृति का प्रचार उद्देश्य है ; गुजराती में भी छपती है ; प०—भारतीय विद्याभवन, हार्वेरोड, चौपाटी, बम्बई ७।

भारतीय संस्कृति—१६४७ से प्रकाशित त्रैमासिक ; अवैतनिक संपा०—श्री प्रभाकर माचवे ; मू०—३) ; प०—संस्कृति-सदन, रतलाम।

भारतीय समाचार—१ मई १९४० से प्रका० पाक्षिक; भारतीय सरकार के प्रधान कार्यों का संक्षिप्त विवरण देता है; संपा०—श्री सोमेश्वरदयाल और श्री ए० एस० आयंगर; प०—प्रधान सूचना विभाग, रायसीना मार्ग, नयी दिल्ली।

भारतेन्दु — हिंदी विद्यापीठ, कोटा का मुख-पत्र; १९४८ से प्रकाशित; सम्पा०—श्री इन्द्रदत्त 'स्वाधीन'; सहा०—सर्वश्री हनुमानप्रसाद, गोकुलप्रसाद बागड़ी; मू० ४); प०—भारतेन्दु-समिति, कोटा।

भूगोल—१९४३ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री रामनारायण मिश्र बी० ए०; विशे०—'हैदराबाद अंक', 'देशी राज्य-अंक' आदि अनेक सुन्दर विशेषांक निकाले हैं; वि०—अपने विषय का अकेला पत्र है; मू०—५); प०—कक्राहाघाट, इलाहाबाद।

मंजरी—जनवरी १९४८ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री देवीदयाल चतुर्वेदी; मू०—६); प०—इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद।

मंजिल—१९४८ से प्रकाशित मारवाड़ी-समाज का पाक्षिक; संपा०—श्रीमोतीलाल शर्मा 'सुमन'; मू०—६॥=); प०—रघुनाथपुर, मानभूम, बिहार।

मजदूर - आवाज—४ अप्रैल १९४८ से प्रकाशित समाजवादी पाक्षिक; संस्था०—श्री जयप्रकाश नारायण; संपा०—श्री स्वामीनाथ; सहा०—श्री बालचन्द्र; मू०—३); प०—ओडियन बिल्डिंग, कनाट पैलेस, नयी दिल्ली।

मतवाला—१९३९ से प्रकाशित, हास्यरस प्रधान पाक्षिक; मू०—१०); प०—जोधपुर।

मतवाला—१९४८ से प्रकाशित; संपा०—श्री शैलैन्द्र कुमार पाठक; मू०—६); प०—चावड़ी बाजार, दिल्ली।

मतवाला—१९२३ से प्रकाशित; संपा०—श्री पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', हास्यरस प्रधान; मू० —६); संचा० — श्री हरगोविंद सेठ; प०—बीसवीं सदी प्रिंटिंग प्रेस, मिर्जापुर।

मधुप — १३ अप्रैल १९४७ से प्रकाशित कहानी-प्रधान साप्ता०; संपा०—श्री एम० एल० पांडेय;

मू०—१५) ; प०—१, कोल्फ-गिरा ,इलाहाबाद ।

मनोरंजन—१६४० के आस-पास प्रकाशित साप्ता०; संपा०—श्री गिरींद्रचन्द्र त्रिपाठी; मू०—६); प०—६७, बाडालपाड़ा गली, सलकिया, हवड़ा ।

मनोरमा—अप्रैल १६४७ से प्रकाशित महिलोपयोगी मासिक; भूत० संपा०—श्री भक्तशिरोमणि और श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'; संपा०—श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी और श्री भक्तसर्जन; मू०—६) ; प०—बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद ।

मनोविज्ञान—मई १६४८ से प्रकाशित मासिक; संपा०— श्री श्रीराम बोहरा और श्री शिवप्रसाद पुरोहित; मू०—६); प०—अंधेरी, बंबई ।

मनोहर कहानियाँ—१६३६ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री क्षितींद्रमोहन मिश्र; मू०—३॥) ; प०—१६४,मुट्ठीगंज,इलाहाबाद ।

मराठा—साप्ताहिक ; वि० —अधिकांश भाग अँगरेजी में रहता है; प०—५६८, नारायण पेठ,पूना ।

मस्ताना जोगी—अप्रैल १६४८ से प्रकाशित मासिक जो पहले उर्दू में निकलता था; संपा०—श्री चेतनकुमार भटनागर; मू०—६); प०—७६, जी० बी० मार्ग, फराश-खाना, दिल्ली ।

महाकोशल—१६४६ से प्रकाशित साप्ता०; प्रधान संपा०—श्री अंबिकाचरण शुक्ल; संपा०—श्री स्वराज्यप्रसाद द्विवेदी; मू०—५); प०—रायपुर ।

महावीर - संदेश—१६४२ से प्रकाशित पाक्षिक; संपा०— श्री केशरलाल जैन अजमेर ; सहा०—श्री कैलाशचन्द्र जी शास्त्री ; मू०—३); प०—जयपुर ।

महाशक्ति—१६४७ से प्रकाशित मासिक; संपा०—सर्वश्री वासुदेव प्रसाद मेहरोत्रा, शिवनारायण उपाध्याय, बलदेवराजशर्मा 'उपवन' ; मू०—४) ; वि०—पारिश्रमिक दिया जाता है ; प०—५।३३ शिवपुरा-भैरवी, काशी ।

महिला—महिलोपयोगी मासिक; प०— ३, न्यू जगन्नाथ घाट मार्ग, कलकत्ता ।

महिलाश्रमपत्रिका—१६४६ से

प्रकाशित महिलोपयोगी त्रैमासिक; महिला-आश्रम वर्धा की मुखपत्रिका; सं ०—श्री भवानीप्रसाद मिश्र; संपा० मंडल—सर्वश्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, कमलाताई लेले, कृष्णाबहन नाग, दामोदर मूंदड़ा, आनंदीलाल तिवारी, वि०—इसका 'सर्वोदय-अंक', निकाला गया था; मू० - ४॥); प०—वर्धा।

माधुरी—१९२१ में प्रकाशित साहित्यिक मासिक; **संस्था०**—स्व० मुंशी विष्णुनारायण भार्गव; **संपा०**—भूत०—सर्वश्री दुलारेलाल भार्गव, प्रेमचन्द्र, कृष्णबिहारी मिश्र; वर्त०—पंडित रूपनारायण पांडेय; मू०—७॥); प०—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ।

मानवता—१९४८ से प्रका० मासिक; संपा०—श्रीमती राधादेवी गोयनका तथा श्री शंकरसहाय वर्मा; मू०—१२); प०—आकोला, बरार।

मानवधर्म—अगस्त १९४१ से प्रका० मासिक; संपा०—श्री दीनानाथ 'दिनेश'; स्ह०—श्री तिलकधर शर्मा; मू०—५); प०—पीपल महादेव, दिल्ली।

मानवमित्र—१९४८ से प्रका० सामाजिक साप्ता०; संपा० श्री शिवप्रसाद दीन; मू०—६); प०—१२, आरपुली लेन, कलकत्ता।

मानसमणि—१९४१ से प्रका० मासिक; संपा०—श्री सुदर्शनसिंह 'चक्र'; मू०—३); प०—मानस संघ, रामबन, सतना (सी० पी०)।

मानसरोवर—१९४९ से प्रकाशित मासिक; प्रधान संपा०—श्री विश्वनाथ; मू० ४); प०—कनाट सरकस, नयी दिल्ली।

माया—जनवरी १९३० से प्रका० मासिक; संपा०—सर्वश्री क्षितिंद्रमोहन मित्र मुस्तफी, विजय वर्मा आदि; मू०—४॥); प०—मुट्ठीगंज, इलाहाबाद।

मारवाड़ी-गौरव १९४५ के लगभग प्रका०; संपा०—श्री अद्भुत शास्त्री; मू०—६); प०—जयपुर।

मारवाड़ी-समाज—जातीय उन्नति के लिए प्रका० मासिक; संपा०—श्रीफतहचंद गुप्त; मू०—७॥); प०—३८२, नया फाटक, दिल्ली ६।

मराठा-राजपूत— राजपूत-मराठा-संघ का मुखपत्र ; १ जून १९४१ से प्रका० ; **संपा०**—श्री रामचंद्रराव जाधव और डा० रवि-प्रतापसिंह श्रीनेत; **सहा०**— श्री रामचंद्र ज्योतिषी ; **मू०**— ५) ; **प०**—देवास जूनियर।

माला—१९४७ में प्रकाशित कला-संबंधी मासिक ; **संपा०**— सुश्री कलावती देवी 'बच्चा'; **मू०**— ५); **प०**— नागरी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद ।

मैढ़-क्षत्रिय समाचार— १९४८ से प्रका० जातीय मासिक ; **सपा०** —श्री कांतिलाल वर्मा ; **मू०**— ३) ; **प०**—आकोट, अकोला, बरार।

मोहनी—जून १९४७ से प्रका० महिलोपयोगी मासिक ; **संचा०**— श्रीमती गायत्री देवी वर्मा और श्री भगवान देवी पालीवाल; **प्रबंध-संपा०**—श्री रामदुलार शुक्ल ; **मू०**—३) ; **प०**— फाफामऊ-कैसल, इलाहाबाद ।

यादव—१९२६ के आसपास प्रका० ; **संपा०**—श्री राजवंसिंह; **मू०**—४) ; **प०**— दारानगर, बनारस।

युगजीवन—लगभग एक वर्ष से प्रका० द्विमासिक ; **संपा०**— श्री रामरतन सिकची ; **मू०**— ८) ; **प०**— तुलसी कुंज, छतरी तालाब मार्ग, अमरावती ।

युगधर्म—२५ जुलाई १९४८ से प्रका० हिंदी-हिंदू हिंदुस्थान का प्रचारक साप्ता० ; **मू०**— ६) ; **प०**— बाकर रोड, नागपुर ।

युगधारा—जुलाई १९४७ से प्रका० गाँधीवादी मासिक; **सचा०** —श्री बलदेव प्रसाद ; **संपा०**— सर्वश्री कमलापति त्रिपाठी, मुकुंदी लाल, राजकुमार ; **मू०**—५) ; **प०**—संसार-प्रेस, काशी ।

युगांतर—१९४१ से प्रका० साप्ता० ; **भूत० संपा०**—श्रीवीर-भारती सिंह ; **संपा०**— श्रीराम-कुमार शुक्ल ; **प०**— गाँधीनगर, कानपुर ।

युगांतर—११ फरवरी १९४२ से स्व० श्री जमनालाल बजाज की स्मृति में 'लोकवाणी' के नाम से प्रकाशित साप्ता०;विजयदशमी१९५० से यह नया नाम दिया गया; **भूत० संपा०**—श्री राजेन्द्रशंकर भट्ट और

श्री शिवबिहारी तिवारी; **संपा०**—श्री पूर्णचन्द्र जैन; **विशे०**—'जमनालाल बजाज-अंक', 'राजस्थान-निर्माण-अंक'; **मू०**—६), **प०**—चौड़ा रास्ता, जयपुर।

युगारंभ—१९४७ से प्रका० विचार-प्रधान मासिक; **संपा०**—श्री व्योहार राजेंद्रसिंह; **मू०**—५); **प०**--मानस-मंदिर, जबलपुर।

युगारंभ– २६ जनवरी १९५० को स्थापित लोक-चेतना प्रकाशन का मासिक मुख-पत्र; १५ अगस्त १९४० से प्रकाशित; **संपा०**—सर्वश्री पदुमलाल पुन्नालालबख्शी, नर्मदाप्रसाद खरे और इंद्रबहादुर खरे; अप्रैल १९५० में 'माखनलाल अभिनन्दन-अंक' निकाला; **मू०**—८); **प०**– लोकचेतना-प्रकाशन, जबलपुर।

युगारंभ—२६ अप्रैल १९४८ से प्रका० साप्ता०; **संपा०**— श्री निर्मलकुमार सुराणा; **मू०**—६); **प०**—चूरू, बीकानेर।

युवक-हृदय – अग्रवाल युवक-परिषद का मासिक मुखपत्र; १९४६ से प्रका०; **संपा०**—श्री मनोहरलाल; **मू०**—३); **प०**—गोपाल जी का रास्ता, जयपुर।

योगी—१९३३ से प्रकाशित साप्ता०; **संपा०**—श्री व्रजशंकर प्रधान; **मू०**—६); **प०**—पटना।

योगेन्द्र—योग विषय का ज्ञान करानेवाला मासिक; आसन एवं प्राणायाम संबंधी सचित्र पत्र; **संचा०**— श्री योगीजयनाथ; **मू०**—३); **प०**— इलाहाबाद।

रंगभूमि—मासिक सिनेमा-पत्रिका; लगभग १९३३ से प्रका०; पहले साप्ताहिक थी, अब मासिक है; **मू०**—७); श्रीधर्मपाल गुप्त, भास्कर संपादक हैं; **प०**—जामा मस्जिद, दिल्ली।

रंगभूमि—१९४१ से प्रका० सिनेमा संबंधी मासिक; **संपा०**—आचार्य मंगलानंद गौतम, और श्री देवेन्द्र कुमार; **मू०**—१०); **प०**–१४१, शिवाजी पार्क बंबई २८।

रजतपट— सिनेमा संबंधी मासिक; **संपा०**—श्री के० पी० अग्रवाल; **प०**—१७९ बड़ाबाजार, महू।

रसभरी—१९४२ से प्रका० मासिक; **संचा**—आचार्य मंगलानंद गौतम; **संपा०**—श्री देवेंद्र-

कुमार ; सहा०— श्री मंगलदेव शर्मा ; मू०—५) ; प०— नयी-सड़क, दिल्ली।

रसायन—जनवरी १६४८ से प्रका० आयुर्वेद-संबंधी मासिक ; संपा—डाक्टर गणपति सिंह वर्मा ; मू०— ६) ; प०—दरियागंज, पो० बा० १२५, दिल्ली।

रसीली कहानियाँ— १६३६ से प्रका० मासिक ; संपा०—श्री नंदगोपाल सहगल ; मू०—४) ; प०— २८, ऐडमांस्टन रोड, इलाहाबाद।

रहबर—१६४० से प्रकाशित पाक्षिक ; वि०— अँगरेजी, गुजराती और उर्दू संस्करण भी छपते हैं ; प०—रूपविला, कुम्बला हिल, बंबई।

राजपूत—१६०१ के लगभग प्रका० ; संपा०—श्री राजेन्द्रसिंह; मू०—२।); प०—राजपूत प्रेस, आगरा।

राजपूताना प्रांतीय वैद्य-पत्रिका—१६४३ से प्रका० राजपूताना प्रांतीय वैद्य-सम्मे० की द्वैमासिक पत्रिका ; संपा०— श्री आचार्य नित्यानन्द सारस्वत ; वि०— पहले त्रैमासिक निकलती थी ; मू०—३) ; प०— जयपुर।

राजस्थान क्षितिज— अप्रैल १६४५ से प्रका० मासिक ; संपा० —श्री जैमिनी कौशिक ; मू०—१०) ; प०—नरेंद्र-भवन, अलवर।

रानी—१६३६ से प्रकाशित मासिक ; संपा०—श्री दीनानाथ वर्मा ; मू०—५) , प०— १२१ चितरंजन एवेन्यू, कलकत्ता।

रामराज्य—१६४२ से प्रका० साप्ता०; संपा०—श्री राघवेंद्र और श्री रामनाथ गुप्त ; मू०—२॥) ; प०—आर्यनगर, कानपुर।

राष्ट्रपताका—१६४७ से प्रकाशित साप्ता० ; संपा०—श्री मदनलाल कावरा ; मू०—६); प०— जोधपुर।

राष्ट्रपति—१६४८ से प्रकाशित ; संपा० — आचार्य मंगलानंद गौतम और श्री मंगलदेव 'प्रभाकर' ; प०— नयी सड़क, रोशनपुरा, दिल्ली।

राष्ट्रभारती—जनवरी १६५१ से राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा की ओर से प्रकाशित मासिक ; संपा० —श्री महापंडित राहुल सांकृत्यायन

श्री भदंत आनंद कौसल्यायन, श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी, बैजनाथसिंह 'विनोद'; मू०—६); प०—हिंदी नगर, वर्धा।

राष्ट्रभाषा—उत्कल राष्ट्रभाषा-सभा का मासिक मुख-पत्र; संपा०—सर्वश्री लिंगराज मिश्र और अनुसूयाप्रसाद पाठक; मू०—४); प०—उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा सभा, चाँदनी चौक, कटक।

राष्ट्रभाषा—१६४८ से प्रका० मासिक; संपा०—सर्वश्री हरिप्रसाद शर्मा, जगदीशचंद्र जायसवाल, यादवेन्द्र झा 'वियोगी'; मू०—४॥); प०—जयपुर।

राष्ट्रभाषा—राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा का मुखपत्र; १६४१ से प्रकाशित; संपा०—श्री भदंत आनंद कौसल्यायन; सहा०—श्री शुकदेवनारायण; मू०—३); प०—वर्धा।

राष्ट्रवाणी—अप्रैल १६४८ से पुस्तकाकार में प्रकाशित शिक्षा-साहित्य-संबंधी मासिक; संपा०—श्री रा० स्वरूपगर्ग और श्री यज्ञदत्त 'अक्षय'; मू०—५), प०—वाणी-मंदिर, अजमेर।

राष्ट्रवाणी—१७ जून १६४८ से प्रकाशित साता०; संस्था०—श्री चिदानंद सरस्वती; संपा०—श्री एस० सी० आनंद; मू०—८); प०—आदित्य प्रेस, श्रद्धानंद बाजार, दिल्ली।

राष्ट्रवाणी—१६४२ से प्रकाशित दैनिक; प०—पटना।

राष्ट्रवाणी—प्रगतिशील मासिक; वि०—'गाँधी-अंक', 'हैदराबाद-अंक', 'दीवाली-अंक' और 'काँग्रेस अंक'; प०—६३।१३० गोला दीनानाथ, बनारस।

रिमझिम—१५ सितंबर १६४८ से प्रकाशित सिनेमा संबंधी मासिक; संपा०—श्री देवेंद्र और श्री हरेंद्र; मू०—६); प०—६, डी० गरदनी बाग, पटना।

रियासती—१६४६ से प्रकाशित दैनिक; संपा०—श्री सुमनेश जोशी; मू०—२८); प०—जोधपुर।

रूपरानी—मासिक; संपा०—श्री मती लज्जारानी; प०—६२, दरियागंज, दिल्ली।

रेलवे-समाचार—फरवरी १६४८ से प्रकाशित मासिक; संपा०—

श्री व्रजबिहारीलाल गौड़ ; मू०—४) ; प०—१७६ बेरहना इलाहाबाद और पो० रामवन, वाया, सतना।

लल्ला — ालो० मासिक ; संपा०—श्री शिक्षार्थी ; मू०—३) ; प० — बाई का बाग, इलाहाबाद ।

लहर–दिसम्बर १६४७ से प्रका० साहित्यिक मासिक ; संपा० — श्री लक्ष्मी मल्लसिंह और श्री जगदीश ललवाणी; मू०—१०) ; वि०—रचनाओं पर पारिश्रमिक दिया जाता है ; प०—नवयुवक प्रेस, जोधपुर।

लोकमत— १६३६ के लगभग प्रकाशित दैनिक ; संपा०—श्री नरेंद्र विद्यावाचस्पति ; मू०—६) ; प०— सुभाषचन्द्र मार्ग, नागपुर।

लोकमत— १६४८ के लगभग प्रकाशित साप्ता० ; संपा०—श्री अंबालाल माथुर ; मू०—७) ; प०— बीकानेर।

लोकमान्य—साप्ताहिक पत्र ; संचा०—पं० रमाशंकर त्रिपाठी, संपा०—श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार; प०-पाटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली ।

लोकमित्र—१६४५ में प्रकाशित साप्ता०; संपा०—श्री सुरेशचंद्र 'वीर'; मू —३); प०—वीर प्रिंटिंग प्रेस, फीरोजाबाद ।

लोकयुद्ध –साम्यवादी साप्ताहिक; १६४२ से प्रकाशित ; श्री गंगाधर अधिकारी प्रधान संपादक हैं; प०—१६० बी० आर० के० बिल्डिंग्स, खेतवाड़ी, मेनरोड, बम्बई ४।

लोकवाणी—राष्ट्रीय दैनिकपत्र; लगभग ६ वर्ष से प्रकाशित; भूत० संपा०—श्री सिद्धराज ढड्ढा; वर्त० संपा० — श्री पूर्णचंद्र नाहर ; प्रबन्ध संपा०—श्री जवाहरलाल जैन ; प०— चौड़ा रास्ता, जयपुर।

लोकवाणी—१६४२ से प्रकाशित साप्ताहिक ; मू० ७); श्रीमदन मोहन मिश्र संपादक हैं; प०—कुंडरी, लखनऊ।

लोकशासन—१६४८ से प्रकाशित साप्ता०; संपा० — सर्वश्री केशवचन्द्र, ब्रह्मदत्त और देवकृष्ण; मू०—६) ; प० — ज्ञानमंदिर मुद्रणालय, बामनिया, इंदौर।

लोक - सुधार—२४ अक्टूबर १९४७ से प्रका० साप्ता०; **संचा०**—चौधरी बलदेवराम मिरदा; **संपा०**—कुंअर रामकिशोर; **भूत० संपा०**—श्री यशोराज शास्त्री; **मू०**—५); **प०**— चौपासनी मार्ग, जोधपुर।

लोक-सेवक — गाँधीवादी मासिक; **संपा०**—श्री वैजनाथ; **मू०**—६); **प०**—इन्दौर।

लोक सेवक—१९४२ से प्रकाशित ; **संपा०**—श्री देवीचरण साहित्यरत्न; **प०**—लोक-सेवक-प्रेस, कोटा।

वनस्थली—वनस्थली बालिका सभा की त्रैमासिक मुख-पत्रिका ; **मू०**—५); **प०**—जयपुर।

वर्तमान—१९२० से प्रकाशित दैनिक; **संचा०**—श्री रमाशंकर अवस्थी ; **संपा०**—श्री भगवान दीन त्रिपाठी; **प०**—सिविल लाइंस, कानपुर।

वसुन्धरा—राष्ट्रीय मासिक ; २६ जनवरी १९५० से प्रकाशित ; **प०**—पो० बा० ८०८, कलकत्ता।

वसुन्धरा— १९४७ से प्रकाशित साप्ता०; **संस्था**—श्री जनार्दनराय नागर ; **भूत० संपा०**—श्री गिरिधारीलाल शर्मा; **वि०**—कुछ समय तक स्थगित रहा; **मू०**—७) ; **प०**—उदयपुर।

वसुन्धरा—फरवरी १९४८ से प्रकाशित मासिक; **संस्था०**—श्री मनोहरलाल ; **संपा०**—सर्वश्री रामेश्वर 'अरुण' और लक्ष्मीकांत 'मुक्त'; **मू०**—१२); **प०**—८२८, धर्मपुरा, दिल्ली।

वाणिज्य—१९४८ से प्रकाशित व्यापार-संबंधी मासिक; **प०**—वाणिज्य-मुद्रणालय, कलकत्ता।

वालंटियर—सितंबर १९४७ से प्रकाशित; **संपा०**—श्री श्यामशरण सक्सेना ; **मू०**—३) ; **प०**—लश्कर, ग्वालियर।

विंध्यकेसरी — २६ जनवरी १९४७ से प्रकाशित साप्ताहिक **संपा०** — ज्योतिषी ; ज्वालाप्रसाद; **प्रबंध संपा०** — पद्मनाभ तैलंग ; **प०**—स्टेशन मार्ग, सागर।

विंध्यवाणी—११ अक्टूबर से प्रकाशित साप्ता०; **संस्था०**—श्री बनारसीदास चतुर्वेदी; **संपा०**—श्री प्रेमनारायण खरे; **मू०**—६); **प०**—कुंडेश्वर, टीकमगढ़।

विकास—१९४८ से प्रकाशित त्रैमासिक ; **संपा०**—सर्वश्री ठा० फतहसिंह, हरिवल्लभ 'अंचल' 'शर्मा ; **मू०**—५) ; **प०**—श्री भारतीय संस्कृति-सदन, कोटा ।

विकास—१९४५ से प्रकाशित साप्ताहिक; **वि०**—मराठी संस्करण भी निकलता है; **प०**—धर्मपेठ, नागपुर।

विक्रम—१९४० से प्रकाशित साप्ता०; **भूत० संपा०**—श्री पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'; **संपा०**—श्री रमापति शर्मा; **वि०**—१९४२ में बंद भी रहा, 'उग्रजी' के समय में मासिक था ; **मू०**—६) ; **प०**—विक्रम-प्रिंटरी, गोविंदवाड़ी, कालबा देवी, बम्बई ।

विचार—साप्ताहिक पत्र; **प०**—१५४/१६ हरिसन रोड, कलकत्ता ।

विजय—१९४४ के लगभग प्रका० पाक्षिक; **संपा०**—श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव; **वि०**—दतियाराज के प्रकाशन-विभाग का मुखपत्र ; **मू०**—२) ; **प०**—गोविंद स्टेट प्रेस, दतिया ।

विजय—१३ अप्रैल १९४८ से प्रकाशित साप्ता०; **संपा०**—श्री सत्यकाम विद्यालंकार; **सहा०**—श्री शक्तिदत्त; **संचा०**—श्री देशबंधु; **विशे०**—'स्वतंत्रता-अंक' ; **प०**—विजय प्रेस, नया बाजार, दिल्ली ।

विजय—१९३१ के आसपास से प्रका० साप्ता०; **संस्था०**—श्री शंकरदत्त शर्मा एम० एल० ए०; **संपा०**—श्री सोम शर्मन; **सहा०**—श्री शिवचन्द्र नागर; **वि०**—कई बार प्रकाशन स्थगित हुआ; १५ अगस्त १९४७ से श्री विश्वंभर 'मानव' एम० ए० के संपादकत्व में फिर निकला; **मू०**—६) ; **प०**—मुरादाबाद ।

विज्ञान—१९१५ में प्रकाशित विज्ञान-परिषद का मासिक मुखपत्र; **भूत० संपा०**—डा० सत्यप्रकाश; **वर्त० संपा०** — श्री रामचरण मेहरोत्रा; **वि०**—५ वैज्ञानिकों की एक समिति भी संपादन में परामर्श देती है; **मू०**—४); **प०**—टैगोर टाउन, इलाहाबाद ।

विज्ञानकला—१५ अगस्त १९४७ से प्रकाशित विभिन्न उद्योग-संबंधी मासिक; **संपा०**—श्री निरंजनलाल गौतम; **मू०**—५);

प०—आर्य-उद्योग-संघ, श्रद्धानंद-बाजार दिल्ली।

विद्या—२० नवंबर १९४७ से प्रकाशित परीक्षोपयोगी पाक्षिक; वि०—नागपुर वि० वि० की मैट्रिक और इंटर परीक्षाओं के प्रश्नोत्तर रहते हैं; मराठी संस्करण भी छपता है; प०—सीतावर्डी, नागपुर।

विद्यार्थी—१९१४ से प्रकाशित मासिक; **संपा०**—श्री गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'; प०—हिंदी प्रेस, इलाहाबाद।

विनोद—बालोपयोगी मासिक; प०—हिंदी प्रेस, प्रयाग।

विशालभारत—जनवरी १९२८ से प्रकाशित विविध विषय-विभूषित मासिक; **संस्था०**—बँगला के 'प्रवासी' और अँग्रेजी के 'माडर्न रिव्यू' के संपादक स्व० श्री रामानंद चटर्जी; **संपा०**—१९२८ से ३७ तक श्री बनारसीदास चतुर्वेदी संपादक और स्व० श्री व्रजमोहन वर्मा सहायक रहे; पश्चात् श्री स० ही० वात्स्यायन और श्री मोहन सिंह सेंगर संपादक रहे; अब श्री श्रीराम शर्मा संपादक हैं; प्रवासी भारतीयों के लिए इस पत्र ने सफल आन्दोलन किया इसके विशेषांकों में 'रवींद्र-अंक', 'एंड्रूज अंक', 'पद्मसिंह शर्मा-अंक', 'दक्षिण भारत-हिंदी-प्रचार-अंक', 'कला-अंक' और 'राष्ट्रीय-अंक' विशेष प्रसिद्ध है; मू०—६); प०—१२०/२, अपर सरकुलर रोड, कलकत्ता।

विश्वदर्शन—अगस्त १९४८ से प्रकाशित राजकीय मासिक; **संपा०**—श्री चंद्रगुप्त विद्यालंकार; मू०—६); प०—प्रकाशन विभाग, ओल्ड सेक्रेटरियट, दिल्ली।

विश्वबंधु—पंजाब प्रांतीय हिंदू महासभा का मुखपत्र; १९३९ से प्रकाशित साप्ता०; **संस्था०**—श्रीगोस्वामी गणेशदत्त; वि०—पंजाब-विभाजन के पहले लाहौर से निकलता था; प०—अमृतसर।

विश्वबंधु—१९४० से प्रकाशित; **संस्था०**—श्री गोपाल प्रसाद सिंह शर्मा; प०—१९८।१ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

विश्वभारती—१९४२से प्रका० त्रैमासिक; भूत०-संपा०—श्रीहजारी प्रसाद द्विवेदी; मू०—६);

वि०—रवींद्र-साहित्य का नियमित प्रकाशन ; प०—हिंदी-भवन, शांतिनिकेतन, बोलपुर, बंगाल।

विश्वमित्र—अप्रैल १९३२ से प्रकाशित सामयिक समस्याओं से युक्त मासिक ; संचा०—श्रीमूलचंद्र अग्रवाल ; संपा०—श्री देवदत्त मिश्र ; सहा०—श्री रघुनाथ पांडेय 'प्रदीप' ; मू०—६) ; प०—७४, धर्मतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।

विश्ववाणी—१९४० से प्रका० मासिक ; संस्था०—श्री सुंदरलाल; संपा०—श्री विश्वम्भरनाथ पांडेय; वि० — 'सोवियत संस्कृति-अंक', 'बौद्धसांस्कृतिक-अंक', 'अन्तर्राष्ट्रीय अंक', 'गाँधीअंक' आदि विशेषांक; मू०—८); प०—साउथ मलाका, इलाहाबाद।

विश्व-हितैषी—उदार विचारों का साप्ता० ; संस्था०—डा० श्री निवास वासिष्ठ द्वारा १९४८ में ; संपा०—पं० खुशीराम शर्मा वाशिष्ठ; मू०—५) ; प०—१०२४, रौशनपुरा, दिल्ली।

वीणा—मध्यभारतीय हिंदी-साहित्य-समिति की मासिक मुख-पत्रिका; १९२६ से प्रकाशित;भूत० संपा० — सर्वश्री कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर', अंबिकादत्त त्रिपाठी, रामभरोसे तिवारी, शांतिप्रिय द्विवेदी, प्रयाग नारायण; चंद्रारानी, एच० एस० पंडित, गोपीवल्लभ उपाध्याय ; वर्त०—प्रधान हैं श्री कमलाशंकर मिश्र और सहायक हैं श्री गोपीवल्लभ उपाध्याय ; मू०—४) ; प०—तकोगंज, इन्दौर।

वीर—१९२४ से प्रकाशित ; संपा०—श्री कामता प्रसाद जैन ; सहा०—श्री बाबूलाल जैन; मू०—४) ; प०—मोरीगेट, दिल्ली।

वीर-अर्जुन—१९३४ से प्रकाशित साप्ता० ; १९४२ में बंद हुआ, १९४३ से पुनः प्रकाशित ; भूत० संपा०—श्री इंद्र विद्यावाचस्पति; संपा०—श्री कृष्णचंद्र विद्यालंकार; सहा०—श्री क्षितीश-कुमार वेदालंकार ; विशे०—'रजत-जयंती-अंक', 'प्रजातंत्र-अंक'; मू०—८) ; प० — श्रद्धानंद-बाजार, दिल्ली।

वीर भारत—१९३८ से प्रकाशित ; संपा० — श्री रूपकिशोर जैन; मू०—४); प०—आगरा।

वीरभूमि—१५ अगस्त १६४१ से प्रकाशित साप्ता०; भूत० संपा० — श्री वीरेंद्रपालसिंह ; संपा० —श्री ज्ञानेश्वर मूलियार विद्या-निधि ; मू० — ६) ; प०— देवगढ़ हाउस, उदयपुर।

वीरभूमि — १६४२ से प्रकाशित द्वैमासिक ; संपा० — श्री रतनलाल 'मधुचयन' ; मू०— ६) ; प०—१० नारायणप्रसाद बाबू लेन, कलकत्ता ७ ।

वीर-वाणी—१६४७ से प्रकाशित ; संपा०—सर्वश्री चैनसुखदास न्यायतीर्थ, भवँरलाल न्यायतीर्थ ; मू०—३) ; प० — वीर प्रेस, मणिहारों का रास्ता, जयपुर।

वीरेंद्र — १६३६ से प्रकाशित साप्ताहिक ; प०—कोंच, उत्तर प्रदेश।

वेंकटेश्वर समाचार— हिंदी का सब से पुराना साप्ता०; १८६५ के लगभग प्रका० ; संस्था०— श्रीखेमराज श्रीकृष्णदास ; भूत० संपा०—सर्वश्री अमृतलाल चतुर्वेदी, रुद्रदत्तशर्मा, हरिकृष्ण जौहर, राजबहादुर सिंह ; वर्त० संपा०— श्री देवेन्द्र शर्मा ; मू०—५) ; प०—खेतवाड़ी मुख्य मार्ग, ७ वीं गली, बंबई ४।

वैदिकधर्म—१६१६ से प्रका०; संपा०—श्री दामोदर सातवलेकर, मू०—५) ; प०—स्वाध्यायमंडल, औंध जिला, सतारा।

वैद्य—जूलाई १६२० से आयुर्वेद-संबंधी मासिक ; संस्था०— वैद्य श्री शंकरलाल जैन; संपा०— श्री विष्णुकांत जैन ; वि०—कई विशेषांक निकाले जिनमें 'सिद्ध-योगांक' प्रसिद्ध है ; मू०— ४) ; प०—मुरादाबाद।

वैश्य-समाचार— १६३८ से प्रका० जातीय साप्ता० ; संपा०— डा० नन्दकिशोर जैन ; मू०— ४) ; प०—नयाबाजार, दिल्ली।

व्यापार—१६४७ से प्रकाशित व्यवसाय-संबंधी मासिक ; मू०— २॥) ; प०—१६८ क्रास स्ट्रीट, कलकत्ता।

व्यापार-कानून—१६४२ के लगभग प्रका० व्यापार-संबंधी सरकारी कानूनों की सूचना देनेवाला साप्ता० ; संपा०— श्री नेमीचंद गौतम ; वि०—'स्वतंत्रता-विशेषांक' सुंदर ढंग से निकाला ;

मू०—६) ; प०—७६, देहली दरवाजा, आगरा।

व्यापार-भविष्य—१६३६ के लगभग प्रकाशित व्यापारी-वर्ग का मासिक ; संपा०—श्री हीरालाल दीक्षित ; मू०—५) ; प०—हाथरस।

व्यापार-विज्ञान—१० नवंबर १६४७ से प्रका० व्यवसाय संबंधी मासिक ; संपा०—श्री नंदकिशोर शर्मा; सहा०-श्रीभीमसेन कौशिक; मू०—३) ; प०— सदरबाजार, मेरठ।

व्यायाम—स्वास्थ्य और व्यायाम संबंधी पाक्षिक ; संस्था०—प्रो० माणिकराव ; वि०— गुजराती और मराठी संस्करण भी निकलते हैं ; मू०—७) ; प०—जुम्मादादा व्यायाम-मंदिर, बड़ौदा।

ब्रजभारती— ब्रज - साहित्य-मंडल की त्रैमासिक मुख-पत्रिका; १६४१ से प्रकाशित ; संपा०—श्री सत्येन्द्र ; प०—मथुरा।

शंखनाद—५ नवंबर १६४७ से प्रकाशित साप्ता० ; संपा०—श्री नथमल शर्मा ; वि०—बीच में प्रकाशन स्थगित भी हो चुका है ; प०—फैंसी बाजार, गोहाटी, आसाम।

शक्ति—१६१४ से प्रकाशित साप्ता० ; संरक्षक—श्री गोविंद-वल्लभ पंत ; भूत० संपा०—श्री बद्रीदत्त पांडेय ; वर्त० संपा०—श्री पूर्णचंद्र तिवारी ; वि०—कुछ वर्षों तक प्रकाशन स्थगित भी रहा ; मू०—६) ; प०—देशभक्त प्रेस, अल्मोड़ा।

शक्ति — १६३६ से प्रकाशित साप्ताहिक; संपा०—श्री नाथूराम शुक्ल ; प०—रायपुर।

शांति — अक्टूबर १६३० से प्रकाशित महिलोपयोगी मासिक ; संचा० — श्रीमती शांति देवी ; संपा०—श्रीवासुदेव वर्मा; संपा० मंडल में कई अन्य व्यक्ति हैं ; मू०—५) ; प० — पहाड़गंज, दिल्ली।

शांतिदूत—विदेश में प्रकाशित हिंदी साप्ता० ; संचा०—एलफर्डबार्कट ; मू० — लगभग १० शिलिंग ; प०—फीजी टाइम्स प्रेस, सूवा, फीजी।

शांति-संदेश—अप्रैल १६५० से प्रकाशित संत-साधना और जीवन

निर्माण का आध्यात्मिक पत्र; संपा०—श्री विश्वानंद एम० ए०, बी० एल०; मू०—४); प०—खगड़िया, मुंगेर।

शिक्षक—१९४१ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री वेदनिधि; प०—अलीगढ़।

शिक्षक पत्रिका — शिक्षकोपयोगी मासिक, १९३३ से प्रकाशित; संपा०—श्री वंशीधर; मू०—३); प०—बड़वानी, इन्दौर।

शिक्षकबंधु—१९३३ से प्रकाशित मासिक; **प्रधान संपा०**—श्री जगतसिंह सेंगर; **संपा०**—श्री रामचंद्र गुप्त; प०—कटरा, अलीगढ़।

शिक्षासुधा — शिक्षा-साहित्य की मासिक पत्रिका; १९३४ से स्थापित; कई सुयोग्य विद्वानों द्वारा संपादित; इस समय श्री वीरेंद्रकुमार और श्री सुभाषचंद्र विद्यालंकार संपादक हैं; प०—गुप्त ब्रदर्स, मंडी धनौरा, मुरादाबाद।

शिशु—१९१६ से प्रकाशित बालो० मासिक; **संस्था०**—स्व० श्री सुदर्शनाचार्य; **भूत० संपा०**—श्री सोहनलाल द्विवेदी; **मू०**—३); प०—शिशु-प्रेस, इलाहाबाद।

शुभचिंतक — १९३७ की विजयदशमी से स्व० श्री शंकरलाल की स्मृति में प्रकाशित साप्ताहिक; **संचा०**—श्री बालगोविंद गुप्त; **संपा०**—श्री नर्मदाप्रसाद खरे; **भूत० संपा०**—श्री मंगलप्रसाद विश्वकर्मा; **वि०**—पहले कुछ समय तक अर्द्ध साप्ता० रूप में भी निकला; मू०—६); प०—शुभचिंतक प्रेस, जबलपुर।

शेर-बच्चा—बालोपयोगी मासिक; **संपा०**—श्री यशोविमलानंद; **मू०**—३); प०—कटरा, इलाहाबाद।

शोधपत्रिका—मार्च १९४७ से प्रकाशित; **संपा०**—श्री पुरुषोत्तम मेनारिया, सम्पादक मण्डल में सर्वश्री नरोत्तम स्वामी, डा० रघुवीर सिंह, मोतीलाल मेनारिया, भगवतशरण उपाध्याय, कन्हैयालाल सहल, देवीलाल; प०—प्राचीन साहित्य-शोध-संस्थान, विद्यापीठ, उदयपुर।

श्रद्धानंद—१९३० के लगभग प्रकाश हिंदूराष्ट्रवादी मासिक; मू०—५) ; प०—दिल्ली।

श्रीहर्ष—मासिक ; प०—६, रामनाथ मजूमदार स्ट्रीट, कलकत्ता

श्वेतांबर जैन—जैन धर्म-संबंधी पाक्षिक; संपा०—श्री जवाहरलाल लोढ़ा; मू०—४); प०—मोती कटरा, आगरा।

संकीर्तन—धार्मिक मासिक ; संपा०—श्री सुदर्शनसिंह 'चक्र' ; मू०—५) ; प०— मानस-संघ, पो० रामभवन, सतना।

संगम—१९४७ से प्रकाशित साप्ता० ; संपा० — श्री इलाचंद जोशी; मू०—१२); प०—लीडर प्रेस, इलाहाबाद।

संगम—१९४२ से प्रकाशित मासिक; संस्था०—श्री सत्यभक्त ; संपा०—सर्वश्री कृष्णानन्द सोख्ता, सूरजचन्द्र सत्य प्रेमी ; मू०—३); प०—सत्याश्रम, वर्धा।

संगीत—१९३४ से प्रकाशित मासिक ; संस्था०—श्री प्रभुलाल गर्ग ; संपा०—श्री ज० दे० पत्की; विशे० — 'नृत्य-अंक'; मू०—५॥); प०—हाथरस।

संगीत-कलाविहार—दिसम्बर १९४७ से प्रकाशित ; संपा०—प्रो० बी० आर० देवधर; सहा०—श्री विनयचन्द मौदगल्य और श्री प्राणलाल शहा; मू०—६); प०—मोदीचैंबर्स, फ्रेंच बिजाकार्नर बम्बई ४।

संग्राम—१९४८ से प्रकाशित अर्द्ध साप्ता०; संपा०-श्री विश्वंभर दयालु त्रिपाठी ; सहा०—श्री प्रभुदयालु शुक्ल; मू०—१२); प०—शुक्ल प्रेस उन्नाव।

संजय—१९३३ से प्रकाशित मासिक ; संस्था० तथा संपा०—श्री भद्रसेन गुप्त ; मू०— ८) ; प०—क्लाइव स्क्वायर, दिल्ली।

संतवाणी—१९४८ से प्रका० मासिक ; संस्था०—स्वामी मंगल दास;संपा०—श्री केशवदासस्वामी; मू०—५) ; प०— मंगल प्रेस, जयपुर।

संदेश—१९४० से प्रकाशित ; संपा०—श्री कालीचरण पांडेय ; मू०—१६) ; प०—संदेश - प्रेस, आगरा।

संयुक्त प्रांतीय - समाचार—१९४६ से प्रकाशित राजकीय

पाक्षिक ; संपा०—श्री जगमोहन मिश्र ; विशे०—'स्वतंत्रता-दिवस-अंक' ; प०—प्रकाशन विभाग, लखनऊ।

संसार—१६४३ में प्रकाशित साप्ता०; संस्था०—बाबूरावविष्णु पराड़कर; संपा०—श्री कमलापति त्रिपाठी और काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर' ; विशे०—'क्रांति-अंक', 'जेल-अंक', 'हैदराबाद - अंक' ; प०—संसार-प्रेस, काशी।

संसार-दीपक— १६२२ से प्रकाशित साप्ता० ; संपा०— श्री व्रजनंदनलाल, प०—चमन अखलाक प्रेस, इटावा।

सचित्र दरबार— सिनेमा-संबंधी साप्ता० ; संपा०-श्रीचंद्रधर; प०—२३, दरियागंज, दिल्ली।

सचित्र रंगभूमि— सिनेमा-संबंधी मासिक ; संपा०— श्री धर्मपाल गुप्त और श्री भास्कर ; प०—दिल्ली।

सजनी-कहानी-प्रधान मासिक; अक्टूबर १६४३ से प्रकाशित; संपा०—श्री नरसिंहराम शुक्ल ; मू०—४॥) ; प०—सजनी प्रेस, इलाहाबाद।

सतयुग—१६४० से प्रकाशित मासिक ; संपा०—श्री सत्यभक्त, मू०—५) ; प०—सतयुग प्रेस, इलाहाबाद।

सनाढय-जीवन—१६३४ के लगभग प्रकाशित ; संपा०—श्री प्रभुदयाल शर्मा ; मू०—३) ; प०—शर्मन प्रेस, इटावा।

सनातन—त्रैमासिक-धार्मिक १६४२ से प्रकाशित ; मू०—१) ; संपादक-मंडल में श्री शाह गोवर्धन लाल, पं० मोतीलाल शास्त्री, पं० सत्यनारायण मिश्र, पं० नित्यानंद शास्त्री, पं० शठकोपाचार्य हैं ; अवैतनिक संपादक श्री पं० संपत-कुमार मिश्र हैं ; प०—जोधपुर।

सनातन जैन — १६२८ से प्रकाशित ; संस्था०—श्री शीतल प्रसाद ; संपा०—श्री मनोहरनाथ जैन ; सहा०—प्रसन्नकुमार जैन; मू०—२) ; प०—बुलंदशहर।

सन्मार्ग—१६४६ से प्रकाशित; प्रधान संपा०—श्री गंगा शंकर मिश्र ; संपा० — श्री हरिशंकर द्विवेदी ; प०—१०६ सी, चितरंजन एवन्यू, कलकत्ता।

सन्मार्ग–सनातन धर्मी मासिक पत्र; संचा० श्री मूलचन्द्र चोपड़ा; संपा०—सर्वश्री दुर्गादत्त त्रिपाठी,

गोविन्द नरहरि बैजीपुरकर; मू०—५); प०—टाउनहाल, काशी।

समता—दिसंम्बर १९४७ से प्रका० मासिक; संपा०—सर्व श्रीनंददुलारे बाजपेयी, 'अंचल', शिवदानसिंह चौहान, गजानन माधव, मुक्तिबोध तथा गोपीकृष्ण प्रसाद; मू०—१०); प०—६०१, गोल बाजार, जबलपुर।

समाज—१९३८ से 'आज' नाम से प्रकाशित; १८ जूलाई १९४६ से नाम बदल कर 'समाज' कर दिया गया; संपा०—श्री राजवल्लभ सहाय; वि०—लेखकों को नियमित रूप से पारिश्रमिक दिया जाता है; मू०—१०); प०—संत कबीर - मार्ग, काशी।

समाज-सेवक—१९४४ के लगभग प्रकाशित मारवाड़ी-समाज का साप्ता०; संपा०—श्री बद्री-नारायण शर्मा; वि०—कई विशेषांक निकाले; मू०—६); प०—१५१ बी, हरिसन मार्ग, कलकत्ता।

समाज-सेवक—व्यापारिक समाज का साप्ताहिक; संपा०—श्री फतहचंद्र गुप्त; प०—३८१, नया बाँस, दिल्ली।

सम्मेलन-पत्रिका—हिंदी-साहित्य सम्मेलन की त्रैमासिक मुख पत्रिका, सम्मेलन की स्थापना के समय से प्रकाशित; सम्मेलन का साहित्य-मंत्री इसका प्रधान संपादक होता है; श्री वियोगी हरि, डा० धीरेंद्र वर्मा आदि इसके संपादक रह चुके हैं; मू०—३); प०—हिंदी- साहित्य-सम्मेलन- कार्यालय, प्रयाग।

सरकारी हिंदी—सरकारी कर्मचारियों के लिए उपयोगी मासिक; १९४८ से प्रकाशित; संपा०—श्री दिवाकर 'माझी', मू०—६); प०— हिंदी-साहित्य-परिषद, गोवर्धन सराय, काशी।

सरस्वती—हिंदी की सबसे पुरानी मासिक पत्रिका आरंभ से ही विद्वानों को प्रिय रही है; १९०० में ना० प्र० सभा काशी की अनुमति से पाँच संपादकों द्वारा प्रकाशन आरंभ हुआ; दूसरे वर्ष श्री श्यामसुन्दर दास संपादक बने; १९०३-१८ तक पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी इसके संपादक रहे; पश्चात, श्री पदुम लाल पुन्नालाल बख्शी, श्री देवीदत्त

शुक्ल, ठाकुर श्रीनाथ सिंह आदि संपा० रहे; वर्तमान संपादक श्री हरिकेशव घोष और श्री उमेशचंद्र देव हैं; वि०—चुनी हुई रचनाओं पर पारिश्रमिक दिया जाता है; मू०—७॥); प०—इंडियन प्रेस, इलाहाबाद।

सरिता—कहानी प्रधान; १६-४५ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री विश्वनाथ; वि०—लेखकों को उचित पारिश्रमिक दिया जाता है; मू०—१५); प०—दिल्ली प्रेस, पो० बा० १७, नयी दिल्ली।

सार्वहितकारी—१६४७ से प्रकाशित मासिक; संपा०—सच्चिदानंद द्विजहँस, मू०—५); प०—रायबरेली।

सविता—धर्म-प्रचारक वेद मासिक; संस्था०—श्री विद्यानंद जी; संपा०—श्री विश्वदेव शर्मा; मू०—३); प०—अजमेर।

सविता-संदेश—१६४१ के लगभग प्रकाशित जातीय मासिक; संपा०—श्री रामचंद्र भारती; मू०—४); प०—जोगीवाड़ा, नयी सड़क, दिल्ली।

साजन—'सजनी' नामक पत्रिका का पुस्तक-संस्करण; मू०—४॥); संपा०—श्री नरसिंहराम शुक्ल; प०—जार्जटाउन, इलाहाबाद।

सात्विक जीवन—१६४० से प्रकाशित मासिक; संचा०—सर्व श्री काशीराम, बनारसीलाल; मू०—३); प०–८३, पुराना चीना बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता।

साधना—१६४८ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री परमानन्द शर्मा; मू०—६); वि०—'निराला' सम्बन्धी विशेष लेख रहते हैं; प०—१५, भवानीदत्त लेन, कलकत्ता।

साधना—मासिक पत्रिका; संपा०-श्रीराधेश्याम; मू०—४॥); प०–पहाड़गंज, नयी दिल्ली।

साधु—१६४० से प्रकाशित; सम्पा०—श्री श्रीदत्त शर्मा; मू०—४); प०—सदरबाजार, दिल्ली।

सारंग—१६३५ से प्रकाशित संगीत-सम्बन्धी पाक्षिक; संपा०—श्री एस० एम० घोष; वि०—अ० भा० रेडियो का कार्यक्रम प्रकाशित होता है; मू०—७); प०—अखिल भारतीय रेडियो, कर्जन मार्ग, नयी दिल्ली।

सार्वदेशिक—१६२७ से प्रका- आर्य समाजी मासिक; मू०—५); प०—श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

सावन-भादों—जनवरी १६५१ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री अशोक जी; मू०—५); प०—अरविंदकुटीर, गोंदिया।

साहित्यसंदेश — १६३८ से प्रकाशित आलोचनात्मक मासिक; संपा०— सर्वश्री गुलाबराय एम० ए० और महेन्द्र; 'आचार्य द्विवेदी अंक', 'आचार्य शुक्ल-अंक', 'विद्यार्थी-अंक' तथा 'श्यामसुन्दरदास अंक' निकाले हैं; मू० — ४)· प०—साहित्य-रत्न-भंडार, गांधी मार्ग, आगरा।

सिद्धान्त—अप्रैल १६४० से प्रकाशित साप्ताहिक; संचा०—श्री गदाधर ब्रह्मचारी; संपा०—श्रीगंगाशंकर मिश्र; मू०— ४); प०—काशी।

सिने-तस्वीर—१६४६ से प्रकाशित सिनेमा-संबंधी मासिक; संपा० — श्री रामचंद्रप्रसाद और श्री श्रीकृष्ण खत्री; मू०—६); प० २७४ अपर चीतपुर मार्ग, कलकत्ता।

सिनेमा — अप्रैल १६४८ से प्रकाशित मासिक; संपा० श्री भास्कर; सहा०—श्री सुरेशचंद मिश्र; मू०—६); प०—१७।११ महात्मा गाँधी मार्ग, कानपुर।

सिपाही—२ अक्टूबर १६४७ से प्रकाशित साप्ता०; संपा० श्री कृपाशंकर पाठक; सहा०—श्री स्वामी कृष्णानंद; मू०—५॥); प०– सागर।

सीमा—जून १६४८ से प्रकाशित; संपा०—श्री मातुलाल शर्मा; संरक्षक हैं श्री ऋषीकेश शर्मा; मू०—४); प०—आसनसोल, बर्दमान, पश्चिम बंगाल।

सुकवि—कविताप्रधान एकमात्र मासिक; १६२७ से प्रका०; संपा० — श्री गयाप्रसाद शुक्ल सनेही 'त्रिशूल'; संपा०—श्रीमोहनप्यारे शुक्ल; वि०— समस्यापूर्ति का कार्यक्रम चल रहा है, लेखकों को पुरस्कार भी मिलता है; प्रति वर्ष एक विशेषांक निकलता है; मू०—५); प०—लाठीमोहाल, कानपुर।

सुदर्शन—१६०७ से प्रकाशित साप्ताहिक; संपा०—श्री खेती-

लाल अग्निहोत्री ; मू०—४) ; प०—सुदर्शन प्रेस, एटा।

सुधानिधि — जून १६०६ से प्रकाशित आयुर्वेद संबंधी पाक्षिक ; संपा० — सर्वश्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, शिवदत्त शुक्ल, योगेंद्रचंद्र शुक्ल ; वि०—आरंभ में मासिक था; मू०—५) ; प०—३, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद।

सूचना—२७ मार्च १६४८ से प्रकाशित राजकीय साप्ताहिक ; संपा०—श्री मगनलाल 'दिनेश' ; मू०—५) ; प० — जन-सूचना-विभाग, भूपाल।

सेनानी — गाँधीवादी नीति का समर्थक ; प०—सेनानी प्रेस, अलीगढ़।

सेवा — १६३० के लगभग प्रकाशित हिंदुस्तान स्काउट असोसिएशन की मासिक मुखपत्रिका ; भूत० संपा०—श्री जानकीप्रसाद वर्मा; संपा० — श्री रमाप्रसाद घिंडियाल 'पहाड़ी'; मू०—३) ; प०—इलाहाबाद।

सैनिक—१६२४ के लगभग प्रकाशित साप्ता०; संस्था० और भूत० संपा०— श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल ; वर्त० संपा० — श्री शांतिप्रसाद पाठक; मू० — ८); प०—सैनिक प्रेस, किनारीबाजार, आगरा।

सौरभ — अगस्त १६४८ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री लक्ष्मीकांत मुक्त; सहा०-श्री पी० डी० जैन; मू०—५); प०-सौरभ कुटीर, नयी सड़क, दिल्ली।

स्काउट - १६३७ से प्रकाशित मासिक; मू०—२); प०-जयपुर।

स्वतंत्र—१६२१ से प्रकाशित साप्ताहिक पत्र; स्व. श्री जगदीशनारायण रूसिया की स्मृति में प्रकाशित; संपा०—श्री गुरुदेव गुप्त ; वि०—पहले केवल झाँसी से छपता था अब झाँसी और कानपुर दोनों स्थानों से प्रकाशित होता है; प०-स्वतंत्र जर्नल्स लिमिटेड, झाँसी अथवा कानपुर।

स्वतंत्र भारत-१६४६ से प्रकाशित साप्ता०; संपा०-श्री कृपादयाल; मू०—६); प० – कांग्रेस कमेटी-कार्यालय, अलवर।

स्वतंत्र भारत — कई वर्ष से प्रकाशित दैनिक; संपा० — श्री अशोक जी; प०—लखनऊ।

स्वदेश—१६५१ से प्रकाशित दैनिक पत्र; प०—लखनऊ।

स्वयंवेद—१६३० से प्रकाशित मासिक; **संचा०**—महन्त बालकदास जी; **संपा०**—श्री मोतीदास, श्री चेतनदास; मू०—३); प०—सीयाबाग, बड़ोदा।

स्वयंसेवक—अ० भा० कांग्रेस सेवा-दल का मासिक मुखपत्र; जनवरी १६४८ से प्रकाशित; **संपा०**—सर्वश्री नन्दकुमार देव वाशिष्ठ, सा० वि० इनामदार, वि० भा० हार्डीकर, लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' और रमेंद्र वर्मा मू०—६); प०—कांग्रेस कमेटी-कार्यालय, बालाकदर मार्ग, लखनऊ।

स्वराज्य—१६३१ से प्रकाशित साप्ताहिक; **संस्था०**—स्व० सिद्धनाथ माधव आगरकर; **संपा०**—श्री यशवंत आगरकर; **वि०**—मराठी संस्करण भी छपता है; प०—स्वराज्य प्रेस, खँडवा।

स्वाधीन—१६२१ से प्रकाशित साप्ताहिक; **संचा०**—श्री वृंदावन लाल वर्मा; **संपा०**—श्री सत्यदेव वर्मा और श्री लालाराम वाजपेयी; प०—स्वाधीन-प्रेस, झाँसी।

स्वाभिमान — वसंतपंचमी १६४७ से प्रकाशित साप्ता०; **संपा०**—श्री कामताप्रसाद शुक्ल और श्री गयाप्रसाद शुक्ल; मू०—८); प०—२४ हुसेनगंज, लखनऊ।

स्वास्थ्य-सुधार — १६४७ के लगभग प्रकाशित चिकित्सा संबंधी मासिक; **सम्पा०** — श्री रामचन्द्र महाजन; **संचा०**—आचार्य हरिश्चन्द्र; मू०—५); प०—चूनामण्डी, पहाड़गंज, नयी दिल्ली।

हंस—१६३० से प्रकाशित मासिक; **संस्था०**—स्व० प्रेमचंद जी; **संपा०** — सर्वश्री अमृतराय और नरोत्तम नागर; **वि०**—स्व० प्रेमचन्द जी और श्री जैनेंद्रकुमार भी सम्पा० थे; 'प्रेमचन्द-स्मृति अंक', (श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर द्वारा संपादित) 'एकांकी नाटक अंक' 'रेखाचित्रांक', 'कहानी-अंक', 'प्रगति-अंक' तथा 'काशी-अंक' आदि विशेषांक प्रकाशित किये; मू०—६); प०—सरस्वती-प्रेस, पो० बा० २२, बनारस।

हमारा हिन्दुस्तान — साहित्यिक मासिक, १६१२ से प्रका०; **संपा०**—श्री ईश्वरप्रसाद माथुर;

मू० ६) ; प०—बाजार बालाबाई, लश्कर, ग्वालियर ।

हमारे बालक — १६४२ के लगभग प्रकाशित बालो० मासिक; संपा०—श्री खद्दर जी और दिनेश भैया; प०— नयी सड़क, दिल्ली ।

हरिजन-सेवक— १६३२ से प्रकाशित गाँधीवादी साप्ताहिक ; संस्था०—महात्मा गाँधी ; संप्रा० श्री किशोरलाल मश्रूवाला ; भूत० संपा०—श्री प्यारेलाल और श्रीवियोगी हरि; वि०—१६४२ में कुछ समय तक प्रकाशन स्थगित रहा ; इसके अँगरेजी, उर्दू, बँगला गुजराती और मराठी संस्करण भी निकलते हैं ; मू०—६) ; प०— कालूपुर, अहमदाबाद ।

हिंदी--आरम्भ में नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित, अब स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित होती है ; संपा० — श्री चन्द्रबली पांडेय ; मू०—१); प०—जतनवर, काशी ।

हिंदी-जगत— बम्बई प्रांतीय हिंदी सा० सम्मे० का मासिक मुख पत्र ; अगस्त १६४७ से प्रकाशित; मू०—२) ; प० — गणेश बाग, दादी सेठ अग्यारी गली, बंबई २ ।

हिंदी-प्रचार - पत्रिका—बम्बई हिंदी विद्यापीठ का मासिक मुख-पत्र ; १६४२ से प्रकाशित ; संपा० —श्री हरिशंकर ; सहा० — श्री 'मधुप' ; मू०—४) ; प०—बम्बई हिंदी विद्यापीठ, गिरगाँव बम्बई ४ ।

हिंदी मिलाप—१६१६ से प्रकाशित दैनिक ; भूत० संपा०—श्री श्री खुशहालचंद आनन्द ; संपा० —श्री'यश' ; प०—कनाट सर्कस, नयी दिल्ली ।

हिंदी-विद्यापीठ पत्रिका — उदयपुरी हिंदी विद्यापीठ कीमासिक मुखपत्रिका ; दिसंबर १६४६ से प्रकाशित ; संपा०—विद्यापीठ का प्रचार मंत्री ; प०—हिंदी विद्यापीठ, उदयपुर ।

हिंदी-विश्वभारती — ज्ञान-विज्ञान का परिचय देने वाली एक मात्र त्रैमासिक पत्रिका ; १६३६ से प्रकाशित ; प्रति खंड का मूल्य २) है ; पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी एम० ए० और श्रीकृष्ण द्विवेदी बी० ए० संपादक हैं; कई विद्वानों का सहयोग प्राप्त है ; प० — चारबाग, लखनऊ ।

हिंदुस्तान—१६३३ से प्रकाशित ; भूत० संपा०—श्री सत्यदेव विद्यालंकार ; संपा०—श्री मुकुटबिहारी वर्मा ; वि०—रविवार को परिशिष्टांक निकलता है ; मू०—४०) ; प०—कनाट सर्कस, नयी दिल्ली।

हिंदुस्तानी—लगभग २० वर्ष से प्रकाशित त्रैमासिक; भूत०संपा० डा० धीरेंद्र वर्मा; वर्त० संपा० श्री रामचन्द्र टंडन; उत्तर प्रदेशीय हिंदी (हिंदुस्तानी) एकेडमी की मुख-पत्रिका मू०—४) ; प०—हिंदी एकेडमी, प्रयाग।

हिंदुस्तानी- पत्रिका—तामिलनाड हिंदी-प्रचार-सभा की मासिक मुख-पत्रिका ; संपा०—श्री अवध नंदन और श्री अ० राम अय्यर एम० ए० ; मू०—३) ; प०—हिंदी-प्रचार-सभा, तिरुचिरापल्ली।

हिंदुस्तानी-समाचार—दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा मद्रास का मासिक मुखपत्र ; संपा०—श्री सत्यनारायण ; वि०—आरम्भ में 'हिंदी-प्रचारक' के नाम से प्रकाशित होता था;बाद में 'हिंदी-प्रचार' के नाम से निकला ; प०—त्यागरायनगर, मद्रास।

हिंदू — १६३४ से प्रकाशित साप्ता० ; संपा०—श्री वी० जी० देशमुख; प०—ओडियन बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नयी दिल्ली।

हिंदू — ४ दिसंबर १६३५ से प्रकाशित साप्ता०; संपा०—ठाकुर हरिश्चन्द सिंह भाटी ; सहा०—श्री ऋषिगोपाल शास्त्री 'स्वतंत्र' ; मू० ५) ; प०—हरद्वार।

हितसंदेश— सितंबर १६४७ से प्रका० साप्ताहिक ; संपा०—दु० ना० खरे ; सहा०—श्रीनंदराम पटेल; विशे०—लगभग डेढ़ दरजन विशेषांक निकाले हैं ; वि०—६॥)प्रति पृष्ठ तक पारिश्रमिक देते हैं ; प०— श्री शारदा शांति साहित्य-सदन, केवलारी, पथरिया, सागर।

हिमाचल—पर्वतीय प्रदेश के जन-जीवन और जागृति का परिचायक साप्ता० ; संपा०—श्री सत्यप्रसाद रतूड़ी ; मू०—६); प०—माल, मसूरी।

हिमालय—जनवरी १६४७ से प्रकाशित साहित्यिक मासिक ; भूत० संपा०— सर्व श्री रामधारी

सिंह 'दिनकर', रामवृक्ष 'बेनीपुरी' और शिवपूजन सहाय; वर्त० संपा०—श्रीजगन्नाथ प्रसाद मिश्र; विशे०—'गाँधी-अंक'; संचा—श्री रामलोचनशरण; मू०—१०); प०—पुस्तक-भंडार, हिमालय प्रेस, पटना।

हुंकार—मई १६४२ से प्रका० राष्ट्रीय साप्ताहिक; संस्था०—श्री स्वामी सहजानंद; भूत०संपा०—स्वामी सहजानंद सरस्वती और महापंडित राहुल सांकृत्यायन; संपा०—श्री यमुना कार्यी; विशे० 'दीपावली-अंक', 'आजाद-अंक'; मू०—६); प०—गोविंद मित्र-मार्ग, पटना ४।

होड़सोमवाद—बिहार-सरकार की अध्यक्षता में १६४६ से प्रका० साप्ता०; संपा०—श्री डोमन-साहु 'समीर'; विशे०—'सोहराम-अंक', 'बाहा-अंक', 'स्वतन्त्रता-अंक', 'बापू-अंक'; वि०—देवनागरी-लिपि पर संथाली भाषा में निकलता है; प०—साहित्य-प्रेस, वैद्यनाथ, देवघर।

होनहार—१६४४ से प्रका० एकमात्र बालो० पाक्षिक; १६४४ में ५ अंक निकाल कर बन्द हो गया; १६४७ से मासिक रूप में निकला; जनवरी १६५१ से पुनः पाक्षिक रूप में निकल रहा है; संपा०—श्री बालबन्धु (प्रेमनारायण टंडन); भूत० संपा०—कुँवर अभिमन्युसिंह और श्री गंगानारायण मेहरोत्रा; मू०—३); प०—विद्यामंदिर, रानीकटरा, लखनऊ।

होमियोपैथिक सन्देश—१६४७ से प्रका० मासिक; संपा०—श्री डाक्टर युद्धवीर सिंह; मू०—५); प०—चाँदनी च,

चौथा खंड समाप्त

हिंदी-सेवी-संसार

पाँचवाँ खंड

हिंदी के पुरस्कार और पदक

(१) काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से दिये जानेवाले पुरस्कार और पदक।

(क) पुरस्कार

विभिन्न विषयों के उच्च-कोटि के मौलिक ग्रंथों के प्रवर्द्धन के उद्देश्य से ग्रंथ-कर्त्ताओं को सभा पुरस्कार और पदक अर्पित करती है। इनकी अधिकांश निधियाँ ट्रेजरर, चैरिटेबुल एंडाउमेंट्स के पास सुरक्षित हैं।

इन पुरस्कार-पदकों की अवधि और विषय-संबंधी विवरण निम्न-लिखित है। विस्तृत नियम पुरस्कार-पदकों की नियमावली में दिये हुए हैं।

(१) राजा बलदेवदास बिड़ला पुरस्कार—२००) का यह पुरस्कार अध्यात्म, योग, सदाचार, मनोविज्ञान और दर्शन के सर्वोत्तम ग्रंथ पर प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है। १ माघ, २००१ से लेकर २९ पौष २००५ तक प्रकाशित रचनाएँ विचाराधीन हैं। इसके अनंत १ माघ २००५ से लेकर २९ पौष २००९ तक प्रकाशित रचनाओं पर यह पुरस्कार दिया जायगा।

(२) बटुकप्रसाद पुरस्कार—२००) का यह पुरस्कार सर्वोत्तम मौलिक नाटक या उपन्यास के लिए प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है। अगला पुरस्कार २००६ तक की रचनाओं पर दिया जायगा।

(३) रत्नाकर पुरस्कार (१)—२००) का यह पुरस्कार ब्रजभाषा के सर्वोत्तम ग्रंथ के लिए प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है। आगामी पुरस्कार संवत् २००३ से २००६ तक के ग्रंथों पर दिया जायगा।

(४) रत्नाकर पुरस्कार (२)—यह दूसरा २००) का पुरस्कार ब्रजभाषा के सदृश हिंदी की अन्य भाषाओं (यथा डिंगल, राजस्थानी, अवधी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी आदि) की सर्वोत्तम रचना अथवा सुसंपादित ग्रंथ के लिए प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है। संवत् २००३ तक प्रकाशित पुस्तकें विचाराधीन हैं;

तदनंतर यह पुरस्कार सं० २००४—०७ की रचनाओं पर दिया जायगा।

(५) छन्नूलाल पुरस्कार—श्री रामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार विज्ञान-विषयक सर्वोत्तम ग्रंथ पर प्रति चौथे वर्ष पर दिया जाता है। सं० २००४ तक प्रकाशित पुस्तकों पर विचार किया जा रहा है; आगामी पुरस्कार संवत् २००५—०८ तक की रचनाओं पर दिया जायगा।

(६) जोधसिंह पुरस्कार—२००) का यह पुरस्कार सर्वोत्तम ऐतिहासिक ग्रंथ के लिए प्रति वर्ष दिया जाता है। संवत् २००५ तक प्रकाशित पुस्तकों पर विचार हो रहा है; तदनतर संवत् २००६—६ तक प्रकाशित पुस्तकों पर यह पुरस्कार दिया जायगा।

(७) माधवीदेवी महिला पुरस्कार—१००) का यह पुरस्कार गृहशास्त्र संबंधी सर्वोत्तम पुस्तक की रचयित्री को प्रति चौथे वर्ष दिया जायगा। पहला पुरस्कार संवत् २००६ तक की रचनाओं पर संवत् २००७ में दिया जायगा।

(८) डा० श्यामसुंदरदास पुरस्कार—सभा ने यह निश्चय किया है कि राय बहादुर डा० श्यामसुंदरदास की पुण्य स्मृति में १०००) तथा २००) के दो पुरस्कार प्रति चौथे वर्ष दिये जाया करें जिनका क्रम इस प्रकार हो—

१—१०००) का एक पुरस्कार संवत् २००५ से प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा।

२—२००) का एक पुरस्कार संवत् २००३ से प्रति चौथे वर्ष ऐसे लेखक की सर्वश्रेष्ठ कृति पर दिया जायगा जिनकी मातृभाषा हिंदी न हो तथा जो प्रधानतः अहिंदी-भाषी प्रांत में निवास करते हों। संवत् २००३ तक प्रकाशित रचनाएँ विचाराधीन हैं।

इन दोनों पुरस्कारों के लिए सभा को १००००) की स्थायी निधि संकलित करनी है। सर्वप्रथम दिये जानेवाले दोनों पुरस्कार सभा ने अपनी साधारण आय में से देना निश्चित किया है। इस बीच स्थायी निधि के

१००००) संचित कर लेने हैं। प्रत्येक हिंदी-भाषी तथा प्रत्येक हिंदी-प्रचारिणी संस्था से सभा का आग्रह है कि वह हिंदी के उस परम संरक्षक के निमित्त किये जानेवाले इस सदनुष्ठान में यथा-साध्य अधिक आर्थिक योग स्वयं देकर तथा अपने इष्ठमित्रों से दिलाकर इसकी पूर्ति में सहायक हों।

आशा है, स्वर्गीय डाक्टर महोदय के भक्तों और परिचितों को यह आयोजन रुचिकर होगा और वे इसके लिए अधिक से अधिक आर्थिक योग देकर और दिलाकर शीघ्र १००००) की स्थायी निधि संचित करने में सहायक होंगे।

(९) **वसुमति-पुरस्कार**—श्री पं० बलदेव उपाध्याय जी ने ३००) की निधि इस पुरस्कार के निमित्त प्रदान की है। यह पुरस्कार प्रति चौथे वर्ष बाल-साहित्य की सर्वोत्तम कृति पर दिया जायगा।

(१०) **भैरवप्रसाद स्मारक पुरस्कार**—प्रति वर्ष अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मे० की प्रथमा परीक्षा में उत्तरप्रदेश में सर्वप्रथम आनेवाले विद्यार्थी को ३) का यह पुरस्कार दिया जाता है।

(ख) पदक

(१) **डा० हीरालाल स्वर्ण-पदक**—यह स्वर्णपदक पुरातत्व, मुद्राशास्त्र, हिंद-विज्ञान (इंडोलाजी), भाषा-विज्ञान तथा पुरालिपिशास्त्र (एपीग्राफी) संबंधी हिंदी में लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध पर प्रति दूसरे वर्ष दिया जाता है। संवत २००२-२००३ तथा २००४-०५ में प्रकाशित रचनाएँ विचाराधीन हैं। तदुपरांत संवत् २००६-२००७ की रचनाओं पर यह पदक दिया जायगा।

(२) **द्विवेदी - स्वर्णपदक**—प्रति वर्ष यह स्वर्णपदक हिंदी में लिखित सर्वोत्तम पुस्तक के रचयिता को दिया जाता है। २००३, २००४ और २००५ में प्रकाशित पुस्तकें विचाराधीन हैं।

(३) **सुधाकर-पदक**—यह रौप्य पदक वटुकप्रसाद पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

(४) ग्रीव्ज-पदक—यह रौप्य पदक डा० छन्नूलाल पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

(५) राधाकृष्णदास-पदक—यह रौप्य पदक रत्नाकर पुरस्कार (१) पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

(६) बलदेवदास-पदक—यह रौप्य पदक रत्नाकर - पुरस्कार (२) प्राप्त करनेवाले सज्जन को दिया जाता है।

(७) गुलेरी-पदक—यह रौप्य पदक जोधसिंह पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

(८) रेडिचे-पदक—यह रौप्य पदक बिड़ला-पुरस्कार पाने वाले सज्जन को दिया जाता है।

(९) पुच्छरत-पदक — प्रति वर्ष यह रजत-पदक पंजाब विश्वविद्यालय की हिंदी-रत्न परीक्षा में सर्वप्रथम होने वाले छात्र को दिया जाता है।

(१०) अर्द्धशती भूषण-पदक—प्रति वर्ष निर्मित होने वाले चलचित्रों को 'भूषण पदक' के नाम से एक-एक पदक निम्नलिखित विषयों का सर्वोत्तम संपादन होने पर दिया जायगा—

(१) कहानी, (२) वार्तालाप और भाषा, (३) पुरुष पात्र का अभिनय, (४) स्त्री पात्री का अभिनय, (५) फोटोग्राफी, (६) गानवाद्य, (७) गीत, (८) निर्देशन, (९) कला तथा (१०) वर्ष की सर्वोत्तम कृति।

सभा के पुरस्कार-सम्बंधी नियम

१—सभा के वार्षिक अधिवेशन में प्रति चौथे वर्ष निश्चित पुरस्कार निश्चित (रजत) पदक के साथ निश्चित उद्देश्यों के अनुसार रचयिताओं को उनके सम्मानार्थ दिये जायँगे अथवा उनके उपस्थित न होने पर उनके नाम प्रकट कर दिये जायँगे।

२—पूरा पुरस्कार एक ही लेखक या संपादक को दिया जायगा। वह एक से अधिक में बाँटा न जायगा।

३—पुरस्कार के साथ प्रमाणपत्र भी दिया जायगा।

४—पुरस्कार देने की निश्चित तिथि से कम से कम ६ मास पहले सभा की प्रबंध समिति एक उपसमिति संघटित कर देगी, जिसके कम से कम पाँच सदस्य होंगे। यह उपसमिति ३ या ५ निर्णायक नियुक्त करेगी। कम से कम तीन सदस्यों की उपस्थिति में उक्त उपसमिति का कार्य हो सकेगा। पत्र द्वारा प्राप्त सम्मति भी ग्राह्य होगी। निर्णायकों में सभा के सदस्य तथा अन्य विद्वान् भी हो सकेंगे। किंतु जिनकी लिखी या प्रकाशित पुस्तक पुरस्कार के लिए विचारार्थ आयी होगी वे निर्णायक न हो सकेंगे। (रत्नाकर पुरस्कारों में रत्नाकर जी के परिवार का एक प्रतिनिधि निर्णायक होगा।)

५—यदि कोई सज्जन चाहें कि किसी रचना के सम्बन्ध में किसी पुरस्कार के लिए विचार किया जाय तो उनका कर्तव्य है कि उसकी ७ प्रतियाँ सभा के कार्यालय में निश्चित समय के भीतर भेज दें, जो सभा की संपत्ति समझी जायँगी। इन पुस्तकों की पहुँच प्रेषक के पास भेजी जायगी।

६—पुरस्कार के लिए केवल जीवित लेखकों की रचना पर विचार किया जायगा। पर निर्णय हो जाने पर यदि लेखक की मृत्यु हो जाय तो वह पुरस्कार उसके उत्तराधिकारी को दिया जायगा।

७—किसी लेखक को कोई पुरस्कार एक बार से अधिक नहीं दिया जायगा।

८—पुरस्कार-उपसमिति को भी अधिकार होगा कि यदि वह चाहे तो पुरस्कार के लिए आयी हुई पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य उपयुक्त पुस्तकें भी अपनी ओर से निर्णय के लिए निर्णायकों के सम्मुख उपस्थित करे।

९—पुरस्कार-उपसमिति दाता के निर्दिष्ट उद्देश्य के अनुसार निर्धारित अवधि के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों की सूचियाँ तैयार कराएगी जिसमें रचना, रचयिता तथा प्रथम संस्करण के प्रकाशन का समय दिया रहेगा।

१०—उक्त सूची के आधार पर पुरस्कार-उपसमिति एक ऐसी सूची तैयार करेगी जिसकी पुस्तकों

पर निर्णायकों को विचार करना होगा।

११—उक्त नियम १० के अनुसार बनी सूची की एक एक प्रति तथा रचनाओं की एक एक प्रति निर्णायकों के पास भेजी जाकर निश्चित समय के भीतर उनके निर्णय मँगाने का प्रबंध किया जायगा। यह समय साधारणतः तीन मास से अधिक न होगा।

१२—प्रत्येक पुस्तक के लिए अधिक से अधिक १०० अंक निर्दिष्ट रहेंगे। प्रत्येक निर्णायक प्रत्येक भेजी हुई पुस्तक पर उसकी योग्यता के अनुसार अलग अलग अंक देंगे। समस्त निर्णायकों के अंक मिलाकर जिस पुस्तक पर सर्वाधिक अंक मिलेंगे वह सर्वोत्तम और पुरस्कार की अधिकारिणी मानी जायगी। समस्त निर्णायकों के अंक मिलाकर एक से अधिक पुस्तकों पर सर्वाधिक किंतु बराबर अंक मिलने की अवस्था में पुरस्कार उपसमिति को अधिकार होगा कि वह ऐसी एकाधिक पुस्तकों पर विचार करके किसी एक पुस्तक को पुरस्कार के योग्य ठहरावे।

१३—समस्त निर्णायकों के अंकों का जोड़ मिलाकर प्रतिशत कम से कम ६० अंकों का औसत आने पर कोई रचना पुरस्कार की अधिकारिणी मानी जायगी।

१४ (क)—यदि किसी वर्ष पुरस्कार न दिया जा सका तो पुरस्कार का बचा हुआ द्रव्य उसकी स्थायी निधि में जमा कर दिया जायगा।

(ख)—स्थायी निधि के व्याज द्वारा पुरस्कार के लिए अपेक्षित द्रव्य से अधिक जो आय होगी उसमें से पुरस्कार संबंधी अन्य आवश्यक खर्च होंगे और तदुपरांत जो बचत होगी वह स्थायी निधि में जमा कर दी जायगी।

१५—काव्यों में उन्हीं पुस्तकों पर पुरस्कार के लिए विचार किया जायगा जिनमें लगभग २०० चरण होंगे।

सभा के स्वर्णपदक सम्बन्धी नियम

१—सभा के वार्षिक अधिवेशन में प्रति वर्ष निश्चित पदक निश्चित उद्देश्यों के अनुसार ग्रंथ रचयिताओं को सम्मानार्थ दिया जायगा और उनके उपस्थित न रहने पर उनका नाम प्रकट कर दिया जायगा।

२—पदक देने की निश्चित तिथि से कम से कम ६ मास पहले सभा की प्रबंध-समिति एक उपसमिति संगठित कर देगी, जिसके कम से कम पाँच सदस्य होंगे। यह उपसमिति ३ या ५ निर्णायक नियुक्त करेगी। कम से कम तीन सदस्यों की उपस्थिति में उक्त उपसमिति का कार्य हो सकेगा। पत्र द्वारा प्राप्त सम्मति भी ग्राह्य होगी। निर्णायकों में सभा के सदस्य तथा अन्य विद्वान भी हो सकेंगे। किंतु जिनकी लिखी या प्रकाशित पुस्तक पुरस्कार के लिए विचारार्थ आयी होगी वे निर्णायक न हो सकेंगे।

३—यदि कोई सज्जन चाहें कि किसी रचना के संबंध में किसी स्वर्ण-पदक के लिए विचार किया जाय तो उनका कर्तव्य है कि उसकी ७ प्रतियाँ सभा के कार्यालय में निश्चित समय के भीतर भेज दें, जो सभा की संपत्ति समझी जायँगी। इन पुस्तकों की पहुँच प्रेषक के पास भेजी जायगी।

४—पदक के लिए केवल जीवित लेखकों की रचना पर विचार किया जायगा। पर निर्णय हो जाने पर यदि लेखक की मृत्यु हो तो वह पदक उसके उत्तराधिकारी को दिया जायगा।

५—किसी लेखक को कोई पदक एक बार से अधिक नहीं दिया जायगा।

पदक-उपसमिति को अधिकार होगा कि यदि वह चाहे तो पदक के लिए आयी हुई पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें भी अपनी ओर से निर्णय के लिए निर्णायकों के सम्मुख उपस्थित करे।

पदक-उपसमिति प्रति वर्ष सर्वोत्तम प्रकाशित पुस्तकों की सूची तैयार कराएगी, जिसमें रचना, रचयिता तथा प्रथम संस्करण के प्रकाशन का समय दिया जायगा।

८—उक्त सूची के आधार पर पदक-उपसमिति एक ऐसी सूची तैयार करेगी जिसकी पुस्तकों पर निर्णायकों को विचार करना होगा।

९—उक्त नियम ८ के अनुसार बनी सूची की एक-एक प्रति तथा रचनाओं की एक-एक प्रति निर्णायकों के पास भेजी जाकर निश्चित समय के भीतर उनके निर्णय मँगाने का प्रबंध किया जायगा। यह समय साधारणतः तीन मास से अधिक न होगा।

१०—प्रत्येक पुस्तक के लिए अधिक से अधिक १०० अंक निर्दिष्ट रहेंगे। प्रत्येक निर्णायक प्रत्येक भेजी हुई पुस्तक पर उसकी योग्यता के अनुसार अलग-अलग अंक देंगे। समस्त निर्णायकों के अंक मिला कर जिस पुस्तक पर सर्वाधिक अंक मिलेंगे वह सर्वोत्तम और पदक की अधिकारिणी मानी जायगी। समस्त निर्णायकों के अंक मिला कर एक से अधिक पुस्तकों पर सर्वाधिक किंतु बराबर अंक मिलने की अवस्था में पदक-उपसमिति को अधिकार होगा कि वह ऐसी एकाधिक पुस्तकों पर विचार करके किसी एक पुस्तक को पदक के योग्य ठहराये।

११—समस्त निर्णायकों के अंकों का जोड़ मिलाकर प्रतिशत कम से कम ६० अंकों का औसत आने पर कोई रचना पदक की अधिकारिणी मानी जायगी।

११ (क)—यदि किसी वर्ष पदक न दिया जा सका तो पदक का बचा हुआ द्रव्य उसकी स्थायी निधि में जमा कर दिया जायगा।

(ख) स्थायी निधि के व्याज द्वारा पदक के लिए अपेक्षित द्रव्य से अधिक जो आय होगी उसमें से पदक-संबंधी अन्य आवश्यक खर्च होंगे और तदुपरांत जो बचत होगी वह स्थायी निधि में जमा होगी।

सम्मेलन की ओर से दिये जाने वाले पुरस्कार

साहित्य के संवर्द्धन और साहित्यकारों के सम्मान में प्रतिवर्ष सम्मेलन की ओर से विभिन्न विषयों की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर भिन्न-भिन्न पारितोषिक प्रदान किये जाते हैं। इन पारितोषिकों की संख्या ६ है जिनका आयोजन और संगठन स्थायी समिति

की ओर से नियुक्त उपसमितियाँ अलग अलग किया करती हैं, प्रत्येक पारितोषिक सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन पर अध्यक्ष द्वारा विजेता को रोली, नारियल आदि मंगल द्रव्यों से सम्मानित किये जाने के बाद दान किया जाता है।

पारितोषिक द्रव्य के साथ ही एक ताम्रपत्र भी प्रदान किया जाता है, जिसमें पारितोषिक का विवरण अंकित रहता है। प्रस्तुत पारितोषिकों में मंगला प्रसाद पारितोषिक हिन्दी का गौरवमय पारितोषिक है।

(क) पुरस्कार

मंगलाप्रसाद-पुरस्कार—

प्रतिवर्ष बारह सौ रुपयों का "मंगलाप्रसाद-पारितोषिक" हिंदी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ सम्मेलन द्वारा दिया जाता है। संकलित, संगृहीत, अनूदित ग्रन्थ मौलिक रचना के अन्तर्गत नहीं समझे जाते। पूरा पारितोषिक एक ही लेखक को दिया जाता है, भिन्न भिन्न लेखकों को वितरित नहीं किया जाता। प्रति वर्ष स्थायी समिति द्वारा "मंगलाप्रसाद पारितोषिक"—समिति का संगठन हुआ करता है जिसमें ५ सदस्य और एक प्रतिनिधि पुरस्कारदाता का रहता है। पारितोषिक-निर्णय के लिए आयी हुई पुस्तकें उस विषय के विशेषज्ञों के पास भेजी जाती हैं।

पारितोषिक वितरण के लिए १ काव्य, २ निबन्ध, ३ इतिहास, ४ समाजशास्त्र, ५ दर्शन, ६ तात्विक विज्ञान, ७ व्यावहारिक विज्ञान, ये सात विभाग हैं। प्रत्येक कृति के संबंध में पारितोषिक समिति निश्चय करती है कि वह किस किस विभाग के अंतर्गत है। इस पारितोषिक के दाता श्री गोकुलचन्द्र रईस हैं। इसका प्रारंभ सं० १९७१ में हुआ।

मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त विद्वान—प्रारंभ से अब तक जिन विद्वानोंको उनकी सर्वश्रेष्ठ कृतियों पर पुरस्कार प्रदान किया गया है उनकी क्रमबद्ध सूची निम्नांकित है:—

१—श्री पद्मसिंह शर्मा, बिहारी सतसई, १९७९। २—श्री गौरी-

शंकर हीराचंद ओझा, प्राचीन लिपि माला, १९८० । ३—श्री प्रो० सुधाकर, मनोविज्ञान, १९८२ । ४—श्री त्रिलोकीनाथ वर्मा, हमारे शरीर की रचना, १९८३ । ५—श्रीवियोगी हरि, वीर - सतसई, १९८४-८५ । ६—श्री प्रो० सत्यकेतु, मौर्यसाम्राज्य का इतिहास, १९८६ । ७—श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय, आस्तिकवाद, १९८७ । ८—श्री डा० गोरखप्रसाद, फोटोग्राफी की शिक्षा, १९८८ । ९—मुकुन्दस्वरूप, स्वास्थ्य - विज्ञान, १९८९ । १०—श्रीजयचन्द्र विद्यालंकार, भारतीय इतिहास की रूप-रेखा, १९९० । ११—श्री चन्द्रावती लखनपाल शिक्षा - मनोविज्ञान, १९९१ । १२—श्री रामदास गौड़, विज्ञानहस्तामलक, १९९२ । १३—श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय, प्रियप्रवास, १९९३ । १४—श्री मैथिलीशरण गुप्त, साकेत, १९९३ । १५—श्री जयशंकर प्रसाद, कामायनी, १९९४ । १६—श्री रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि, १९९५ । १७—श्री वासुदेव उपाध्याय, गुप्त साम्राज्य का इतिहास, १९९६ । १८—श्री संपूर्णानन्द, समाजवाद, १९९७ । १९—श्री बलदेव उपाध्याय, भारतीय दर्शन, १९९८ । २०—श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, सूर्य-सिद्धान्त की विज्ञान-भाषा। १९९९ । २१—श्री शंकरलाल गुप्त, क्षयरोग, २०००।२२—श्री महादेवी वर्मा, रश्मि, नीरजा आधुनिक कवि २००१।२३—श्री डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर २००२-२४—श्री डा० रघुवीरसिंह, मालवा में युगांतर, २००३ । २५—श्री कमलापति त्रिपाठी, बापू और मानवता । २००४।२६—श्री संपूर्णानन्द, चिद्विलास, २००५ ।

सेकसरिया महिला पुरस्कार

सम्मेलन के अधिवेशन में प्रतिवर्ष ५००) का सेकसरिया महिला पारितोषिक किसी भी महिला को उसकी रचित हिंदी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जाता है । यदि किसी कारणवश कोई अधिवेशन के अवसर पर पारितोषिक लेने के लिए उपस्थित न हो सके तो प्रमाणपत्र और पारितोषिक का रुपया स्थायी

समिति के किसी भी अधिवेशन में परम्परा के अनुसार दिया जाता है ।

प्रमाणपत्र, ताम्रपत्र आदि सभी पारितोषिकों के नियम एक ही प्रकार के होते हैं ।

इस पारितोषिक में भी ५ सदस्यों की एक उपसमिति संगठित होती है ।

इस पुरस्कार के दाता श्रीसीताराम सेकसरिया हैं । इसका प्रारंभ संवत १९८८ (सन् १९३१) से हुआ ।

सेकसरिया - पुरस्कार - प्राप्त विदुषी महिलाएँ—१—श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान, मुकुल २ — सुभद्राकुमारी चौहान, बिखरे मोती । ३ — श्रीमती चन्द्रावती, स्त्रियों की स्थिति । ४—श्रीमती महादेवी वर्मा, नीरजा । ५—श्रीमती रामकुमारी चौहान, निःश्वास । ६—श्रीमती दिनेश नंदिनीडालमियाँ, शबनम । ७—श्रीमती सूर्यदेवी दीक्षित, निर्झरिणी । ८—श्रीमती तोरन देवी शुक्ल, जागृति । ९—श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा, विहाग । १०—श्रीमती तारा पांडेय, आभा । ११—श्रीमती चंद्रावती ऋषभसेन जैन, नींव की ईंट । १२—श्रीमती चन्द्रकिरण सौनरिक्सा, आमदखोर । १३—श्रीमतीशांति एम०ए०, रेखा । १४—श्रीमती ऊषा देवी मित्रा, सान्ध्य पूर्वी । १५—श्रीमती राधा देवी गोयनका, नारीसमस्या ।

श्री राधामोहन गोकुलजी-पुरस्कार—समाज सुधार विषय पर किसी मौलिक पुस्तक की रचना के सम्मानार्थ २५०) का यह पुरस्कार प्रतिवर्ष दिया जाता है ।

यह पारितोषिक राधामोहन-गोकुल स्मारक समिति की ओर से श्री राधामोहन गोकुल जी की स्मृति में दिया जाता है । इसका प्रारंभ काल संवत १९३७ है । इस पारितोषिक के प्रदान करने की पद्धति अन्य पारितोषिकों की भाँति ही है ।

श्री राधामोहन गोकुल-पुरस्कार प्राप्त लेखक और ग्रंथ—१—श्री सत्यदेव विद्यालंकार, परदा । २—श्री रामनारायण यादवेन्दु, भारत का दलित समाज । ३—श्री 'व्यथित हृदय', पहली भेंट ।

मुरारका पारितोषिक—५००) का मुरारका पारितोषिक बंगाली, उड़िया, आसामी भाषा-भाषी सज्जन द्वारा लिखी गयी हिन्दी की किसी रचना के सम्मानार्थ दिया जाता है। इस पारितोषिक के दाता श्री बसंतलाल मुरारका हैं। इसका प्रारंभ संवत् १९९४ (सन् १९३७ से) हुआ।

मुरारका पारितोषिक प्राप्त विद्वान–१—श्रीसंपूर्णानंद, समाजवाद। २—श्रीअमरनारायण अग्रवाल, समाजवाद। ३—श्री महापंडित राहुल सांकृत्यायन, सोवियत भूमि। ४—श्रीरामनाथ 'सुमन', गाँधीवाद की रूपरेखा।

रत्नकुमारी पुरस्कार—२५०) का रत्नकुमारी-पुरस्कार हिन्दी के किसी मौलिक नाटक के सम्मानार्थ दिया जाता है। श्री रत्नकुमारी इस पुरस्कार की दात्री हैं। इसका प्रारंभ संवत् १९९५ (सन् १९३८) में हुआ।

रत्नकुमारी पारितोषिक प्राप्त विद्वान—१—श्री सेठ गोविंददास—प्रकाश, २—डाक्टर रामकुमार वर्मा—सप्तकिरण।

सम्मेलन के सभी पुरस्कारों के विशेष नियम

(१) पुरस्कार सम्मेलन के अधिवेशन में दिया जायगा अथवा अधिवेशन में पारितोषिक पाने के अधिकारी का नाम प्रकट कर दिया जायगा।

यदि किसी कारणवश कोई अधिवेशन के अवसर पर पारितोषिक लेने के लिए उपस्थित न हो सके तो प्रमाणपत्र और पारितोषिक का रुपया स्थायी समिति के किसी अधिवेशन में दिया जायगा। प्रमाणपत्र पर तिथियाँ आदि वही रहेंगी जिस तिथि को सम्मेलन हुआ करेगा।

संकलित, संगृहीत और अनुवादित ग्रंथ मौलिक रचना के अंतर्गत न समझे जायँगे, परन्तु स्वतंत्र रूप से सिद्धांत स्थापित करने वाली व्याख्याएँ मौलिक रचना की श्रेणी में रक्खी जायँगी।

(२) पूरा पारितोषिक एक लेखक या लेखिका को मिलेगा। एक से अधिक लेखक या लेखिकाओं में बाँटा न जायगा।

(३) पारितोषिक पानेवाले लेखक या लेखिका को पारितोषिक के साथ सम्मेलन के अवसर पर एक प्रमाणपत्र भी दिया जायगा।

अतिरिक्त पारितोषिक-समिति के निर्णय की तिथि दर्ज रहेगी।

(१७) उपर्युक्त पाँचवीं सूची तैयार हो जाने पर उसकी एक-एक प्रति प्रत्येक निर्णायक के पास भेजी जायगी और सुविधानुसार निर्णायकों के पास रचनाएँ भेजने का प्रबन्ध किया जायगा।

(१८) पुस्तकों पर विचार करके प्रत्येक निर्णायक अपनी सम्मति के अनुसार उनमें से एक सर्वोत्तम रचना चुन लेगा और पारितोषिक समिति को अपनी सम्मति की सूचना साधारणतः उस तिथि से दो मास के भीतर दे देगा जब उसको पुस्तकें प्राप्त हों। इसके अतिरिक्त प्रत्येक निर्णायक उन रचनाओं के नाम भी लिखेगा जो उसकी सम्मति के अनुसार उत्तमता में द्वितीय और तृतीय हों। निर्णायक इन तीनों रचनाओं पर आलोचनात्मक तथा तुलनात्मक सम्मति देगा।

(१९) सर्वोत्तम होने के संबंध में सबसे अधिक निर्णायकों की सम्मतियाँ जिस रचना के पक्ष में होंगी उसका लेखक–लेखिका पारितोषिक की अधिकारिणी होंगी। यदि निर्णायकों की उन सम्मतियों से जो रचनाओं के सर्वोत्तम होने के पक्ष में हैं यह निर्णय न हो सके कि मताधिक्य किस एक रचना के पक्ष में है तो उत्तमता में द्वितीय तथा तृतीय स्थानों के लिए आयी हुई सम्मतियों से भी सर्वोत्तम रचना का निर्णय किया जा सकेगा। जैसे पाँच निर्णायकों में दो ने एक रचना को सर्वोत्तम बताया और दो ने एक दूसरी रचना को और पाँचवें ने सर्वोत्तम एक अन्य रचना को बताया तब उन पुस्तकों में जिन्हें दो दो प्रथम स्थान मिले हैं जिस पुस्तक को अधिक द्वितीय स्थान मिले हैं उसके लिए मताधिक्य समझा जायगा। इसी प्रकार आवश्यकता पड़ने पर तृतीय स्थान सम्बन्धी सम्मति तक से मताधिक्य का निर्णय हो सकेगा।

(२०) मताधिक्य का पता लगते हुए भी यदि किसी रचना के सर्वोत्तम होने के पक्ष में दो निर्णायकों से कम की सम्मति हो तो पारितोषिक-समिति को अधि-

कार होगा कि पारितोषिक दे या न दे।

(२१) यदि पारितोषिक-समिति को उचित जान पड़े तो निर्णायकों की सम्मति प्रकाशित कर सकेगी।

(२२) यदि पारितोषिक-समिति उचित समझे तो विचारार्थ उपस्थित की गयी किसी प्रकाशित पुस्तक के लेखक—लेखिका के सम्बन्ध में यह जाँच कर सकती है कि उस पुस्तक को लिखने की योग्यता उसमें है अथवा नहीं।

(२३) यदि उपर्युक्त नियमों के अनुसार किसी वर्ष पारितोषिक न दिया जा सके तो उस वर्ष पारितोषिक का रुपया स्थायी-समिति के निश्चयानुसार किसी पुरुष या महिला की लिखी पुस्तक के छापने के सहायतार्थ या उच्च शिक्षा प्रप्त करने के लिए दिया जा सकता है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा-प्रदत्त पुरस्कार

महात्मागाँधी पुरस्कार—राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति वर्धा की ओर से यों तो कई छोटे-छोटे पुरस्कार परीक्षाओं में प्रथम और द्वितीय आने वाले परीक्षार्थियों को दिये जाते हैं, परंतु उनमें सबसे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है महात्मा गाँधी पुरस्कार। इसका निश्चय १९५० में अखिल भारतीय राष्ट्र-भाषा प्रचारक-सम्मेलन के अहमदाबाद अधिवेशन में इस प्रकार हुआ था—

'राष्ट्रपिता पूज्य महात्मा गाँधी जी की पुण्य स्मृति में १५०१) पंद्रह सौ एक रुपए का 'महात्मा गाँधी पुरस्कार' प्रतिवर्ष अहिंदी भाषी लेखक द्वारा लिखित हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मौलिक रचना के सत्कार में प्रदान किया जायगा।

यह प्रस्ताव मई १९५१ में पूना में होनेवाले तृतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन में स्वीकृत होने के बाद कार्यन्वित होगा।

पाँचवाँ खण्ड समाप्त

———

WHETHER you are
well-known
or un-known

if your manuscript has
real merit,

THE U. I. P. H. LTD.
will consider it
most sympathetically

The Upper India Publishing House Ltd., Lucknow

हिंदी-सेवी-संसार

छठा खंड

हिंदी में अनुसंधान-कार्य

विश्वविद्यालय, आगरा — डी० लिट्० की उपाधि इन विषयों पर प्रदान की जा चुकी है—(१) तुलसी-साहित्य (विशेषतः रामचरित मानस) का अध्ययन । (२) देव-साहित्य और रीतिकाल का अध्ययन यह विषय डाक्टर नगेंद्र-नागाइच का था।

पी-एच० डी० की उपाधि जिन विषयों पर प्रदान की जा चुकी है, उनकी सूची इस प्रकार है —(१) हिंदी नाट्य साहित्य का इतिहास। (२) हिंदी कविता में प्रकृति-चित्रण। (३) श्री गोरख-नाथ और उनका समय। (४) ब्रजलोक-साहित्य का अध्ययन । (५) जायसी : उनकी कला और दार्शनिकता।

पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत विषय—(१) आधुनिक कविता में रहस्यवाद की भावना। (२) केशवदास। (३) हिंदी पत्रकार-कला का इतिहास। (४) हिंदी गीति नाट्य पर अँगरेजी साहित्य का प्रभाव। (५) हिंदी उपन्यास का विकास — १८६७-१६४२। (६) जयशंकरप्रसाद की काव्य-प्रतिभा का आलोचनात्मक अध्ययन। (७) आधुनिक हिंदी-आलोचना-साहित्य का विकास—१८६८ से १६४३। (८) हिंदी कविता का आलोचनात्मक वर्गीकरण। (६) हिंदी कविता के पिछले पचीस वर्ष। (१०) हिंदी निबंध-साहित्य का विकास। (११) गुप्तबंधु और उनका साहित्य। (१२) हिंदी आधुनिक साहित्य में राष्ट्रीयता का विकास और उसका रूप। (१३) हिंदी-समालोचना का जन्म और उसका विकास। (१४) हिंदी-अलंकार-शास्त्र। (१५) रत्नाकर की काव्यकला। (१६) कबीर की विचारधारा। (१७) हिंदी कविता में कामभावना—१६०० से १८५० तक। (१८) तुलसी की काव्यकला। (१६) बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य। (२०) हिंदी की सामाजिक कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन। (२१) भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र। (२२) हिंदी-कवितामें ग्राम-चित्रण। (२३) वार्ता-साहित्य का सहित्यिक और चारित्रिक दृष्टि से अध्ययन। (२४) हिंदी कविता में प्रेम और

सौंदर्य। (२५) भक्तियुग के साहित्य में वात्सल्य की भावना। (२६) तुलसी की काव्यकला। (२७) काव्य में रस। (२८) विद्यापति-जीवनी और काव्य। (२९) हिंदी कविता में रोमांस। (३०) प्रेमचंद : औपन्यासिक, सामाजिक विचारक और दार्शनिक। (३१) हिंदी साहित्य में विविध वाद। (३२) आधुनिक हिंदी में वीर-काव्य। (३३) छायावाद का शास्त्रीय अध्ययन। (३४) श्रीमद्भागवत और सूरदास।

विश्वविद्यालय-प्रयाग—डी० फिल० की उपाधि के लिए जिन विषयों पर काम हो चुका है उनके नाम ये हैं—(१) आधुनिक हिंदी साहित्य — १८००-१९०० । (२) आधुनिक हिंदी साहित्य १९००-१९२५। (३) हिंदी-छंद शास्त्र। (४) आधुनिक मनोविज्ञान की दृष्टि से रस का विवेचन। (५) सूरदास। (६) प्राचीन हिंदी कवितामें रहस्य-भावना(आदिकाल से १६७५ तक)। (७) हिंदी प्रेमाख्यान - काव्य। (८) हिंदी पत्रकार-कला का इतिहास। (९) हिंदी-काव्य में प्रकृति-चित्रण। (१०) आधुनिक हिंदी कविता में नारी (१९०० से १९४५ तक)। (११) राम-कथा—उसका जन्म और विकास।

डी० लिट की उपाधि के लिए जिन विषयों पर काम हो चुका है उनकी सूची-(१)अवधी का विकास। (२) हिंदी - अलंकार-शास्त्र। (३) तुलसीदास। (४) वल्लभ-संप्रदाय और अष्टछाप। (५) भोजपुरी। (६) नाट्यशास्त्र। (७) हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्टभूमि।

डी० फिल० के लिए स्वीकृत विषय जिन पर अब काम हो रहा है—(१) हिंदी साहित्य पर प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य का प्रभाव। (२) व्रज का वैष्णव संप्रदाय और उसका हिंदी-साहित्य पर प्रभाव। (३) अँगरेजी का हिंदी भाषा और साहित्य पर प्रभाव। (४) हिंदी चारण काव्य का अध्ययन-१६०० से १८०० तक। (५) हिंदी और बँगला के वैष्णव कवियों का तुलनात्मक अध्ययन (५) गुजराती और व्रजभाषा के कृष्णकाव्य (पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी) का तुलनात्मक अध्ययन। (७) सिद्ध-साहित्य का अध्ययन। (८)

ग्रामीण उद्योग-धंधों से संबंधित—विशेषतः आजमगढ़ की फूलपुर तहसील में प्रचलित — शब्दों का शास्त्रीय अध्ययन (६) हिंदी मुक्तक काव्य का जन्म और विकास—१८०० तक। (१०) हिंदी साहित्य के रीतिकाल में भक्ति का रूप और विकास। (११) कबीर-साहित्य और उसके पाठ का आलोचनात्मक अध्ययन। (१२) साहित्यिक हिंदी का जन्म और विकास। (१३) आधुनिक हिंदी साहित्य और उसकी पृष्टभूमि का अध्ययन—१६२६ से १६४७ तक। (१४) हिंदी का नीति-साहित्य। (१५) भारतीय स्वतन्त्रता - संग्राम और उसका हिंदी-साहित्य पर प्रभाव। (१६) मध्ययुग के तेलेगु और हिंदी वैष्णव-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन। (१७) भोजपुरी लोक-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन। (१८) अवधी लोक-कथाओं और गीतों में चित्रित सांस्कृतिक और सामाजिक स्थिति। (१६) हिंदी उपन्यास और कहानियों का जन्म और विकास। (२०) बँगला साहित्य का आधुनिक हिंदी साहित्य पर प्रभाव—१६ वीं और २० वीं शताब्दी। (२१) १६ वीं शताब्दी के सुधार-आन्दोलन का आधुनिकहिंदी-साहित्य पर प्रभाव। (२२) हिंदी गीतिकाव्य का जन्म और विकास—१४वीं शताब्दी से १७वीं शताब्दी तक। (२३) हिंदी कविता में भक्ति का उद्‌गम और विकास—१४वीं से १७वीं शताब्दी तक। (२४) बुन्देलखंड का लोक-साहित्य। (२५) हिंदू राष्ट्रीयता और मध्यकालीन हिंदी साहित्य।

डी० लिट०की उपाधि के लिए जो विषय स्वीकृत हैं और जिनपर अब काम हो रहा है, वे हैं—(१) नायिका - भेद का अध्ययन। (२) सूरसागर की हस्तलिखित प्रतियाँ और पाठ-भेद की समस्याएँ।

विश्वविद्यालय, राजपूताना, जयपुर—पी. एच.डी. की उपाधि के लिए स्वीकृत जिन विषयों पर काम हो रहा है, उनकी सूची—(१) आधुनिक हिंदी-साहित्य में राष्ट्रीयता का रूप और उसका विकास। (२) रीतिकालीन साहित्य में कला और रस। (३) मैथिलीशरण जी

के काव्य-सम्बन्धी रूप-विधान का क्रम-विकास। (४) हरिऔध जी के काव्य में रस और रीति का प्रयोग। (५) आधुनिक हिंदी-कविता में लाक्षणिकता के रूप। (६) द्विवेदी युग में हिंदी-कविता का पुनरुद्धार। (७) हिंदी का आधुनिक गद्य-साहित्य और प्रसाद जी। (८) भारतेंदु के पश्चात हिंदीसाहित्य में हास्य। (६) महादेवी वर्मा की काव्य-विचार-धारा। (१०) हिंदी के एकांकी नाटक। (११) नागरीदासके काव्य में प्रभाव और प्रतिक्रिया का अध्ययन। (१२) प्रसाद-साहित्य में जीवनी और दार्शनिकता। (१३) राजस्थानी कथाओं का वैज्ञानिक अध्ययन। (१४) आधुनिक हिंदी कविता में वाद-प्रवाह। (१५) आधुनिक हिन्दी-साहित्य में निबंध का विकास। (१६) प्रेमचन्द और उनका साहित्य। (१७) भक्तिकालीन-साहित्य में प्रेम के विविध प्रयोग। (१८) राजस्थानी गद्य का जन्म और विकास। (१६) १८७० के पश्चात हिन्दी साहित्य की विचारधाराएँ। (२०) राजस्थान के राजघरानों द्वारा हिन्दी-साहित्य-सेवाएँ तथा उनका साहित्यिक मूल्यांकन। (२१) राजस्थान के संतकवि। (२२) राजस्थान का निरंजनी सम्प्रदाय: उसका साहित्य और दार्शनिक विचारधारा। (२३) राजस्थान का पिंगल-साहित्य। (२४) राजा शिवप्रसाद और राजा लक्ष्मणसिंह—उनका साहित्य और आधुनिक भाषा और विचार पर उनका प्रभाव। (२५) आधुनिक हिन्दी-साहित्य की प्रेरक शक्तियाँ।

विश्वविद्यालय, लखनऊ — डी० लिट्० उपाधि के लिए स्वीकृत विषय जिन पर काम हो रहा है—(१) हिन्दी नाटकों के आधार पर नाट्य-सिद्धान्तों का निर्धारण। (२) सन्तकवियों की रहस्य-भावना। (३) तुलसीदास की दार्शनिकता।

पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत वे विषय जिनपर उपाधि प्रदान की जा चुकी है—(१) हिंदी-काव्यशास्त्र का इतिहास। (२) महावीरप्रसाद द्विवेदी और उनका युग। (३) सन्तकवि मलूकदास और उनका काव्य। (४) केशवदास-जीवनी और उनकी रचनाओं का अध्ययन। (५) अकबरी दर-

बार के हिन्दी-कवि। इन विषयों पर जिन विद्वानों को उपाधि प्रदान की गयी है उनके नाम क्रमशः ये हैं—सर्वश्री भगीरथ मिश्र, उदयभानुसिंह, त्रिलोकी नारायण दीक्षित, हीरालाल दीक्षित, और सरजू प्रसाद अग्रवाल।

पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत विषय जिनपर काम हो रहा है—(१) महाकवि देव—उन की जीवनी और काव्य। (२) अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के हिन्दी काव्य की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि। (३) खड़ी बोली का लोक साहित्य। (४) प्रेमचंद और उनका काव्य। (५) अवध के हिन्दी कवि—एक आलोचनात्मक अध्ययन। (६) हिंदी-कवियों के प्रेमाख्यानक काव्य। (७) हिन्दी गद्य का विकास। (८) हिंदी में गीतिकाव्य का विकास और उसकी भावधारा। (९) अवधी का ग्राम-साहित्य। (१०) हरिऔध जी की जीवनी और रचनाएँ। (११) भक्तिकालीन हिंदीकाव्य में नारी। (१२) सोलहवीं और सत्रहवीं शदाब्दी के कृष्णभक्त-कवियों की सौंदर्य-भावना (१३) सतनामी संप्रदाय के हिन्दी कवि। (१४) हिंदी के रीतिकालीन रीतिमुक्त कवि। (१५) शिवनारायणप्रसाद और हिन्दी। (१६) हिंदी में रीतिकालीन काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियाँ। (१७) तुलसी की भाषा का अध्ययन। (१८) हिन्दीसाहित्य में हास्य और व्यंग्य। (१९) आधुनिक हिन्दी साहित्य में गाँधीवाद। (२०) बुंदेलखंड का लोक-साहित्य। (२१) प्रेमचन्द की रचनाओं में समाज और संस्कृति का चित्रण। (२२) हिंदी का कहानी-साहित्य—एक अध्ययन। (२३) भारतेंदु के समकालीन हिन्दी लेखक—भारतेंदु-युग। (२४) आधुनिक व्रजभाषा काव्य-एक अध्ययन। (२५) हिन्दी सासित्य में सतसई-साहित्य। (२६) हिन्दी के सामाजिक उपन्यास—एक अध्ययन। (२७) प्रसाद के काव्य में अध्यात्मिक तत्व। (२८) हिन्दी के नीतिकार कवि—१६५० से १८५७ तक। (२९) द्विवेदी युग के हिन्दी कवि—१९०० से १९३५ तक। (३०) हिन्दी साहित्य में विभिन्न नाट्य रूप, उत्पत्ति और विकास।

(३१) हिन्दी साहित्य में शिशु और वात्सल्य-भावना। (३२) आधुनिक हिंदी साहित्य में कृष्ण-काव्य। (३३) आर्यसमाज और हिंदी-साहित्य। (३४) हिंदी के मुसलमान भक्त कवि। (३५) हिंदी के सामाजिक उपन्यासों का अध्ययन। (३६) रीतिकालीन हिंदी साहित्य में ऐतिहासिक सामग्री। (३७) खड़ी बोली के महाकाव्य। (३८) हिंदी-साहित्य में रहस्यवाद। (३९) भारतेंदुकाल तक के हिंदी साहित्य में रामकाव्य का विकास। (४०) महाराष्ट्र के हिंदी सन्तकवि। (४१) आधुनिक हिन्दी-काव्य में छन्द। (४२) हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद। (४३) हिन्दी उपन्यासों में नारी। (४४) आधुनिक हिंदी साहित्य में रामकाव्य। (४५) संत-कवि रैदास और उनका संप्रदाय। (४६) हिंदी काव्य में ग्राम्यजीवन का चित्रण। (४७) हिंदी में जीवनी-साहित्य का जन्म और विकास। (४८) हिंदी के ऐतिहासिक नाटकों का आलोचनात्मक अध्ययन। (४९) हिंदी उपान्यासों की विभिन्न प्रवृत्तियाँ।

विश्वविद्यालय सागर—खोज के लिए १९५०-५१ में स्वीकृत विषय—(१) मैथिलीशरण गुप्त के मानसिक और कलात्मक विकास का अध्ययन। (२) शुक्ल जी के समीक्षा-सिद्धान्तों का अध्ययन। (३) प्रसाद जी का काव्य-विकास। (४) आधुनिक हिन्दी-साहित्य पर विविध मनोवैज्ञानिक और सामाजिक वादों का प्रभाव। (५) भारतेंदु हरिश्चन्द के नाटक। (६) आधुनिक हिन्दी समीक्षा का विकास। (७) सूरदास।

इन विषयों पर काम करने वालों के नाम क्रमशः ये हैं—सर्वश्री कमलाकांत पाठक, रामलालसिंह, प्रेमशंकर तिवारी, गंगाधर झा, वीरेन्द्र शुक्ल, शिवराजसिंह और एम० एस० बाखले।

छठा खण्ड समाप्त

हिंदी-सेवी-संसार

सातवाँ खंड

विदेश में हिन्दी

इँग्लिस्तान—यों तो संसार के सभी देशों में भारतीय आते-जाते रहते हैं, परन्तु इँग्लिस्तान जाने वालों की संख्या सबसे बढ़कर रही है। अँगरेजी सरकार शासन के उद्देश्य से जिन कर्मचारियों को भारत भेजती थी उन्हें यहाँ की हिंदी भाषा का थोड़ा बहुत ज्ञान कराना आवश्यक समझती थी। आई० सी० एस० पद के लिए जो देशी-विदेशी चुने जाते थे, हिंदी की परीक्षा में उत्तीर्ण होना उनके लिए आवश्यक था। इन दोनों कारणों का फल यह हुआ कि इँगलिस्तान में संसार के अन्य देशों की अपेक्षा हिंदी का साहित्यिक रूप में अधिक अध्ययन किया गया।

इँगलिस्तान और आयर्लेंड के प्रमुख विश्वविद्यालयों में इसी के फलस्वरूप शिक्षा के अन्य विषयों के साथ-साथ बहुत समय से हिंदी का उल्लेख रहा है। परंतु संभवतः विद्यार्थियों की संख्या कम होने के कारण, उसकी पढ़ाई के लिए अध्यापकों की नियुक्ति उनमें नहीं की गयी। हाँ, यह सुविधा कदाचित उन सभी विश्वविद्यालयों में है कि स्वतंत्र रूप से हिंदी का अध्ययन करके वहाँ की परीक्षा में विद्यार्थी बैठ सकते हैं।

लंदन-स्थित 'स्कूल आव ओरियंटल ऐंड अफ्रीकन स्टडीज' में हिंदी की शिक्षा का प्रबंध सात-आठ वर्षों से अवश्य है। द्वितीय महायुद्ध काल में डाक्टर लक्ष्मीधर, जिन्होंने जायसी के काव्य पर अनुसंधानपूर्ण निबंध लिखकर 'डाक्टर' की उपाधि प्राप्त की थी, यहाँ अध्यापक नियुक्त किये गये थे। उनके पश्चात् काशी हिंदू विश्वविद्यालय के डाक्टर केसरीनारायण शुक्ल डी० लिट्० १९४६ में इस विद्यालय में अध्यापक होकर इँगलिस्तान गये। उस समय आपकी नियुक्ति लखनऊ विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के रीडर के पद हो चुकी थी। शुक्लजी के विद्यार्थियों में एक श्री जे०रामशरन ट्रिनिडैड के निवासी थे। सर्वप्रथम इन्होंने ही बी० ए० हिंदी लेकर पास किया था। दूसरे विद्यार्थी श्री क्लीमेंट ने बी० ए० आनर्स

की परीक्षा सबसे पहले उत्तीर्ण की। प्रसाद-साहित्य से इन्हें विशेष रुचि थी और 'कामायनी' के कुछ अंशों का अनुवाद उन्होंने किया था। इनके एक विद्यार्थी श्री आलचिन सूर-साहित्य के बड़े प्रेमी हैं। सूर के कुछ पदों का अँगरेजी में अनुवाद करने में वे कुछ समय तक लगे रहे थे। इन्होंने भी आनर्स लेकर हिंदी में बी० ए० किया है।

१९४९ में डाक्टर केसरी-नारायण शुक्ल भारत लौट आये और लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में रीडर हुए। उनके पश्चात् लंदन के 'स्कूल-आव-अरियंटल ऐंड अफ्रीकन स्टडीज़' में हिंदी अध्यापक का पद प्रयाग विश्वविद्यालय के डाक्टर कुलश्रेष्ठ को सौंपा गया है। लंदन के इस विद्यालय के भूतपूर्व अध्यक्ष 'नैपालीकोश' के निर्माता प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक डाक्टर टर्नर थे।

इँगलिस्तान में धर्मप्रचारक पादरी और व्यापारी हिंदी का प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त करने के उत्सुक रहते हैं। इसकी पूर्ति के लिए उनको तीन सप्ताह तक हिंदी की शिक्षा दी जाती है। इस अवधि का जो नियमपूर्वक निर्वाह कर लेता है उसे हिंदी की जानकारी का एक प्रमाणपत्र दिया जाता है।

कैंब्रिज नामक नगर में 'लोकल इग्जैमिनेशन सिंडीकेट' नामक एक संस्था है जो सीनियर और जूनियर कैंब्रिज नामक परीक्षाओं का संचालन करती है। इन परीक्षाओं के अनेक विषयों में हिंदी भी है जिसके दो प्रश्नपत्र होते हैं। संसार के प्रायः सभी क्षेत्रों से विद्यार्थी इन परीक्षाओं में बैठते हैं। इनके केंद्र मारिशस (चार), साउथ अमरीका (रिओडिजेनिरो), बर्मा (रंगून), फीजी (लाउतोका, सूवा) पूर्वी अफ्रीका (नैरोबी, मोम्बासा, तागा), मलाया (पेनाग, इपोक, कुवाला, लिपिस, कुवालालम्पुर, सेरेम्बाग, सिंगापुर) आदि स्थानों में हैं और कहीं-कहीं उनकी संख्या एक से अधिक भी है। आरंभ में इन परीक्षाओं का उद्देश्य जो कुछ भी रहा हो, इसमें संदेह नहीं कि विदेशियों द्वारा आज यह सिंडीकेट हिंदी भाषा और उसके साहित्य से अहिंदी-भाषियों को परिचित कराने

का बहुत अच्छा काम कर रही है।

इटली—इस देश की राजधानी रोम में एक प्राच्य महाविद्यालय है जहाँ अन्य विषयों के साथ हिंदी की पढ़ाई का प्रबंध है। हिंदी साहित्य के साथ साथ हिंदू संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करना यहाँ के विद्यार्थियों का उद्देश्य है।

ईरान—इस देश में हिंदी जानने वालों की संख्या बहुत कम है। जिन व्यापारियों और व्यवसायियों का भारत से घनिष्ट संबंध रहता है और जो प्रायः यहाँ आया करते हैं, उन्हें हिंदी का कामचलाऊ ज्ञान हो जाता है जिसका अभ्यास स्वदेश में करने का अवसर वे नहीं पाते। तेहरान के विश्वविद्यालय में संस्कृत की शिक्षा का प्रबंध इस वर्ष से अवश्य किया गया है।

चीन—भारत से इस देश का संबंध बहुत पुराना है और यहाँ के विद्वान् भारतीय साहित्य के बड़े प्रेमी रहे हैं। प्रसिद्धि तो यह भी है कि बौद्ध-धर्म-संबंधी कुछ ऐसे ग्रंथ इस देश में वर्तमान हैं जिनका केवल नाम भर भारतीय विद्वान जानते हैं। जो हो, हिंदी साहित्य से चीनी विद्वानों का पूर्ववत् घनिष्ट परिचय नहीं है। फिर भी यहाँ के कुछ विश्वविद्यालयों में हिंदी एक पाठ्य विषय के रूप में मान्य है और हाँग्कौंग जैसे दो-एक स्थानों में हिंदी के कुछ जानकार भी हैं जिनका पता सीनियर और जूनियर कौंब्रिज की हिंदी-परीक्षार्थियों की सूची से लगता है।

जर्मनी—प्राचीन भारतीय राज भाषा संस्कृत का जितना अध्ययन जर्मनों ने किया है, कदाचित उतना संसार के किसी अन्य देश ने नहीं। इसी नाते वहाँ के विद्वान पाली, प्राकृत, और अपभ्रंश का भी अध्ययन करते हैं। बर्लिन विश्वविद्यालय में प्रायः इन सभी भाषाओं की शिक्षा का प्रबंध है। यहाँ की फ्री यूनिवर्सिटी ने हिंदी का अध्यापक नियुक्त करने की योजना भी बनायी है, परंतु उसे कार्यरूप अभी नहीं दिया जा सका है।

जर्मनी (फ्रेंच ज़ोन)— यहाँ हिंदी जानने वालों की संख्या बहुत

थोड़ी है, परंतु संस्कृत के साथ-साथ हिंदी शिक्षा का भी प्रबंध टुबिनजेन (Tubingen) विश्वविद्यालय, हैमबर्ग (Hamburg) विश्वविद्यालय और गोटिंजेन (Goettingen) विश्वविद्यालय में है। प्रथम में हिंदी के अध्यापक प्रोफेसर श्री रेंपिस (Prof. Rempis) हैं। उनके सहयोगी अध्यापक प्रोफेसर डाक्टर एच० बी० ग्लेनेप (Prof. Dr. H.V. Glaenapp) भी हिंदी के अच्छे ज्ञाता है। अपनी 'हैंडबुक आव दि लिटरेचर्स आव दि वर्ल्ड' में उन्होंने हिंदी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास दिया है। उन्होने हिंदी की कुछ कविताओं का अनुवाद भी किया है। १९३१ में वे भारत में थे। हिंदी भाषा और साहित्य से परिचय प्राप्त करने का अवसर उन्हें संभवतः उसी समय मिला होगा। अपने संस्कृत के विद्यार्थियों को इन्होंने कुछ समय तक हिंदी की शिक्षा भी दी थी। हैंमबर्ग विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्यापक श्री टैरेदिया(Mr. Taradia) हैं। हिंदी के ज्ञाता अन्य व्यक्तियों में जिनका नाम आदर से लिया जा सकता है, वे हैं प्रोफेसर अल्सडार्फ (Prof. Alsdorf) जो कुछ समय पूर्व भारत में ही थे। गोटिंजेन विश्वविद्यालय में हिंदी-शिक्षा का कार्य डाक्टर हैंस स्टेची (Dr. Hans Steche) करते हैं।

जापान—इस देश में ऐसे कई विश्वविद्यालय और उपाधि विद्यालय हैं, जहाँ संस्कृत और पाली की शिक्षा का समुचित प्रबंध है, परंतु हिंदी की पढ़ाई केवल दो विश्वविद्यालयों में होती है। प्रथम है टोकियों में और दूसरा ओसाका में। १९४९ के पहले इन दोनों स्थानों में स्थित ये विद्यालय 'स्कूल आव फॉरेन लैंग्वेजेज' कहलाते थे; परंतु दो वर्ष हुए जब इन्हें विश्व विद्यालयों के समकक्ष माना जाने लगा और अब ये 'यूनिवर्सिटी आव फारेन स्टडीज' कहलाते हैं।

टोकियो और ओसाका के इन दोनों विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई का प्रबंध १९४१ के पहले नहीं था। १९४९ में भारतीय

"लिएजन' मिशन के जापान-स्थित मंत्री श्री पी० रत्नम् की धर्मपत्नी श्री मती कमला रत्नम् ने टोकियो के नागरिकों में हिंदी-प्रेम जाग्रत करने में विशेष प्रयत्न किया। सितंबर १६४६ से मार्च १६५० तक उन्होंने प्रति सप्ताह दो घंटे तक हिंदी की शिक्षा दी। फल-स्वरूप भारत की इस राष्ट्रभाषा को सीखने का भाव वहाँ के विद्यार्थियों में जाग्रत हो गया।

कुछ समय पश्चात श्री पी० रत्नम् की बदली अन्यत्र हो जाने के कारण श्रीमती कमला रत्नम् का यह प्रचार - कार्य थोड़े समय के लिए रुक गया। अब टोकियो के उक्त विश्वविद्यालय में द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियो को सप्ताह में ४ घंटे हिंदी पढ़ाई जाती है और तृतीय-चतुर्थ वर्ष वालों को सप्ताह में १० घंटे। साथ साथ वे भारतीय संस्कृति का भी अध्ययन करते हैं। ओसाकास्थित उक्त विश्वविद्यालय में हिंदी की शिक्षा का प्रबंध तो है; परंतु उसको वैकल्पिक विषयों में स्थान मिला है। अतएव वे ही विद्यार्थी उसका अध्ययन करते हैं जिन्हें भारतीय साहित्य और संस्कृति से कुछ रुचि है।

जापान में दो पुस्तकें भी अब तक हिंदी में प्रकाशित हो चुकी हैं। पहली, 'दि फर्स्ट स्टेप आव हिंदी' ओसाका 'विश्वविद्यालय आव फॉरेन स्टडीज' के प्रोफेसर श्री ई० सावा (E. Sawa) ने १६४८ में प्रकाशित करायी थी। दूसरी है 'हिंदी-भाषा' जो १६४३ में 'इंडो-जापानीज-सोसाइटी' के सदस्य श्री एस० सेटी (S.Sate) ने लिखी थी।

टोकियो के फारेन स्टडीज विद्यालय के सहायक प्रोफेसर हैं श्री के० डोइ (K. Doi) जिन्होंने जापानी विद्यार्थियों की हिंदी के प्रति बढ़ती हुई रुचि देख कर यह विश्वास प्रकट किया है कि निकट भविष्य में ही जापान के सुदूर प्रदेशों में भी हिंदी का प्रचार हो जायगा।

जेकोस्लोवोकिया— विदेशी भाषाओं और उनके साहित्यों का अध्ययन करने के लिए यहाँ एक प्राच्य विद्यालय है। यहाँ से एक

पत्रिका प्रकाशित होती है जिसमें प्रायः सभी प्राच्य विद्याओं के संबंध में लेख रहते हैं। कभी-कभी इन लेखों के विषय हिंदी भाषा और उसके साहित्य से भी संबंधित होते हैं।

थाईलैंड—इस देश में बैंकाक के छुलालोंकोर्न विश्वविद्यालय (Chulalongkorn University, Bangkok) में प्रारम्भिक संस्कृत कला के विद्यार्थियों के लिए एक अनिवार्य विषय है; परन्तु हिंदी का प्रवेश अभी नहीं हो सका है और न किसी थाइ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में ही उसे कोई स्थान मिला है।

नेदरलैंड्स—भारतीय राजदूत के कर्मचारियों को सम्मिलित करके भी इस देश में हिंदी-भाषियों की संख्या सौ से अधिक नहीं है। इस देश का लीडेन (Leiden) विश्वविद्यालय सबसे पुराना है जहाँ अन्य विषयों के साथ-साथ हिंदी की शिक्षा का प्रबन्ध है। विशेष जानकारी इस विश्वविद्यालय के कार्यालय से अथवा हिंदी विभाग के अध्यक्ष से प्राप्त की जा सकती है।

पांडिचेरी—भारत का यह प्रदेश फ्रांसीसी सरकार के अधीन है। स्थानीय भारतीय राजदूत के लेखानुसार यहाँ के किसी विश्वविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई का प्रबन्ध नहीं है, हिंदी भाषियों की संख्या भी बहुत थोड़ी है।

पाकिस्तान—पश्चिमी पाकिस्तान में तीन विश्वविद्यालय हैं—पंजाब वि० वि०, सिंध वि० वि० और उत्तरी-पश्चिमी सीमाप्रान्त में खैबर वि० वि०। इनमें से किसी में हिंदी की शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं है। परंतु इस देश की अधिकांश हिंदू जनता भारत-विभाजन के पूर्व से ही हिंदी-भाषी रही है। वर्धा की राष्ट्रभाषा-प्रचार-सभा के प्रयत्न के फलस्वरूप हिंदी के लिए बहुत बड़ा क्षेत्र वहाँ तैयार हो गया था। यदि वहाँ की सरकार चाहे तो यहाँ के निवासियों की हिंदी के प्रति पूर्व रुचि पुनः जाग्रत होकर बढ़ सकती है।

प्रेग—यहाँ बसे हुए भारतीयों में तो हिन्दी के प्रति स्वाभाविक स्नेह है ही, राज्य की ओर से भी

ओरियंटल शित्तालय में हिन्दी को वैकल्पिक विषय का स्थान मिला हुआ है। पत्र-व्यवहार का पता है—अध्यत्त हिन्दी विभाग, ओरियंटल इंस्टीच्यूट, लैजेंसका ४, प्रेग ३ (Lagenska 4, Prague 3)। यहाँ के निवासियों में भी प्राचीन भारतीय भाषाओं के साथ साथ हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करने की सक्रिय रुचि है। यहाँ के ओरियंटल शित्तालय में हिन्दी का एक पुस्तकालय भी स्थापित किया गया है।

फिजी द्वीप—इस प्रदेश में हिंदी की स्थिति साधारणतः अच्छी कही जा सकती है। भारत से गये हुए और स्थानीय हिंदी-प्रचारकों के प्रयत्न से वहाँ बसे हुए लगभग चालीस प्रतिशत भारतीय हिंदी की थोड़ी-बहुत जानकारी रखते हैं। भारतीय राष्ट्रभाषा का पद प्राप्त हो जाने के कारण हिंदी के प्रति इन लोगों की रुचि बहुत बढ़ गयी है। शित्ता का माध्यम यहाँ अब भी अँगरेजी ही है, जिससे हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाधा पहुँची है। शित्तालयों में हिंदी की पढ़ाई का थोड़ा बहुत प्रबंध अवश्य है और यह आशा की जाती है कि निकट भविष्य में ही हिंदी जाननेवालों की संख्या इस देश में संतोषजनक हो जायगी।

श्री ज्ञानीदास यहाँ के प्रमुख हिंदी-सेवी हैं जिन्होंने हिंदी में पुस्तकें लिखी है, पत्र निकाले हैं और प्रकाशन का कार्य भी आरंभ किया है। भारतीय हिंदी समाचार पत्रों के प्रचार में भी उन्होंने पर्याप्त सहयोग दिया है।

फिलिपाइंस— इस देश में हिन्दी का प्रवेश अभी तक नहीं हो सका है। वहाँ के विश्वविद्यालयों और कालेजों में तो हिन्दी की पढ़ाई का प्रश्न उठता ही नहीं, हिन्दी भाषियों की संख्या भी नहीं के बराबर है।

फ्रांस—इस देश से भारतीय रईस जितना परिचित रहे हैं, उतना साहित्यिक नहीं। फिर भी भारत के तीन छोटे-छोटे प्रदेशों पर फ्रांसीसियों का शासन रहने के कारण कुछ संपर्क हमारा इनसे बना ही रहा है। यहाँ के पेरिस विश्वविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई

का प्रबन्ध है। श्री जूस ब्लाक (Jules Bloch) नामक हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान यहीं के थे। प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी-विभागाध्यक्ष डाक्टर धीरेंद्र जी वर्मा ने डी० लिट० की उपाधि इसी विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी। सुनते हैं कि फ्रांस के कुछ हिंदी-प्रेमियों ने हिंदी की एक पत्रिका का प्रकाशन भी कुछ समय तक किया था।

फ्रांस में कुछ छात्र और छात्राओं की रुचि हिंदी की ओर विशेष रूप से है। तुलसी की रामायण का अध्ययन करके एक महिला उसके संबंध में एक थीसिस लिख रही हैं। उनका विषय है—'आइडिया आव काग-भुशुंडि इन रामचरितमानस'। इस सूचना से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इने-गिने फ्रांसीसियों का हिंदी भाषा और साहित्य से परिचय है।

बेलजियम—हिन्दी के जानकारों की संख्या इस देश में नहीं के बराबर है। यहाँ के किसी विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम में भी उस को अभी तक स्थान नहीं मिल सका है।

ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका— इस प्रदेश में कीनिया, युगंडा और टाँगानिका तीन विभाग हैं। यहाँ बसे हुए भारतवासियों की संख्या लगभग दो लाख है। १९४५ तक इन स्थानों में हिंदी जानने वालों की संख्या नहीं के बराबर थी। अब इसमें संतोषजनक वृद्धि हो रही है और भारतीयों की जन-संख्या का लगभग पाँचवाँ भाग हिंदी समझ और बोल लेता है। यहाँ हिंदी-प्रचार-कार्य का सूत्रपात करने का श्रेय श्री अनंत शास्त्री को दिया जाता है। इस प्रदेश में १२ प्रधान नगर हैं जिनमें हिंदी-शिक्षा के केन्द्र स्थापित हैं। नैरोबी, किसुमु, कम्पला, दारे-सलाम, अरुशा, मोशी, नकुरु, टाँगा, मोम्बासा आदि में स्थापित केन्द्रों का काम अच्छे ढंग से चल रहा है। सबसे पहले मोम्बासा में हिंदी-शिक्षा का प्रबन्ध किया गया। स्थानीय युवक, युवतियाँ, प्रौढ़ और महिलाएँ हिन्दी सीखने के लिए विशेष रुचि दिखाने लगीं।

फलस्वरूप शिक्षा-केन्द्रों की संख्या नगर के विभिन्न भागों में बढ़ते-बढ़ते ८ तक पहुँच गयी। दो-ढाई वर्षों में हिंदी-शिक्षा-प्राप्त नागरिकों की संख्या दो हजार से ऊपर है जिनमें ५०० से अधिक राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा की परीक्षाओं में सम्मिलित भी हो चुके हैं। इस नगर में हिंदी सीखने वाले केवल प्रवासी भारतीय ही नहीं हैं, प्रत्युत अफ्रीका, अरब, शुमालीलैंड, ईजिप्ट आदि देशों से आये हुए व्यक्ति भी हैं जिनके लिए तीन केन्द्रों को दायित्व सौंपा गया है। लगभग १०० विदेशी अब तक हिंदी सीख चुके हैं। इनकी आयु २० और ५० वर्ष के बीच की है। ये लोग प्रतिदिन एक घंटे का समय हिंदी पढ़ने के लिए देते हैं और एक वर्ष में ही इन्हें भाषा का अच्छा ज्ञान हो जायगा। पश्चात्, ये लोग स्वयं स्वदेश-वासियों को हिंदी की शिक्षा देंगे। इनमें से अधिकांश ने हिंदी-भाषा और लिपि की सरलता और वैज्ञानिकता स्वीकार कर ली है। श्री अनंत शास्त्री ने अपना ध्येय विदेशियों में हिंदी-शिक्षा-प्रचार बना रखा है और उनके सहयोगी प्रवासी भाइयों में यह कार्य करते हैं। हिंदी के इन सपूतों ने यह नियम बनाया है कि प्रत्येक प्रचारक एक एक महीने के लिए अन्य नगरों में घूम घूम कर स्थानीय हिंदी-प्रचारक तैयार कर दे जो अपने नगर में हिंदी-शिक्षा का कार्य सम्हाल लें। इस प्रयत्न में भी पर्याप्त सफलता मिली है। बारह नगरों में स्थापित प्रत्येक केन्द्र में ६० से ८०तक विद्यार्थी हिंदी सीख रहे हैं। हिंदी-शिक्षा प्राप्त स्थानीय प्रचारकों की संख्या दो सौ तक पहुँच गयी है जो स्वयं अवैतनिक रूप से हिंदी का प्रचार अपने देश वालों में कर रहे हैं। स्वप्रयत्न से हिंदी - प्रचार के साथ - साथ इन लोगों ने यह उद्योग भी किया है कि स्थानीय सरकार स्वसंचालित विद्यालयों में भी हिंदी-शिक्षा का उचित प्रबन्ध करे। इस प्रयत्न में भी इन्हें अच्छी सफलता मिली है और वहाँ के कुछ राजकीय शिक्षालयों में हिन्दी सिखाना आरम्भ हो गया है। 'आर्य गर्ल्स स्कूल-

नैरोबी', 'आर्य गर्ल्स स्कूल दारे-सलाम', 'आर्य गर्ल्सस्कूल किसुमु', 'आर्य गर्ल्स स्कूल कम्पाला', 'इंडियन रिपबलिक स्कूल मोम्बासा' आदि में हिन्दी भी शिक्षा के विषयों में सम्मिलित है जिनमें उन स्थानों के बालक-बालिकाएँ हिंदी-शिक्षा पारही हैं जिनकी गणना कुछ समय बाद वहाँ के नागरिकों में होगी। सुदूर देश में बसे हुए इन भारतीयों की इच्छा अब एक हिंदी पत्र प्रकाशित करने की है जिसमें सहयोग देना भारतवासियों का पुण्य कर्तव्य है। ये लोग हिन्दी-साहित्यिकों का एक सम्मेलन भी करना चाहते हैं जिसमें भारतीय साहित्यिकों को सम्मिलित होना चाहिए।

नैरोबी-स्थिति हिंदी के अन्य प्रचारकों में श्री सत्यपाल वेदालंकार और श्री चैतन्यलाल जैन का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आर्य-समाज और सनातनधर्म की ओर से अन्य कई व्यक्ति भी प्रचार का अच्छा काम कर रहे हैं। नैरोबी या उसके समीपवर्ती स्थानों में कोई विश्वविद्यालय या डिगरी कालेज नहीं है जहाँ हिंदी की पढ़ाई का प्रबंध हो। हिंदी की छोटी-छोटी कई पत्र-पत्रिकाएँ हस्तलिखित और मुद्रित रूप में निकलती हैं जिनमें वहाँ के नये प्रचारक और हिंदी के विद्यार्थी अपनी रचनाएँ प्रकाशित कराते हैं। परंतु हिंदी-भाषियों की संख्या अधिक न होने के कारण इनका न तो क्षेत्र बढ़ पाता है और न ये सस्ती हो पाती हैं। भारतीय समाचार पत्र इन स्थानों में बहुत देर से पहुँचते हैं और भारतीय रेडियो भी इनके लिए रोचक कार्यक्रमों की ओर ध्यान नहीं देता। फलस्वरूप हिंदी - समाचार- पत्रों या रेडियो की सूचनाओं के द्वारा स्वदेश से इनकी घनिष्ठता अभी नहीं बढ़ पायी है। भारत की गिनी-चुनी पत्र-पत्रिकाएँ ही इन तक पहुँची हैं, यद्यपि यहाँ बसे हुए भारतीयों की बड़ी प्रबल इच्छा सुन्दर पत्रों को प्राप्त करने की रहती है। भारत की अपेक्षा यहाँ के हिन्दी-भाषी अधिक धनी हैं; इसलिए सभी विषयों के अच्छे पत्र वे चाहते हैं, सस्ते-मँहगे का प्रश्न उनके लिए महत्व का नहीं

है। एक और आवश्यक बात यह है कि भारतीय हिंदी-भाषियों की तुलना में पत्र-पत्रिकाएँ खरीद कर पढ़ने की इन्हें अधिक इच्छा रहती है। पुस्तकें पहुँचने का सस्ता साधन न होने के कारण हिंदी के अच्छे पुस्तकालय और वाचनालय यहाँ नहीं स्थापित हो सके हैं। भारतीय सरकार, हिंदी साहित्य-सम्मेलन और नागरी-प्रचारिणी सभा को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। यहाँ के भारतीय निवासियों की निरंतर माँग से प्रेरित होकर सरकार ने नैरोबी रेडियो स्टेशन, ७ एलओ, से हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित करना आरंभ किया है। वार्तालाप, कविताएँ, कहानियाँ और भाषण आदि इन से प्रसारित होते हैं जिनमें अधिकांश की रचना स्थानीय हिंदी-लेखक ही करते हैं। साहित्यिक दृष्टि से ये रचनाएँ विशेष महत्व की भले ही न समझी जायँ, परंतु प्रचार की दृष्टि से ये बहुत उपयोगी हैं और हिंदी साहित्य की खपत के लिए ऐसा क्षेत्र तैयार कर रही हैं. जिससे प्रत्येक महत्वपूर्ण ग्रंथ की दो-चार हजार प्रतियाँ यहाँ अनायास ही खप सकें। कीनिया (Kenya), पूर्वी अफ्रिका से पत्र-व्यवहार के कुछ पते ये हैं — (१) पो० बा० ३८१३, नैरोबी (Nairobi), कीनिया। (२) पो० बा० ३८४०, नैरोबी, कीनिया। (३) पो०बा० १३१, मोम्बासा (Mombasa) कीनिया।

ब्रिटिश पूर्वी द्वीपसमूह—इस प्रदेश में हिन्दी-भाषा के जानकार तो थोड़े बहुत अवश्य हैं; परंतु उनको हिन्दी शिक्षा देने का कोई प्रयत्न सरकार की ओर से नहीं किया गया है। विश्व-विद्यालय या कालेजों में तो हिन्दी को स्थान मिल ही नहीं सका है, जनता की ओर से भी तत्संबन्धी उल्लेखनीय प्रयत्न अभी तक नहीं हुआ है।

मलाया—इस प्रदेश में केवल एक विश्वविद्यालय— मलाया-विश्वविद्यालय—है। यहाँ तो हिन्दी की शिक्षा का कोई प्रबन्ध है ही नहीं, अन्य राजकीय स्कूलों और कालेलों के पाठ्यक्रम में भी

उसे स्थान नहीं मिल सका है। जब इस प्रदेश पर जापानी अधिकार हुआ तब नेताजी श्री सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद सेना ने वहाँ बसे हुए भारतीयों में हिंदी-प्रचार का प्रयत्न किया था। फलस्वरूप इनको हिन्दी का थोड़ा-बहुत ज्ञान हो गया।

कुछ समय बाद इस प्रदेश में कुछ हिन्दी प्रेमियों द्वारा एक हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा की स्थापना हुई। पश्चात, वहाँ के भारतीय हिंदी सीखने के लिए विशेष उत्सुकता दिखाने लगे। सभा ने इस कार्य में विशेष सहायता प्रदान की। यहाँ बसे हुए भारतीयों की संख्या लगभग सात लाख है। परंतु सबको हिंदी का ज्ञान कराने का प्रबन्ध अभी तक इसलिए नहीं हो सका है, क्योंकि यहाँ की सरकार इस ओर ध्यान नहीं देती और वहाँ के राजकीय विद्यालयों में उसकी शिक्षा का कोई प्रबंध नही है। सभा इस कार्य को पूरा करने का प्रयत्न स्थापना काल से ही कर रही है। भारतीय सरकार ने हिंदी को जब राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया तब से यहाँ के भारतीय भी उसकी शिक्षा पाने में विशेष उत्साह दिखाने लगे हैं। उन्होंने अपनी सरकार से प्रार्थना की है कि राजकीय विद्यालयों के पाठ्यक्रम में तो हिंदी को स्थान दें ही, साथ-साथ उन जन-विद्यालयों को विशेष आर्थिक सहायता दें जिनमें हिंदी की पढ़ाई का समुचित प्रबंध है।

स्थानीय हिंदुस्तानी प्रचार सभा अपने बल पर कुछ हिंदी पाठशालाएँ चला रही है जिनमें दिन में बालक-बालिकाओं को शिक्षा दी जाती है और रात्रि में व्यस्कों को। अभी यह कार्य कुछ ही स्थानों में सीमित है; परंतु वह इस बात के लिए प्रयत्नशील है कि मलाया के सभी प्रमुख नगरों में ऐसा ही प्रबंध हो जाय। इस कार्य में वहाँ बसे हुए भारतीय विशेष सहायता दे रहे है। काउलालम्पुर में दो-तीन स्थानों में नियमित रूप से हिंदी कक्षाएँ लगती हैं। सिंगापुर में नेताजी स्मारक पुस्तकालय और 'सेलेतार-नैवेल बेस', (**Seletar Naval**

Base) दो स्थानों में हिंदी की पढ़ाई नियमपूर्वक होती है। इपाह (Ipoh) के जेल्फ मार्ग (Jelf Road) के हिंदी-स्कूल, पेनाग (Penang) के दाता करामात (Data Karamat Road) मार्ग में स्थित आजाद हिंद स्कूल में, काउलालिपिस(Kaula Lipis) के क्लिफर्ड स्कूल, अलोरस्टार (Alor Star) के जलान लैंगाट (Jalan Langgat) स्कूल आदि में हिन्दी की पढ़ाई होती है।

दक्षिण भारत हिंदी भारत प्रचार सभा द्वारा संचालित परीक्षाओं का मलाया में विशेष प्रचार है। यहाँ के प्रमुख नगरों में इस परीक्षा के अनेक केंद्र हैं। स्थानीय हिंदुस्तानी सभा हिंदी-प्रचार के उद्देश्य से इन केन्द्रों से अपने परीक्षार्थी इनमें बैठाती है। इनकी और उत्तीर्ण होनेवालों की संख्या संतोषजनक है

स्थानीय हिंदुस्तानी सभा अब इस बात का प्रबंध कर रही है कि काउलालंपुर (Kuala Lumpur) में हिंदी का एक अच्छा प्रेस भी खोल दिया जाय जिससे प्रचार कार्य में विशेष सुविधा हो।

रूस—इस देश के साहित्य का भारत में प्रचार अधिक है। इसी प्रकार योरप के अन्य देशों से कदाचित अधिक हिंदी-साहित्य का प्रचार रूस में है। यहाँ लेनिनग्राड की साइंस एकेडमी में हिंदी के कई जानकार हैं। बरानिकोफ नामक यहाँ के एक विद्वान ने गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामचरितमानस का रूसी भाषा में पद्यात्मक अनुवाद किया है। विद्वान अनुवादक ने अपने ग्रंथ के आरंभ में तुलसीदास का महत्व प्रदर्शित करते हुए मानस के संबध में एक विस्तृत भूमिका लिखी है। लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग के रीडर डाक्टर केसरीनारायण शुक्ल इस भूमिका का अनुवाद हिंदी में कर रहे हैं जिसके प्रकाशित होने पर हिंदी के इस गौरवग्रंथ के प्रति एक विदेशी विद्वान के विचार ज्ञात हो सकेंगे।

प्रेमचंदजी की कुछ कहानियों का भी रूसी भाषा में अनुवाद

हुआ है। महाभारत नामक प्रसिद्ध काव्य का संस्कृत से अनुवाद करके रूसी विद्वानों ने भारतीय साहित्य के प्रति अपनी सक्रिय रुचि का परिचय दिया है।

लंका—यद्यपि यह देश भाषा, सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से भारत का एक खंड है, तथापि कुछ कारणों से दोनों के बीच की भौगोलिक खाई पट नहीं पा रही थी। इधर जब लंका को स्वतंत्रता मिली तो साथ साथ यह परिवर्तन भी हुआ कि इस देश का झुकाव अपनी सभ्यता और संस्कृति के आदि स्रोत भारत की ओर होने लगा। संपर्क की घनिष्ठता बढ़ाने की भावना ने वहाँ के निवासियों में हिंदी-भाषा-साहित्य का अध्ययन करने की रुचि जाग्रत कर दी। फलस्वरूप कुछ स्थानीय हिंदी-प्रेमियों ने 'हिंदी भाषा-प्रचारक समिति' नाम से कोलंबो में एक संस्थाकी स्थापनाकी जिसका उद्देश्य लंका में हिंदी के प्रेमी पैदा करना था। इस संस्था से संबंधित कुछ व्यक्तियों ने राजकीय और स्वतंत्र विद्यालयों में हिंदी की शिक्षा का प्रबंध करने का आंदोलन किया। इस प्रयत्न में उन्हें बहुत-कुछ सफलता मिली। केलिनिय के 'विद्यालंकार महाविद्यालय', कोलंबो के श्री 'लंका विद्यालय' और धर्म-प्रसार विद्यालय आदि में हिंदी की पढ़ाईका अच्छा प्रबंध है। वर्धा की राष्ट्र भाषा-प्रचार-समिति की परीक्षाओं के केंद्र यहाँ हैं और संतोष की बात यह है कि १६४८ की परीक्षाओं में जितने परीक्षार्थी इस देश से वहाँ की परीक्षाओं में बैठे थे, १६५० में उसके सतगुने हो गये और १६५१ में यह संख्या और भी अधिक बढ़ जाने की आशा है।

इस प्रदेश में हिंदी भाषा का विशेष और शीघ्र प्रचार हो सकने के कई कारण है। पहली बात यह कि यहाँकी सिंहली भाषा और हिंदी, दोनों में प्राचीन भारतीय भाषाओं में से संस्कृत और पाली शब्दों की अधिकता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि अधिकांश सिंहली बौद्ध हैं और इस धर्म के जन्म तथा तीर्थ स्थान भारत की राजभाषा के साथ साथ राष्ट्रभाषा के प्रति उनका स्वाभाविक आकर्षण है। तीसरी

बात व्यापार और व्यवसाय से संबंध रखती है। सिंहलियों को विश्वास है कि हिंदी का अध्ययन कर लेने पर भारत-से उनका व्यावसायिक और व्यावहारिक संबंध घनिष्ट हो सकेगा। इन्हीं सब कारणों से आज वे हिंदी का ज्ञान प्राप्त करने के लिए विशेष उत्सुक हैं और विश्वास है कि अहिंदी भाषी दक्षिणी प्रदेशों की तरह लंका में भी भारत की राष्ट्रभाषा का अच्छा प्रचार शीघ्र ही हो जायगा।

हालैंड—हिंदी का बहुत थोड़ा प्रचार इस देश में है। उसकी शिक्षा का भी समुचित प्रबंध यहाँ नहीं है। परंतु हिंदी के कुछ प्रतिनिधि लेखक अपनी अनूदित कृतियों के द्वारा यहाँ लोकप्रिय हो रहे हैं। ज्ञात हुआ है कि प्रेमचंद जी के साहित्य का अध्ययन करके एक विद्यार्थी ने एक पुस्तक लिखी है।

—:o:—

सातवाँ भाग समाप्त

हिंदी-सेवी-संसार

परिशिष्ट

अवशिष्ट परिचय और परिचयांश

(क) हिंदी लेखकों के अवशिष्ट परिचय

अखौरी रमेंद्रनाथ—शि०—बी०ए०आनर्स,प्रथम श्रेणी,१६४६, गया कालेज, एम० ए० (हिंदी) १६४६, अर्थशास्त्र (१६४८); 'हिंदी - साहित्य और सामाजिक परिस्थिति' पर खोज पूर्ण ग्रन्थ लिख रहेहैं; प०—एच० डी० जैन कालेज, आरा।

अतुलकृष्ण, गोस्वामी—राधारमण गोस्वामियों के प्रधान; प्रका०—स्फुट कविताएँ; अप्र०—नारी-महाकाव्य; प०—वृन्दावन।

अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार,—आयुर्वेद के लेखक;प्रका०—अनु० चरक, सुश्रुत, अष्टांगहृदय, अष्टांग संग्रह, प्रत्यक्षशरीरम्: मौलिक—हमारे भोजन की समस्या, संस्कार विद्या विमर्श, धात्री-शिक्षा, स्वास्थ्य विज्ञान, रस-पद्धति, न्याय-वैद्यक, पदक स्वर्ण, रजत-स्वर्ण; प० — सुपरिंटेंडेंट आयुर्वेद फार्मेसी, हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस।

अद्भुत शास्त्री, आचार्य—ज०—१६२६, रतनगढ़; सा०—भूत० संपा० 'भारत गौरव' जयपुर और कलकत्ता; १६४४ में राजस्थान कवि-सम्मेलन के संयोजक; '४५ में अ० भा० मारवाड़ी कवि सम्मे० के स्वागताध्यक्ष;' ४७ में अ० भा० हि० प्र० स० के स्वागताध्यक्ष; ४८ में अध्यक्ष बंगाल प्रांतीय कवि० स० '४६ में राजस्थान हिं० सा० स० के स्वागत मन्त्री, कुलपति राष्ट्रभाषा-विद्यापीठ; अध्यक्ष नव संस्कृति संघ; प्रका०—मौ०—स्वरतार, जीवनगीत-कवि; संपा०—बापू के विचार, यूसुफ मेहरअली स्मारक ग्रन्थ, आज के हिंदी सेवी; प०—रतनगढ़, राजस्थान।

अमरनारायण माथुर–(पृ० ८) ज०—१६२५; सा० — १६४२-४३ 'जयपुर समाचार' के संपादक; ४३-४४ 'जयभूमि' के सम्पादक, ४४-४७–'दीपक' और ४८-४६ में 'जन्मभूमि' के प्रका० व संपा०; १६४८ में जनता कष्ट-निवारक-संघ की ओर से आंदोलन में कारागार प्राप्त; वर्त० — सम्पा० 'अगंद'; प०—जाट का कुआ, जयपुर।

आनन्दप्रकाश दीक्षित—ज०—६ फरवरी १६२५ ; शि०—एम० ए०, हिंदी, सा० र०, प्रभाकर; प्रका०—स्फुट; वि०—'रस और काव्य' पर खोज कर रहे हैं; प०—प्राध्यापक, सेण्ट एण्ड्रूज कालेज, गोरखपुर।

आशाकांत बी०आचार्य—सा०—प्रबन्ध सम्पा० 'प्रभात', उपसंपा० 'लोकवाणी', सहा० अन्वेषक एस० आर० रिसर्च इंस्टीट्यूट; 'मानवता', 'हमारे गाँव' अकोला, 'राष्ट्रभाषा'-वर्धा के संपादन में कार्य किया; प्रका०—प्रतिध्वनि, जयघोष, मन के गीत, भाव तरंग; म्याँऊ, छम छम, बालो०; लोक गीतों के संग्रह, चित्र०—कवर डिजाइन, माडर्न आर्ट; प०—नवयुग साहित्य निकेतन, अमरावती।

इंद्रनाथमदान—(पृ० १४-१५) ज०—१ मार्च १६१० ; लाहौर वि० वि० ; प्रका०—आधुनिक हिंदी साहित्य, हिंदी कलाकार, हिंदी-काव्य धारा, काव्य सरोवर, काव्य सरिता, काव्य सीकर ; वर्त०—पंजाब वि० वि० प्रकाशन विभाग के संपादक।

इंद्रनारायण द्विवेदी—ज्योतिष और पुराण के वयोवृद्ध लेखक ; ज०—१८७६ ; प्र०—१६०१ ; सा०—संपादक—'वैदिक सर्वस्व' मासिक, 'सम्मेलन पत्रिका', साप्ताहिक 'किसान', पाक्षिक, साप्ताहिक, दैनिक भारतवासी'; ज्योतिष-भूषण कार्यालय के संस्था०, सम्मेलन की संपादक समिति के मंत्री तथा स्थायी समिति के सदस्य कई वर्षों तक रहे; प्रका०—विमल प्रकाशिका, सिद्धान्त - प्रकाशिका, सुमति-प्रकाशिका, समय की बुद्धि, समालोचन - समीक्षा, चमत्कार - समीक्षा, सूर्य सिद्धांत—अनु०, भारतीय ज्योतिष, देवर्षि नाटक, धर्मराज युधिष्ठिर, सम्राट मान्धाता, भक्त प्रह्लाद, महर्षि पराशर, द्विजराज पुंडरीक, भारतीय इतिहास, इतिहास मीमांसा, भारत की सनातक काल - गणना का स्वरूप ; द्यूत क्रीड़ा के पण में १३ वर्ष पर भीष्म व्यवस्था, भारतीय काल गणना में वारों का महत्व, चैत्रादि-मासों की प्राचीनता और इनमें नामों का यौगित्व, युधिष्ठिर संवत्सर और

वराह मिहिर ; प०—व्यवस्थापक, ज्योतिष-भूषण - कार्यालय, बुद्धि-पुरी, कस्बा सराय आकिल, जि० प्रयाग।

इंद्रलाल जैन—ज०—१८९७; **सा०** — अनेक संस्कृत ग्रंथों का संशोधन और संपादन, १९२७-४२ तक 'जैन हितैषी' के संपादक ; **प्रका०**—पद्य०-धर्म- सोपान, तत्वा-लोक, आत्म वैभव ; **गद्य०**—अहिंसा तत्व, साम्यवाद से मोर्चा, महावीर दर्शन, वर्ण-विज्ञान, जैन मंदिर और हरिजन ; श्रेयो मार्ग, जैन धर्म स्वतंत्र धर्म है ; **अप्र०**—जैन धर्म और जाति भेद, साधु चर्या, तत्व- रत्न-संदोह ; प०—संपादक, जैन गजट, देहली।

इंद्रविद्यावाचस्पति—(पृ० १५) **सा०**—१९४० दिल्ली के म्यूनि-सिपल कमिश्नर ; १९४६ में हिंदी पत्रकार सम्मेलन के सभापति ; भारतीय पार्लियामेंट के सदस्य ; **प्रका०** — भारतीय उपनिषदों की भूमिका, जीवन- संग्राम, स्वतंत्र भारत की रूपरेखा, राष्ट्रों की उन्नति, राष्ट्रीयता का मूलमंत्र, आर्यसमाज का इतिहास, शाहआलम की आँखे, सरला की भाभी, सरला, जमींदार, स्वर्ण देश का उद्धार, आत्म बलिदान आदि।

इकबालबहादुर सिंह—**शि०** — बी० ए०, एल-एल० बी० ; **सा०**—जन प्रकाशन मंदिर, प्रयाग के भागीदार, भूत० संपा० 'रजनी' मासिक और 'सी० आई० डी०'; प०—द्वारा अध्यक्ष पशु चिकि-त्सालय, एटा।

इग्नाशिस विलरिङ्गाट—(रे० फा०) एस० जे०—अमरीकी हिंदी प्रेमी ; **शि०**—एम० ए० (हिंदी), पटना वि० वि०, द्वितीय श्रेणी ; **सा०**—हिंदी लिपि तथा भाषा के समर्थक ; **प०**— प्रधानाध्यापक, ख्रीस्त राजा, एच० ई० स्कूल, बेतिया।

ईश्वरदान आशिया—ज०—१८९५ ; **शि०** — महाराणा हाई स्कूल, उदयपुर, डी० ए० वी० स्कूल अजमेर, जयपुर; **राष्ट्र०**—रासबिहारी बोस, ठा० केसरीसिंह आदि के सहयोगी, किसान आंदो-लन में अग्रणी, सह० संपादक 'राजस्थान केसरी', संस्था० मेवाड़ चारण सभा, भूपाल चारण छात्रा-

लय, अखिल भारतीय चारण सम्मेलन, भूत० संपादक 'चारण'; बंगाल हिंदी मण्डल, कलकत्ता के राजस्थानी साहित्य में शोध कार्य ; प्रका०—श्री कन्हैया लाल सहल और श्री पतराम गौड़ 'विशद' के साथ कविवर सूर्यमल्ल की 'वीर सतसई' का संपादन किया है जो बंगाल हिंदी-मंडल द्वारा प्रकाशित हुई है ; प०—मेंगटिया, मेवाड़ ।

उदयराज सिंह—(पृ० १६) सा० —'नयीधारा' के प्रबंध संपादक; प० — अशोक प्रेस, पटना-६ ।

उमाचरण दीक्षित—ज०—१६२६, आगरा; सा०—१६४८ में 'हिंदी तेज' का संपा०; प्रका०—स्फुट; प०—मोतीकटरा, आगरा ।

उमेशनंदन सिंह, राजकुमार—शि०—सा० र०; सा०—कई पुस्तकालयों के संचालक और प्रबंधक; प्रका०–द्वादशी–(कहानियाँ); प० — शिवहरराज, मुजफ्फरपुर ।

एरत्ने रत्नसार–लंका निवासी बौद्धभिक्षु तथा हिंदी प्रचारक; पाली, हिंदी, संस्कृत और सिंहली भाषाओं के ज्ञाता; १६४५ में आकर वर्धा में हिंदी सीखी, १६४८ में 'कोविद' परीक्षा पास की; लंका हिंदी-प्रचार-समिति के संस्थापक तथा प्रधान मंत्री, विद्यालयों में हिंदी के अवैतनिक शिक्षक; वर्धा की हिंदी परीक्षाओं के प्रचारक; प०—श्री लंका हिंदी भाषा प्रचार समिति, ३५, ऐलबियन रोड, देमाटे गोड़ा, कोलम्बो ६, लंका ।

ओंकारलाल वैश्य 'प्रणव'–(पृ०-२४) प्र०–१६२३; प्रका०–स्तोत्र वाटिका, उपदेश- वाटिका, बालबोध वचनावली, निराली निरुक्तियाँ, हरिनाम माला, अनुभूत योगावली, प्रभाव चिकित्सावली, लोकोतिप्रकाश; वर्त०—लोक साहित्य के संकलन में व्यस्त; प०—कुटी मेलखेड़ा, मालवा ।

कटीलगणपति शर्मा—(पृ०-२६) १६३४ से हिंदी-प्रचारक; सा०—अध्यक्ष दक्षिण भारत हिंदी पंडित संघ, उपाध्यक्ष द० भा०अध्यापक संघ,सदस्य विद्यालय-सलाह -कारिणी समिति; १६५० में हिंदी प्रमाणीकरण परिषद

हैदराबाद के मद्रास सरकार के प्रतिनिधि; **प्रका०**—स्फुट; प०—गवर्नमेंट आर्टस कालेज, मद्रास २।

कपिल देवनारायण सिंह—(पृ० २८), प्रोफेसर कपिल के नाम से प्रसिद्ध, 'शंखनाद' के संपादक; **प्रका०**—संचा०-श्रीकृष्ण अभिनंदन ग्रंथ, बारह बातें, साहित्य - प्रदीप; **अप्र०**—कवि भूषण, रेखायें, बूढ़ा झामलाल, दिनकर और उनकी काव्य कृतियाँ।

कमल कवि—ज०—१६०७, हरुली, पोखला, गढ़वाल; शि०—साहित्यालंकार ; **सा०** — बिलोचिस्तान तथा सिंध में हिंदी प्रचार, क्वेटा से, देश-विभाजन के बाद, दिल्ली आकर दिल्ली रेडियो में कार्य; **प्रका**—वीणा की झंकार—ना०, कवि०-संगिनी और क्रांतिदीप; **उप०**—कलाकार; **वर्त०**— अध्यापन; प०—१५-६५, राजेंद्रनगर, करौल बाग, नयी दिल्ली ५।

कमला प्रसाद अवस्थी—(पृ०-३०) 'अशोक', शि०—बी० ए०, बी० जी; **अप्र०**—एक गीत संग्रह; प०-२१६, रामापुरा, बनारस।

कमलेश भारतीय—(पृ०-२१) ज०—२१ नवम्बर १६१६ मथुरा; शि०—बी० ए०, आगरा कालेज, आगरा; **सा०**—अहिंदी प्रांतों में हिंदी प्रचार, मंत्री बम्बई प्रां० हि० सा० प्रचार सभा, १६३६-४० में सहा० संपा० 'हरिजन सेवक', ४१-४२ में मंत्री, गुजरात प्रांतीय रा० भा० प्र० स०, प्रबंधमंत्री बम्बई प्रा० हि० सा० स०; प०—सम्पादक, 'प्रेम', प्रेम महाविद्यालय, वृंदावन।

कांतिलाल मोदी, 'प्रभाती'—**सा०**—१६४६ में बम्बई के दैनिक 'लोकमान्य' के सह० संपा०, हि० सा० स० बम्बई अधिवेशन में 'क्षत्राणी' कविता पर पुरस्कार प्राप्त; **प्रका०**—स्फुट; पा०—हिंदी साहित्य परिषद् देवरी, सागर।

काका कवि — हास्य रस के कवि; **प्रका०**—कविता संग्रह-काका की कचहरी, पिल्ला; प०—संगीत-कार्यालय, हाथरस।

किशोरीलाल गुप्त—शि०—बी० ए० आनर्स, एम० ए०—हिंदी और अंग्रेजी, बी० टी०; **प्रका०**—प्रसाद - साहित्य का विकासात्मक अध्ययन, सुकवि भारतेंदु, भारतेंदु और उनके पूर्ववर्ती तथा परवर्ती कवि, कबीर की साखियाँ; अनु०—कामायनी (अँग्रेजी), श्यामा (शा की 'लेडी आफ दि सानेट्स' का अनु०); नाट०—प्रतिशोध, विध्वंस; **प०**—प्राध्यापक हिंदी विभाग, शिबली कालेज, आजमगढ़।

कुंज बिहारी लाल शुक्ल—महामहोपाध्याय—हिंदी-सेवा के लिए सा० सम्मे० प्रयाग द्वारा प्रशंसित, विद्वत् - परिषद् अजमेर द्वारा मानपत्र प्राप्त, सद०— इंडियन कौंसिल आफ़ वर्ल्ड अफेयर्स भारतीय राष्ट्रीय परिषद्, नेशनल स्टैंडर्ड्स इंस्टीट्यूट गवर्नमेंट आफ़ इंडिया; **प०**—मांजी मंदिर, राजस्थान भवन, स्वामीघाट, मथुरा।

कृष्णचंद एम.एल.ए.—शि०—बी. एस-सी. **सा०**—वृंदावन म्यूनीसिपैलिटी के कई बार चेयरमैन रह चुके हैं; प्रेम महाविद्यालय की स्थापना की; **प्रका०**—स्फुट; **प०**— २३, मदनमोहन फेरा, वृंदावन।

कृष्णानंद गुप्त — बुंदेलखंडी साहित्य के लेखक; **ज०**—१९०३; **शि०** – झाँसी; **प्रे०**— श्री गणेश शंकर विद्यार्थी; **सा०**—ओरछा नरेश के संरक्षण में बुंदेलखंडी कोश का संपादन; संस्था० बुंदेलखंड लोकवार्ता परिषद्, (इसके मंत्री), संपा 'लोकवार्ता' पत्रिका; **प्रका०**—प्रसाद जी के दो नाटक; केन-उप०, कहा०—पुरस्कार, अंकुर; पदार्थ-परिचय, जीव की कहानी, स्वास्थ्य- संलाप; **प०**—संपादक, 'संगम', ३ लीडर रोड, प्रयाग।

केदारनाथ वर्मा— **शि०** — इलाहाबाद; **सा०** — म्यूनिसिपल बोर्ड जूनियर हाई स्कूल में अध्यापक रहे; १९४९ से पंचायत -राज-इंस्पेक्टर; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—६०२ मुट्ठीगंज, प्रयाग।

के० भास्करन नायर—हिंदी प्रचार तथा पाठ-ग्रन्थ के लेखक; **शि०**—एम० ए०; **सा०**—१९ वर्ष से हिंदी प्रचार और शिक्षण

में संलग्न; प्रका०— दस हीरे, सुदामा चरित्र सम्पा० प्रेमधारा— कहा० सं०; प०—अध्यक्ष, हिंदी विभाग, ट्रावनकोर विश्वविद्यालय, ट्रावनकोर।

केशवानन्द स्वामी— (पृ०४८) सा०—ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया के संस्थापक, १४ पुस्तकों का प्रकाशन-संपादन किया; प० संगरिया, बीकानेर।

केसरीकुमार—ज० —१६०६ पटना; शि०—एम० ए०; सा० —१० वर्ष तक पटना कालेज में अध्यापन; प्रका०—कवि०-त्रिवेणी कहा०-दिवा रात, ना०-नेत्रदान; आलो०-भारतेंदु और उनके नाटक, प्रसाद और उनके नाटक, हिंदी के कहानीकार, हरिऔध और उनका महाकाव्य, पंत और उनका गुंजन, गुप्त जी की यशोधरा और साकेत, निबंध-निवेदिता, साहित्य और समीक्षा; प०—हिंदी विभाग, राँची कालेज, राँची।

केसरीप्रसाद सिंह—शि०— एम० ए०; प्रका०—प्रसाद, पंत, हरिऔध पर आलोचनात्मक पुस्तकें; प०—हिंदी विभाग, राँची कालेज, राँची।

क्षेमेंद्र शर्मा गुलेरी—स्व० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के भ्रातृज; प्रका०—स्फुट; पता—अनुवादक, जन सम्पर्क विभाग, पंजाब सरकार, शिमला।

गणेशलाल शर्मा 'प्राणेश'— ज०—४ मार्च १९०९; शि०— एम० ए०, सा० र०; सा०— प्रतिनिधि-अमर भारत, नवभारत टाइम्स, विश्वमित्र, सन्मार्ग, संदेश आदि; प्रधान हिंदी विद्यापीठ; प्रका०—देवी शबरी, प्राणेश प्रतिमा; अप्र०—सविता-कहा०सं०, सुमनांजलि, रानियाँ, राजस्थान - गौरव; प०—आचार्य, डी० ए० वी० हायर सेकेंडी विद्यालय, फीरोजाबाद, आगरा।

गुरुप्रसाद उप्पल—ज०—२० अक्टूबर १९२२; सा०-सोशलिस्ट पार्टी के सद०; संचा०संत पब्लिकेशन; संपा० और प्रका० 'कहानियाँ'; प्रका०—स्फुट कहानियाँ और लेख; प०—प्रकाशक और प्रबन्ध-संपादक 'उजाला' साप्ताहिक, पटना ३।

गेंदालाल सिंघई — ज०—१९२१ ; प्रका० — प्राणों का संगीत, करुणामयी ; अप्र०—मेदिनीराय, चंदेरी ; प०—संचालक सिंघई प्रेस, पछार (ग्वालियर)।

गोपीनाथ तिवारी—(पृ० ६८) ज०—मार्च १९१४, धामपुर ; शि०—एम० ए० प्रथम श्रेणी, आगरा वि० वि०; सा०—६ वर्ष तक अध्यक्ष हिंदी विभाग, डी० ए० वी० कालेज, लाहौर ; प्रका०—पद्यावली ; वर्त० — संपादक-'सुमन' मासिक।

गोपीवल्लभ उपाध्याय, (पृ०-६९) — संपादक 'वीणा', इंदौर-४६-४७ ; वर्त०—प्रबंध संपा०-'विक्रम' मासिक ; प्रका०—भाग्य रेखा, संस्कृत-संगम, वाग्विहार।

गौरीशंकर ओझा— ज०—१९१५ गुना, ग्वालियर ; जा०—गुजराती, बँगला; सा०—'मिलाप' लाहौर, 'हंस' बनारस, 'जीवन'-ग्वालियर के संपादन में योग दिया; वर्त० — उपसंपा०—साप्ताहिक 'मध्यभारत - संदेश' ; प्रका०—अर्घ्य-कविता ; प०—'मध्यभारत संदेश'-कार्यालय, ग्वालियर।

गौरीशंकर मिश्र 'द्विजेंद्र'—शि० — एम० ए० हिंदी, पटना वि० वि०, स्वर्णपदक प्राप्त ; प्रका०—नीलिमा, परीक्षित, गीति नाट्य ; प०—प्रधानाध्यापक, टी० एन० जे० कालेज, भागलपुर।

चिंतामणि शुक्ल — ज०—१९१०, धौलपुर ; शि०—एम० ए०—इतिहास, राजनीति और हिंदी, सा० र० ; राष्ट्र०—'३०, '३२, '३३, और '४२ के राष्ट्रीय आन्दोलनों में जेल गये ; सा०—हि० सा० स० की परीक्षाओं के स्थानीय व्यवस्थापक ; रेडियो द्वारा निबंधों का प्रसरण ; प्रका०—विश्व का सरल इतिहास, भारतवर्ष का इतिहास ; अप्र०—चीन पर विहंगम दृष्टि, यूरोप का इतिहास ; प०—प्राध्यापक, म्युनिसिपल इंटर कालेज, वृंदावन।

चेतनकुमार भटनागर—यात्रा साहित्य के लेखक ; सा० — 'मस्ताना जोगी' के संपा० ; प्रका०—उत्तराखंड, कैलास मानसरोवर की यात्रा, काश्मीर, नेपाल, भूटान और सिक्कम ; प०—'मस्ताना जोगी'-कार्यालय, दिल्ली।

चेतराम व्यास — ज० — १६०५, नारायणगंज, इंदौर; **शि०** —सा० रत्न ; **सा०**—ग्राम पंचायतों के इंस्पेक्टर, विकास-विभाग के प्रकाशन अधिकारी, 'ग्राम-सुधार' साप्ताहिक के संपादक ; **वर्त०**—'वीणा' के सह० संपा० ; प०—५ मल्हारगंज, इंदौर।

जगदलपुरी, लाला— ज०—१६२० ; प्र०—१६३७ ; **सा०**—भूत० संपा० 'अंगारा' ; **प्रका०**—स्फुट ; प०—'कवि निवास', जगदलपुर।

जगदीशचंद्र माथुर—ज०—१६१६, शाहजहाँपुर ; **शि०**—प्रारंभिक खुर्जा, एम० ए० प्रयाग वि० वि०, आई० सी० एस० १६४१ ; प्र०—भोर का तारा (एकांकी), वैशाली अभिनंदन-ग्रंथ (ऐतिहासिक निबंध-संग्रह), कोणार्क (नाटक), कुँवरसिंह (नाटक) ; **अप्र०**—फुटकर कहानियाँ और निबंध ; **वर्त०** — शिक्षा सचिव, बिहार राज्य ; प०—२४, हार्डिंज रोड, पटना।

जगदीश नारायण दीक्षित—(पृ०-८८) **प्रका०**—बापू की देन, गबन : एक आलोचनात्मक परिचय, पुराण कथा रत्नावली, जातक की कथाएँ, भारत की अमर आत्माएँ, नीतिशिक्षण।

जगदीश विद्रोही—ज०—५ अक्टूबर १६२८ ; **सा०**—भूत० सम्पा० 'वीणा'; **प्रका०**—कवि०—प्रतिमा, रेखा; उप०-पत्थर के देवता, विद्रोही; प०—संपादक मासिक 'भारती', दिल्ली।

जगदीश सहाय उपाध्याय—(पृ०-६०) **सा०** - संस्था० ग्राम्य साहित्य परिषद, पालर; **प्रका०**—महात्माबुद्ध नाटक, मनकी मौज उप०; प०-अध्यक्ष संस्कृत विभाग विपिन बिहारी इंटर कालेज, झाँसी।

जगद्धर शर्मा गुलेरी—स्व० चंद्रधर शर्मा गुलेरी के भाई; **शि०** एम० ए०; **सा०**—स्व० शर्मा जी की स्मृति में 'गुलेरी' पदक की स्थापना, जो का० ना० प्र० स० से दिया जाता है; पंजाब में प्राचीन पाण्डुलिपियों के अन्वेषण-कार्य के निरीक्षक रहे, सद० का० ना० प्र० स०; प०—अध्यापक, कृषि महाविद्यालय, लायलपुर।

जनार्दन नायर—सा०—१० वर्षों से दक्षिणमें प्रचार-कार्यकर रहे हैं; प्रका०—सरस कहानियाँ, नेहरु की जीवनी; प०—प्रधान हिंदी अध्यापक, महात्मा गाँधी स्मारक कालेज, त्रिविन्द्रम।

जमनालाल जैन—ज०—१८ दिसम्बर १९२२; शि०—सा०र०; सा०—भूत० संपा० 'वीर' साप्ताहिक; प्रका०—स्फुट १५० लेख; छंद-शतक; अप्र०—रामायण के पात्र, प्यारे राजा बेटा-संपा; प०—सहायक संपादक मासिक 'जैन-जगत', वर्धा।

जयनारायण मल्लिक—शि०—एम० ए०, पटना वि० वि०, सा० आ०, सा० र०; प्रका०—उप०—प्रेमोपहार, गल्पमाला, देहाती-समाज, अछूत कन्या; कवि०—पुष्प चयन; प०—प्राध्यापक, टी० एन० जे० कालेज, भागलपुर।

जयशंकर नाथ मिश्र 'सरोज'—ज०—११ फरवरी १९२३; शि०—एम० ए०, एल० टी०; लखनऊ वि० वि०; प्रका०—स्फुट; अप्र—कल्पना—कवि०; विचार-दर्शन—आलो०; सुनहले साँप—कहा०, वर्त०—अध्यापक, हिंदी विभाग, नेशनल इंटर कालेज, लखनऊ; प०—शंकरी टोला, चौक, लखनऊ।

जवाहरलाल चतुर्वेदी—ब्रज-भाषा साहित्य के विद्वान और अनुसंधानकर्त्ता; कई वर्ष से ब्रज-भाषा का प्रामाणिक कोश बनाने में प्रयत्नशील; आपके पास एक सुंदर पुस्तकालय है जिसमें प्राचीन साहित्य, विशेषतः ब्रजभाषा, के अनेक महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ हैं; ब्रजभाषा और उसके साहित्य के संबंध में अनुसंधान करनेवाले अनेक विद्वानों ने इनके ग्रंथों से समय समय पर लाभ उठाया है; स्थानीय सभी प्रमुख साहित्यिक संस्थाओं से आपका सक्रिय संबंध रहा है; प०—ठि० बैजनाथ चौबे कंपनी, ३७। ३ ए इजारा स्ट्रीट, कलकत्ता।

जवाहर लाल लोढा जैन—(पृ० १००) जैन-साहित्य के अध्ययन और प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं।

जीवनशंकर याज्ञिक—ज० १८८७; शि०—एम० ए० अंग्रेजी तथा अर्थशास्त्र, एल-एल० बी०;

आगरा तथा अलीगढ़; सा०—हिंदी के १२०० हस्तलिखित ग्रंथ आपने काशी ना० प्र० सभा को प्रदान किये; गीता तथा रामायण पर खोजपूर्ण साहित्य लिखा; प्रका०—स्फुट; प०—प्रधानाध्यापक तथा गीताध्यापक हिंदू विश्वविद्यालय, काशी।

जी० सुन्दर रेड्डी—शि०—एम० ए० (जमिया), सा०र०; सा०—हिंदी प्रचारक तथा अध्यापक; प्रका०—स्फुट; प०—प्रधानाध्यापक, हिंदी आँध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर।

ज्वालाप्रसाद, डाक्टर—वाणिज्य विषय के ज्ञाता; शि०—एम० ए०, डी० फिल; सा०—संरक्षक हिंदी साहित्य समिति-पुस्तकालय; प्रका०—स्फुट; प० शिवाजी विद्यालय, अमरावती।

ज्ञानचन्द्र अलया—ज०—१९२६; प्रका०—स्फुट; प०—मन्त्री, हिंदी साहित्य परिषद, ललितपुर।

ज्ञानीदास—सा०—सुदूर अहिंदी प्रदेश के हिंदी लेखक, लगभग बीस वर्षों से हिंदी-प्रचार प्रसार में लगे हैं; अनेक बार पाक्षिक और मासिक पत्र-पत्रिकाएँ निकाल चुके हैं; आजकल 'तारा' मासिक के सम्पादक; प्रका०—गुप्त शक्तियाँ, मृदुला, फीजी गल्पिका, भारतीय उपनिवेश फीजी; प०—तारा कार्यालय, नसीनू, सूवा, फीजी।

टी० ए० ओदमाम—हिंदी प्रचारक; प्रका०—स्फुट; प०—हिंदी प्रचारक विद्यालय, पो० देन्नूर, त्रिचिनापल्ली, मद्रास।

डी० वी० रामास्वामी—एम० एल० ए०; शि०—बी० ए०, बी० एल०; प्रका०—स्फुट लेख; प०—प्रधान, दक्षिण विशाख जिला हिंदी पंडित संघ, दावा गार्डेन, विशाखापटनम।

तारा पोतदार कुमारी—प्रका०—स्फुट कहानियाँ; अप्र०—दो कहानी-संग्रह प०—हिंदी अध्यापिका महिला महाविद्यालय, नागपुर।

तेजनारायण लाल—(पृ०१०६) शि०—एम० ए०; सा०—१९४५ में उप० संपा० 'नवशक्ति' पटना, 'राष्ट्रवाणी' १९५० में

एम० ए० में छात्रवृत्ति सरकार द्वारा प्राप्त, १६४६ में द० भा० हि० प्र० स० के साहित्य विभाग में कार्य किया; प्रका०—मधुज्वाल, कालिंदी मशाल; अप्र०—परिचित उप०, जीवन के रूप–निब०, हिंदी की काव्य-कला, तेलगु के नये कवि; प०—प्राध्यापक, हिंदी प्रचारक विद्यालय, विजयवाड़ा, वकिंघमपेट, एलोर रोड।

त्रिगुणानन्द शुक्ल—शि०—एम० ए०, काव्यतीर्थ; प्रका०—स्फुट लेख; वि०—इस समय दैनिक आर्यावर्त के सम्पादकीय विभाग में हैं; प०—'आर्यावर्त'- कार्यालय, पटना।

दत्तात्रेय बालकृष्ण (काका कालेलकर)—ज०–१८८५; शि०—बी० ए०; सा०—साप्ता० 'राष्ट्रमत' के भूत० संपा०, शिक्षक शांति निकेतन १६२५, गुजरात विद्यापीठ के कुलपति और आचार्य रहे १६२७-३४, गाँधी के 'नवजीवन' का सम्पादन किया; 'सर्वोदय', 'सबकी बोली' आदि पत्रिकाओं का भी सफल सम्पादन कर चुके हैं; वि०—आपके परिश्रम और अध्यवसाय से वर्धा राष्ट्रभाषा - प्रचार समिति की काफी उन्नति हुई; प०—वर्धा।

दामोदरदास चतुर्वेदी — ज० १६०६; सा०—'आगरा-समाचार', 'विशाल भारत', 'नोकझोंक', 'निराला', 'जीवन', 'प्रजा - प्रकार', 'उदय' आदि के संपादकीय विभाग में रहे; प्रका०—स्फुट बँगला के अनुवाद; वर्त०—सम्पा० 'मध्य-भारत-संदेश; प० — मलयपुर, मुंगेर।

दिनेशप्रसाद वर्मा—ज०—सुबइयाँ, चम्पारन; शि० — बी० ए० आनर्स, १६४६; एम० ए० १६४६ ; सा० — सह० संपा० दैनिक 'नवराष्ट्र', साप्ता० 'हुंकार'; अखिल भारतीय रेडियो पटना के 'चौपाल' कार्यक्रम के कलाकार; मन्त्री स्वागत समिति बिहार प्रांतीय हि० सा० स०; प्रका०—प्रसाद के नाटकों की गीति योजना (रामेश्वर नाथ तिवारी के सहयोग से), अनुसंधान कार्य भारतेंदु पर कर रहे हैं; प०—अध्यापक, एच० डी० जैन कालेज, आरा।

दीनदयालु—शि०—सिद्धान्तालंकार, शास्त्री; सा०—विद्या सभा, रुढ़की इंजिनियरिंग वि० वि०, उत्तरप्रदेश धारा सभा आदि अनेक सरकारी तथा सार्वजनिक संस्थाओं के सद०, राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिया और जेल गये; प्रका०—स्फुट; प०—अध्यक्ष वाणिज्य विभाग, गुरुकुल काँगड़ी, हरद्वार।

दीपचन्द जैन—शि०—एम० ए० प्रयाग वि० वि०; प्रका०—स्फुट; प०—उच्च व्याख्याता, हिंदी विभाग, दरबार कालेज, रीवाँ।

दुर्गाप्रसाद खत्री — प्रसिद्ध तिलिस्मी और ऐयारी की पुस्तक चंद्रकांताके लेखक देवकीनन्दन खत्री के पुत्र; प्रका०—सुवर्णपुरी, सागर सम्राट, रोहतासगढ़, लालवर्दी, लाल पंजा, सफेद शैतान आदि अनेक पुस्तकें; प०—लहरी बुक-डिपो, काशी।

दुर्गाप्रसाद राव—प्रका०—जीवन की विचित्रता; अप्र०—ग्रीसदेश की प्राचीन सभ्यता; प०—पुरानी बाजार, ललितपुर, झाँसी।

देवकीनन्दन शर्मा 'चंचल'—प्रका०—स्फुट कविताएँ; प०—प्राध्यापक सनातन धर्म कालेज, अम्बाला कैंट।

देवीशंकर मिश्र 'अमर'—ज०—१९१४; शि०—लखनऊ, एम० एस-सी० काशी वि० वि०; सा०—विद्यार्थी काल से ही साहित्य में रुचि, छात्रावास पत्रिका क्रिश्चियन कालेज का संपादन, लखनऊ वि० वि० कहानी-प्रतियोगिता में दो बार प्रथम आये, सभा० तथा संस्था०—हिंदी साहित्य परिषद् पीलीभीत; संस्था० मन्त्री कोषाध्यक्ष भारतीय प्राणिशास्त्र परिषद; इसके मुखपत्र 'प्राणिशास्त्र' के आयोजक और संपादक; प्रका०—उद्गार-कवि० सं०, जगद्गुरु भारत, सुमार्ग; अप्र० — योग स्वस्थवृत्त, विश्व सर्प-सम्मेलन; वि०—तुलसी की रामायण की 'परीक्षाकांडम्' नाम से पैरोडी आपने १९२६ में लिखी थी; प०—अध्यक्ष विज्ञान विभाग, कालीचरण इंटर कालेज, लखनऊ।

देवेंद्रपाल सुहृद — ज०—२ अक्टूबर १९२८; शि०—बी० ए० अलीगढ़ वि० वि०; प्र०—१९३९;

सा० — 'सुखमार्ग', 'सेनानी', 'बारहसेनी', के भूत० सम्पा०; सद० सुहृदगोष्ठी, प्रगतिशील लेखक संघ, हि० प्र० सभा०, राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग; प्रका०—स्फुट; अप्र०—हरिजन काव्य; प० — ग्राम बरानदी, बुढ़ासी, अलीगढ़।

धर्मदेव वेदवाचस्पति—१५ वर्ष तक गुरुकुल इंद्रप्रस्थ में अध्यापन ; प्रका०—त्याग की भावना ; प०—गुरुकुल काँगड़ी।

नंद चतुर्वेदी— शि०— बी० ए०, बी० टी ; प्रका०—स्फुट कविताएँ और लेख ; प०—संपादक 'जयहिंद', साप्ताहिक पत्र, कोटा।

नरदेव विद्यालंकार—दक्षिण अफ्रीका के हिंदी प्रचारक, गुरुकुल काँगड़ी के स्नातक, डर्बन नगर में आपके प्रयत्नों से हिंदी प्रचार बड़ी अच्छी गति पर हैं ; प०—पो० बा० ३६३, लोरेन्सोमार्क्स।

नलिन विलोचन शर्मा—शि०—एम० ए०, सा० आ० ; प्रका०—दृष्टिकोण-साहित्यिक लेख ; प०—हिंदी विभाग, पटना कालेज, पटना।

नित्यानंद सहाय—शि०—एम० ए०, बी० एल० ; सा०—हिंदी साहित्य परिषद, मुंगेर के सभापति ; प्रका०—स्फुट ; प०—पूरब सराय, मुंगेर।

पशुपति नाथ गुप्त—ज०—१६१६ ; सा०—सहा० मंत्री भारतेंदु साहित्य संघ और चम्पारन रिसर्च सोसाइटी ; प्रका०—स्फुट ; प०—नेशनल स्टोर एंड एजेंसी, मोतिहारी।

पी० आर० श्री निवासशास्त्री दक्षिण भारत के हिंदी प्रचारक और लेखक ; ज०—१६२२, पात पाल्य, कोलार, जिला मैसूर; शि०—हि० सा० शिरोमणि मैसूर, राष्ट्र-भाषा–विशारद-मद्रास ; साहित्य विशारद प्रयाग ; सा०—१६४२, मैसूर हिंदी - प्रचार - परिषद् की स्थापना तथा उसके मंत्री ; सरकारी कमेटियों के सदस्य; प्रका०—मनोहर कहानियाँ, श्री राम की कथा, फूलों का हार, हिंदी प्रचार पाठमाला, महाभारत की कथा, हिंदी लिपि पुस्तक ; अप्र०—नयी

हिंदी, हिंदीप्रवेश, नवीन हिंदी कन्नड़ अनुवादमाला ३ भाग, प्रचार पाठमाला-२ भाग ; प०—४२२।२ ईस्ट रोड, विश्वेश्वरपुरम बंगलौर।

पी० केशवन नायर—(पृ० १४१) **प्रका०**—हिंदी मलयालम कोश, हिंदी मलयालम स्वबोधिनी; **प०**—प्राध्यापक हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय, ट्रावनकोर।

पी० नारायण–(पृ०-१४१) **शि०**—सा० र०; **सा०**—६ वर्ष तक काशी विद्यापीठ में अध्यापन; सारे देश का भ्रमण और देश व्यापी आंदोलनों में भाग लेने के बाद अपना कर्मक्षेत्र स्थायी रूप से दक्षिण को ही चुना; सह० संपा० 'ललकार'; सारे भारत में 'हिंदी' के माध्यम का समर्थन और सांस्कृतिक एकता के लिए प्रयत्न, 'नरन' उपनाम से कविता करते हैं, सद० शिक्षापरिषद्, परीक्षाओं के व्यवस्थापक; **प्रका०**—हिंदू पुराण।

पुरुषोत्तमदास टंडन—पत्रकार तथा राजनीति विषय के लेखक; **शि०**— बी० ए०, एल-एल० बी०; **रा०**–४२ के आंदोलन में जेल यात्रा; **सा०**— नेशनल हेराल्ड के पत्र प्रतिनिधि; **प्रका०**—पत्र और पत्रकार; अँगरेज़ी में भी कई पुस्तक लिखीं; **प०**—४ एलगिन रोड, इलाहाबाद।

पुरुषोत्तमदास मोदी—**ज०**–१६ जून १६२८; **शि०**—बी०ए०; **प्रका०**—स्फुट कहानियाँ और स्वास्थ्य संबंधी लेख; प०–आरोग्य मंदिर, सुड़िया कुआँ, गोरखपुर।

पुरुषोत्तम मुरारका— गद्य-गीत लेखक; **ज०**—२८ जुलाई १६२७; **शि०**—सा० र०, सा० लं०; **सा०** — केंद्र व्यस्थापक बिहार विद्यापीठ ; **प्रका०**—स्फुट; **प०**—ओरिएंटल हाई स्कूल, वर्धा।

पूजाप्रसाद मिश्र–**ज०**–१६१८; **शि०**—सा० र०, सा० लं०; **सा०**—मंत्री श्री माहेश्वरी खेतान पुस्तकालय, प्रधानाध्यापक गोस्वामी तुलसीदास साहित्य विद्यालय, पडरौना; **प्रका०**—स्फुट; **अप्र०**—आकाश कुसुम, **प०**—ग्राम डुमरी, पो० किन्थर पट्टी, पडरौना, देवरिया।

पौलडेएट (रे० फा०) एस० जे०—अमरीकी हिंदी प्रेमी और लेखक; ज०—१९०१ अमरीका; शि०—अमरीका और दतिया पूर्व भारत; सा०—दतिया के मिशन स्कूलों में अध्यापन; प्रका०—स्फुट ; 'दयाकिशोर' उपनाम से हिंदी में लिखा.प०—हिंदी अध्यापक, वेस्ट वेडेन कालेज, वेस्ट-वेडेन, स्प्रंगस, इंडियाना, संयुक्त-राज्य, अमरीका।

प्रतापभानुसिंह चौहान'आजाद'— ज० — १९१५ ; शि०—मैट्रिक; प्रका०—स्फुट कविता; प०—सोहागपुर, होशंगाबाद।

प्रियव्रत वेदवाचस्पति—सा०—'आर्यमासिक' लाहौर के ८ वर्ष तक संपा०, आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष, अंतरंग और विद्यासभा के सद०, १९४३ से गुरुकुल काँगड़ी के आचार्य; प्रका०—वरुण की नौका-२ भाग; अप्र०—तीन पुस्तकें; प०—गुरुकुल काँगडी, हरद्वार।

फकीरचंद—रसायन शास्त्र के लेखक; ज०—६ अप्रैल १९०६; शि०—एम० एस-सी०; प्रका०—सोडा कास्टिक साबुन तथा बिना सोडा कास्टिक के साबुन बनाना, आईना, मोमबत्ती बनाना, सील मुहर करने की वस्तुएँ, जादू के खेल, साबुन तथा ग्लिसरीन; प० — उपाध्याय इंडस्ट्रियल केमेस्ट्री, गुरुकुल विश्वविद्यालय, काँगड़ी।

फतहचद गुप्त—ज०-४ मई १९१७;सा०—संपादक 'मारवाड़ी समाज' और 'समाज-सेवक' नामक पत्र; व्यवस्थापक मारवाडी साहित्य मंदिर, प्रबंध संपा० हिंदी इंडस्ट्रीज ऐंड पब्लिकेशंस ; प्रका०—मारवाड़ी गौरव-इति०; अग्रवाल शब्द कोश (संपादित); प०—गुप्त निवास, भिवानी; या ३८२, नया बाँस, दिल्ली।

फूलचंद्रजैन 'सारंग'—ज०—१९१३; शि०—बी० ए०; सा०—भूत० प्रधानाध्यापक जैन रत्न विद्यालय, भोपाल गढ़, जिनवाणी का संपादन किया; प्रका०—स्फुट; प०—अध्यापक एम० डी० जैन कालेज, आगरा।

बजरंग लाल सुलतानिया—(पृ०-१५३) प्रका०—पापी(अनु०),

वेदी (कहा०), कड़ुवा घूँट ।

बद्रीनारायण सिंह—प्रका०—मांडवी, सिंहगढ़ विजय, गीता का पद्यानुवाद, राघवेंद्र चरित; प०—खपराडीह, फैजाबाद ।

बनारस चौधरी 'अमर'—ज०—१६२४; शि०—विशारद; सा०—सह० संपा०—'मजदूर आवाज',जमशेदपुर; प्रका०-स्फुट; अप्र०—अमरज्योति ; वर्त०—अध्यापक; प०—हुसेनपुर, विहार-शरीफ, पटना ।

बम्बहादुर सिंह नेपाली 'मगन'—(पृ० १५५) फुटबाल साहित्य के लेखक; प्रका०—हम नेपाली हैं गोर्खाली नहीं; अप्र०—रामनगर का इतिहास, फिल्मी भंडाफोड़, चम्पारन-गौरव, नैपाल का इतिहास; वर्त०—सुपरवाइजर, पडरौना सुगर मिल्स, सलाहकार नैपाली भारतीय एसोसिएशन; प०—मैनेजर जयहिंद टाकीज खड्ग प्रिंटिंग प्रेस, नौतनवाँ, गोरखपुर ।

बलभद्र ठाकुर—बँगला और रूसी भाषा के ग्रन्थों का भाषांतर किया; प्रका०—कई अनूदित पुस्तकें, अप्र०—राधा, भूमिका; प०—वर्धा ।

बशीर अहमद खाँ 'मयूख'–सा०—समाजवादी पार्टी के उत्साही कार्यकर्ता ; प्रका०—स्फुट कविता; प०— ठि० जय-हिंद साप्ताहिक, कोटा ।

बालकृष्ण जोशी 'दर्शन'—ज०— १६२६; सा०—प्र० मंत्री सुहृद साहित्य गोष्ठी, सद० जनता राष्ट्रीय विद्यालय, पुस्तकाध्यक्ष काशी पुस्तकभंडार; प्रका०—पत्नी के नाम पत्र; प०—सुडिया, काशी ।

बाल शौरिरेड्डी—शि०-सा० भू०, सा० र०, सा० लं०, काशी और प्रयाग; सा०—दक्षिण भारत में तामिलनाद हिंदी-प्रचार-सभा, त्रिचिनापली और दक्षिण भारत हिन्दुस्तान प्रचार सभा, मद्रास के सहयोग में हिंदी-प्रचार, अध्यापन ; प्रका—स्फुट; प्रचार - सभा की ओर से हिंदी तेलगु कोश का संपादन; अप्र०—उत्तर हिन्दुस्तान की यात्रा; वर्त०—प्रचार - कार्य तथा शिक्षण; प०—हिंदी प्रचार सभा,त्रिचिनापल्ली (तामिलनाडु) ।

भगवद्दत्त वेदालंकार—ज०—मेरठ; **सा०**—वैदिक अनुसंधान के उत्साही कार्यकर्ता; **प्रका०**—ऋभु देवता, वैदिक स्वप्न विज्ञान, वैदिक अध्यात्म विद्या; **प०**—अनुसंधान - विभाग, गुरुकुल काँगड़ी, हरद्वार।

भरतसिंह उपाध्याय—बौद्ध साहित्य और पाली के अन्वेषक; शि०—एम० ए०; **प्रका०**—मेरी गाथाएँ, बुद्ध और बौद्ध साधक, पालि साहित्य का इतिहास; **अप्र०**—बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन–इस पर १५००) का 'दर्शन पारितोषिक' बंगाल हिंदी मंडल कलकत्ता ने प्रदान किया ; प०—प्रधानाध्यक्ष, दिगम्बर जैन कालेज, बड़ौत।

भवानीप्रसाद मिश्र— ज०—१६१४; शि०—कई भारतीय भाषाओं के ज्ञाता; बी० ए० नागपुर वि० वि०, १६३५; **सा०**—३२ में जेल - यात्रा, महिलाश्रम, वर्धा की स्थापना; संपा० 'शिक्षक' परीक्षा मंत्री भी रहे ; प०—महिलाश्रम, वर्धा।

भुवनेश्वर प्रसाद वर्मा 'कमल'—ज० — २३ नवम्बर १६२३, गिसारा मुजफ्फरपुर; **शि०**—एम० ए० हिंदी, पटना वि० वि०; **सा०**—एच० डी० जैन कालेज में अध्यापक रहे, रेडियो पर आपके एकांकी प्रसारित होते हैं, हिंदी शब्दों का वैज्ञानिक अध्ययन कर रहे हैं; **प्रका०**—सांध्यदीप, साहित्य-संधान; **प०**—पटना कालेज, पटना।

मक्खन लाल बसावेका—शि०—एम० काम०, सा० र०; **सा०**—संस्था० हिंदी सभा रामगढ़, जयपुर काँग्रेस अधिवेशन में सर्वोदय प्रदर्शिनी के प्रबंधक व कार्यकर्ता; प०—प्रधान मंत्री हिंदी सभा, नवलगढ़।

मथुराप्रसाद दीक्षित—महामहोपाध्याय, राजगुरु सोलन; **ज०**—१८७६ हरदोई; **शि०**—आचार्य; **प्रका०**—पृथ्वीराज रासो की टीका; **वि०**—रासो की टीका पर आपको महामहोपाध्याय की उपाधि मिली; संस्कृत के अनेक ग्रन्थों की रचना की, संस्कृत में अभिधान राजेंद्रकोश की ७ खंडों में रचना की जिसका मू० २५०) है; प०—सोलन, शिमला;

मथुराप्रसाद दुबे 'कुलदीप'—ज०—१६२३ झाँसी; शि०—एम० ए०; सा०—भूत० संपा० 'पराग' मासिक, दैनिक 'संदेश', 'मतवाला', प्रका० — भाग्यचक्र-नाटक; अप्र०—कहानियों और कविताओं के दो-तीन संग्रह; वि०—इस समय 'हमराही' साप्ताहिक के प्रधान सम्पादक हैं; प०—प्राध्यापक, सेंट जांस कालेज, आगरा।

मदन गोपाल अरविंद—प्रका०—संगीत-कविता संग्रह; प०—सीनियर आफिस, कोर्ट विभाग मुजफ्फरपुर।

मदन लाल व्यास 'प्रभाकर'—ज०—१६२२; सा०—हिंदी साहित्य सभा के सम्पादक; प्रका०—स्फुट; प०—नथावतों की पोल, नव चौक, जोधपुर।

मन्यथ राम कृष्ण भट्ट, 'नवल'—शि०—एम० आर० ए० एस० (लंदन); सा० — सहकारी सद० हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रोफेसर एम० पी० इंस्ट्रीट्यूट; संस्था० संचा० सर्वोत्तम साहित्य शिक्षण समिति, संशोधक संजीवन साहित्य शिक्षण; प्रका०— भारत भेरी, नवल सिद्धान्त, नवल व्याकरण, ललित पत्र, कलमी कलाम, हिंदी नारी, नवल नूर आदि; प०— सर्वोत्तम साहित्य शिक्षण समिति, म्यापसा, गोवा।

महादेवराव चौधरी—सा०—व्यावहारिक कृषिविशेषज्ञ; प्र०—कृषि सम्बन्धी स्फुट लेख; प०—बसन्तरमेश कृषि फार्म, सविता-वाड़ी, वरुड (बरार)।

महादेव लाल— सा० —'प्रकाश', देवघर के प्रधान सम्पा०, आदिवासियों में सुधार और हिंदी प्रचार में संलग्न; प०—प्राध्यापक, हिंदी विद्यापीठ, देवघर।

महावीर प्रसाद शर्मा—शि०—बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०; प्रका०—स्फुट कविताएँ और लेख; वर्त० — वकालत; प०—संपा० साप्ताहिक 'जयहिंद', कोटा।

महावीरप्रसाद शर्मा 'प्रेमी'—(पृ०-१८२) वर्त०—'राष्ट्रवाणी' तथा 'नवशक्ति' पटना के सम्पादकीय विभाग में हैं; प्रका० —विद्युत-संस्कार द्वारा खेती-बागवानी और प्राणियों का उपकार, उद्योग व्यवसाय में सफलता के

साधन; प० — लालकोठी, पो० दानापुर, पटना।

महेश्वर—(पृ०-१८५) प्रका०—चतुर्भुजी, प्रेमांजलि, भिखारी ठाकुर, तिरंगा-गीत संग्रह; अप्र०—साहित्य - विवेचना, महादेवी की चित्रकला व काव्य-कला, भारतीय शिक्षा गाथा; वि० — 'कनौजी बोली का उद्भव व विकास' पर खोज कर रहे हैं; प०—ग्राम और पोस्ट भरौला, आरा।

महेश्वरीप्रसाद—शि०—एम० ए०, हिन्दी और संस्कृत, पटना वि० वि०, स्वर्णपदक प्राप्त०; प्रका०—स्फुट उच्चकोटि के आलोचनात्मक लेख; 'सूफी काव्य' पर खोज कर रहे हैं; प०—हिंदी विभागाध्यक्ष टी० एन० जे० कालेज, भागलपुर।

मांगीलाल माथुर — शि०—बीकानेर; सा०—भूत० सम्पादक 'प्रभात', 'जनता'; सह० सम्पादक 'लोकमत'; वर्त० — 'वर्तमान' साप्ताहिक के आयोजन में व्यस्त; प०—संचालक, विज्ञापन कला अधिष्ठान, कोट गेट, बीकानेर।

मालती बाई दीडेकर— ज० १२ एप्रिल १६१२; प्रका०—स्फुट निबन्ध, शब्द चित्र, कहानियाँ; प०—बुधगाँव, सतारा।

माहेश्वरी सिंह 'महेश'—(पृ०-१८८) शि० — एम० ए०, हिंदी तथा मैथिली कलकत्ता वि० वि०, स्वर्णपदक प्राप्त; प्रका०—काव्य सुहाग, युगवाणी, अनलवीणा, गद्य०—स्वावलम्बन, सरल राजनीति विज्ञान, कहा०—चतुर्थी सप्तमी, अष्टमी, एकादशी, अमावस्या; वर्त०—इंगलैंड में पी-एच० डी० की तैयारी कर रहे हैं।

मुरलीधर नारायण —(पृ० १८६) शि०—एम० ए०; सा०—व्यवस्थापक परीक्षा केंद्र कुंतलपुर, हरनौत, किलाघर, पटना—हिन्दी देवघर विद्यापीठ; प्रका०—कल्पतरु, साहित्य-सचय, प०—व्यवस्थापक 'आलोक' द्वैमासिक, हंसडीहा बेसिक ट्रेनिंग स्कूल, दुमका (बिहार)।

मुरली मनोहर प्रसाद—ज० १६२५, आरा; शि०—बी० ए० आनर्स, १६४७, पटना कालेज; एम० ए०, १६४६; सा०-एकांकी रेडियो से प्रसारित होते हैं; प्रका०

—स्फुट गद्यगीत और एकांकी; प०—एच० डी० जैन कालेज, आरा।

मूलवर्धन राजवंशी — (पृ० १६१) **सा०**—संपादक 'विद्यार्थी'; **प्रका०**—अजंलि, समाज की वेदी पर-उप०; **प०**—परीक्षा मन्त्री, हिंदी विद्यापीठ, रतनगढ़।

मोहनलाल उपाध्याय 'निर्मोही' —(पृ० १६३) **सा०** — पुस्तकाध्यक्ष मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति इंदौर, 'सहयोग'-दैनिक के सहयोगी सम्पादक; **प्रका०**—सूर पदावली, व्रजमाधुरी सार, प्राचीन पद्य प्रभाकर की टीकाएँ, **प०**—प्रबन्धक मजदूरप्रेस, श्रमशिविर, इंदौर।

यज्ञदत्त शर्मा—ज०—दिसम्बर १६११; **सा०**—उपसम्पादक 'नवजीवन' दैनिक; भूत अध्यापक सुमेर हाई स्कूल जोधपुर; **प्रका०**—अनु०—मुद्रा विनिमय सास्वपद्धति २ भाग, आधुनिक सरकार; **प०**—नवजीवन कार्यालय, कैसरबाग, लखनऊ।

य० सोमेश्वर शर्मा— ज—४ अगस्त १६१७; शि०—म्यूनिसिपल हाई स्कूल विजयनगर; **सा०**—१० वर्ष तक स्कूल में हिंदी के अध्यापक; **प्रका०**—स्फुट; प०—सहा० अध्यापक श्री वेंक्टेश्वर ओरियंटल कालेज, तिरुवंति।

युगलसिंह ठाकुर — शि०—एम० ए०, बार-एट-ला, विद्यानिधि; **सा०** — उपसभापति एवं जन्मदाता श्री नागरी भंडार बीकानेर, संस्था० हिंदी प्रचारिणी सभा, आगरा; बीकानेर राज्य के शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष, कोटा हि० सा० स० के अधिवेशन में मनोविज्ञान पर भाषण; **प्रका०**—स्फुट; **वि०**— आपकी जनप्रिय कविता 'म्हारो देस', नाटकों, रेडियो द्वारा प्रचारित और रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा पुरस्कृत हुई, प०—खीची सदन, बीकानेर।

रणधीरसिंह— शि० — साहित्यालंकार; **प्रका०** —नाट०—झाँसी की रानी, सरदार भगतसिंह; **प०**—सम्पादक 'अभिनय' कार्यलय, ३५ बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।

रणवीरसिंह — **सा०**—**सह०** संपा० 'प्रभाकर'; **प्रका०**— स्फुट

कविताएँ और लेख ; प०—शीतलपुर, मुंगेर।

रतनकुमार जैन—(पृ० १६६) **शि०**—बी० ए०, नागपुर वि० वि० १६४६ ; **सा०** — संचालक हिंदी साहित्य समिति ; निःशुल्क रात्रि पाठशाला, सम्मेलन परीक्षाएँ; **प०**—प्राध्यापक शिवाजी विद्यालय, अमरावती।

रत्नलाल वैश्य—**शि०**—एम० ए० (संस्कृत और हिंदी) ; **सा०** —अध्यक्ष हिंदी परिषद् कालेज विभाग ; **प्रका०** — केशव काव्य-संपा० ; प० — अध्यक्ष हिंदी-विभाग, ए० के० कालेज, शिकोहाबाद।

रमेंद्र विक्रमसिंह राजकुमार—**शि०**—एम० एस-सी० ; **ज्ञा०** —अँग्रेजी संस्कृत का तुलनात्मक अध्ययन ; **प्रका०**—स्फुट ; **सा०** —संपा० 'कल की बात', त्रैमासिक 'योगिराज अरविंद अंक' ; **प०**—अठदमा, रुदौली, बस्ती।

रविशंकर विद्यालंकार—दक्षिण अफ्रीका के हिंदी प्रचारक ; गुरुकुल काँगड़ी के स्नातक, भारत समाज इंडियन स्कूल के कार्यकर्ता ; प० — पो० बा० ३६३, लोरेंसोमार्क्स, पुर्तगाली पूर्वी अफ्रीका।

रहसबिहारीलाल 'नवीन'—ज्योतिष विषय के लेखक; **ज०**—१८३६ ; **सा०**—ज्योतिष शास्त्र पर वैज्ञानिक ढंग से खोज कर रहे हैं ; **प्रका०** — नवीन ज्योतिष संहिता ; **अप्र०** — मंत्रानुभव, नवीन चिकित्सा ; **प०**—ज्योतिष रचयिता, आकाशदर्शी, अलीगढ़।

राजकुमार जैन — **प्रका०**—नागदेव कृत 'मदन पराजय' का अनु०; प०—अध्यापक, दिगम्बर जैन कालेज, बड़ौत।

राधाकृष्ण —(पृ० २०८), हास्य व्यंग्यपूर्ण कहानी लेखक ; **ज०**—१६१२ ; **वि०** — आपने घोष, बोस, बनर्जी, चटर्जी के नाम से कहानियाँ लिखी हैं ; **सा०**—'आदि वासी' के संपा० ; **प्रका०** —रामलीला, फुटपाथ, भारत छोड़ो।

राधाकृष्ण शास्त्री—मोम्बासा कीनिया प्रांत अफ्रीका के हिंदी प्रचारक ; हिंदी प्रचारिणी सभा पूर्वी अफ्रीका की ओर से आप

लंदनमें हिंदी प्रचार के केंद्र खोलने का प्रयत्न कर रहे हैं ; प०—पो० बा० १३१, मोम्बासा, कीनिया।

रानी टंडन—शि०—एम० ए०; प्रका—स्वास्थ्य और नारी जीवन विषयक कई पुस्तकें; वि०—आप राजर्षि श्री पुरुषोत्तम दास टंडन के सुपुत्र श्री संत प्रसाद टंडन की धर्मपत्नी हैं; प०—प्रयाग।

राधेश्याम — ज० — जूलाई १९२४ ; शि० — भिषगाचार्य ; प्रका०—स्फुट ; प० — संपादक 'साधना' मासिक, पहाड़गंज, नयी दिल्ली।

रामकटोरी द्विवेदी 'सुमन'—ज०—१२ जून १९०९ ; प्र०—बलिदान ; प्रका० — व्यायाम, शिक्षा कविता, डा० कोटनीश की अमर कहानी, समालोचना, बलिदान ; सा०— स्त्रियों में जागृति उत्पन्न करने में अग्रसर ; प०—'जीता संसार', लश्कर, ग्वालियर।

रामकृष्णदेव गर्ग — व्यंग्य प्रधान निबंध लेखक तथा कहानीकार ; शि०—एम० ए० ; प्रका० —स्फुट कहानियाँ; प०—वृन्दावन।

रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'—शि०—एम० ए०, सा० र०; सा० —भदावर विद्यामंदिर, बाह आगरा के प्रसिद्ध कार्यकर्ता ; प्रका०—विश्वज्योति बापू-प्रबंध० काव्य० ; वीरांगना ; वि० — लगभग ४० पुस्तकें लिखीं जो अप्रकाशित हैं ; प०—लोकसेवा - प्रकाशन- मंडल, बाह, आगरा।

रामचंद्र—शि० — बी० ए०- राजेंद्र कालेज छपरा १९४६, एम० ए० पटना कालेज १९४८ ; सा० —सद० आल इंडिया ओरियंटल कांफ्रेन्स, स्थानीय कालेज के स्टाफ़ कौंसिल के मंत्री ; प्रका० —स्फुट ; प०—अध्यापक हिंदी विभाग, पी० के० राय मेमोरियल कालेज, कतरासगढ़, मानभूम, बिहार।

रामचंद्र शर्मा–ज०—१८६५; शि०—सा० र०, सा० प्र० ; प्र० —हिंदी-कल्पलता ; सा०—प्र० मंत्री मुरादाबाद ना० प्र० सभा, संस्था० हिंदी साहित्य पाठशाला, प्रधान चंदौसी हि० सा० परिषद् ; प्रका०—वैदिक कर्म पद्धति, सुमन संचय, हिंदी साहित्य कोश, निबंध-

चंद्रिका ; वर्त०— प्रधानाध्यापक जूनियर हाई स्कूल, मरौली ; प० —रुस्तमी मोहल्ला, चंदौसी।

रामचंद्र शर्मा 'वीर'—ज०—१६०६ ; शि०—जयपुर, दिल्ली, बेगूसराय ; ज्ञा०—संस्कृत, उर्दू ; प्र०—वीरवाणी ; सा०—जयपुर में हिंदी को राज-भाषा बनाने के लिए आमरण अनशन, १६४२, सर मिर्जा इस्माइल के द्वारा निर्वासित होने पर १६४४ में ५४ दिन तक दिल्ली में अनशन ; पशुवध और गौ-हत्या के विरुद्ध काठियावाड़ में भीषण आन्दोलन; सागर, कानपुर, जबलपुर आदि में ६२ दिन तक अनशन, मंदिरों का जीर्णोद्धार और पुनरुद्धार ; धार्मिक वक्तृताएँ देकर प्रसिद्धि प्राप्त की ; संस्था० अखिल भारतीय आदर्श हिंदू संघ; प्रका०—वीर रामायण, विकट यात्रा, विजय पताका, स्वास्थ्य सम्पत्ति, विनाश के मार्ग, वीर गर्जना, अमर हुतात्मा ; प० —विराटनगर, वैराठ।

रामनाथ वेदालंकार — सा० — महाविद्यालय में कुल मंत्री, जयपुर राज्य में शिक्षण ; प्रका० — वैदिक वीर गर्जना, वदिक सूक्तियाँ ; प०—उपाध्याय, वैदिक साहित्य गुरुकुल महाविद्यालय, हरद्वार।

रामनारायण मिश्र—(पृ०, २२३); ज०—१८७६, दिल्ली ; शि०—बी० ए० १६६०; सा०—शिक्षा विभाग में १० वर्ष तक डिप्टी इंसपेक्टर, १० वर्ष तक हरिश्चंद हाई स्कूल, ३ वर्ष गवर्नमेंट हाई स्कूल, १४ वर्ष सेंट्रल हिंदू हाई स्कूल के प्रधान अध्यापक, भारत सरकार के डाइरेक्टर जेनरल के दफ्तर में शिक्षा संबंधी पंचवर्षीय रिपोर्ट तैयार की; १६२६ में जेनेवा में होने वाले विश्व शिक्षा-सम्मेलन में भाग लिया ; ६ वर्ष तक बनारस म्युनिसिपल बोर्ड के सरकारी मनोनीत सदस्य रहकर बोर्ड की शिक्षा-समिति के प्रधान रहे; उत्तरप्रदेशीय शिक्षा-पटल; पाठक्रम समिति, शिक्षा-विधान-संशोधन समिति के सद० रहे ; का० ना० प्र० सभा के संस्था०, आर्य भाषा पुस्तकालय के निरीक्षक और अर्धशताब्दी विभाग के अध्यक्ष।

रामायण शरण — ज० — अप्रैल १६०६; शि०—एम० ए०; बी० एल० पटना वि० वि०; प्रका० —कई पाठ्यग्रंथ; प०—हिंदी प्रोफेसर, सेंटजेवियर्स, गोलघर, पटना।

रामप्रताप गोंडल—शि०—एम० ए० ; सा०—दिल्ली से कई वर्ष पूर्व 'हिंदी पत्रिका' प्रकाशित की थी जिसमें विभिन्न भाषाओं के लेख रहते थे ; विद्यामंदिर लिमिटेड (दिल्ली) प्रकाशन-संस्था के संस्थापक और संचालक ; प्रका० —स्वाधीन भारत की प्रमुख समस्याएँ (दिल्ली में जब्त), विवाह और विच्छेद आदि कई पुस्तकें ; प० — विद्यामंदिर लिमिटेड, १६।१२ कनाट सरकस, नयी दिल्ली।

राम रघुवीरप्रसाद सिंह — ज०—१६२०; शि०—एम० ए०; प्रका०—स्फुट आलोचनात्मक लेख और गद्य-गीत ; प० — हिंदी अध्यापक, आर० डी० ऐंड डी० जे० कालेज, मुंगेर।

रामरतन सिकची—'युगजीवन' और 'अमरावती' के संपा०, झलक पुस्तकमाला के प्रकाशक ; प०— तुलसी-कुंज, छतरी तालाब मार्ग, अमरावती।

रामसिंह एम० ठाकुर—शि० —बी० काम०, ए० टी० सी०, भारत तथा कैम्ब्रिज वि० वि० ; सा०–प्रिंसिपल मारवाड़ी विद्यालय, कराची, प्रधान अध्यापक बी०एल० हाई स्कूल बगड़, जयपुर, स० अध्यापक परज स्कूल हिल्स रोड कैमरिज, प्रधानमंत्री बतसन राज, सदस्य कराची कारपोरेशन म्यु० बो० परीक्षा, सिंध सेकेंडी टीचर सभा, व्यवस्थापक हि० सा० स० परीक्षा केंद्र कराची ; प०— अध्यक्ष प्रकाशन विभाग, गुरुकुल विश्वविद्यालय, काँगड़ी।

रामसिंह चौधरी — सा०— एम० एल० सी० ; प्र०—१६०७; प्रका०—महर्षि जीवन, सुभाषित मंजूषा ; अप्र० — फारसी कवि-चर्चा, त्रिभाषिक कोश, सूक्ति कुसुमावली, इंगलिश सुभाषित ; प० —सुभाषित मंजूषा आफिस, पो० घाँडरा, काँगड़ा, पंजाब।

रामस्वरूप शास्त्री 'रसिकेश' —शि०—एम० ए०, एम० ओ०

एल०, अनेक हिंदी तथा संस्कृत की पाठ्यक्रमोपयोगी पुस्तकों के रचयिता ; प० — हिंदी विभाग, हंसराज कालेज, दिल्ली।

रामेश वेदी—आयुर्वेद और वनस्पति विषय के लेखक; ज०—१६१५, कालाबाग ; शि०—आयुर्वेदालंकार ; सा० —संस्था० और संचा० द्रव्य-गुण-ग्रंथमाला जिसमें लगभग ४०० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, तथा हिमालय हर्बल इंस्टीट्यूट गुरुकुल काँगड़ी, 'त्रिफला' नामक पुस्तक पर स्वर्ण पदक प्राप्त, १६४७ से 'गुरुकुल पत्रिका' के संपा०, १६५० से जनरल आव आयुर्वेद के सह० संपा०, ६ साल तक गुरुकुलीय वनस्पति वाटिका के अध्यक्ष ; प्रका०—त्रिफला, तुलसी, लहसुन - प्याज, सोंठ, देहाती इलाज, शहद, मिर्च, अंजीर, भारतीय साँप ; वि०—पर्यटन, फोटोग्राफी, तैरने तथा प्रकृति के प्रेमी ; प०—गुरुकुल काँगड़ी, हरद्वार।

रामेश्वरनाथ तिवारी—ज०—१६२५, तिवारीपुर,बक्सर; शि०—बी० ए० आनर्स, १६४७, प्रथम, प्रथम; एम० ए०, १६५०, पटना कालेज; सा०—सह० संपा० 'ज्योत्स्ना' पटना, सभा० हिंदी अध्ययन मंडल; प्रका०—कहा०—पद्य-पराग, संस्कृति की रेखाएँ, गजानन की कहानियाँ, मुहन काका की कहानियाँ; निब० सं० — बबूल गुलाब, खजूर के पेड़, उपासना के फूल; एकां० संग्रह—मधुपर्क; वि०—भोजपुरी लोक - संस्कृति पर अनुसंधान कर रहे हैं; साहित्य-कला पर भी लिख रहे हैं; प०—प्राध्यापक हिंदी विभाग, एच० डी० कालेज, आरा।

रेवती रंजन सिनहा —(पृ० १४३-४४) सा०—परिचालक हिंदी शिक्षा विभाग-आ० इं० रे० कलकत्ता, अध्यापक पश्चिमी बंग सरकार जनशिक्षा विभाग के हिंदी शिक्षा-केंद्र; प्रका०—हिंदी पाठमाला।

लक्ष्मीकांत पांडेय— शि०—एम० ए०, आगरा वि० वि०, १६५०; प्रका०—स्फुट; प०—प्रिंसिपल सुभाषचंद्र महाविद्यालय हायर सेकेंडरी स्कूल, करमा, इलाहाबाद।

लल्लन मिश्र — संपा० 'प्रेम
देश; प०—वृन्दावन।

वसन्तशंकर कानेटकर—ज०
३ मार्च १९२३; शि०—एम०
०; प्रका०—स्फुट निबंध तथा
विताएँ; प०—प्राध्यापक, हं०
० ठा० कालेज, नासिक।

वसुन्धरा बाई पटवर्द्धन, श्रीमती
—कहानी लेखिका; आपकी कहा-
याँ तथा एकांकी रेडियो से प्रसा-
त होते हैं; प०—पूना २।

वागीश्वर विद्यालंकार—सा०
कुल वि० वि० में संस्कृत और
दी के उपाध्यक्ष, कालिदास-
हित्य के मर्मज्ञ; प्रका०—अनु०
राजना, कुंदमाला; प०—गुरु-
ल काँगड़ी, हरद्वार।

वादिराज अच्युतराव—दक्षिण
रत के हिंदी प्रचारक; शि०—
द्वान, मद्रास वि० वि०; सा०
९३१ में गाँधी जी से प्रभावित हो
हिंदी प्रचार की ओर प्रेरित,
३८, कांचीपुरम्; ३९-४७ तक
जय नगरम्. ४७ से अनकापल्लि
हिंदी-प्रचार तथा अध्यापन;
स सरकार की हिंदी के प्रति
सीनता के विरुद्ध आंदोलन;
प०—अवैतनिक मन्त्री, दक्षिण
विशाख जिला हिंदी पंडित संघ,
दाबागार्डेन, विशाखपटनम।

वासुदेव नन्दन प्रसाद—शि०
एम० ए०; प्रका०—यशोधरा: एक
समीक्षा, सत्य-हरिश्चन्द्र की टीका,
पथिक: एक समीक्षा, हुंकार: एक
समीक्षा, राज्यश्री: एक समीक्षा,
कथानिका: एक समीक्षा, ऐतिहा-
सिक कहानियाँ, माध्यमिक हिंदी
रचना में 'गुंजन'; प० — हिंदी
अध्यापक, गया कालेज, गया।

विंदु, गोस्वामी—ज०—१८९३;
शि०—अयोध्या, बनारस, नैपाल;
वि०—विस्तृत भ्रमण, शांत रस
के कवि, धार्मिक तथा संन्यासी;
सा०— संस्था० भारतीय साहित्य
प्रकाशन तथा 'प्रेम-संदेश' मासिक;
प्रका०—नाट०—भयंकरभूत, मोहन-
मुरली, कीर्तन-मंजरी, राम-राज्य;
प०—वृंदावन।

विंध्याचलप्रसाद गुप्त—(पृ०—
२५८) प्रका०—भींगी आँखें; उप०,
शशिदान नाट०, हँसती आँखें,
वे भुलाये न गये, अमिट रेखाएँ
लहरों के बीच; अप्र०—चौराहा,
दूसरी पत्नी।

विकाशचन्द्र सिन्हा—शि०—एम० ए० (हिंदी) पटना वि० वि०; प्रका०—स्फुट; प०—टी० एन जे० कालेज, भागलपुर।

विद्यानंद, विदेह — वेद-साहित्य के ज्ञाता, दार्शनिक, संन्यासी और अनुवादक; ज०—१ अक्तूबर १६००; सा०—समस्त धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन; भ्रमण, 'वेद संस्थान', अजमेर के जन्मदाता, १६४७; प्रका०-स्फुट; वर्त०—ऋग्वेद का अनुवाद पूर्ण कर रहे हैं; प०-टप्पल, अलीगढ़।

विद्यानाथ मिश्र-ज०-१६२१; शि०—एम० ए० पटना वि० वि०, १६४५; सा०—साहित्य परिषद् रामकृष्ण कालेज मधुबनी और प्रतिभा-प्रतिष्ठान संस्था के संस्थापक;प्रका०—४० स्फुट लेख, पुस्तकें—हिदी के सोलह वर्ष, ध्रुवस्वामिनी, तत्व-मीमांसा; अप्र० बिहारी भाषाओं की हिंदी साहित्य के क्रमिक विकास में देन (पी-एच० डी० के लिए थीसिस का विषय); वि०—संत कवि मँगनीराम, एक अज्ञात कवि के साहित्य की खोज की; प०—रामकृष्ण कालेज, मधुबनी।

विनयमोहन शर्मा—(पृ०-२६१)प्रका०-दृष्टिकोण-आलो०, हिंदी गीत-गोविंद, दीर्घ जीवन और दीर्घ जीवन के अनुभव।

विनायक श्रावण चौधरी—दक्षिण भारत के हिंदी प्रचारक; ज०—३ फरवरी १६२५ साँगवी पूर्व खान देश; शि०—सा० वि०, इंटर; सा०—मंत्री रा० भा० प्र० मंडल साँगवी द्वारा हिंदी-प्रचार हिंदी संस्थाओं के सदस्य; प्रका०—मौलिक—हिंदी भाषा और लिपि, हिंदी काव्य-चर्चा और साहित्य, निबंध-चर्चा, राष्ट्रभाषा की महत्ता; संपा०—हिंदी संग्राह्य लेख, अनु०—अच्छे विचारों का संग्रह, ज्ञानकण, अमृत बोल; प०—राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडल, साँगवी, पूर्व खानदेश।

विनोबा भावे, आचार्य—महात्मा गाँधी के अनन्य भक्त, राष्ट्रीय तथा दार्शनिक विषय के लेखक, दक्षिण भारत में राष्ट्र-भाषा हिंदी के समर्थक; प्रका०—गीता प्रवचन, स्थितिप्रज्ञ, ईशोपनिषद्, शांति-यात्रा, इनके अति-

रिक्त मराठी में कई ग्रंथ लिखे ठि० प० श्री रामेश्वर गौशाला, धुलिया, पश्चिम खानदेश।

विश्वनाथ—ज०—२६ सितंबर १६१७; शि०—बी० ए०, बी० काम दिल्ली वि० वि०; सा०—१६३६ में दिल्ली प्रेस की स्थापना की; 'कारवाँ' (अँग्रेजी), 'सरिता', 'मानसरोवर' मासिक पत्रों के संपादक-संस्थापक हैं; प०—कनाट सरकस, दिल्ली।

विश्वनाथ बूबना—सा०—प्रधान संपादक और संचालक 'अभिनय'; प०—अभिनय कार्यालय, ३५ बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।

विश्व प्रकाश दीक्षित, 'बटुक'; —(पृ० २६६) सा०—सहा० संपा०—'अनुराग' मेरठ, 'अमर भारत' दिल्ली; प०—उपआचार्य शिमला हिंदी महाविद्यालय, शिमला।

विष्णु अंबालाल जोशी—ज०—८ जुलाई १६१४; शि०—एम० ए० हिंदी, काशी वि० वि०; सा०—अध्यापक डी० ए० वी० कालेज में ६ वर्ष, नारायण हाई स्कूल विजयनगर में ४ वर्ष; प्रका०—'वह' (कहा०); अप्र०—मजदूरिन; प०—अध्यक्ष हिंदी विभाग, राजकीय कालेज, अजमेर।

विष्णुप्रभाकर—(पृ० २६७) प्रका-ना०—आपेरणा, माँ का बेटा, स्वाधीनता का संग्राम, क्या वह दोषी था; उप०—जीवन, पराग, ढलती रात, संपा०—राम-नाम की महिमा, मेरे समकालीन, प्रतिनिधि कहानियाँ; वि०—आपकी रचनाओं के अनुवाद कई भारतीय भाषाओं में हो चुके हैं; हिंदुस्तान द्वारा कहानी प्रतियोगिता में ३५०) आपको मिले; प०—पो० बा० ११८७, १७२३ पीपल महल, दिल्ली।

वी० आर० कुंज कृष्णन् नेम्बियर—हिंदी प्रचारक और अध्यापक; शि०—बी० ए०, बी० ओ० एल०; सा०—दक्षिण भारत के अहिंदी क्षेत्रों में हिंदी प्रचार; प्रका०—स्फुट; प०—अध्यापक हिंदी विभाग विश्वविद्यालय, ट्रावनकोर।

वीरेन्द्र पांडेय—ज०—१६२५ लखनऊ; शि०—इंटर; सा०—

'हमारी बात'–साप्ता०, 'ज्योत्सना'–मासिक के संपादकीय विभाग में काम किया; प्रका० — चीनी फूलदान, मेंढकों की बस्ती, आर० एस० एस० क्यों, जनतंत्र खतरे में; वि०—इस समय साप्ताहिक 'उत्थान' के संपादकीय विभाग में हैं; प०—गनेशगंज, लखनऊ।

वीरेंद्र श्रीवास्तव—शि० —एम० ए० (हिंदी, संस्कृत), विद्या-वाचस्पति, सा० आ०, का० ती०; सा०—७ वर्ष तक गुरुकुल महा-विद्यालय वैद्यनाथ धाम में आचार्य; प्रका०—जैतवाद, स्फुट दार्शनिक लेख; वर्त०—'साहित्य में राधा का विकास' पर खोज, मुंडा तथा उड़िया भाषाओं का अध्ययन; प०—अध्यक्ष हिंदी विभाग, राँची कालेज, राँची।

वेदकुमारी — सा० — स्त्री सभाओं की संयोजिका; प्रका०—मधुर गीत; प० — ठि० रघुवर दयाल राममोहन, चँदौसी।

वैद्यनाथ पांडेय— शि०—एम० ए० (हिंदी-संस्कृत), सा० र०, डिप० एड० ; प्रका०—स्फुट साहित्यिक लेख ; प० — हिंदी विभाग, राँची कालेज, राँची।

व्यथित हृदय—ज०—१६०८; शि०—जगन्नाथपुर और बनारस स्टेट में ; प्र०—उत्सर्ग ; सा०—अनेक पत्र पत्रिकाओं के संपादकीय विभागों में काम किया ; 'तितली' और 'लोकवाणी' में कई महीने तक संपादक रहे ; कांग्रेसी कार्य-कर्ता ; प्रका०—बालोपयोगी और महिलोपयोगी अनेक पुस्तकों की रचना की जिनकी संख्या लगभग तीन दर्जन है; कई पुस्तकें विभिन्न परीक्षाओं के लिए स्वीकृत हैं ; प० —२३८ ए, कटरा, इलाहाबाद।

व्रजभूषण मिश्र—(पृ०८७३), प्राकृतिक चिकित्सा विषय के लेखक ; ज०—१६१२; शि०—एम०ए०, बी०टी०, १६३३; सा०—गाँधी जी की प्रेरणा से प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में आये, 'जीवन सखा' का संपा०, नैचरोपैथिक कालेज की स्थापना, बिलासपुर में भारतेंदु सा० स० तथा संस्कृत पाठ शाला की स्थापना, संपा० 'निर्भीक' १६४६ ; और 'भक्त भारत' वृंदा-वन ; प्रका० — सरल स्वास्थ्य, अपने डाक्टर बनो।

ब्रजभूषण सिंह 'आदर्श'— ज० — ५ जूलाई १६३१, भौली, उन्नाव ; शि० —इंटर ; प्र० — १६३६; सा०—भूत० संपा० 'बाल मित्र' जबलपुर, 'बाल-वाटिका', उदय हैदराबाद, 'पूजा' जबलपुर, 'बाल-संघ', करेली ; 'नवभारत टाइम्स' के प्रतिनिधि; प्रका०— बालनाद-(कवि०) ; अप्र०—गाँधी जी, सरदार पटेल, जवाहरलाल नेहरू, शिकार की कहानियाँ, उड़ते तिनके ; प०—२४७, सिविल लाइन, नागपुर।

शंकरदेव विद्यालंकार—(पृ० २७६) ; सा०—१६३६ में गुरुकुल के शिष्ट मंडल में अफ्रीका जाकर हिंदी-प्रचार का स्तुत्य कार्य किया; प्रि० वि०—चित्र-कला तथा निसर्ग विद्या ; प्रका० — अंतिम पाठ, धूमकेतु की कहानियाँ।

शंकरन, मेजर—सा०—हैद-राबाद-सेना में शिक्षाधिकारी, हिंदी के प्रेमी और भक्त ; प्रका०— स्फुट ; प०—हार्डीकरबाग, हैदरा-बाद (दक्षिण)।

शंकरराव देशपांडेय — स्थानीय-हिंदी प्रचार-सभा के अध्यक्ष, हिंदी माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था की, काँग्रेसी कार्यकर्ता, सत्याग्रह में आठ मास का कारावास ; प्रका० — स्फुट ; प० — हिंदी-प्रचार-सभा, हलीरवेंड, बीदर (दक्षिण)।

शत्रुशल्य राव — ज० — १८८६ ; प्रका०—स्फुट कविताएँ (ब्रजभाषा में); वि०—इतिहास के ज्ञाता हैं; प०—बूँदी, राजस्थान।

शांति पांडेय, श्रीमती—शि० —शास्त्री, काव्यतीर्थ ; प्रका०— स्फुट कविताएँ;प०—गुणराजसिंह भवन, सलेमपुर, छपरा।

शिवकुमार आर्य — शि०— हिंदी भूषण ; सा० — हिंदी के अनन्य, भक्त और उत्साही प्रचारक पैदल घूम घूम कर हिंदी-प्रचार किया ; सत्याग्रह आंदोलनों में जेल यात्रा ; प्रका०—स्फुट ; प०— हिंदी-प्रचार-सभा, गुलबर्गा (दक्षिण)।

शिवनारायणलाल बोहरा, डाक्टर ; शि०—एम० ए०, प्रभा-कर, पी-एच० डी० (हिंदी) ; प्रका०—स्फुट ; प० — अध्यक्ष

हिंदी विभाग, राजकीय हिंदी कालेज, रोपड़, अम्बाला।

शिवबालक राय — ज० — १६१४, रन्तूचक भागलपुर; शि० बी० ए०, टी० एल० जे० कालेज, भागलपुर, एम० ए०, पटना कालेज; सा० — सदल साहित्य परिषद के संस्थापक, उपाध्यक्ष, हि० सा० स० स्वागत समिति; विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिलाने के लिए १००) प्रतिवर्ष के एक पुरस्कार की आयोजना; प्रका०—स्फुट; अप्र० — 'दिनकर' तथा 'महाकाव्य' पर आलोचनात्मक ग्रंथ; प० — अध्यक्ष हिंदी विभाग एच० डी० जैन कालेज, आरा।

शिवसिंह 'सरोज'—प्रका०—रोली—कविता०, आनन्दभवन, लाल किले से; वि०—आपने कई पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया है; प०—लखनऊ।

शिशुपाल सिंह 'शिशु' — प्रका०—परीक्षा, हल्दीघाटी की एक रात, पूर्णिमा, अपने पथ पर, नदी किनारे, छोड़ो हिंदुस्तान, दो चित्र; अप्र० — पद्मिनी, तीन आहुतियाँ, मुंज और भोज, वीरजा; प०—ऊदी, इटावा।

श्यामवदन प्रसाद सिंह — शि० — एम० ए०; प्रका०—गुप्त जी की कृतियाँ; प०—प्राध्यापक, हिंदी विभाग, गया कालेज, गया।

श्यामदेवनारायण सिंह—शि० —बी० ए०; सा०—मंत्री, हिंदी साहित्य परिषद मुंगेर; वर्त०—सब डिपुटी इंस्पेक्टर आव स्कूल्स; प०—माधोपुर, मुंगेर।

श्याम सलिल—सा०—संपा० 'हिंदू पंच', 'प्रभाकर'; प्रका०—स्फुट; प०—नंदकुटीर, मुंगेर।

श्रीचंद जैन—शि० — एम० ए०, नागपुर वि० वि० १६२७; प्रका०—स्फुट; सा० — सदस्य स्थानीय हिंदी परिषद; प० — प्राध्यापक, हिंदी विभाग, दरबार कालेज, रीवाँ।

श्रीराम बोहरा—(पृ० ३०४) 'कला' से अलग होकर 'रंगशाला' मासिक बम्बई के संपादक हो गये हैं; प्रका०— अभिनय-कला।

श्रीराम शर्मा — प्रका० — ललकार, दक्षिण की ऐतिहासिक कहानियाँ; प०—प्रधान मंत्री,

हैदराबाद राज्य हिंदी-प्रचार-सभा, हैदराबाद।

श्रीराम शर्मा आचार्य—आध्यात्मिक विषयों के लेखक; प्रका०—अब तक जन-हित सम्बन्धी साहित्य की ७० पुस्तकें लिख चुके हैं; मैं क्या हूँ, मानवीय विद्युत के चमत्कार, मरने के बाद हमारा क्या होता है, ईश्वर मौन है? कहाँ है? कैसा है?, क्या धर्म, क्या अधर्म? जीवन की गुत्थियों पर तात्विक प्रकाश, अध्यात्म धर्म, धर्म का अवलम्बन, आकृति देख कर मनुष्य की पहचान, हस्तरेखा विज्ञान, गृहस्थ योग, बिना औषधि के कायाकल्प, स्वस्थ और सुन्दर बनने की विद्या, सूर्य- चिकित्सा-विज्ञान, तुलसी के अमृतोपम गुण, भोग में योग, वशीकरण की सूची सिद्धि, जीवजंतु की बोली समझना, आगे बढ़ने की तैयारी, परकाया प्रवेश, हमें स्वप्न क्यों दीखते हैं, सफलता के तीन साधन, सुखी वृद्धावस्था, विचार संचालन विद्या आदि; प०—संपादक, 'अखण्ड ज्योति,' मथुरा।

सन्त गोकुलचन्द—ज०—पेशावर; शि०—पेशावर, बनारस, लाहौर; सा०—२४ वर्ष तक डी० ए० वी० हाई स्कूल में संस्कृत के मुख्य अध्यापक; ३० तक पंजाब वि० वि० की ओरियंटल फैकल्टी के और १० वर्ष तक हिंदी-संस्कृत बोर्ड के सदस्य; प्रका०—पाठ्योपयोगी—हिंदी पुष्पमाला-४ भाग; बाल सखा-४भाग, मेरी सहेली, ७ भाग,पुष्पवाटिका-४भाग, लड़कियों की पुस्तकें-४भाग, बच्चों का स्टेज ४ भाग, सचित्र बालरामायण, सचित्र बालभारत, आदर्श निबंध माला, आदर्श हिंदी व्याकरण, आदर्श चरितावली; नाटक०—सारथी से महारथी, देशद्रोपी, चंड प्रतिज्ञा, मीरा, हिरौल; वि०—पुस्तकें उच्च कक्षाओं के लिए स्वीकृत हैं; प०—संचालक ओरियंटल बुकडिपो, ४६४१, डिप्टीगंज, सदर बाजार, दिल्ली।

संसारचन्द्र—शि०—एम० ए०; प्रका०—हिंदी गद्य-प्रसार, छन्दोऽलंकार मंजरी, मनोहर हिंदी व्याकरण तथा रचना, काव्य लहरी, स्वप्नवासवदत्ता - अनु०; वि०—सभी पुस्तकें पाठ्यक्रम में सम्मि-

लित हैं; पा०—प्राध्यापक, सनातन धर्म कालेज, अम्बाला कैंट।

सत्यदेव चौधरी — शि०—एम० ए०, शास्त्री, प्रभाकर; प्रका० स्फुट; वर्त०—रिसर्च स्कालर; प०—हिंदी विभाग, हंसराज कालेज, दिल्ली।

सत्यप्रसाद रतूड़ी—सामयिक विषयोंके लेखक, साप्ताहिक 'हिमाचल' के सम्पादक; प्रका०—स्फुट; प० — साप्ताहिक 'हिमाचल'-कार्यालय, मसूरी।

सत्यार्थी, देवेंद्र—प्रका०—बेला फूले आधी रात, चट्टान से पूछ लो, क्या गोरी क्या सांवरी आदि ग्राम गीतों के कई सुंदर संग्रह; वि०-इस वर्ष कोटा में हुए अ० भा० हिं० सा० सम्मेलन में कवि-सम्मेलन का सभापतित्व किया; प०—दिल्ली।

सदानन्द मिश्र—ज०-१९२६; शि०—सा० र०; प्रका०—स्फुट; प०—लेखक, साहित्य-विभाग, हिंदी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सीताराम 'प्रभास' —ज०—१९१७, सगुना दानापुर; शि०—बी० ए० आनर्स, प्रथम श्रेणी, १९४१, पटना कालेज, एम० ए० पटना वि० वि०, १९४७; सा०—सभापति, सदल साहित्य परिषद एच० डी० जैन कालेज, आरा; प्रका०—खून के आँसू - उप०; बल्लरी, कवि० सं०; प०—अध्यापक एच० डी० जैन कालेज, आरा।

सुखदेव—शि०—दर्शन वाचस्पति, प्रका०—स्फुट लेख; प० — गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार।

सुमन्तराय— दक्षिण अफ्रीका के हिंदी-प्रचारक, गुरुकुल काँगड़ी के स्नातक, प्रचार क्षेत्र—लोरेन्सो-मार्क्स; प०—पो० बा० ३९३; लोरेंसोमार्क्स।

सुखसंपतिराय भंडारी—महाराजा इन्दौर से ५०००) की सहायता प्राप्त की, भारतीय राज्यों का हिंदी इतिहास और बीसवीं शताब्दी तथा हिंदी अँगरेजी कोश प्रकाशित किया ; प०— डिक्शनरी पबलिशिंग हाउस, ब्रह्मपुरी, अजमेर।

सोमदेव शर्मा—शि०—हिंदू वि० वि० बनारस; प्र० — १८ जनवरी १९२६; वर्त०—आयुर्वेद

के साहित्य, वैदिक संस्कृति तथा साहित्य का अन्वेषण; प०— प्राध्यापक फार्मेकालेजी विभाग, मेडिकल कालेज, लखनऊ।

सोमनाथ भट्ट — प्रका०— पत्र पत्रिकाओं में स्फुट लेख; प०— प्राध्यापक, सनातनधर्म कालेज, अम्बाला कैंट।

स्वरूप नारायण पुरोहित— शि०—एम ए०, एल-एल० बी०; प्रका०—मोपाँसा की कहानियों के अनुवाद; प० — सीकर, राजपूताना।

स्वामीनाथ पांडेय—सा०— साहित्य-साकेत नामक संग्रहालय की स्थापना; प्रका०—खंड काव्य-विश्वकम्पन, ज्ञानोदय; अप्र०— प्राची, अंतराल, मधुबेला; प०— साहित्य - साकेत, हरिहरपुर, जौनपुर।

हनुमच्छास्त्री, 'अयाचित'— दक्षिण भारत के हिंदी - प्रचारक तथा लेखक; ज०—१८ मार्च १६१६; शि०—एम० ए०, बी० ओ० एल०, मद्रास वि० वि०, ४३ में बी० ए० १६४७, आंध्र वि० वि०; ज्ञा०—तेलुगु, संस्कृत-अँग्रेजी; सा०—हिंदी पंडित विजयवाडा म्यूनिसिपल हाई स्कूल; १६४४ में आंध्र वि० वि० में बी० काम० के विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ाने के लिए नियुक्त; स्थानीय साहित्यिक संस्थाओं से घनिष्ठ संबंध है; आजकल तेलुगु और हिंदी साहित्य का तुलनात्मक अध्यापन कर रहे हैं; प्रका०— स्फुट आलोचनात्मक साहित्यिक लेख; प०–अध्यक्ष हिंदी विभाग, श्री वेंकटेश्वर प्राच्य कलाशाला, तिरुपत्ति।

हरदेव बाहरी—ज०–१६०७; शि०—एम० ए०, पी-एच० डी० डी० लिट्०; सा० — संपादक मासिक 'सिनेमा'; प्रका०—हिंदी काव्यशैली का विकास; प०— ८ बी, एलगिन रोड, इलाहाबाद।

हरिदत्त— शि० —वेदालंकार, स्नातक परीक्षा में सर्वप्रथम होने से नत्थूमल स्वर्णपदक, रुक्मिणी बाई मेधापदक, स्वर्णपदक, मूलचंद किशोरी देवी पदक, श्रद्धानंद पदक आदि प्राप्त किये; सा०— १६४०-४६ तक तुलनात्मक धर्म विज्ञान के आचार्य; प्रका०—हिंदू

विवाह और परिवार पर मौलिक ग्रंथ, बंगाल हिंदी मंडल द्वारा पुरस्कृत; प०—गुरुकुल काँगड़ी, हरद्वार।

हरिश्चंद्र आर्य—दक्षिण अफ्रीका के उत्साही हिंदी प्रचारक; **शि०**—गुरुकुल काँगड़ी; **सा०**—आपका कार्य-क्षेत्र जोहान्सबर्ग नगर है; प०-पोस्ट बक्स ३६४, लोरेंसोमार्क्स।

हरिश्चंद्र सिंह, ठाकुर 'संत'—भारतीय संस्कृति से संबंधित विषयों के लेखक; हरद्वार से प्रकाशित साप्ता०'हिंदू' के लगभग १६ वर्षों से संपादक; प्रका०—स्फुट; प०-साप्ताहिक 'हिंदू' - कार्यालय, हरद्वार।

हरिहर प्रसाद 'रसिक'—ज०—६ मार्च १८६२; **शि०**—बी० ए०,सी० टी० ; **सा०**—सभापति आर्यसमाज बेतिया, मंत्री चम्पारन जिला हि० सा० स०, संपा० 'प्रकाश' मासिक ; **प्रका०**—गद्य-विनोद, प्रेम-प्रवाह, रसिक - कवितावली, श्रद्धांजलि, अन्तर्ज्वाला, अभ्यर्थना, बेखटक बेतियावी; **वर्त०**—अध्यापक, विपिन विद्यालय, बेतिया; **प०** — ग्राम हरपुर नाग, पो० महेसी, चम्पारन।

हरीकृष्ण खरे— वाणिज्य विषय के लेखक; **शि०**-बी० काम० १६४४, एम० ए० १६४६ प्रयाग वि० वि०; **सा०**—उच्च कक्षाओं में हिंदी माध्यम द्वारा शिक्षादान, वर्धा में ३ वर्ष शिक्षक; **प्र०**—स्फुट; **प०**—अध्यक्ष वाणिज्य विभाग, शिवाजी विद्यालय, अमरावती।

हीरालाल जैन—ज०—१६१८; **शि०**—बी० ए० आनर्स कलकत्ता वि० वि०; **सा०**—३५-३७ विश्व-भारती शांति निकेतन में अध्यापन, ४२-४७ तक राजनीति में भाग, सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता; **प०**—संपा० 'जयहिंद' साप्ताहिक, कोटा।

(ख) अवशिष्ट संस्थाओं के परिचय

आर्य पुस्तकालय (श्री उदयसिंह), सूवा, फीजी—हिंदी के पाठक तैयार करना उद्देश्य है, पुस्तकों की संख्या थोड़ी ही है, पर प्रचार-क्षेत्र विस्तृत है।

ए० के० कालेज, शिकोहाबाद, मैनपुरी—१६४७ में बी० ए० कक्षा खुली; बी० ए० में ४० विद्यार्थी हैं; हिंदी-परिषद साहित्यिक आयोजन करती है ; श्री सरदारसिंह सहायक और श्री रतलाल वैश्य प्रधान हैं।

एस० एम० कालेज, चंदौसी—श्री गौरीशंकर 'शील' एम० ए० विभाग के अध्यक्ष हैं और श्री जी० एल० भट्ट एम० ए० प्राध्यापक; विद्यालय की हिंदी-प्रचारिणी-सभा ३५ वर्ष पुरानी है जिसका निजी पुस्तकालय है; 'उषा' नामक वार्षिक पत्रिका प्रकाशित होती है।

गणेशदत्त कालेज, बेगूसराय मुंगेर—हिंदी आनर्स तक पढ़ाई होती है; भूतपूर्व प्राध्यापकों में श्री वेणीमाधव मिश्र और श्री रामसंजीवनसिंह का नाम विशेष उल्लेखनीय है; अब श्री रामेश्वर मिश्र हिंदी विभाग के अध्यक्ष हैं; इस की हिंदी साहित्य-परिषद को स्थानीय साहित्यिकों और जनता का पूर्ण सहयोग प्राप्त है।

गणेश पुस्तकालय, चौक, लखनऊ—१५ अगस्त १६४५ को श्री ज्ञानकृष्ण अग्रवाल द्वारा स्थापित; चुनी हुई साहित्यिक पुस्तकों का ही संग्रह है।

गया कालेज, गया—१६४४ में हिंदी परिषद की स्थापना की गयी; इसके अंतर्गत एक नाट्य-परिषद है; सर्वश्री शिवनन्दन प्रसाद, जगदीशनारायण दीक्षित आदि प्राध्यापक हैं।

डी० जे० कालेज, मुंगेर—बी० ए० आनर्स तक हिन्दी की पढ़ाई की व्यवस्था १६४६ से है; साहित्यिक उत्सव और आयोजन हिंदी-साहित्य-परिषद द्वारा होते हैं; श्री शशिधर वाजपेयी ने परिषद को 'दिनकर वैजयंती' प्रदान की है जो विभिन्न कालेजों के छात्रों की काव्य-प्रतियोगिता के विजेता को प्रदान की जाती है; द्वितीय

वर्ष में प्रथम आने वाले छात्र को 'लायल' रजतपदक प्रदान किया जाता है; सर्वश्री रामेश्वर प्रसाद सिंह, कपिलनारायण सिंह, महेश्वरनाथ, रामरघुवीर प्रसाद सिंह, गिरिजानाथ झा प्राध्यापक हैं।

तेजनारायण जुबिली कालेज, भागलपुर—हिंदी विद्यार्थियों की संख्या लगभग ६०० है; प्रति वर्ष साहित्यिक समारोह होता है; एक व्याख्यानमाला का भी आयोजन है; प्रो० श्री महेश्वरीप्रसाद एम० ए० अध्यक्ष हैं।

पंजाब यूनिवर्सिटी कालेज, रीडिंग रोड, नयी दिल्ली—बी० ए० तक हिंदी पढ़ाई जाती है; हिंदी परिषद साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करती है; कालेज-पत्रिका के हिन्दी-विभाग का नाम 'सांध्य तारक' है; श्री धर्मचन्द संत बी० ए० आनर्स, एम० ए० अध्यक्ष हैं।

प्रगतिशील-साहित्य-गोष्ठी, हंसापुरी, नागपुर—१९४७ में स्थापित; २०० सदस्य हैं; कई स्थानों में शाखाएँ हैं।

भारतीय-हिंदी-परिषद्, प्रयाग—यह संस्था पिछले नौ वर्षों से भाषा और साहित्य के क्षेत्र में कार्य कर रही है; सदस्यता विशेष रूप से देशीय विश्वविद्यालयों के हिंदी अध्यापकों तक सीमित है; प्रमुख योजना वैज्ञानिक अँगरेजी-हिंदी-कोश का प्रकाशन है जिसके दो खंड प्रकाशित हो चुके हैं और शेष दो शीघ्र प्रकाशित होंगे; दूसरी उल्लेखनीय योजना हिंदी साहित्य के एक बृहत् इतिहास का प्रकाशन है जो विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा लिखा जा रहा है, विश्वविद्यालयों में हिंदी-माध्यम के लिए यह संस्था आरम्भ से ही प्रयत्नशील रही है; इसकी मुख पत्रिका 'हिंदी अनुशीलन' है; संस्था का कार्यालय प्रयाग विश्व-विद्यालय, हिंदी-विभाग है।

मध्यहिंद विश्वविद्यालय, भूपाल—नवस्थापित संस्था; अनेक परीक्षाओं की योजना है; साँची विद्यापीठ और विद्यानगर स्थापन की भी योजना है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली—नवीं, दसवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं की पढ़ाई होती है;

इसका कोर्स बनाने वाली समिति में पाँच सदस्य हैं ; बोर्ड के अधीन स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई के दो रूप हैं — नवीं से ग्यारहवीं कक्षा तक तीन वर्षों में भाषा का ७५ अंक का एक पत्र अनिवार्य है ; हिंदी एक वैकल्पिक विषय के रूप में भी रखी गयी है ; किन्तु साइंस के विद्यार्थी यह वैकल्पिक हिंदी नहीं ले सकते ।

पहली से आठवीं कक्षाओं तक के लिए एक अलग बोर्ड है जो समयानुसार कुछ व्यक्तियों की एक समिति बनाकर विभिन्न विषयों का पाठ-क्रम निर्धारित कर लेता है ।

राजकीय कालेज, रोपड़, अंबाला—१६४५ से बी० ए० में हिंदी ऐच्छिक विषय है, अक्टूबर १६५१ से एम० ए० कक्षाएँ आरंभ करने की स्वीकृति मिल गयी है ; सर्वश्री चौधरी जगदेवसिंह एम० ए०, प्रभाकर, ज्ञानी ; डा० शिवनारायण बोहरा एम० ए०, प्रभाकर, पी-एच० डी० संस्कृत-हिंदी-विभाग के अध्यापक हैं ।

राजेंद्र पुस्तकालय, रतनपुर, —स्था० — १६१६ ; कार्य०— परीक्षा के लिए दीन विद्यार्थियों की सहायता की जाती है, अपना भवन बनाने के लिए जमीन प्राप्त हो गयी है, भवन बन रहा हैं ; पुस्तकालय में ३० पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं ।

रामकृष्ण कालेज, मधुबनी, दरभंगा — बी० ए० तक हिंदी पढ़ाई जाती है ; हिंदी साहित्य परिषद साहित्यिक आयोजन करती है ; श्री विद्यानाथ अध्यक्ष हैं ।

रामदयालु सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर—जूलाई १६४८ में हिंदी-विभाग खुला ; अब इंटर और बी० ए० में हिन्दी है; श्री जगन्नाथ पांडेय और श्री प्रेमनारायण प्राध्यापक हैं ; इसकी साहित्य-परिषद 'भारतेंदु साहित्य-मंडल' के नाम से है ; बी० ए० आनर्स की शिक्षा का भी बीजारोपण हुआ है ।

विश्वविद्यालय, अलीगढ़— में हिन्दी की पढ़ाई १६३२ से प्रारंभ हुई ; उर्दू के साथ एफ० ए० और एम० ए० के परीक्षार्थियों को हिन्दी पढ़ाई जाती है ।

विश्वविद्यालय, आंध्र, वालटेयर–बी०एस-सी०, बी० काम और आनर्स में हिन्दी पढ़ाई जाती है; प्रथम में हिंदी विषय ऐच्छिक और अंतिम दो में अनिवार्य है; 'डिप्लोमा कोर्स इन हिन्दी' अगले वर्ष से आरंभ करने की योजना है; श्री० सुंदर रेड्डी, बी० ए० सा० रत्न हिंदी अध्यापक हैं।

विश्वविद्यालय, काशी—यहाँ का हिंदी विभाग आरम्भ से ही प्रतिष्ठित साहित्यिकों के सहयोग के कारण विशेष प्रसिद्ध रहा है; विभाग के स्वर्गीय अध्यापकों में डाक्टर श्यामसुन्दरदास और पं० रामचंद्र शुक्ल हिंदी के प्रथम श्रेणी के आलोचक थे; हिंदी जगत को हिंदी का प्रथम डाक्टर (डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल) प्रदान करने का श्रेय भी इसी विश्वविद्यालय को प्राप्त है; वर्तमान अध्यापकों के नाम ये हैं—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी डी० लिट०; डाक्टर जगन्नाथप्रसाद शर्मा एम० ए०, डी० लिट०; श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र एम० ए०; श्री पद्मनारायण आचार्य एम०ए०; डाक्टर छैलबिहारी एम० ए०, पी-एच० डी०; डाक्टर श्री कृष्णलाल एम० ए०, पी-एच० डी०।

विश्वविद्यालय नागपुर—(पृ० ३८३) इसके अंतर्गत जो कालेज हैं उनमें से तीन में उच्च कक्षाओं में हिंदी पढ़ाई जाती है; बी० ए० की पढ़ाई तीनों की स्वतंत्र है, एम० ए० में सबकी पढ़ाई सम्मिलित रूप से होती है; इन कालेजों में ३ अध्यापक और २ अध्यापिकाएँ हिंदी विभाग में हैं; साहित्यिक कार्यक्रम और योजनाओं के लिए विश्वविद्यालय में हिंदी-साहित्य-समिति स्थापित है; हिंदी लेकर एम० ए० में प्रथम उत्तीर्ण होने वाले छात्र को कोरिया दरबार की ओर से एक स्वर्णपदक प्रदान किया जाता है।

विश्वविद्यालय पटना—में अब से बीस-बाइस वर्ष पूर्व हिंदी की शिक्षा केवल रचना रूप में दी जाती थी; धीरे-धीरे पूर्ण रूप से हिंदी-शिक्षा दी जाने लगी; १९३६ में बी० ए० तक हिंदी-शिक्षा का प्रबन्ध हुआ; तत्पश्चात् पटना कालेज में एम० ए० में

भी हिंदी की पढ़ाई होने लगी; इस समय हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. श्रीधर्मेन्द्र ब्रह्मचारी, प्रो० श्रीविश्वनाथप्रसाद, प्रो० जगन्नाथराय शर्मा आदि विद्वान हैं; अन्य प्राध्यापक भी हिंदी की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए प्रयत्नशील हैं।

विश्वविद्यालय, प्रयाग — १८८७ में इसकी स्थापना हुई; १९२२ में पुनः संगठन हुआ और शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी। हिंदी-विभाग की स्थापना १९२४ में हुई; आरम्भ में पाँच विद्यार्थी थे जिन्हें पढ़ाने को एक अध्यापक पर्याप्त था। पश्चात्, विद्यार्थियों की संख्या बढ़ते-बढ़ते अब एक सहस्र के लगभग हो गयी है और फ्रांस, बेलजियम आदि विदेशों से भी विद्यार्थी यहाँ हिंदी पढ़ने आया करते हैं। अध्यापकों की संख्या इस समय बारह है। इसके अंतर्गत आज चार संस्थाएँ कार्य कर रही हैं—**(क) भारतीय हिंदी परिषद**—यह संस्था १९४१ में आरंभ हुई इसका स्वतंत्र परिचय पृ० ५७५ पर छपा है। **(ख) हिंदी परिषद**—इसकी स्थापना हिंदी विभाग की स्थापना के पूर्व ही सन् १९२२ में हुई। इसके तत्वावधान में प्रतिवर्ष साहित्यिक समारोह होते रहे हैं; इसके गल्प - सम्मेलनों में पुरस्कृत संकलन 'गल्प - माला' के नाम से छप चुका है; इसके अधिवेशनों में पढ़े गये निबंध 'परिषद्-निबंधावली' — २ भाग में संकलित हैं; परिषद की मुखपत्रिका 'कौमुदी' १९३५ से प्रतिवर्ष प्रकाशित हो रही है। इसके प्रकाशन - विभाग द्वारा ६ अनुसंधानपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। **(ग) हिंदी-समिति**—१९३६ में इसकी स्थापना हुई; इसमें अध्यापकों तथा विद्यार्थियों द्वारा प्रति मास निबंध-पाठ की योजना होती है। **(घ) अध्यापक समिति**—विश्वविद्यालय के हिंदी-अध्यापकों की यह समिति है जिसकी बैठक प्रति सप्ताह होती है जिसमें भाषा, लिपि और वर्त्तनी के संबंध में विचार-विनिमय होता रहा है। यह विभाग अब स्वतंत्र हिन्दी भवन बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यापकों के नाम हैं

सर्वश्री डाक्टर धीरेंद्र वर्मा एम० ए०, डी० लिट् (यूनीवर्सिटी प्रोफेसर); डाक्टर रामकुमार वर्मा एम० ए०, पी-एच० डी० (रीडर); डाक्टर माताप्रसाद गुप्त एम० ए०, डी० लिट्० (रीडर); डाक्टर रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' एम० ए०, डी० लिट्; डाक्टर उदयनारायण तिवारी एम० ए० (हिंदी और पाली), डी० लिट्०; डाक्टर लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय एम० ए०, डी० फिल० डी० लिट्०; श्री उमाशंकर शुक्ल एम० ए०, डाक्टर ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० फिल०; डाक्टर हरदेवबाहरी एम० ए०, डी० लिट्०; डाक्टर रघुवंश एम० ए०, पी-एच० डी०; श्रीयुत तोमर।

इस विद्यालय के महिलाविभाग की अध्यक्षा हैं श्रीमती चंद्रावती त्रिपाठी एम०ए०; सहायक हैं डाक्टर शैलकुमारी माथुर एम० ए०, डी० फिल०; एक अन्य अध्यापक हैं पंडित देवीदत्त शुक्ल।

विश्वविद्यालय, मद्रास में हिंदी मराठी, उड़िया, बंगाली, आसामी, वर्मी, और सिंहली आदि भाषाओं के लिए एक संयुक्त बोर्ड है; हिंदी प्रधान है, बाकी भाषाएँ साथ कर दी गयी हैं; यही बोर्ड विश्वविद्यालय को परीक्षा, पाठ-क्रम, पाठ-पुस्तकें परीक्षक-नियुक्ति आदि के लिए सिफारिश करता है; इनका अंतिम निर्णय सिनेट करती है; विश्वविद्यालय-पुस्तकालय के लिए 'विद्वान समिति' में हिंदी का एक सदस्य रहता है; विश्वविद्यालय की ओर से ये परीक्षाएँ हिंदीमें चलायी जाती हैं—**मैट्रीकुलेशन** — हिन्दी दूसरी भाषा है; **इंटरमीडिएट**—वर्ग में हिंदी दूसरी भाषा और तीसरे वर्ग में तीसरी भाषा है; **बी० ए०**—दूसरे वर्गमें हिंदी दूसरी भाषा है और तीसरे में ऐच्छिक विषय; **बी० एस-सी०**—प्रथम वर्गमें हिंदी ऐच्छिक विषय है; **एम० ए०**—और साहित्य **'विद्वान'** उपाधि परीक्षा में हिंदी प्रधान भाषा है; 'विद्वान' परीक्षा 'साहित्य रत्न' के समकक्ष है।

स्कूलों में पाठ-पुस्तकें निर्धारित करने के लिए चालीस सदस्यों की 'मद्रास टेक्स्ट बुक्स कमेटी' नामक एक बड़ी समिति है जिसमें दो

र्थियों द्वारा साहित्य - प
स्थापना हुई है ; साहित्यि
रोह होते हैं ; श्री शिवब
अध्यक्ष और श्री सीताराम
सभापति हैं ।

हरिवंश श्रीलादर्श पुस्
करंजही, मलाव, गोरखपु
रामसूरत शुक्ल 'शील' द्वा
१६३६ में स्थापित ; उत्तर
शिक्षा-प्रसार-समिति द्वार
१२०० पुस्तकें हैं; परीक्ष
केंद्र है

हिन्दी-भाषा - प्रचार —
(श्रीलंका), ३५ अलवि
देमटगोड, कोलंबो ६,
भारतके सुदूरदक्षिण में स्थि
प्रदेश में हिंदी का प्रच
करने वाली एकमात्र संस्था
प्रधान कार्यकर्ता और प्रध
हैं श्री रत्नसार; इस स
प्रयत्न से केलनिय विद्यालंक
विद्यालय, कोलंबो के श्री
विद्यालय, देमटगोड के ध
विद्यालय आदि में हिंदी क
का आरम्भ हो गया है;
युवक और युवतियाँ अब
भारतीय हिंदी प्रचार-सभा

)

और बी० एस-सी० में अनिवार्य थी; कुछ समय बाद अनिवार्य रूप बंद करके बी० ए० में स्वतंत्र विषय बना दिया गया; पंडित बद्रीनाथभट्ट १६३० तक अध्यापक रहे ; इनके पश्चात् डाक्टर दीनदयालु गुप्त नियुक्त हुए; स्वर्गीय अध्यापकों में काशी विश्व-विद्यालय के स्नातक डाक्टर पीतांबर दत्त बड़थ्वाल एम०ए०, डी० लिट् और प्रयाग विश्वविद्या-लय के स्नातक डाक्टर जानकीनाथ सिंह एम० ए०, डी० लिट् थे ; १९४७ तक हिंदी और संस्कृत विभाग का अध्यक्ष एक ही रहता था; इसके बाद हिंदी विभाग स्वतंत्र हो गया और उसके अध्यक्ष की स्वतंत्र नियुक्ति हुई; वर्तमान अध्यापकों के नाम ये हैं—डाक्टर दीनदयालु गुप्त एम०ए० डी० लिट्० (यूनिवर्सिटी प्रोफेसर) ; डाक्टर केसरीनारायण शुक्ल एम० ए० डी० लिट्०(रीडर); डाक्टर भगीरथ मिश्र एम० ए०, पी-एच० डी०; श्री हरिकृष्ण अवस्थी एम० ए०, श्री विपिनविहारी त्रिवेदी एम० ए०, डाक्टर त्रिलोकी नारायण दीक्षित एम० ए०, पी-एच० डी०;

डाक्टर सरयूप्रसाद अग्रवाल एम० ए० पी-एच० डी० और श्री व्रज-किशोर मिश्र एम० ए० ।

वेंकटेश्वर प्राच्य कलाशाला, तिरुपति—१९४२ से यहाँ मद्रास विश्वविद्यालय की 'विद्वान' उपाधि परीक्षा की शिक्षा का प्रारंभ हुआ; १९४७ में 'हिंदी विद्वान' की शिक्षा दी जाने लगी; आरंभ में श्री सोमेश्वर शर्मा सा० रत्न नियुक्त हुए; जुलाई १९४८ में आंध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी पंडित श्री हनुमच्छास्त्री 'अयाचित' एम० ए० सा० रत्न० हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बनाये गये; शाला के पुस्तकालय में १५०० हिन्दी ग्रंथ हैं ।

संत ऐंड्रूज कालेज, गोरखपुर—१९४० में हिन्दी विभाग के अंतर्गत हिन्दी-सभा की स्थापना हुई; सभा का निजी पुस्तकालय है; प्रति तीसरे वर्ष सभा विराट कविसम्मेलन करती है ।

सतीशचंद कालेज, बलिया—हिन्दी-छात्रों की संख्या लगभग ५५० है; 'विवेक' पत्रिका प्रकाशित होती है; तीन अध्यापक हैं; अध्यक्ष हैं श्री विश्वनाथ तिवारी एम० ए०, सा० रत्न ।

सार्वजनिक पुस्तकालय, चंदेरी—१९२९ में स्थापित; पुस्तकों का विशाल संग्रह है; साहित्यिक आयोजन होते हैं; पुस्तकालय का निजी भवन है ।

साहित्य महाविद्यालय,(राजेंद्र) सेवदह, पटना; **स्था०** — २५ जुलाई १९३७; **उद्दे०** — जनता में देश-प्रेम, आत्मगौरव, मानवता-प्रेम, ग्राम - सुधार, हिन्दी - प्रेम उत्पन्न करना; **कार्य०**—उच्च शिक्षा हिन्दी में दी जाती है; पुस्तकालय में १००० पुस्तकें हैं, वाचनालय में २० पत्र आते हैं; साहित्य परिषद द्वारा 'युगवाणी' हस्तलिखित मासिक निकलता है; 'ग्राम-सेवक' विशेषांक निकला था; गांधी जी के रचनात्मक कार्य की योजना को चलाने के लिए एक समग्र ग्राम-सेवा-शिक्षण-शिविर की स्थापना १ नवम्बर १९४५ में हुई; हरिजनों और अहिन्दी भाषियों को निःशुल्क पढ़ने की सुविधा है ।

हरप्रसाद जैन कालेज, आरा — कालेज के हिन्दी विद्या-

र्थियों द्वारा साहित्य - परिषद की स्थापना हुई है ; साहित्यिक समारोह होते हैं ; श्री शिवबालकराय अध्यक्ष और श्री सीताराम 'प्रभात' सभापति हैं ।

हरिवंश शीलादर्श पुस्तकालय, करंजही, मलाव, गोरखपुर — श्री रामसूरत शुक्ल 'शील' द्वारा जूलाई १९३९ में स्थापित ; उत्तर प्रदेशीय शिक्षा-प्रसार-समिति द्वारा मान्य; १२०० पुस्तकें हैं; परीक्षाओं का केंद्र है

हिन्दी-भाषा - प्रचार - समिति (श्रीलंका), ३५ अलबियन रोड, देमटगोड, कोलंबो ९, लंका—भारतके सुदूर दक्षिण में स्थित लंका प्रदेश में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने वाली एकमात्र संस्था, इसके प्रधान कार्यकर्ता और प्रधान मन्त्री हैं श्री रत्नसार; इस समिति के प्रयत्न से केलनिय विद्यालंकार महाविद्यालय, कोलंबो के श्री लंका विद्यालय, देमटगोड के धर्मप्रसाद विद्यालय आदि में हिंदी की शिक्षा का आरम्भ हो गया है; यहाँ के युवक और युवतियाँ अब दक्षिण भारतीय हिंदी प्रचार-सभा मद्रास और राष्ट्रभाषा हिंदी-प्रचार - सभा वर्धा की परीक्षाओं में सरुचि बैठती हैं ।

हिन्दी राष्ट्रभाषा-प्रचार-सभा, गौरी शंकरपुरम्, गुडिवडा, कृष्णा आंध्र—जनवरी १९४७ में हिंदी प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित; हिंदी-नाट्य-मंडली की स्थापना की जो विशेष लोकप्रिय हो चुकी है; तीन-चार परीक्षाओं का संचालन करती है; निजी भवन बनाने के लिए प्रयत्नशील है ।

हिंदी विद्यापीठ, प्रयाग—देश के विभिन्न नेताओं द्वारा स्थापित, सम्मेलन-परीक्षाओं की पढ़ाई होती है; 'कृषि-विशेषज्ञ' उपाधि-परीक्षा का संचालन होता है ।

हिन्दी विद्यापीठ, फीरोजाबाद, आगरा—जूलाई १९४८ में श्री गणेशलाल शर्मा एम. ए०, सा० रत्न द्वारा स्थापित; सम्मेलन-परीक्षाओं की पढ़ाई का प्रबन्ध है; साहित्यिक समारोह आयोजित होते हैं; संचालन कार्यसमिति करती है ।

हिंदी विद्यापीठ, रतनगढ़—१५ अगस्त १९४७ को स्थापित;

चार परीक्षाओं का संचालन करती है; कई पुस्तकालय और वाचनालय स्थापित किये हैं।

हिंदी-साहित्य-परिषद् (खासी जयंतिया, ४ लोवासी लाइंस, शिलाँग, आसाम — आसाम के पर्वतीय प्रदेशों में हिन्दी-प्रचार करनेवाली संस्था, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा से संबद्ध है।

हिंदी-साहित्य-परिषद्, ललितपुर —जनता में साहित्यिक रुचि जाग्रत करने के उद्देश्य से स्थापित; स्थानीय नवयुवक साहित्यिकों का सहयोग प्राप्त है।

हिंदी-साहित्य-परिषद्(हरिहर), बीहट, मुँगेर—१९५० में स्थापित; साहित्यिक अभिरुचि जाग्रत करना उद्देश्य है; निजी पुस्तकालय है; साहित्यिक कार्यक्रमों में पठित भाषणों को प्रकाशित करने की योजना है।

हिंदी-साहित्य-सभा, छहार बाग, जलंधर—१९४७ से स्थापित, पाक्षिक अधिवेशन होते हैं।

हिंदुस्तानी प्रचार सभा, ५ गोबक लेन, काउलालंपुर, मलाया—यह सभा इस प्रदेश में अपना काम कई वर्षों से कर रही है। आरंभ में स्थानीय निवासियों को हिन्दी से परिचित कराना प्रधान उद्देश्य था; परन्तु हिन्दी जब से भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत हो गयी है, सभा के कार्यकर्ताओं का दायित्व बहुत बढ़ गया है और हिन्दी-प्रचार संबंधी निजी प्रयत्न के साथ साथ उसने सरकार से निवेदन किया है कि विद्यालयों में अन्य विषयों के साथ साथ हिंदी को भी मान्यता दी जाय। सभा हिंदी-विद्यालयों और रात्रि-पाठशालाओं का संचालन करती है और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की परीक्षाओं की इस देश में व्यवस्थापिका है।

(ग) प्रकाशकों के अवशिष्ट परिचय

अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, नया टोला, पटना—विविध विषयक लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित; 'विश्वदर्शन माला' का भी कुछ काल तक प्रकाशन हुआ; अब साहित्यिक प्रकाशन कर रहे हैं।

अजंता प्रेस लि०, नया टोला, पटना — प्रमुख प्रकाशन संस्था; अब तक लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें दिनकर-साहित्य का प्रकाशन प्रमुख है; बालोपयोगी मासिक चुन्नू मुन्नू का प्रकाशन भी होता है; श्री मणि-शंकर लाल अध्यक्ष हैं।

अनाथ विद्यार्थी गृह प्रकाशन, ६२४ सदाशिव, पूना २ — स्वाध्याय माला की लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

अभिनय प्रकाशन लि०, लंगर टोली, पटना — कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

अमोलकचंद अग्रवाल एंड संस, चावल मंडी, चौक, कानपुर —२-३ पुस्तकें छापी हैं।

अमृत बुक कम्पनी, कनाट सरकस, नयी दिल्ली—२-३ सामयिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

अशोक प्रेस, महेंद्रू, पटना ६—कथा-साहित्य की लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन की योजना है; मासिक 'नयी धारा' का प्रकाशन हो रहा है; श्री उदयराज सिंह अध्यक्ष हैं।

आगरा बुक स्टोर, रावतपारा, आगरा-पाठ्य पुस्तकों की कुंजियों के प्रकाशक; ३०० के लगभग प्रकाशित पुस्तके हैं; श्री सूरजभान व्यवस्थापक हैं; इसकी शाखाएँ आगरा, अजमेर, लखनऊ, बनारस, मेरठ आदि शहरों में हैं।

आदर्श पुस्तक भवन, भागलपुर सिटी—जीवन चरित्रमाला में दो तीन पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

आदर्श पुस्तक मंदिर, चौक इलाहाबाद—१०० पुस्तकें प्रकाशित; आजकल मासिक 'जासूस-महल' का प्रकाशन हो रहा है; श्री बनवारी तिवारी अध्यक्ष हैं।

आधुनिक पुस्तक भवन, ३०-३१, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता—श्री राहुल जी की नयी लिखी ४-५ पुस्तकें प्रकाशित; और भी कई उपयोगी प्रकाशन हो रहे हैं; श्री परमानंद पोद्दार स्वामी हैं।

आरोग्य मंदिर, सुड़िया कुआँ, गोरखपुर — स्वास्थ्य विषयक कुछ पुस्तकें प्रकाशित; मासिक 'आरोग्य' का प्रकाशन भी होता है।

आल इंडिया पब्लिशिंग कंपनी, लखनऊ — लगभग २५ पुस्तकें प्रकाशित, सभी टीकाएँ हैं।

इंडियन पब्लिशिंग हाउस, नयी सड़क, दिल्ली—कई उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा है।

उदयाचल, मठापुर, पटना—प्रसिद्ध कवि 'दिनकर' जी का सारा साहित्य यहीं से प्रकाशित हुआ है।

एम० आर० भंडारी एंड कंपनी, नया बाजार, अजमेर—विभिन्न विषयक कई पुस्तकें प्रकाशित।

एस० चाँद एंड कंपनी, फव्वारा, दिल्ली—लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें कई उच्च परीक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें हैं।

कन्हैयालाल कृष्णदास, दरभंगा — विविध विषयक लगभग २४ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

कला मंदिर, रतनगढ़, (बीकानेर) — १४-६-४४ को पंडित हनुमानदत्त द्वारा स्थापित; दो पुस्तकें प्रकाशित; श्री पंडित गोपाल शर्मा वैद्य व्यवस्थापक हैं।

कल्याण मंदिर, कटरा, इलाहाबाद—शाक्त धर्म की पुस्तकों के प्रकाशक; 'साधन-माला' के अंतर्गत शाक्त साधना संबंधी एक पुस्तक प्रतिमास छपती है जिसका वार्षिक मूल्य ८) है और जिसके संपादक पंडित रामदत्त शुक्ल हैं।

कल्याण साहित्य मंदिर, चौक, इलाहाबाद — कहानी-उपन्यास साहित्य की लगभग ३० पुस्तकें प्रकाशित।

किताबघर, कदम कुआँ, पटना—लगभग १० विविध विषयक पुस्तकें प्रकाशित; श्री परमेश्वरसिंह अध्यक्ष हैं।

किताबघर, जिंसी पुल, लश्कर, ग्वालियर—साहित्य प्रकाशन मंदिर के नामसे ४-५ परीक्षापयोगी पुस्तकें

प्रकाशित, श्री रा० म० अग्रवाल व्यवस्थापक हैं।

किशोर पब्लिशिंग हाउस, परेड, कानपुर — लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; प्रायः सभी पाठ्य पुस्तकें हैं; श्री तेजबहादुर सिंह अध्यक्ष हैं।

केसरवानी पब्लिशर्स, दारागंज, प्रयाग—लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; ज्ञानमाला का प्रकाशन हो रहा है।

गुप्त ब्रादर्स, मंडी धनौरा, मुरादाबाद — स्थापित १६२४; लगभग १५० पुस्तकें प्रकाशित; मासिक 'शिक्षा-सुधा' का भी प्रकाशन होता है; श्री सागरमल गुप्त संचालक हैं।

गुप्त बुकडिपो, बड़ा बाजार, हजारीबाग—दो तीन विद्यार्थियोपयोगी आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

गोयल बुकडिपो, धुलियागंज, आगरा—लगभग ५ पुस्तकें प्रकाशित; श्री चंद्रभान अध्यक्ष हैं।

गौतम बुकडिपो, नयी सड़क, देहली—लगभग २०० पुस्तकें प्रकाशित, पहले पाठ्य पुस्तकों का अधिक प्रकाशन किया, अब साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन भी कर रहे हैं जिनमें श्री नगेंद्र, श्री चतुरसेन शास्त्री की रचनाएँ प्रमुख हैं।

ग्रंथ वितान, भागलपुर—श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी की 'बाण भट्ट श्री आत्मकथा' का प्रकाशन किया है।

चेतना प्रकाशन लि०, हैदराबाद (दक्षिण)—लगभग ५ पुस्तकें प्रकाशित; श्री देवेंद्र सत्यार्थी के प्रसिद्ध गद्य गीतों के दो-तीन संकलन काफी प्रचलित हुए हैं; कई सुयोग्य व्यक्ति संचालक हैं।

जन प्रकाशन गृह, खेतवाड़ी, गिरगाँव, बम्बई ४ — कम्यूनिस्ट विचारधारा सम्बन्धी साहित्य के प्रकाशक; कुछ समय तक मासिक 'नया साहित्य' का भी प्रकाशन हुआ।

जनवाणी प्रकाशन, १६१।१ हरिसन रोड, कलकत्ता—लगभग २० साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं; 'काव्य में अभिव्यंजनावाद', 'गेहूँ और गुलाब' प्रमुख हैं; श्री हजारीलाल शर्मा अध्यक्ष हैं।

ज्ञान लता मण्डल, ३६ एल मुगभाट क्रास लेन, बम्बई ४—परीक्षोपयोगी कुछ पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

ताराकार्यालय, नसीनू, सूवा (फीजी)—फीजी द्वीपसमूह के एक मात्र हिंदी प्रकाशक; लगभग ४ पुस्तकें प्रकाशित; 'तारा' मासिक का भी कई वर्षों से प्रकाशन होता है; व्यवस्थापक हैं श्री ज्ञानीदास।

तुलसी साहित्य सदन, ३ नसिया रोड, इंदौर — आलोचनात्मक और विविध विषयक कई पुस्तकें प्रकाशित; श्री तुलसीराम अध्यक्ष हैं।

नया किताब घर, गोरखपुर—स्वास्थ्य विषयक ४-५ पुस्तकें प्रकाशित; मासिक आरोग्य का प्रकाशन भी होता है।

नवनिर्माण प्रकाशन, धनराज लेन, अमरावती (बरार —युगजीवन, जन समाज, झलक आदि पुस्तकमालाओं का प्रकाशन हो रहा है; श्री रामरतन सिकची संचालक हैं।

नवयुग ग्रंथागार, छितवापुर रोड, लखनऊ—कहानी-उपन्यास की लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित; श्री रामेश्वर तिवारी स्वामी हैं।

नाथ बुक डिपो, राजामंडी, आगरा — कई सहायक पुस्तकें प्रकाशित की हैं, श्री शंभूनाथ अध्यक्ष हैं।

पुस्तक भवन, मोती झील, मुजफ्फरपुर—लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; प्रायः सभी पाठ्य पुस्तकें हैं।

पुस्तक मंदिर, खलीफा बाग, भागलपुर — जनवरी १९५० में स्थापित; कई पुस्तकें प्रकाशित; श्री श्यामसुन्दर सहाय एम० ए० अध्यक्ष हैं।

प्रगति प्रकाशन, १४ डी० फीरोजशाह रोड, नयी दिल्ली—नवस्थापित श्रेष्ठ प्रकाशन संस्था; अज्ञेय, मुंशी, सेठ गोविंददास आदि की कई सुन्दर पुस्तकें कलात्मक ढंग से प्रकाशित हुई हैं; मासिक 'प्रतीक' का भी प्रकाशन हो रहा है; श्री राजबहादुर सिंह अध्यक्ष हैं।

प्रीमियर पब्लिशिंग कंपनी, नयी सड़क, दिल्ली—लगभग २५

पुस्तकें प्रकाशित जिनमें सभी पाठ्य पुस्तकें हैं।

प्रेम बुक डिपो, अस्पताल रोड, आगरा—लगभग ३० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें अधिकतर पाठ्य पुस्तकों की कुंजियाँ हैं।

बनारस बुक स्टोर्स, बुलानाला बनारस—बालोपयोगी लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

बालसाहित्य मन्दिर, मशक-गंज, लखनऊ—शिक्षा-सम्बन्धी १० पुस्तकें प्रकाशित; श्री शिव-नंदन कपूर अध्यक्ष हैं।

भारत प्रकाशन मंदिर, सुभाष रोड, अलीगढ़—४-५ विद्यार्थियो-पयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

भारती प्रकाशन, चौक, मुंगेर—दो तीन पुस्तकें प्रकाशित; प्रो० श्री रामेश्वर प्रसाद सिंह अध्यक्ष हैं।

भारती भवन, बाँकीपुर, पटना ४—आलोचना साहित्य की लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित की हैं; इसकी एक शाखा पुस्तक महल, पटना ४ है।

भारती मंदिर, भगवान बाजार, छपरा—कई पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं।

भारतीय पुस्तक भंडार, कालबा देवी रोड, बंबई—कई पुस्तकों के प्रकाशन का आयोजन है।

मयूर प्रकाशन, झाँसी—श्री वृंदावनलाल वर्मा का सारा साहित्य यहीं से प्रकाशित हो रहा है; उनके लगभग २० उपन्यास-नाटक प्रकाशित; श्री सत्यदेव वर्मा अध्यक्ष हैं।

महावीर प्रकाशन, अलीगंज, एटा—जैन धर्म संबंधी साहित्य का प्रकाशन; लगभग दो दर्जन छोटी बड़ी पुस्तकें छप चुकी हैं।

महाशक्ति साहित्य मंदिर, बुलानाला, बनारस—दो-तीन विविध विषयक पुस्तकें प्रकाशित; मासिक 'महाशक्ति' का भी प्रकाशन होता है।

महेश प्रकाशन, भागलपुर—रामायण संबंधी दो पुस्तकें प्रकाशित; प्रो० महेश अध्यक्ष हैं।

मातृ भाषा मन्दिर, दारागंज, प्रयाग—१९३० में स्थापित; विविध विषयक लगभग २५

पुस्तकें प्रकाशित; श्री हर्षवर्धन शुक्ल व्यवस्थापक हैं।

मानसरोवर प्रकाशन, गया—१० आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित ; श्री हंसकुमार तिवारी अध्यक्ष हैं।

मारवाड़ी साहित्य मंदिर, भिवानी (पंजाब) — १९४२ में स्थापित ; 'मारवाड़ी गौरव' प्रमुख प्रकाशन है ; 'मारवाड़ी समाज' तथा 'समाज सेवक' नामक पत्र भी प्रकाशित होते हैं ; इसकी शाखा ३८२ नया बाँस, दिल्ली ६ में भी है ; श्री फतहचंद गुप्त व्यवस्थापक हैं।

मुरारी बुक डिपो, अस्पताल मार्ग, आगरा—लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित ; श्री मुरारीलाल गर्ग अध्यक्ष हैं।

मोतीलाल बनारसीदास, बाँकीपुर, पटना—सामान्यतः पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित कीं ; अब १०-१२ आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित की हैं ; श्री सुन्दरलाल जैन अध्यक्ष हैं।

मोहन न्यूज एजेंसी, कोटा—श्री फतहचंद की 'कामायनी सौंदर्य' प्रकाशित की ; और भी कई पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं ; श्री मोहनलाल जैन व्यवस्थापक हैं।

रघुनाथदास पुरुषोत्तमदास, चूना कंकड़, मथुरा—बालोपयोगी तथा अन्य विषयों पर लगभग १५ पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

रतन प्रकाशन मंदिर, राजामंडी, आगरा — एक दो सहायक पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

रमेश बुक डिपो, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर — लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित जिसमें अधिकतर पाठ्य पुस्तकें हैं।

राका प्रकाशन मंदिर, ४१ बरकिट रोड, मद्रास १७—अहिंदी भाषी प्रांत के हिंदी प्रकाशक ; लगभग ५ पुस्तकें प्रकाशित ; सभी विद्यार्थियोपयोगी हैं ; श्री काशीराम अध्यक्ष हैं।

राजस्थान पुस्तक मंदिर, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर—प्रकाशित पुस्तकों में 'जीवन रश्मियाँ' का अच्छा प्रचार है ; एक शाखा अलीगढ़ में भी है।

रामसहाय लाल, कचहरी रोड, गया—लगभग ५ आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

राष्ट्रधर्म कार्यालय, सदर बाजार लखनऊ—धार्मिक और राष्ट्रीय विषयक कई पुस्तकें प्रकाशित; दैनिक स्वदेश, साप्ताहिक पांच जन्य और मासिक राष्ट्रधर्म का प्रकाशन भी होता है।

राष्ट्रीय पुस्तक भंडार, आदर्श पुस्तकालय, छतरी तालाब मार्ग, अमरावती (बरार)–नवोदित लेखकों की कई रचनाओं का प्रकाशन कर रहे हैं।

राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, मछुआ टोली, पटना — गंगापुस्तकमाला, लखनऊ की शाखा; ४-५ पुस्तकें प्रकाशित; श्री राजकुमार भार्गव अध्यक्ष हैं।

राहुल पुस्तक प्रतिष्ठान, अशोक राजपथ, पटना—महा पं० राहुल सांकृत्यायन की नवीन पुस्तकों का प्रकाशन अब यहीं से ही हो रहा है; श्री वीरेंद्रकुमार व्यवस्थापक हैं।

रीगल इंडस्ट्रीज, खजूरी बाजार, इन्दौर—विद्यार्थियोपयोगी ४-५ पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

रीगल बुकडिपो, नयी सड़क दिल्ली — कई विद्यार्थियोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

लोक चेतना प्रकाशन, जबलपुर—चार पुस्तकें प्रकाशित; मासिक 'युगारम्भ' का भी प्रकाशन होता है; श्री नर्मदाप्रसाद खरे अध्यक्ष हैं।

वाणी मन्दिर अजमेर, १९४४ में स्थापित; (पहले साहित्य निकेतन नाम था) दो तीन पुस्तकें प्रकाशित; एक वर्ष से 'राष्ट्रवाणी' का प्रकाशन हो रहा है; श्री रामस्वरूप गर्ग संचालक हैं।

विद्यावनम् पुस्तक मंदिर, पामरू (कृष्णा जिला) दक्षिण—'हिंदी साहित्य की प्रश्नोत्तरी' नामक पुस्तक प्रकाशित की है।

विनोद पुस्तकालय, खजांची रोड, पटना — कई विद्यार्थियोपयोगी प्रकाशन किये हैं।

वैदिक साहित्य मन्दिर, सदर बाजार, नागपुर—वैदिक धर्म की कई पुस्तकें प्रकाशित।

शारदा पुस्तक-भंडार, ज्ञान वापी, बनारस — जासूसी और अय्यारी विषयक अनेक छोटी बड़ी पुस्तकें प्रकाशित; श्री मथुराप्रसाद खत्री अध्यक्ष हैं।

शारदा मन्दिर लि०, नयी सड़क, देहली — लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित, कई साहित्यिक प्रकाशन हुए हैं।

शुक्ला बुक हाउस, अमीनाबाद, लखनऊ—लगभग १५ पुस्तकें प्रकाशित; सभी विद्यार्थियोपयोगी टीकाएँ हैं; श्री महीनाथ शुक्ल व्यवस्थापक हैं।

सरस साहित्य, अजमेर—श्री सरस वियोगी की ३-४ कविता-पुस्तकें प्रकाशित; मासिक आलोचक प्रकाशित करने का आयोजन है।

सरस्वती निकेतन, पीपल मंडी, देहरादून—साहित्य की पृष्ठ-भूमि नामक आलोचनात्मक पुस्तक प्रकाशित, कई और प्रकाशन हो रहे हैं।

सरस्वती सदन, लायल बुक डिपो, लश्कर, ग्वालियर—लगभग २५ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें शिक्षण माला की पुस्तकें प्रसिद्ध हैं; श्री रामप्रसाद अग्रवाल अध्यक्ष हैं।

साहित्य मंदिर, वर्धा—परीक्षार्थियोपयोगी लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

साहित्य मन्दिर प्रेस, गुइन रोड, लखनऊ—विभिन्न विषयों की कई पुस्तकें प्रकाशित; श्री कामेश्वर नाथ अध्यक्ष हैं।

साहित्य सदन, देहरादून—लगभग १० आलोचनात्मक व साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित।

साहित्य साधना कुटीर, संयोगितागंज, इन्दौर—परीक्षोपयोगी ३-४ पुस्तकें प्रकाशित हैं; कई आलोचनात्मक पुस्तक प्रकाशित करने की योजना है।

सुबोध ग्रंथमाला, अपरबाजार, राँची—स्कूली पुस्तकों के प्रकाशक; अब साहित्य-प्रकाशन की योजना है।

सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद—श्री 'बच्चन' जी का पूरा सेट प्रकाशित हुआ है; लगभग २० पुस्तकें प्रकाशित; कई पुस्तकें प्रसिद्ध हैं।

स्टूडेंट बुक कंपनी, जोधपुर—लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें निबंध शिक्षा, प्रगतिशील जीवन आदि का अधिक प्रचार है; इसकी दो शाखाएँ जयपुर

और ग्वालियर में भी हैं।

स्टूडेंट्स फ्रेंड्स, हीवेट रोड, इलाहाबाद—लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें अधिकतर पाठ्य-पुस्तकों की कुंजियाँ हैं; भारत का बृहत इतिहास पुस्तक का विशेष प्रचार है; श्री अ० स० सामंत अध्यक्ष हैं; इसकी एक शाखा पो० लंका, बनारस में हैं।

स्वरूप ब्रदर्स, खजूरी बाजार, इंदौर — विद्यार्थियोपयोगी ८-१० पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

हिंद प्रकाशन मंदिर, हास्पिटल रोड, आगरा—लगभग ५ पुस्तकें प्रकाशित; श्री मुरारीलाल गर्ग अध्यक्ष हैं।

हिंदी ग्रंथागार, १५ पी०कलाकार स्टीट, कलकत्ता — रवींद्र साहित्य का सारा प्रकाशन हिंदी में कर रहे हैं; १८ भाग छप चुके हैं; श्री धन्यकुमार जैन व्यवस्थापक हैं।

हिंदी प्रकाशन मंदिर, जीरो रोड, इलाहाबाद — श्री रामनरेश त्रिपाठी द्वारा स्थापित; लगभग १५ वर्षों तक बालोपयोगी 'बानर' का प्रकाशन होता रहा; लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें हिंदी कौमुदी (७ भाग) और पथिक-खंड काव्य ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की; इस समय दिल्ली के सस्ता साहित्य मंडल के संचालन में है।

हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, बनारस—लगभग ४०० पुस्तकें प्रकाशित, हिंदी प्रचारक शब्द कोश मुख्य है; कई साहित्यिक पुस्तक मालाएँ प्रकाशित करने की योजना है; श्री कृष्णचंद्र बेरी स्वामी हैं; इसकी एक शाखा १६०।१ हरिसनरोड, कलकत्ता में भी है।

हिंदी साहित्य सृजन परिषद, जौनपुर — लगभग ३० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें साहित्य दर्शन, साहित्य-परीक्षण मुख्य हैं।

—:❀:—

(घ) हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं के अवशिष्ट परिचय

अंगारा—साप्ताहिक; संपा०—श्री रामचन्द्र सक्सेना; प०—पोस्ट बाक्स २३६, पी० रोड, कानपुर।

अपना देश—साप्ताहिक; संपा०—श्री नरसिंह राम शुक्ल; १६४७ से प्रकाशित; मू०—६); प०—सजनी प्रेस, प्रयाग।

अमेरिकन रिपोटर्र—साप्ताहिक; १६५१ से प्रकाशित; संपा०—डबल्यू० बोर्न; बिना मूल्य वितरित; प०—अमेरिकी दूतावास, नयी दिल्ली।

आँचल—महिलोपयोगी मासिक, जनवरी १६४४ से प्रकाशित; संपा०—सुश्री ज्ञान अस्थाना, कुमारी आशा, सुश्रीकैलाश कुमारी अग्रवाल; मू०—४); प०—पोस्ट बाक्स ३४०, नयी दिल्ली।

आरती—विविध विषयक मासिक; सम्पा०—श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी एवं श्री लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी; प०—शालीमार बिल्डिंग, रेल बाजार, कानपुर।

आराधना—गाँधीवादी मासिक; जनवरी ४८ से प्रकाशित; संपा०—कुमारी सावित्रीसिंह 'किरण', श्री अशोक बी० ए०, श्री कृपाशंकर वकील; मू०—४); प०—गाजीपुर।

आलोक—साप्ताहिक; संपा० श्री विश्वनाथ शुक्ल; प०—बैकुंठपुर (कोरिया स्टेट)।

उजाला—समाजवादी नीति का समर्थक साप्ताहिक; १६५१ से प्रकाशित; संपा०—श्री गुरुप्रसाद उप्पल; प०-उजाला प्रेस, पटना।

उत्थान—हरिजनोपयोगी साप्ताहिक; १६५० से प्रकाशित; संपा०—श्री वीरेंद्र पांडेय; मू०—४॥); प०—हजरतगंज, लखनऊ।

उर्मिला—साहित्यिक मासिक; फरवरी १६५१ से प्रकाशित; संपा०—श्री वासुदेव प्रसाद मेहरोत्रा, श्री हजारी भानु प्रकाश शुक्ल; मू०—६); प०—१४।६४ टेढ़ी नीम, बनारस।

कन्या—१६४४ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री केशव प्रकाश

विद्यार्थी, श्री 'अशोक' बी० ए०; मू० — ३); प०— नारायणगढ़ ।

कल्पना— द्वैमासिक; मू०— १०); संपा० — सर्वश्री आर्येंद्र शर्मा, प्रो० रंजन, मधुसूदन चतुर्वेदी, बद्री विशाल पित्ती; प०— चेतना प्रकाशन लि०, हैदराबाद (दक्षिण) ।

किसान-कृषकोपयोगी मासिक; संपा०—श्री सुरेशसिंह; मू०— ६); प० कालाकांकर, प्रतापगढ़ ।

क्षत्रियबन्धु -१९३९ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री पी० चौधरी; प०-नील्हीबाग, बनारस ।

खिलौना-बालोपयोगी मासिक; सितम्बर १९५० से प्रकाशित; संपा०—श्री 'अशोक' बी० ए०, श्री 'कुमुद'; मू०—२॥); प०— पोस्ट बाक्स ६६, जमशेदपुर १ ।

गुलदस्ता — अप्रैल १९५१ से प्रकाशित मासिक ; संपा०— श्री बूलचंद बी० राजपाल ; संयुक्त संपा० — श्री विद्याशंकर शर्मा ; सलाहकार संपादक-मंडल—सर्वश्री बनारसीदास चतुर्वेदी, श्रीराम शर्मा, हरिशंकर शर्मा, रांगेय राघव, और शांतिप्रसाद पाठक ; वि०—प्रत्येक मौलिक लेख पर पारिश्रमिक दिया जाता है ; मू०—भारत में १०), अमरीका में ४ डालर, इँगलिस्तान में १ पौंड ; प०—२९३८ पीपल मंडी, आगरा ।

चंदा मामा — बालोपयोगी मासिक ; मू०—४॥) ; वि०— तामिल, कन्नड और मलयालम भाषाओं में भी इसी नाम से प्रकाशित होता है ; प०—मद्रास ।

चुन्नू - मुन्नू — बालोपयोगी मासिक ; संपा० — श्री रामवृक्ष बेनीपुरी ; मू०— ४॥) ; प०— श्री अजंता प्रेस लिमिटेड, नया टोला, पटना ।

जागृति—साप्ताहिक पत्रिका ; जनवरी १९४० से प्रकाशित हो रही है ; मू०—साढ़े बारह शिलिंग ; प०—संगम शारदा प्रेस, नाँदी, फीजी।

जासूस महल—मासिक; जनवरी १९५० से प्रकाशित ; मू०— ६) ; प०—चौक, इलाहाबाद ।

जीवन-विज्ञान—अप्रैल १९४६ से प्रकाशित मासिक ; संपा०— श्री चंद्रराज भंडारी ; मू०—१०); प०—भानुपुरा, इन्दौर ।

झंकार—सिनेमा साप्ताहिक। १९५१ से प्रकाशित ; संपा०—श्री सुदर्शन सिंह और श्री ल० प० देशमुख ; मू०—एक प्रति ‒)॥; प०—गोकुल पेठ, नागपुर।

झंकार—विविध विषय-विभूषित सचित्र मासिक पत्रिका, जनवरी १९५१ से प्रकाशित ; संपादक हैं श्री ज्ञानीदास; किसी पार्टी से संबंधित नहीं है; विशुद्ध साहित्य का प्रचार उद्देश्य है ; वि०—फीजी में यह हिंदी की अकेली मासिक पत्रिका है ; मू० — ६ शिलिंग; प०—तारा प्रेस, नसीनूं, सूवा, फीजी।

दीपशिखा-सिने व साहित्यिक मासिक ; संपा० — श्री देवेंद्र ; मू०—६) ; प० — पाटिलपुत्र प्रकाशन मंदिर, ६ डी गर्दनी बाग, पटना १।

देहात — १९४८ से प्रकाशित मासिक; संपा०—श्री कन्हैयालाल सहगल; श्री गंगाप्रसाद 'शारदा', श्री नित्यानंद सारस्वत, श्रीमती चंद्रकान्ता जैरथ, श्री बल्लभदास बिन्नानी 'ब्रजेश' ; मू० — २) ; प०—पिलानी, जयपुर।

नागरिक—दैनिक ; संपा०—श्री देवीदास शर्मा 'निर्भय' ; प० —हाथरस।

नाम माहात्म्य-धार्मिक मासिक पत्र ; संपा० — श्री गौर गोपाल जी मानसिंह ; मू० — २≡) ; प० —भजनाश्रम, वृन्दावन।

नया साहित्य — प्रगतिशील मासिक ; सपा०—श्री रामविलास शर्मा, श्री प्रकाशचंद्र गुप्त, श्री 'पहाड़ी' ; मू०—१०) ; प०—नया कटरा, प्रयाग।

नयी धारा—मासिक पुस्तक ; संपा० – श्री रामवृक्ष बेनीपुरी ; मू०—१०) ; प०—अशोक प्रेस, महेंद्रू, पटना।

नवभारत—राष्ट्रीय साप्ताहिक; अहिंदी प्रांत से प्रकाशित ; प्रत्येक अंक पर हिंदी की प्रगति पर भी एक लेख रहता है ; संपा०—टी० बी० केशवदास ; प०—बेल्लारी (दक्षिण भारत)।

नवरस—कहानी प्रधान मासिक; संपा०—श्री देवकुमार मिश्र, श्री रघुवंश पाण्डेय ; मू०—५) ; प० —भिखना पहाड़ी, बाँकीपुर, पटना।

नारद — राष्ट्रीय साप्ताहिक ; १६०० से प्रकाशित; **भूत० संपा०** — श्री गोविंदप्रसाद शर्मा, पं० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, श्री लक्ष्मीनारायण सारनी, गोस्वामी योगी लालगिरि, श्री प्रेमकुमार वर्मा, पं० सतीशचंद शर्मा ; **वर्त्त० संपा०**—श्री कौशलकिशोर ; प० —छपरा ।

निष्काम—मासिकपत्र; १६५१ से प्रकाशित ; मू०—६) ; **संपा०** —श्री रत्नांबरदत्त चंदोला 'रत्न', नेत्रपाल 'बंधु' ; प०—पूना १ ।

नोकझोंक—१६३८ में प्रकाशित हास्यरस का मासिक । भूत० संपा०-श्री केदारनाथ भट्ट और श्री ओमप्रकाश शर्मा ; **संपा०**—श्री रामप्रकाश पंडित ; वि०—हास्यरस की रचनाएँ पारिश्रमिक देकर चाहते हैं ; **मू०**—३) ; प०—बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा ।

नृसिंह प्रिया—१६४२से प्रकाशित मासिक ; **संपा०** - श्री ए० एस० राघवन ; प०—पुडुकोटई, मद्रास ।

पंचायत— १६११ से प्रकाशित साप्ताहिक ; प०—बाराबंकी ।

पराक्रम -- साप्ताहिक ; हिंदू सभा प्रधान का पत्र; **संपा०**—पं० रामकृष्ण पाण्डेय ; प०—लक्ष्मण प्रेस, चांटापारा, बिलासपुर ।

परिचय पारिजात—मासिक ; **संपा०**—श्री कविराज दुर्गानारायण वीरत्रयईश, श्री सुरेशचंद ; **मू०**—६) ; प०—शारदा सदन, केवलारी, पथरिया, सागर ।

प्रकाश—१६४२ से प्रकाशित दैनिक ; **संपा०**—श्री जी० सी० केला ; प० — कचौरा बाजार, आगरा ।

पालक्षत्रिय-समाचार—१६४२ से प्रकाशित जातीय मासिक; **संपा०** —श्री जी० विद्यार्थी ; प०—४२३ मुट्ठीगंज, इलाहाबाद ।

प्राची प्रकाश—हिंदी का एक मात्र दैनिक पत्र जो बर्मा में कई वर्षों से प्रकाशित हो रहा है ; प० —रंगून (बर्मा) ।

बनारस—दैनिक पत्र ; **मू०** १७) ; १६५१ से प्रकाशित ; प० —बनारस ।

शंखनाद, मुंगेर—१६४६ से प्रकाशित; एक वर्ष तक हस्तलिखित रहा; १६५० का वार्षिकांक

मुद्रित होकर प्रो० श्री कपिल के संपादकत्व में निकला; मू० १) ।

शिक्षा—उत्तर प्रदेशीय शासन के शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित शिक्षा-सम्बन्धी पत्र; प्रायः अधिकारी विद्वानों की रचनाएँ इस में प्रकाशित होती हैं;प०—लखनऊ।

श्रीरंगनाथ—धार्मिक साप्ताहिक पत्र; १९४२ से प्रकाशित; संपा०—श्री स्वामी मुरलीधराचार्य तिलक; अब तक छह विशेषांक छप चुके हैं; मू०—३); प०—भिवानी (पंजाब)।

संदेश—मासिक पत्र; संपा०—प्रो० रामपरीक्षा सिंह 'पुष्प' एम० ए; प०—नवयुवक परिषद, रानीगंज, बर्दवान ।

संदेश—दैनिक; १९४८ से प्रकाशित ; संपा०—श्री नारायण प्रसाद शुक्ल; प०—यशवंत रोड, इन्दौर।

संदेश—साप्ताहिक; संपा०—सैयद कासिमअली साहित्यालंकार; मू०—४); प०—प्रिंस आफ वेल्स अस्पताल के सामने, भोपाल।

सन्मार्ग—सनातनधर्मी दैनिक पत्र; वि०— कलकत्ता, बनारस और दिल्ली से एक साथ प्रकाशित होता है; कई सुयोग्य विद्वान संपादक हैं; प०—कलकत्ता।

सन्मार्ग—धार्मिक साप्ताहिक; संपा०—श्री सवाई सिंह ; मू०—८); प०—साधना प्रेस, जयपुर ।

सरिता- मासिक; सम्पा०—सर्वश्री सीताराम चतुर्वेदी, करुणापति त्रिपाठी, रामचन्द्र वर्मा, शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र', कमलाप्रसाद अवस्थी 'अशोक', बलदेव प्रसाद मिश्र, बल्देवराज शर्मा 'उपवन'; मू०—५); कई विशेषांक प्रकाशित; प० – बनारस।

सुमित्रा—कहानी प्रधान मासिक; १९४९ से प्रकाशित; संपा० श्री देवीप्रसाद धवन 'विकल'; मू०—६); प०— कानपुर ।

सोवियत भूमि — पाक्षिक; १९५० से प्रकाशित; मू०—३); प०—तास प्रतिनिधि, रूसी दूतावास, नयी दिल्ली ।

हमारी आवाज़—साप्ताहिक; १९५० से प्रकाशित; सं०—'निशंक' शर्मा; मू०—६); प०—जयहिंद प्रेस, लश्कर, ग्वालियर।

हिंदी अनुशीलन — प्रयाग-स्थित भारतीय हिंदी परिषद् का **त्रैमासिक** मुख-पत्र; भाषा और साहित्य से सम्बन्धित अनुसंधान पूर्ण निबन्ध ही प्रायः प्रकाशित होते हैं।

(ङ) हिंदी के अवशिष्ट पुरस्कार और पदक

डालमियाँ पुरस्कार

अब तक २०००) का देव पुरस्कार हिंदी में सबसे अधिक निधि का था; इधर तीन-चार वर्षों से २१००) का डालमियाँ पुरस्कार, जो डाक्टर दीनदयालु गुप्त को उनकी 'अष्टछाप और वल्लभसंप्रदाय' नामक कृति पर मिल चुका है, दिया जाने लगा है। अतएव आज हिंदी का सबसे बड़ा पुरस्कार यही है।

देव-पुरस्कार

हिंदी प्रेमी ओरछा नरेश प्रदत्त २०००) का यह पुरस्कार एक वर्ष खड़ी बोली के और दूसरे वर्ष व्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ काव्य पर दिया जाता है। प्रथम पुरस्कार श्री दुलारेलालजी भार्गव को उनकी दोहावली पर मिला था; द्वितीय डा० रामकुमार वर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी० को 'चित्ररेखा' पर तथा तीसरा श्री श्यामनारायण पांडेय को उनकी 'हल्दीघाटी' पर मिला था।

हिंदी एकेडमी, प्रयाग का पुरस्कार

हिंदी (हिंदुस्तानी) एकेडमी प्रयाग की ओर से ५००) का पुरस्कार हिंदी लेखकों की श्रेष्ठ रचना पर दिया जाता है।

संवत् २००८ के लिए साहित्यसम्मेलन की विभिन्न पुरस्कार समितियों के सदस्य—

मंगलाप्रसाद पारितोषिक— **१-श्री** कृष्णदेवप्रसाद गौड़, २-श्री जयचंद्र विद्यालंकार, ३ श्री रमाशंकर शुक्ल रसाल, ४-श्री राय-

रामचरण अग्रवाल "संयोजक", ५- श्री विजयकुमार गुप्त।

सेक्सरिया महिला पुरस्कार १-श्री सीताराम सेक्सरिया, २-श्री कुमारी कंचनलता सब्बरवाल, ३-श्री गुर्ती सुब्रह्मण्य, ४-श्री रामेश्वर शुक्ल "अंचल"; ५-श्री राजेन्द्र सिंह गौड़, 'संयोजक'।

मुरारका पारितोषिक—१-श्री बसन्तलाल मुरारका, २-श्री क्षेतेश-चंद्र चट्टोपाध्याय, ३-श्री सीताराम चतुर्वेदी "संयोजक", ५-श्री पद्मा-नन्द चतुर्वेदी, ५-डा० बुलबुल मित्रा।

रत्नकुमारी पुरस्कार समिति —श्री रत्नकुमारी देवी, २ श्री कमलेशरानी सक्सेना, ३-श्री प्रभात मिश्र, ४-श्री जयराम मिश्र; ५-श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र "निर्मल" "संयोजक"।

नेमीचंद्र पाण्ड्या पुरस्कार—१-श्री रामनरेश त्रिपाठी, २-श्री श्रीनाथसिंह, ३-श्री लल्ली प्रसाद पांडेय, ४-श्री दयाशंकर दुबे "संयोजक", ५—श्री कमलधारी-सिंह "कमलेश"।

(च) हिंदी में अनुसन्धानकार्य—अवशिष्ट अंश

विश्वविद्यालय काशी—हिंदी में पी-एच० डी० की उपाधि के लिए निबंध लिखने वाले व्यक्तियों के नाम ये हैं—सर्वश्री विजयशंकर मल्ल, शकुन्तला जैतली, शम्भूनाथ सिंह, पूर्णगिरि गोस्वामी, नरेश कुमार मेहता, कृष्णदेवप्रसाद गौड़, शंभूनाथसिंह, बटेकृष्ण, बचनसिंह, चन्द्रमोहन शर्मा, व्रजकिशोरदीक्षित, नरहरि चिंतामणि, जुगलेश्वर, सुशीला भटनागर, तारावती चौधरी अष्टभुजप्रसाद पांडेय, शिवनारायण लाल, राजेश्वरी शर्मा, ज्योत्स्ना द्विवेदी, सुशीला चाहल, कैलाशचंद्र जैन, देवेन्द्रकुमार जैन, कृष्णकुमार मिश्र, लक्ष्मी शुक्ल, रामनरेश वर्मा, मोतीसिंह, मार्कंडेयप्रसादसिंह और श्री उमादेवी मुडवेल।

विश्वविद्यालय नागपुर—इस विश्वविद्यालय के अंतर्गत हिंदी में अनुसंधान—कार्य के लिए विशेष भाग नहीं हैं, पर एम०ए० उत्तीर्ण छात्र किसी अधिकारी निरीक्षक की देखरेख में पी-एच० डी० की तैयारी

कर सकते हैं। प्रति वर्ष दो-तीन विषयों पर शोध के लिए विषय स्वीकृत होते हैं और स्नातक उसमें कार्य करते हैं। प्रेमचंद, प्रसाद, भारतेंदु, हरिऔध आदि लेखकों तथा कवियों के अतिरिक्त भाषा-विज्ञान संबंधी विषयों पर भी काम हो रहा है। अनुसंधानकर्त्ताओं में कई महिलाएँ भी हैं।

आवश्यकता होने पर उपयुक्त छात्र को किंग एडवर्ड छात्रवृत्ति भी दी जाती है।

इस विश्वविद्यालय की ओर से अभी तक डाक्टर बलदेवप्रसाद मिश्र को 'तुलसी दर्शन' और डा० रामकुमार वर्मा को 'हिंदी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास' पर उपाधियाँ मिल चुकी हैं।

विश्वविद्यालय प्रयाग—अब तक डी०लिट्० उपाधि प्राप्त व्यक्ति और उनके विषय इस प्रकार हैं—(१) डा० बाबूराम सक्सेना—अवधी का विकास (१९३१); (२) डा० रमाशंकर शुक्ल—हिन्दी काव्य शास्त्र का विकास (१९३१); (३) डा० माताप्रसाद गुप्त—तुलसी दास के जीवन और कृतियों का समालोचनात्मक अध्ययन (१९४०); (४) डा० दीनदयालु गुप्त—अष्ट छाप और वल्लभ सम्प्रदाय (१९४५); (५) डा० उदयनारायण तिवारी—भोजपुरी का विकास (१९४५); (६) डा० हरदेव बाहरी—हिंदी अर्थ-विचार (१९४५); (७) डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय—हिन्दी साहित्य और उसकी सांस्कृतिक पीठिका—१७५७-१८५७ (१९४६)।

अब तक डी० फिल० उपाधि प्राप्त व्यक्ति और उनके विषय इस प्रकार हैं—(१) डा० लक्ष्मी-सागर वार्ष्णेय—आधुनिक हिंदी साहित्य—१८५०-१९००(४१९०), (२) डा० श्री कृष्णलाल—आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास—१९००-१९२५ (१९४१); (३) डा० जानकीनाथ सिंह—हिंदी छंद शास्त्र; (४) डा० छैलबिहारी गुप्त—आधुनिक मनोविज्ञान के प्रकाश में इस सिद्धांत का समालोचनात्मक अध्ययन (१९४३); (५) डा० व्रजेश्वर वर्मा—सूरदास (१९४५); (६) डा० व्रजमोहन गुप्त—हिंदी काव्य में रहस्यवादी प्रवृत्तियाँ

(१९४६); (७) डा० पृथ्वीनाथ कुलश्रेष्ठ — हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य (१९४७); (८) डा० राम रत्न भटनागर — हिंदी समाचार पत्रों का इतिहास (१९४८ ; (९) डा० रघुवंश—हिंदी साहित्य के भक्ति और रीति कालों में प्रकृति और काव्य (१९४८); (१०) डा० शैलकुमारी माथुर— हिंदी काव्य में नारी भावना १९००-१९४५; (११) डा० कामिल बुल्के—हिंदी राम साहित्य की पीठिका के रूप में राम-कथा का जन्म और विकास (१९४९); (१२) डा० विश्वनाथ मिश्र—अँग्रेजी का हिंदी भाषा और साहित्य पर प्रभाव (१९५०)।

इसके अतिरिक्त डी० फिल० उपाधि के लिए स्वीकृत हिंदी से संबंधित अन्य निबन्धों और उनके लेखकों के नाम ये हैं—(१) डा० शैलवती मिश्र—हिंदी सन्त और वेदान्त प्रणालियाँ—सूर, तुलसी और कबीर का विशेष अध्ययन (१९४८); (२) डा० जयकांत मिश्र —मैथिली साहित्य का संक्षिप्त इतिहास—आदि काल से लेकर वर्तमान समय तक और उस पर अँग्रेजी का प्रभाव (१९४८)।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष डा० धीरेंद्र वर्मा को पेरिस यूनीवर्सिटी से 'व्रजभाषा' विषय पर १९३५ में डी० लिट० की और डा० रामकुमार वर्मा को नागपुर यूनीवर्सिटी से हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पर१९४१ में पी-एच० डी० की उपाधियाँ मिल चुकी हैं।

डी० लिट० उपाधि के लिए निम्नलिखित स्वीकृत विषयों पर खोज हो रही है—(१) डा० छैल-बिहारी गुप्त राकेश—नायक-नायिका भेद; (२) श्री उमाशंकर शुक्ल—सूर सागर की हस्तलिखित पोथियों का पाठ सम्बन्धी अध्ययन।

डी० फिल० उपाधि के लिए निम्नलिखित स्वीकृत विषयों पर खोज हो रही है—(१) श्री राम सिंह तोमर—प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य का हिंदी साहित्य पर प्रभाव; (२) श्री हरीमोहन दास टंडन—व्रज के वैष्णव संप्रदाय और उनका हिंदी साहित्य पर प्रभाव; (३) श्री टीकम सिंह तोमर —हिंदी वीर काव्य — १६००

१८००; (४) श्रीमती रतनकुमारी —१६वीं शताब्दी में हिंदी और बंगला के वैष्णव कवियों का तुलनात्मक अध्ययन; (५) श्री जगदीश गुप्त—गुजराती और ब्रजभाषा कृष्ण-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन—१५वीं से १७वीं शताब्दी तक; (६) श्री धर्मवीर भारती—सिद्ध साहित्य; (७) श्री हरिहरप्रसाद गुप्त —भारतीय ग्रामोद्योग से सम्बन्धित शब्दावली, विशेषतया आजमगढ़ जिले की तहसील फूलपुर में प्रचलित शब्दावली के आधार पर; (८) श्रीमती कांतिकेशरी सिन्हा—हिंदी मुक्तक काव्य का जन्म और विकास–१८००; (६) कुमारी गोविंदा आनंद—हिंदी साहित्य के रीतिकाल की भक्ति; (१०) श्री पारसनाथ तिवारी—कबीर की रचनाओं के पाठ और पाठ सम्बन्धी समस्याओं का आलोचनात्मक अध्ययन; (११) श्री माताबदल जायसवाल — स्टैंडर्ड हिंदी की उत्पत्ति और विकास; (१२) श्री भोलानाथ—आधुनिक हिंदी साहित्य और उसकी पीठिका—१६२६,१६४७; (१३) श्री भोलानाथ तिवारी—हिंदी नीति रहस्य; (१४) श्री कुमारी कीर्ति अग्रवाल—स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन और उसका आधुनिक हिंदी साहित्य पर प्रभाव--१८८५–१६४७; (१५) कुमारी हेमलता जनस्वामी — मध्यकालीन तेलगु और हिंदी वैष्णव साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन; (१६) श्री सत्यव्रत सिनहा—भोजपुरी लोक साहित्य; (१७) श्री चन्द्रप्रकाश वर्मा—अवधी लोक कथाओं और गीतों में चित्रित सांस्कृतिक और सामाजिक अवस्था; (१८) श्री लक्ष्मीनारायण लाल– हिन्दी कहानियों की उत्पत्ति और विकास; (१६) श्री सुरेशचंद्र वाजपेयी हिंदी उपन्यासों की उत्पत्ति तथा विकास (२०) श्री मूलचन्द अवस्थी—१६ वीं शताब्दी के सुधारवादी आंदोलन और उनका हिंदी साहित्य पर प्रभाव।

—:०:—

(च) विदेशों में हिंदी—अवशिष्ट अंश

अमरीका—यहाँ एक एशिया इंस्टीट्यूट है जिसका पता है—१३ ईस्ट, ६७ वीं स्ट्रीट, न्यूयार्क २१। इस संस्था में हिंदी की शिक्षा का प्रबंध है और कई स्थानीय युवक युवतियाँ इस भाषा की जानकारी प्राप्त करने के लिए अध्ययन कर रही हैं।

आस्ट्रेलिया—यहाँ के कालेजों और विश्वविद्यालयों में तो हिंदी के लिए कोई स्थान नहीं है, परंतु व्यापारिक और व्यावसायिक संस्थाओं में हिंदी के कुछ जानकार मिल सकते हैं।

इटली—यहाँ के रोम विश्वविद्यालय में पिछले वर्ष हिंदी की शिक्षा का प्रबंध होने की सूचना मिली थी। नेपल्स विश्वविद्यालय में भी इसी का अनुसरण करने की योजना इस वर्ष है। यहाँ की एक संस्था है 'इटैलियन इंस्टीट्यूट फार दि मिडिल एंड फार ईस्ट' (Istituto Italiano Per Il Medio Ed Estremo Oriente) जो Palzzo Brancaccio, Via Merulana, Rome में स्थिति है। पूर्व और पश्चिम के बीच में सांस्कृतिक संबंध स्थापित करना इस संस्थाका उद्देश्य है। इसकी ओर से हिंदी की शिक्षा इटली निवासियों को दी जा रही है।

जापान—'टोकियो यूनीवर्सिटी आव फारेन लैंग्वेजेज़' में इस समय हिंदी विभागमें ३७ विद्यार्थी और दो जापानी अध्यापक हैं—प्रोफेसर आर० गामे (Pr. R. Game) और प्रोफेसर के० डोई (Pr. K. Doi)।

डेनमार्क—यहाँ के विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षा का विषय नहीं है।

फ्रांस — इस देश में स्थिति Ecole Nationale Des Langues Orientales Vivantes. 2 Rue De Lille. Paris. नामक संस्था में हिंदी की पढ़ाई का प्रबंध है। तीन वर्ष की शिक्षण अवधि समाप्त करने पर स्नातक की उपाधि प्रदान की जाती है। १९४५ से पूर्व विद्यार्थियों की संख्या ५-७ रहती थी, परंतु अब बढ़ते-बढ़ते यह तीस तक पहुँच गयी है।

समाप्त

नामानुक्रमणिका

पहला खंड—हिंदी सेवियों का परिचय

———

दूसरा खंड—हिंदी संस्थाओं का परिचय

परिशिष्ट—कुछ और हिंदी संस्थाएँ

तीसरा खंड—हिंदी के प्रकाशक

चौथा खंड—हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ

मंजरी, मंजिल, मजदूर आवाज, मतवाला जोधपुर, मतवाला दिल्ली, मतवाला मिर्जापुर, मधुप—४७०; मनोरंजन, मनोरमा, मनोविज्ञान, मनोहर कहानियाँ, मराठा, मस्ताना जोगी, महा कोशल, महावीर संदेश, महाशक्ति, महिला, महिलाश्रम पत्रिका—४७१; माधुरी, मानवता, मानव धर्म, मानवमित्र, मानसमणि, मानसरोवर, माया, मारवाड़ी गौरव, मारवाड़ी समाज—४७२; मराठा राजपूत, माला, मेढ़ क्षत्रिय समाचार, मोहिनी ।

यादव, युग जीवन, युगधर्म, युगधारा, युगांतर कानपुर, युगांतर जयपुर—४७३; युगारंभ जबलपुर, युगारंभ (लोक चेतना प्रकाशन), युवक हृदय, योगी, योगेंद्र—४७४ ।

रंगभूमि दिल्ली, रंगभूमि बंबई, रजतपट, रसभरी—४७४; रसायन, रसीली कहानियाँ, रहबर, राजपूत, राजपूताना प्रांतीय वैद्य पत्रिका, राजस्थान क्षितिज, रानी, रामराज्य, राष्ट्रपताका, राष्ट्रपति, राष्ट्रभारती—४७५; राष्ट्रभाषा जयपुर, राष्ट्रभाषा वर्धा, राष्ट्रवाणी अजमेर, राष्ट्रवाणी दिल्ली, राष्ट्रवाणी पटना, राष्ट्रवाणी बनारस, रिमझिम, रियासती, रूपरानी, रेलवे समाचार—४७६ ।

लल्ला, लहर, लोकमत, नागपुर, लोकमत बीकानेर, लोकमान्य, लोकमित्र, लोकयुद्ध, लोकवाणी जयपुर, लोकवाणी लखनऊ, लोक शासन—४७७; लोक सुधार, लोक सेवक इंदौर, लोक सेवक कोटा—४७८ ।

वनस्थली, वर्तमान, वसुंधरा कलकत्ता, वसुंधरा उदयपुर, वसुंधरा दिल्ली, वाणिज्य, वालंटियर, विंध्यकेसरी, विंध्यवाणी—४७८ विकास कोटा, विकास नागपुर, विक्रम, विचार, विजय दतिया, विजय दिल्ली, विजय मुरादाबाद, विज्ञान, विज्ञानकला—४७९; विद्या, विद्यार्थी, विनोद, विशालभारत, विश्वदर्शन, विश्वबंधु अमृतसर, विश्वबंधु कलकत्ता, विश्वभारती—४८०; विश्व मित्र, विश्ववाणी, विश्वहितैषी, वीणा, वीर, वीर अर्जुन, वीर भारत—४८१; वीर भूमि उदयपुर, वीर

पाँचवाँ खंड—पदक और पुरस्कार

छठा खंड—हिंदी में अनुसंधानकार्य

सातवाँ खंड—विदेशों में हिंदी

परिशिष्ट २

(नोट—कुछ स्लिपों के इधर-उधर हो जाने के कारण यह अंश यथास्थान नहीं जा सका, जिसके लिए हमें खेद है—संपादक।)

(अ) कुछ और हिंदी संस्थाएँ

जयहिंद प्रेस सर्विस, गाँधी नगर, कानपुर — लेखकों-कवियों और पत्रों के बीच संपर्क स्थापित करनेवाली संस्था; डा० वीर-भारतीसिंह अध्यक्ष हैं।

भारत समाज, पो० बा०३६३, लारेंसो मार्क्वीस, पोर्चुगीज पूर्वी अफ्रीका—भारत समाज इंडियन स्कूल का संचालन होता है जिसमें हिंदी की पढ़ाई का संतोषजनक प्रबंध है, १०० से अधिक विद्यार्थी इस सुदूर देश में हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं; वर्धा की परीक्षाओं का प्रबंध करने की योजना है; श्री रविशंकर विद्यालंकार और श्री सुमतराय विद्यालंकार हिंदी-प्रचार के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं।

राकेश मंदिर, चूरू, राजस्थान—स्था० — १५ अगस्त १६४८, स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष में; उद्देश्य—साहित्यिक और सांस्कृतिक निर्माण कार्य; कार्य—मंदिर का कार्य चार वर्गों में विभक्त है:—(क) **हिन्दी साहित्य संसद** की ओर से 'साहित्य-प्रवेश', 'साहित्येन्दु' और 'साहित्य-सुधाकर' की परीक्षाएँ ली जाती हैं; इनके केन्द्र प्रमुख नगरों में हैं; प्रबन्ध एक अंतरंग समिति करती है। (ख) **अध्ययन निकेतन**—इसमें हिंदी साहित्य के अध्ययन की समुचित व्यवस्था है, हि० सा०स० प्रयाग की विशारद और रत्न की परीक्षाओं के लिए भाषण का प्रबन्ध है। (ग) **लोक संस्कृति**—

सदन द्वारा सांस्कृतिक अन्वेषण का कार्य होता है; लोकगीत, कहावतें, लोककथाएँ, ऐतिहासिक सामग्री का संकलन हो रहा है; (घ) प्रकाशन मंदिर — यहाँ से 'राकेश' मासिक और साहित्यिक ग्रंथों का प्रकाशन होता है।

रामायण मंडल, सोहागपुर—रामायण एवं हिंदी-प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से १९४० में स्थापित; स्थानीय हिंदी-साहित्य-समिति से संबन्धित।

विश्वविद्यालय, पंजाब (सोलन) इंटर मीडिएट, (कला), बी० ए० और एम० ए० की परीक्षाओं में हिंदी का प्रवेश हो गया है। इसके अतिरिक्त एक प्रकाशन समिति भी स्थापित की गयी है जिसके द्वारा हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि करने का आयोजन है। डा० श्री इंद्रनाथ मदान हाल ही में रीडर नियुक्त हुए हैं।

वेदसंस्थान, अजमेर—आचार्य विद्यानंदजी द्वारा १९४८ में वेद को को विश्वधर्म बनाने के उद्देश्य से स्थापित; वेद विषयक मासिक-पत्र 'सविता' का प्रकाशन होता है; जीवनप्रद वैदिक साहित्य प्रकाशित किया है; संस्थान का पूरा विवरण सूचीपत्र से ज्ञात हो सकता है।

शहीद पुस्तकालय, बिल्थरा रोड, बलिया — १९४२ में अमर शहीद ठा० चंद्रदीपसिंह की स्मृति में स्थापित; लगभग ३५०० पुस्तकें हैं।

शिबली कालेज, आजमगढ़—बी० ए० प्रथम वर्ष में ३० और द्वितीय में १० विद्यार्थी हैं; श्री किशोरीलाल गुप्त एम० ए० अध्यक्ष हैं।

शिवा जी महाविद्यालय, अमरावती — वाणिज्य विभाग के अंतर्गत हिंदी विभाग है; अध्यक्ष हैं श्री हरीकृष्ण खरे एम० काम० और सहकारी हैं श्री रतनकुमार जैन एम० काम०, सा० रत्न०।

संत जेवियर महाविद्यालय, राँची—१९४४ से ही आई० ए० और आई० एस-सी० परीक्षाओं में हिंदी को प्रमुख स्थान दिया। उसी वर्ष हिंदी के प्राध्यापक श्री वैद्यनाथ पांडेय ने हिंदी साहित्य परिषद् की स्थापना की जिसमें

प्रति वर्ष कहाकवियों की पुण्य जयंतियाँ मनाई जाती हैं। इस समय श्री रामसुहागसिंह एम०ए०, डिप० एड० प्राध्यापक हैं।

सनातन धर्म कालेज, अंबाला कैंट—कालेज पहले लाहौर में था, विभाजन के पश्चात अम्बाला आ गया ; एम० ए० तक हिंदी पढ़ाई जाती है ; लगभग ६०० विद्यार्थी हैं ; अध्यक्ष हैं श्री संसारचंद एम० ए० और दो अन्य अध्यापक हैं—श्री सोमनाथ भट्ट एम० ए० और श्री देवकीनंदन शर्मा एम० ए०।

सार्वजनिक पुस्तकालय (श्री-प्रकाश), छपरा (सारन)—१६३८ में स्थापित ; पुस्तकों का अच्छा संग्रह है ; हिंदी परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी तैयार किए जाते हैं; 'श्री-प्रकाश व्याख्यानमाला' का आयोजन किया जाता है ; इसका भ्रमणशील विभाग जनता तक पुस्तकें पहुँचाता है।

(ब) विदेश में हिंदी–शेषांश

तिब्बत—यहाँ महाविद्यालय अथवा ऐसे विश्वविद्यालय नहीं हैं, जहाँ तिब्बतियों को विभिन्न विषयों की समुचित शिक्षा दी जा सके। व्यक्तिगत विद्यालयों और बौद्ध विहारों में शिक्षा का प्रबन्ध है, परंतु पाठ्य विषयों में अभी हिंदी को स्थान नहीं मिला है, यद्यपि यात्रियों के संपर्क से कुछ लोगों ने हिंदी से परिचय प्राप्त कर लिया है।

बर्मा—में हिंदी की उच्च शिक्षा का अभाव होते हुए भी वहाँ के निवासियों में हिंदी प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। चौतगा ग्रांट और जियावाडी ग्रांट के लगभग सभी विद्यालयों में हिंदी की प्रारंभिक शिक्षा दी जाती है। कुछ हाई स्कूलों में दसवीं कक्षा तक हिंदी शिक्षा का प्रबंध है; भारतीय हिंदी परीक्षाओं— विशेषकर अंतर्राष्ट्रीय विद्यापीठ, लखनऊ की परीक्षाओं का प्रचार बढ़ रहा है। श्री श्रीराम वर्मा, श्री रामाश्रय वर्मा आदि कई हिंदी प्रेमी वहाँ हिंदी के उत्तरोत्तर प्रचार के लिए दत्त-चित्त हैं। श्री श्रीराम वर्मा ने इसी उद्देश्य से इसी वर्ष भारत का भ्रमण किया है।

ORIENT LONGMANS LTD.

Publishers

(Incorporated in India)

BOMBAY CALCUTTA MADRAS

To Professional Men and Scientists we offer a fine range of Technical books from Medicine to Meteorology.

To Teachers and Students we offer Philips' Globes, Atlases and Charts, Georama Illuminated Globes, Webster's and other Dictionaries and a wide range of School and College Text-books. Also many valuable books for Post-Graduate studies.

To The General Reader we offer a representative selection of fiction, belles-letters, critical and reference works and books on games and pastimes.

*

Sole Agents in India, Pakistan, Burma and Ceylon for

LONGMANS, GREEN & CO. LTD. London, Cape Town & Melbourne.
LONGMANS, GREEN & CO. Inc., New York.
THE ATHLONE PRESS, London.
CHILDREN'S PRESS Inc., Chicago.
CONSTABLE & CO., LTD. London.
EDWARD ARNOLD & Co, London.
EDWARD STANFORD LTD. London.
THE ENGLISH UNIVERSITIES PRESS, London.
GEORGE PHILIP & SON LTD. London
G. BELL & SONS, LTD. London.
HUTCHINSONS, UNIVERSITY LIBRARY, London.
ROBERT GIBSON & SONS (GLAS) LTD. Glasgow.
RUPERT HART-DAVIS LTD. London.
SIDGWICK & JACKSON LTD. London.
THAMES & HUDSON, London.
TURNSTILE PRESS, LTD. London.
UNIVERSITY OF LONDON PRESS. LTD. London.

Enquiries regarding any of the above may be sent to

ORIENT LONGMANS LTD.

BOMBAY : Nicol Road, Ballard Estate,
P. O. Box. 704, Telegrams : 'LONGMANS'
MADRAS : 36-A, Mount Road
P. O. Box. 310, Telegrams : 'LONGMAST'
CALCUTTA: 17, Chittaranjan Avenue,
P. O. Box 2146, Telegrams : 'LONGFEX,.

लखनऊ विश्वविद्यालय प्रकाशन

हिंदी काव्य शास्त्र का इतिहास

(ले०-डा भगीरथ मिश्र एम०ए०)

इसमें हिंदी काव्य शास्त्र जैसे गंभीर विषय पर लिखे गए मुद्रित और हस्तलिखित लगभग समस्त ग्रंथों का परिचय और विश्लेषण है। इस ग्रंथ पर लेखक को पी-एच० डी० की उपाधि मिली है। मू० १०) डाक व्यय १)

साहित्य का मर्म

(ले०—डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी)

द्विवेदी जी के हिंदी साहित्य संबंधी तीन व्याख्यानों का संग्रह। साहित्य प्रेमियों और आलोचकों के मनन की चीज है। मू० १।)

अध्ययन

डा० भगीरथ मिश्र एम० ए० के विभिन्न साहित्यिक विषयों पर लिखे हुए गंभीर और आलोचनात्मक लेखों का सुंदर संकलन। मूल्य ३)

निबंधकार बालकृष्ण भट्ट

श्री गोपाल पुरोहित एम० ए० लिखित बालकृष्ण भट्ट की रचनाओं की आलोचना। मू० २।।)

एक मात्र विक्रेता

विद्यामंदिर, रानीकटरा, लखनऊ

आदर्श पुस्तक मन्दिर, चौक, इलाहाबाद

द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

महापुरुषों की जीवनियाँ; मूल्य प्रत्येक ।=)

महाराणा प्रताप, वीर दुर्गादास, स्वामी रामतीर्थ, सम्राट अशोक, महाराज पृथ्वीराज, सरदार पटेल, सरोजनी नायडू, बा० राजेंद्रप्रसाद, पं० जवाहरलाल नेहरू, मीरा बाई, पं० चंद्रशेखर आजाद, स्वामी दयानन्द, गुरु गोविंद सिंह, शिवाजी, लाला लाजपत राय, महात्मा गाँधी, महामना मालवीय जी, महारानी लक्ष्मीबाई, राजगोपालाचार्य, गणेशशंकर विद्यार्थी, सुभाषचंद्र बोस, विजयलक्ष्मी पण्डित, लोकमान्य तिलक, विद्यासागर, भगतसिंह, गोपालकृष्ण गोखले, पण्डित गोविंद वल्लभ पंत ।

बालोपयोगी कहानियों की पुस्तकें; मूल्य प्रत्येक ।=)

गदहेराम विलायत को, जादू का झूला, नवद्वीप का राजकुमार, जादू का घड़ा, जादू का पहाड़, सोने का किला, भूत से भेंट, भालू की दुलहिन, रानी तितली, बच्चों का खेल, जादू का महल, लालपरी, नया जादूगर, बन्दर बाबू, जादू की मोटर, जादू की परी, काठ की राजकुमारी, शाबास मुन्ने, बागड़बिल्ला दिल्ली को, अजगर की पंडिताई, खरहे का ब्याह, डा० चीपोंग, चिपकू बाबू, सेठ तिकड़म चन्द, जंगल के साथी, नये शिकारी, चुहिया चली विलायत को, पकपक रोया क्यों, गुरुचेला, वीरों की कहानियाँ ।

मौलिक सामाजिक एवं शिक्षाप्रद उपन्यास—बीसवीं सदी १।।।), सन्यासिनी २।।), सजनी २।।), विकल विश्व २।।), उलटी गंगा २।।); यह बदलती दुनिया २।।); कल्पवृक्ष २।।); कुसुम २।।); अमर प्रेम ३); मनुष्य का मूल्य ३।); पथभ्रष्टा २); प्रेम का मूल्य २।।); सुहागदान २।।); तोड़ दो बंधन २।।) निमियाँ ५); आदर्श पाक विज्ञान ३।।)

जासूस महल-प्रकाशन

सूटकेस की चोरी १), खूनी एक्टरेस ।।।), हत्या का बदला ।।।) भयानक भंडाफोड़ ।।।); घूमती छाया २); खूनी आँख १।।); विचित्र हत्या ।।।); रेगिस्तान का कैदी ।।।); बैतालराज ।।।); मृत्यु गृह ।।।); चीनी लुटेरा ।।।), लुटेरा नकाब पोश ।।।)

SERIES OF

Twentieth Century English-Hindi DICTIONARY

BY

SUKHSAMPATTIRAI BHANDARI M.R.A.S.

——X——

The most comprehensive and upto-date English-Hindi Dictionary, containing exhaustive Glossaries of almost all physical and Social Sciences.

An unique work ever published in any Indian language.

Ist Volume:—Dictionary of Administrative and Legal Terms.

The first volume of our 20th. Century English Hindi Dictionary contains exhaustive Administrative and Legal Terms, which will be extremely useful to Statesmen, Administrators, Heads of the Departments, Government Officials of various departments, Lawyers, Educationist, as it contains Governmental and Constitutional Terms, Financial and Taxational Terms, Foreign Exchange Terms, Forestry Terms, Educational Terms, Municipal and Health Terms, Village uplift and Revenue Terms, Police departmental Terms and Excise Terms.

This volume has been prepared with a view to meet the requirements of the Executive and Judicial departments. No person interested in the above subjects should be without this Volume. Price Rs. 17-8-0

2nd. Volume:—20th. Century English-Hindi DICTIONARY.

The second Volume contains terms relating to war and its Mechanism, Psychology, Philosophy, Geography, History, Insurance, Banking, Labour, International Politics, Agriculture, Etc.,

Price Rs. 15-0-0

3rd. Volume:—Dictionary of Scientific and Technical Terms.

This is the most of useful volume to students of Science, Literature and Philology as also to Industrialists, as it contains terms relating to Biology, Philology, Mill-Industry, Literature Physical Science, Chemical Science and Mathematics. Price Rs. 17-0-0

4th. Volume:—Dictionary of Industrial Terms.

The fourth volume contains terms relating to Chemical Industries, Textile Industry, Sugar Industry, Dairy Industry, Glass Industry, Cement Industry, Tanning Industry, Silk Industry, Bee-Keeping, Minerals & Metals, Cooperation and Cooperative Societies. Exhaustive explanations and Processes of Manufacture have also been given in the light of recent researches. Price Rs. 12-8-0

5th. Volume:—20th. Century English-Hindi DICTIONARY.

The 5th. Volume contains Dictionary of Socialism, Dictionary of Engineering Terms (Containing Electrical Engineering Terms, Automobile-Engineering Terms, Aero-Engineering Terms, Radio Engineering Terms etc. etc. with their Hindi equivalents and explanations), Dictionary of Indian Constitutional Terms (Terms used in the Indian Constitution of our Free India with their Hindi equivalents). Dictionary of Journalism containing Terms relating to Journalism as Practised in Europe, America and India, Dictionary of International Law, Containing Terms relating to law of Nations and allied subjects, Dictionary of Cinematographical Terms etc. etc.

Price Rs. 12-8-0

6th. Volume:-20th. Century English Hindi Political Dictionary.

The 6th. Volume—The 20th. Century Political Dictionary contains the most upto-date and comprehensive glossary of Political Terms along with their Hindi equivalents. The author has tried to give explanations of all the political terms used in various countries of Europe, America and Asia in the light of world's famous authors. In our Free India every gentleman with progressive Political outlook should have this book, which would give him most valuable information about the political philosophies and political systems of all the civilised world. Price Rs. 7-8-0

Dictionary Publishing House,
Brahmapuri, Ajmer.

Just published *Just published* *Just published*

Hindi History of Indian Independence Movement

By

SUKHSAMPATTIRAI BHANDARI M.R.A.S.



This is the most comprehensive & the most authoritative research history of our great national movement for freedom ever published in any Indian or foreign language.

The learned author has thrown historical light on the various phases of the freedom movement & its great leaders & heroes. Revolutionary and non-violent. freedom-struggles have been fully dealt with.

Several obscure historical & political facts unknown to recent history have also been newly brought to light.

Very highly spoken of by our leaders & scholars of international repute.

Everybody interested in our great liberation movement should have this standard work which would ever appeal to the patriotic sentiments of our youths—the future pillars of our great nation.

This great work contains 920 pages & is cheaply priced at Rs. 8/8/- only.

MANAGER,

Dictionary Publishing House,

BRAHMAPURI, AJMER.

तरुण-भारत-ग्रंथावली, दारागंज, प्रयाग ७

की सर्वोपयोगी पुस्तकें

१—प्राण रहस्य—स्व० सर्वदानन्द सरस्वती २।।)
२—हमारा स्वर मधुर कैसे हो—श्री रामरत्नाचार्य ।।।)
३—कान के रोग और उनकी चिकित्सा—एक अनुभवी ।।।)
४—भोजन और स्वास्थ्य पर गांधी जी के प्रयोग २)
५—ब्रह्मचर्य के अनुभव—म० गांधी १)
६—हमारे बच्चे स्वस्थ और दीर्घजीवी कैसे हों—महेंद्रनाथ पांडे १।)
७—उषः पान—लल्ली प्रसाद पांडे ।।।)
८—रास पंचाध्यायी व भ्रमर गीत—डा० उदयनारायण त्रिपाठी, एम० ए०, डी० लिट् २)
९—साहित्य सुषमा—पं० नन्ददुलारे बाजपेयी २)
१०—साहित्य-सीकर—आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी २)
११—विश्वास—सेकसरिया पारितोषिक प्राप्त ग्रन्थ ।।।)
१२—गोरा बादल की कथा—जटमल ।।।)
१३—बिहारी दर्शन—श्री गङ्गाधर इन्दूरकर १)
१४—धर्म शिक्षा—पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी ३)
१५—गार्हस्थ्य शास्त्र—पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी २)
१६—सदाचार और नीति—पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी २)
१७—अब्राहम लिंकन—पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी १)
१८—रक्तरंजित स्पेन—भूमिका पं० जवाहरलाल नेहरू १।।)
१९—सचित्र दिल्ली—दत्तात्रेय बलवंत पारसनीस १।।)
२०—फ्रांस की राज्यक्रान्ति—बा० प्यारेलाल गुप्त ३)
२१—निशीथ नाटक—कुमार हृदय ।।।)
२२—बच्चों की कहानियाँ—(दो भाग) लक्ष्मीधर वाजपेयी प्रत्येक ।।)
२३—दयालु माता—सन्तराम
२४—सद्गुणी पुत्री—सन्तराम

बड़ा सूचीपत्र मँगाइए।

हमारा साहित्यिक प्रकाशन

हमने अब तक हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वानों की अन्यान्य अमूल्य कृतियों का प्रकाशन किया है। हमारे प्रकाशनों का समुचित आदर कर हिन्दी संसार ने हमें प्रोत्साहित किया है।

बाल-साहित्य प्रकाशन

हिन्दी-संसार में बाल-साहित्य का अभाव है। इस अभाव की पूर्ति हमने हिन्दी के प्रमुख लेखकों, बाल मनोवैज्ञानिकों, एवं विद्वानों की सहायता से की है। अपने बच्चों को इन सुन्दर पुस्तकों को पढ़ने का अवसर अवश्य दें।

किशोर-भारती

(बालक-बालिकाओं की सचित्र मासिक पत्रिका)

बच्चों के लिए अनुपम भेंट है। भाँति भाँति के चित्रों से भरपूर— जैसी कि न आज तक देखी गयी, और न संभावित है। अधिक मैटर, सुन्दर छपाई, फिर भी कम मूल्य इसकी विशेषता है। वार्षिक ४) एक प्रति ।=)

पाठ्य पुस्तकें

भिन्न-भिन्न प्रान्तों के शिक्षा विभागों द्वारा स्वीकृत एम० ए०, बी० ए०, साहित्यरत्न, इंटर, हाई स्कूल, जूनियर हाई स्कूल, प्राइमरी कक्षाओं का सूचीपत्र तुरंत मँगावें।

श्रेष्ठतम मुद्रणालय

हर प्रकार के मुद्रण का कार्य विश्वस्त एवं संतोषजनक हमारे यहाँ होता है। रंगीन छपाई (कलर प्रिंटिंग) हमारी विशेषता है। परीक्षा करें।

संस्थाओं एवं पुस्तक विक्रेताओं को विशेष सुविधायें दी जाती हैं। पत्र आने पर सूचीपत्र एवं नियमादि भेजे जायँगे।

युनिवर्सल प्रेस

मुद्रक, प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

१६ शिवचरणलाल रोड, प्रयाग

भारतीय ग्रन्थमाला

दारागंज (इलाहाबाद)

स्थापित—१९१५ संस्थापक—भगवानदास केला

क्षेत्रः—

१—अर्थशास्त्र
२—नागरिकशास्त्र
३—राजनीति
४—समाजशास्त्र
५—इतिहास

विशेषताएँः—

१—अछूते और मौलिक विषय
२—प्रामाणिक लेखक
३—ठोस साहित्य
४—कम मूल्य
५—पुस्तक विक्रेता लाइब्रेरी तथा पाठकों को विशेष सुविधा

हिंदी के अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र और राजनीति विज्ञान सम्बन्धी साहित्य के प्रकाशक

राष्ट्रधर्म प्रकाशन लिमिटेड द्वारा प्रकाशित—

सरल, रोचक तथा विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टिकोण से लिखी, गई प्रसिद्ध साहित्यकार श्री के० एम० मुंशी खाद्य मंत्री, तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन - पत्रिका द्वारा प्रशंसित

तथा

उत्तर प्रदेशीय ग्राम पंचायत राज्य विभाग द्वारा स्वीकृत

सम्राट चंद्रगुप्त ।।।) तथा **जगद्गुरू शंकराचार्य** १।।)

पढ़िये

श्री अटलबिहारी बाजपेयी द्वारा सम्पादित उत्तर प्रदेश का प्रमुख दैनिक

स्वदेश

ताजे समाचार तथा निष्पक्ष व निर्भय विचारों के लिए प्रसिद्ध

ध्येय दर्शन ।।।)

राष्ट्रचेतना का प्रमुख हिन्दी साप्ताहिक

पाञ्चजन्य

जनता की भावनाओं का प्रतिनिधि देश विदेश में पहुँचनेवाला तथा ग्रामीण जनता का विशेष प्रिय एक मात्र साप्ताहिक पत्र

वर्तमान समस्याओं पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संचालक

श्री गुरूजी के विचार पढ़िये

राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि०, सदरबाजार, लखनऊ

भारतीय गौरव ग्रंथमाला, लखनऊ

की

बालोपयोगी हिंदी पुस्तकें

हमने संस्कृत के महाकवियों की रचनाओं का बालकों के लिए संक्षिप्त कथानक निकालने का आयोजन किया है। निम्नलिखित पुस्तकें तैयार हैं—

बाल-भास—स्वप्नवासवदत्ता ।)

बाल-कालिदास—मालविकाग्निमित्र ।); विक्रमोर्वशी ।-); शकुंतला ॥)

बाल-दिङ्नाग— कुंदमाला ।=)

बाल-श्रीहर्ष—प्रियदर्शिका ।); नागानंद ।-); रत्नावली ।-)

बालभवभूति—महावीरचरित्र ।≡); उत्तररामचरित ।≡)

बाल-नारायणभट्ट— वेणी संहार ।=)

बाल-विशाखदत्त— मुद्राराक्षस ॥)

सचित्र बीरबल—(२ भाग) मोटे आर्ट पेपर पर २॥)

डा० कैलाशनाथ भटनागर के अन्य ग्रंथ

नाट्य-सुधा—(संवर्द्धित संस्करण) ४॥)

भीम-प्रतिज्ञा—(तीसरा संस्करण) १)

कुणाल—(चौथा संस्करण) १॥)

श्रीवत्स—(„ „) १॥)

एकांकी नाटक निकुंज—(नाटक) भाग १ २)

कविसम्राट कालिदास—(दूसरा संस्करण) १)

नव सतसई-सार—(सतसई-साहित्य का दिग्दर्शक) ४)

कुमार-संभव सर्ग ५—(संस्कृत-हिंदी) १॥)

रामवनगमनम्— („ „) १॥)

भारतीय गौरव ग्रंथमाला, ७२ हजरतगंज, लखनऊ

प्रकाशन के पूर्व हमारी सेवाएँ लीजिए

इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स लि०

जीरोरोड : इलाहाबाद

हर प्रकार के रंगीन, सादे, हाफटोन तथा लाइन ब्लाकों के लिए एक बार अवसर दीजिए।

प्रत्येक ब्लाक का छपा प्रूफ हमारी विशेषता है।

सस्ते रेट्स—सभी सुविधाएँ—शीघ्र सेवा।

राष्ट्र निर्माण के लिए नए साहित्य का निर्माण भी होना है

हमारे प्रकाशनों में उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ, राजनीति तथा सभी विषयों की पुस्तकें हैं। इनकी उपयोगिता अनेक विद्वानों ने स्वीकार की है और छपाई, सुन्दरता, मूल्य की कमी आदि की दृष्टि से भी इनको श्रेष्ठ माना है। विशेष जानकारी के लिए पत्र व्यवहार करें।

पुस्तक विक्रेताओं तथा प्रकाशकों के लिए विशेष सुविधाएँ हैं।

पत्र लिखकर हमारा रंगीन सूचीपत्र मँगाइये

न्यू लिटरेचर : जीरो रोड : इलाहाबाद

हिंदुस्तानी पब्लिकेशंस, इलाहाबाद के
उपन्यास तथा अन्य पुस्तकें

(अ) उपन्यास—

१—नई इमारत—ले० श्री 'अंचल जी	मू० ६)
२—चढ़ती धूप— ,,	४॥)
३—क्रांति दूत—ले० श्री श्रीकृष्णदास जी	४॥)
४—विराग—श्री गंगाप्रसाद जी मिश्र	१॥)
५—महिमा— ,,	२)
६—दिव्यगंधा—[वैदिककालीन] श्री बेनीप्रसाद बाजपेयी	२॥)
७—चंद्र मित्रा—[मौर्यकालीन] ,,	२॥)
८—प्रभा बाई—[राजपूतकालीन] ,,	२॥)
९—सुमंगला—[कुशनकालीन] ,,	२॥)
१०—राजेश्वरी—[राजपूतकालीन] ,,	२॥)
११—चंगावती—[मुस्लिमसंक्रमण-कालीन] ,,	३)

(ब) कहानियाँ—

१२—रागिनी—श्रीमती उषादेवी मित्रा	१॥)
१३—हरसिंगार—सर्वश्री इलाचंद जोशी, बच्चन आदि	३)

(स) कविता संग्रह—

१४—बेला—पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	२)
१५—नये पत्ते— ,,	२)

(द) विविध—

१६—जो न भूल सका—भदंत आनंद कौशल्यायन	३)
१७—भिक्षु के पत्र— ,,	१॥)

विशेष विवरण मँगाइए।

मैनेजर, हिंदुस्तानी पब्लिकेशंस,

२४६, शाहगंज, इलाहाबाद।

STUDENTS' FRIENDS

(Publishers) ALLAHABAD & BENARES.

(*a*) *Publications for Degree Classes*

Standard Essays—(Prof. Kulkarni)	Rs. 3/8
Elements of Practical Geography(Prof. Dutt & Singh)	,, 10/-
Hydro Statics—(Prof. R. Chaudhari)	5/-
Electricity & Magnetism—(Dr. Deodhar & Singhwi)	15/-
A Text Book of Analytical Chemistry—(Dr. Satya Prakash & Tewari)	Rs. 4/8
Hamlet—(Prof. Kulkarni)	Rs. 5/8
Twelfth night—(Prof. Kulkarni)	Rs. 3/8
A Midsummer Night's Dream—(Prof. Kulkarni)	Rs. 3/-
Industrial Problem in India—(Jain)	Rs. 7/8
पाश्चात्यदर्शन—(रामप्रकाश जैन)	Rs. 4/-
बौद्ध दर्शन—(चन्द्रधर शर्मा)	Rs. 3/12

(*b*) *For Intermediate Classes*

Julius ceaser—(with Hindi)	Rs. 3/8
The Traveller—(with Hindi)	Rs. 1/11
Pract. Guide to Inter. Examinee	-/8/-
Elem. Chemical calculation	1/8
भारत का वृहत इतिहास—(श्रीनेत्र पाँडे)	१०)
सामान्य रसायन शास्त्र—(सत्यप्रकाश)	८)
प्रायोगिक रसायन— (,,)	२)
प्रायोगिक भौतिक विज्ञान—(डा० सिंह)	३)
सामान्य ज्ञान प्रवेश—(दूसरा भाग)	१।।)
कार्बनिक रसायन—(सत्यप्रकाश)	५)
भौतिक विज्ञान प्रवेशिका—(दूसरा भाग)	७)

(*c*) *For High School Classes*

नागरिकशास्त्र—(भटनागर)	१)
ज्यामिति शिक्षा—(एलीमेंट्री)	१)
भारतीय शासन व्यवस्था—(भटनागर)	१)
ज्यामिति शिक्षा—(चट्टोपाध्याय)	२)
सामान्य ज्ञान प्रवेश—(चक्रवर्ती)	१।।)
प्रारंभिक विश्व का इतिहास	३)
ज्ञान राशि—(भटनागर)	।।।≈)
एक फूल—(भटनागर)	।।≈)

(*d*) *For Class VIII*

Students English Reader	-/13/-
भाषा सौरभ	१)

बालकों के लिए बिल्कुल नई चीज

सचित्र, मनोरंजक, शिक्षाप्रद, सरल, रोचक, जीवन को ऊँचा उठानेवाली सस्ती पुस्तकें (प्रत्येक का मूल्य ।≈))

१ श्रीकृष्ण
२ महात्मा बुद्ध
३ रानाडे
४ अकबर
५ महाराणा प्रताप
६ शिवाजी
७ स्वामी दयानन्द
८ लो० तिलक
९ जे० एन० ताता
१० विद्यासागर
११ स्वामी विवेकानंद
१२ गुरु गोविंदसिंह
१३ वीर दुर्गादास
१४ स्वामी रामतीर्थ
१५ सम्राट अशोक
१६ महाराज पृथ्वीराज
१७ रामकृष्ण परमहंस
१८ महात्मा टालस्टाय
१९ रणजीत सिंह
२० महात्मा गोखले
२१ स्वामी श्रद्धानन्द
२२ नैपोलियन
२३ बा० राजेन्द्रप्रसाद
२४ सी० आर० दास
२५ गुरू नानक
२६ महाराणा साँगा
२७ मोतीलाल नेहरू
२८ जवाहरलाल नेहरू
२९ श्रीमतीकमलानेहरू
३० मीराबाई
३१ इब्राहीम लिंकन
३२ अहिल्याबाई
३३ मुसोलिनी
३४ हिटलर
३५ सुभाषचन्द बोस
३६ राजा राममोहनराय
३७ लाला लाजपतराय
३८ महात्मा गाँधी
३९ महामना मालवीयजी
४० जगदीशचन्द बोस
४१ महारानीलक्ष्मीबाई
४२ महात्मा मेजिनी
४३ महात्मा लेनिन
४४ महाराज छत्रसाल
४५ अब्दुल गफ्फारखाँ
४६ मुस्तफा कमालपाशा
४७ अबुल क० आजाद
४८ स्टालिन
४९ वीर सावरकर
५० महात्मा ईसा
५१ वीर हम्मीरदेव
५२ डी० वेलरा
५३ गैरी वाल्डी
५४ स्वामी शङ्कराचार्य
५५ सी. एफ. एन्ड्रूज
५६ गणेशशंकर विद्यार्थी
५७ डा० सनयातसेन
५८ स० गुरु रामदास
५९ महारानी संयोगिता
६० दादाभाई नौरोजी
६१ सरोजिनी नायडू
६२ वीर बादल
६३ पट्टाभिसीतारमैया
६४ देवी जोन
६५ प्रिन्स बिस्मार्क
६६ कार्ल मार्क्स
६७ कस्तूर बा
६८ रवीन्द्रनाथ ठाकुर
६९ सरदार पटेल
७० संत ज्ञानेश्वर
७१ जय प्रकाशनारायण
७२ राज गोपालाचार्य
७३ चन्द्रशेखर आजाद
७४ सरदार भगतसिंह
७५ बन्दा बैरागी
७६ राधा कृष्णन
७७ राजर्षि टंडन जी
७८ गोविंदवल्लभ पंत
७९ महारानी दुर्गावती
८० महर्षि रमण
८१ योगी अरविंद

छात्र हितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग

ब्रज साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान *श्री प्रभुदयाल मीतल* द्वारा लिखित
'ब्रज-साहित्य माला' की नवीन पुस्तकें

अष्ट छाप-परिचय

भूमिका लेखक—डा० वासुदेवशरण, राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली

सूरदास-नन्ददासादि अष्टछाप के आठों भक्त कवियों का आलोचनात्मक सचित्र जीवन-वृत्तांत, काव्य-संकलन और वल्लभ संप्रदाय का विवरण ।पृ० ४०० मू० ५)

सूर-निर्णय

परिचय लेखक- डा० धीरेन्द्र वर्मा, अध्यक्ष-हिंदी विभाग, प्र.वि.वि.

सूरदास के जीवन, ग्रंथ, सिद्धांत और काव्य की निर्णयात्मक समीक्षा, जिसमें सूर सम्बन्धी नवीनतम सामग्री का समावेश है। पृ० ३८० मू० ५)

ब्रजभाषा साहित्य का नायिकाभेद

भूमिका लेखक—डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, उपकुलपति—सागर वि. वि.

रीति-काव्य और उसके प्रमुख अंग नायिकाभेद का अपूर्व विवेचन, नायिकाभेद की सैकड़ों उत्कृष्ट कविताओं का संकलन। पृ० ४५६ मू० ६)।

ब्रजभाषा साहित्य का ऋतु सौंदर्य

भूमिका लेखक—महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन

ब्रजभाषा काव्य की षट्ऋतु विषयक सर्वोत्कृष्ट रचनाओं का संकलन, प्रत्येक ऋतु का साहित्यिक परिचय। पृ० २८०, मू० ४)

सूरदास की वार्ता

श्री हरिराय जी लिखित ब्रजभाषा गद्य की प्राचीन पुस्तकें जिस में सूरदास का प्रामाणिक जीवन-वृत्तांत है। मू० १)

हमारी अन्य पुस्तकें

सूर-विनय पदावली—सूरदास के विनय वैराग्य के पदों का संकलन

राजपूती कथाएँ—राजस्थान की ओजस्वी कथाएँ मू० ।।।)

मेवाड़ की अमर कथाएँ—मेवाड़ की प्रसिद्ध कथाएँ। मू० ।।।)

मिलने का पता—**अग्रवाल प्रेस, मथुरा**

द्रव्य, साख तथा विदेशी विनिमय

[ले०—प्रो० श्री श्रीधर मिश्र तथा प्रो० रामेश्वर मिश्र]

इसमें द्रव्य तथा द्रव्य सम्बन्धी विशेषतः भारतीय समस्याओं का बड़े ही उत्तम, स्पष्ट तथा प्रभावोत्पादक ढंग से वर्णन किया गया है। विषय का विवेचन बहुत ही सुन्दर तथा सुचारु रूप से हुआ है और द्रव्य स्फीत से उत्पन्न वर्तमान कठिनाइयों का विश्लेषण वास्तविक ढंग से किया गया है। ऊँची कक्षा के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। मूल्य ४)

अध्ययन

[ले०—डा० भगीरथ मिश्र एम० ए०, पी-एच० डी०]

इसमें डा० मिश्र जी के साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों तथा समस्याओं पर सुलझे हुए विचार तथा गवेषणापूर्ण लेख हैं। साथ ही कवि और काव्य के आदर्शों एवं कर्तव्यों की ओर भी महत्वपूर्ण संकेत हैं। आकर्षक आवरण। मू० ३)

—(०)—

इनके अतिरिक्त हमारे यहाँ उच्चकोटि के लेखकों की कृतियाँ तथा साहित्य सम्मेलन प्रयाग आदि परीक्षाओं की पुस्तकें भी मिलती हैं। विशेष विवरण के लिए लिखें।

विनीत—

लक्ष्मीकांत मालवीय बी० ए०, एल-एल० बी०

व्यवस्थापक—

मालवीय पुस्तक भवन, अमीनाबाद, लखनऊ

हमारी किशोरोपयोगी पुस्तकें

१—जगद्गुरू भारत |||-)
२—नया खून ||≡)
३—सौर्य-परिवार ||=)||
४—अन्त्याक्षरी—१ ||)
५—अन्त्याक्षरी—२ |||)
६—चार चाँद |||)
७—वीर गाथा |||)
८—देश-देश की दन्त कथाएँ |||)
९—सेवाग्राम की तीर्थयात्रा ||=)||
१०—बाईसवी सदी में रुस्तम ||)
११—त्रैभाषिक नाम कोष १|)
१२—सुमार्ग १)
१३—सात सितारे |||=)
१४—कवि दरबार १)
१५—आविष्कारों की कहानी |||=)
१६-किशोरावस्थाकीनागरिकता |||=)
१७—वीर बालक १)
१८-इंगलैंड का वैधानिक विकास १)
१९—विचित्र प्रकृति ||=)
२०—अनोखी कहानियाँ ||)
२१—सच्चा प्रेम |=)
२२—पौराणिक कहानियाँ ||)
२३—वैज्ञानिक अभिनय ||=)
२४—सामाजिक अभिनय ||=)
२५—कथा कहानी |||)
२६—दुरूह यात्रायें ||)
२७—गाँव के भीतर |||)
२८—पंच परमेश्वर |||)
२९—भारत के बाहर भारतीय ||)
३०—बड़ों की बातें ||)
३१—महान आत्मा ||)
३२—दंत कथाएँ |-)

शिक्षा स्वाध्याय माला पूरा सेट ८)

१—कागज़
२—ज्वालामुखी
३—इतिहास के पूर्व
४—आज का अमरिका
५—क्ष-किरण
६—अमरीका की गंगा
७—लाल राज्य
८—प्राणियों की लीलायें
९—छाया चित्र
१०—सोने का मुकुट
११—डाक का टिकट
१२—स्टोव
१३—गांधी जी
१४—राष्ट्र-पताका
१५—सभ्यता का विकास
१६—नोबेल पुरस्कार
१७—भारत के प्राचीन ग्रंथ
१८—तिब्बत यात्रा
१९—निशा के दीपक
२०—आज का रूस
२१—गंगा

टी० सी० ई० जर्नल्स एण्ड पब्लीकेशन्स लि०
पोस्ट बाक्स नं० ६३, लखनऊ

हमारे कुछ उपयोगी प्रकाशन

भारतीय इतिहास का विकास

[इंटरमीडिएट परीक्षा के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए]

लेखक—डा० रामप्रसाद त्रिपाठी एम० ए०, डी० एस-सी (लंदन)

इतिहास जैसे जटिल विषय को, विद्यार्थियों की पात्रता के अनुकूल सरल, सुग्राह्य और रोचक शैली में प्रस्तुत करना ही इतिहासकार की योग्यता का परिचायक है। त्रिपाठी जी की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। मू० ४)

संसार के इतिहास की रूपरेखा

ले०—श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी एम० ए० (लंदन)

हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित सिलेबस के अनुसार लिखी गयी यह पुस्तक संसार के इतिहास का हस्तामलक है। मू० २॥)

विद्वान् लेखक श्री रूपनारायण पाण्डेय लिखित—

(१) सुबोध बाल भागवत मू० ३।)

(२) सचित्र सरल महाभारत ,, ५)

(३) सचित्र सरल रामायण ,, ५)

सरल और सुबोध भाषा-शैली में लिखे गये, मोटे टाइप में सुंदर छपे और रंगबिरंगे अनेक चित्रों से युक्त यह बालोपयोगी प्रकाशन बिल्कुल नया है।

विशेष विवरण के लिए बड़ा सूचीपत्र मँगाइए।

हिन्दुस्तानी बुकडिपो, ४०६, फतेहगंज, लखनऊ

बंबई भूषण प्रेस, मथुरा

के

छात्रोपयोगी नवीन प्रकाशन

दैनिक ज्ञान विज्ञान

(ले० श्री प्रेमनारायण टंडन, एम० ए०)

जनरल नालेज (General Knowledge) की सभी आवश्यक बातों से परिपूर्ण यह पुस्तक हाई स्कूल, विशारद, प्रभाकर तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विशेष उपयोगी है।

मूल्य २॥)

दैनिक ज्ञान विज्ञान की रूपरेखा

समस्त ज्ञातव्य बातों का संक्षिप्त कोश। आपके दैनिक उपयोग की सभी बातों की जानकारी इसमें मिलेगा। मूल्य १॥)

अन्य उपयोगी प्रकाशन

१—अमर गाथाएँ	—ले० श्री व्यथित हृदय	१)
२—सच्चे कर्मवीर	(बालोपयोगी)	।=)
३—बहिन के पत्र	(,,)	।=)
४—अमर आत्माएँ	(,,)	।=)
५—अमिट पदचिन्ह	(,,)	।=)
६—राष्ट्रीयता का विकास	(,,)	।=)
७—स्वतंत्र भारत और किशोर कर्तव्य		।=)

बड़ा सूचीपत्र मँगाइये—

बंबई भूषण प्रेस, मथुरा।

हिन्दी में हमारा उच्चकोटि का प्रकाशन

उपन्यास तथा कहानी संग्रह

१. अनुरागिनी (उप०)
लें० श्री गोविन्द वल्लभ पंत ४।।)

२. सती (उप०) ले० श्री साने गुरूजी ३)

३. उपेक्षिता (उप०)
ले० श्री ग० त्र्यं० माडखोलकर १।)

४. पैरोल पर (उप०)
ले० श्री ब्रजेन्द्रनाथ गौड़ १।।)

५. एप्रिल फूल (कहा०)
ले० श्री० ना० श्या० चिताम्बरे ३)

६. संगम (कहा०)
ले० श्रीना० श्या० चिताम्बरे ३)

७. विश्राम (कहा०)
ले० साने गुरू जी १।।।)

८. अधूरी साधना (कहा०)
ले० श्री० अविनाशकु० श्रीवा० १।।)

६. बिखरी कलियाँ (कहा०)
ले० श्री ब्रजेन्द्रनाथ गौड़ १।।)

१०. कीमती आँसू (कहा०)
ले० श्री० रा० र० खाडिलकर ।।।)

साहित्यिक प्रकाशन

१. पद्मावत का भाष्य
ले० प्रो० मुंशीरामशर्मा एम.ए. ६)

२. कवि प्रसाद आँसू तथा अन्य कृतियाँ—ले० प्रो० विनय मोहन शर्मा एम.ए. एल-एल. बी.
द्वितीय संस्करण २।।)

३. हिन्दीसाहित्य का शालोपयोगी इतिहास—ले० श्रीकृष्ण शुक्ल २)

४. पंत और गुञ्जन—ले० हरिहर निवास द्विवेदी एम.ए.एल.एल.बी.
तृतीय संस्करण १।।)

५. छब्बीसकवियों की समालोचना
ले० दीननारायण द्विवेदी एम.ए. सा० र० पंचम संस्करण १।।)

बाल साहित्य

(अ) खरबूजे का बेटा ।।)

(आ) बच्चों की ५ कहानियाँ ।=)

(इ) बच्चों की ७ कहानियां ।=)

(ई) हँसी का फव्वारा ।)

(उ) गदहे की आत्म कथा ।)

(ऊ) सीप के मोती ≡)

(ए) भाई बहन ≡)

बड़ा सूचीपत्र आज ही मँगाइये—

शिवाजी पुस्तक मंदिर, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

हिन्दुओं का सर्वश्रेष्ठ धार्मिक ग्रन्थ

श्रीमद्भागवत

सरल हिन्दी भाषा, अक्षर-अक्षर का अनुवाद

भूमिका लेखक

स्वर्गीय महर्षि मदनमोहन मालवीय

अनुवादकर्ता—

पं० रूपनारायण पांडेय, भू० पू० माधुरी-सम्पादक

अनेक विद्वानों ने मुक्त कंठ से इसकी प्रशंसा की है। तभी तो स्वर्गीय महर्षि मदनमोहन जी मालवीय ने आदि से अन्त तक सुनकर इसकी प्रस्तावना लिखी है। साथ में कर्मकांड, ज्ञानकांड और भक्तिकांड का समन्वय करनेवाली विस्तृत भूमिका भी इसकी बड़ी विशेषता है।

देश के जाने-माने कलाकारों के बनाए और आर्ट पेपर पर छपे तिरंगे, दुरंगे और इकरंगे चित्रों ने इस पुस्तक में चार चाँद लगा दिए हैं। रेखाचित्र तो पृष्ठ में हैं। पक्की जिल्द। बड़ा आकार। मू० ?

हिंदी शब्द-कोश

हमारे विद्यार्थी 'हिंदी शब्द कोश' मू० २।।।) तथा 'सुलभ हिंदी शब्दकोश' मू० ४) का हिंदी जगत ने अच्छा स्वागत किया है। अब सेवा में वृहतकोष 'शब्द चिंतामणि' प्रस्तुत है। इसमें शब्दों का परिचय, भारत के प्राचीन तथा आधुनिक हिंदी कवियों की कविताओं द्वारा दिया गया है। अंत में संविधान सम्बन्धी अंग्रेजी शब्दों का हिंदी अनुवाद, लोकोक्तियाँ और मुहावरे, संख्याकोश तथा तत्सम कोश भी दिया गया है। इस में लगभग ७०,००० शब्द हैं।

मोटे सफेद कागज पर छपे लगभग १६०० पृष्ठों का यह बहुमूल्य कोश आप के हिंदी-ज्ञान की अभिवृद्धि में सहायक होगा।

विशेष विवरण के लिए बड़ा सूचीपत्र मँगाइए।

हिंदुस्तानी बुकडिपो, ४०६, फतेहगंज, लखनऊ

हमारे प्रकाशन

काव्य

पटेल अभिनंदन ग्रंथ १०)
चित्रा २)
वासंती २)
अंतरंगिणी २।)
पगध्वनि २)

उपन्यास

वह जो मैंने देखा (२ भाग) ५।।।)
अंगारों के दूत २।।)
हवाई छतरी १।।)
भाभी १।।)
तपस्या १।।।)
स्वदेश की सीमा पर १)

कहानी-संग्रह

उड़ते पंछी १।।)
धूप-छाँह १।)
राशन-कार्ड १)
पंचाग्नि १)
काग़ज़ की नाव १।।)
शतरंज की मोहरे २)

नाटक

मुक्ति-पथ १।।)
रामचरित १।।)

आलोचना और साहित्य

हिंदी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय [डा० बड़थ्वाल] ७)
मकरंद ,, ३।।)
कबीर [डा० बड़थ्वाल] ७)
सूरदास ,, १)
भूषण-विमर्श [भगीरथप्रसाद दीक्षित] ४)
साहित्य, साधना और समाज [डा० भगीरथ मिश्र] ४।।)
आधुनिक हिन्दी में आलोचना-साहित्य १)

विविध विषय

हमारे पड़ोसी राष्ट्र ३।।)
आधुनिक चीन १)
विटामिन और हीनताजनित रोग २।)
जनतंत्रवाद [डा० श्यामलाल पांडे] ८)
भोजन क्या, क्यों और कैसे ? ४)
हास्य के सिद्धान्त ३)

बालोपयोगी

चंद्रहास ।=)
उषा-अनिरुद्ध ।=)
जादू का घोड़ा ।=)
एक दिन का राजा ।=)
स्वप्न की सुंदरी ।=)
बाल तुलसीदास ।=)
बाल गांधी ।=)
बाल जवाहर ।=)
बाल पटेल ।=)

अवध पब्लिशिंग हाउस, पानदरीबा, लखनऊ ।

हमारा श्रेष्ठ प्रकाशन

डा० नगेन्द्र-कृत

रीति काव्य की भूमिका	४)
देव और उनकी कविता	६)
उपर्युक्त दोनों पुस्तकें (संयुक्त)	१०)
विचार और विवेचन	४)
विचार और अनुभूति	४)
छन्दमयी	२)
सियारामशरण गुप्त	४)

श्री उदयशंकर भट्ट-कृत

यथार्थ और कल्पना	२॥)
युगदीप	२)
धूमशिखा	२॥)
विजयपथ	१।)

श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी-कृत

गुप्तधन	२)
खाली बोतल	२)
उतार चढ़ाव	२॥)

हमारे अन्य प्रकाशन

वैशाली की नगरवधू (पूर्वार्द्ध)	६)
वैशाली की नगरवधू (उत्तरार्द्ध)	६)
हिन्दीभाषा व सा० का इतिहास	७॥)
धर्म के नाम पर	२)
जीवन के दस भेद	१)
भारत में इस्लाम	५)
तरलाग्नि	२)
मरी खाल की हाय	२)
अन्तस्तल	२॥)
राजपूत बच्चे	१॥)
स्त्रियों का ओज	१॥।)
अजीतसिंह	२।)
राजसिंह	२।)
पूर्णाहुति	२॥)
हिंदू राष्ट्र का नव निर्माण	५)
पाँच एकांकी	१॥)
हमारे लाल दिन	४)
व्यभिचार	४)
काम कला के भेद	५)
अछूत कौन और कैसे ?	४)
अपना घर	२)
बिखरी आशा	१)
चमकते टीले	१॥)
सभ्यता की देन	१॥)
प्रेम समाधि	२॥)
साहित्य चिन्ता	५)

फुटकर पुस्तकें

हमारे बाप	३)
क्रांतिका मूल स्रोत बालक	२॥)
वर्णाश्रम धर्म और समाजवाद	१)
बाल नाटक चन्द्रिका	१)
नारीज्ञान (नारीत्वका विवेचन)	२)
मनस्वी महापुरुष	१)
सन् ४२ की चिंगारी	१।)
काश्मीर की लूट	१॥)
ग्राम का वैद्य	१।)
ग्राम जीवन	१।)
श्रीमद्भगवद्गीता पद्य	२॥)

बालोपयोगी पुस्तकें

मौत से अठखेलियाँ	।≡)
नवीन भौगोलिक यात्रायें	।=)
हिमालय की सैर	।=)
साहस के पुतले	॥)
दुरंगे दृश्य, भाग १, २, ३, ४	१॥।-)
विचित्र संसार, ६ भाग	३)
शौर्य सुषमा	॥)
साहस संजीवनी	॥)
संस्मरण-सरिता	॥)
सेवा-स्रोत	॥)

गौतम बुकडिपो, नई सड़क, दिल्ली

शिक्षा-सम्बन्धी हमारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

शिक्षा-मनोविज्ञान की रूपरेखा

प्रस्तुत पुस्तक में बाल-मन का वैज्ञानिक वर्णन सरल, प्रवाहपूर्ण भाषा में किया गया है। विषय को बोधगम्य बनाने के लिये उदाहरणों का बहुत अधिक प्रयोग हुआ है। ट्रेनिंग कालेज एवं इंटर के शिक्षा मनोविज्ञान के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का समावेश तो इसमें है ही, प्रत्येक अध्याय का सारांश तथा तत्सम्बन्धी प्रश्न भी दे दिये गये हैं। पुस्तक में युक्त पारिभाषिक हिन्दी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय भी शब्दानुक्रमणिका में संग्रहीत कर दिये गये हैं। मूल्य ५॥)

शिक्षा-सिद्धान्त

इसमें ट्रेनिंग कालेज के विद्यार्थियों एवं अन्य शिक्षा-प्रेमियों को दृष्टि में रखकर उपयोगी शिक्षा-सिद्धांतों का सरल भाषा में मनोरंजक विवेचन है। आजकल शिक्षा में जिन अनेक पद्धतियों का प्रचार है उनका विवरण तथा समीक्षा इसमें है। मूल्य ३)

शिक्षालय संगठन तथा स्वास्थ्य

प्रस्तुत पुस्तक में प्रधानाध्यापक के कर्तव्य, अनुशासन की समस्या, विद्यार्थियों के स्वास्थ्य-रक्षा का प्रबन्ध, अभिभावकों का पाठशाला कार्य में सहयोग आदि पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य ३)

भारतीय शिक्षा विकास की कथा

इसमें भारतीय शिक्षा का विकास, उसकी नीति तथा उसके वर्तमान स्वरूप पर शास्त्रीय दृष्टि से विचार किया गया है। मूल्य ३॥)

संक्षिप्त शिक्षा-मनोविज्ञान

शिक्षा-मनोविज्ञान की रूप-रेखा का संक्षिप्त संस्करण—१॥।)

शिक्षण-विधि

प्रस्तुत पुस्तक में सभी विषयों की आधुनिकतम शिक्षण विधियों का सरल, स्वाभाविक एवं वैज्ञानिक स्पष्टीकरण किया गया है। मू० ४)

नार्मल स्कूल परीक्षा-पत्र प्रश्नोत्तरी १९४०–५० मू० ३)

पता—बाल-साहित्य-मंदिर, लखनऊ

हमारी नव-वर्ष की अनुपम भेंट

विश्व-ज्ञान-विज्ञान कोश

राजनीति, विज्ञान, कला, साहित्य, संगीत, व्यायाम, व्यवसाय, पुरातत्त्व, इतिहास, भूगोल, आविष्कार आदि विषयों की पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए अपने ढंग का अनूठा, सैकड़ों चित्रों से अलंकृत ग्रंथ।

मूल्य ७॥)

—:o:—

विश्व के महान प्रेम-प्रसंग

—प्रणेता—

श्रीयुत अरुण बी० ए०

सैकड़ों आकर्षक चित्रों से सुशोभित, मोटे, रंगीन कागज पर छपा, सुन्दर आवरण सहित।

मूल्य दस रुपया १०)

—:o:—

हिन्दी शब्द-कोश

स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर जब से हिन्दी ने राष्ट्रभाषा का पद ग्रहण किया है, तबसे उसकी शब्दावली में ऐसे बहुतेरे शब्द आ गये हैं जो राजकीय, व्यावसायिक तथा सार्वजनिक पत्र-व्यवहार एवं बोल-चाल में प्रचलित हो चुके हैं। हम इसी दृष्टि से यह हिन्दी शब्द-कोश प्रकाशित कर रहे हैं। इसमें उपर्युक्त नवीन शब्दों का समावेश है जो आज की आवश्यकता है।

मूल्य ३)

अवध-पब्लिशिंग हाउस, पानदरीबा, लखनऊ

आधुनिक-कोश



हिन्दी साहित्य क
अनुपम भेंट

नवीन विधान पर आधारि
हमारी मनोनीत राष्ट्रभाषा हिन्द
का भविष्य पूर्ण चन्द्र की भाँि
जगमगा रहा है परन्तु प्राची
तथा अर्वाचीन साहित्य - सेव
कवियों तथा लेखकों के क्लिष
एवं तत्कालीन प्रयुक्त शब्दों
अर्थों का अभी तक पूर्णतः अभा
है। इस अभाव की पूर्ति तथ
हिन्दी के प्रारम्भिक एवं शिक्षित विद्यार्थी और जन साधारण की हिन्दी-विषय
योग्यता एवं ज्ञान-वृद्धि की सहायतार्थ हमने उक्त पुस्तक प्रकाशित की है
विद्यार्थियों तथा जन-साधारण का ध्यान रखते हुए वर्तमान महर्घता के सम
में भी १२०० से अधिक पृष्ठ एवं २७००० से अधिक शब्दार्थों से विभूषित
इस कोश का मूल्य केवल ४॥) रु० रक्खा है।

विशेष रूप से—विद्यार्थियों के दैनिक प्रयोग में आने वाले विषय-गणित
भूगोल, विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा विधान-सम्बन्धी शब्दों के अर्थ अङ्गरेजी
हिन्दी में पुस्तक के अन्त में दिये गये हैं। साथ ही साथ पुस्तक में उन शब्द
के अर्थ भी स्पष्ट कर दिये गये हैं, जो तत्सम रूप में हिन्दी-गद्य एवं पद्य
प्रयुक्त होते हैं।

विद्यार्थियों को विशेष सुविधा—अग्रिम मूल्य मनीआर्डर से प्राप्त होने प
पुस्तक रजिस्ट्री द्वारा भेज दी जायगी तथा डाक-व्यय हम देंगे।

मॉडर्न बुकडिपो,
अस्पताल रोड, आगरा।

"हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च
चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो; सौन्दर्य का सार
हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों
का प्रकाश हो, जो हममें गति और संघर्ष
और बेचैनी पैदा करे, सुलाये
नहीं, क्योंकि अब भी सोना
मृत्यु का लक्षण होगा।"

हमारे प्रकाशन

**अमर कलाकार प्रेमचंदजी की
इस कसौटी पर खरे उतरेंगे,
क्योंकि इसमें साहित्य के खरेपन के
सभी तत्व विद्यमान हैं।**

**प्रेमचंद की कृतियों तथा अन्य उत्कृष्ट
साहित्य के प्रकाशक**

सरस्वती प्रेस, बनारस

हिंदी प्रचारक मंडल, लखनऊ के प्रति

कुछ बहुमूल्य सम्मतियाँ

(१) माननीय आचार्य श्री बदरी नाथ वर्मा (शिक्षा तथा सूचना मंत्री, बिहार सरकार)

हिंदी प्रचारक मंडल ने हिंदी भाषा में स्वतंत्र भारत और वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुकूल उपयुक्त और उपयोगी साहित्य-सृष्टि का जो प्रयास आरंभ किया है वह प्रशंसनीय है। मैंने इसके द्वारा प्रकाशित न्यायालयों के लिए शब्दकोश तथा और कई पुस्तकें देखीं। सभी उपयोगी पुस्तकें है और इनमें अधिकांश सर्वसाधारण में ज्ञान और सद्भावना के प्रचार की दृष्टि से लिखी गई हैं। मैं मंडल के प्रयत्नों की सफलता की कामना करता हूँ। आशा है उसे जनसाधारण का सहयोग मिलेगा।

(२) माननीय श्री अनुग्रह नारायण सिंह जी (अर्थ तथा श्रम मंत्री, बिहार सरकार)

जहाँ तक मैं देख पाया हूँ, हिंदी प्रचारक मंडल अपने प्रकाशनों के द्वारा हिंदी भाषा भाषी जनता के लिए अच्छा कार्य कर रहा है। इस संस्था के प्रति मेरी हार्दिक मंगल कामना है।

(३) श्रीमान पं० जगन्नाथ त्रिपाठी (प्रेसिडेंट, कोर्ट आफ वार्डस, उत्तर प्रदेश)

हिंदी प्रचारक मंडल द्वारा प्रकाशित शब्दकोश, तथा गीता और विश्व धर्म पुस्तकें देखने का अवसर मिला। तीनों ही अपने ढंग की निराली हैं। शब्दकोश बड़ा ही उपयोगी है। यह संस्था हिंदी के प्रचार में बड़ा उपयोगी कार्य कर रही है। आशा करता हूँ कि भविष्य में इससे भी उपयोगी पुस्तकें इस संस्था द्वारा प्रकाशित होंगी।

अपने श्रेष्ठ प्रकाशनों द्वारा हिंदी का प्रचार प्रसार ही हमारा उद्देश्य है। विशेष विवरण मंगाइये।

हिंदी प्रचारक मंडल, घसियारी मंडी, लखनऊ



हिन्दी में

लेखक

श्री० शिवकुमारलाल श्रीवास्तव
,, श्रीराम श्रीवास्तव
एम० एस- सी०
श्री० मदनमोहन पांडेय एम०ए०
,, जंगबहादुर श्रीवास्तव एम०ए०
,, निर्विकारशरण शर्मा एम० ए०

(उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल और इन्टरमीडिएट बोर्ड के प्रास्पैक्टस में निर्धारित पाठ्य क्रम के अनुसार) यह पुस्तक शिक्षा बोर्ड के द्वारा प्रस्तुत नवीन पाठ्यक्रम (१९५३) के अनुसार लिखी गई है, प्रथम भाग हाई स्कूल तथा द्वितीय भाग इन्टरमीडिएट के विद्यार्थियों के लिए है।

ये पुस्तकें उन विद्यार्थियों के लिए लिखी गई हैं जो सामान्य ज्ञान का संक्षिप्त व सरल भाषा द्वारा अध्ययन करना चाहते हैं, भाषा अत्यन्त सरल और सर्व प्रचलित है। विषय के प्रतिपादन का ढंग भी अत्यन्त रोचक है। इसलिए इसे सभी समुदायों ने इतना पसन्द किया है कि इसके कई संस्करण अतिअल्प समय में हम बेच सके हैं।

पुस्तक के विषय को सरल बनाने के लिए अनेक चित्र, मानचित्र व रंगीन चित्र इत्यादि भी दिए गए हैं, जिनसे ऐसे गूढ़ विषय को समझने और हृदयग्राही करने में पूर्ण सहायता प्राप्त होती है। प्रत्येक अध्ययन के अन्त में कुछ आवश्यक प्रश्न भी दिए हैं।

हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिए भाग १, मू० २ रु० १२ आना
इन्टरमीडिएट के विद्यार्थियों के लिएभाग २, मू० ३ रु० ८ आना

रामप्रसाद एन्ड सन्स, प्रकाशक, आगरा

हिन्दी की उत्कृष्ट रचनाओं तथा हिन्दी परीक्षाओं की पाठ्य तथा सहायक पुस्तकों का अद्वितीय भंडार

शारदा मन्दिर, नई सड़क, देहली

पुस्तक विक्रेताओं तथा विद्यालयों को विशेष सुविधाएँ

सूचीपत्र के लिये आज ही लिखें—

हिन्दी साहित्य की परम्परा या

हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

(आदिकाल संवत् १०५० से लेकर आधुनिक काल तक)

लेखक—प्रो० हंसराज अग्रवाल एम० ए०, पी० ई० एस०

भारतीय विश्वविद्यालयों एवं हिन्दी की समस्त उच्च परीक्षाओं के लिये परमोपयोगी ग्रंथ, अभिनव प्रकाशन, सजिल्द ५) मात्र।

किताबघर, साहित्य प्रकाशन मन्दिर,

जिन्सी पुल, लश्कर (मध्य भारत)

हम हर तरह के पते जैसे सार्वजनिक पुस्तकालयों, न्यूज पेपर-सेलिंग-एजेन्टों, पुस्तक-विक्रेताओं, स्कूल-कालजों तथा अन्य २ संस्थाओं के जिन्दे एवं ठोस पते हजारों की संख्या में विक्रय करते हैं—विक्रय दर पूछिये। "हिन्द न्यूजपेपर डायरेक्टरी ५१" अंग्रेजी में प्रकाशित हो रही है। इसमें हिंद-पाक प्रकाशित भिन्न २ भाषाओं के ४००० दैनिक एवं सामाजिक समाचार पत्र-पत्रिकाओं के नाम और पूरे पते छपेंगे। विज्ञापन देकर लाभ उठाइये।

हिंदमेल सर्विस, पो० बक्स ३६, मुंगेर ;(विहार)

श्री लक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा' की प्रकाशित पुस्तकें

१. श्री रमाजी और उनका काव्य	।।)	७. लावनी चौदह रत्न	≡)
२. वास्तुकार क्षत्रिय वंशदिवाकर	।।)	८. प्रेम-प्रबंध	≡)
३. श्री गाँधी श्रद्धाञ्जलि	।)	६. काल का चक्र	≡)
४. हरी राम संग्रह	।)	१०. बन्धु वियोग	≡)
५. महिला गायन	≡)	११. श्री रेखा महात्म्य	≡)
६. फाग संग्रह	≡)	१२. गरवा बहार-या स्तुति प्रबंध	≡)

पता—बाबू नारायणप्रसाद हिन्दी साहित्यालय,

रमा निवास, हटा (दमोह) सी० पी०

बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के शिक्षा-विभाग से स्वीकृत

किशोर

विद्यार्थियों और किशोरों को लोकप्रिय और ज्ञान वर्द्धक पाठ्य सामग्री देने वाला हिन्दी संसार में अपने ढंग का अकेला मासिक।

पिछले तेरह वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। वार्षिक मूल्य ४), प्रति अङ्क ।=)

किशोर के कुछ विशेषांक

१. कालिदास अंक १।)
२. रवीन्द्र अंक ।।।)
३. विक्रमांक ।।)
४. गांधी अंक १।)
५. पटेल अंक ।=)
६. उपकथांक ।।)
७. स्वाधीनता अंक ।=)

बाल-शिक्षा-समिति, पटना ४

कुछ उत्कृष्ट पुस्तकें

१. काव्यालोक (द्वितीय उद्योत) —पं० रामदहिन मिश्र ५)
२. काव्यदर्पण—पं० रामदहिनमिश्र १०)
३. काव्य में अप्रस्तुत योजना —पं० रामदहिन मिश्र ५)
४. संत-साहित्य—भुवनेश्वरमिश्र 'माधव' २)
५. छायावाद और प्रगतिवाद —देवेन्द्रनाथ शर्मा ३)
६. अलंकार मुक्तावली— ,, २।)
७. काव्यालोचन के सिद्धान्त २।।)
८. मनुष्य की मर्यादा —जगन्नाथप्रसाद मिश्र २।।)
९. खट्टा-मीठा (हास्यरस के उत्कृष्ट निबन्ध) ।।।)
१०. रेंगनेवाले (जीव-जन्तु विज्ञान) १।)
११. विभूत—शिवपूजन सहाय ३)
१२. लाल चीन—बेनीपुरी ३)
१३. जनता के तीन सिद्धान्त —डा० सनयात सेन ६)
१४. श्रीराजेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ २५)
१५. राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद — शिवपूजनसहाय २।।)
१६. नवीन बाल मनोविज्ञान ४)
१७. चट्टान (कविता)—'राकेश' २।।)
१८. राह के दीपक (कविता) रांगेयराघव २)
१९. हमारी संस्कृति की कहानी —बासुदेव उपाध्याय १।।)
२०. प्राचीन भारत का इतिहास —भगवतशरण उपाध्याय १०)
२१. काव्यालोक (प्रथम उद्योत) —रामदहिन मिश्र (प्रेस में)

बड़े सूचीपत्र के लिए लिखें।

ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना ४

हिंदी प्रचारक बंधुओं !

हर प्रकार की हिंदी पुस्तकें दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की प्रथमा, मध्यमा, राष्ट्र भाषा, प्रवेशिका, विशारद, प्रवीण, साहित्य सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा, ट्रावन कोर यूनीवर्सिटी की विद्वान; तिरुविता कूर हिन्दी प्रचार सभा की प्रथमा, द्वितीया राष्ट्र भाषा, भूषण आदि सभी परीक्षाओं की पुस्तकें और कुंजियाँ मिलने का एक मात्र स्थानः—

एस० डी० पिल्लई

हिंदी बुक स्टाल

तिरुवंतपुरम

आपके लाभ की बात

(१) इस ग्रंथ में प्रकाशित विज्ञापनों का माल मँगाते समय इस बात का उल्लेख अवश्य कर दीजिए कि "आपका विज्ञापन हमने 'हिंदी-सेवी संसार' में देखा है"। इससे आपको शीघ्र माल मिलेगा।

(२) एक ही स्थान से आवश्यकता की पुस्तकें मँगाने पर समय की बचत और खर्च में कमी होती है। इन विज्ञापनों में प्रकाशित प्रायः सभी पुस्तकें हम आपको उचित कमीशन पर भेज सकते हैं। हिन्दी प्रचारक और पुस्तक विक्रेता पत्र व्यवहार करें:—

विनीत

तेज नारायण व्यवस्थापक,

विद्यामंदिर, रानी कटरा, लखनऊ।

हमारी प्रकाशित उत्तमोत्तम पुस्तकें

१—परिवर्तन (उपन्यास) —श्री रामजीलाल श्रीवास्तव 'सीतेश' ४)
२—युग की पगध्वनि (उप०) —श्री हरीकृष्ण बाजपेयी २।)
३—मल्लिका (उप०) —श्री विजयकुमार मिश्र ३)
४—चिरमिलन (उप०) ,, २)
५—प्रेमांकुर (उप०) ,, १।)
६—छोटी माँ (उप०) ,, १।)
७—जयश्री (उप०) —श्री ब्रह्मदत्त तिवारी 'नागर' २)
८—जीवन वीणा (कविता संग्रह) —श्री चंद्रपाल यादव 'मयंक' २)
९—राही के गीत (,,) —श्री दामोदर तिवारी १।)
१०—गांधी श्रद्धांजलि (,,) ,, १)
११—रूपसी (कहानी संग्रह) —श्री शकुंत गौतम साहित्यरत्न ३)

नवीन प्रकाशन

१२—टूटे सपने (कहानी संग्रह) —श्री श्रीकृपाल द्विवेदी बी० ए० साहित्यरत्न २)

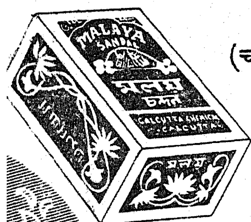
१३—तीन तिलंगे (उपन्यास) फ्रांस के विख्यात उपन्यासकार श्री अलेक्जेंडर ड्यूमा के प्रसिद्ध उपन्यास श्री' मस्केटियर्स' का सुन्दर अनुवाद। मू० ७)

आकर्षक छपाई और सुन्दर गेटप !!

प्रकाशक

नवयुग ग्रंथागार

६० छितवापुर रोड, लखनऊ



मलय

(चन्दन का साबुन)

इसकी शीतल सुगन्ध
घन्टों आपको प्रफुल्लित
बनाये रक्खेगी।

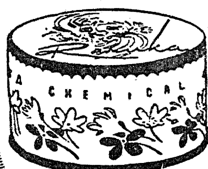


लावणी स्नो

इसका व्यवहार मुंख मण्डल
को सुन्दर तथा लावण्यमय
बनाता है।

रेणुका

(फेस पाउडर)



त्वचा को मुलायम
तथा सुन्दर बनाता है।



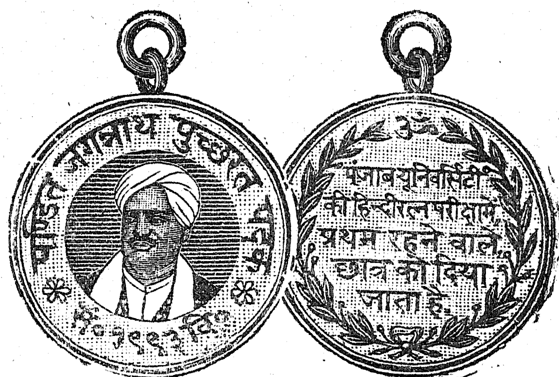
कान्ता

एक अतुलनीय अति
मनमोहक व टिकाऊ सु

दि
कैलकटा केमिके
कं०, लिः

कलकत्ता-२६

शाखायें:—बम्बई, मद्रास, दिल्ली, पटना, नागपूर



पुच्छरत पदक

(हिन्दीरत्न परीक्षा में प्रथम रहने वाले को दिया जाता है)

पंजाब के प्राचीन हिन्दीसेवी, अमृतसर के प्रमुख साहित्यिक हिन्दी परीक्षाओं के प्रचारक, अनेक संस्थाओं के संस्थापक वयोवृद्ध ख्यातनामा श्रीमान् पं० जगन्नाथजी पुच्छरत साहित्य-भूषण की चिरकालीन अनुपम (ठोस) निःस्वार्थ साहित्य सेवाओं के उपलक्ष्य में श्रीपुच्छरतजी के सम्मानार्थ पंजाब यूनिवर्सिटी को "हिन्दीरत्न" परीक्षा में सर्वप्रथम रहनेवाले छात्र वा छात्रा को काशी नागरी प्रचारिणी सभा के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष "गोल्डेन-मैडल" (सुनहला-तमगा) अर्थात् "स्वर्ण-लिप्त पुच्छरत पदक" दिया जायगा।

व्यवस्थापकः—

साहित्य सदन,

चावल मंडी, अमृतसर

हिन्दी पुस्तकालयों के निर्माण की आवश्यकता

भारत सरीखे निर्धन देश में पुस्तकें खरीद कर पढ़ना सर्वसाधारण के लिये सरल नहीं। पुस्तकालयों का निर्माण ही ऐसा है जिनके द्वारा सर्वसाधारण तक पुस्तकें पहुँचाई जा सकती हैं, उत्तमोत्तम पुस्तकों के प्रकाशन में सहयोग दिया जा सकता है। हिन्दी पुस्तकालयों के निर्माण में सहायक बनकर आप हिन्दी को राष्ट्रभाषा के योग्य बना सकेंगे। इस कार्य में नई देहली में स्थित निम्न संस्था आप को सहयोग दे सकेगी—

हिन्दी की उत्तमोत्तम पुस्तकों के प्रकाशन तथा विक्रय क लिये विश्वसनीय संस्था

विद्या मन्दिर लिमिटेड

प्रकाशक  **पुस्तक विक्रेता**

९०।१२ कनाट सरकस, **नई दिल्ली**

नोट :—प्रकाशित तथा अन्य पुस्तकों के सूचीपत्र के लिये कार्यालय को लिखिये।

पं० किशोरीदास बाजपेयी की लिखी
कुछ मौलिक पुस्तकें

ब्रजभाषा का व्याकरण—

अपने विषय का सर्वमान्य अप्रतिम ग्रन्थ। मूल्य ३)

राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण—

स्पष्ट है कि अब तक हिन्दी का कोई वस्तुतः व्याकरण बना ही न था। सब गलत आधार पर थे। इसी लिए इस आधारभूत ग्रन्थ की रचना की गयी है। मू० ४)

हिन्दी-निरुक्त—

भाषा-विज्ञान की हिन्दी में एक मात्र मौलिक रचना। मू० २।)

अच्छी हिन्दी का नमूना—

श्री रामचन्द्र वर्मा की लिखी 'अच्छी हिन्दी' पर परिष्कार है। हिन्दी के स्वरूप का वैज्ञानिक विवेचन है। साहित्यिक जनों का धर्मशास्त्र समझो। मूल्य २।।)

मानव धर्म-मीमांसा—

हिन्दू ऋषियों के सिद्धान्तों को इस्लामतथा ईसाइयत आदि के साथ रख कर बराबर समझने वाले 'धर्म निरपेक्ष' लोगों की आँखें खोल देने वाली पुस्तक। २।)

न भटैती हैं, न ईर्ष्या द्वेष। तटस्थ दृष्टि से लिखी आलोचनात्मक पुस्तक है। डा० पट्टाभि ने भी इसकी प्रशंसा की है। मूल्य १।) मात्र।

राष्ट्रभाषा का इतिहास—

अपने विषय की अकेली पुस्तक। हिन्दी राष्ट्रभाषा कैसे बनी इसका इतिहास। 'सम्मेलन' का इतिहास भी इसी में आ गया है। मूल्य २)

काव्य में रहस्यवाद ।=) **और मि० ह्यूम की परम्परा** ।।)

मँगाने का पता:—

हिमालय एजेंसी, कनखल (उत्तरप्रदेश)

हिंदी-सेवी-संसार के संस्थापक

आचार्य श्री कालिदास कपूर एम० ए०, एल० टी०

(परिचय पृ० ३४) कृत पुस्तकें

१—**साहित्य-समीक्षा**—पाश्चात्य आलोचनात्मक शैली में लिखे समीक्षात्मक लेखों का संग्रह— मू० १)

२—**शिक्षा-समीक्षा**—शिक्षकोपयोगी लेखों का संग्रह— मू० १)

३—**Towards a Better Order**—Essays and Addresses on Education. Re. 1/-

४—**Citizenship for the Indian Adolescent**—Addressed to Indian teenagers on their civic duties. Re. 1/-

५—**स्वतंत्र भारत और किशोर-कर्तव्य**— मू० ।-)

६—**भारतीय इतिहास की मानचित्रावली**—हाई स्कूल से बी० ए० कक्षा तक भारतीय इतिहास के विद्यार्थियों के लिए सर्वोत्तम मानचित्रावली— मू० २॥)

७—**भारतीय इतिहास की रूपरेखा**—मानव इतिहास के संदर्भ में आदिकाल से १९५० तक। सचित्र— मू० ३)

८—**मानव इतिहास की झलक**, भारतीय दृष्टिकोण से, सचित्र मू० २॥)

९—**विश्वसंस्कृति का विकास**—पहली मौलिक रचना। परिचायक माननीय सम्पूर्णानन्द जी— मू० १॥)

१०—**भारतीय सभ्यता का विकास**—आल इंडिया रेडियो से दिए गए भाषणों का संग्रह— मू० ॥)

११—**काश्मीर**—रोचक और सचित्र वर्णन— मू० ॥)

१२—**Japan as I Saw it**—(in Press) Only book on Japanese Education at its best. Foreward by Japanese Educationist. Illustrated. Pre-publication price—Rs. 7/-

पूरे सेट के मिलने का पता—

विद्यामंदिर, रानीकटरा, लखनऊ।

हमारी प्रचारित दो महत्वपूर्ण पुस्तकें

अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय

(ले०—डा० दीनदयालु गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०, डी० लिट्०
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)

अष्टछाप के प्रसिद्ध आठ कवियों—सूरदास, परमानन्ददास, कुंभनदास, कृष्णदास, नंददास, चतुर्भुजदास, गोविंदस्वामी और छीतस्वामी—के संबंध में विभिन्न स्थानों में बिखरी हुई दुष्प्राप्य हस्तलिखित सामग्री के आधार पर कई वर्षों के अध्यवसाय के फलस्वरूप प्रस्तुत एक महत्वपूर्ण गवेषणात्मक ग्रंथ है। इसमें ब्रजमंडल का प्रामाणिक मानचित्र भी है। प्रयाग विश्वविद्यालय ने विद्वान लेखक को इस पर डी० लिट० की उपाधि प्रदान की थी। यही नहीं, २१००) का श्री डालमिया पुरस्कार भी प्रदान किया गया था। ग्रंथ दो सजिल्द भागों में प्रकाशित है। बड़े आकार के लगभग १००० पृष्ठ हैं। मू० २०)

लखनऊ विश्वविद्यालय का नया प्रकाशन

अकबरी दरबार के हिंदी कवि

(ले०—डा० सरजूप्रसाद अग्रवाल, एम० ए०, पी-एच० डी०)

इसमें अकबरी दरबार के संपर्क में आने वाले और आश्रय पाने वाले कवियों की विस्तृत जीवनी तथा रचनाओं का संग्रह बड़े परिश्रम से किया गया है। नरहरि, बीरबल (ब्रह्म); गंग, रहीम आदि कवियों का परिचय और उनकी कृतियों का मूल्यांकन लेखक ने बड़ी विद्वत्ता के साथ किया है। लखनऊ विश्वविद्यालय ने लेखक को इस ग्रंथ पर डाक्टरेट की उपाधि दी है। सजिल्द मू० ६)

पता—विद्यामंदिर, रानीकटरा, लखनऊ

'पहाड़ी' जी का कथा साहित्य

१-बया का घोसला (कहा०)	३।)	१०-बरगद की जड़ें (कहा०)	३)
२-सराय (उप०)	४।)	११-शेष नाग की थाती	३)
३-छाया में (कहा०)	३)	१२-चलचित्र (उप०)	२।)
४-निर्देशक (उप०)	५)	१३-हिरन की आँखें	२।)
५-नया रास्ता (कहा०)	३)	१४-ब्रांड कोट (स्केच)	१।।)
६-सफर (उप०)	३।)	१५-कैदी और बुलबुल	४)
७ मौली (कहा०)	२।।)	१६-प्रवास पथ (प्रेस में)	५)
८-अधूरा चित्र (कहा०)	२।।)	१७-घाटी में (प्रेस में)	५)
९ सड़क पर (कहा०)	२।।)	१८-तूफान के बाद (प्रेस में)	४)

प्रकाशगृह, नया कटरा, इलाहाबाद २

महिलाओं के लिए

प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाएँ

ही

सर्वोत्तम और उपयोगी सिद्ध हुई हैं

इसलिए

आप प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं में भाग लेने के लिए हमें सभी परीक्षाओं की विवरण पत्रिका, पाठ्य पुस्तकें, सहायक टीकाएँ, प्रश्नपत्र और प्रवेश पत्र आदि के लिए लिखें। विशेष विवरण मँगाएँ।

पता—

बी० एस० गुप्ता एंड ब्रदर्स

पुराना बजाजा, चौक, इलाहाबाद।

इस युग के महान प्रकाशन



प्रकाशक राष्ट्रीय प्रकाशन मंदिर

हमारा प्रकाशन

पिंजरा—श्री उपेन्द्रनाथ अश्क की १३ सुन्दर कहानियों का संग्रह। २॥)

दो धारा—श्रीमती कौशल्या अश्क और श्री अश्क की दस अपेक्षाकृ लम्बी कहानियाँ और दो अति मनोरंजक रेखाचित्रों का संग्रह। ३।)

काले साहब—अश्क जी की कहानियों और संस्मरणों का नवीन-त संग्रह। ३॥)

आदि मार्ग—अश्क जी के चार नाटकों का वृहद संग्रह। मूल्य ऐंटि ७) साधारण ५)

कैद और उड़ान—अश्क जी के दो नवीन-तम संग्रह। २॥)

जय पराजय—अश्क जी का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक। ऐंटिक ३॥) साधारण २॥)

छठा बेटा—अश्क जी का हास्य-व्यंग्य से परिपूर्ण नाटक। १॥)

स्वर्ग की झलक—अश्क जी का व्यंग्यपूर्ण सामाजिक नाटक। १॥)

प्रतिनिधि एकांकी—हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकी नाटकों का मनोरंज संकलन ३)

कुंदमाला—सत्येन्द्र शरत का नाटक, जिसमें दिंगनाग के नाटक व नया आवरण पहनाया है। १)

मृगजल—श्री अनन्त गोपाल शेवड़े का अति मनोरंजक उपन्यास। ५)

दीप जलेगा—अश्क जी की अब तक की लिखी अधिकांश कविताओं क सुंदर संकलन। ३)

बरगद की बेटी—अश्क जी का नया खंड काव्य। ३)

ये आदमी ये चूहे—अमरीका के प्रसिद्ध उपन्यास को अश्क जी ने सर हिन्दी में प्रस्तुत किया है। ३)

गिरती दीवारें (प्रेस में)—अश्क जी के प्रसिद्ध उपन्यास का संशोधित परिवर्द्धित संस्करण। मूल्य लगभग १०)

नीलाभ प्रकाशन गृह

५, खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद

प्रकाशित हो गई ! प्रकाशित हो गई !!

अपूर्व सज-धज और नवीन कलेवर में

हिंदी-काव्य-साहित्य का ज्ञान करानेवाली

सुप्रसिद्ध एकमात्र पुस्तक

कविता-कौमुदी

(भाग १ और २)

लेखक—श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रस्तावना लेखक—राजर्षि श्रीपुरुषोत्तमदास टण्डन

नए संस्करण की विशेषताएँ

१—हिंदी-काव्य-क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की भाँति अनेक कवियों की अज्ञात रचनाओं का पता लगता रहता है तथा कुछ के जीवनचरित के सम्बन्ध में साहित्यमर्मज्ञों ने साहित्यिक गवेषणाओं द्वारा अनेक बातें खोज निकाली हैं। इन सब नवीन बातों का समावेश इस संस्करण में किया गया है।

२—दूसरे भाग में आधुनिक काल के अनेक नवीन कवियों की कृतियों तथा उनकी जीवनरेखाएँ प्रस्तुत की गई हैं।

प्रकाशक

(राजा) रामकुमार प्रेस, बुकडिपो

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर-प्रेस, बुकडिपो, लखनऊ

मूल्य प्रति भाग ६)

(राजा) रामकुमार प्रेस, उत्तराधिकारी नवलकिशोर प्रेस, की

साहित्यिक पुस्तकें

काव्य तथा आलोचना

१.	कवितावली (सटीक) मू०	१।)
२.	गीतावली ,, ,,	१=)
३.	तुलसी सतसई	१॥)
४.	तुलसीकृतरामायण (सटीक)	१२)
५.	विनयपत्रिका (बैजनाथ)	३)
६.	मानसमंथन	२)
७.	रामचद्रिका	१॥)
८.	रामायण अध्यात्मविचार	४॥)
९.	प्रेमसागर	३)
१०.	शिवराज भूषण	२)
११.	पद्मावत	॥)
१२.	नीर-क्षीर	१)

जीवन चरित और इतिहास

१.	महात्मा कबीर	१)
२.	महात्मा सुकरात	॥)
३.	भारतीय सभ्यताकाविकास	१)
४.	नारी चरितमाला	॥=)
५.	दिल्ली के सुल्तान	१॥)
६.	भारत के प्राचीन नगर	१)
७.	यूनानी यात्रियों द्वारा भारत वर्णन	१॥)
८.	काश्मीर-दर्शन	५)
९.	जापान-दिग्दर्शन	॥)
१०.	रूस-दिग्दर्शन	१॥)
११.	आधुनिक टर्की	१॥=)

उपन्यास, नाटक तथा कहानियाँ

१.	ठलुआ क्लब (गुलाबराय)	॥)
२.	फूल में काँटा	॥)
३.	प्रोफेसर की डायरी	१॥)
४.	पद्मिनी (नाटक)	१॥)
५.	बहूरानी	२)
६.	अग्निसमाधि	१॥)
७.	धूपलता	१)
८.	प्रताप	॥)
९.	चित्तविलास	॥)॥
१०.	नागिन की डाह	॥)
११.	मयकमंजरी (नाटक)	।–)
१२.	हिमावतार	॥)
१३.	सुहाग की डिबिया	१)
१४.	पथिकदर्शन	।=)
१५.	मार आस्तीन	१=)
१६.	मनोरंजन	॥)
१७.	रामप्रताप	॥)
१८.	जीवन फूल	।=)
१९.	नवयुग	१)
२०.	फेन का बुलबुला	॥)

मिलने का पता—**मैनेजर, (राजा) रामकुमार बुकडिपो,**

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर बुकडिपो, लखनऊ।

ला० रामनारायन लाल, कटरा, प्रयाग द्वारा

प्रकाशित आलोचना साहित्य

महाकवि सूरदास—इसमें श्री नलिनी मोहन सान्याल जी ने ऐतिहासिक, साहित्यिक, धार्मिक तथा समालोचना गर्भित परमोच्च लेख प्रणाली का परिचय दिया है। संशोधक डा० रामशंकर शुक्ल 'रसाल'। मूल्य १||)

प्रसाद जी के तीन नाटक—इसमें प्रसाद जी के अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त नाटकों की विवेचना है। ले० श्री प्रेमनारायण टंडन। मू० १)

भारतेंदु और उनके नाटक—इसमें भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रसिद्ध नाटकों की समालोचना बहुत ही प्रभावात्मक शैली में की गई है। मू० १|)

हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक विवेचना संबंधी एक मात्र ग्रंथ है। लेखक हैं डा० श्री रामकुमार वर्मा एम० ए०, पी-एच० डी०। मू० १०)

छायावाद-रहस्यवाद—इसमें छायावाद-रहस्यवाद जैसे गूढ़ विषय को बड़ी सुन्दरता से समझाया गया है। लेखक श्री गंगाप्रसाद पांडे। १|)

कामायनी : एक परिचय—इसमें कामायनी की विशद आलोचना है। लेखक श्री गंगाप्रसाद पांडेय। मू० २)

हरिऔध जी का प्रियप्रवास—हिंदी के प्रसिद्ध महाकाव्य पर भलीभाँति विवेचना की गई है। लेखक—श्री धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी। मू० १|)

सूर-साहित्य की भूमिका—ले० श्री रामरतन भटनागर—मू० २)
कबीर-साहित्य की भूमिका— ,, २)
तुलसी-साहित्य की भूमिका— ,, २)
मनमयूर (हास्यरस की कहानियाँ)—ले० श्री अन्नपूर्णानंद ४)

अधिक जानकारी के लिए बड़ा सूचीपत्र मँगाइये

हिन्दी जगत के प्रसिद्ध उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त जी

की नवीन रचनायें

१—विकृत छाया
२—भावुकता का मूल्य
३—बहती रेता
४—Cultural State in Bharat Varsh.
५—First year of Congress Rule.

छप रही हैं।

१—विश्वासघात
२—देश की हत्या

अधिक जानकारी के लिए लिखें।

प्रकाशक—

भारतीय साहित्य सदन
३०।६० कनाट सरकस,
नयी देहली।

स्कूल, कालेज, लाइब्रेरी आदि संस्थाओं
और
पुस्तक व्यापारियों
को

विशेष सुविधा

हमारा साहित्य रत्न भंडार पिछले २५ वर्षों से हिन्दी की सेवा कर रहा है। हमारे यहाँ हिन्दी की उच्चकोटि की सभी पुस्तकें मिलती हैं। जितना बड़ा संग्रह हमारे यहाँ आपको मिलेगा उतना शायद ही और कहीं मिले। एक स्थान से पुस्तकें खरीदने में लाभ भी रहता है।

साहित्य संदेश

यह हिन्दी का एक मात्र आलोचना संबंधी मासिक पत्र है। यह हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए बड़ा उपयोगी है। ४) का मनीआर्डर भेजकर इसके वार्षिक ग्राहक बन जाँय।

हिन्दी की सभी पुस्तकें मिलने का एक मात्र स्थान—

साहित्य रत्न भंडार,

४ गांधी मार्ग, आगरा।

बेकारी को जड़ मूल से मिटाने के लिये—

रुपया कमाने की सस्ती पुस्तकें

साबुन शिक्षा १।) चित्र कार्टून बनाना २।।) सुगन्धित तेलों का व्यापार १।) रबर दियासलाई ।।=) धुलाई रंगाई २) रोशनाई का व्यापार १।) वार्निश पेंट बनाना २।।) हुनर प्रचारक १भाग १।।) घड़ी साजी ।।) हुनर प्रचारक भाग २ २।।) शर्बत का व्यापार १।) सचित्र फोटो ग्राफरी ८) शीशे पर कलई करना १।) मीनाकारी शिक्षा १।) हर वस्तु जोड़ना २ भाग १।) गिलट साजी २) पेटेन्ट दवाइयाँ २ भाग १।) सुनार साजी २) अचार शिक्षक ।।) जिल्द साजी २) विलायती गुप्त व्यापार ५) लकड़ी की पैमाइश २) बिजली की बैट्रियाँ बनाना २) रेडियो गाइड सचित्र ५) रुपया कमाने की कल २।) व्यापार और कारीगरी ५) मोटर ड्राइवरी ४)

पता—बेकार सखा प्रेस, शिकोहाबाद यू०पी०

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

की

कृतियों के प्रतिनिधि प्रकाशक

और

हिन्दी के उच्चकोटि के साहित्य के

विक्रेता—

आधुनिक पुस्तक भवन

३०/३१ कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता ७

विशेष जानकारी के लिए सूची पत्र मँगावें ।

लोक अभ्युदय का संदेश वाहक

प्रदीप

राष्ट्र जागरण, राष्ट्रनिर्माण तथा राष्ट्रोत्थान के शुभ कार्य में उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त कर रहा है।

राष्ट्रीय भावनाओं से पूर्ण तथा उच्च कोटि की सामयिक साहित्यिक सामग्री, जनता और सरकार के संपर्क में पुष्टि, भव्य मुख पृष्ठ तथा मनोहर चित्रावलियोंमे सुभूषित ये हैं 'प्रदीप' की विशेषताएँ।

वा०मू० ३॥), छ० २), १ प्रति ।) एजेंटों, विज्ञापनदाताओं को विशेष रियायतें। पता—व्यवस्थापक,

'प्रदीप' शिमला २।

राजस्थान का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

सचित्र 'युगान्तर'

राष्ट्र निर्माणकारी प्रवृत्तियों का परिचय। प्रेरणापूर्ण जीवन चरित्र, कहानी तथा लेख। अहिंसक तथा लोकतंत्रीय नवरचना का दिशा-दर्शन विशेष स्तम्भ; मधु संचय, आधी दुनिया, सामाजिक स्वराज्य की सीढ़ियाँ, आर्थिक स्वाधीनता की ओर, नीरक्षीर विवेक, राजस्थानी साहित्य और संस्कृति, राजस्थान के कोने-कोने से सप्ताह की डायरी—वार्षिक मू० ६) एक प्रति =)

व्यवस्थापक, 'युगान्तर'

लोकवाणी-भवन जयपुर।

'संगीत'

यह मासिकपत्र गत १६ वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। जनवरी १६५१ में इसका विशेषांक "वाद्य-संगीत अंक" निकला है, जिसमें अनेक प्रकार के बाजों को बजाने की सचित्र विधि है! वा० मू० ५)

पता—संगीत कार्यालय,

हाथरस यू० पी०

'संगीत सुधा' मुफ्त!

संगीतकला के प्रचारार्थ ६५ राग-रागनियों के वर्णन सहित 'संगीत सुधा' पुस्तक केवल एक पोस्टकार्ड डाल कर मुफ्त मँगा लीजिये।

पता:—संगीत कार्यालय, हाथरस

(उत्तर प्रदेश)

सर्व प्रकार की संस्कृत, हिन्दी तथा भारतीय प्राचीन संस्कृति-संबंधी सभी ग्रन्थ मिलने

का एक मात्र पता—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्ट बक्स ७५, बनारस।

शाखाएँ-(१) किनारी बाजार, दिल्ली।

(२) बाँकीपुर, पटना।

शिवप्रकाशन की श्रेष्ठ पुस्तकें



१. मित्र के नाम पत्र (श्री रवींद्रनाथ ठाकुर) ३॥)
२. दुनियाँ के विधान (डा० पट्टाभि सीतारामैय्या) ३॥)
३. सत्य की खोज (डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन) १)
४. भारत की प्राचीन संस्कृति का इतिहास (डा०पी.सी.घोष) ५)
५. समाजवाद तथा राष्ट्रीय क्रांति (आचार्य नरेंद्रदेव) ३॥)
६. संघर्ष की ओर (श्री जय प्रकाश नारायण) ४)
७. राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास (श्री मन्मथनाथ गुप्त) ६)
८. शिक्षा का माध्यम (महात्मा गाँधी) ।।।)
९. किसान और कम्यूनिस्ट (प्रोफेसर रंगा) २)
10. Neta ji—A grand Sovenier Volume published on life and works of Shri Subhas Chandra Bose Rs. 20/
11. British Savagery In India:— The misdeeds of the British in India described in an authoritative way by a fighter for India's freedom. Rs. 9/8/-
12. India's Saviour crucified— *By* Shri Navin Narain Agrawal Re. 1/-

बड़ा सूचीपत्र मंगाइए—

श्री शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी लि०

अस्पताल रोड, आगरा ।

परोपकारार्थ प्रकाशित औद्योगिक साहित्य रत्न

(१) साबुन-विज्ञान २) (२) सुगन्धित तैल ।।।) (३) सुगंधित शर्बत का व्यवसाय १) (४) रोशनाई (स्याहियों) का व्यापार १) (५) आईना साज़ी अर्थात दर्पण शिक्षक ।।।) (६) जोड़ने के सीमेंट बनाना ।।।) (७) आचार शिक्षक ।) (८) कुबेर भण्डार =) (९) स्वर्णकार विद्या १।।) (१०) मीनाकारी शिक्षक १।।) (११) अनुभूत मुलम्मासाज़ी १।।) (१२) पेटेन्ट औषधें और भारतवर्ष प्रथम भाग १।।) द्वितीय भाग १।।) (१३) बिजली की रोशनी (प्राथमिक बैटरियाँ बनाना) १) (१४) नाखून पालिश विज्ञान ।।) (१५) बिजली की सूखी बैटरियाँ (ड्राई सेल) बनाना १) (१६) इलैक्ट्रोप्लेटिंग अर्थात् निकलप्लेटिंग शिक्षक १।।) (१७) पेन्ट और वार्निश १) (१८) साबुन शिक्षा १) (१९) व्यापार और कारीगरी ३) (२०) व्यापार और दस्तकारी २।।) (२१) हस्त सामुद्रिक ४) (२२) पाक विज्ञान २।।) (२३) फोटोग्राफी शिक्षा ६) (२४) घड़ी साज़ी ≈) (२५) रेडियो स्वयं बनाओ २।।) (२६) घरेलू विज्ञान २।।) (२७) यूरोप के हुनर और व्यापारिक रहस्य १।।) (२८) व्यापार का खज़ाना १) (२९) चौदह विद्या सजिल्द २) (३०) अत्तारी शिक्षा ।।) (३१) सिलाई कटाई विज्ञान २) (३२) लोगों को अपना बनाने की कला १) (३३) मोटर ड्राइवरी सचित्र ३) (३४) मुनीमी शिक्षक ।।) (३५) नूतन तार शिक्षक १।।) (३६) हिन्दी अँग्रेजी शिक्षा १।।।) (३७) खजाने की कुञ्जियाँ मुफ़्त।

पुस्तक विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन।

चन्द्र कार्यालय, भिवानी (पंजाब)

हमारे हिन्दी प्रकाशन

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के परीक्षार्थियों के लिए उपयोगी पुस्तकें—

१ प्राथमिक परीक्षा के नोट्स	१-०-०
(पहली किताब, दूसरी किताब और रसीली कहानियाँ)	
२ मध्यमा परीक्षा के नोट्स	१-४-०
(तीसरी किताब, चार एकांकी, ऐतिहासिक कहानियाँ और अर्जुन)	
३ राष्ट्रभाषा परीक्षा के लिए	
अ. सिकंदर नाटक और फूलों का गुच्छा के नोट्स	१-४-०
आ. गद्य-सौरभ भाग २ और रामचर्चा के नोट्स	१-४-०
इ. हैदरअली और नौ कहानियाँ के नोट्स	०-८-०
४ प्रवेशिका परीक्षा के लिए	
चन्द्रगुप्त नाटक, गद्य-सौरभ और नवपल्लव के नोट्स	२-०-०
पथिक और निर्मला (वि० मं०) के नोट्स	१-८-०
फुलवारी की सरल टीका	१-४-०
५ राष्ट्रभाषा विशारद परीक्षा के लिए	
अ. शाहजहाँ नाटक की समीक्षा	१-४-०
आ. माधुरी भाग ३ के नोट्स	०-१२-०
इ. प्रेमाश्रम : एक अध्ययन (वि० मं०)	१-८-०
ई. पंचवटी की प्रश्नोत्तरी	०-८-०
६ बालोपयोगी पुस्तकें	
१. राष्ट्र की विभूतियाँ	०-१०-०
२. आचार्य रंगा (जीवनी	०-८-०
३. कथा-कुसुम	०-१०-०
४. भारत के नवरत्न	०-१०-०

लेखक व प्रकाशक—

देसु सत्यनारायण,
हिंदी पंडित, हाई स्कूल,
चिलकलूरिपेट (गुंटूर जिला)

श्री० प्रेमनारायण टंडन एम० ए० साहित्यरत्न और
श्री लक्ष्मीनारायण टंडन एम० ए० साहित्यरत्न
की लिखी तीन सुन्दर पुस्तकें

हिन्दी के प्रतिनिधि कवि

पृष्ठ संख्या ३३३, मूल्य ४ रुपया। प्रस्तुत पुस्तक में सम दृष्टि से साहित्य के २० प्रतिष्ठित कवियों की हिंदी-सेवा और काव्य-कला की विवेचना है।

मातृ भाषा के पुजारी

दूसरा संस्करण—पृष्ठ संख्या १४१—मूल्य १ रुपया ८ आना पुस्तक में हिन्दी के चुने हुए इकतालीस साहित्य सेवियों (१८ प्रमुख लेखकों १६ प्रसिद्ध कवियों) की हिन्दी सेवा, भाषा और शैली तथा ७ आवश्यक विषयों का आलोचनात्मक परिचय दिया है।

हमारे गद्य निर्माता

तीसरा संस्करण—पृष्ठ २०५—मूल्य २ रुपया। भारतेन्दु युग द्विवेदी युग और आधुनिक युग के प्रमुख ११ हिन्दी लेखकों की साहित्य-सेवा, शैली और भाषा पर आलोचनात्मक निबन्ध और शैली तथा हिन्दी गद्य के विकास की विस्तृत विवेचना है।

अन्य सभी प्रकार की उत्तम पुस्तकों के लिए तथा विशेष कर श्री० गुलाबराय एम० ए० व श्री० कमलवीर मिठास बी० ए० द्वारा लिखित हाई स्कूल के छात्रों के निमित्त निबन्धों की पुस्तक के लिए भी लिखें, इस पुस्तक में हाई स्कूल की परीक्षा में आने वाले निबन्धों का समावेश है, शीघ्र लिखें :—

गयाप्रसाद ऐंड संस

पुस्तक प्रकाशक और विक्रेता

आगरा (उ० प्र०)

हमारे सर्वोपयोगी प्रकाशन

* प्यारे राजा बेटा (भाग १)
—रिषभदास रांका ।।=)

* प्यारे राजा बेटा (भाग २)
—रिषभदास रांका ।।=)

* जीवन जौहरी जमनालालबजाज)
—रिषभदास रांका १।)

* गीता प्रवचन (मराठी)
—आचार्य विनोबा १।।)

* बुद्ध और महावीर तथा दो भाषण
—आचार्य कि० घ० मशरूवाला १)

* महावीर वाणी (जैन गीता)
—पं० बेचरदास दोशी १।।)

* मणिभद्र (उपन्यास)
—श्री सुशील १)

* धर्म और संस्कृति (लेख संग्रह)
—श्री जमनालाल जैन १)

* जो संतों ने कहा
—जमनालाल जैन ।)

* उज्जवल प्रवचन (राष्ट्रीय महापुरुषों पर)—महासती उज्जवल कुमारी ।।=)

प्रेस में

* तत्व समुच्चय
—डा० हीरालाल जैन २।।)

* तत्वार्थ सूत्र—पं० सुखलालजी ४)

हमारी विशेषताएँ

* सर्वोदय नीति
* विचारपूर्ण सामग्री
* सुन्दर छपाई
* अल्पतम मूल्य

श्री भारत जैन महामंडल, वर्धा

—:*:—

जैन जगत

(मासिक मुखपत्र)

संपादक—

(१) रिषभदास रांका
(२) श्रीजमनालालजैन साहित्यरत्न

राष्ट्रीय दृष्टि और सुतर्क के विचारों का, सर्वोदय तीर्थ का प्रतिनिधि, चेतनाशील पत्र।

वार्षिक मूल्य ३)

जैन जगत कार्यालय, वर्धा

श्री भारत जैन महामंडल, वर्धा (म० प्र०)

बिना किसी की सहायता तथा सेवा के ही

फिटर ड्रायवर--इंजीनियर

बनिए! नीचे लिखी पुस्तकें अपने विषय की अनोखी तथा सचित्र हैं जो बिना किसी की सहायता के ही साधारण हिन्दी पढ़े लिखे व्यक्ति को भी ड्रायवर इंजीनियर फिटर बना सकती हैं।

वर्कशाप गाइड २॥) इंजन चलाने की पुस्तक ३) बड़ी ८) लोको गाइड १०) इलेक्ट्रिसिटी ३) आइल इंजन गाइड ६) रेडियो-गाइड ५) टरनर गाइड ३) रेडियो क्रिस्टलसेल बनाना २) फिटर गाइड ४) इलेक्ट्रिक गाइड ७॥) लकड़ी गाइड २) इलेक्ट्रिक वायरिंग करना ४॥) खराद शिक्षा ३॥) मोटर वायरिंग करना ६) ढलाई गाइड ५॥) बिजली की बैटरियाँ बनाना २) मोटर मिकेनिक टीचर ७॥)मशीनरी की चित्रकारी ३)घड़ी साजी ॥) मोटर दर्पण ६) मोटर ड्रायवरी ३) बड़ी ४)।

पता—बेकार सखा प्रेस, शिकोहाबाद यू० पी०

बिना किसी की सहायता के घर बैठे ही एलोपैथी

मेडीकल डाक्टर

बनिए। नीचे लिखी एलोपैथिक पुस्तकें मंगाकर पक्के एलोपैथी डाक्टर बन सकते हैं।

कम्पाउडरी शिक्षा २॥) इंजेक्शन चिकित्सा ५) बड़ी १०) मेटेरिया मेडिका ५) स्वयं चिकित्सा ३) डाक्टरी चिकित्सा ५) शरीर रचना ३) औषधि ज्ञान संग्रह ५) डाक्टरी नुस्खे मिक्सचर३) चिकित्सक(डाक्टर) के कर्तव्य२॥) आ०दवा और डाक्टरोंके अनुभव३)

पता—बेकार सखा प्रेस, शिकोहाबाद यू० पी०

क्या आप हृदय से चाहते हैं

कि

आप व आपका परिवार

एक आदर्श संस्कारवान् सच्चरित्र राष्ट्रप्रेमी परिवार हो ?

तो आज ही से

वेदसंस्थान, अजमेर

से

प्रकाशित होने वाले साहित्य का अध्ययन

करना आरम्भ कर दें

वर्ष के अन्त पर आपको स्वयं मानना होगा कि

साल के ३६५ दिनों में आपने व आपके

परिवार ने कितनी उन्नति की है ।

पूर्ण परिचय के लिए संस्थान का सूचीपत्र मुफ्त मँगा लें ।

व्यवस्थापक

वेदसंस्थान,

केसरगंज, अजमेर ।

हमारी चुनी हुई पुस्तकें

कथा-कुसुमांजलि (जैनेंद्रकुमार)	१।।)	कथा-कलश (नर्मदाप्रसाद खरे)	१।।)
उन्नतराष्ट (शिवसिंह चौहान)	१।।)	ललित कथा मंजरी	१)
कादंबरी कथा सार (गुलाबराय)	।।=)	यादगार (रामचन्द्र श्रीवास्तव)	१)
मेवाड़ महिमा (हरिशंकर शर्मा)	१।)	गरुडध्वज (लक्ष्मीनारायण मिश्र)	२)
मर्यादाका मूल्य (वीरेंद्रसिंह रघुवंशी)	१।।	दुख क्यों (सेठ गोविंददास)	२।।)
नल दमयन्ती (ब्रह्मदत्त शास्त्री)	।।।)	दो नाटक (,,)	१।।)
नाटक-निकुंज (जगेंद्र)	१।।)	छः एकांकी नाटक	१।।)
नाटक नवरत्न (हरदयालसिंह)	१)	भास-ग्रंथावली	१)
विदेशी वीर विद्वान(हरिशंकरशर्मा)	२।।)	रत्न राशि (नर्मदाप्रसाद खरे)	१)
हिटलर (शर्मन लाल अग्रवाल)	१)	अंग्रेजी साहित्य परिचय	४)
उर्दू साहित्य परिचय	६)	मराठी साहित्य परिचय	३)
व्रतोत्सव मंजरी (व्रजरत्नदास)	२।।)	मुझे आप से कुछ कहना है	२)
शाहनामा (रामचन्द्र श्रीवास्तव)	५)	उर्दू हिंदी डिक्शनरी (प्रेस में)	५)
हिंदी साहित्य में निबन्ध	२।।)	राष्ट्र निर्माता (जगदीशप्रसाद)	१।।)
विज्ञान वार्ता (गुलाबराय)	२)	विज्ञान विनोद	१।।)
व्यावहारिक विज्ञान	१)	विचित्र विज्ञान	।।।)

सामाजिक शिक्षणमाला

साक्षरता चार्ट (८ चार्ट)	२।।)	हमारा इतिहास	।।।)
बापू और उनके शिष्य	।।=)	हमारा भारत (भूगोल)	।।=)
कांग्रेस की देश सेवा	।।=)	हमारे पड़ोसी	।।=)
भावी भारत (संविधान तथा नागरिक कर्तव्य)	।।=)		

प्रकाशक

गयाप्रसाद ऐंड संस

आगरा (उत्तर प्रदेश)

For Intermediate Students

आधुनिक सामान्य ज्ञान (General Knowledge)

By (1) Dr. K. L. Garg M. A. Ph. D.
(2) Prof. B. P. Srivastava. M. Sc.

यह पुस्तक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई है। बड़ी सरल सुबोध भाषा में लिखी गई है। हर अध्याय के अंत में प्रश्न तथा पूरी पुस्तक में ८० चित्र हैं। मूल्य ३॥)

For High School Students

आधुनिक सामान्य ज्ञान (General Knowledge)

उपर्युक्त दोनों विद्वानों द्वारा यह पुस्तक हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिए प्रस्तावित पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई है। इसमें भी हर अध्याय के अंत में प्रश्न तथा पूरी पुस्तक में ७० चित्र दिए गए है। द्वितीय संस्करण। मू० २॥)

गुरू के पत्र शिष्य के नाम

(ले०—श्री रामजीलाल वधौतिया एम० ए० साहित्य रत्न)

इस पुस्तक में शिष्य को उपदेशात्मक पत्र लिखे गए हैं। विद्यार्थियों के चरित्र में सत्यता, सदाचार, माता पिता और गुरू के प्रति भक्ति, कर्तव्य पालन आदि जिन गुणों का समावेश होना चाहिए वे सभी इस पुस्तक में दिए गए हैं। मू० १)

प्रकाशक—

हिंद प्रकाशन मंदिर, आगरा।

सोल एजेंट—

मुरारी बुक डिपो, शफाखाना रोड, आगरा।

हमारे हिंदी कोश

स्थानीय प्राइमरी मिडिल, हाई स्कूल आदि शिक्षण संस्थाओं के लिए हमारे अति उपयोगी कोश मँगाएँ। सुन्दर छपे, मजबूत जिल्दसाजी से युक्त ये कोश आपके हिंदी शब्द ज्ञान को बढ़ाने में अत्यंत सहायक होंगे।

प्रचारक हिंदी शब्दकोश (बृहत) १२)

(लेखक—पं० लालधर त्रिपाठी बी० ए०, सा० रत्न)

(८५२ पृष्ठ, साइज डबल डिमाई ८ पेजी, कालेज, पुस्तकालयों तथा साहित्य रत्न परीक्षार्थियों के लिए परमोपयोगी)

प्रचारक हिंदी शब्दकोश (माध्यम) ८)

(पृष्ठ संख्या १०८४, हाई स्कूल तथा समकक्ष प्रथमा, विशारद आदि के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी)

प्रचारक शब्दकोश (गुटका) २।।≈)

(पृष्ठ संख्या ५७६ गुटका साइज, प्राइमरी तथा मिडिल कक्षाओं के लिए उपयोगी)

प्रकाशक—

हिंदी प्रचारक पुस्तकालय,

पोस्ट बाक्स ७०, ज्ञानवापी, काशी

शाखा—१६५।१ हरिसन रोड, कलकत्ता।

हमारे नवीन प्रकाशन

भारतीय अर्थशास्त्र की रूपरेखा

लेखक—(१) शंकरसहाय सक्सेना आचार्य महाराणा भूपाल कालेज, उदयपुर

(२) श्री प्रेमनारायण माथुर, शिक्षा मन्त्री, राजस्थान।

पुस्तक विश्वविद्यालयों की उच्च परीक्षाओं के छात्रों के लिए हिंदी में विशेष रूप से लिखी गई है। भारत की आर्थिक समस्याओं के सम्बन्ध में विशद विवेचन किया गया है। भारत के विभाजन के फलस्वरूप जो आर्थिक समस्याएँ उठ खड़ी हुई हैं उनपर भी पूरा प्रकाश डाला गया है। मूल्य प्रथम भाग—८|||) द्वितीय भाग प्रेस में है।

आधुनिक कवियों की काव्य-साधना

(ले०—श्री राजेन्द्रसिंह गौड़, एम० ए०)

इसमें हिन्दी के आठ प्रमुख कवि, भारतेंदु, हरिऔध, मैथिली शरण गुप्त, रत्नाकर, निराला, पंत, और महादेवी जी की कला कृतियों पर विस्तृत दृष्टिकोण से विचार किया गया है। आरंभ में सचित्र जीवन परिचय भी है। मू०—३)

हमारे लेखक

(ले०—श्री राजेन्द्रसिंह गौड़, एम० ए०)

इसमें राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद से अब तक के २८ प्रमुख निबन्धकारों, नाटककारों, उपन्यास और कहानीकारों की रचनाओं की सामूहिक दृष्टि से आलोचना की गई है। मू०—३)

मेसर्स श्रीराम मेहरा एंड कंपनी

अस्पताल रोड, आगरा।

प्रसिद्ध जर्मनी फारमूलों पर बनाई गई कुछ

विशुद्ध औषधियाँ

ब्लड बेलेन्स—सिरप, गोलियाँ और इंजेक्शन्स, जो अनीमिया खून की कमी और शक्तिवर्द्धन के लिए उपयोगी है।

कालज़्म—गोलियाँ और इंजेक्शन्स कैल्शियम युक्त; कैल्शियम की कमी के लिए लाभदायक।

पुलमोटन—सिरप; फेफड़ों को शक्तिवर्द्धक टानिक।

व्हूपी—सिरप, 'कुकुर खाँसी' के लिए अचूक दवा।

लूना—सिरप; ल्यूकोरिया तथा स्त्री संबंधी अन्य बीमारियों के लिए उपयोगी।

गोनोलेट्म गोलियाँ; गनोरिया को दूर करनेवाली गुणकारी दवा।

ओ. के टेबलेट पिल्स—गोलियाँ; असाधारण बलवर्द्धक औषध।

डा० शबर्ट की मेमोर पल्स—मस्तिष्क की कमजोरी, स्मरण शक्ति की क्षीणता को दूर करने वाली अद्वितीय गुणकारी औषधि सभी बड़े दवाखानों में मिलती हैं।

हर जगह एजेन्टों और स्टॉकिस्टों की जरूरत है। पूरे विवरण के लिए पत्र व्यवहार करें—

SUPER PHARMA CORPORATION LTD.

P. B. 904 BOMBAY G. P. O.

बृहद् राजस्थान के सबसे अधिक प्रकाशित होनेवाले निष्पक्ष हिन्दी दैनिक

जागृत

का

साप्ताहिक संस्करण

साहित्यिक व राजनीतिक लेखों, मनोरंजक कहानियों, सरस कविताओं, अनोखी सिनेमा सम्बन्धी टिप्पणियों व सामाजिक विषयों से परिपूर्ण होता है। ऐसे पत्र का प्रत्येक गृहस्थ में होना आवश्यक है।

यदि आप अभीतक इस के ग्राहक नहीं बने तो आजही लिखें। वार्षिक चन्दा ६) अर्ध वार्षिक ३) है।

नमूने की प्रति के लिए =) के टिकट भेजें।

व्यवस्थापक 'जागृत' कार्यालय,
६० पावर हाऊस रोड, जयपुर।

शुभ सूचना

यदि आप अपने यहाँ के पुस्तकालयों को आधुनिक ढंग का बनाना चाहते हैं जिससे आपके यहाँ नवीनतम पुस्तकें मिल सकें और ऐसे पाठक या पुस्तकालय जो अच्छी [illegible] के अभाव में राष्ट्रभाषा की अच्छी-अच्छी पुस्तकों की खोज में चिन्ता-ग्रस्त रहते हैं, एक बार हमारे यहाँ अवश्य पधारें। हमारे यहाँ [illegible] सुविख्यात लेखकों का हर प्रकार का साहित्य मिलेगा।

इण्डियन पब्लिशिंग हाउस

सोल एजेंट—(इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग) नई सड़क, देहली।

मस्ताना जोगी

(सचित्र हिंदी मासिक) ही क्यों पढ़ा जाय ?—

क्योंकि इस पत्रिका में अन्य पत्र पत्रिकाओं की तरह [illegible] कहानियाँ, लाभपूर्ण दवाइयों के नुस्खे तथा जड़ी बूटियों का पूरा-पूरा ज्ञान मिलता है। घर बैठे कम पैसा में [illegible] वस्तुएँ बनाने की तरकीबें मिलती हैं। इसलिए—

आप आज ही ५)—) वार्षिक [illegible] भेजकर साल के १२ अंकों के साथ दो विशेषांक प्राप्त कीजिए। [illegible]

पता—मस्ताना जोगी (हिंदी) कार्यालय

७६ जी० बी० रोड, दिल्ली।

Hindi Grammar Made Easy

BY

S. N. LOKANATH M A., B O. L.

Essentials of Hindi language explained in English

Highly useful for the student.
The teacher and the library
A Guide to learn the language.
A Key for the success in the examinations.

Difficulties Solved. Confusions Cleared.

The use of ने the determination of Gender the declensions of Nouns and Pronouns, Causative and the Compound Verbs, Prefixes and Suffixes, the Syntax, etc., etc. are exhaustively treated.

SIMPLE LANGUAGE NEAT GET UP.

Price Re. 1/- Post. extra.

"SHANTI MANDIR"
ULSOOR, BANGALORE 1.

अपनी संतान को आप होनहार तो बनाना चाहते ही होंगे।
तब उन्हें हिन्दी का एकमात्र बालोपयोगी पाक्षिक पत्र
वार्षिक ३)] होनहार [एक प्रति =)
मँगा दीजिए। इसकी बहुत प्रशंसा न करके हमें सिर्फ इतना कहना है कि इसमें बच्चों के लिए सभी आवश्यक बातें रहती हैं! संपादक हैं श्री बालबंधु एम० ए०।
मँगाने का पता—
विद्यामन्दिर, रानी कटरा, लखनऊ

हमराही
श्रेष्ठ साहित्य एवम् "रूप" मासिक के
प्रकाशक
साहित्य प्रतिष्ठान
अलमोड़ा

जनता का प्रतिनिधि साप्ताहिक
उजाला
पढ़िये
सम्पादक—गुरुप्रसाद उप्पल
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति =)
पता—उजाला प्रेस, कदम कुआँ (पटना)

आंध्र प्रान्त का एक मात्र सचित्र हिंदी मासिक
शिक्षक
पढ़िए
सम्पादक—श्री दोनेपूडि राजाराव
वार्षिक मूल्य ४) एक प्रति ।=)
आज ही ग्राहक बनिए—'शिक्षक', बकिंघमपेट, बेजवाडा

अब क्यों परेशान हैं ?

स्कूल-कालेज तथा वकालत की हिंदी - अंग्रेजी की सभी
पाठ्य पुस्तकों तथा सहायक पुस्तकों के लिए
और
सब प्रकार के श्रेष्ठ फाउन्टेनपेन तथा उनकी मरम्मत के लिए पधारिए

नाथ बुकडिपो,
राजा मंडी, आगरा।

महाकोशल का सबसे प्राचीन
राष्ट्रीय विचार धारा का पोषक सर्वश्रेष्ठ साप्ताहिक

शुभचिंतक

-हर गाँव और नगर में पढ़ा जाता है

व्यापारी विज्ञापन देकर लाभ उठायें

पत्र-व्यवहार का पता—
व्यवस्थापक 'शुभचिन्तक'
जबलपुर (मध्यप्रदेश)

सरस साहित्य और मनोरंजन का अनूठा पाक्षिक पत्र

नव चित्रपट

प्रत्येक अंक में—लगभग ६० पृष्ठ, आर्ट पेपर पर तिरंगा कवर, नयनाभिराम चित्रों के ६ पृष्ठ, दिलचस्प कहानियाँ, नई फिल्मों के गीत और आलोचनाएँ, सिनेमा तारिकाओं सम्बन्धी मनोरंजक लेख और भेंट वर्णन, फिल्म जगत् के ताजे सनसनीखेज समाचार, पाठकों के प्रश्नोत्तरों के अनूठे ८ पृष्ठ, नव-युवकों और नवयुवतियों को भाने वाले ओजस्वी और आधुनिक विचारों से भरपूर लेख—वार्षिक ६) रु०, एक प्रति ६ आने। विज्ञापन का सर्वश्रेष्ठ साधन। नए स्थानों में एजन्टों की आवश्यकता है। पता—नवचित्रपट, ६२, दरियागंज, दिल्ली

राजस्थान में सबसे ज्यादा खपने वाला

अमर ज्योति

[राष्ट्रीय विचारों का सचित्र साप्ताहिक]

जिस में आपको सब प्रकार की सामग्री मिलेगी :—

जनता की विचित्र समस्यायें, राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय समाचार, विश्लेषणात्मक गंभीर संपादकीय, कहानी और कवितायें, मनोरंजक छींटाकशी, साप्ताहिक राशिफल।

विज्ञापन का प्रमुख साधन और जनता का प्रिय पत्र

वा०मूल्य ८) एक प्रति ≥) पता—साप्ताहिक—'अमर ज्योति', जयपु

राजस्थान व अजमेर डाइरेक्टरी १९५१

राजस्थान व अजमेर डाइरेक्टरी सन् १९४० से दरबार प्रेस अजमेर से अंग्रेजी में प्रकाशित होती रही है जिसे प्रान्त व बाहर के मुख्य मुख्य आफिसरों, लीडरों व प्रतिष्ठित महानुभावों ने हर व्यापारी व शिक्षित व्यक्ति के लिये फायदेमन्द बतलाया है। अब इसका सन् ५१ का संस्करण हिन्दी में प्रकाशित होगा। यह डाइरेक्टरी नये टाइप में छप व मार्च सन् ५१ के अन्त तक तैयार हो जायगी। इस में लगभग ५०० पृष्ठ होंगे जिसका मूल्य साधारण कागज पर ५) रु० व आर्टपेपर पर १५) होगा।

पता—दैनिक दरबार, अजमेर।

किसान मजदूर एवं गरीब जनता की आवाज को बुलन्द करने वाला
राजस्थान सोशलिस्ट पार्टी का सचित्र साप्ताहिक मुख पत्र

जय हिन्द

ग्राहक बनकर, एजेन्सी लेकर, एवं विज्ञापन देकर जनता के इस मोर्चे को मजबूत बनाइये वार्षिक मूल्य ६) अर्ध वार्षिक ३।) त्रैमासिक १।।।)

पताः—जय हिन्द कार्यालय, कोटा, (राजस्थान)

हिन्दी साहित्य की गौरव पताका

नई धारा

प्रतिमाह नियमित रूपसे लहरा रही है ! आपने अब तक नहीं देखी ?

आज ही ग्राहक बन जाइये

प्रति अंक—१)
वार्षिक मूल्य—१०)

नई धारा कार्यालय
महेन्द्रू, पटना ६